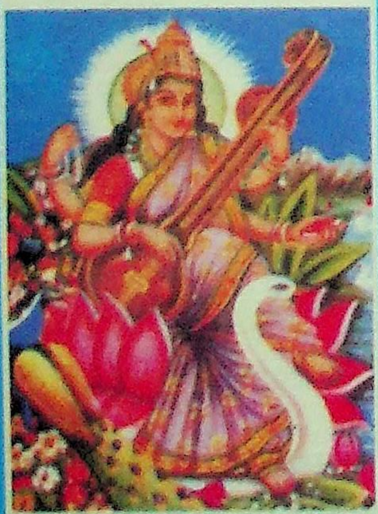
अज्ञानान्धविनाशाय नभोमणितुलां वहन् ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ "विश्वविजय पंचाङ्गं" सदाऽस्तु विदुषां मुदे

श्री महासरस्वत्यै नमः।



महोअर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना। धियो विश्वा विराजति ॥

राजा चन्द्र



मंत्री सूर्य

८३

नवैः प्राक्तैर्मनीषिविहितिगणितैश्चापि तथा । संमानितात्सारं गणितमनवद्यं वहति यः ॥

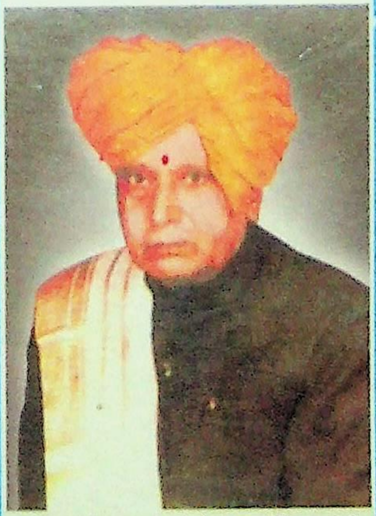
इन्दुपुरस्थीयाक्षवृत्तीयं केतकीचित्रापक्षीयं सार्वदेशिकं धर्मशास्त्रसम्मतम्

श्रीविश्वविजय पञ्चांगम

सदासेव्यः प्राचीनविधिगणितसैरपि मतः । सुरम्यं पञ्चाङ्गं भुवि विजयते 'विश्वविजयः' ॥

श्रीसनातनधर्म-प्रतिनिधिसभया सम्मानितम्

अ.भा.ज्योतिष-परिषद् के मुख्य अध्यक्ष



श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

श्रीविश्वविजय-पञ्चांगम

श्री विक्रम संवत् २०६५ शकः संवत् १९३० सन् २००८-२००९ भारतीय गणराज्य संवत् ५९-६०

आद्य सम्पादक – स्व० श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी-ज्योतिषाचार्य, सम्पादक – Er. श्री सुधाकर शर्मा त्रिवेदी, सह-सम्पादक – रोहिताश्व त्रिवेदी

मूल्य रु. ६२/-

ज्योतिष्मती निकेतन सोलन हिमाचल प्रदेश

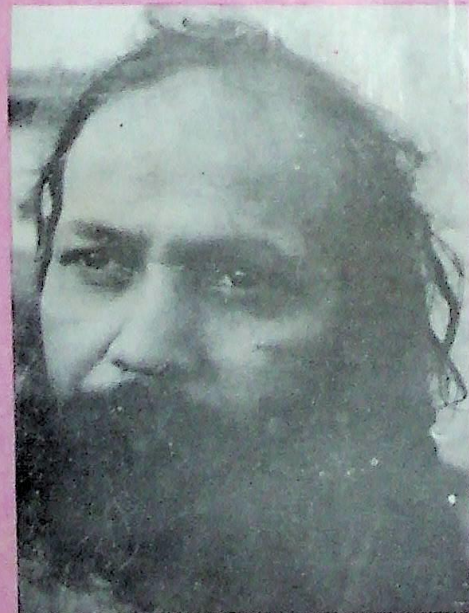
वर्ष ६४

श्री:

श्रीविश्वविजय पंचांग को ब्रह्मा-विष्णु-शिव स्वरूप ब्रजमंडल के त्रिदेवों का स्नेहासीर्वाद



परमपूज्य अनन्त श्रीविभूषित ब्रह्मलीन श्री देवरहा बाबा



योगिराज तपःपूत श्री १०८ श्रीपादबाबा



योगिराज श्री १०८ स्वामी कार्ष्णि गुरुशरणानन्द जी महाराज

विश्व की तीन महान् दैवी विभूतियों का स्नेहाशीर्वाद एक साथ प्राप्त करने का सौभाग्य ''श्रीविश्वविजयपंचांग'' को ४५वें वर्ष में प्राप्त हुआ। यह पंचांग प्रेमियों के लिए परम हर्ष का विषय है।

पहले हैं- विश्व विख्यात तपःपूत आध्यात्मिक जगत् के अमितायुः भीष्मपितामह ब्रह्मलीन योगिराज परम् सन्त अनन्त श्री विभूषित श्री देवराहा बाबा जो अनेक वर्षों से गंगा-यमुना तट पर घास फूस काष्ठ निर्मित ऊँचे मचान पर दिगम्बर रूप में निवास करते थे। कब वे मचान से उतर कर गंगा स्नान करने जाते और वापस लौटते थे यह कोई देख नहीं पाया। राष्ट्रपति पद तक के सभी छोटे-बड़े अधिकारी मंत्रिगण आपके श्रीचरणों के दर्शन को लालायित रहते हैं। गत गुरुपूर्णिमा दि. २९ जुलाई १९८८ को अपराह्न काल में वृन्दावनधाम यमुनापार पवित्र मचान पर आपके दर्शनार्थ पंचांग सम्पादक पहुंचा। जब ''श्रीविश्वविजयपंचांग'' और ''ज्योतिष्मती'' का नववर्षांक मचान पर आपकी सेवा में पहुँचा तो बाबा ने अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की। त्रिवेदी जी के प्रार्थना करने पर कि ''नेत्र-व्याधि के कारण ३ वर्ष बाद मैं अब दूर से श्रीचरणों के दर्शन ठीक नहीं कर पा रहा हूँ। तो स्नेहार्दभाव से तत्काल दिगम्बर रूप में खड़े होकर बोले- 'ले कर ले, अच्छी तरह दर्शन, हम तुम्हारे कार्य से बड़े प्रसन्न हैं।'' इतना कहकर अपने कर-कमलों से एक अमूल्य उपवस्त्र और पुष्कल-फल प्रसाद प्रदान कर पंचांग-कर्ता को स्नेहाशीर्वाद दिया।

दूसरे हैं- भारत के महान् सन्त, ब्रज अकादमी वृन्दावन के संस्थापक, अनन्त श्रीविभूषित योगिराज श्रीपादबाबा जिनके श्रीचरणों में रंक से राजा, राष्ट्रपति तक साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते हैं।१८वर्ष पूर्व गुरु पूर्णिमा पर आपने भी श्रीविश्वविजय पंचांगकर्ता को अपने कर-कमलों से उपवस्त्र पहना कर पूजा का विशेष श्रीफल, कदली फल प्रसाद प्रदान कर उपकृत किया। आपका हस्तलिखित स्नेहाशीर्वाद विगत वर्ष के (सं. २०४७ वि. के श्रीविश्वविजयपंचांग) में पृष्ठ १५८ पर अंकित हैं।

तीसरे हैं- ब्रजमण्डल के प्रसिद्ध विद्वान सन्त श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम श्रीरमणरेती महावन के अध्यक्ष तपपूत कार्ष्णि स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज से आपका हस्तलिखित शुभाशीर्वाद सं. २०४७ वि. के पंचांग पृ. १५८ पर प्रकाशित हैं। आप न्यायदर्शनवेदान्तादि के आचार्य हैं, ''सन्तहृदय नवनीत समाना'' की प्रतिकृति परमदयालु परदुःखकातर महापुरुष के साथ स्वयं कठोर तपस्वी भी हैं।२०वर्ष पूर्व आपने गोवर्धन-क्षेत्रस्थ-श्रीमानसी गंगा का जीर्णोद्धार महीनों तक स्वयं सैकड़ों भक्तों के साथ खड़े रहकर करवाया। विगत वर्ष गिरिराज गोवर्धन की दण्डवती परिक्रमा का कष्टसाध्य पावनयज्ञ पूर्ण किया। ऐसे तपस्वी सन्तों का स्नेहाशीर्वाद ''श्रीविश्वविजयपंचांग'' के लिए गौरव की वस्तु है।

''श्रीविश्वविजयपंचांग''

भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों की दृष्टि में

आपका यह प्रिय पंचांग ज्योतिर्विज्ञानाचार्यों, धर्माचार्यों एवं वरिष्ठ विद्वानो का ही कृपा पात्र नहीं, अपितु रंक से लेकर राजा तक के हृदय में अपना स्थान बना चुका है। (भू०पू० राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी, भू०पू० प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी, श्री लालबहादुर शास्त्री जी, श्रीमती इंदिरा गाँधी, श्री चौ० चरण सिंह एवं अनेक प्रांतों के राज्यपालों तथा मुख्यमंत्रियों के उद्‌गार यथा समय पंचांग व पत्रिका में प्रकाशित होते रहे हैं। पं० जवाहर लाल नेहरू जी को पंचांग से विशेष प्रेम था और वे अपने पंडित कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। इसका प्रमाण ४९ वर्ष पूर्व सोलन में घटी एक घटना प्रत्यक्षदर्शियों को अब भी स्मरण है। १६ जुलाई १९५९ को श्री पंडित नेहरू जी शिमला से लौटते समय कुछ देर नागरिकों का अभिनन्दन स्वीकार करने के लिए सोलन में रुके थे। श्री त्रिवेदी जी ने पुष्पमाला के साथ संवत् २०१६ वि० का ''विश्वविजयपंचांग'' भेंट किया तो बोले- 'धन्यवाद, इस वर्ष अभी तक मैंने आपका पंचांग खरीदा नहीं था। इस पर त्रिवेदी जी ने पूछा- ''क्या आप भी पंचांग खरीदते हैं?'' तत्काल उत्तर मिला- ''क्या आप मुझे पंडित नहीं मानते।'' उस समय श्री नेहरू जी के साथ श्रीमती इन्दिरा गाँधी और तत्कालीन उपराज्यपाल राजा बजरंग बहादुर सिंह भी थे। १९ वर्ष पूर्व श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपने जन्म दिवस पर १९ नवम्बर १९६९ को प्रधानमंत्री निवास में श्री त्रिवेदी जी से संवत् २०२६ विक्रमी का ''श्रीविश्वविजयपंचांग'' अभिवादन पूर्वक सस्नेह ग्रहण किया- उस समय का एक स्मृतिचित्र यहाँ प्रस्तुत है।



अज्ञानान्धविनाशाय नभोमणितुलां वहन् ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

"विश्वविजय पंचाङ्ग" सदाऽस्तु विदुषां मुदे

श्री महासरस्वत्यै नमः।



महोऽर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना।
धियो विश्वा विराजति ॥

राजा चन्द्र



मंत्री सूर्य

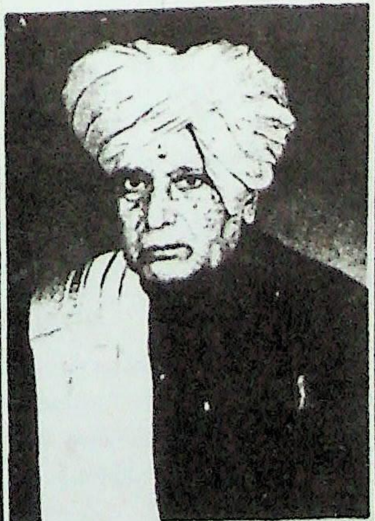
नवः प्रायशोऽगोलविलसिगणितमुरेपि तथा।
समानीतात्साराद् गणितमनघं वहति यः॥

केतकीचित्रापक्षीयं सार्वदेशिकं धर्मशास्त्रसम्मतम् ... श्री विश्वविजय पञ्चाङ्गम्

सदासेव्यः प्राज्ञैर्विविधगणितज्ञैरपि मतः।
सुरम्यं पंचाङ्गं भुवि विजयते 'विश्वविजयः'॥

श्रीसनातनधर्म-प्रतिनिधिसभया सम्मानितम्

अ.भा. ज्योतिष-परिषद् के मुख्य अध्यक्ष



श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

श्रीविश्वविजय-पञ्चांगम्

श्री विक्रम संवत् २०६५ शकः संवत् १९३० सन् २००८-२००९ भारतीय गणराज्य संवत् ५९-६०

आद्य सम्पादक- स्व. श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी-ज्योतिषाचार्य, सम्पादक- श्री सुधाकर शर्मा त्रिवेदी ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन, हि. प्र.
सह सम्पादक - रोहिताश्व शर्मा त्रिवेदी फोन/ फैक्स ०१७९२-२२०५९६ e-mail : rohitashw@gmail.com
गणितकर्ता- पं० विनोद कुमार बिजल्वाण, एम. एस. सी., ९१, अद्वैतानन्द मार्ग, ऋषिकेश फोन- २४३५४०१

वर्ष ६४

मुद्रक एवं वितरक :- रुचिका पब्लिकेशन्स
459, खारी बावली, दिल्ली-5 ☎ (का.) 23936116

प्रमुख विक्रेता :- अग्रवाल बुक डिपो
460, खारी बावली, दिल्ली-110 006 ☎ 23943254

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें। बगैर होलोग्राम के पंचांग नकली समझा जाएगा।

॥ श्री॥

प्रकाशकीय प्राक्कथन

जगत् जननी माँ भगवती की प्रेरणा से एवम् पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी के शुभाशीर्वाद से मैंने आपके समक्ष श्रीविश्वविजयपंचांग प्रस्तुत किया। आप सबने मुझ को भरपूर प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया जिसके कारण अगामी श्रीविश्वविजयपंचांग संवत् २०६५ वि. का आपके सामने प्रस्तुत करने में मुझे हार्दिक हर्ष हो रहा है। आगे भी आप सब लोग मुझे इसी प्रकार का सहयोग और सुझाव देते रहें जिससे पंचांग अपनी गरिमा को बनाये रखे।

इस पंचांग के प्रकाशन, मुद्रण और वितरण नववर्षारम्भ से चार मास पूर्व पहुँचाने के कार्य में **श्री वीरेन्द्र प्रताप गर्ग** एवं **श्री संजय कुमार गर्ग** ने अपना पूर्ण सहयोग दिया इनका मैं आभारी हूँ।

माँ की कृपा रही तो आगामी नव वर्ष संवत् २०६६ वि. का श्रीविश्वविजयपंचांग संवत् २०६५ वि. के नवरात्रों तक प्रकाशित हो सकेगा। आगे जैसी माँ की इच्छा होगी वही होगा।

गोपाष्टमी, कार्तिक शुक्ल ८ संवत् २०६४ — *मातृचरणचंचरीक*
दिनांकः १८-११-२००७ ई. — *सुधाकर शर्मा त्रिवेदी*

विषय सूची

आरम्भिका

या विद्या शिक्केशवादि जननी या वै जगन्मोहिनी
या पञ्चप्रणवद्विरेफनलिनी या चित्कलामालिनी।
या ब्रह्मादि पिपीलिकान्ततनुषुप्रोता जगत्साक्षिणी
सा पायात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी॥

ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष फलदायक है। इसमें सन्देह नहीं, किंतु इस शास्त्र पर सूक्ष्म अध्ययन और अनुशीलन की आवश्यकता है। इस शास्त्र का सृष्टि के आदि काल में भारतीय महर्षियों ने ही अविष्कार किया। भारतीय लोगों की असावधानता और उपेक्षा वृत्ति से यह विज्ञान विदेशियों के हाथ लगा, उन्होंने इसको अपनाकर अद्भुत नाम एवं यश प्राप्त किया। अनेकों मुसलमान और अंग्रेजों ने ज्योतिष संबंधी ग्रन्थ लिखे और आज का समस्त पश्चिमी संसार इस विद्या के प्रभाव से लोगों को आश्चर्यचकित कर रहा है। ग्रीनविच की संसार प्रसिद्ध वेधशाला को कौन नहीं जानता? वहां की जनता एवं सरकार अब भी प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये व्यय कर इस शास्त्र के अनुसंधान में लगी हुई है। पर, इसी शास्त्र के उद्गम स्थान भारत की दशा बड़ी शोचनीय है। यहां इस विज्ञान को कोई किसी प्रकार की सहायता तो पहुंचाता नहीं, पर आपेक्ष या कुठाराघात करने पर सब प्रस्तुत हो जाते हैं। इन सब कारणों से व्यथित होकर यथाशक्ति इस वैज्ञानिक शास्त्र के द्वारा भारतीय संस्कृति के समुत्थान की शुभकामना से ही हम गत अनेक वर्षों से 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' के माध्यम से जनता जनार्दन की सेवा कर रहे हैं।

केतकी चित्रापक्षीय पंचांगों की सब ओर से संपुष्टि

उत्तर भारत में चित्रापक्षीय पंचांग का जो कार्य हमने प्रारम्भ किया था उसके प्रचार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। प्रायः सभी प्राचीन पंचांगकारों ने सूर्यसिद्धांत, ग्रहलाघव, मकरन्द और ब्रह्मपक्षीय ग्रहों के स्थान में चित्रापक्षीय (ज्योतिर्गणित केतकी आदि से) शुद्ध दृक्तुल्य ग्रह ग्रहणोदयास्तादि लगाने प्रारम्भ कर दिये हैं। विद्वान सहयोगियों ने अनुभव किया है कि इस समय जब सूर्य परम मंदफल और चन्द्रमा के संस्कार फलों में कई कलाओं का अंतर प्रत्यक्ष सिद्ध है तब सूर्य चन्द्रमा से निष्पन्न तिथिमान में भी १०-१५ घटी का अंतर स्वाभाविक है। केतकी गणित के आधार पर दिये हुए 'श्रीविश्वविजय पंचांग' के तिथ्यादि धर्मशास्त्रीय निर्णय व्रतोपवासादि के लिये उपयोगी हैं, इसमें अब किसी प्रकार की शंका नहीं है।

भारत सरकार के 'राष्ट्रीय पंचांग' और 'केलेण्डर' रिफार्म कमेटी की रिपोर्ट में भी यही तिथि स्वीकार की गई और इसके आधार पर राष्ट्रीय पंचांगों और राजकीय केलेण्डरों में पर्व त्यौहार एवं छुट्टियां लगाई जाती हैं। विगत संवत् २०१९ के चैत्र मास में कुम्भ महापर्व पर भगवती भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्रीसनातनधर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब के आमंत्रण पर उत्तर भारतीय ज्योतिर्विदों का सम्मेलन हुआ था, उसमें सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि अगले वर्ष सं० २०२० वि० से उत्तर-भारत के सभी पंचांगकार अपने-अपने पंचांगों में तिथि नक्षत्र योग के घट्यादि का मान भी नवीव दृक्पक्ष (केतकी ज्योतिर्गणित वैजयन्ती आदि) से ही लगायेंगे। तदनुसार पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध पंचांगों में विगत वर्ष सं० २०२० वि० से तिथ्यादि भी नवीन सूक्ष्म गणित से लगानी प्रारम्भ कर दी, यह उत्तर भारत में पंचांग एकीकरण के लिए परम हर्ष का विषय है।

इससे कुछ वर्ष पहले वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य श्री १०८ गो० गोकुलनाथ जी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी योगेश्वरानन्द जी तीर्थ महाराज पुरीमठ, श्री १०८ जगद्गुरु शंकराचार्य सेकेश्वर करवीर मठ, जगद्गुरु श्री १०८ अनन्ताचार्य महाराज काञ्ची कामकोटि मठ आदि के शंकराचार्यचरणों ने भी सूक्ष्म तिथि से ही धर्मनिर्णय करने के आज्ञा पत्र निकाले हैं। वल्लभ-सम्प्रदाय की प्रधानपीठ श्रीनाथद्वारा के तिलकायत गोस्वामी श्री १०८ गोविन्दलालजी महाराज की आज्ञानुसार विगत कई वर्षों से 'श्रीनाथपंचांग' का भी केतकी चित्रापक्ष से ही निर्माण हो रहा है और नवलगढ़ के 'सरस्वती पंचांग' में भी अब तिथ्यादि मान, सूक्ष्म केतकी गणित से ही छपने लगा है। जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य और जैन-धर्म के आचार्यों के धर्म कृत्य भी सूक्ष्म गणित प्रत्यक्ष पंचांग दृग्गणितानुसार प्रकाशित होने लगे हैं।

कुछ सज्जन तिथिमान को अदृश्य या अप्रत्यक्ष कहकर उसे आधुनिक काल के लिए अप्रत्यक्ष स्थूल गणित मकरन्द ग्रहलाघव सूर्यसिद्धांत ब्रह्मपक्षीय से बनाने का आग्रह करते हैं- यह वर्तमान काल के लिए उपयुक्त नहीं। इस विषय में तैत्तिरीय संहिता, सिद्धांत कामधेनु, विष्णु-धर्मोत्तरपुराण, नारदीय पुराण आदि प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के अनेक प्रमाण गत वर्षों के पंचांग की आरम्भिका में हम प्रकाशित कर चुके हैं। स्थानाभाव के कारण यहाँ केवल दो आप्तवचन दे रहे हैं

यस्मिन पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम्।
दृष्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादि निर्णयम्॥(वशिष्ठः)
तेभ्यः स्याद् ग्रहणादि दृक्सममियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मंगल धर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समा॥ (ति० चि०)

भारत सरकार के मौसम-विभाग और अखिल-भारतीय-ज्योतिषपरिषद् के संयुक्त तत्वावधान में दि० १९-२० नवम्बर ६८ को विज्ञानभवन, नई दिल्ली में विशाल पंचांग गोष्ठी का आयोजन किया गया- उसमें समस्त भारत के नवीन प्राचीन पद्धति के शताधिक प्रसिद्ध विद्वान पंचांगकार सम्मिलित हुए थे। दो दिन के विचार विमर्श के अनन्तर भारी बहुमत से दृक्पक्षीय (चित्रापक्षीय अयनांश) पंचांग गणना को ही शास्त्र सम्मत प्रमाणित किया गया।

विगत कई वर्षों से इस पंचांग ने दैनिक चन्द्र का उदय-अस्त भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम घण्टा मिनटों में एवं साम्पातिक काल (दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कलकत्ता) के दिये गए हैं। इस वर्ष पंचांग में अन्य कई उपयोगी विषय बढ़ाये गए हैं।

ज्योतिष्मती निकेतन
सोलन (हि० प्र०)

विदुषामनुचर :
सुधाकर शर्मा त्रिवेदी

पंचांग देखने की विधि

१. इस पंचांग (श्रीविश्वविजय) का सभी गणित दिल्ली के अक्षांश २८।३८ रेखांश ७७।१७ पर किया गया है। तिथि नक्षत्र के घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से समाप्ति काल के हैं। तिथि नक्षत्र योग करण के घण्टा मिनट भा.स्टे.टा. से समाप्ति काल के है, जो भारत में सर्वत्र उसी टाईम से होंगे।

२. सूर्योदय सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली के है। सूर्योदय सूर्यास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट घटावें और सूर्यास्त में दो मिनट बढ़ावें।

३. इस पंचांग में करण सूर्योदय कालीन दिये गये हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

४. सूर्य चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा पंचक, ग्रहों के उदय अस्त वक्रमार्ग आदि भारतीय स्टें.टा. में है जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम मे होगें। यह इस पंचांग की विशेषता है।

५. महीनों में अष्टमी पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रातः घं.५ मि. ३० के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्रचरण दिये हैं। ग्रह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

६. तिथ्यादि तथा चन्द्रमा भद्रा ग्रहाचार आदि में २४-२५-२६ आदि अंक लिखें हैं उनका अर्थ यह है कि २४ को रात्रि के बारह बजे, २५ को रात्रि के १ बजे, २६ को रात्रि के २ बजे समझें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी २४ घटाकर अर्द्ध रात्रि बाद के अगली तारीख में समझेंगे।

७. इस पंचांग का गणित आचार्यों ऋषियों द्वारा ग्राह्य और भारत सरकार द्वारा स्वीकृत सूक्ष्म दृश्य पद्धति से किया है। जहां सायन गणना की गई है वहां अयनांश चित्रा पक्षीय शुद्ध मानकर ग्रहण किये गये हैं। यहां निरयन पद्धति को सर्वत्र मान्य की है।

८. दैनिक लग्न सारिणी में समय का उल्लेख स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार दिल्ली का है। और लग्न का समाप्ति काल लिखा गया है।

९. लस्टर में ABC... आदि चिन्ह दिये हैं, उनका मतलब यह है कि मैटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह जहाँ लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाईन में लगाकर शेष मैटर लिखा है- नीचे लिखी संकेतावली को पंचांग देखने में काम लेने से संपूर्ण विषय समझ में आ जावेंगे -

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग) अग्नि (पंचक), अक्टूबर, अगस्त, अप्रैल (मास)
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान यो., आषा. आश्विन
उ.षा. = उत्तराषाढ़ (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपद (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि) कला
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ.फा. = उत्तर फाल्गुनी (नक्षत्र)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र) भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई मास
का. = कार्तक (मास)
क्रां. सा. = क्रांति साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र) कृष्ण पक्ष
कु. = कुंभ (राशि)
गु. = गुरु (वार) गुरु ग्रह
गु. दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घण्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार) चन्द्र ग्रह
ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
जू. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि.ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि), धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धुलिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
निं. = निंबार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग) पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारंभ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वाफाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपद (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न) मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु. (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहिणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल. = लग्न
व. = वज्र, वरियान, यो. वणिज क. वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग) वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशाखा (नक्षत्र), विष्कंभ (योग), विकला
वि.मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा नक्षत्र
शि. = शिव योग
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हिं. = हिन्दी (मास-तारीख)

अवकाश दिन (छुट्टियाँ तातीलें)

विक्रम संवत् २०६५ सन् २००८-२००९ ई० में भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश दिन (७ अप्रैल २००८ ई० से २६ मार्च २००९ ई० तक)

१. श्री राम नवमी, बैशाखी (पंजाब)	१३ अप्रैल सन् २००८ ई. रविवार
२. अम्बेडकर जयंती	१४ अप्रैल सन् २००८ ई. सोमवार
३. महावीर जयंती	१८ अप्रैल सन् २००८ ई. शुक्रवार
४. मई दिवस	१ मई सन् २००८ ई. गुरुवार
५. बुद्ध पूर्णिमा	१९ मई सन् २००८ ई. सोमवार
६. गंगा दशहरा	१२ जून सन् २००८ ई. गुरुवार
७. जन्म श्री हजरत अली (वै.)*	१७ जुलाई सन् २००८ ई. गुरुवार
८. गुरु पूर्णिमा	१८ जुलाई सन् २००८ ई. शुक्रवार
९. स्वतंत्रता दिवस	१५ अगस्त सन् २००८ ई. शुक्रवार
१०. रक्षाबंधन	१६ अगस्त सन् २००८ ई. शनिवार
११. श्री कृष्ण जन्माष्टमी	२३ अगस्त सन् २००८ ई. शनिवार
१२. गणेश चतुर्थी व्रत	३ सितंबर सन् २००८ ई. बुधवार
१३. अनन्त चतुर्दशी	१४ सितंबर सन् २००८ ई. रविवार
१४. श्री अग्रसेन जयंती	३० सितम्बर सन् २००८ ई. मंगलवार
१५. गांधी जयंती, ईदुल-फितर *	२ अक्टूबर सन् २००८ ई. गुरुवार
१६. विजयादशमी	९ अक्टूबर सन् २००८ ई. गुरुवार
१७. श्री बाल्मीकी जयंती	१४ अक्टूबर सन् २००८ ई. मंगलवार
१८. दीपावली, श्री महावीर निर्वाण दिवस	२८ अक्टूबर सन् २००८ ई. मंगलवार
१९. विश्वकर्मा पूजा दिवस, भैया दूज	२८ अक्टूबर सन् २००८ ई. गुरुवार
२०. श्री गुरुनानक जयंती	१३ नवंबर सन् २००८ ई. गुरुवार
२१. गुरुतेग बहादुर बलिदान दिवस	२४ नवंबर सन् २००८ ई. सोमवार
२२. ईदुलजुहा *	९ दिसम्बर सन् २००८ ई. गुरुवार
२३. क्रिसमस डे	२५ दिसंबर सन् २००८ ई. गुरुवार
२४. अंग्रेजी नव वर्ष प्रारम्भ (वै.)	१ जनवरी सन् २००९ ई. गुरुवार
२५. श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी जन्म	५ जनवरी सन् २००९ ई. सोमवार
२६. मुहर्रम (ताजिया) *	८ दिसम्बर सन् २००९ ई. गुरुवार
२७. लोहड़ी (पंजाब) (वै.)	१२ जनवरी सन् २००९ ई. सोमवार
२८. मकर सक्रांति (वै.)	१४ जनवरी सन् २००९ ई. बुधवार
२९. गणतंत्र दिवस	२६ जनवरी सन् २००९ ई. सोमवार
३०. वसंत पंचमी (वै.)	३१ जनवरी सन् २००९ ई. शनिवार
३१. श्री गुरु रविदास जयंती	९ फरवरी सन् २००९ ई. सोमवार
३२. श्री महाशिवरात्री	२३ फरवरी सन् २००९ ई. सोमवार
३३. होली, ईद-ए-मिलाद *	१० मार्च सन् २००९ ई. मंगलवार
३४. धुलैंडी	११ मार्च सन् २००९ ई. बुधवार

नोट: (क) * मुस्लिम त्योहार की छुट्टियों में कभी कहीं स्थानीय चन्द्रदर्शन के अनुसार जिलाधीश फिर से निर्धारित कर एक दिन का अन्तर डाल सकते हैं।

(ख) उपर्युक्त छुट्टियों को सरकारी गजट से मिला लेना आवश्यक है। किसी भूल या फेरबदल का दायित्व सम्पादक अथवा प्रकाशक पर नहीं है।

(ग) (वै.) शब्द जहाँ लिखा है उन्हें वैकल्पिक छुट्टियां समझें।

भारतीय अन्य विशेष पर्व त्योहार आदि

१. नववर्षारम्भ	७ अप्रैल, सोमवार
२. गणगौरी पूजन	८ अप्रैल, मंगलवार
३. नवरात्र समाप्त	१४ अप्रैल, सोमवार
४. वैशाख स्नानारंभ	२० अप्रैल, रविवार
५. श्री वल्लभाचार्य ज.	२ मई, शुक्रवार
६. श्री परशुराम जयंती	७ मई, बुधवार
७. टैगोर ज.	८ मई, गुरुवार
८. श्री नृसिंह चौदस	१८ मई, रविवार
९. वैशाख स्नान समाप्त	२० मई, मंगलवार
१०. वट् सावित्री व्रत	३ जून, मंगलवार
११. गंगा दशहरा	१२ जून, गुरुवार
१२. निर्जला एकादशी	१४ जून, शनिवार
१३. कबीर जयंती	१८ जून, बुधवार
१४. श्री गुरु हरगोविंद सिंह ज.	१९ जून, गुरुवार
१५. श्री जगदीश रथयात्रा	४ जुलाई, शुक्रवार
१६. देवशयनी ११ व्रत	१३ जुलाई, रविवार
१७. गुरु पूर्णिमा	१८ जुलाई, शुक्रवार
१८. मधुश्रवा तीज	४ अगस्त, सोमवार
१९. नागपंचमी	६ अगस्त, बुधवार
२०. कज्जली तृतीया	१९ अगस्त, मंगलवार
२१. श्री गणेश ४ व्रत	२० अगस्त, बुधवार
२२. गोगा नवमी	२५ अगस्त, सोमवार
२३. हरितालिका तीज	२ सितम्बर, मंगलवार
२४. ऋषि पंचमी	४ सितम्बर, गुरुवार
२५. जलझूलनी मेला	११ सितम्बर, गुरुवार
२६. वामन जयंती	१२ सितम्बर, शुक्रवार
२७. श्राद्धारंभ	१५ सितम्बर, सोमवार
२८. शारदीय नवरात्र प्रा.	३० सितम्बर, मंगलवार
२९. श्री अग्रसेन जं.	३० सितम्बर, मंगलवार
३०. करवा चौथ	१७ अक्टूबर, शुक्रवार
३१. अहोई अष्टमी	२१ अक्टूबर, मंगलवार
३२. गोवत्स द्वादशी	२५ अक्टूबर, शनिवार
३३. गोपाष्टमी	६ नवंबर, गुरुवार
३४. प्रबोधिनी एकादशी व्रत	९ नवंबर, रविवार
३५. कार्तिक स्नान मेला	१३ नवंबर, गुरुवार
३६. मोक्षदा एकादशी व्रत	९ दिसंबर, मंगलवार
३७. अन्नपूर्णा जयंती	१२ दिसंबर, शुक्रवार
३८. शाकम्भरी जयंती	११ जनवरी, रविवार
३९. मकर संक्रांति	१४ जनवरी, बुधवार
४०. लाला लाजपत राय जं.	२८ जनवरी, बुधवार
४१. मेला जैसलमेर ३ दिन का	७ फरवरी, शनिवार
४२. मेला खाटू श्याम जी (२ दिन का)	७ से ८ मार्च शनिवार रविवार

पंचांग में किसी भी प्रकार की लेखकीय एवं संपादकीय त्रुटि की जिम्मेदारी मुद्रक, वितरक एवं प्रमुख विक्रेता की नहीं होगी।

श्रीविश्वविजय पंचांग-निर्माता को राज्य सरकार एवं सार्वजनिक संस्थाओं से अनेक गौरवपूर्ण उच्चस्तरीय सम्मानोपाधियां

''श्रीविश्वविजय पंचांग'' और ''ज्योतिष्मती'' के प्रधान सम्पादक संचालक पूज्य पिताश्री पं. श्रीहरदेव शर्मा त्रिवेदीजी को अर्द्धशताब्दी से अधिक उनकी अनवरत साहित्य-साधना से संतुष्ट होकर राजस्थान सरकार ने विगत ४ अगस्त, १९८२ को संस्कृत-दिवस समारोह पर जयपुर में तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री ओ.पी. मेहरा ने अभिवादन कर आपको पुरस्कार प्रशस्ति पत्र पुष्पमाला के साथ शाल भेंट कर सम्मानित किया। तदनन्तर गत २४ मार्च १९८५ को महाराणा-मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर नें राजमहल में आपको ५००१/- रुपये, उत्तरीय (शाल) और रजत मण्डित प्रशस्ति पत्र प्रदान कर हारीत ऋषि पुरस्कार से सम्मानित किया। इससे पूर्व भी पिताश्री को उनकी लम्बी निःस्वार्थ साधना एवं विद्वता से प्रभावित होकर भारत-धर्म-महामण्डल, काशी (वाराणसी) सनातन धर्म-दिग्विजयमण्डल, अखिल भारतीय संस्कृत-प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) आदि अनेक धार्मिक पीठों से पंडितभूषण, ज्योतिषमार्तण्ड, ज्योतिर्विज्ञानाचार्य, दैवज्ञ-शिरोमणि, समाजशिरोमणि आदि अनेक मानद उपाधियों एवं अभिनन्दन-पत्र प्राप्त हो चुके हैं। गत कुछ वर्षों से आपने नागरिक अभिनन्दन एवं उपाधि ग्रहण करना तथा सभा सम्मेलन में उपस्थित होना बन्द कर दिया है। फिर भी जो सार्वजनिक संस्थाएं आपके दिव्य गुणों से परिचित हैं वे बिना आपकी स्वीकृति के भी अभिनन्दन करते रहते हैं। गत दिसम्बर से अप्रेल ८७ तक आप जयपुर (मुख्यमंत्री निवास में) अस्वस्थ थे। उस समय पश्चिम बंगाल की विश्व उन्नयन संसद ने आपको ''डॉ. ऑफ एस्ट्रोलॉजी'' के सर्वोच्च मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसकी सूचना हिन्दी अंग्रेजी की कई पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी है। गत १४ अगस्त १९८७ के इंडियन कौंसिल ऑफ एस्ट्रोलॉजीकल साइंसेज मद्रास की दिल्ली शाखा ने भारतीय विद्या भवन नई दिल्ली में केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी द्वारा एक बहुमूल्य शाल, एक प्लेक और सुन्दर थैली में श्री फल पुरस्कार भेंट कर के सम्मानित किया।

दिनांक १ दिसम्बर, १९९० ई. को ''अखिल भारतीय ज्योतिष स्वाध्याय संस्था, दिल्ली'' में आयोजित एक विशाल भव्य समारोह में श्रीविश्वविजय पंचांग कर्ता (पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी) को उनकी ज्योतिष एवं भारतीय संस्कृति की पत्र-पत्रिकाओं द्वारा की जाने वाली अद्भुत सेवा से प्रसन्न होकर भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानीजैल सिंह जी ने 'ज्योतिष सम्राट' की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित किया।

दि. २८ फरवरी, १९९२ ई. को कुरुक्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ब्राह्मण सम्मेलन के मंच से जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ने ''ब्रह्मर्षि'' के सर्वोच्च अलंकरण से सम्मानित किया।

– पं. सुधाकर शर्मा त्रिवेदी

'श्रीविश्वविजय पंचांग' के प्रशंसक महापुरुष

'श्रीविश्वविजय पंचांग' पर भारत के प्रायः सभी गणमान्य विद्वानों, नेताओं, उच्चराज्याधिकारियों, धर्माचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने अपना अभिमत व्यक्त करके इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उन अनेक सम्मान्य महापुरुषों में से कुछ विशिष्ट महानुभावों के शुभ नाम मात्र यहां प्रकाशित कर रहे हैं—

महामहिम भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी। उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री और राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल स्व. डॉ. सम्पूर्णानन्द जी। उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय भूतपूर्व रेलमंत्री वयोवृद्ध राष्ट्र नेता स्व. श्री कमलापति त्रिपाठीजी, भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री चौधरी चरण सिंह जी। रा. स्व. सं. के भूतपूर्व सरसंघचालक स्व. श्री मा.सा. गोलवलकरजी। भूतपूर्व अजमेर मेरवाड़ राज्य के मुख्यमंत्री और राजस्थान के भूतपूर्व वित्त एवं शिक्षामंत्री स्व. श्री हरिभाऊजी उपाध्याय। भारत सरकार के भूतपूर्व राज्यमंत्री और संसद के सचेतक मध्य प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल स्व. श्री सत्यनारायण सिंह जी। लोक सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. श्री अनन्तशयनम् आयंगर। राजस्थान के दिवंगत भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री हीरालाल जी शास्त्री, श्री जयनारायण जी व्यास एवं राजस्थान के भूतपूर्व यशस्वी मुख्यमंत्री श्री हरिदेवजी जोशी, राजस्थान के पूर्व शिक्षा स्वास्थ्य वाणिज्य मंत्री एवं भूतपूर्व उद्योग पर्यटन विद्युत आदि के वरिष्ठ मंत्री श्री हीरालाल जी देवपुरा, उदासीन सम्प्रदाया आचार्य विश्व भर में वेद मंदिरों के प्रतिष्ठापक ११४ वर्षीय वयोवृद्ध विद्वान् सर्वतंत्र स्वतंत्र महामंडलेश्वर श्री १०८ स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज, अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर ''श्रीजी'' श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्यजी महाराज, वृन्दावन के परम तपस्वी संत वृज अकादमी के संस्थापक योगीराज परमपूज्य श्री १०८ श्रीपाद बाबा महाराज, बृजधाम गोकुल महावन रमणरेती श्री कार्ष्णिआश्रम के महान् विद्वान् तपस्वी संत महामण्डलेश्वर श्रद्धेय श्री १०८ स्वामी गुरु शरणानन्दजी महाराज, ब्रह्मलीन द्वारिका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य अनन्त श्री विभूषित अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ महाराज, परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी स्व. अखंडानन्दजी सरस्वती महाराज, ब्रह्मलीन ज्योतिपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज, श्री पीताम्बरापीठ दतिया के महान् संत योगीराज राष्ट्रकुलगुरु अनन्त श्री विभूषित परमशक्त मणिपुर वासी श्री स्वामीजी महाराज, श्री भुवनेश्वरी पीठाधीश गोंडल के मणिद्वीप वासी श्री १०८ आचार्य श्री चरणतीर्थ जी महाराज, स्व. महामहोपाध्याय पं. श्री गिरिधर शर्माजी चतुर्वेदी, कविकुलगुरु महामहोपाध्याय स्व. श्री पं. नारायण शास्त्री खिस्ते वाराणसी, स्व. श्री पं. गणपतिदेवजी शास्त्री पंचांगकर्त्ता काशी, स्व. त्यागमूर्ति १०८ गो. गणेशदत्तजी महाराज, रामभक्त स्व. श्री पं. कपीन्द्र जी महाराज, स्व. पद्मभूषण डॉ. सूर्यनारायणजी व्यास ज्योतिषाचार्य, स्व. श्री हनुमान प्रसादजी पोद्दार आद्य सम्पादक 'कल्याण' स्व. पं. सीतारामजी झा ज्योतिषाचार्य वाराणसी आदि।

ग्रहण विवरण विक्रम संवत् २०६५

संवत् २०६५ विक्रमी में भूमण्डल पर कुल तीन ग्रहण होंगे, जिनमें दो सूर्य ग्रहण होंगे तथा एक चन्द्र ग्रहण होगा। इसके अतिरिक्त एक मांद्य चन्द्र ग्रहण भी होगा जिसमें यद्यपि चन्द्र बिम्ब ग्रसित नहीं होगा किन्तु चन्द्र कान्ति किंचित मलिन होगी।

१. खग्रास सूर्य ग्रहण :- यह सूर्य ग्रहण श्रावण कृष्ण अमावस्या, शुक्रवार, दिनांक १ अगस्त २००८ ई. को होगा। भारत में सर्वत्र यह खग्रास सूर्य ग्रहण, खण्डग्रास स्वरूप में दिखाई देगा। संसार में यह सूर्य ग्रहण अधिकांश एशिया महाद्वीप, अधिकांश यूरोप, ग्रीनलैण्ड, उत्तरी ध्रुव, उत्तरी ध्रुवसागर, कनाडा के सुदूर उत्तरी भू-भाग में दृश्य होगा। जापान, पश्चिमी अरब प्रायद्वीप, पूर्वी सुमात्रा द्वीप, इंडोनेशिया, पुर्तगाल व पश्चिमी स्पेन में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। इस सूर्य ग्रहण की; जहाँ पर यह ग्रहण खग्रास दिखेगा 'वह पतली भू-पट्टिका' पूर्वी चीन से आरम्भ होकर, साइबेरिया, उत्तरी ध्रुवसागर व उत्तरी ध्रुव से होती हुई सुदूर उत्तरी कनाडा तक जाएगी। इस सन्दर्भ में परिलेख संख्या (१) का अवलोकन करें। परिलेख संख्या (२) में भारत में जहाँ-जहाँ पर सूर्यास्त के समय ग्रहण मोक्ष होगा क-ख रेखा द्वारा दर्शाया गया है। परिलेख (२) में क-ख रेखा के पूर्व दिशा में, दाईं ओर के स्थलों पर सूर्य ग्रस्तास्त होगा। अंडमान द्वीप समूह, मणिपुर प्रान्त में इम्फाल व इसके समीपवर्ती पूर्वी क्षेत्र अरुणाचल प्रदेश के सुदूर पूर्वी छोर पर स्थित वलोंग, तवाल, मनमाओ, चंगलांग, वक्का पर सूर्य ग्रस्तास्त होगा। सूर्य के ग्रस्तास्त होने के समय ग्रहण का पर्वकाल समाप्त हो जाएगा अत: श्रद्धालुजनों को स्नानकर लेना चाहिए किन्तु भोजन अगले दिन शुद्ध सूर्य बिम्ब के दर्शनोपरान्त करना उचित है। परिलेख-२ में भारतीय स्टै.टा. में ग्रहण स्पर्श का ज्ञान कराने वाली वक्र रेखाएं १० मिनट के अन्तराल पर लगाई गई हैं। ग्रहण मोक्ष को दर्शाने वाली ------ इस प्रकार की टूटी-टूटी रेखाएं ५ मिनट के अन्तराल पर लगाई गई हैं। आगे सारिणी-१ में भारत के पर्याप्त संख्या में प्रसिद्ध नगरों पर ग्रहण के स्पर्श, अधिकतम ग्रहण, मोक्ष, पर्वकाल, परमग्रास का विवरण दिया गया है। यदि आपका अभीष्ट स्थान इस तालिका में नहीं हो तब भी अभीष्ट स्थान के समीपवर्ती प्रसिद्ध नगर के स्पर्श-मोक्षादि के काल से पर्याप्त सूक्ष्मता से ग्रहण का आसन्न काल सरलता से जाना जा सकता है -

भूमण्डल पर इस खग्रास सूर्य ग्रहण के स्पर्श-मोक्षादि का विवरण

	घं.	मि.	रेखांश	अक्षांश
पृथ्वी पर ग्रहण प्रारंभ, स्पर्श	१३	३४	५२°१४.२' प.	५०°१२.४' उ.
पृथ्वी पर खग्रास प्रारम्भ	१४	५१	१००°५७' प.	६७°४८.१' उ.
पृथ्वी पर ग्रहण मध्य	१५	५१	३४°४४.५' पू.	८१°६.८' उ.
पृथ्वी पर खग्रास समाप्त	१६	५१	११३°१२.२' पू.	३२°४३.५' उ.
पृथ्वी पर ग्रहण समाप्त, मोक्ष	१८	०८	८५°३६.४' पू.	११°०९.९' उ.

परिलेख (३) में भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों पर अधिकतम ग्रहण (परमग्रास) के समय सूर्य-बिम्ब के चित्र तथा स्पर्श-मोक्ष बिन्दु दर्शाये गए हैं।

पुष्य, आश्लेषा नक्षत्र, कर्क राशि में होने वाला यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण कर्क राशि वालों के लिए अशुभ फलदायक है। अत: कर्क राशि वालों को यह सूर्य ग्रहण नहीं देखना चाहिए (बिना उचित फिल्टर, काला वैल्डिंग ग्लास के सूर्य ग्रहण देखने से नेत्रों को हानि होती है, अत: सीधी नंगी आँखों से सूर्य ग्रहण नहीं देखना चाहिए।) अन्य राशि वालों के लिए ग्रहण का फल कोष्ठक में दिया है। इस ग्रहण का सूतक ३१।७।२००८ गुरुवार रात्रि २८।०० अर्थात् ०१।९।२००८ ई. को प्रात: चार बजे आरम्भ हो जाएगा। सूतक काल की अवधि में समर्थ जनों को भोजनादि का निषेध है। बालक, वृद्ध व रोगियों के लिये यह नियम नहीं है। ग्रहण पर्व पर स्नानदान बहुत पुण्य फलदायक कहा गया है। स्कंद पुराण में वचन है कि "उपमर्दे लक्ष्ण गुणं ग्रहणेचंद्रसूर्ययो:। पुण्यं कोटि गुणं मध्ये मुक्तिकाले त्वनन्तकम्"।। अत: ग्रहण मोक्ष काल में स्नानदान का विशेष फल कहा गया है। इस ग्रहण के पर्व काल के अधिकांश समय में अग्निमण्डल नक्षत्र के होने से अग्नि का कोप, लोगों को नेत्र तथा अतिसार रोगों से पीड़ा वर्षा की कमी दूध एवं फलों के उत्पादन में कमी एवं स्त्रियों के गर्भ की हानि होगी। ग्रहण पर्व के कुछ भाग में वारुण मण्डल का नक्षत्र भी होने से अग्नि मण्डल जनित उपरोक्त अशुभ फलों में कुछ कमी होगी। "वन्हेर्गणे नेत्र रुजोअतिसारावृष्टयार्थहानिर्जवलन प्रकोप:। गावोअल्पदुग्धारत: रवो: अफला: स्युगर्भप्रंपाताश्च नितम्बिनिनाम"।।

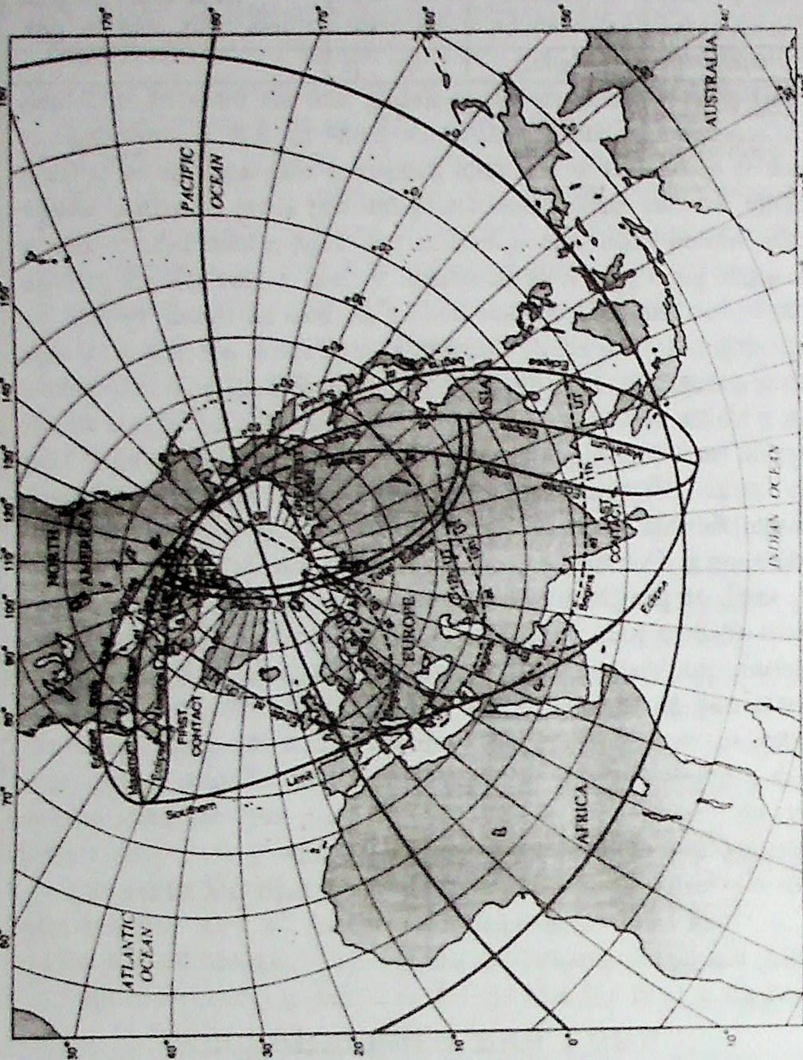
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	कष्ट	लाभ	हानि	भय/ पीड़ा	हानि	लाभ	शुभ	अशुभ	कष्ट	पति/ स्त्री कष्ट	शुभ	चिंता

इस खग्रास सूर्यग्रहण के ग्रहण मध्य काल के खगोलीय परिप्रेक्ष्य में उपस्थित योगायोगों का फल क्रमानुसार अग्रोल्लेखित है।

ग्रहण स्वामिचन्द्र होने से प्रजा में क्षेम कल्याण, विद्वानों को पीड़ा, वर्षा की कमी, धान्य तेज और सम्पूर्ण प्रकार की औषधियों का नाश जिससे किराना तेज होवे। दक्षिणायन में ग्रहण होने से ग्रहणोपरान्त तीन मास तक व्यापारियों, नौकरी पेशा, सेवा प्रदाता वर्ग के लोगों तथा भैंसों और हाथियों को पीड़ा तथा वह महंगे हो जाएं। वर्तमान सन्दर्भ में हाथियों का व्यावहारिक अर्थ यात्री और माल ढोने वाले वाहनों से लेना उचित होगा। श्रावण मास में ग्रहण होने से काश्मीर, पुलिंद, चीन, यवन देश, कुरुदेश, कन्धार, मध्य देश, कांबोज देश- इनका तथा शरद ऋतु में उत्पन्न होने वाले धान्यों का नाश किन्तु उपरोक्त क्षेत्रों को छोड़ कर अन्यत्र स्थानों पर धान्य की वृद्धि तथा मनुष्यों को आनन्द हो। शुक्रवार को ग्रहण होने से वायुवेग, वर्षा अधिक, धान्य भाव सामान्य,

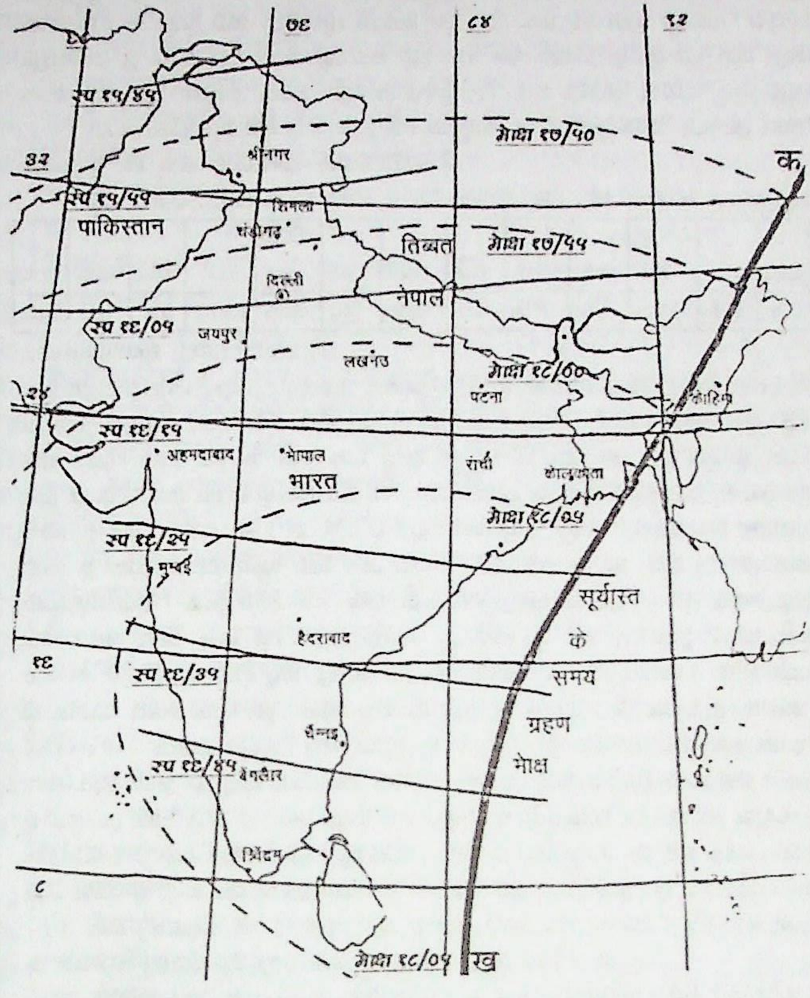
परिलेख - (१)

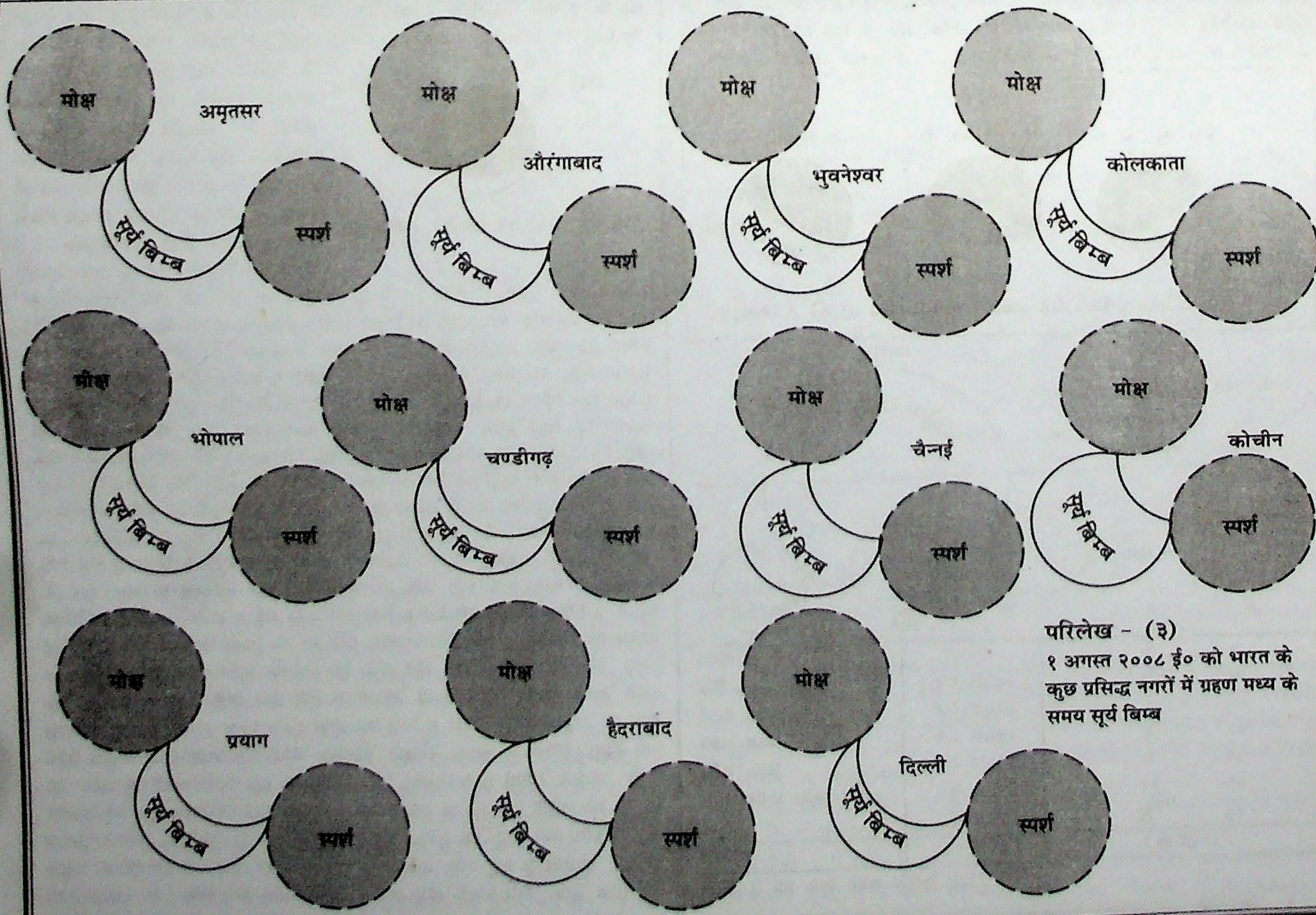
खग्रास सूर्य ग्रहण, दिनांक १ अगस्त २००८ ई०



परिलेख - (२)

भारतीय उपमहाद्वीप में खण्डग्रास दृश्य, सूर्य ग्रहण, दिनांक १ अगस्त २००८ ई०



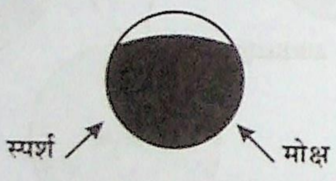


परिलेख - (३)
१ अगस्त २००८ ई० को भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में ग्रहण मध्य के समय सूर्य बिम्ब

शासकों को गहन पीड़ा तथा भरुच, कच्छ क्षेत्र में पीड़ा अन्यत्र सुख, चांदी, मोती तथा सफेद कपड़ों का भाव तेज। ग्रहण मध्य काल में पुष्य नक्षत्र होने से शासकों, सचिवों, स्त्रियों, साधुओं याज्ञिकों, जल से जीविका चलाने वालों को पीड़ा तथा चावल, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ में महर्घता होवे। भारत के तथा विश्व के पूर्व तथा दक्षिण पूर्व के क्षेत्र इस ग्रहण के प्रभावान्तर्गत होने से पीड़ित होंगे। विशेषरूप से बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश पूर्वोत्तर के आसाम, बांगलादेश, मेघालय, मणिपुर, नागालैण्ड इत्यादि। सिद्धि योग में ग्रहण होने से धातु के बर्तन बनाने वाले तथा साधु व सज्जन स्वभाव लोगों को कष्ट होवे। ग्रहण के समय कर्क राशि होने से आभीर, पल्व, शबर, मत्स्य, पंजाब, मल्ल संज्ञक क्षेत्रों व विकल-मनुष्य, गुरुजनों को पीड़ा और मजीठ, मोती, घृत, गुड़, तैल-इत्यादि में महर्घता होवे। पृथ्वी पर यह सूर्य ग्रहण खग्रास होने से व्यापार की समस्त वस्तुएं मंहगी होंगी। भारत में इस ग्रहण का स्पर्श नैऋत्य कोण में दृश्य होने से दुर्भिक्ष का भय, लोगों में निष्ठुरता और साधु पुरुषों को पीड़ा होवे। सूर्य बिम्ब के अपसव्य ग्रास होने से भारत में शासकों के द्वारा जनसाधारण प्रताड़ित, पीड़ित, दुर्भिक्ष का भय, चोरों की पीड़ा, अग्निकांड, रोगभय और वर्षा की कमी होवे। इस ग्रहण के समय बुध व शुक्र के ग्रहण की कर्क राशि में अवस्थिति के कारण से वह ग्रस्त है। बुध के ग्रस्त होने से अन्तरवेदी देश, सरयू नदी के तटवर्ती क्षेत्र, नेपाल, पूर्व दिशा के समुद्रवर्ती क्षेत्र, शोण (ब्रह्मपुत्र) नदी का तटवर्ती क्षेत्र, स्त्रियां, शासक, बालक और विद्वानों को पीड़ा होवे। इस ग्रहण का मोक्ष ईशान कोण में होने से वामहनु नामक मोक्ष है। फलतः शासकों की सन्तानों को भय, मुख के रोग, युद्ध व सशस्त्र संघर्ष का उपद्रव और सुभिक्ष होवे। यह सूर्य ग्रहण खग्रास होने से इसका प्रभाव आगामी छः मास तक रहेगा अर्थात् कर्क राशि पर १५°३३' पर स्थित बिन्दु अगले छः मास तक सक्रिय रहेगा। इस कथन का आशय यह है कि भचक्र में पूर्वोक्त बिन्दु अगले छः महीने तक एक ग्रह की तरह आचरण करेगा तथा जब-जब भी पूर्वोक्त बिन्दु से अन्यान्य 'ग्रह', योग-प्रतियोग इत्यादि करेंगे तो अपना शुभाशुभ फल देंगे।

खण्डग्रास चन्द्र ग्रहणः- श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, शनिवार, दिनांक १६ व १७ अगस्त की मध्यवर्ती रात्रि में सन् २००८ ई. को होगा। यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण अधिकांश एशिया महाद्वीप, आस्ट्रेलिया, यूरोप, अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप में दिखाई देगा। यद्यपि यह

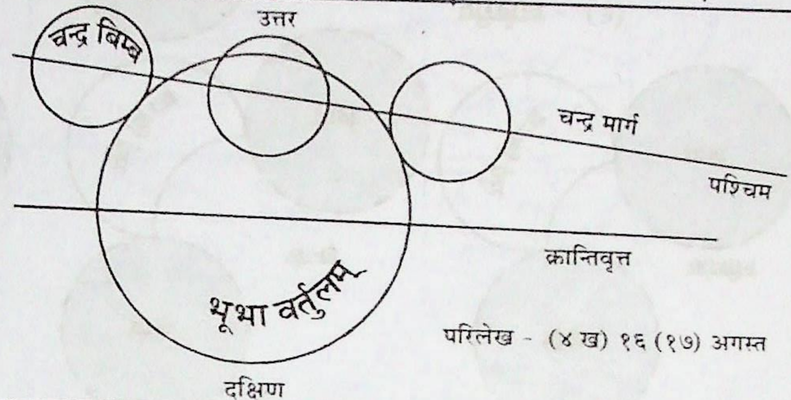
परिलेख - (४ क) १६ (१७) अगस्त



चन्द्रग्रहण खण्डग्रास है तथापि चन्द्र बिम्ब के अधिकांश भाग (परमग्रास ०.८१२) के ग्रसित होने से महत्वपूर्ण है। इस चन्द्र ग्रहण का विवरण ...

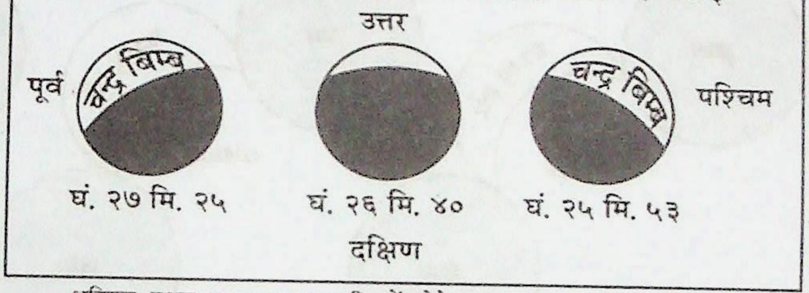
भारत में यह चन्द्र ग्रहण दिखाई देगा।

विवरण	२००८ ई.	(भा.स्टै.टा.)	
	दिनांक	घं.	मि.
चन्द्र कान्ति मालिन्यारम्भ	१६ अगस्त	२३	५३
ग्रहण स्पर्श	१७ अगस्त	१	०६
ग्रहण मध्य	१७ अगस्त	२	४०
ग्रहण मोक्ष	१७ अगस्त	४	१५
शुद्ध चन्द्र कान्ति	१७ अगस्त	५	२७
पर्वकाल		३	९



परिलेख - (४ ख) १६ (१७) अगस्त

परिलेख - (४ ग) ग्रासमान चन्द्र ग्रहण १६(१७) अगस्त २००८ ई०



धनिष्ठा नक्षत्र मकर-कुम्भ राशि में होने वाला यह चन्द्रग्रहण इस नक्षत्र राशि वालों को हानिप्रद होने से नहीं देखना चाहिए। अन्य राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल ... में है। दो राशियों में ग्रहण के होने से मिश्रित फल शुभ-अशुभ दोनों

चन्द्रग्रहण खण्डग्रास है तथापि चन्द्र बिम्ब के अधिकांश भाग (...) के ग्रसित होने से महत्वपूर्ण है। इस चन्द्र ग्रहण का विवरण आगे दिया गया है। सम्पूर्ण

... चाहिए। अन्य राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल कोष्ठक में है। दो राशियों में ग्रहण के होने से मिश्रित फल शुभ-अशुभ दोनों

प्रकार के फल इस चन्द्रग्रहण से होंगे। इस ग्रहण का सूतक शनिवार सायं ०४ बजाकर ०६ मिनट पर आरम्भ हो जाएगा। सूतक की अवधि में समर्थजनों को भोजनादि का निषेध है। माहेन्द्र मण्डल के नक्षत्र में यह चन्द्रग्रहण होने से कृषि उत्पादन में वृद्धि, वर्षा पर्याप्ति, स्त्रियों को सुख तथा शासक व प्रजा को आनन्द होता है। सूर्य ग्रहण होने के एक पक्ष बाद चन्द्रग्रहण होने का शास्त्र में शुभ फल कहा गया है। श्रावण कृष्ण अमावस्या एक अगस्त को सूर्य ग्रहण होने के बाद यह चन्द्रग्रहण हो रहा है। अत: यज्ञों की वृद्धि, विद्वानों का सत्कार, धर्म का प्रचार तथा जगत में आनन्द होता है। ''रविग्रहाच्च पक्षान्ते यदि चन्द्रग्रहो भवेत् तदा दर्शनिनो पूजा धर्मवृद्धिर्महोदय:''।। इस ग्रहण की स्पर्श, मोक्ष दिशा एवं ग्रासमान परिलेख (४) में दिया हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	शुभ/ लाभ	शुभ/ अशुभ	अशुभ/ पीड़ा	कष्ट/ चिंता	स्त्री/ पति चिंता	चिंता	चिंता/ कष्ट	कष्ट/ लाभ	लाभ/ हानि	भय/ हानि	भय/ हानि	हानि/ लाभ

इस खण्डग्रास चन्द्रग्रहण के 'ग्रहण मध्यकाल में' उपस्थित खगोलस्थ योगायोगों का फल क्रमानुसार इस प्रकार है :-

इस ग्रहण का प्रभाव आगामी चार मास २६ दिन पर्यन्त रहेगा अर्थात भचक्र में कुम्भ राशिस्थ ०°१७' पर स्थित बिन्दु आगामी लगभग पांच महीने तक सजीव और सक्रिय रहेगा। आकाश में संक्रमण करते हुए जब-जब अन्यान्य ग्रह पूर्वोक्त बिन्दु से योग-प्रतियोग आदि करेंगे तब-तब अपना-अपना शुभाशुभ फल देंगे। चन्द्रमा ग्रहण का स्वामी होने से जनता में सुख-शांति, उच्च शिक्षितों को कष्ट, वर्षा की कमी, अनाज महंगे तथा सब प्रकार की औषधियों की क्षति होवे। दक्षिणायन में इस ग्रहण के होने से ३ मास तक व्यापारियों, सेवा क्षेत्र के लोगों, भैंसों को पीड़ा और व्यापारिक वाहन महंगे होने की सम्भावना रहेगी। श्रावण मास में यह ग्रहण होने से काश्मीर, पुलिंद, चीन, यवन देश, कुरुदेश, कन्धार, मध्य देश, कांबोज, एकपाद देश- इनका तथा शरद ऋतु में होने वाले अनाजों की हानि किन्तु पूर्वोक्त क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्यत्र स्थानों में धान्य की वृद्धि तथा मनुष्यों को आनन्द होवे। इस खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण के दिन शनिवार होने से सिन्ध तथा सौराष्ट्र क्षेत्र में अनाज तेज, चोरों का उपद्रव, राज्य के मंत्रियों को कष्ट, ज्वार तथा अफीम आदि कृष्ण वर्ण की वस्तुएं तेज और पीले तथा नारंगी वस्त्र, तांबा आदि संग्रह करने से २ मास में लाभ होवे। इस चन्द्र ग्रहण के दिन शनिवार के विशेष वार फलानुसार अलसी, सरसों, अरण्डी, तिल आदि का संग्रह करने से ६ मास पीछे लाभ होवे। इस ग्रहण के समय धनिष्ठा नक्षत्र होने से नपुंसक, सम्मान रहित, चंचल चित्त, स्त्री द्वेषि, शमपरायण, धनी और दानी लोगों को पीड़ा तथा चोरों और अग्नि का उपद्रव होवे। **भारत के वायव्य कोण (उत्तर पश्चिम) में स्थित क्षेत्रों- राजस्थान, कुरुक्षेत्र, सिन्धु नदी के तटवर्ती क्षेत्र, हिमाचल में कुल्लु व सतलुज नदी के तटवर्ती क्षेत्र, तिब्बत,** पाकिस्तान के बलख-बदक्शां, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान में दुर्भिक्ष, युद्ध, महामारी, चोर, अग्निकाण्ड, बम-विस्फोट आदि उपद्रवों की पीड़ा होवे। सेवा नौकरी करने वालों को अनेक प्रकार के कष्ट और पीड़ा हो। शोभन योग में ग्रहण होने से शासकों, सचिवों, दैवज्ञों, वेदपाठी और अवन्ति (मालवा) क्षेत्र को पीड़ा होवे। मकर और कुम्भ राशि में इस चन्द्र ग्रहण के होने से मछलियों, ऊँट, हाथी, प्रशासक, सचिव, अनुसूचित जाति के लोग, मन्त्रज्ञ, वनस्पति व वनौषधिवेत्ता, सशस्त्र सैन्य बलों के सैनिक, गिरिजन, पश्चिम देश वासी दरद, आभीर, बर्बर देश के लोग और दक्षिणी क्षेत्र के लोगों को पीड़ा होवे। इस चन्द्र ग्रहण के तीसरे खांश में स्पर्श होने से म्लेछ, चतुर्थ श्रेणी के सेवक, सचिव आदि को कष्ट, मध्य देश के शासनाध्यक्ष को पीड़ा और कांसी तथा कतीर का भाव तेज हो। इस ग्रहण का मोक्ष छठे खांश में होने से स्त्रियों, नौकरी पेशा लोगों को लाभ और पान, सोना, रत्न, कपूर, केसर आदि के भाव मन्दे हो जाएं। इस चन्द्रग्रहण का स्पर्श वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम) में होने से प्रचण्ड झंझावात, चक्रवात की सम्भावना रहेगी तथा खण्डवृष्टि होवे। वामहनु में ग्रहण का मोक्ष होने से शासकों की सन्तान को भय, मुख के रोग, सशस्त्र संघर्ष का उपद्रव तथा सुभिक्ष होवे।

कङ्कण सूर्य ग्रहण :- यह सूर्य ग्रहण माघ कृष्ण अमावस्या सोमवार 'चूड़ामणि योगयुक्त' दि. २६ जनवरी २००९ ई. को होगा। पृथ्वी पर यह सूर्य ग्रहण आस्ट्रेलिया, हिन्द महासागर, दक्षिणी अन्ध महासागर, इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स, दक्षिण पूर्वी चीन, वियतनाम, थाईलैण्ड, म्यामार, भारत के पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्र, श्रीलंका, मडागास्कर, अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित दक्षिण अफ्रीका, बोत्सवाना, नामीबिया, जिम्बावे, मोजाम्बिक और उत्तरी अण्टार्कटिका में दिखाई देगा। इस सन्दर्भ में परिलेख ५ का अवलोकन करें। इस सूर्यग्रहण की कङ्कणाकृति परिलेख में दर्शाई गई 'पतली भू-पट्टिका' जोकि मुख्यतया हिन्दमहासागर से होकर जाएगी- पर दृश्य होगी। शेष सब स्थानों पर यह सूर्यग्रहण खण्डग्रास दिखाई देगा। भारत के पूर्वांचल में तथा दक्षिणी भारत में भी यह ग्रहण खण्डग्रास दृश्य होगा।

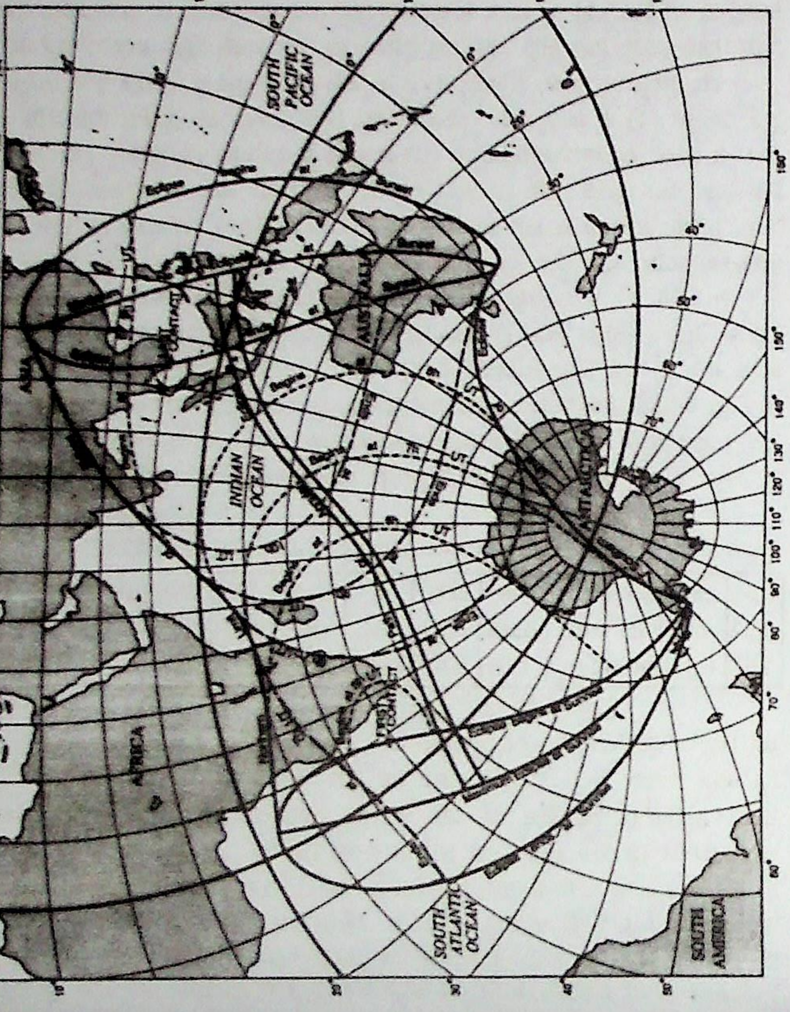
परिलेख-६ में भारत के मानचित्र में दर्शायी गई ग-घ रेखा से नीचे के दक्षिणी और पूर्वी ओर के क्षेत्रों में यह सूर्य-ग्रहण खण्डग्रास दिखाई देगा। इस परिलेख में ग्रहण स्पर्श की परिचायक अखण्डित वक्र रेखाएं १५-१५ मिनट के अन्तराल पर लगायी गई हैं। ग्रहण मोक्ष की दर्शाने वाली ----- इस प्रकार की खण्डित वक्र रेखाएं १० मिनट के अन्तराल पर लगाई गई हैं।

ग-घ रेखा ग्रहण की उत्तर मर्यादा की परिचायक हैं। अर्थात इस रेखा के ऊपर की ओर के उत्तरी क्षेत्र में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

सारिणी-२ में भारत के पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्र में स्थित कुछ प्रसिद्ध नगरों पर इस खण्डग्रास सूर्यग्रहण के स्पर्श, अधिकतम ग्रहण, मोक्ष, पर्वकाल और परमग्रास का

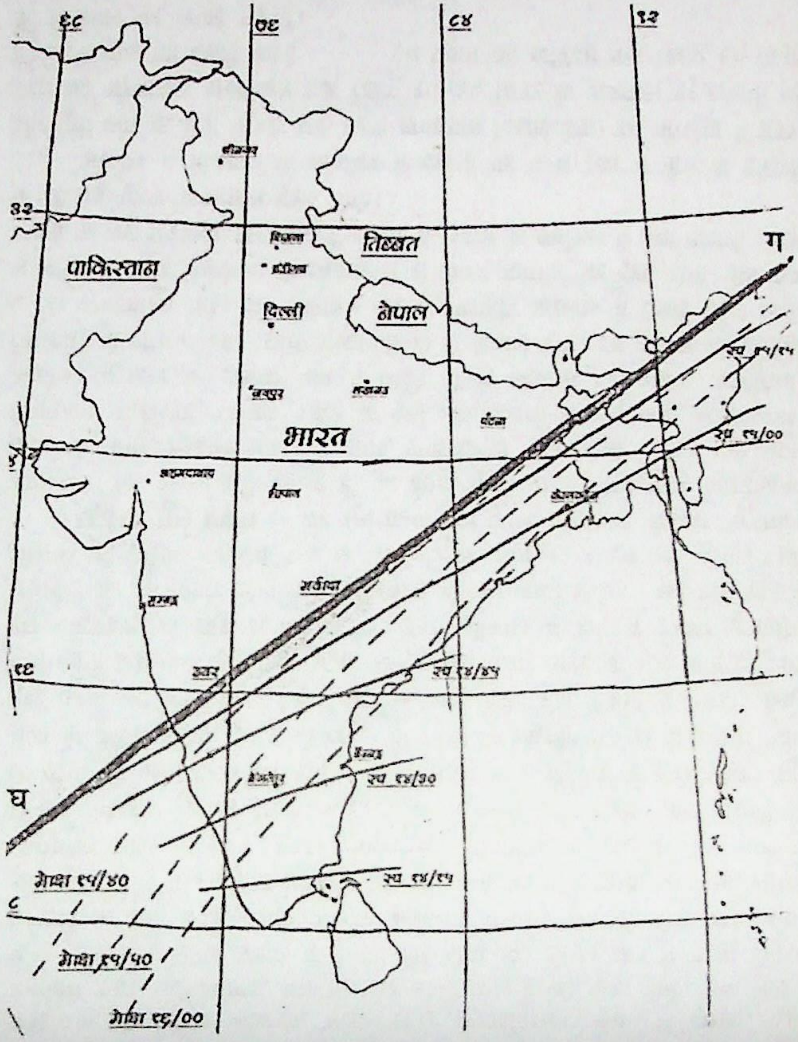
परिलेख - (५)

कङ्कण सूर्य ग्रहण दिनांक २६ जनवरी २००९ ई०



परिलेख - (६)

भारत में खण्डग्रास दृश्य, सूर्य ग्रहण, दिनांक २६ जनवरी २००९ ई०



विवरण दिया गया है। स्पर्श-मोक्षादिकाल भारतीय स्टै.टा. में है। यदि आपका अभीष्ट स्थान इस तालिका में नहीं है तब भी उस स्थान के समीपवर्ती उल्लेखित प्रसिद्ध नगर के स्पर्श-मोक्षादि समय में बिना कुछ भी परिवर्तन किए, ग्रहण का सन्निकट काल अनायास जाना जा सकता है।

भू-मण्डल पर इस कङ्कण सूर्य ग्रहण के होने से इसका प्रभाव आगामी छह महीने तक रहेगा। भचक्र में मकर राशिस्थ १२°३१' पर स्थित बिन्दु अग्रिम ६ महीने तक सजीव और सक्रिय रहेगा। आकाश में संचरण करते हुए जब-जब अन्यान्य ग्रह पूर्वोक्त बिन्दु से योग-प्रतियोग करेंगे तब-तब अपना शुभाशुभ फल देंगे। यद्यपि इस सूर्य ग्रहण के कङ्कणाकृति होने से विश्व पर इसका गहरा प्रभाव पड़ेगा तथापि भारत के केवल दक्षिणी और पूर्वी भू-भाग में इस ग्रहण के खण्डग्रास रूप में दिखाई देने तथा उनमें भी अधिकांश क्षेत्रों में परमग्रास (सूर्यबिम्ब के आच्छादन) के बहुत कम होने से ग्रहण का फल नगण्य होगा। अतः इस ग्रहण की समयावधि में विद्यमान खगोलस्थ योगायोगों का विस्तृत विवरण देना अनावश्यक है। यह ग्रहण श्रवण नक्षत्र में हो रहा है। ग्रहण मांघ मास में होने से मातृ-पितृ भक्त जनों, धार्मिक क्षेत्र से सम्बन्धित लोगों विद्यार्थियों, सज्जन व्यक्तियों तथा वाहनों को कष्ट और हानि होवे। बंग, अंग, काशी क्षेत्रों में अशान्ति क्लेश होता है। इस ग्रहण का नेष्ट प्रभाव पृथ्वी व भारत के वायव्य (उत्तर-पश्चिमी) कोण में अधिकाधिक अनुभव होगा। भारतीय उपमहाद्वीप में राजस्थान, हरियाणा, सतलुज नदी घाटी का क्षेत्र, सिन्धु नदी के तटवर्ती क्षेत्र, तिब्बत, पाकिस्तान में बलूचिस्तान, पख्तूनिस्तान, मद्र देश (रावी और झेलम नदी का मध्यवर्ती क्षेत्र) में इस ग्रहण का अशुभ फल होगा।

इस ग्रहण का सूतक २५ जनवरी २००९ को २६ घं. ०९ मिनट पर आरम्भ होगा। सूतक की अवधि में समर्थजनों को भोजनादि का निषेध है। बाल, वृद्ध व रोगियों के लिये यह नियम नहीं है। मकर राशि श्रवण नक्षत्र में ग्रहण होने से इस राशि नक्षत्र वालों को यह ग्रहण अशुभफलदायक होने से नहीं देखना चाहिए। अन्य राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार है-

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	कष्ट	लाभ	हानि	भय/पीड़ा	हानि	लाभ	शुभ	अशुभ	कष्ट	पति/स्त्री कष्ट	शुभ	चिंता

मांद्य चन्द्रग्रहण :- माघ शुक्ल पूर्णिमा सोमवार दिनांक ९ फरवरी २००९ ई. को यह आकाशीय योग घटित होगा। इस दिन चन्द्रबिम्ब ग्रसित नहीं होगा किन्तु चन्द्रमा के पृथ्वी की उपच्छाया (विरल छाया) में संचारित होने के कारण चन्द्र कान्ति कुछ मलिन होगी। भारतीय समयानुसार चन्द्रकांति मालिन्यारम्भ (मांद्य स्पर्श) १८ घं. ७ मि., चन्द्रकान्ति मालिन्य मध्य (मांद्य मध्य) २० घं. २ मि., शुद्ध चन्द्र कांति (मांद्य मोक्ष) २२ घं. १० मि. पर होगी। चन्द्रबिम्ब ग्रसित नहीं होगा अतः इस योग का सूतक नहीं होगा परन्तु साधक, उपासकजनों के लिए जप, मन्त्रानुष्ठान, तान्त्रिक साधना के लिए यह समय ग्रहण की भाँति उपयोगी है।

सारिणी-१

१ अगस्त २००८ ई. को खग्रास सूर्य ग्रहण के भा.स्टै.टा. में स्पर्श मोक्षादि काल का विवरण

नगर नाम	ग्रहण स्पर्श		अधिकतम ग्रहण		ग्रहण मोक्ष		पर्वकाल		परमग्रास सूर्यबिम्ब=१
	घं.	मि.	घं.	मि.	घ.	मि.	घं.	मि.	
अबोहर	१५	५९	१६	५९	१७	५४	१	५५	०.६१
आगरा	१६	०७	१७	०५	१७	५८	१	५१	०.६१
अगरतला	१६	१५	१७	१०	१८	०१	१	४६	०.६९
अहमदाबाद	१६	१६	१७	११	१८	०१	१	४५	०.४६
इडुकी	१६	५२	१७	३०	१८	०६	१	१४	०.२३
इम्फाल	१६	१४	१७	०८	ग्रस्तास्त		-	-	०.७३
इन्दौर	१६	१७	१७	१२	१८	०२	१	४५	०.५०
इटानगर	१६	०९	१७	०५	१७	५७	१	४८	०.७७
उदयपुर	१६	०५	१७	०४	१७	५७	१	५२	०.५८
उज्जैन	१६	१६	१७	११	१८	०२	१	४६	०.५०
आईजोल	१६	१५	१७	१०	१८	००	१	४५	०.७०
अजमेर	१६	०८	१७	०६	१७	५८	१	५०	०.५५
अकोला	१६	२२	१७	१५	१८	०४	१	४२	०.४७
अलीगढ़	१६	०५	१७	०४	१७	५८	१	५३	०.६२
अलवर	१६	०६	१७	०४	१७	५८	१	५२	०.५९
अमरावती	१६	२२	१७	१५	१८	०४	१	४२	०.४९
अमृतसर	१६	५६	१६	५७	१७	५३	१	५७	०.६४
अहमदनगर (महा.)	१६	२७	१७	१७	१८	०४	१	३७	०.४१
आजमगढ़	१६	१०	१७	०७	१८	००	१	५०	०.६५
औरंगाबाद	१६	२५	१७	१६	१८	०४	१	३९	०.४३
कांचीपुरम	१६	४२	१७	२६	१८	०८	१	२६	०.३३
कांगड़ा (हि.प्र.)	१५	५५	१६	५६	१७	५२	१	५७	०.६७
कानपुर	१६	०९	१७	०७	१७	५९	१	५०	०.५३
कन्याकुमारी	१६	५७	१७	३२	१८	०५	१	०८	०.२०
कपूरथला (पंजाब)	१५	५६	१६	५७	१७	५३	१	५७	०.६५

कारगिल (काश्मीर)	१५	४९	१६	५२	१७	४९	२	००	०.७१
कराइकल (पांडिचेरी)	१६	४७	१७	२८	१८	०८	१	२१	.२९
करीम नगर	१६	२८	१७	१९	१८	०६	१	३८	०.४५
कटक	१६	२२	१७	१६	१८	०५	१	४३	०.५७
काशी	१६	१२	१७	०९	१८	०१	१	४९	०.६३
काठमांडू (नेपाल)	१६	०७	१७	०५	१७	५८	१	५१	०.७०
काजीकोड	१६	४८	१७	२८	१८	०६	१	१८	०.२५
कोहिमा	१६	१२	१७	०७	१७	५८	१	४६	०.७५
कोकराझार	१६	१०	१७	०७	१७	५९	१	४९	०.७३
कोल्हापुर	१६	३३	१७	२१	१८	०५	१	३२	०.३५
कोलकाता	१६	१८	१७	१२	१८	०३	१	४५	०.६४
कोरापुट	१६	२६	१७	१८	१८	०६	१	४०	०.५०
कोटा (राज.)	१६	११	१७	०८	१८	००	१	४९	०.५४
कुल्लू (हि.प्र.)	१५	५५	१६	५७	१७	५३	१	५८	०.६८
कूरनूल	१६	३४	१७	२२	१८	०७	१	३३	०.३८
कुरुक्षेत्र	१६	००	१७	००	१७	५५	१	५५	०.६४
कुडप्पा	१६	३८	१७	२४	१८	०७	२१	२९	०.३६
कोयम्बटूर	१६	४८	१७	२९	१८	०६	१	१८	०.२६
कोच्चि	१६	५२	१७	३०	१८	०६	१	१४	.०.२२
खांडवा	१६	१९	१७	१३	१८	०३	१	४४	०.४८
गंगटोक	१६	०८	१७	०५	१७	५८	१	५०	०.७३
गंटकल	१६	३६	१७	२३	१८	०७	१	३१	०.३६
गया	१६	१३	१७	०९	१८	०१	१	४८	०.६४
गुवाहाटी	१६	११	१७	०७	१७	५८	१	४७	०.१४
ग्वालियर	१६	०९	१७	०७	१७	४९	१	५०	०.४९
गुलबर्गा	१६	३१	१७	२०	१८	०६	१	३५	०.४०
चंडीगढ़	१५	५८	१६	५९	१७	५४	१	५६	०.६५
चम्बा (हि.प्र.)	१५	५४	१६	५५	१७	५२	१	५८	०.६८
चाइबासा	१६	१८	१७	१३	१८	०३	१	४५	०.६१
चित्रदुर्ग	१६	३९	१७	२४	१८	०६	१	२७	०.३२
चेन्नई	१६	४१	१७	२६	१८	०८	१	२७	०.३५
चौमू	१६	०६	१७	०५	१७	५८	१	५२	०.५८
चुरू	१६	०३	१७	०३	१७	५७	१	५४	०.५९
जमशेदपुर	१६	१७	१७	१२	१८	०३	१	४६	०.६२
जम्मू	१५	५३	१६	५५	१७	५१	१	५८	०.६६
जयपुर	१६	०७	१७	०५	१७	५८	१	५१	०.५७
जबलपुर	१६	१६	१७	१२	१८	०३	१	४७	०.५६
जैसलमेर	१६	०६	१७	०४	१७	५७	१	५१	०.५१
जोधपुर	१६	०८	१७	०५	१७	५८	१.	५०	०.५३
झांसी	१६	११	१७	०८	१८	००	१	४९	०.५८
टौंक	१६	०९	१७	०६	१७	५९	१	५०	०.५६
डिब्रूगढ़	१६	०९	१७	०४	१७	५६	१	४७	०.७९
डूंगरपुर	१६	१४	१७	१०	१८	००	१	४६	०.४९
ढाका (बांगला देश)	१६	१६	१७	१०	१८	०१	१	४५	०.६८
तंजावुर	१६	४८	१७	२९	१८	०७	१	१९	०.२८
तूतीकोरिन	१६	५४	१७	३१	१८	०६	१	१२	०.२२
तिरुवनन्तपुरम	१६	५६	१७	३२	१८	०५	१	०९	०.२०
दरभंगा	१६	१०	१७	०७	१८	००	१	५०	०.६८
दार्जिलिंग	१६	०९	१७	०६	१७	५८	१	४९	०.७२
द्वारिका	१६	१९	१७	११	१७	५९	१	४०	०.३९
दिल्ली	१६	०३	१७	०२	१७	५७	१	५४	०.६२
देहरादून	१६	००	१७	००	१७	५५	१	५५	०.६६
धनबाद	१६	१५	१७	११	१८	०२	१	४७	०.६४
धुले	१६	२२	१७	१५	१८	०३	१	४१	०.४४
नागरकोइल	१६	५७	१७	३२	१८	०५	१	०८	०.१९
नागपुर	१६	२१	१७	१५	१८	०४	१	४३	०.५१
नागौर	१६	०६	१७	०४	१७	५७	१	५१	०.५५
नैनीताल	१६	०२	१७	०२	१७	५६	१	५४	०.६६
नांदेड़	१६	२६	१७	१८	१८	०५	१	३९	०.४४
नासिक	१६	२४	१७	१६	१८	०३	१	३९	०.४१
नेल्लोर	१६	३७	१७	२४	१८	५७	२	२०	०.३७
पणजी (गोवा)	१६	३७	१७	२३	१८	०५	१	२८	०.३२
पटना	१६	११	१७	०८	१८	००	१	४९	०.६६
पटियाला	१५	५९	१	५९	१७	५५	१	५६	०.६४
पाली	१६	०९	१७	०६	१७	५९	१	५०	०.५२
पोर्ट ब्लेयर	१६	३९	१७	२५	ग्रस्तास्त		-	-	०.४४
प्रतापगढ़	१६	१४	१७	१०	१८	०१	१	४७	०.५१
प्रयाग	१६	११	१७	०८	१८	०१	१	५०	०.६२
पुणे	१६	२८	१७	१८	१८	०४	१	३६	०.३९
पुरी	१६	२४	१७	१७	१८	०५	१	४१	०.५५

फिरोजपुर (पं.)	१५	५७	१६	५८	१७	५३	१	५६	०.६३
बद्रीनाथ	१५	५९	१६	५९	१७	५४	१	५५	०.६९
बागेश्वर	१६	०१	१७	०१	१७	५६	१	५५	०.६७
बेंगलुरू	१६	४२	१७	२६	१८	०७	१	२५	०.३१
बांकुड़ा (प.बं.)	१६	०७	१७	१२	१८	०२	१	५५	०.६४
बांसवाड़ा	१६	१५	१७	१०	१८	०१	१	४६	०.४८
बारामूला (का.)	१५	४९	१६	५२	१७	४९	२	००	०.६८
बारमेड़	१६	०९	१७	०६	१७	५८	१	४९	०.४९
बेलगाम	१६	३५	१७	२२	१८	०५	१	३०	०.३४
बेल्लारी	१६	३७	१७	२३	१८	०६	१	२९	०.३५
बेतूल	१६	११	१७	१३	१८	०३	१	४४	०.५१
ब्यावर	१६	०९	१७	०६	१७	५९	१	५०	०.५३
बीजापुर	१६	३२	१७	२१	१८	०६	१	३४	०.३७
बीकानेर	१६	०४	१७	०३	१७	५६	१	५२	०.५६
भरतपुर	१६	०७	१७	०५	१७	५८	१	५१	०.६०
भागलपुर	१६	१२	१७	०९	१८	०१	१	४९	०.६६
भीलवाड़ा	१६	१०	१७	०७	१७	५९	१	४९	०.५३
भिवानी	१६	०३	१७	०२	१७	५६	१	५३	०.६१
भूसावल	१६	२२	१७	१५	१८	०३	१	४१	०.४६
भुवनेश्वर	१६	२३	१७	१६	१८	०५	१	४२	०.५६
भोपाल	१६	१६	१७	११	१८	०२	१	४६	०.५३
मथुरा	१६	०६	१७	०५	१७	५८	१	५२	०.६१
मन्दसौर	१६	१४	१७	१०	१८	०१	१	४७	०.५१
मल्लापुरम (केरल)	१६	४९	१७	२९	१८	०६	१	१७	०.२४
माहे	१६	४७	१७	२८	१८	०६	१	१९	०.२६
मदुरै	१६	५१	१७	३०	१८	०७	१	१६	०.२५
मंगलौर	१६	४४	१७	२६	१८	०६	१	२२	०.२७
मुम्बई	१६	२७	१७	१७	१८	०३	१	३६	०.३८
मैसूर	१६	४५	१७	२७	१८	०६	१	२१	०.२८
रायचूर (कर्नाटक)	१६	३४	१७	२२	१८	०६	१	३२	०.३८
रायगंज (प.बं.)	१६	१२	१७	०८	१८	००	१	४८	०.६९
रायपुर (छत्तीसगढ़)	१६	२१	१७	१५	१८	०४	१	४३	०.५४
राजकोट	१६	१८	१७	१२	१८	००	१	४२	०.४२
रामेश्वरम	१६	५२	१७	३०	१८	०७	१	१५	०.२५
रांची (झारखंड)	१६	१६	१७	११	१८	०२	१	४६	०.६२

राउरकेला	१६	१९	१७	१३	१८	०३	१	४४	०.६०
लखनऊ	१६	०८	१७	०६	१७	५९	१	५१	०.६४
लुधियाना (पं.)	१५	५७	१६	५८	१७	५४	१	५७	०.६५
लेह (का.)	१५	५१	१६	५३	१७	५०	१	५९	०.७२
बड़ोदरा	१६	१८	१७	१२	१८	०२	१	४४	०.४५
बलसाड़	१६	२३	१७	१५	१८	०३	१	४०	०.४२
बसई	१६	२६	१७	१७	१८	०३	१	३७	०.३९
वेरावल	१६	२२	१७	१४	१८	०१	१	३९	०.३८
विदिशा	१६	१५	१७	११	१	०२	१	४७	०.५४
विजयनगरम्	१६	२८	१७	१९	१८	०६	१	३८	०.४९
वारंगल	१६	२९	१७	१९	१८	०६	१	३७	०.४५
विजयवाड़ा	१६	३२	१७	२१	१८	०७	१	३५	०.४३
विशाखापट्टनम्	१६	२९	१७	२०	१८	०७	१	३८	०.४८
वैष्णोदेवी	१५	५२	१६	५४	१७	५१	१	५९	०.६७
वेल्लोर	१६	४२	१७	२६	१८	०७	१	२५	०.३३
शिलांग	१६	१२	१७	०८	१७	५९	१	४७	०.७३
शिमला	१५	५८	१६	५८	१७	५४	१	५६	०.६६
शिमोगा	१६	४१	१७	२५	१८	०६	१	२५	०.३१
शोलापुर	१६	३०	१७	२०	१८	०५	१	३५	०.३९
शहडोल	१६	१६	१७	१२	१८	०३	१	४७	०.५८
सागर	१६	१५	१७	११	१८	०२	१	४७	०.५५
सलेम	१६	४६	१७	२८	१८	०७	१	२१	०.२९
सांगली	१६	३३	१७	२१	१८	०५	१	३२	०.३६
सरदार शहर	१६	०३	१७	०२	१७	५६	१	५३	०.५८
सवाईमाधोपुर	१६	०९	१७	०७	१७	५९	१	५०	०.५६
सीधी	१६	१४	१७	१०	१८	०२	१	४८	०.६०
सीकर	१६	०५	१७	०४	१७	५७	१	५२	०.५८
सीरोही	१६	१२	१७	०८	१७	५९	१	४७	०.५०
सिरसा	१६	०१	१७	००	१७	५५	१	५४	०.६१
सूरत	१६	२१	१७	१४	१८	०२	१	४१	०.४३
सोलन	१५	५८	१६	५९	१७	५४	१	५६	०.६६
श्रीनगर (का.)	१५	५०	१६	५२	१७	४९	१	५९	०.६८
श्रीगंगानगर	१५	५९	१६	५९	१७	५४	१	५५	०.६०
हरिद्वार	१६	००	१७	००	१७	५५	१	५५	०.६६
होशंगाबाद	१६	१७	१७	१२	१८	०३	१	४६	०.५२
हैदराबाद	१६	३०	१७	२०	१८	०६	१	३६	०.४२

सारिणी-२

२६ जनवरी २००९ ई. को कङ्कण सूर्य ग्रहण के भा.स्टै.टा. में स्पर्श मोक्षादि काल का विवरण

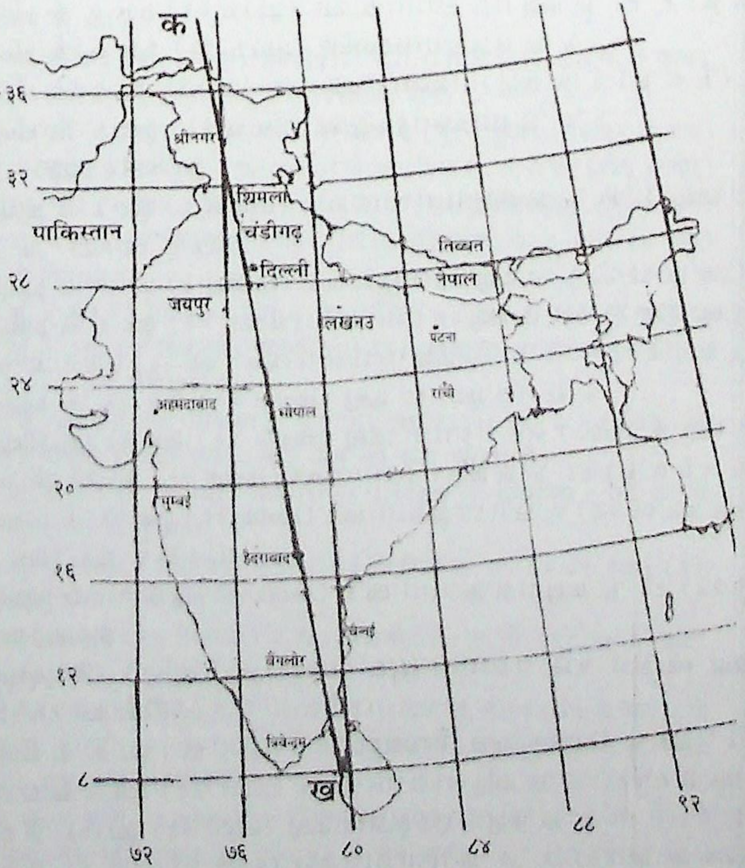
नगर नाम	ग्रहण स्पर्श		अधिकतम ग्रहण		ग्रहण मोक्ष		पर्वकाल		परमग्रास सूर्यबिम्ब=१
	घं.	मि.	घं.	मि.	घ.	मि.	घं.	मि.	
अगरतल्ला	१५	०२	१५	३२	१६	०१	०	५९	०.०७
आइजोल	१४	५८	१५	३२	१६	०५	१	०७	०.०९
इडूक्की	१४	१८	१५	१२	१६	०२	१	४४	०.१६
इम्फाल	१५	०१	१५	३३	१६	०३	१	०२	०.०८
इटानगर	१५	१६	१५	३३	१५	५०	०	३४	०.०२
कटक	१४	५६	१५	२८	१५	५९	१	०३	०.०७
कुडप्पा	१४	३९	१५	१९	१५	५६	१	१७	०.१०
कोयम्बटूर	१४	२४	१५	१४	१५	५९	१	३५	०.१४
कोचीन	१४	१९	१५	१२	१५	५९	१	४०	०.१५
कांचीपुरम	१४	२८	१५	१८	१६	०४	१	३६	०.१५
कन्याकुमारी	१४	०९	१५	११	१६	०६	१	५७	०.२२
कराइकल (पांडी)	१४	२०	१५	१७	१६	०८	१	४८	०.१९
करीमनगर	१५	१०	१५	२२	१५	३५	०	२५	०.०१
काजीकोड	१४	२७	१५	१३	१५	५५	१	२८	०.०१
कोहिमा	१५	०५	१५	३३	१६	००	०	५५	०.०६
कोलकाता	१५	०१	१५	३०	१५	५८	०	५७	०.०६
कोरापुट (उड़ीसा)	१४	५५	१५	२५	१५	५५	१	००	०.०६
कुरनूल	१४	५०	१५	२०	१५	४७	०	५७	०.०५
गंटकल	१४	४८	१५	१८	१५	४८	१	००	०.०५
गुवाहाटी	१५	१७	१५	३२	१५	४८	०	[illegible]	०.०२
चाइबासा	१५	११	१५	२९	१५	४७	०	३६	०.०२
चेन्नई	१४	२९	१५	१९	१६	०५	१	३६	०.१५
चित्रदुर्ग	१४	४५	१५	१७	१५	४७	१	०२	०.०६
जमशेदपुर	१५	११	१५	२९	१५	४७	०	३६	०.०२
डिब्रूगढ़	१५	१५	१५	३३	१५	५२	०	३७	०.०३
ढाका (बांगला देश)	१५	०३	१५	३१	१५	५९	०	५६	०.०६
धनबाद	१५	२२	१५	३०	१५	३७	०	१५	०.००४
तिरुवनन्तपुरम्	१४	११	१५	११	१६	०४	१	५३	०.२०
तंजावुर	१४	२०	१५	१६	१६	०६	१	४६	०.१८
तूतीकोरिन	१४	११	१५	१२	१६	०६	१	५५	०.२१
नेल्लोर	१४	३६	१५	२०	१६	०१	१	२५	०.१२
पाण्डिचेरी	१४	२४	१५	१७	१६	०५	१	४१	०.१७२
पुरी	१४	५२	१५	२८	१६	०२	१	१०	०.०९
पोर्ट ब्लेअर	१४	१८	१५	२६	१६	२६	२	०८	०.३९
बैंगलुरू	१४	३३	१५	१७	१५	५६	१	२३	०.११
बांकुड़ा (पं.बं.)	१५	११	१५	३०	१५	४८	०	३७	०.०३
बेल्लारी	१४	५०	१५	१८	१५	४५	०	५५	०.०४
भुवनेश्वर	१४	५५	१५	२८	१६	००	१	०५	०.०८
नागरकोइल	१४	०९	१५	११	१६	०५	१	५६	०.२१
मदुरै	१४	१७	१५	१४	१६	०५	१	४८	०.१८
माहे	१४	३०	१५	१३	१५	५२	१	२२	०.१०
मल्लापुरम	१४	२५	१५	१३	१५	५६	१	३१	०.१२
मंगलौर	१४	४१	१५	१४	१५	४५	१	०४	०.०६
मैसूर	१४	३१	१५	१५	१५	५५	१	२४	०.१०
रायचूर	१४	५७	१५	१९	१५	४१	०	४४	०.०३
रामेश्वरम्	१४	१३	१५	१४	१६	०९	१	५६	०.२२
राउरकेला	१५	१३	१५	२९	१५	४४	०	३१	०.०२
वेल्लोर	१४	३०	१५	१८	१६	०२	१	३२	०.१४
वारंगल	१५	०१	१५	२३	१५	४३	०	४२	०.०३
विजयनगरम्	१४	४९	१५	२५	१६	००	१	११	०.०९
विजयवाड़ा	१४	४६	१५	२२	१५	५६	१	१०	०.०८
विशाखापट्टनम्	१४	४६	१५	२५	१६	०१	१	१५	०.१०
सलेम	१४	२५	१५	१६	१६	०२	१	३७	०.१५
शिलांग	१५	११	१५	३२	१५	५३	०	४२	०.०४
शिमोगा	१४	४६	१५	१५	१५	४३	०	५७	०.०५
हैदराबाद	१५	०२	१५	२१	१५	४०	०	३८	०.०२

डिब्रूगढ़	१५	१५	१५	३३	१५	५२	०	३७	०.०३	हैदराबाद	१५	०२	१५	२१	१५	४०	०	३८	०.०२

भारत में नव संवत्सरारम्भ तथा वर्षेश

इस वर्ष विक्रम संवत् २०६५ में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, सोमवार, दि. ७ अप्रैल २००८ ई. को प्रातः ६ घं. ९ मिनट तक है। प्रतिपदा पिछले दिन रविवार दि. ६ अप्रैल २००८ ई. को ९ घं. २५ मिनट से आरम्भ हो रही है। ७ अप्रैल २००८ ई. को देहली में सूर्योदय ६ घं. ८ मिनट पर होगा अतः वहां पर नवसंवत्सरारम्भ सोमवार दि. ७ अप्रैल २००८ ई. को होगा। इसी प्रकार भारत के पूर्वी भागों में, सूर्योदय प्रातः ६ घं. ९ मिनट से पहले है अतः वहां पर संवत्सरारम्भ इसी दिन सोमवार दि. ७ अप्रैल २००८ ई. को होगा। भारत के जिन-जिन पश्चिमी क्षेत्रों में सोमवार, ७ अप्रैल २००८ ई. को सूर्योदय ६ घं. ९ मि. के बाद होगा, वहां-वहां पर नये संवत् का आरम्भ पिछले दिन अर्थात् रविवार, दि. ६ अप्रैल २००८ ई. को प्रातः ९ घं. २५ मिनट के उपरान्त होगा। संवत्सरारम्भ का वार ही उस वर्ष का राजा माना जाता है अतः दिल्ली सहित सम्पूर्ण पूर्वी भारत में वर्ष का राजा चन्द्रमा निश्चित रूप से हैं। भारत के पश्चिमी क्षेत्रों में जहां पर सूर्योदय, सोमवार दि. ७ अप्रैल २००८ ई. को ६ घं. ९ मिनट के बाद होगा वहां पर प्रतिपदा का क्षय हो जाने से उन क्षेत्रों में मेदिनीय फल विचार के सन्दर्भ में, वर्ष का राजा सूर्य माना जाएगा। इसी प्रकार भू-पृष्ठ पर स्थान भेद से वर्षेश विभिन्न देशों के सन्दर्भ में चैत्र शु. प्रतिपदा के वार के अनुसार दूसरा हो सकता है, किन्तु यहां पर यह विचारणीय है कि वर्ष के राजा का निर्णय किस उपयोग के लिए किया जाता है? निसन्देह वर्षेश का उपयोग उसके फलकथन के लिए ही है। किसी भी देश की राजधानी वहाँ की राजनैतिक सत्ता का शीर्ष केन्द्र स्थल होती है, अतएव प्राचीन भारतीय आर्ष परम्परा के अनुसार उस देश की राजधानी को केन्द्र बिन्दु मान कर संवत्सरारम्भ, जगत् लग्न आदि की कुण्डलियां निर्मित करके, उस राष्ट्र के विषय में फलकथन का प्रचलन शास्त्रोक्त है। भारत में देहली को केन्द्र स्थल मानकर १५ अगस्त तथा २६ जनवरी की अतिरिक्त कुण्डलियां भी विचारणीय मानी जाती हैं। यहां पर यह विशेषरूप से ध्यातव्य है कि किसी भी देश की राजधानी को आधारभूत केन्द्र मानकर राष्ट्रीय स्तर के फलकथन की परम्परा है न कि उस देश के किसी 'क्षेत्र-विशेष' को यह स्तर प्राप्त है। अतः वर्षराज के राष्ट्रीय स्तर के फलकथन की दृष्टि से, भारत की राजधानी दिल्ली का महत्व निर्विवाद है। क्षेत्रीय फल कथन के लिए उस क्षेत्र के संवत्सरारम्भ के वाराधिपति का प्रयोग किया जा सकता है।

इस सन्दर्भ में परिलेख सं. 7 में भारत के मानचित्र में दिखाई क-ख रेखा के पूर्वी भाग में संवत्सरारम्भ सोमवार को होगा एवं इस रेखा के बाईं ओर के पश्चिमी भागों में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय होने से संवत्सरारम्भ, रविवार दि. ६ अप्रैल २००८ ई. को होगा।



मानचित्र में दिखाई गई 'क ख' रेखा के पूर्वी भागों में सूर्योदय प्रातः ६ बजकर ०९ मिनट से पहले होगा। अतः दिल्ली सहित इस रेखा के पूर्वी भागों में सम्वत्सरारम्भ सोमवार दि. ७ अप्रैल को होगा।

संवत् २०६५ वि. के विवाहादि मुहूर्त्त

समय शुद्धि

सम्वत् २०६५ के विवाह मुहूर्त- यहाँ विवाह मुहूर्त्तों के निर्णय में लात, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल उपग्रह, क्रान्तिसाम्य (महापात), दग्धा तिथि तथा कर्त्तरी आदि दस दोषों का विचार किया गया है। इन विवाहादि मुहूर्त्तों में जहाँ-कहीं युति वेध, दग्धा तिथि, पाप कर्त्तरी आदि दोषों का परिहार मिला है; वे विवाहादि मुहूर्त्त लगाये गये हैं। यहाँ महापात दोष सूक्ष्म गणित द्वारा निर्णीत किया गया है। इस वर्ष शुक्रास्त का दोष वृद्ध-बाल्यत्व काल सहित ३० अप्रैल २००८ से १७ जुलाई २००८ तक है एवं गुरु का अस्त दोष वृद्ध-बाल्यत्व काल सहित १० जनवरी २००९ से १४ फरवरी २००९ तक है। अत: इस अवधि में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों का अभाव है। यहाँ गुरु, शुक्र के उदयास्तों की गणना सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति द्वारा की गई है। इस वर्ष गुरु मकर राशि में संचार करेगा। शास्त्र में नीच के गुरु के नीचांशक में रहते हुए की अवधि का शुभ कार्यों में निषेध है। "नीचराशिगतो जीव: प्रशस्त: सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो, यस्मादंशेषुनीचता।।" (वसिष्ठ) अत: ०९ दिसम्बर २००८ समय २३।४२ से २४ दिसम्बर २००८ समय २८ घं. ३० मि. तक गुरु नीचांशक में रहेगा। अत: यह अवधि शुभ कार्यों के लिये वर्जित है एवं ०१ अगस्त २००८ को खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा तथा ३० जुलाई से ०४ अगस्त तक की अवधि में ग्रहणशूल दोष रहेगा तथा १६ अगस्त २००८ को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण होने से १४ अगस्त २००८ से १९ अगस्त २००८ की अवधि में ग्रहण शूल दोष होने से शुभ मुहूर्तों का अभाव रहेगा। २६ जनवरी २००९ को होने वाला खण्डग्रास सूर्यग्रहण दक्षिण पूर्व भारत में दृष्टिगोचर होगा किन्तु यह ग्रहण यहाँ न दिखने से इसका महत्व नहीं है। अत: इन सब का विचार मुहूर्त्तों में किया गया है। यहाँ अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रों में भी विवाह मुहूर्त्त लगाये गये हैं क्योंकि पारस्कर गृहसूत्र में इन नक्षत्रों को विवाह में ग्राह्य माना है। इस वर्ष विवाह मुहूर्त्त निर्णय हेतु उपयोगी वर-कन्या की त्रिबल शुद्धि सारणी भी दी गई है। इसमें १२वाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है। इस सारणी में पंजाब एवं त्रिगर्त देशों के विवाह मुहूर्त्त अलग दिये गये हैं।

सपरिहार शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सब देशों के लिए)

चैत्र शु. १२ गुरौ (१७ अप्रैल) उ.फा.ऽ।।।।।।।। दिवा ल. ४ पादात् शुक्र वेधाभाव, कर्त्तरी परिहार है, २०/३६ से नृप.

चैत्र शु. १२ गुरौ (१७ अप्रैल) उ.फा.ऽ।।ऽ।।।।। ल.गो., १२ (चं. ७ पूज्य) पादात् शुक्र वेधाभाव, ल. १२ कर्त्तरी परिहार है, नृप. २०/३६ के बाद

चैत्र शु. १३ शुक्रे (१८ अप्रैल) हस्त।।।।ऽनृ.ऽ।।। दिवा ल. ४, गो. १२ (चन्द्र ७ पूज्य), २१/१० तक नृप.

चैत्र शु. १४ शनौ (१९ अप्रैल) हस्त।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ४ (१३/२६ तक)

चैत्र शु. १४ शनौ (१९ अप्रैल) चित्रा।ऽ।।ऽ।।ऽ।। दि. ल. ४, (१३/२६ के बाद)

चैत्र शु. १५ रवौ (२० अप्रैल) चित्रा।ऽ।।ऽचौ.ऽ।ऽ।। दिवा ल. ४

वैशाख कृ.१ चन्द्रे (२१ अप्रैल) स्वातीऽ।।ऽ।ऽऽ।। दिवा ल. ४, २२/५७ से रोग

वैशाख कृ. ७ रवौ (२७ अप्रैल) उ.षा.।ऽऽ।ऽऽ।।।। ल.गो. (१८/२४ के बाद), १२, (२६/५२ तक नृप.)

मार्गशीर्ष कृ. ९ शुक्रे (२१ नवम्बर) उ.फा.।।।।।।ऽ।ऽ ल.६ (२६/२७ तक) दग्धापरिहार है।

मार्गशीर्ष कृ. १० शनौ (२२ नवम्बर) उ.फा.।।।।ऽचौ.।ऽ।। दिवा ल. १२ (१४/३९ के बाद), (चं. ७ पू.), गो.

मार्गशीर्ष कृ. १० शनौ (२२ नवम्बर) हस्त।।।।ऽचौ.ऽऽ।। ल. ७ (२७/३७ तक चौर)

मार्ग. कृ. ११ रवौ (२३ नवम्बर) हस्त।।।।।ऽऽ।। दिवा ल. ९, १२ (चं. ७ पू.), गो.

मार्गशीर्ष कृ. १२ चन्द्रे (२३ नवम्बर) चित्राऽ।।।।।ऽ।। ल.७ (२७/२१ से रोग)

मार्गशीर्ष कृ. १२ चन्द्रे (२४ नवम्बर) चित्रा ऽ।।।ऽरो.।ऽ।। ल. ९

मार्ग. शु. २ शनौ (२९ नव.) मूलऽ।।।ऽनृऽ।।। दिवा ल. १२, ६, ७, २५/३५ तक नृप

मार्गशीर्ष शु. ३ रवौ (३० नवम्बर) मूलऽ।।।।ऽ।।। दिवा ल. १२ (१४/११ तक)

मार्गशीर्ष शु. ४ भौमे (२ दिसम्बर) उ.षा.।ऽऽ।।ऽऽ।। दिवा ल. ९ (९/३६ के बाद), १२, गो., (२४/३५ से रोग)

मार्गशीर्ष शु. ९ रवौ (७ दिसम्बर) उ.भा.ऽ।।ऽ।।।। दिवा ल. ९, गो., (२२/४९ से नृप.) (दग्धा १४/४८ से

फाल्गुन कृ. ५ शनौ (१४ फरवरी) स्वाती ऽऽ।।ऽव।।। ल. ८, ९

फाल्गुन कृ. ६ रवौ (१५ फरवरी) स्वातीऽऽ।।ऽव।।। दिवा ल. १ (चं. ७ पू.)

फाल्गुन कृ. ७ चन्द्रे (१६ फरवरी) अनुराधा।।।।ऽनृ।ऽ।। ल. ९

फाल्गुन कृ. ८ भौमे (१७ फरवरी) अनुराधा।।।।ऽनृ.।ऽ।। दिवा ल. १२, २ (चं. ७ पू.), गो. ९ (२७/४२ तक) १८/१३ तक नृप

फाल्गुन कृ. १० गुरौ (१९ फरवरी) मूल।।।।।ऽऽ।। ल. ८ (१७/४८ तक चौर)

फाल्गुन कृ. ११ शुक्रे (२० फरवरी) मूल।।।।।ऽऽ।। दिवा ल. १२, १ (९/४८ तक)

फाल्गुन शु. १ गुरौ (२६ फरवरी) उ.भा.।ऽ।।।।ऽ।।। ल. ८, ९

फाल्गुन शु. २ शुक्रे (२७ फरवरी) उ.भा. ।ऽ।।।।ऽ।।। दिवा ल. १, २

फाल्गुन शु. ३ शनौ (२८ फरवरी) रेवती ऽऽऽशु।।ऽचौ।।।। दिवा ल. १, २

फाल्गुन शु. ८ बुधे (४ मार्च) मृगशिर।।।।ऽव।ऽ।। ल. ८ (च. ७ पूज्य)

फाल्गु. शु. ९ गुरौ (५ मार्च) मृग.।।।।।ऽव।ऽ।। दिवा ल. १२, १, २, गो. (१७/४३ तक)

चैत्र कृ. २ गुरौ (१२ मार्च) हस्त।ऽ।।।।।।ऽ। दिवा ल. १२ (७/१३ के बाद) चं. ७ पूज्य), २ (मृत्युबाण १६/०७ से)

केवल पंजाब एवं द्विर्गत देशों के शुभ विवाह मुहूर्त्त

आषाढ़ शु. १५ शुक्रे (१८ जुलाई) उ.षा.।ऽ।।ऽऽवऽऽ।। दिवा ल. ६, ७, १२, आवश्यके (११/१८ तक मृत्यु बाण है)

श्रावण कृ. ५ बुधे (२३ जुलाई) उ.भा.।।।।ऽचौ.।ऽ।। दिवा ल. ६ (चं. ७ पू.) १, ३ (गु. ७ पूज्य) (दग्धा परिहार है) चौ. १७/०३ तक)

श्रावण कृ. ६ गुरौ (२४ जुलाई) रेवतीऽ।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ६ (चं. ७ पूज्य), ८ (१४/३३ तक), ३ (१८/११ से रोगबाण)

श्रावण कृ. १० चन्द्रे (२८ जुलाई) रोहिणी।।।।।ऽव।ऽ।। दिवा ल. ६, ८ (चं. ७ पूज्य), गो. १२, १ (२२/३९ तक वह्नि बाण)

श्रावण कृ. १० चन्द्रे (२८ जुलाई) मृगशीर्षऽ।।।।।ऽ।। ल. ३ (गु. ७ पूज्य)

श्रावण कृ. १२ भौमे (२९ जुलाई) मृगशीर्षऽ।।।।।ऽ।। दिवा ल. ६

श्रावण कृ. १२ भौमे (२९ जुलाई) मृगशीर्षऽ।।।।।ऽ।। दिवा ल. ७ (१२/५२ के बाद), १२, १ (२३/४५ तक) (२३/४५ से नृपबाण)

श्रावण शु. ५ बुधे (६ अगस्त) हस्त।।।।ऽवऽऽ।। दिवा ल. ७, ८ (दग्धापरिहार है) (७/१४ तक मृत्युबाण) (दग्धा १०/१९ से)

श्रावण शु. ५ बुधे (६ अगस्त) चित्राऽऽ।।ऽव।।।ऽ ल. ३ (गु. ७ पूज्य) दग्धा परिहार

श्रावण शु. ६ गुरौ (७ अगस्त) चित्राऽऽ।।।।।।।। दिवा ल. ८ (१४/५७ तक)

श्रावण शु. ६ गुरौ (७ अगस्त) स्वाती।।।।।।ऽऽ।। ल. १ (चं. ७ पूज्य), ३ (गु. ७ पू.)

श्रावण शु. ७ शुक्रे (८ अगस्त) स्वाती।।।।।।ऽऽ।। दिवा ल. ६

श्रावण शु. ८ शनौ (९ अगस्त) अनुराधा।।।।।।ऽ।।। ल. १ (चन्द्र अष्टम नीच का होने से परिहार है), ३ (गु. ७ पूज्य) छठा चन्द्र नीच परिहार है (१०/२२ तक नृप.)

श्रावण शु. ९ रवौ (१० अगस्त) अनुराधा।।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ७, ९, गो. ३ (गु. ७ पूज्य) चन्द्र नीच का छठा परिहार है (२६/११ तक), (११/२३ से चौर बाण)

श्रावण शु. ११ भौमे (१२ अगस्त) मूल।ऽ।।ऽरो.ऽ।।। ल. ३ (गु. चं. ७ पूज्य)

भाद्रपद कृ. ४ बुधे (२० अगस्त) उ.भा.।।।।ऽ।।।।। दिवा ल. ८ (१४/२८ तक) (२१/१४ से नृप)

भाद्रपद कृ. ८ रवौ (२४ अगस्त) रोहिणीऽ।।।।ऽऽ।। दिवा ल. ८ (चं. ७ पूज्य), गो. ३ (२४/५२ से रोग)

भाद्रपद कृ. ९ चन्द्रे (२५ अगस्त) मृगशीर्ष।ऽ।।ऽरो.।ऽ।। दिवा ल. ८ (चं. ७ पूज्य), गो. (१३/५१ से दग्धा परिहार है) (२५/४४ तक रोग)

भाद्र. शु. १ रवौ (३१ अग.) उ.फा.।ऽऽ।।।।।।। ल. ३ (गु. ७ पूज्य) (२४/१८ के बाद)

भाद्र. शु. २ चन्द्रे (१ सितम्बर) उ.फा.।ऽऽ।।ऽचौ.।।।। दिवा ल. ७, ८ ९ (६/४३ से चौर)

भाद्र. शु. ३ भौमे (२ सित.) चित्रा।।।।।।।।। ल. ३ (२५/२१ के बाद) (गु. ७ पूज्य)

भाद्रपद शु. ४ बुधे (३ सितम्बर) चित्रा।।।।ऽ।।।। दिवा ल. ७, ८ (१२/२४ तक) (८/१७ से रोग बाण)

भाद्रपद शु. ४ बुधे (३ सितम्बर) चित्रा।।।।ऽ।।।। ल. ३ (२४/५१ से), (गु. ७ पूज्य)

भाद्रपद शु. ५ गुरौ (४ सितम्बर) स्वातीऽ।।।।ऽऽ।। दिवा ल. ८, ९, गो. ३ (गु. ७ पूज्य) (९/०३ तक रोगबाण)

भाद्रपद शु. ७ शनौ (६ सितम्बर) अनुराधा।ऽ।।ऽवऽऽ।। ल. ३ (१०/३३ तक मृत्युबाण), वैधृति १९/५५ तक, (चन्द्र नीच का छठा परिहार है)

भाद्रपद शु. ८ चन्द्रे (८ सितम्बर) मूल।।।नृऽ।।। दिवा ल. समयाल्प ८, गौ. ३ (च. ७ पू.) (१२/०१ से नृपबाण)

भाद्रपद शु. ९ भौमे (९ सितम्बर) मूल।।।।ऽऽ।।। दिवा ल. ७ (११/०९ तक) (११/०९ के बाद दग्धा तिथि दोष है)

भाद्रपद शु. १० बुधे (१० सितम्बर) उ.षा.।।।।ऽचौ.ऽ।।। ल. गो. (१८/३० के बाद), ३ (२५/०४ तक), (गु., चं. ७ पूज्य)

भाद्र. शु. ११ गुरौ (११ सित.) उ.षा.।।।।ऽचौ.ऽ।।। दिवा ल. ९ (१४/४७ के बाद), गो.

आश्विन शु. ३ गुरौ (२ अक्टूबर) स्वाती।ऽऽशु.।ऽचौ.ऽ।।। दिवा ल. ८, ९ (१३/०३ तक) शुक्र युति अत्यावश्यके

आश्विन शु. ४ शुक्रे (३ अक्टूबर) अनुराधा।।।।।ऽऽ।। ल. गो. (१८/०५ से), ३ (छठा चन्द्र नीच का परिहार है) (२५/४० से रोग बाण)

आश्विन शु. ५ शनौ (४ अक्टू.) अनु.।।।।ऽरो.ऽऽ।। दिवा ल. ९, गो. (१८/०७ तक)

आश्विन शु. ६ रवौ (५ अक्टूबर) मूल।।।।।।।।। ल. ३ (चं., गु. ७ पूज्य) (२६/२२ से मृत्युबाण)

आश्विन शु. ९ बुधे (८ अक्टूबर) उ.षा.।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ८ (९/३७ तक) (२७/

२० से नृपबाण) (९/३७ से मकर का चन्द्र)

आश्विन शु. ९ बुधे (८ अक्टू.) उ.षा.।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ८ (९/३७ से), ९, गो.

आश्विन शु. १४ चन्द्रे (१३ अक्टूबर) उ.भा.।।ऽबु.।ऽरो।।। दिवा ल. ८, ९ पादात् बुध वेधाभाव (२८/४१ तक रोगबाण)

कार्तिक कृ. ५ रवौ (१९ अक्टूबर) मृगशीर्ष।।।।।ऽब।ऽ।। ल. गो. (१८/१५ तक) (१४/२२ तक परिदार्ध है)

कार्तिक कृ. १२ शनौ (२५ अक्टूबर) उ.फा.।।।।ऽरो.।ऽ।ऽ ल. गो.

कार्तिक शु. २ गुरौ (३० अक्टूबर) अनुराधा।।।।ऽनृऽ।।। ल. ६

कार्तिक शु. २ शुक्रे (३१ अक्टूबर) अनुराधा।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ९

कार्तिक शु. ४ रवौ (२ नवम्बर) मूल।।।।।ऽऽ।। ल. गो. ६

कार्तिक शु. ६ भौमे (४ नवम्बर) उ.षा.।।।।।ऽऽ।। ल. गो. (१७/२५ तक)

कार्तिक शु. ६ भौमे (४ नवम्बर) उ.षा.।।।।।ऽऽ।। ल. गो. (१७/२५ से), ६

कार्तिक शु. ११ रवौ (९ नवम्बर) उ.भा.।ऽ।।।।।।ऽ ल. ६ (दग्धापरिहार है)

कार्तिक शु. १२ चन्द्रे (१० नवम्बर) उ.भा.।ऽ।।।ऽचौ.।।।ऽ दिवा ल. ९ (दग्धा परिहार है), गो. (१७/२० तक)

कार्तिक शु. १२ चन्द्रे (१० नव.) रेवतीऽ।।।।ऽचौऽ।।। ल. ६ (चं. ७ पू.) (२०/३८ तक दग्धा है।)

कार्तिक शु. १३ भौमे (११ नवम्बर) रेवतीऽ।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ९

संवत् २०६५ के अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त

१३ अप्रैल तक सूर्य मीन में राशि में है।

चैत्र शु. १० भौमे (१५ अप्रैल) मघा लग्नाभाव

चैत्र शु. ११ बुधे (१६ अप्रैल) मघा भद्रा

चैत्र शु. १५ रवौ (२० अप्रैल) स्वाती लग्नाभाव

वैशाख कृ. २ भौमे (२२ अप्रैल) अनुराधा व्यतिपात

वैशाख कृ. ३ बुधे (२३ अप्रैल) अनु. लग्नाभाव-भद्रा

वैशाख कृ. ४ गुरौ (२४-२५ अप्रैल) मूल भौम वेध-भद्रा

वैशाख कृ. ७ चन्द्रे (२८ अप्रैल) श्रवण शनि-केतु वेध

वैशाख कृ. ८ भौमे (२९ अप्रैल) श्रवण शनि-केतु वेध

वैशाख कृ. ८ भौमे(२९-३० अप्रैल) धनिष्ठा राहु युति

३० अप्रैल २००८ से १६ जुलाई २००८ ई. तक वृद्ध बाल्यत्व सहित शुक्रास्त दोष।

आषाढ़ शु. १४ गुरौ (१७ जुलाई) उ.षा. वैधृतियोग

श्रावण कृ. १ शनौ (१९ जुलाई) श्रवण शनिवेध

श्रावण कृ. २ रवौ (२० जुलाई) धनिष्ठा केतु वेध

श्रावण कृ. ६ गुरौ (२४ जुलाई) उ.भा. लग्नाभाव

श्रवण कृ. ७ शुक्रे (२५ जुलाई) रेवती लग्नाभाव

श्रावण कृ. ७ शुक्रे (२५ जुलाई) अश्विनी भौमवेध

श्रावण कृ. ९ रवौ (२७ जुलाई) रोहिणी भद्रा

श्रावण शु. १ शनौ (२-३ अगस्त) मघा परिधार्ध, ग्रहणशूल

श्रावण शु. ३ चन्द्रे (४-५ अगस्त) उ.फा. ग्रहण शूल, मृत्युबाण

श्रावण शु. ४ भौमे (५ अगस्त) हस्त मृत्युबाण

श्रावण शु. १४ शुक्रे (१५ अगस्त) उ.षा. श्रवण मासान्त

श्रावण शु. १५ शनौ (१६ अगस्त) श्रवण चन्द्रग्रहण

भाद्रपद कृ. ३ भौमे (१९ अगस्त) उ.भा. ग्रहण शूल

भादपद कृ. ४ बुधे (२०-२१ अगस्त) रेवती भुजंगपात

भाद्रपद कृ. ५ गुरौ (२१-२२ अगस्त) अश्विनी शनिवेध

भाद्रपद कृ. ९ चन्द्र (२५ अगस्त) रोहिणी लग्नाभाव

२९-३० अगस्त मघा क्षीण चन्द्र, अमावस्या

भादपद शु. २ चन्द्रे (१-२ सितम्बर) हस्त, भौम युति

भाद्रपद शु. ४ बुधे (३ सितम्बर) स्वाति लग्नाभाव

भाद्रपद शु. ७ रवौ (७ सितम्बर) अनुराधा भद्रा

भाद्रपद शु. ११ गुरौ (११-१२ सितम्बर) राहुयुति

भाद्र. शु. १२ शुक्रे (१२-१३ सित.) धनिष्ठा केतु वेध

१५ सितम्बर से २९ सितम्बर तक प्रौष्ठपदी पूर्णिमा सहित श्राद्धपक्ष

आश्विन शु. १ भौमे (३० सितम्बर) हस्त क्षीण चन्द्र

आश्विन शु. १ भौमे (३० सितम्बर, १ अक्टूबर) चित्रा भौम युति, वैधृति

आश्विन शु. २ बुधे (१ अक्टूबर) स्वाती वैधृति

आश्विन शु. ७ चन्द्रे (६ अक्टूबर) मूल मृत्युबाण

आश्विन शु. ८ भौमे (७ अक्टूबर) उ.षा. लग्नाभाव

आश्विन शु. १० गुरौ (९ अक्टूबर) श्रवण राहु युति

आश्नि शु. १० शुक्रे (१० अक्टूबर) धनिष्ठा केतु वेध, भुजंगपात

आश्विन शु. १५ भौमे (१४ अक्टूबर) रेवती भद्रा, लग्नाभाव

कार्तिक कृ. १ बुधे (१५ अक्टूबर) अश्विनी शनिवेध

कार्तिक कृ. ३ शुक्रे (१७ अक्टूबर) रोहिणी व्यतिपात

कार्तिक कृ. ४ शनौ (१८ अक्टूबर) रोहिणी मृत्युबाण

कार्तिक कृ. ४ शनौ (१८ अक्टूबर) मृगशीर्ष मृत्युबाण

कार्तिक कृ. १० गुरौ (२३-२४ अक्टूबर) मघा राहु वेध

२६-२७-२८ अक्टूबर क्षीण चन्द्र

कार्तिक शु. १ बुधे (२९ अक्टूबर) स्वाती सूर्य युति

कार्तिक शु. ३ शनौ (१ नवम्बर) मूल भद्रा

कार्तिक शु. ७ बुधे (५ नवम्बर) उ.षा. मृत्युबाण

कार्तिक शु. ७ बुधे (५-६ नवम्बर) श्रवण राहुयुति

कार्तिक शु. ८ गुरौ (६-७ नवम्बर) धनिष्ठा केतु वेध

कार्तिक शु. १३ भौमे (११-१२ नव.) अश्विनी शनि वेध

मार्गशीर्ष कृ. १ शुक्रे (१४ नवम्बर) रोहिणी मृत्युबाण

मार्गशीर्ष कृ. ७ बुधे (१९-२० नवम्बर) मघा राहु वेध

मार्गशीर्ष कृ. १२ चन्द्रे (२४ नवम्बर) स्वाती, क्षीण चन्द्र

मार्गशीर्ष शु. ४ चन्द्रे (१ दिसम्बर) उ.षा भद्रा

मार्गशीर्ष शु. ४ भौमे (२-३ दिसम्बर) श्रवण राहु युति
मार्गशीर्ष शु. ५ बुधे (३-४ दिसम्बर) धनिष्ठा केतु वेध
मार्गशीर्ष शु. ८ शनौ (६ दिसम्बर) उ.भा. लग्नाभाव
मार्गशीर्ष शु. १० चन्द्रे (८ दिसम्बर) रेवती शनिवेध
मार्गशीर्ष शु. १० चन्द्रे (८ दिसम्बर) अश्विनी भद्रा

९ से २४ दिसम्बर गुरु नीचांशक में

१५ दिसम्बर से १३ जनवरी २००९ तक धनु में सूर्य
११ जनवरी २००९ से १३ फरवरी तक गुर्वस्त दोष
फाल्गुन कृ. ५ शनौ (१४ फरवरी) चित्रा भुजंगपात दोष
फाल्गुन कृ. १२ शनौ (२१ फरवरी) उ.षा. व्यतिपात

२२-२३-२४ फरवरी क्षीण चन्द्र

फाल्गुन शु. ३ शनौ (२८ फर.) अश्विनी भद्रा शनिवेध
फाल्गुन शु. ५ रवौ (१ मार्च) शनिवेध
फाल्गुन शु. ७ भौमे (३ मार्च) रोहिणी मृत्युबाण-वैधृति
फाल्गुन शु. १३ चन्द्रे (९, १० मार्च) मघा राहु वेध
फाल्गुन शु. १५ बुधे (११ मार्च) उ.फा. रेखाल्प
चैत्र कृ. ३ शुक्रे (१३ मार्च) हस्त मृत्युबाण, मासान्त

संवत् २०६५ के विभिन्न शुभ मुहूर्त

कुछ मुहूर्त केवल उत्तरायण में होते हैं तथा कुछ अन्य मुहूर्त चैत्र-मीनार्क में भी होते हैं। गृहारम्भ भाद्रपद में भी हो सकता है यह मुहूर्त चिंतामणि में लिखा है। शुक्रास्त का दोष ३० अप्रैल २००८ से १७ जुलाई २००८ तक, गुर्वस्त दोष १० जनवरी २००९ से १४ फरवरी २००९ तक, श्राद्ध पक्ष १५ से २९ सितम्बर तक होगा। यह अवधि शुभ मुहूर्त के लिए वर्जित है।

चूड़ाकरण मुहूर्त

चैत्र शु. १३ शुक्रे (१८ अप्रैल) हस्त ल. अभिजित, ४ (अष्टम राहु दोष-पूज्य)
वैशाख कृ. ७ चन्द्रे (२८ अप्रैल) अभिजित
वैशाख कृ. १० गुरौ (१ मई) शतभिषा (शुक्र वृद्धत्व दोष) अत्यावश्यके
फाल्गुन कृ. ४ शुक्रे (१३ फरवरी) हस्त (गुरु बाल्यत्व दोष) अत्यावश्यके
फाल्गुन कृ. ५ शनौ (१४ फरवरी) चित्रा (शनिवार वैश्यों को शुभ है)
फाल्गुन शु. ३ शनौ (२८ फरवरी) रेवती (शनिवार वैश्यों को शुभ है) (७।१९ तक)
चैत्र कृ. २ गुरौ (१२ मार्च) हस्त

अक्षरारम्भ मुहूर्त

कुछ मुहूर्त ग्रन्थों में फाल्गुन (कुम्भार्क) मास का अक्षरारम्भ-विद्यारम्भ में निषेध नहीं होने से उक्त मास में मुहूर्त लगाये गये हैं।
वैशाख कृ. ३ बुधे (२३ अप्रैल) अनुराधा
फाल्गुन कृ. ४ शुक्रे (१३ फरवरी) हस्त (१२।३४ के बाद) गुरुबाल्यत्व पादात् शुक्रवेधाभाव
फाल्गुन शु. १० शुक्रे (६ मार्च) आर्द्रा (होलाष्टक)

विद्यारम्भ मुहूर्त

चैत्र शु. १३ शुक्रे (१८ अप्रैल) हस्त
वैशाख कृ. १० गुरौ (१ मई) शतभिषा (शुक्र वृद्धत्व)
फाल्गुन कृ. ४ शुक्रे (१३ फरवरी) हस्त (१२।३४ के बाद) गुरु बाल्यत्व पादात् शुक्रवेधाभाव
फाल्गुन शु. १ गुरौ (२६ फरवरी) पू.भा. (७।३८ के बाद)
फाल्गुन शु. १० शुक्रे (६ मार्च) आर्द्रा (होलाष्टक)
फाल्गुन शु. १२ रवौ (८ मार्च) पुष्य (होलाष्टक) युति परिहार है

अन्नप्राशन मुहूर्त

चैत्र शु. १२ शुक्रे (१८ अप्रैल) उ.फा. (शुक्रपादवेधाभाव)
वैशाख शु. २ बुधे (७ मई) रोहिणी
वैशाख शु. ३ गुरौ (८ मई) मृग. (पादात् गुरुवेधाभाव)
ज्येष्ठ शु. ३ शुक्रे (६ जून) पुनर्वसु
आषाढ़ शु. २ शुक्रे (४ जुलाई) पुनर्वसु
आषाढ़ शु. ७ बुधे (९ जुलाई) हस्त (परिघार्ध दोष)
आषाढ़ शु. १५ शुक्रे (१८ जुलाई) उ.षा. (५।५३ के बाद)
श्रावण शु. ५ बुधे (६ अगस्त) हस्त
श्रावण शु. ६ गुरौ (७ अगस्त) चित्रा (११।१७ के बाद)
श्रावण शु. ७ शुक्रे (८ अगस्त) स्वाती
भाद्रपद शु. २ चन्द्रे (१ सितम्बर) उ.फा.
भाद्रपद शु. ५ गुरौ (४ सितम्बर) स्वाती
आश्विन शु. ३ गुरौ (२ अक्टूबर) स्वाती
कार्तिक शु. ७ शुक्रे (५ नवम्बर) उ.षा.
मार्गशीर्ष शु. ७ शुक्रे (५ दिसम्बर) शतभिषा
माघ शु. २ बुधे (२८ जनवरी) धनिष्ठा
माघ शु. ७ चन्द्रे (२ फरवरी) अश्विनी
माघ शु. १० गुरौ (५ फरवरी) रोहिणी
फाल्गुन शु. २ शुक्रे (२७ फरवरी) उ.भा.

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त

वैशाख कृ. १ चन्द्रे (२१ अप्रैल) स्वाती
वैशाख शु. २ बुधे (७ मई) रोहिणी
वैशाख शु. ३ गुरौ (८ मई) मृगशीर्ष (६।३४ तक) (पादात् गुरु वेधाभाव)
वैशाख शु. ११ गुरौ (१५ मई) उ.फा.
वैशाख शु. १३ शनौ (१७ मई) चित्रा
ज्येष्ठ कृ. ६ चन्द्रे (२६ मई) श्रवण (पादात् शुक्रवेधाभाव)
ज्येष्ठ कृ. १० शुक्रे (३० मई) उ.भा. (६।३६ तक)
ज्येष्ठ कृ. ११ शनौ (३१ मई) रेवती
ज्येष्ठ शु. ४ शनौ (७ जून) पुष्य (अभिजित) (११।४२ के बाद)
ज्ये.शु. ८ बुधे (११ जून) उ.फा. (रिक्ता ८।५३ के बाद)

श्रावण कृ. १ शनौ (१९ जुलाई) श्रवण
श्रावण कृ. ५ बुधे (२३ जुलाई) उ.भा.
श्रावण कृ. ६ गुरौ (२४ जुलाई) उ.भा.
श्रावण कृ. ७ शुक्रे (२५ जुलाई) रेवती
श्रावण कृ. १० चन्द्रे (२८ जुलाई) रोहिणी
श्रावण शु. ६ गुरौ (७ अगस्त) चित्रा
श्रावण शु. ७ शुक्रे (८ अगस्त) स्वाती
कार्तिक कृ. ४ शनौ (१८ अक्टूबर) मृगशीर्ष ल. ६
कार्तिक शु. ७ बुधे (५ नवम्बर) उ.षा.
कार्तिक शु. १० शनौ (८ नवम्बर) शतभिषा (१२।०९ के बाद) अभिजित (पादात् बुध वेध १२।०९ तक)
कार्तिक शु. १२ चन्द्रे (१० नवम्बर) उ.भा., ल. ९
मार्गशीर्ष कृ. १२ चन्द्रे (२४ नवम्बर) चित्रा, ल. ९, ११
मार्गशीर्ष शु. ६ गुरौ (४ दिसम्बर) धनिष्ठा
मार्गशीर्ष शु. ७ शुक्रे (५ दिसम्बर) शतभिषा
माघ कृ. ७ शनौ (१७ जनवरी) चित्रा (पादात् शुक्र वेधाभाव)
माघ कृ. ११ बुधे (२१ जनवरी) अनुराधा

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ शु. २ बुधे (२८ जनवरी) धनिष्ठा
माघ शु. २ बुधे (२८ जनवरी) शतभिषा, ल. ९
माघ शु. ३ गुरौ (२९ जनवरी) शतभिषा (परिधार्ध दोष)
माघ शु. ५ शनौ (३१ जनवरी) उ.भा., ल. ११
माघ शु. १० गुरौ (५ फरवरी) रोहिणी, ल. ११, १२
फाल्गुन कृ. ५ शनौ (१४ फरवरी) चित्रा, ल. १२ (९।०८ तक) (गुरु बाल्यत्व दोष)
फाल्गुन शु. २ शुक्रे (२७ फरवरी) उ.भा.

द्विरागमन मुहूर्त्त

चैत्र शु. १२ गुरौ (१७ अप्रैल) उ.फा. - पादात् शुक्रवेधाभाव (वेध २२।०८ के बाद २८।५४ तक)
चैत्र शु. १३ शुक्रे (१८ अप्रैल) उ.फा.
चैत्र शु. १३ शुक्रे (१८ अप्रैल) हस्त
वैशाख कृ. ३ बुधे (२३ अप्रैल) अनुराधा
वैशाख कृ. ७ चन्द्रे (२८ अप्रैल) उ.षा.
वैशाख कृ. १० गुरौ (१ मई) शतभिषा
मार्गशीर्ष कृ. ५ चन्द्रे (१७ नवम्बर) पुनर्वसु - (पादात् शुक्र वेधाभाव)
मार्गशीर्ष कृ. १२ चन्द्रे (२४ नवम्बर) चित्रा
मार्गशीर्ष शु. ६ गुरौ (४ दिसम्बर) धनिष्ठा
मार्गशीर्ष शु. ७ शुक्रे (५ दिसम्बर) शतभिषा
फाल्गुन कृ. ४ शुक्रे (१३ फरवरी) हस्त (१२।३४ के बाद पादात् शुक्रवेधाभाव)
फाल्गुन शु. २ शुक्रे (२७ फरवरी) उ.भा.
फाल्गुन शु. ८ बुधे (४ मार्च) रोहिणी (होलाष्टक)
चैत्र कृ. २ गुरौ (१२ मार्च) हस्त

उपनयन मुहूर्त्त

(उपनयन में सौर चैत्र-मीन का सूर्य ग्राह्य है)
चैत्र शु. १ चन्द्रे (७ अप्रैल) अश्विनी (७।२० के बाद., तिथि क्षय दोष)
चैत्र शु. १२ गुरौ (१७ अप्रैल) उ.फा. (पादात् शुक्रवेधाभाव) (वेध २२।२८ के बाद)
चैत्र शु. १३ शुक्रे (१८ अप्रैल) उ.फा.
वैशाख कृ. १ चन्द्रे (२१ अप्रैल) स्वाती
वैशाख कृ. ३ बुधे (२३ अप्रैल) अनुराधा
फाल्गुन शु. २ शुक्रे (२७ फरवरी) उ.भा.
फाल्गुन शु. १२ रवौ (८ मार्च) पुष्य (चन्द्र स्वगृही होने से युति दोष परिहार है)
चैत्र कृ. २ गुरौ (१२ मार्च) हस्त

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

चैत्र शु. १२ गुरौ (१७ अप्रैल) उ.फा.
चैत्र शु. १३ शुक्रे (१८ अप्रैल) उ.फा.
चैत्र शु. १५ रवौ (२० अप्रैल) चित्रा
फाल्गुन शु. २ शुक्रे (२७ फरवरी) उ.भा.
फाल्गुन शु. १२ रवौ (८ मार्च) पुष्य (होलाष्टक)

विपणि करण मुहूर्त्त (दुकान खोलने का मुहूर्त्त)

चैत्र शु. १२ गुरौ (१७ अप्रैल) उ.फा.
चैत्र शु. १३ शुक्रे (१८ अप्रैल) उ.फा.
वैशाख कृ. ३ बुधे (२३ अप्रैल) अनुराधा
वैशाख कृ. ७ चन्द्रे (२८ अप्रैल) उ.षा.
वैशाख कृ. १० गुरौ (१ मई) पू.भा. (१२।४४ के बाद)
कार्तिक शु. ११ रवौ (९ नवम्बर) पू.भा. (१०।५३ तक)
कार्तिक शु. १२ चन्द्रे (१० नवम्बर) उ.भा.
मार्गशीर्ष कृ. ११ रवौ (२३ नवम्बर) हस्त
मार्गशीर्ष कृ. १२ चन्द्रे (२४ नवम्बर) चित्रा
मार्गशीर्ष शु. ३ रवौ (३० नवम्बर) मूल
मार्गशीर्ष शु. ६ गुरौ (४ दिसम्बर) धनिष्ठा
मार्गशीर्ष शु. १५ शुक्रे (१२ दिसम्बर) रोहिणी (१२।०४ के बाद)
फाल्गुन कृ. ५ शनौ (१४ फरवरी) चित्रा
फाल्गुन कृ. १० गुरौ (१९ फरवरी) मूल (७।५३ तक)
फाल्गुन कृ. ११ शुक्रे (२० फरवरी) मूल
फाल्गुन शु. १ गुरौ (२६ फरवरी) पू.भा. (७।३८ के बाद)
फाल्गुन शु. २ शुक्रे (२७ फरवरी) उ.भा.
फाल्गुन शु. १२ रवौ (८ मार्च) पुष्य (स्वराशि चन्द्र युति परिहार है) (होलाष्टक)
चैत्र कृ. २ गुरौ (१२ मार्च) हस्त

गृहारम्भ मुहूर्त्त

यहाँ मुहूर्त्तों के आगे जहाँ कहीं शुद्ध लग्न उपलब्ध है वह लिखा गया है। इसके अतिरिक्त अभिजित मुहूर्त्त भी लिखा है। अभिजित मुहूर्त्त शुद्ध लग्न के अभाव में प्रयोग करना चाहिए।
चैत्र शु. १३ शुक्रे (१८ अप्रैल) हस्त, वृष चक्र शुद्ध है ल.

अभिजित

वैशाख कृ. ३ बुधे (२३ अप्रैल) अनुराधा - वृष चक्र शुभ है (९।२७ तक)

वैशाख कृ. ७ चन्द्रे (२८ अप्रैल) श्रवण - पादात् बुधवेधाभाव वृष चन्द्र अशुद्ध है, ल. अभिजित मुहूर्त्त

वैशाख कृ. ७ चन्द्रे (२८ अप्रैल) उ.षा. - वृष चक्र अशुद्ध है

वैशाख कृ. ९ बुधे (३० अप्रैल) धनिष्ठा - वृष चक्र अशुद्ध है (८।१७ के बाद) ल. ३, अभिजित् मुहूर्त्त

वैशाख कृ. १० गुरौ (१ मई) शतभिषा - शुक्र वृद्धत्व दोष, ल. ३, अभिजित मुहूर्त्त

श्रावण कृ. ६ गुरौ (२४ जुलाई) रेवती - वृष चक्र अशुद्ध है, ल. ६, अभिजित् मुहूर्त्त, ३

श्रावण कृ. ७ शुक्रे (२५ जुलाई) रेवती - वृष चक्र अशुद्ध है

श्रावण शु. ६ गुरौ (७ अग.) चित्रा-चक्र अशुद्ध है, ल. ६

श्रावण शु. १२ बुधे (१३ अगस्त) मूल, नवांश ल. ६, आवश्यके वृष चक्र अशुद्ध है

भाद्रपद कृ. ९ चन्द्रे (२५ अगस्त) मृगशीर्ष (१३।५१ के बाद) चक्र अशुद्ध है (ल. ९ न. २) आवश्यके

भाद्रपद कृ. ११ बुधे (२७ अगस्त) पुनर्वसु - (१०।२३ तक) चक्र अशुद्ध है, (ल. ६ न. २) आवश्यके

भाद्रपद शु. २ चन्द्रे (१ सितम्बर) उ.फा. - चक्र अशुद्ध है, ल. ९

भाद्रपद शु. ११ गुरौ (११ सितम्बर) उ.षा. - चक्र शुद्ध है, ल. ९ (१४।८७ के बाद)

मार्गशीर्ष कृ. १० शनौ (२२ नवम्बर) उ.फा. - चक्र अशुद्ध है, ल. १२ (१४।३९ के बाद)

मार्गशीर्ष कृ. १२ चन्द्रे (२४ नवम्बर) चित्रा - चक्र अशुद्ध है, ल. ९

मार्गशीर्ष शु. ६ गुरौ (४ दिसम्बर) धनिष्ठा - चक्र अशुद्ध है, ल. ९

फाल्गुन कृ. ४ शुक्रे (१३ फरवरी) हस्त - चक्र शुद्ध है। पादात् शुक्र वेधाभाव - चक्र शुद्ध है ल. २ (१२।३४ के बाद), अभिजित मुहूर्त्त, गुरु बाल्यत्व दोष

फाल्गुन शु. २ शुक्रे (२६ फरवरी) उ.भा. - चक्र अशुद्ध है, ल. ९

फाल्गुन शु. ८ बुधे (४ मार्च) रोहिणी (होलाष्टक) चक्र शुद्ध है

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

वैशाख कृ. १ चन्द्रे (२१ अप्रैल) स्वाती, कलश चक्र अशुद्ध है अभिजित मुहूर्त्त

वैशाख कृ. ३ बुधे (२३ अप्रैल) अनुराधा, कलश चक्र अशुद्ध है, ल. (९।२७ तक)

वैशाख कृ. १० गुरौ (१ मई) शतभिषा, कलश चक्र शुद्ध है (शुक्रवृद्धत्व दोष) अभिजित मुहूर्त्त, ल. ३

कार्तिक कृ. ४ शनौ (१८ अक्टूबर) रोहिणी (१३।३९ के बाद) कलश चक्र अशुद्ध है, ल.

कार्तिक कृ. ६ चन्द्रे (२० अक्टूबर) पुनर्वसु, कलश चक्र अशुद्ध है। ल. ६

कार्तिक शु. ४ रवौ (२ नवम्बर) मूल (१३।११ के बाद) कलश चक्र अशुद्ध है, ल. ११

कार्तिक शु. ७ बुधे (५ नवम्बर) उ.षा., कलश चक्र शुद्ध है, ल. ६, अभिजित मुहूर्त्त, लग्न ९

कार्तिक शु. ९ शुक्रे (७ नवम्बर) शतभिषा, कलश चक्र शुद्ध है, ल. ६ (पादात् बुध वेधाभाव)

कार्तिक शु. १० शनौ (८ नवम्बर) शतभिषा, कलश चक्र शुद्ध है, अभिजित (१२।०९ के बाद) १२।०९ तक बुध पादवेध

कार्तिक शु. १२ चन्द्रे (१० नवम्बर) उ.भा., कलश चक्र शुद्ध है, ल. ९

कार्तिक शु. १२ चन्द्रे (१० नवम्बर) रेवती, कलश चक्र शुद्ध है, ल. ६

मार्गशीर्ष कृ. ५ चन्द्रे (१७ नवम्बर) पुनर्वसु, कलश चक्र अशुद्ध है. ल. ९, अभिजित मुहूर्त्त (पादात् शुक्र वेधाभाव)

मार्गशीर्ष कृ. १२ चन्द्रे (२४ नवम्बर) चित्रा, कलश चक्र शुद्ध है, ल. ९, ११, अभिजित

मार्गशीर्ष शु. २ शनौ (२९ नवम्बर) मूल, कलश चक्र अशुद्ध है. ल. ११, अभिजित, १२

मार्गशीर्ष शु. ६ गुरौ (४ दिसम्बर) धनिष्ठा, कलश चक्र शुद्ध है, ल. ९, अभिजित

मार्गशीर्ष शु. ७ शुक्रे (५ दिसम्बर) शतभिषा, कलश चक्र शुद्ध है, ल. ९, अभिजित

फाल्गुन कृ. ५ शनौ (१४ फरवरी) चित्रा, कलश चक्र शुद्ध है, ल. १२ (९/०८ तक) (गुरुबाल्यत्व दोष)

फाल्गुन कृ. ११ शुक्रे (२० फरवरी) मूल, कलश चक्र शुद्ध है, ल. १२, अभिजित मुहूर्त्त

फाल्गुन शु. २ शुक्रे (२७ फरवरी) उ.भा-, कलश चक्र अशुद्ध है, ल. २ नवमांश ६, अभिजित

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक संवत् २०६५ वि.

सुविधानुसार किसी विशेष माह में विवाह दिन ज्ञात करने के लिए विगत वर्षों से यह सूर्य, चन्द्र, गुरु शुद्धि का (त्रिबल शुद्धि) कोष्ठक देते आ रहे हैं। जिसमें वर के लिए सूर्य की पूजा तथा कन्याओं के लिए गुरु पूजा के दिन भी दर्शाये रहते हैं अतः ज्योतिषियों को पृथक से त्रिबल शुद्धि का परिश्रम नहीं करना पड़ता। किन्तु यहाँ एक बात सदैव स्मरण रखना चाहिए कि मात्र इसके आधार पर विवाह दिन निश्चित नहीं करना चाहिए। साथ में यह भी देखना आवश्यक है कि जिस दिन विवाह निश्चित कर रहे हैं उस दिन वर तथा कन्या के जन्म लग्न तथा जन्मराशि से आठवीं राशि विवाह लग्न नहीं होना चाहिए तथा जन्म लग्न एवं जन्मराशि के शत्रु राशि का लग्न नवांश भी नहीं होना चाहिए क्योंकि किसी विशेष दिन में विवाह लग्न अत्यन्त सीमित होते हैं। अतः विवाह दिन निश्चित करने से पूर्व इन सभी बातों का विचार कर लेना आवश्यक होता है। यहाँ ४/८वाँ चन्द्रमा वर्जित किया है तथा १२वाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है। वर्तमान में कन्याओं का विवाह अधिक आयु में होने से ४-८-१२वाँ गुरु जो कि नेष्ट होता है पूज्य गुरु की श्रेणी में ही रखा गया है।

राशि	वर	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या	कन्या के लिए पूज्य गुरु
मेष	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, फरवरी १४, १५, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- अगस्त- २०, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- २, ५, ८, १३, १९, २५, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	१३ अप्रैल से १३ जून १६ अग. से १५ सित. १६ अक्टू. से १४ नव.	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, ७, फरवरी- १४, १५, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अगस्त- ६, ७, ८, १२, २०, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- २, ५, ८, १३, १९, २५, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	–
वृष	नव.- २२, २३, २४, दिस.- २, ७, फर.- १४, १५, १६, १७, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, अक्टू.- २, ३, ४, १३, १९, ३०, ३१, नव.- ४, ९, १०, ११।	१४ मई से १५ जुलाई १६ सित. से १६ अक्टू. १५ नव. से १४ दिस. १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, नव.- २२, २३, २४, दिस.- २, ७, फर.- १४, १५, १६, १७, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, २०, २४, २५, सित.- १, २, ३, ४, ६, ११, अक्टू.- २, ३, ४, १३, १९, ३०, ३१, नव.- ४, ९, १०, ११।	९ दिसम्बर तक
मिथुन	अप्रैल- २०, २१, नव.- २१, २९, ३०, दिस.- ७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- २३, २४, २८, २९, अग.- ७, ८, ९, १०, १२, २०, २४, २५, ३१, सित.- ३, ४, ६, ८, ९, १०, अक्टू.- १९, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	१४ जून से १५ अग. १६ अक्टू. से १४ नव. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल- २०, २१, नव.- २१, २९, ३०, दिस.- ७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- २३, २४, २८, २९, अग.- ७, ८, ९, १०, १२, २०, २४, २५, ३१, सित.- ३, ४, ६, ८, ९, १०, अक्टू.- २, ३, ४, ५, ८, १३, १९, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	९ दिसम्बर से
कर्क	अप्रैल- १७, १८, १९, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, ७, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई १८, २३, २४, २८, अग.- ६, ९, १०, १२, २०, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ६, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- ३, ४, ५, ८, १३।	१६ जुला. से १५ सित. १५ नव. से १४ दिस. १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल- १७, १८, १९, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, ७, फर.- १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ९, १०, १२, २०, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ६, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- ३, ४, ५, ८, १३, १९, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	–
सिंह	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, फर.- १४, १५, १९, २०, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- अगस्त- २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- २, ५, ८, १९, २५, नव.- २, ४।	१३ अप्रैल से १३ मई १६ अग. से १६ अक्टू. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, फर.- १४, १५, १९, २०, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २८, २९, अगस्त- ६, ७, ८, १२, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- २, ५, ८, १९, २५, नव.- २, ४।	–

राशि	वर	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या	कन्या के लिए पूज्य गुरु
कन्या	नव.- २१, २२, २३, २४, दिस. २, ७, फर.- १४, १५, १६, १७, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, अक्टू.- २, ३, ४, ८, १३, १९, २५, ३०, ३१, नव.- ४, ९, १०, ११।	१४ मई से १३ जून १६ सित. से १४ नव. १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल- १७ १८, १९, २०, २१, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, दिस.- २, ७, फर.- १४, १५, १६, १७, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, २०, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ६, ११, अक्टू.- २, ३, ४, ८, १३, १९, २५, ३०, ३१, नव.- ४, ९, १०, ११।	९ दिसम्बर तक
तुला	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- ७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- २३, २४, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, १२, २०, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ६, ८, ९, १०, अक्टू.- १९, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	१४ अप्रैल से १३ मई १४ जून से १५ जुलाई १६ अक्टू.से १४ दिस. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- ७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- २३, २४, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, १२, २०, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ६, ८, ९, १०, अक्टू.- २, ३, ४, ५, ८, १३, १९, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	९ दिसम्बर से
वृश्चिक	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, ७, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, १२, २०, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ६ ८, ९, १०, ११, अक्टू.- २, ३, ४, ५, ८।	१४ मई से १३ जून १६ जुलाई से १५ अग. १५ नव. से १४ दिस.	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, ७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ४, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, १२, २०, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ६, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- २, ३, ४, ५, ८, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	–
धनु	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- अग.- २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ५, ६, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- २, ३, ४, ५, ८, १९, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४।	१३ अप्रैल से १३ मई १४ जून से १५ जुलाई १६ अग. से १५ सित. १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २८, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, १२, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ४, ६, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- २, ३, ४, ५, ८, १९, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४।	–
मकर	नव.- २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, ७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, १२, अक्टू.- २, ३, ४, ५, ८, १३, १९, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	१४ मई से १३ जून १६ जुलाई से १५ अग. १६ सित. से १५ अक्टू. १३ जन. से १३ मार्च	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, नव.- २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, ७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ४, ५, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ७, ८, ९, १०, १२, २०, २४, २५, सित.- १, २, ३, ४, ६, ८, १०, ११, अक्टू.- २, ३, ४, ५, ८, १३, १९, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	९ दिसम्बर तक
कुम्भ	अप्रैल- २०, २१, २७, नव.- २१, २९, ३०, दिस.- २, ७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ५, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २९, अग.- ७, ९, १०, १२, २०, ३१, सित.- ३, ४, ६, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- १९, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	१४ जून से १५ जुलाई १६ अग. से १५ सित. १६ अक्टू से १४ नव. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल- २०, २१, २७, नव.- २१, २९, ३०, दिस.- २, ७, फर.- १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ५, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २९, अग.- ७, ९, १०, १२, २०, ३१, सित.- ३, ४, ६, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- २, ३. ४, ५, ८, १३, १९, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	९ दिसम्बर से
मीन	अप्रैल- १७, १८, १९, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, ७, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ९, १०, १२, २०, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ६, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- ३, ४, ५, ८, १३।	१३ अप्रैल से १३ मई १६ जुलाई से १५ अग. १६ सित. से १६ अक्टू १५ नव. से १४ दिस.	अप्रैल- १७, १८, १९, २७, नव.- २१, २२, २३, २४, २९, ३०, दिस.- २, ७, फर.- १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, मार्च- ४, १२, पंजाब एवं द्विगर्त देश हेतु- जुलाई- १८, २३, २४, २८, २९, अग.- ६, ९, १०, १२, २०, २४, २५, ३१, सित.- १, २, ३, ६, ८, ९, १०, ११, अक्टू.- ३, ४, ५, ८, १३, २५, ३०, ३१, नव.- २, ४, ९, १०, ११।	–

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चार संवत् २०६५ वि. (सन् २००८-२००९ ई.)

सूर्य चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१०	अप्रैल	रेवती	४
१३	''	अश्वि	१ मेष
१७	''	''	२
२०	''	''	३
२४	''	''	४
२७	''	भरणी	१
३०	''	''	२
४	मई	''	३
७	''	''	४
११	''	कृतिका	१
१४	''	''	२ वृष
१८	''	''	३
२१	''	''	४
२५	''	रोहिणी	१
२८	''	''	२
३१	''	''	३
४	जुन	''	४
७	''	मृगशिर	१
११	''	''	२
१४	''	''	३ मिथुन
१८	''	''	४
२१	''	आर्द्रा	१
२५	''	''	२
२८	''	''	३
२	जुलाई	''	४
५	''	पुन.	१
९	''	''	२
१२	''	''	३
१६	''	''	४ कर्क
१९	''	पुष्य	१
२३	''	''	२
२६	''	''	३
३०	''	''	४
२	अग.	आश्ले.	१
६	''	''	२
९	''	''	३
१३	''	''	४

सूर्य चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१६	अग.	मघा	१ सिंह
२०	''	''	२
२३	''	''	३
२७	''	''	४
३०	''	पू.फा.	१
३	सित.	''	२
६	''	''	३
९	''	''	४
१३	''	उ.फा.	१
१६	''	''	२ कन्या
२०	''	''	३
२३	''	''	४
२६	''	हस्त	१
३०	''	''	२
३	अक्टू.	''	३
७	''	''	४
१०	''	चित्रा	१
१३	''	''	२
१७	''	''	३ तुला
२०	''	''	४
२३	''	स्वाती	१
२७	''	''	२
३०	''	''	३
२	नवम्बर	''	४
६	''	विशाखा	१
९	''	''	२
१२	''	''	३
१६	''	''	४ वृश्चि.
१९	''	अनु.	१
२२	''	''	२
२६	''	''	३
२९	''	''	४
२	दिस.	ज्येष्ठा	१
५	''	''	२
९	''	''	३
१२	''	''	४
१५	''	मूल	१ धनु

सूर्य चार-मंगलचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१९	दिस.	मूल	२
२२	''	''	३
२५	''	''	४
२८	''	पू.षाढ़ा	१
१	जनवरी	''	२
४	''	''	३
७	''	''	४
१०	''	उ.षाढ़ा	१
१४	''	''	२ मकर
१७	''	''	३
२०	''	''	४
२४	''	श्रवण	१
२७	''	''	२
३०	''	''	३
२	फर.	''	४
६	''	धनिष्ठा	१
९	''	''	२
१२	''	''	३ कुम्भ
१६	''	''	४
१९	''	शत.	१
२२	''	''	२
२६	''	''	३
१	मार्च	''	४
४	''	पू.भा.	१
७	''	''	२
११	''	''	३
१४	''	''	४ मीन
१८	''	उ.भा.	१
२१	''	''	२
२४	''	''	३

मंगलचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
८	अप्रैल	पुनर्वसु	१
१५	''	''	२
२२	''	''	३
२८	''	''	४ कर्क
५	मई	पुष्य	१
११	''	''	२

मंगलचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१७	मई	''	३
२३	''	''	४
२९	''	आश्ले.	१
४	जून	''	२
१०	''	''	३
१५	''	''	४
२१	''	मघा	१ सिंह
२७	''	''	२
२	जुलाई	''	३
८	''	''	४
१४	''	पू.फा.	१
१९	''	''	२
२५	''	''	३
३०	''	''	४
४	अगस्त	उ.फा.	१
१०	''	''	२ कन्या
१५	''	''	३
२०	''	''	४
२५	''	हस्त	१
३१	''	''	२
५	सितम्बर	''	३
१०	''	''	४
१५	''	चित्रा	१
२०	''	''	२
२५	''	''	३ तुला
३०	''	''	४
५	अक्टू.	स्वाती	१
१०	''	''	२
१५	''	''	३
२०	''	''	४
२४	''	विशाखा	१
२९	''	''	२
३	नवम्बर	''	३
७	''	''	४ वृश्चिक
१२	''	अनु.	१
१७	''	''	२
२२	''	अनु.	३

मंगलचार-बुधचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२६	नवम्बर	''	४
१	दिस.	ज्येष्ठा	१
५	''	''	२
१०	''	''	३
१४	''	''	४
१९	''	मूल	१ धनु
२३	''	''	२
२८	''	''	३
१	जनवरी	''	४
५	''	पू.षा.	१
१०	''	''	२
१५	''	''	३
१९	''	''	४
२३	''	उ.षा.	१
२८	''	''	२ मकर
१	फरवरी	''	३
५	''	''	४
१०	''	श्रवण	१
१४	''	''	२
१८	''	''	३
२२	''	''	४
२७	''	धनि.	१
३	मार्च	''	२
७	''	''	३ कुम्भ
११	''	''	४
१६	''	शत.	१
२०	''	''	२
२४	''	''	३
२८	''	''	४

बुधचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
८	अप्रैल	रेवती	१
१०	''	''	२
११	''	''	३
१३	''	''	४
१५	''	अश्वि.	१ मेष
१६	''	''	२

बुधचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१८	अप्रैल	अश्वि.	३
१९	''	''	४
२१	''	भरणी	१
२३	''	''	२
२४	''	''	३
२६	''	''	४
२८	''	कृतिका	१
२९	''	''	२ वृष
१	मई	''	३
३	''	''	४
५	''	रोहिणी	१
७	''	''	२
१०	''	''	३
१२	''	''	४
१६	''	मृग.	१
२२	''	''	२
३१	''	''	१
७	जून	रोहिणी	४
१४	''	''	३
२४	''	''	४
३०	''	मृग.	१
३	जुलाई	''	२
६	''	''	३ मिथुन
९	''	''	४
११	''	आर्द्रा	१
१३	''	''	२
१५	''	''	३
१७	''	''	४
१८	''	पुन.	१
२०	''	''	२
२२	''	''	३
२३	''	''	४ कर्क
२५	''	पुष्य	१
२७	''	''	२
२८	''	''	३
३०	''	''	४
३१	''	आश्ले	१

बुधचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२	अगस्त	''	२
४	''	''	३
५	''	''	४
७	''	मघा	१ सिंह
९	''	''	२
११	''	''	३
१२	''	''	४
१४	''	पू.फा.	१
१६	''	''	२
१८	''	''	३
२०	''	''	४
२२	''	उ.फा.	१
२५	''	''	२ कन्या
२७	''	''	३
२९	''	''	४
१	सितम्बर	हस्त	१
३	''	''	२
६	''	''	३
९	''	''	४
१३	''	चित्रा	१
१७	''	''	२
३०	''	''	१
४	अक्टू.	हस्त	४
७	''	''	३
१०	''	''	२
२२	''	''	३
२५	''	''	४
२७	''	चित्रा	१
२९	''	''	२
१	नवम्बर	''	३ तुला
३	''	''	४
५	''	स्वाती	१
७	''	''	२
९	''	''	३
११	''	''	४
१३	''	विशा.	१
१५	''	''	२

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चार संवत् २०६५ वि. (सन् २००८-२००९ ई.)

बुधचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१७	जुलाई	विशा.	३
१९	"	"	४ वृश्चि.
२१	"	अनु.	१
२३	"	"	२
२६	"	"	३
२८	"	"	४
३०	"	ज्येष्ठा	१
२	दिसम्बर	"	२
४	"	"	३
६	"	"	४
८	"	मूल	१ धनु
१०	"	"	२
१३	"	"	३
१५	"	"	४
१७	"	पू.षा.	१
१९	"	"	२
२१	"	"	३
२३	"	"	४
२५	"	उ.षा.	१
२८	"	"	२ मकर
३०	"	"	३
२	जनवरी	"	४
५	"	श्रवण	१
९	"	"	२
१४	"	"	१
१८	"	उ.षा.	४
२०	"	"	३
२३	"	"	२
२६	"	"	१ धनु
७	फरवरी	"	२ मकर
१२	"	"	३
१५	"	"	४
१८	"	श्रवण	१
२१	"	"	२
२३	"	"	३
२६	"	"	४
२८	"	धनि.	१
२	मार्च	"	२

बुध-गुरु-शुक्रचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
५	मार्च	धनि.	३ कुम्भ
७	"	"	४
९	"	शत.	१
११	"	"	२
१३	"	"	३
१५	"	"	४
१७	"	पू.भा.	१
१९	"	"	२
२१	"	"	३
२२	"	"	४ मीन
२४	"	उ.भा.	१
२६	"	"	२

गुरुचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
६	अप्रैल	उ.षा.	१
१२	जून	पू.षा.	४
१०	जुलाई	"	३
८	अगस्त	"	२
८	अक्टूबर	"	३
४	नवम्बर	"	४
२३	"	उ.षा.	१
९	दिसम्बर	"	२ मकर
२५	"	"	३
८	जनवरी	"	४
२२	"	श्रवण	१
५	फरवरी	"	२
२०	"	"	३
७	मार्च	"	४
२३	"	धनि.	१

शुक्रचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
९	अप्रैल	उ.भा.	३
१२	"	"	४
१५	"	रेवती	१
१७	"	"	२
२०	"	"	३
२३	"	"	४
२५	"	अश्वि.	१ मेष

शुक्रचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२८	अप्रैल	अश्वि.	२
१	मई	"	३
४	"	"	४
६	"	भरणी	१
९	"	"	२
१२	"	"	३
१४	"	"	४
१७	"	कृति.	१
२०	"	"	२ वृष
२२	"	"	३
२५	"	"	४
२८	"	रोहिणी	१
३१	"	"	२
२	जून	"	३
५	"	"	४
८	"	मृग.	१
१०	"	"	२
१३	"	"	३ मिथुन
१६	"	"	४
१९	"	आर्द्रा	१
२१	"	"	२
२४	"	"	३
२७	"	"	४
२९	"	पुन.	१
२	जुलाई	"	२
५	"	"	३
८	"	"	४ कर्क
१०	"	पुष्य	१
१३	"	"	२
१६	"	"	३
१८	"	"	४
२१	"	आश्ले.	१
२४	"	"	२
२७	"	"	३
२९	"	"	४
१	अगस्त	मघा	१ सिंह
४	"	"	२
६	"	"	३

शुक्रचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
९	अगस्त	मघा	४
१२	"	पू.फा.	१
१५	"	"	२
१७	"	"	३
२०	"	"	४
२३	"	उ.फा.	१
२५	"	"	२ कन्या
२८	"	"	३
३१	"	"	४
३	सितम्बर	हस्त	१
५	"	"	२
८	"	"	३
११	"	"	४
१३	"	चित्रा	१
१६	"	"	२
१९	"	"	३ तुला
२२	"	"	४
२४	"	स्वाती	१
२७	"	"	२
३०	"	"	३
३	अक्टू.	"	४
५	"	विशाखा	१
८	"	"	२
११	"	"	३
१४	"	"	४ वृश्चि.
१६	"	अनु.	१
१९	"	"	२
२२	"	"	३
२५	"	"	४
२७	"	ज्येष्ठा	१
३०	"	"	२
२	नवम्बर	"	३
५	"	"	४
७	"	मूल	१ धनु
१०	"	"	२
१३	"	"	३
१६	"	"	४
१८	"	पू.षा.	१

शुक्र-शनिचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२१	नवम्बर	पू.षा.	२
२४	"	"	३
२७	"	"	४
३०	"	उ.षा.	१
३	दिसम्बर	"	२ मकर
५	"	"	३
८	"	"	४
११	"	श्रवण	१
१४	"	"	२
१७	"	"	३
२०	"	"	४
२३	"	धनिष्ठा	१
२६	"	"	२
२९	"	"	३ कुम्भ
१	जनवरी	"	४
४	"	शत.	१
७	"	"	२
१०	जनवरी	"	३
१३	"	"	४
१७	"	पू.भा.	१
२०	"	"	२
२३	"	"	३
२७	"	"	४ मीन
३१	"	उ.भा.	१
४	फरवरी	"	२
८	"	"	३
१३	"	"	४
१८	"	रेवती	१
२६	"	"	२
१५	मार्च	"	१
२२	"	उ.भा	४

शनिचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१०	मार्च	मघा	३
२५	जून	"	४
२८	जुलाई	पू.फा.	१
२५	अगस्त	"	२
२०	सितम्बर	"	३

शनि-राहु-केतु-यू.ने.चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१९	अक्टूबर	पू.फा.	४
२६	नवम्बर	उ.फा.	१
५	फरवरी	पू.फा.	४
२२	मार्च	"	३

राहुचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
३०	अप्रैल	धनि.	२ मकर
२	जुलाई	"	१
३	सितम्बर	श्रवण	४
५	नवम्बर	"	३
७	जनवरी	"	२
१०	मार्च	"	१

केतुचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
३०	अप्रैल	आश्ले.	४ कर्क
२	जुलाई	"	३
३	सितम्बर	"	२
५	नवम्बर	"	१
७	जनवरी	पुष्य	४
१०	मार्च	"	३

हर्षलचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१४	अप्रैल	पू.भा.	३
१३	सितम्बर	"	२
५	फरवरी	"	३

नेपच्यूनचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२४	अप्रैल	धनि.	३ कुम्भ
२८	जून	"	२ मकर
१३	फरवरी	"	३ कुम्भ

प्लूटोचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१८	मई	मूल	२
१५	दिसम्बर	"	३

(मार्गी - वक्री)

मंगल पूरे वर्ष मार्गी रहेगा

मार्गी-वक्री/उदयास्त

बुध वक्री २६ मई
बुध मार्गी १९ जून
बुध वक्री २४ सितम्बर
बुध मार्गी १६ अक्टूबर
बुध वक्री ११ जनवरी २००९
बुध मार्गी १ फरवरी
गुरु वक्री ९ मई
गुरु मार्गी ८ सितम्बर
शुक्र वक्री ६ मार्च
शनि वक्री ३१ दिसम्बर
हर्षल वक्री २७ जून
हर्षल मार्गी २७ नवम्बर
नेपच्यून वक्री २६ मई
नेपच्यून मार्गी २ नवम्बर
प्लूटो मार्गी ९ सितम्बर

(ग्रहों के उदयास्त)

मंगल ८ अक्टूबर पश्चिमास्त
मंगल १३ फरवरी पूर्वोदय
बुध २८ अप्रैल पश्चिमोदय
बुध २८ मई पश्चिमास्त
बुध १७ जून पूर्वोदय
बुध १७ जुलाई पूर्वास्त
बुध ११ अगस्त पश्चिमोदय
बुध ३० सितम्बर पश्चिमास्त
बुध १३ अक्टूबर पूर्वोदय
बुध ४ नवम्बर पूर्वास्त
बुध २० दिसम्बर पश्चिमोदय
बुध १४ जनवरी २००९ पश्चिमास्त
बुध २६ जनवरी पूर्वोदय
बुध १७ मार्च पूर्वास्त
गुरु १४ जनवरी २००९ पश्चिमास्त
गुरु ११ फरवरी पूर्वोदय
शुक्र ५ मई पूर्वास्त
शुक्र १३ जुलाई पश्चिमोदय
शुक्र २६ मार्च २००९ पश्चिमास्त
शनि १७ अगस्त पश्चिमास्त
शनि २१ सितम्बर पूर्वोदय

संवत् २०६५ वि. के सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि तथा रवियोग, द्विपुष्कर, रविपुष्य एवं गुरुपुष्य योग

तारीखों पर से स्टैं. टाईम के अनुसार लिखे हैं। इस समय में शुभ कार्यारम्भ करना सिद्धिदायक होता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अमृत सिद्धि योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
८	अप्रैल	१५/५४	से	१०	अप्रैल	सूर्योदय	तक
१३	अप्रैल	७/१३	से	१४	अप्रैल	७/०२	तक
१५.	अप्रैल	सूर्योदय	से	१५	अप्रैल	७/२५	तक
२३	अप्रैल	सूर्योदय	से	२३	अप्रैल	२४/०८	तक
२७	अप्रैल	८/३४	से	२८	अप्रैल	सूर्योदय	तक
२८	अप्रैल	१०/४१	से	२९	अप्रैल	सूर्योदय	तक
४	मई	७/४९	से	४	मई	२९/०५	तक
६	मई	सूर्योदय	से	६	मई	२३/०३	तक
७	मई	सूर्योदय	से	८	मई	सूर्योदय	तक
९	मई	१५/३०	से	१०	मई	सूर्योदय	तक
११	मई	सूर्योदय	से	११	मई	१३/१६	तक
१७	मई	२१/४६	से	१८	मई	सूर्योदय	तक
१९	मई	२७/२३	से	२०	मई	सूर्योदय	तक
२१	मई	सूर्योदय	से	२१	मई	६/१९	तक
२५	मई	सूर्योदय	से	२५	मई	१७/११	तक
२६	मई	सूर्योदय	से	२६	मई	१९/०४	तक
३०	मई	१९/४०	से	३१	मई	सूर्योदय	तक
१	जून	सूर्योदय	से	१	जून	१५/३८	तक
३	जून	सूर्योदय	से	३	जून	९/५०	तक
४	जून	सूर्योदय	से	४	जून	२७/४७	तक
६	जून	सूर्योदय	से	६	जून	२३/०१	तक
११	जून	२३/०५	से	१२	जून	सूर्योदय	तक
१४	जून	सूर्योदय	से	१५	जून	सूर्योदय	तक
१६	जून	९/२३	से	१७	जून	सूर्योदय	तक
२१	जून	२२/५२	से	२२	जून	सूर्योदय	तक
२६	जून	२७/०९	से	२८	जून	सूर्योदय	तक
३०	जून	१९/५६	से	१	जुलाई	सूर्योदय	तक
२	जुलाई	सूर्योदय	से	२	जुलाई	१४/२४	तक
३	जुलाई	११/४४	से	४	जुलाई	९/२१	तक
९	जुलाई	६/३२	से	१०	जुलाई	सूर्योदय	तक
१२	जुलाई	सूर्योदय	से	१२	जुलाई	१३/००	तक
१४	जुलाई	सूर्योदय	से	१४	जुलाई	१८/५२	तक

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
१८	जुलाई	२८/५४	से	२०	जुलाई	सूर्योदय	तक
२४	जुलाई	८/५४	से	२६	जुलाई	सूर्योदय	तक
२८	जुलाई	सूर्योदय	से	२९	जुलाई	सूर्योदय	तक
३१	जुलाई	सूर्योदय	से	१	अगस्त	सूर्योदय	तक
६	अगस्त	सूर्योदय	से	६	अगस्त	१६/२६	तक
१५	अगस्त	१२/०७	से	१६	अगस्त	१३/३३	तक
१९	अगस्त	१४/५३	से	२०	अगस्त	सूर्योदय	तक
२१	अगस्त	सूर्योदय	से	२२	अगस्त	१२/४२	तक
२५	अगस्त	सूर्योदय	से	२६	अगस्त	सूर्योदय	तक
२८	अगस्त	सूर्योदय	से	२९	अगस्त	२६/२७	तक
३१	अगस्त	२४/१८	से	१	सितम्बर	सूर्योदय	तक
१२	सितम्बर	सूर्योदय	से	१२	सितम्बर	२१/५९	तक
१६	सितम्बर	सूर्योदय	से	१६	सितम्बर	२१/३३	तक
१८	सितम्बर	सूर्योदय	से	१८	सितम्बर	१८/४५	तक
२०	सितम्बर	१५/२७	से	२१	सितम्बर	सूर्योदय	तक
२२	सितम्बर	सूर्योदय	से	२२	सितम्बर	१२/२५	तक
२५	सितम्बर	सूर्योदय	से	२५	सितम्बर	९/१५	तक
२८	सितम्बर	८/२९	से	२९	सितम्बर	सूर्योदय	तक
३	अक्टूबर	१५/२३	से	४	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
५	अक्टूबर	२१/०६	से	६	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
१०	अक्टूबर	सूर्योदय	से	१०	अक्टूबर	७/१०	तक
१४	अक्टूबर	सूर्योदय	से	१४	अक्टूबर	६/४८	तक
१४	अक्टूबर	१९/०५	से	१५	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
१८	अक्टूबर	सूर्योदय	से	१८	अक्टूबर	२०/१२	तक
२६	अक्टूबर	सूर्योदय	से	२७	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
३०	अक्टूबर	२२/५०	से	३१	अक्टूबर	२५/३२	तक
२	नवम्बर	सूर्योदय	से	३	नवम्बर	सूर्योदय	तक
९	नवम्बर	१८/१३	से	१०	नवम्बर	सूर्योदय	तक
११	नवम्बर	१५/४२	से	१२	नवम्बर	सूर्योदय	तक
१७	नवम्बर	२२/०७	से	१८	नवम्बर	सूर्योदय	तक
१८	नवम्बर	२०/४६	से	१९	नवम्बर	सूर्योदय	तक
२३	नवम्बर	सूर्योदय	से	२३	नवम्बर	२२/४९	तक
२६	नवम्बर	२९/२२	से	२८	नवम्बर	८/०७	तक

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
३०	नवम्बर	सूर्योदय	से	३०	नवम्बर	१४/११	तक
७	दिसम्बर	सूर्योदय	से	७	दिसम्बर	२७/१३	तक
९	दिसम्बर	सूर्योदय	से	९	दिसम्बर	२४/३०	तक
१०	दिसम्बर	२२/०९	से	११	दिसम्बर	सूर्योदय	तक
१५	दिसम्बर	७/३२	से	१५	दिसम्बर	२९/२०	तक
१६	दिसम्बर	सूर्योदय	से	१६	दिसम्बर	२७/४५	तक
२४	दिसम्बर	११/१९	से	२५	दिसम्बर	१४/१२	तक
२८	दिसम्बर	२३/२०	से	२९	दिसम्बर	सूर्योदय	तक
२९	दिसम्बर	२६/१४	से	३०	दिसम्बर	सूर्योदय	तक
४	जनवरी २००९	सूर्योदय	से	४	जनवरी	१०/५३	तक
६	जनवरी	सूर्योदय	से	६	जनवरी	९/५१	तक
७	जनवरी	८/१८	से	८	जनवरी	सूर्योदय	तक
११	जनवरी	१८/५४	से	१२	जनवरी	१६/१६	तक
१३	जनवरी	सूर्योदय	से	१३	जनवरी	१४/०२	तक
२१	जनवरी	सूर्योदय	से	२१	जनवरी	२०/३०	तक
२५	जनवरी	सूर्योदय	से	२६	जनवरी	सूर्योदय	तक
२६	जनवरी	८/२४	से	२७	जनवरी	सूर्योदय	तक
३	फरवरी	१५/४६	से	५	फरवरी	सूर्योदय	तक
८	फरवरी	सूर्योदय	से	८	फरवरी	२७/२८	तक
१४	फरवरी	२१/३३	से	१५	फरवरी	सूर्योदय	तक
१६	फरवरी	२५/०४	से	१७	फरवरी	सूर्योदय	तक
२२	फरवरी	सूर्योदय	से	२२	फरवरी	१५/३३	तक
२३	फरवरी	सूर्योदय	से	२३	फरवरी	१७/५३	तक
२७	फरवरी	२२/२१	से	२८	फरवरी	सूर्योदय	तक
१	मार्च	सूर्योदय	से	१	मार्च	२१/५९	तक
३	मार्च	सूर्योदय	से	३	मार्च	२०/२०	तक
४	मार्च	सूर्योदय	से	५	मार्च	सूर्योदय	तक
६	मार्च	१६/०७	से	७	मार्च	सूर्योदय	तक
८	मार्च	सूर्योदय	से	८	मार्च	१२/४०	तक
१४	मार्च	७/०४	से	१५	मार्च	सूर्योदय	तक
१६	मार्च	९/३७	से	१७	मार्च	सूर्योदय	तक
२१	मार्च	२३/३६	से	२२	मार्च	सूर्योदय	तक
२६	मार्च	२९/४०	से	२८	मार्च	सूर्योदय	तक

रवि योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
८	अप्रैल	१५/५४	से	९	अप्रैल	१३/२२	तक
१०	अप्रैल	११/०८	से	११	अप्रैल	९/१८	तक
१३	अप्रैल	७/१३	से	१३	अप्रैल	१८/१९	तक
१४	अप्रैल	सूर्योदय	से	१६	अप्रैल	८/१९	तक
१८	अप्रैल	११/२२	से	१९	अप्रैल	१३/२६	तक
२६	अप्रैल	५/५९	से	२७	अप्रैल	८/३४	तक
२७	अप्रैल	१०/२४	से	२८	अप्रैल	१०/४१	तक
७	मई	२०/०९	से	८	मई	१७/३४	तक
९	मई	१५/३०	से	१०	मई	१४/०२	तक
१०	मई	२८/३०	से	११	मई	१३/१६	तक
१३	मई	१३/५५	से	१५	मई	१७/०१	तक
१७	मई	२१/४६	से	१८	मई	२४/३०	तक
२६	मई	१९/०४	से	२७	मई	२०/२१	तक
५	जून	२५/०९	से	६	जून	२३/०१	तक
८	जून	२०/४६	से	९	जून	२०/४८	तक
११	जून	२३/०५	से	१३	जून	२७/४०	तक
१६	जून	९/२३	से	१७	जून	१२/२१	तक
२४	जून	२७/११	से	२५	जून	२७/३०	तक
६	जुलाई	६/०६	से	७	जुलाई	५/२८	तक
८	जुलाई	५/३७	से	९	जुलाई	६/३२	तक
११	जुलाई	१०/२२	से	१३	जुलाई	१५/५४	तक
१५	जुलाई	२१/४५	से	१६	जुलाई	२४/२६	तक
२४	जुलाई	८/५४	से	२५	जुलाई	८/१९	तक
४	अगस्त	१४/५५	से	५	अगस्त	१५/१९	तक
६	अगस्त	१६/२६	से	७	अगस्त	१८/१२	तक
९	अगस्त	२३/१५	से	११	अगस्त	२९/०६	तक
१४	अगस्त	१०/१२	से	१५	अगस्त	१२/०७	तक
२२	अगस्त	१२/४२	से	२३	अगस्त	११/२७	तक
२	सितम्बर	२५/२१	से	३	सितम्बर	२६/४७	तक
४	सितम्बर	२८/४७	से	६	सितम्बर	७/१८	तक
८	सितम्बर	१३/०६	से	१०	सितम्बर	१८/३०	तक
१२	सितम्बर	२१/५९	से	१३	सितम्बर	७/१३	तक
१३	सितम्बर	२२/४६	से	१४	सितम्बर	२२/५४	तक
२०	सितम्बर	१५/२७	से	२१	सितम्बर	१३/५२	तक
२	अक्टूबर	१३/०३	से	३	अक्टूबर	१५/२३	तक
४	अक्टूबर	१८/०७	से	५	अक्टूबर	२१/०६	तक
७	अक्टूबर	२६/५८	से	१०	अक्टूबर	७/१०	तक
१०	अक्टूबर	११/४३	से	११	अक्टूबर	८/१३	तक
१३	अक्टूबर	७/५८	से	१४	अक्टूबर	६/४८	तक
१९	अक्टूबर	१८/१५	से	२०	अक्टूबर	१६/३९	तक
३१	अक्टूबर	२५/३२	से	१	नवम्बर	२८/३०	तक
३	नवम्बर	७/३६	से	४	नवम्बर	१०/४१	तक
७	नवम्बर	१७/२७	से	९	नवम्बर	१८/१३	तक
११	नवम्बर	१५/४२	से	१२	नवम्बर	१३/२९	तक
१७	नवम्बर	१२/०७	से	१८	नवम्बर	२०/४६	तक
१९	नवम्बर	१२/२९	से	१९	नवम्बर	२०/०१	तक
३०	नवम्बर	१४/४१	से	१	दिसम्बर	१७/१८	तक
२	दिसम्बर	१६/४१	से	२	दिसम्बर	२०/१७	तक
३	दिसम्बर	२२/५८	से	४	दिसम्बर	२५/०९	तक
६	दिसम्बर	२७/२२	से	८	दिसम्बर	२६/१४	तक
१०	दिसम्बर	२२/०९	से	११	दिसम्बर	१९/२१	तक
१७	दिसम्बर	२६/५२	से	१८	दिसम्बर	२६/४३	तक
३०	दिसम्बर	२८/५४	से	३१	दिसम्बर	३१/१३	तक
२	जनवरी	९/०४	से	३	जनवरी	१०/१९	तक
५	जनवरी	१०/४४	से	७	जनवरी	८/१८	तक
८	जनवरी	२७/३६	से	९	जनवरी	२४/४५	तक
१६	जनवरी	११/११	से	१७	जनवरी	११/४५	तक
२९	जनवरी	१४/३९	से	३०	जनवरी	१५/५३	तक
३१	जनवरी	१६/३८	से	१	फरवरी	१६/५२	तक
३	फरवरी	१५/४६	से	५	फरवरी	१२/४४	तक
५	फरवरी	२९/१७	से	६	फरवरी	१०/३९	तक
७	फरवरी	२९/५३	से	८	फरवरी	२७/२८	तक
१४	फरवरी	२१/३३	से	१५	फरवरी	२२/५८	तक
२७	फरवरी	२२/२१	से	२८	फरवरी	२२/२१	तक
१	मार्च	२१/५९	से	२	मार्च	२१/१८	तक
५	मार्च	१७/४३	से	७	मार्च	१४/२५	तक
९	मार्च	१०/५८	से	१०	मार्च	९/२४	तक
१६	मार्च	९/३७	से	१७	मार्च	११/५३	तक
१७	मार्च	२४/३६	से	१८	मार्च	१४/३८	तक

गुरुपुष्य योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
३१	जुलाई	१९/२५	से	१	अगस्त	सूर्योदय	तक
२८	अगस्त	सूर्योदय	से	२८	अगस्त	२६/२७	तक
२५	सितम्बर	सूर्योदय	से	२५	सितम्बर	९/१५	तक

रविपुष्य योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
१३	अप्रैल	७/१३	से	१४	अप्रैल	सूर्योदय	तक
११	मई	सूर्योदय	से	११	मई	१३/१६	तक
११	जनवरी	१८/५४	से	१२	जनवरी	सूर्योदय	तक
८	फरवरी	सूर्योदय	से	८	फरवरी	२७/२८	तक
८	मार्च	सूर्योदय	से	८	मार्च	१२/४०	तक

द्विपुष्कर योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
२७	मई	सूर्योदय	से	२७	मई	२०/२१	तक
२०	जुलाई	६/३५	से	२०	जुलाई	१५/३७	तक
२९	जुलाई	सूर्योदय	से	२९	जुलाई	२३/४५	तक
२१	सितम्बर	१३/५२	से	२१	सितम्बर	२३/४०	तक
३०	सितम्बर	१४/०२	से	१	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
११	अक्टूबर	७/१४	से	११	अक्टूबर	८/१३	तक
२३	नवम्बर	२२/४९	से	२४	नवम्बर	सूर्योदय	तक
१७	जनवरी	११/४५	से	१७	जनवरी	१९/४९	तक
२७	जनवरी	१५/२१	से	२८	जनवरी	सूर्योदय	तक
२२	मार्च	२६/०१	से	२३	मार्च	सूर्योदय	तक

त्रिपुष्कर योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
१२	अप्रैल	७/५८	से	१२	अप्रैल	१२/४७	तक
२२	अप्रैल	सूर्योदय	से	२२	अप्रैल	२०/१५	तक
२७	अप्रैल	८/३४	से	२८	अप्रैल	सूर्योदय	तक
६	मई	१३/५६	से	५	मई	२३/०३	तक
१५	जून	६/२७	से	१५	जून	१५/५८	तक
२९	जून	२२/२६	से	३०	जून	सूर्योदय	तक
८	जुलाई	२०/४९	से	९	जुलाई	सूर्योदय	तक
२३	अगस्त	११/२७	से	२३	अगस्त	१८/२६	तक
३१	अगस्त	२४/२७	से	१	सितम्बर	सूर्योदय	तक
६	सितम्बर	सूर्योदय	से	६	सितम्बर	७/१८	तक
२५	अक्टूबर	१४/५४	से	२५	अक्टूबर	२६/२१	तक
४	नवम्बर	१८/२५	से	५	नवम्बर	सूर्योदय	तक
१४	दिसम्बर	१०/१२	से	१४	दिसम्बर	१४/३५	तक
२३	दिसम्बर	८/४१	से	२४	दिसम्बर	सूर्योदय	तक
२८	दिसम्बर	२३/२०	से	२९	दिसम्बर	सूर्योदय	तक
३	जनवरी	सूर्योदय	से	३	जनवरी	१०/१९	तक
१५	फरवरी	२२/५८	से	१६	फरवरी	सूर्योदय	तक
२१	फरवरी	१२/४९	से	२१	फरवरी	२६/१९	तक
३	मार्च	सूर्योदय	से	३	मार्च	२०/२०	तक

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः।

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने।
समस्ताजगदाधार मूर्त्तये ब्रह्मणे नमः॥१॥
विचार्य सम्यग्गणितं सुनिश्चितं नवैः प्रकारैश्च तथा पुरातनैः,
विद्वद्वरः श्रीहरदेव शर्मा सुधाकरश्चैव तथा विपश्चित्।
पंचांगरत्नं प्रसरन्मयूखं श्रीकेतकीदृग्गणितेन युक्तम्,
लोकोपकाराय कृतप्रयत्न प्रचक्रतु र्मोहविनाशदक्षम्॥२॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद् ध्वजारोपणम्,
स्नानं मंगलमाचरेद् द्विजवरैः सार्धं सुपुजोत्सवम्।
देवानां गुरुयोषितां च शिशवोऽलंकारवस्त्रादिभिः,
सम्पूज्यो गणकः फलं च श्रृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्॥३॥
तैलाभ्यंगं, स्नानमादौ च कृत्वा पीयूषोत्थं पारिभद्रस्य पत्रम्,
भक्षेत्सौख्यं मानवो व्याधिनाशं विद्यायुः श्री लभ्यते वर्षमूले॥४॥
पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः,
सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः॥५॥
मरीचिहिंगुलवणमजमोदा सशर्करैः।
तिंतिड़ीजीरकश्चैव भक्षयेद्रोगशान्तये॥६॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है। इस दिन प्रत्येक घर पर ध्वज (अपने-अपने सम्प्रदायानुसार जो ध्वज हो वह) लगायें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें। मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा कर, स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषीजी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें। प्रातःकाल में कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर, चूर्ण बनावें, कुछ इमली भी मिलावें और वह भक्षण करें। इस प्रयोग से वर्ष भर में रक्त विकार नहीं होता और अनेक रोगों की शान्ति होती है।

पंचांगस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वार्थिवृन्दनम्,
सन्तोष्यानकदानैः परमसुखयुतो भोजयित्वान्नमिष्ठम्।
श्रृण्वन् गीतानि वाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं सक्रमेच्च,
क्रीड़न् स्त्रीभिश्च सार्धं निशि रहसि नरो यावदब्द सुखी स्यात्॥७॥

पंचांगस्थ गणेश ब्राह्मण और ज्योतिषीजी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें। मिष्ठान आदि भोजन करावें। गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर यह सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्द पूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

अथ युगानां व्यवस्था- चतुर्युगसहस्राणि ब्राह्मणो दिनमुच्यते, तेषु चतुर्दश मनवो भवन्ति। तन्नामानि १ स्वायम्भुवः, २ स्वारोचिषः, ३ औत्तमः, ४ तामसः, ५ रैवतः, ६ चाक्षुषः, ७ वैवस्वतः, ८ सावर्णिः, ९ दक्षसावर्णिः, १० ब्रह्मसावर्णिः, ११ धर्मसावर्णिः, १२ रुद्रसावर्णिः, १३ देवसावर्णिः, १४ इन्द्रसावर्णिः। तत्रैकैकस्य मनोरेकसप्ततिमहायुगानि भवन्ति।

महायुगप्रमाणं- विंशतिसहस्राधिक त्रिचत्वारिंशल्लक्षमिताब्दाः, एवं चाक्षुषपर्यन्तं षण्मनवो गताः, वर्तमान वैवस्वतमनुः सप्तमः। तत्र सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि। वर्तमानमष्टाविंशतितमं महायुगम्।

चार युग एक हजार बार निकल जाने पर ब्रह्माजी का एक दिन होता है, इन्हीं दिनों के मान से ब्रह्मा की आयु १०० वर्ष की होती है। इस समय ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर ५१वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय होकर १३ घटी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल व्यतीत हो चुके हैं। ब्रह्माजी के एक दिन में उपर्युक्त १४ मनु होते हैं और १ मनु में ७१ महायुग होते हैं। एक महायुग के सौर मानुष वर्ष ४३ लक्ष २० हजार हैं, इस प्रकार चाक्षुष पर्यन्त ६ मनु निकल चुके और ७वां मनु वैवस्वत मन्वन्तर चालू है। इस मनु में २७ महायुग निकलकर २८वां महायुग चल रहा है।

कृतयुगप्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुगप्रमाणं १२९६०००, द्वापरयुगप्रमाणम् ८६४०००, कलियुगप्रमाणम् ४३२०००, तत्मध्ये गतकलिः ५१०९ शेषकलिः ४२६८९१ कलियुगमध्ये षट् शककर्तारः। आदौ इन्द्रप्रस्थे युधिष्ठिर शकः ३०४४। द्वितीयोज्जयिन्यां विक्रमस्तस्य शकः १३५। तृतीयः प्रतिष्ठान नगरे शालिवाहनस्य शकः १८०००। चतुर्थो वैतरिण्यां विजयाभिनन्दनस्तस्य शकः १००००। पंचमो गौड़देशे धारातीर्थे नागार्जुनस्तस्यः शकः ४०००००० चतुर्लक्षवर्षाणि। षष्ठः करबीरपत्तने कर्णाटके कल्क्यवतारस्तस्य शकः ८२१ वर्षाणि।

अथ सत्ययुगादीनां व्यवस्था- सत्ययुग- कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार को प्रथम प्रहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सत्युग का आरम्भ हुआ। इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी। इसमें श्री विष्णु के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह ये ४ अवतार हुए। श्रीमत्स्यावतार ने वेदों के चोर शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये। भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मंदराचल को पीठ पर धारण कर एवं देव-दैत्यों द्वारा समुद्र मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किये। श्रीवराहावतार ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्री नृसिंहावतार ने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रहलाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पादों में स्थिर था। गौएं कामधेनु के समान होती थीं। प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्कों के स्थान में रत्नों का परस्पर व्यवहार था, इच्छित वर्षा होती थी, पृथ्वी सम्पूर्ण सस्य और रत्नों से परिपूर्ण थी, ब्राह्मण चारों वेदों के ज्ञाता तथा सत्यभाषी, परद्रव्य, परस्त्री पराङ्मुख और त्यागी होते थे, शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां पद्मिनी और पतिव्रता होती थी। शासक-वर्ग (राज्यवंश) न्यायपरायण थे और प्रजा को औरस पुत्रवत्

समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता, धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में निरत रहते थे। इस युग में पुष्कर प्रधान तीर्थ था, प्रहलाद आदि दैत्यवंशी राजाओं की तीनों की तीनों लोकों में पहुँच थी।

त्रेतायुग- वैशाख शुक्ला तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग आरम्भ हुआ। इसकी आयु १२९६००० वर्ष थी, इसमें भगवान के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्रजी ये तीन अवतार हुए। श्रीवामन ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को तीन पैर में नाप बली को पाताल का राज्य दिया। श्रीभगवान् परशुराम ने कर्तव्यविमुख एवं अत्याचारी दुष्ट राजाओं का नाश करके २१ बार रामराज्य स्थापित कर सम्पूर्ण पृथ्वी का दान कर दिया था। श्रीरामचन्द्र जी ने महाभिमानी रावण का वध करके देवताओं और ऋषियों को निर्भय किया। इस युग में धर्म तीन पाद ही रह गया था। गौएं त्रिकाल दुग्ध देने वाली होती थी। प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा समय पर होती थी। पृथ्वी सस्य और स्वर्ण से भरपूर थी। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किंचिन्न्यून तपोनिष्ट, परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वे शाप देने में समर्थ थे, स्त्रियां चरित्रिणी पतिव्रता होती थी। इस युग में हरिश्चन्द्र, इक्ष्वाकु आदि सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वे इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तौलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर- माघ कृष्णा ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान योग में द्वापर युग का प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ८६४००० वर्ष थी। इसमें भगवान श्री कृष्ण और श्रीबलराम के दो अवतार हुए। भगवान श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्री बलराजी ने दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म द्विपाद ही रह गया। गौएं दो समय घटपूर्ण दुग्ध देती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा। वर्षा समय पर हो जाती थी, पृथ्वी सस्य और रौप्यमयी थी ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत और विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देवपूजन आदि करने वाले किंचित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में पांडु युधिष्ठिर धर्मपरायण चन्द्रवंशी राजा हुए, जिनका सुमेरु-पर्यन्त दमन था। प्रायः चारों वर्ण अपने वर्णाश्रम धर्म पर स्थिर थे, परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र था।

कलियुग- भाद्रपद कृष्ण १३ रविवार अर्धरात्रि के समय अश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्रीबुद्ध, श्रीकल्कि (निष्कलंक) हैं। जिसमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि-अवतार अब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब सम्भल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्त धर्म की स्थापना के साथ-साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी स्थापित होगा। इस युग में एक पाद ही धर्म रह जायेगा। गौएं दूध कम देंगी। मृणमय पात्र और ताम्रमय मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से रहित तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म कर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शूद्र लोग पांखंडी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा। धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां अधिकतर हस्तिनी होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेगी। पतिव्रताक्वचित देखने में आवेगी, पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे, स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा, पिता कन्या-विक्रय करेंगे, गौ-ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्र का माता-पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा होगी।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः- पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वां च नृत्यति।

अथ कलिमहात्म्यम्- धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरगतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित च शाठ्योर्जितम्। राजानोऽर्थपरा ह्यरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे।। निर्बीजा पृथिवी निरोमधिरसा नीचा महत्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्म रहिता विप्राः कुमार्गगताः। भार्याभर्तुविरोधिनी पररता पुत्रापितुर्द्वेषिणः, हा! कष्टं खलु वर्तति कलियुगे धन्या मृता ये नराः।। न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी बिरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचा अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति।।

कलौ गंवार्यं स्थितिः- पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदेव विष्णुस्त्यजति मेदिनी नरपुंगव! भगीरथ प्रति गंगावाक्यं च- यावद्धरण्यां तुलसीप्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रे बड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते। इति। कलौ दशसहस्राणीतिवाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्।

अथ संवत्सर वर्ष राजादि फलम्

अथ श्रीमन्नृपति चक्र चूडामणि श्री विक्रमादित्यानां राज्य सिंहासनदतीताब्दानि तत् संवत्सरामिद्य: २०६५ तथा च श्री श्रीमन्नृपतिमुकुटमणि शकजाति यवन निर्बीजक शालिवाहन राज्यादगत-हनानि तच्छाकामिद्य: १९३० ईसवीय सन् २००८-२००९ भारतीय गणराज्य संवत्सर ५९-६० श्रीकृष्ण संवत् ५२४४, हिजरी सन् १४२९-३०, श्रीमहावीर निर्वाण जैन संवत्सर २५३४-३५ वर्षारम्भ गुरुमानेन प्रभवादि षष्ठ्यब्दानां मध्ये विष्णुविंशतिकायां प्लव नाम संवत्सर:।

अथास्मिन वर्षे सृष्टि सौरगताब्दा १९५५८८५१०९, कल्पगताब्दा: १९७२९४९१०९, गतकलि: ५१०९, भोग्यकालि: ४२६८९१, कलौगङ्गैवतीर्थ बौद्धावतार:। मेषाऽर्क दिवसे केतकी अहर्गण ५८५२, केतकी वेधसिद्ध चित्रापक्षीय अयनांशा:२३।५८।३१ तत्र षष्ठ्यब्दानां मध्ये विष्णुविंशतिकायां प्लव नाम संवत्सर: तस्य: भुक्तमासादि ७।१२।१९।४७ भोग्यमासादि ४।१७।४०।१३ अथास्मिन वर्षे अधिकारिण:।। राजा-चन्द्र, मन्त्री-रवि, पूर्वधान्येश-बुध, पश्चिम धान्येश-चन्द्र, मेघेश-शनि, रसेश-गुरु, नीरसेश-मंगल, फलेश-शनि, धनेश-मंगल, दुर्गेश-शनि।

प्लव नाम संवत्सर फल :-

प्लवाद्वेनिखिलाधात्रीवृष्टिभि: प्लाविता भवेत।
रोगाकुला त्वीतिभीति: सम्पूर्णवत्सरे फलम्।।
दुर्भिक्षं जायते सर्वामेदिनी दुष्यति प्रिये।
प्लवे प्लवन्ति तोयनि पीड़िता मानुषा भुवि।।

प्लव वर्ष में वर्षा बहुत होती है। जनता रोग पीड़ित रहती है। कृमि कीटों से फसलों की क्षति होती है। दुर्भिक्ष होता है। समस्त पृथ्वी पर जनता का आचरण दूषित होता है तथा रोग, हिंसा, चोरी, डकैती, प्रदूषण से लोग पीड़ित होते हैं। जल प्लावन से हानि होती है।

प्लव संवत्सर का विशेष फल:- बुध: स्वामी वर्षा काले वर्षा बहुला उत्तम: समय: चैत्रे धान्य मंदता वैशाखे भूमि: भयंकरी ज्येष्ठे अन्न समर्घता तैलंगे पूर्व देशे पीड़ा आषाढ़े महावायु: उत्पाता: लोका: सरोगा: श्रावणे महान्मेघो दिन २७ वर्षा भाद्रपदे धनो धनागम: धान्यं समर्घं आश्विने सर्ववस्तु सर्वधातु समर्घता गोधूमानां महर्घता कार्तिके अन्नं समर्घं लोक: सुखी मंडपांचालो विग्रह: पौषादिमासत्रये अति सुभिक्षं राजाराज्यं।

राजा चन्द्र फलम्-

चन्द्रे नृपे मंगल-शोभनानि प्रभूतवृष्टि: प्रचुरं च धान्यम्।
सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम्।।

चन्द्रमा के राजा होने से जगत् में मंगल कार्यों उत्सवादि की वृद्धि होने से प्रजा में सुखशांति का वातावरण बनेगा। धान्यादि के उत्पादन में वृद्धि होगी। वर्षा उत्तम होगी इसके फलस्वरूप अनाज के भाव घटेंगे। चावल का उत्पादन बढ़ेगा। प्रशासकों को प्रसन्नता होगी। वृक्षों में फल फूलादि अधिक लगेंगे। रसकस पदार्थों में तेजी होगी।

मंत्री रवि: फलम्-

नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात् प्रचुर-धान्य-धनादि महीतले।
रसचयो हि समर्घतम: तदा रविरमात्यपदं हि समागत:।।

वर्ष का मन्त्री सूर्य के होने से राजभय, रोग भय से प्रजा भयभीत रहे और चोरों का भय विशेष होता है। पृथ्वी पर धनधान्य प्रचुर मात्रा में होते हैं। सब रस पदार्थ सस्ते होते हैं। कहीं अन्न, दूध, घी, फल, फूल की कमी भी होने से लोगों को कष्ट होता है तथा कहीं-कहीं राजविग्रह भी होता है।

सस्याधिप बुध: फलम्-

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुख-समृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगण: श्रुतिपाठकर: सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने।।

बुध के पूर्वधान्येश होने से मेघ वर्षा बहुत करते हैं। सुख-शान्ति तथा समृद्धि होती है। समाज विरोधी तत्व, चोर, उपद्रवी तथा तस्कर कम होने से उपद्रवों में कमी हो जाती है। ब्राह्मण पूजा-पाठ में रत रहते हैं एवं अनाज सस्ता हो जाता है।

धान्याधिप चन्द्र: फलम्-

चन्द्रे धान्याधिपे जाते प्रजावृद्धि: प्रजायते।
गोधूमा: सार्षपाश्चैव गोषु क्षीरं तदा बहु।।

चन्द्र के पश्चिम धान्येश होने से जनसंख्या में वृद्धि होती है। गेहूं, चावल, तिल, सरसों आदि अनाज एवं तिलहन का उत्पादन पर्याप्त होगा। गाय, भैंस दूध पर्याप्त मात्रा में देंगी, पृथ्वी पर मेघ वर्षा उत्तम करेंगे इसके फलस्वरूप सब धान्यों एवं रसपदार्थों की संवृद्धि होगी।

मेघेश शनि: फलम्-

रविसुते जलदस्य पतौ भवेद्विरलवृष्टिमती वसुधा तदा।
मनसि तापकरो नृपति: सदा विविध रोगरता जनता मता।।

शनि के मेघेश होने से पृथ्वी पर विरल वृष्टि होती है अर्थात् पर्याप्त वर्षा न होकर कहीं पर वर्षा अल्प होगी व कहीं पर अत्यधिक होगी। जनता नाना प्रकार के रोगों से पीड़ित होगी तथा शासकों को चिंता रहेगी।

रसेश गुरु: फलम्-

यदि गुरु रसपोजन-सौख्यद: कमलवन्ति सरांसि तृणानि च।
जनपदा द्विज-पूजनतत्परा गज-सुवाजि-खरोष्ट्रयुता नृपा:।।

गुरु के रसेश होने से जनता में सुख शान्ति का संचार होगा। तृण, घास, चारा एवं तालाबों में कमलादि की उत्पत्ति पर्याप्त होगी। नगरादि में ब्राह्मणों का सम्मान बढ़ेगा। शासक एवं जनता में सद्भाव बढ़ेगा। वाहनों, यन्त्रों, पृथ्वी, जल, आकाश की वृद्धि होगी तथा रस पदार्थों के भावों में कमी रहेगी।

नीरसेश मंगल: फलम्-

नीरसेशो यदा भौम: प्रवाल-रक्त-वाससाम्।
रक्तचन्दन ताम्राणामर्घवृद्धिर्दिने दिने।।

नीरसेश मंगल के होने से लाल वस्त्र, मूंगा, लाल चन्दन, तांबा व इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं का भाव दिन प्रतिदिन तेज होता है। सूखे पदार्थों, काठ, औषधि आदि का उत्पादन कम होता है। खनिज पदार्थों एवं मशीनरी व कलपुर्जों के उत्पादन में व्यवधान पड़ेगा या उत्पादन अल्प होगा।

फलेश शनि: फलम्-

यदि शनि: फलप: फलहा भवज्जनितपुष्पगणस्य द्रुम: सदा।
हिमभयं वरतस्कर-जन्तुभीर्जनपदो गदराशि-महाकुल:।।

शनि के फलेश होने से वर्षा में कमी होती है इसके फलस्वरूप तृण, पान, फल, फूल का उत्पादन कम होता है। वस्तुओं के मूल्यों में भारी घटबढ़ होती है। शीतलहर, हिमपात, ओलावृष्टि, प्राकृतिक प्रकोप एवं वर्षा की अनियमितता से कृषि की हानि होती है। चोर भय, समाज विरोधी तत्वों एवं कीटों का प्रकोप अधिक होता है।

धनेश मंगल: फलम्-

असम-मौल्यकरो धरणीसुत: शरदि तापकरस्तुष-धान्यहृत्।
सहसि मासि भवेद्द्विगुणं तदा नरपतिर्जनशोक-विधायक:।।

सभी वस्तुओं के मूल्यों में भारी घट-बढ़ होती है। गेहूं, जौ, चावल आदि तुष धान्यों की हानि होती है। पहले से संग्रहित वस्तु मार्गशीर्ष मास बेचने से दुगुना लाभ होता है। शासक वर्ग के कारण जनता को कष्ट उठाने पड़ते हैं तथा राजकीय कोष में कमी होती है।

दुर्गेश शनि: फलम्-

रविसुते गढ़पालिनि विग्रहे सकलदेशगताश्चलिता जना:।
विविधवैरि-विशेषित नागरा कृषिधनं शलभैर्मुषितं भुवि।।

शनि के दुर्गेश होने से सब देशों में अशान्ति, विरोध, विग्रह आदि उपद्रव अधिक होने से जनता में भय एवं संशय का वातावरण बनता है। लोगों में नाना प्रकार के वैर-विरोध होते हैं। कृषि की टिड्डी, चूहों आदि के द्वारा हानि होती है।

वर्षनाम आषाढ़ फलम्:-

आषाढ़े जायन्ते सस्यानि क्वचिदवृष्टिरन्यत्र।
योगक्षेमं मध्यं व्यग्राश्च भवन्ति भूपाला:।।

आषाढ़ वर्ष में कहीं-कहीं पर धान्य और कहीं-कहीं पर वर्षा का अभाव होता है। योगक्षेम (अलब्ध की उपलब्धि, लब्ध का संरक्षण) मध्यम रूप से होता है। शासकों के मन में व्यग्रता तथा कलह रहती है। कहीं कीट, पतंगों, टिड्डीयों से हानि व कहीं भीति होती है।

चतुर्मेघ- इस वर्ष **'आवर्त'** नाम का मेघ है **'आवर्ते छिन्नवृष्टि: स्यात'** के अनुसार अनेक स्थानों पर वर्षा की मात्रा कम रहेगी या खण्डवृष्टि होगी। जौ, चावल, गेहूं, चना, कपास और तेल की फसलें क्षतिग्रस्त होवें। तेज आंधी से फसलें नष्ट होंगी। धार्मिक कार्यों में लोग रुचि लेवें।

नवमेघ- नवमेघों में इस वर्ष **'काल'** नाम का मेघ है।

रोगतो विकलता व पुष्पतांस्यान्मिथ: कलहताक्षमाभृताम्।
कालनाम जलदोदयो यदा नैव वर्षति जलं वृषा तदा।।

काल नाम का मेघ होने से अच्छे आदमी प्राय: रोग पीड़ा से व्याकुल होते हैं। शासकों में परस्परकलह और संघर्ष रहता है। वर्षा में कमी रहती है।

द्वादश नाग- इस संवत्सर में **'वृष'** नाम का नाग है।

यदा वृषाभिधानस्य भुजंगाख्यो यदा भवेत।
तदा सस्यादिकाल्पत्वं सुतरामीतितोभयम्।।

जिस वर्ष में वृष नाम के नागराज हों इस वर्ष अन्न का उत्पादन कम होता है। ईति भय अर्थात् कृमि-कीटों, टिड्डीयों के कारण फसलों की क्षति होती है।

रोहिणी निवास- इस वर्ष रोहिणी निवास **'संधि'** पर है। **'खण्डवृष्टिश्च संधिषु'** के अनुसार वर्षा का परिमाण सामान्य से कम रहेगा किन्तु फसलें सूखे नहीं।

समय निवास- इस वर्ष समय का निवास **'वैश्य'** के घर में है। **'वणिक गृहे शुभं नास्ति'** के अनुसार शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे। अन्न, फल, पुष्प, जड़ी-बूटियों का उत्पादन कम होने से, इनके मूल्यों में वृद्धि, महंगाई होती है। कानून-व्यवस्था में बिगाड़ आता है। सब पदार्थ महंगे होते हैं।

समय वाहन- इस वर्ष समय वाहन **'मृग'** है। पृथ्वी पर वर्षा अधिक होगी। कुछ स्थानों पर जल प्लावन से हानि की सम्भावना रहेगी। भूमि पर फल, पुष्प, धान्य प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होंगे।

वर्षा आदि के विश्वामान- वर्षा ७, धान्य ११, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, व्यय १५, विग्रह ११, क्षुधा १५, तृषा १३, निद्रा ९, आलस्य ५,

उद्यम ५, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ०५, लोभ ०३, मैथुन १५, रस ०९, फल १३, उत्साह ११, उग्रत्व ११, पाप ०९, पुण्य १३, व्याधि ११, व्याधिनाश ०७, आचार ०५, अनाचार ०९, मृत्यु ५, जन्म १३, देशोपद्रव १, देश स्वास्थ्य ५, चौर ११, चौरनाश ३, अग्नि १७, अग्निशांत ३, उद्भिज ११, जरायुज ३, अण्डज ९, श्वेदज १५, टिड्डी ०५, शुक ११, मूषक १५, स्वर्ण ११, ताम्र ०९, स्वचक्र ०७, परचक्र ०९, वृष्टि ११, वृष्टिनाश १९, शनि दृष्टि: दक्षिण, समय वाहन मृग। उत्पत्ति विश्वा ९३। खपति विश्वा ८४। सम्वत् विश्वा १८। सोमवती अमावस्या ३।

वर्ष स्तम्भ चतुष्टय विचार- इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का योग ५६.५१ प्रतिशत है। जल स्तम्भ आधे से कुछ अधिक निर्मित हुआ है। वर्षाकाल में चतुर्दिक सन्तोषजनक वर्षा होगी। भारत के ईशानकोणीय क्षेत्रों में बाढ़, जलप्लावन से हानि की सम्भावना रहेगी। कृमि, कीट, पतंगों, टिड्डियों से फसलों की हानि की सम्भावना रहेगी। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का योग ४१.१४ प्रतिशत है। तृण स्तम्भ आधे से किंचित कम बना है। स्तम्भ विचार से पशुओं के घास, चारा इत्यादि का उत्पादन सामान्य से कम होगा। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का योग ७०.८६ प्रतिशत है। वायु स्तम्भ सशक्त तथा प्रबल है। कुछ स्थानों पर तीव्र वायु वेग, झंझावात, चक्रवात के कारण जन-धन की क्षति होगी। आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का योग ८१.०९ प्रतिशत है। अन्न स्तम्भ सन्तोषजनक रूप से पर्याप्त पड़ा और सुदृढ़ निर्मित हुआ है। अन्नोत्पादन पर्याप्त परिमाण में होगा किन्तु फसलों की कृमि, कीट, टिड्डियों तथा अन्य रोगों से रक्षा करना उचित होगा।

आर्षमान चतुष्टय विचार (राष्ट्र रक्षा के चार स्तम्भ) वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) को रोहिणी नक्षत्र का योग ४९ प्रतिशत है। गत सम्वत्सर की पौष कृष्ण अमावस्या को मूल नक्षत्र का योग २०.३३ प्रतिशत है। श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का योग ४६.०२ प्रतिशत है। कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का योग ४.५३ प्रतिशत है। चारों आर्षमानों का तत्सम्बधी नक्षत्रों से मध्यम योग लगभग ३० प्रतिशत बना है जोकि तृतीयांश से भी कम है। राष्ट्र रक्षा के स्तम्भों का चिंताजनक रूप से दुर्बल होना देश की सुरक्षा के सन्दर्भ में चेतावनी दे रहा है। इस देश के राष्ट्रनायकों को सब प्रकार के पूर्वाग्रहों का परित्याग करके अत्यन्त सतर्क, सन्नध रहने की परमावश्यकता है। सुरक्षा बलों को अत्याधुनिक उपकरणों, अस्त्र-शस्त्रों को समय रहते उपलब्ध करना व्यापक राष्ट्रहित में होगा। इसके अतिरिक्त आतंकवादियों पर प्रभावशाली रूप से अङ्कुश लगाने के लिए, सुरक्षा बलों को आवश्यक अधिकार देना श्रेयस्कर होगा, उपरोक्त बलों को हतोत्साहित करना तथा उनके हाथ बांधना राष्ट्रहित में कदाचित नहीं होगा। गुप्तचर तन्त्र को भी सतर्क, सन्नध करना तथा पर्याप्त रूप से सुदृढ़ करना हितावह होगा। वोट बैंक की मृगमरीचिका में फंस कर राष्ट्रहित की अनदेखी करना भयंकर ऐतिहासिक प्रज्ञापराध सिद्ध हो सकता है। आशा है सर्वशक्तिमान ईश्वर राष्ट्रनायकों को सद्बुद्धि देगा।

गुरुचार- विगत विक्रम संवत् २०६४ कार्तिक शु. ११, दि. २२ नवम्बर २००७ ई. को रेवती नक्षत्र और मीन राशि में स्थित चन्द्रमा के समय 'गुरु' ५ घं. ४ मि. पर धनु राशि में प्रविष्ट होकर वर्तमान वि. सं. २०६५ में मार्गशीर्ष शु. ११ दि. ९ दिसम्बर २००८ ई. तक संक्रमण करेगा।

धनु राशि के गुरु का फल

(संवत्सरारम्भ दि. ७ अप्रैल से ९ दिसम्बर २००८ ई. तक)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	लाभ सुख	हानि, रोग	सुख सम्मान	पीड़ा	सम्मान सुख	वैर, हानि	धन लाभ, सुख	पीड़ा, भय	भय	धन लाभ	क्लेश, अशांति	धन हानि

भद्रबाहु संहिता के अनुसार धनु राशि के गुरु में मार्गशीर्ष संवत्सर होता है। इसमें वर्षा अधिक होती है। सोना, चांदी, अनाज, कपास, लोहा, कांसा आदि सभी पदार्थ सस्ते होते हैं। मार्गशीर्ष से ज्येष्ठ तक घी कुछ महंगा रहता है। चौपायों से अधिक लाभ होता है, इनका मूल्य बढ़ जाता है। वर्षा काल में गेंहूँ महंगा, तिल तथा गुड़ सस्ते होते हैं।

वि. संवत् २०६५ ई. में मार्गशीर्ष शु. ११ दि. ९ दिसम्बर २००८ ई. को अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि में स्थित चन्द्रमा के समय गुरु २३ घं. ४१ मि. पर मकर राशि में प्रविष्ट होकर संवत् के अन्त तक वहीं संक्रमण करता रहेगा।

मकर राशि के गुरु का फल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धन हानि	लाभ सुख	हानि, रोग	सुख सम्मान	पीड़ा	सम्मान सुख	वैर, हानि	धन लाभ, सुख	पीड़ा, भय	भय	धन लाभ	क्लेश, अशांति

मकर राशि में गुरु के संक्रमण का फल-

गुरौ मकरगे मेघो जलेन्द्रः पौषवत्सरः।
चतुष्पद क्षयो भूम्यां दुर्भिक्षं निर्जलोजनः॥

गुरु जब मकर राशि में संक्रमण करता है तब पौष वर्ष होता है। उसमें जलेन्द्र मेघ वर्षता है। वह चतुष्पद जीवों का नाश करता है और पृथ्वी पर दुर्भिक्ष तथा मनुष्यों को निर्जल कर देता है।

मकरगे च गुरौहि महर्घता। क्षिति पतिर्बहु विग्रह कारक:
समुदिते मकरे च समर्घता। शनि गृहेऽस्त गते तु महर्घं।।

गुरु जब मकर राशि में होवे तो तेजीकारक होता है। शासक विग्रह कारक होते हैं। मकर में यदि गुरु रहता हुआ उदय हो जावे तो मंदीकारक और अस्त होने पर तेजी कारक हुआ करता है। मार्गी 'मकर का गुरु' तेजीकारक, वक्री मकरस्थ गुरु मंदीकारक, सुभिक्षकारक होता है।

शनि की दृष्टि- वर्षारम्भ में शनि वक्री होकर सिंह राशि में संक्रमण कर रहा है। यह वैशाख कृ. १३, शनिवार दि. ३ मई २००८ ई. को मार्गी होगा। यह पुन: पौष शु. ४ बुधवार दि. ३१ दिसम्बर २००८ ई. को वक्री होकर वर्षान्त तक 'सिंह' में ही संक्रमण करता रहेगा। शनि की दक्षिण दिशा पर दृष्टि होने से भारत के दक्षिणी क्षेत्रों में प्राकृतिक विपत्तियों, जलप्लावन, चक्रवात, झंझावात आदि तथा आतंकवाद, हिंसा, अराजकता के कारण व्यापक हानि की सम्भावना रहेगी।

इस वर्ष शनि सिंह राशि में मघा, पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रों में संक्रमण करेगा।

यदातु त्रीणि चत्वारि नक्षत्राणि शनेश्चर:।
मन्दवृष्टिं च दुर्भिक्षं शस्त्रं व्याधिं च निर्दिशेत।।

जब शनि एक वर्ष में तीन या चार नक्षत्र प्रमाण गमन करता है तो मन्दवृष्टि, दुर्भिक्ष, शस्त्र पीड़ा और रोगादि होते हैं।

सिंह राशि पर शनि होने से सर्वत्र अन्नोत्पादन होता है। वर्षा तथा जल की बहुलता होती है। अन्न का समान भाव रहता है। मालव देश में उपद्रव और क्षति होती है। गुड़, तिलहन, रसकस, दलहन के मूल्यों में तेजी आती है। पूर्व दिशा में सुभिक्ष होता है किन्तु महामारी का भय होता है। सर्वत्र पीड़ा, व्यग्रता होती है। शासक अधर्मपरायण होते हैं। काली मिर्च, सोंठ खरीदने से लाभ होता है। तांबा, पीतल, घृत, तेल महंगे होते हैं।

सिंह राशि में प्रविष्ट शनि का फल- विगत विक्रम संवत् २०६४ में आषाढ़ शु. १, दि. १६ जुलाई २००७ ई. को आश्लेषा नक्षत्र एवं कर्क राशि के चन्द्रमा के काल में ४ घं. ३८ मि. पर शनि सिंह राशि में प्रविष्ट हुआ तथा इस वर्षान्त तक वहीं संक्रमण करता रहेगा।

सिंह राशि के शनि का फल

राशि	ढैय्या या साढ़ेसाती	अंग	प्रारम्भ या समाप्ति	पाद	फल
कर्क	साढ़ेसाती	पैर	समाप्त	सुवर्ण	अधिक परिश्रम, कार्यों में सफलता, सम्मान वृद्धि, आर्थिक लाभ उत्तम
सिंह	साढ़ेसाती	हृदय	-	लौह	आर्थिक हानि, अशान्ति, क्लेश, विवाद
कन्या	साढ़ेसाती	शिर	आरम्भ	सुवर्ण	सामान्य शुभफल, आर्थिक लाभ, कार्यों में सफलता
मकर	ढैय्या	-	-	ताम्र	सामान्य फल, धन लाभ, व्यवसाय में उन्नति
वृष	ढैय्या	-	-	ताम्र	सामान्य शुभ फल, कुटुम्ब का सुख, व्यवसाय में उन्नति

साढ़ेसाती में शनि का अरिष्ट फल प्रत्येक राशि के लिए इस प्रकार है- मेष राशि के व्यक्तियों को मध्य के अढाई वर्ष अशुभ, वृष को प्रथम अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष और कर्क को मध्य के अढाई वर्ष अशुभ हैं। सिंह को पहले पांच वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। कन्या को प्रथम पांच वर्ष, उसमें भी बीच के अढाई वर्ष विशेष अशुभ और तुला को अंत के अढाई वर्ष विशेष अनिष्ट कारक हैं। वृश्चिक को अन्तिम पांच वर्ष अशुभ, उसमें भी बीच के अढाई वर्ष विशेष नेष्ट हैं। धनु को आरंभ के अढाई वर्ष, मकर को प्रथम पांच वर्ष, उसमें भी पहले के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। कुम्भ को आरंभ और अंत के पांच वर्ष, उस कालावधि में अंत के अढाई वर्ष अधिक नेष्ट हैं। मीन को पूरे साढ़ेसात वर्ष उसमें भी अन्तिम अढाई वर्ष विशेष अशुभ फलदायक होते हैं।

जिनकी कुंडली में शनि शुभ फलप्रद हो तथा दशान्तर्दशा भी शुभ चल रही हो उनके लिए शनि का अशुभ फल कम होगा। जन्मकुंडली में चन्द्र शनि अशुभ ग्रहों से युक्त अशुभ स्थानों में हों तो साढ़ेसाती और ढैय्या चिन्ता, पीड़ा, धन-हानि, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, कलह पशु पीड़ा, धन खर्चा एवं हानि आदि नेष्ट फलप्रद होती है। शनि के अनिष्ट फल निवारणार्थ तैल-छायापात्र का दान, शनि मंत्र का जप, दशांश हवन व श्रीहनुमानजी की पूजा, अभिषेक, तैलयुक्त सिन्दूर समर्पण कर भक्तिपूर्वक शनिवार का व्रत, सप्तधान्य दान, प्रात: शनिवार को पीपल का पूजन करने से शनि का अनिष्ट फल निवृत होता है। साढ़ेसाती, ढैय्या का विचार जन्मकालीन स्पष्ट चन्द्रमा के अंशों से करना चाहिए। केवल राशि से साढ़ेसाती का विचार स्थूल है।

महर्षि पिप्पलाद के बतलाये हुए शनि के दशनाम स्तोत्र का स्नानादि के बाद नित्य प्रात:काल पाठ करने से शनि की साढ़ेसाती और ढैया की पीड़ा नष्ट हो जाती है। अनुभूत है और शनि पीड़ा निवारण का अत्यन्त सरल अचूक उपाय है। *पिप्पलाद उवाच*-

नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते। नमस्ते बभ्रुरुपाय कृष्णाय नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

राहु काल

भारत के दक्षिणी प्रदेशों में इस काल की विशेष मान्यता है। वहां के लोग इस काल में कोई भी शुभ कार्य नहीं करते। विशेषकर नवीन कार्यारम्भ के समय इस काल को टाल देना उचित मानते हैं तथा राहु काल का विशेष विचार करते हैं। यह काल प्रत्येक स्थान के स्थानीय समयानुसार प्रत्येक वार के लिए क्रमश: निम्नलिखित है :

	घं. मि.		घं. मि.	
सोमवार को स्थानीय समयानुसार प्रात:	७।३०	से	९।००	तक
मंगलवार को स्थानीय समयानुसार अपरान्ह	१५।००	से	१६।३०	तक
बुधवार को स्थानीय समयानुसार मध्यान्ह	१२।००	से	१३।३०	तक
गुरुवार को स्थानीय समयानुसार अपरान्ह	१३।३०	से	१५।००	तक
शुक्रवार को स्थानीय समयानुसार प्रात:	१०।३०	से	१२।००	तक
शनिवार को स्थानीय समयानुसार प्रात:	९।००	से	१०।३०	तक
रविवार को स्थानीय समयानुसार सायं	१६।३०	से	१८।००	तक

कुम्भ राशि के राहु का फल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख, सौभाग्य	विवाद, कष्ट	धन हानि	धन लाभ	रोग भय	पीड़ा	भाग्योदय	यशलाभ	द्रव्य लाभ	विवाद	भय, कष्ट	मानहानि

राहुचार- संवत्सरारम्भ से वैशाख कृ. ९, बुधवार दि. ३० अप्रैल २००८ ई. ९ घं. ५५ मि. तक 'राहु' कुम्भ राशि में रहेगा।

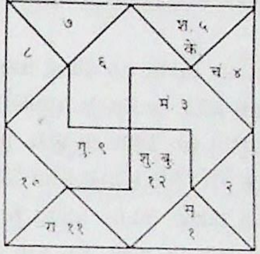
वि. सं. २०६५ में वैशाख कृ. ९, बुधवार दि. ३० अप्रैल २००८ ई. को धनिष्ठा नक्षत्र और कुम्भ राशि में स्थित चन्द्रमा के समय राहु ९ घं. ५५ मि. पर मकर राशि में प्रविष्ट होकर संवत् के अन्त तक वहीं संचार करेगा।

मकर राशि के राहु का फल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	वैर	शोक	समृद्धि	कलह, राजकोप	शारीरिक कष्ट	दु:ख	वैर	सुख	शोक	हानि	धन नाश	धन लाभ

जगत् लग्न

जगत् लग्न कुण्डली



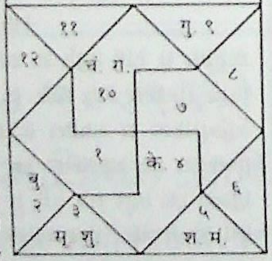
चैत्र शुक्ल अष्टमी रविवार दिनांक १३ अप्रैल सन् २००८ ई. को सायं ६ बजकर २९ मिनट पर दिल्ली में इष्टकाल घटयादि ३१।०९ पर कन्या लग्न के समय सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेगा। लग्न का स्वामी ग्रह नीच राशि में स्थित होकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। लग्नेश के नीचस्थ होने से लग्न पीड़ित व निर्बल हो गया है। अत: यह वर्ष विश्वशांति की दृष्टि से अनुकूल नहीं है। शांति स्थापित करने के बड़े प्रयासों के होने पर भी विश्वशांति बनाये रखना दुष्कर कार्य होगा। यद्यपि कुटुम्वेश उच्च का होकर स्थित है किन्तु शनि की दृष्टि भी कुटुम्ब भाव पर होने से कुछ भागों में अशांति का वातावरण बनेगा। तृतीय भाव का अधिपति शत्रु राशि में स्थित होकर विशेष प्रयासों से शांति का वातावरण बनापायेगा। गुरु केन्द्र में स्वगृही होकर स्थित है अत: शांति बनाये रखने में गुरु की स्थिति सहायक होगी। पंचम भाव का अधिपति द्वादश भाव में केतु के साथ स्थित है इसके प्रभाव से योजनाएं दोषपूर्ण होंगी जिससे अशांति में वृद्धि होगी। पंचमेश शत्रुराशि में स्थित है इसके प्रभाव से बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी, शिक्षा का स्तर घटेगा। मनोरंजन के साधनों के द्वारा अपसंस्कृति का विस्तार होगा। भ्रूण हत्या की घटनाओं में भारी वृद्धि होगी। सप्तमेश स्वगृही होकर चतुर्थस्थ है तथा भौम से दृष्ट भी है अत: स्त्रियों पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी।

नवमेश उच्च का होकर सप्तमस्थ है अत अपने-अपने धर्म के विस्तार का राष्ट्र प्रयास करेंगे। लोगों में धर्म के प्रति जागृति बढ़ेगी। दशम भाव का अधिपति जोकि लग्नाधिप भी है नीच का होकर स्थित है अत: कई देशों के शासनाध्यक्षों में परिवर्तन होना निश्चित है। प्रतिपक्षियों की स्थिति में सुधार होगा एवं धार्मिक कट्टरतावाद कुछ भागों में अशांति उत्पन्न करेगा। द्वादशेश उच्च का है अत: कई देशों में परस्पर सम्बन्धों के नये समीकरण बनेंगे। द्वादश भाव में शनि व केतु की स्थिति, लग्नेश नीच का होना

अष्टमेश भौम की लग्न पर दृष्टि इस वर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय शांति की दृष्टि से उथल-पुथल वाला दर्शा रही है।

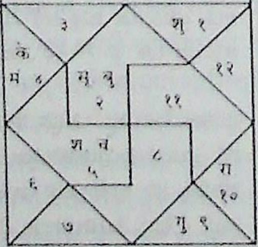
आर्द्रा प्रवेश लग्न- आषाढ़ कृष्ण पक्ष तृतीया शनिवार, दिनांक २१ जून २००८ ई. को रात्रि ९ बजकर ४४ मिनट पर मकर लग्न के समय सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। वर्षाकाल में सूर्य के साथ शुक्र एवं सूर्य के पीछे बुध आरम्भ में तथा कुछ अवधि में सूर्य के आगे शनि मंगल रहेंगे। इसके प्रभाव से वर्षा काल के आरम्भ में सर्वत्र व्यापक वर्षा होगी एवं मध्यकाल में कहीं बहुत तेज वर्षा व कहीं बहुत अल्पवृष्टि व वर्षा की कमी एवं अन्त में कहीं सामान्य वर्षा तो कहीं अल्प वर्षा होगी। सूर्य के आगे शनि-मंगल की स्थिति कहीं भारी वर्षा से क्षति, ओलावृष्टि तथा कहीं वर्षा की कमी या अभाव का कारण बनेगी। दक्षिण-पश्चिम के कुछ भागों में भारी तूफान से हानि सम्भव है। पूर्वी भाग में कहीं सामान्य कहीं तेज वर्षा होगी। दक्षिण में लगभग सामान्य, पश्चिम में कहीं बहुत तेज वर्षा कहीं अल्प तथा उत्तर में कहीं कम एवं कहीं सामान्य वर्षा होगी।

आर्द्रा प्रवेश लग्न



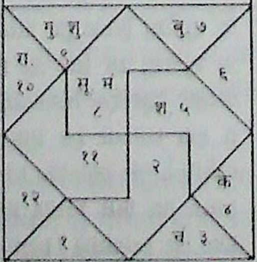
शारदीय सस्य- वैशाख शुक्ल १० बुधवार, दि. १४ मई २००८ ई. को १५ घं. २३ मि. पर सूर्य वृष राशि में प्रवेश करेगा। सूर्य के साथ शुभ ग्रह बुध स्थित है तथा सूर्य से द्वादश भाव में शुक्र स्थित है अत: शारदीय सस्य की उत्पत्ति पर्याप्त होगी। केन्द्र में शनि एवं चन्द्रमा सिंह राशि में स्थित है। सिंह का चन्द्रमा धान्य की निष्पत्ति बढ़ाने वाला है जबकि केन्द्रस्थ शनि सूर्य को दशम दृष्टि से देख रहा है इसके फलस्वरूप शारदीय सस्य की प्राकृतिक कारणों से कुछ हानि भी होगी तथापि कुल मिलाकर शारदीय सस्य की निष्पत्ति पर्याप्त होगी।

शारदीयसस्य कुण्डली



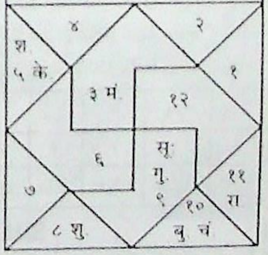
ग्रीष्मसस्य- मार्गशीर्ष कृष्ण ३ शनिवार, दि. १५ नवम्बर २००८ ई. को २९ घं. ०८ मि. पर सूर्य वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। सूर्य के अगले भाव में गुरु-शुक्र स्थित है तथा पिछले भाव में बुध स्थित है अत: सूर्य शुभ ग्रहों के मध्य आ गया है इसके प्रभाव से ग्रीष्म धान्यों की निष्पत्ति पर्याप्त होती है। शास्त्र में कहा गया है कि ''शुभ मध्येऽलिनि सूर्याद् गुरुशशिनोः सप्तमे परा सम्पत्। अल्यादिस्थे सवितरि गुरौः द्वितीयेऽर्धनिष्पत्तिः।।'' सूर्य के साथ मंगल भी स्थित है अत: कुछ भागों में कृषि की हानि भी होगी तथा ग्रीष्म धान्य की निष्पत्ति कम होगी। कुल मिलाकर धान्य का उत्पादन पर्याप्त होगा।

ग्रीष्मसस्य कुण्डली

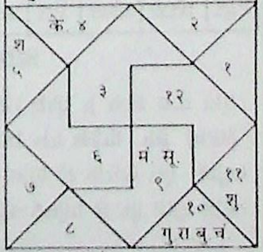


मुस्लिम राष्ट्र- पौष शु. ३, शुक्रवार, दि. ११ जनवरी २००८ ई. को मुस्लिम हिजरी सन् १४२९ की पहली तारीख मुहर्रम महीने की है और इस दिन शुक्रवार होने से शुक्र गुर्रा या मुस्लिम वर्ष का राजा है। पहली मुहर्रम से पूर्व दिन की संध्या को चन्द्र दर्शन के समय सूर्यास्त काल में मिथुन लग्न उदित है। १० जनवरी २००८ ई. को 'चन्द्रदर्शन' सूर्यास्त के समय मिथुन लग्न में मंगल स्थित है। मंगल रिपु भाव का स्वामी है अत: मुस्लिम राष्ट्रों के लिए यह वर्ष अशुभ फलप्रद है। चन्द्रमा द्वितीयेश होकर अष्टम भाव में स्थित है तथा चतुर्थेश बुध तथा लग्नेश बुध भी अष्टम भाव में स्थित है अत: यह वर्ष किसी मुस्लिम राष्ट्र के लिए अशुभ फलप्रद रहेगा। कोई मुस्लिम राष्ट्र इस वर्ष आपदा ग्रस्त होगा एवं जन-धन की भारी हानि का ग्रह स्थिति संकेत दे रही है। तृतीय स्थान के शनि-केतु विपरीत स्थिति का प्रबल विरोध करने को प्रेरित करेगा। गुरु की लग्न पर दृष्टि तथा शनि पर भी गुरु की नवम दृष्टि हानि को कम करने वाली है।

हिजरी सन् १४२९ की मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली



हिजरी सन् १४३० की मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली



लग्नेश बुध तथा द्वितीयेश का अष्टमस्थ होना कोई शुभ संकेत नहीं दे रहा है। लग्नस्थ मंगल पर राहु का पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध; अग्नि पर घी का काम कर रहा है। पंचमेश शुक्र का षष्ठस्थ होना तथा पंचम भाव पर राहु व शनि की दृष्टि स्थिति को और अधिक भयावह बना रही है। उग्रवाद तथा अन्ध कट्टरवाद की जन्मभूमि के यह देश अपने ही पाले हुए संपोलों के विषदंश से बार-बार सिहर उठेंगे। स्थान-स्थान पर विस्फोट तथा अग्निकांड होते रहेंगे। जनता आतंकवाद की घटनाओं की पुनरावृत्ति को झेलने के लिए विवश होगी। जनसाधारण चाह कर भी इन कुत्सित कृत्यों का विरोध न कर पायेंगे। वहाँ के निवासी, कथित बौद्धिक वर्ग तथा धार्मिक विद्वानों के तर्कहीन व हास्यास्पद धर्मादेशों को सहन करने को लाचार होंगे। धर्म की आड़ में ध्वंस की प्रक्रिया चलती रहेगी। आतंकवाद की आग का दाह पड़ौसी देशों को भी स्पष्टरूप से पीड़ित करेगा। उग्रवाद का जनक भारत का पश्चिमोत्तर पड़ौसी तथा पार्श्ववर्ती पूर्व दिशा का देश इस उग्रवाद के पैशाचिक

तांडव को पड़ौसी देशों में निर्यात करने का भरसक प्रयत्न करेंगे। लोकतन्त्र का मात्र दिखावा ही इन पूर्वोक्त देशों में होता रहेगा। वस्तुत: निरंकुश शासन सत्ता का प्रभाव यत्र-तत्र-सर्वत्र दिखाई देगा। साम्प्रदायिक दंगे तथा विस्फोटकीय घटनाओं की पुनरावृत्ति होती रहेगी। गुरु की लग्न पर शुभ दृष्टि उत्तरोत्तर गिरती स्थिति को सम्भाल पाने में अधिक सफल न होगी। अष्टम चन्द्रमा की स्थिति, वर्तमान घटनाक्रम को और अधिक भयावह स्वरूप देकर अन्तोगत्वा इस हिंसावाद की संस्कृति के नाम पर विकृति के 'अन्त' का शंखनाद करेगी। अन्तत: इस अन्धकारपूर्ण वातावरण की जननी विकृति के समापन का आरम्भ दिखाई देने लगेगा।

शुक्र का गुर्रा फल:- शासकों और जनता में परस्पर-विरोध बढ़े। मुस्लिम राष्ट्रों में आन्तरिक कलह, विग्रह, उपद्रव, धार्मिक उन्माद से जनसाधारण पीड़ित होता है। अग्नि भय मनुष्य और चतुष्पदों में रोग, व्यापार में लाभ कम, अन्न-कृषि की पैदावार मध्यम, सब वस्तुएं महंगी तथा वायु-वेग रहे। शासकों पर स्वेच्छाचारिणी स्त्रियों का प्रभाव बढ़े। भ्रष्टाचार-व्यभिचार अधिक फैले। नवीन वैज्ञानिक शोध और अनुसन्धानों में सफलता प्राप्त हो।

पौष शु. ३, मंगलवार (विक्रमी २०६५) दि. ३० दिसम्बर २००८ ई. को मुस्लिम हिजरी सन् १४३० की पहली तारीख मुहर्रम महीने की है और इस दिन मंगलवार होने से मंगल गुर्रा या मुस्लिम वर्ष का राजा है। पहली मुहर्रम से पूर्व दिन की संध्या को चन्द्र दर्शन के समय सूर्यास्त काल में मिथुन लग्न उदित है।

उक्त दिवस की सूर्यास्तकालीन कुण्डली में लग्नेश अष्टम स्थान में स्थित है तथा अष्टम स्थान में ही चतुर्ग्रही योग भी है इसके प्रभाव से यह वर्ष मुस्लिम राष्ट्रों के लिए अशुभ प्रभाव की अधिकता वाला सिद्ध होगा। आन्तरिक अशान्ति बढ़ेगी। कुछ देशों में गम्भीर संकट उत्पन्न होगा तथा कहीं भारी विरोध के फलस्वरूप सत्ता परिवर्तन होगा। बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड दुर्घटनाओं की अधिकता व आतंकवादी, समाज विरोधी देशद्रोही तत्वों से कुछ मुस्लिम राष्ट्र त्रस्त होंगे। सप्तम स्थान में सूर्य एवं भौम की स्थिति होने एवं सप्तमेश के नीच राशि में स्थित होने से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में भारी वृद्धि होने की सम्भावना है एवं कुछ राष्ट्रों के विदेश व्यापार व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। दशमेश नीच का होने से सत्ता पक्ष कमजोर होगा व विरोधी पक्ष के वर्चस्व में वृद्धि होगी। नवमेश की नवम भाव पर दृष्टि होने से धार्मिक कट्टरतावाद में वृद्धि होगी। फलस्वरूप हिंसक घटनाएं घटेंगी।

मिथुन लग्न की इस कुण्डली के दूसरे भाव में केतु, तीसरे में सिंहस्थ शनि, सप्तम भाव में सूर्य और मंगल हैं। नीचस्थ 'गुरु' चन्द्र, बुध राहु के साथ अष्टमस्थ है तथा शुक्र नवमस्थ है। यह ग्रह स्थिति गत सन् के हालात को अशुभ से अशुभतर की ओर अग्रसर करते हुए घोर प्रतिकूलता का संकेत दे रही है। इन क्षेत्रों में आतंकवाद स्थान-स्थान पर सभ्यता की होली जलाता दिखाई देगा। आग और खून का 'खेल' और अधिक भयानक रूप धारण कर लेगा। कुछ देशों में तख्ता पलट की आकस्मिक घटनाओं की सम्भावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता। इन क्षेत्रों में राजनैतिक स्थिति हास्यास्पद रहेगी। सामाजिक व आर्थिक प्राणवायु के लिए अन्यों का मुखापेक्षण करना पड़ेगा। इन भू-भागों के तथाकथित बुद्धिवृद्ध 'धर्मोपदेशक' अपनी मूर्खतापूर्ण विवेचना से विश्व के सभ्य समाज के सामने अपने-आपको उपहासजनक स्थिति में पायेंगे। प्राकृतिक विपत्तियों से यहाँ की जनता त्रस्त रहेगी। विगत काल के पंचाङ्ग में की गई इस विवेचना का पुन: स्मरण कराना प्रासङ्गिक होगा। पाकिस्तान के वर्तमान सर्वेसर्वा राष्ट्रपति 'जनरल मुशर्रफ' का भाग्य सूर्य अस्ताचलगामी हो चुका है। पाकिस्तान की वरिष्ठ जननायिका श्रीमती बेनजीर भुट्टो को अपनी सुरक्षा के प्रति सतर्क रहना श्रेयस्कर होगा।

मंगल का गुर्रा फल:- कृषि में कमजोरी रहे प्रकृति-प्रकोप से भी हानि होवे। पूर्व-पश्चिम में उत्पात होंगे। भूकम्प, सर्पभय, मूषकों, टिड्डी आदि से फसल को हानि। वात, पित्त रोग की वृद्धि से प्रजा में कष्ट होगा। सैन्य संघर्ष का भय बढ़ेगा। गेहूँ, मिठाई, धातु सस्ती। व्यापार में लाभ कम, धनी पूंजीपतियों को कष्ट। वृक्षों में फल कम लगें।

विंशोत्तरीमत से आय-व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

अष्टोत्तरीमत से आय व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय	२	११	८	८	२	८	११	२	११	५	५	११

आय-व्यय देखने की विधि- आय-व्यय के दोनों अंकों को जोड़कर एक घटावें और आठ का भाग देकर यदि १, २, ६, ७, शेष रहें तो उस वर्ष में अच्छा लाभ होगा और यदि ३, ४, ५, ० शेष रहें तो लाभ कम खर्च अधिक होगा तथा अनेक प्रकार की चिन्ताएं उपस्थित होंगी।

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार- जन्म कुण्डली में लग्न बलवान हो तो लग्न से और चंद्रमा बलवान हो तो जन्म राशि से जगल्लग्न जिस स्थान से आये वह भाव स्वस्वामी शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट बलवान हो तो उस भाव की वृद्धि होती है। यदि वह भाव पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो उस भाव की हानि होती है। जन्म राशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न से यदि वर्षेश लग्न (जगल्लग्न) आठवें बारहवें हो तो उस व्यक्ति के लिए वह वर्ष शुभ लाभ फल प्रद नहीं होता।

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र



पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

संवत् २०६५ वि. (सन् २००८-२००९ ई.) की ग्रह परिषद् का विचार

संसार की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का दिग्दर्शन

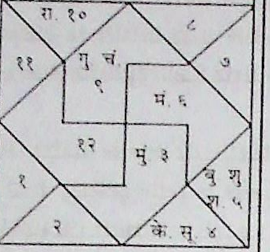
दिग्दर्शक- सुधाकर शर्मा त्रिवेदी, सोलन (हि.प्र.)

श्री विनोद विजल्वाण, ऋषिकेश — श्री विवेकानन्द सत्येश, सोलन

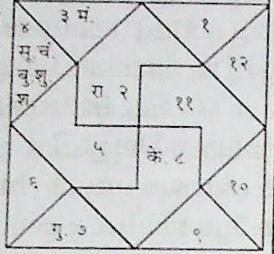
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि होने के योगायोग हैं।
- आर्थिक विकास की गति शिथिल होने तथा आन्तरिक अशान्ति बढ़ने से शासन की शिरोवेदना बढ़ेगी।
- भ्रूण हत्याओं तथा स्त्रियों पर अत्याचार की घटनाओं में अभूतपूर्व वृद्धि के संकेत हैं।
- भारत के राजकोष पर आकस्मिक 'निरर्थक व्यय' का भारी बोझ पड़ने की प्रबल सम्भावना है।
- सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्रों में शासन तन्त्र की अदूरदर्शितापूर्ण नीतियां विविध समस्याओं की जननी सिद्ध होगी।
- जनसाधारण के मन में व्याप्त अशान्ति तथा आक्रोश, उसे आन्दोलन पर उतारू कर दे तो आश्चर्य न होगा।
- मुस्लिम उग्रवादी व अन्य नक्सली तथा देशद्रोही तत्व आतंकवाद का घिनौना खेल यथावत् खेलते रहेंगे।
- सरकार की कथित 'छद्म धर्म निरपेक्षता' की मानसिकता, बिगड़ती स्थिति को और भी अधिक भयावह स्वरूप देने में सहायक होगी।
- मानवकृत हिंसा, बम-विस्फोट, अग्निकाण्ड, राजकीय व निजी सम्पत्ति के विनाश की बड़ी घटनाओं की पुनरावृत्ति होने की, ग्रह स्थिति संकेत दे रही है।
- प्राकृतिक विपत्तियों, भूकम्प, जलप्लावन, अनावृष्टि, अल्पवृष्टि, कीट, टिड्डियों द्वारा फसल और जन-धन की व्यापक क्षति की सम्भावना बनी रहेगी।
- आगामी लोकसभा चुनाव के परिणाम अप्रत्याशित होने की सम्भावना नहीं है। पूर्व की भांति 'दलदलीय' सरकार के ही गठन की अधिक सम्भावना प्रतीत होती है।
- सांसदों और विधायिका के सदस्यों का अनैतिक क्रय-विक्रय जोरों से चलने की सम्भावना रहेगी।
- गत वर्षों के पंचांगों में उल्लेखित इस विषय का पुनः स्मरण कराना प्रासांगिक होगा कि- पाकिस्तान के सर्वेसर्वा राष्ट्रपति मुशर्रफ का भाग्यसूर्य अस्ताचल की ओर अग्रसर है।
- श्रीमती बेनजीर भुट्टो का अपनी सुरक्षा के प्रति सतर्क रहना हितावह होगा।
- माननीया सुश्री मायावती का किसी आकस्मिक संकट से सामना होना अप्रत्याशित न होगा।
- इस वर्ष के सूर्य-चन्द्र ग्रहणों व अन्यान्य ग्रह योगों का प्रभाव शासकों की सक्रिय राजनीति में भाग लेने वाली सन्तान पर अनिष्टसूचक प्रतीत हो रहा है।
- महिला राजनेताओं को कष्ट और वेदना की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

स्वतंत्रता का ६२वाँ वर्ष

स्वतंत्रता का ६२वाँ वर्ष



स्वतंत्र भारत की कुंडली

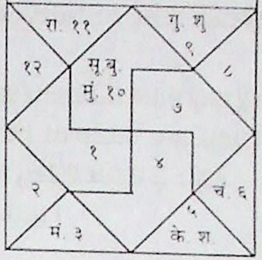


स्वतंत्र भारत के ६२वें वर्ष का शुभारम्भ श्रावण शु. १३, गुरुवार दि. १४ अगस्त २००८ को दिन के ३ बजकर १९ मिनट पर होगा। इस वर्ष लग्न में स्वगृही लग्नेश स्थित है तथा अष्टमेश भी लग्नेश के साथ स्थित होकर गुरु एवं चन्द्रमा का योग बना रहा है। यह योग अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला है किन्तु द्वितीय भाव में राहु की स्थिति एवं अष्टम स्थान में सूर्य एवं केतु की स्थितियाँ विपरीत घटनाक्रम को जन्म देने वाली हैं। राहु के प्रभाव से आन्तरिक अशान्ति बढ़ेगी तथा आर्थिक विकास की गति मन्द पड़ सकती है। मुन्था के सप्तम भाव में स्थित होने से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में भारी वृद्धि होगी तथा भ्रूण हत्याओं में भी भारी वृद्धि होगी। तृतीय भाव का अधिपति नवम भाव में शत्रु के घर स्थित है इसके प्रभाव से शत्रु स्वयं समस्याग्रस्त होगा। मित्र राष्ट्रों की संख्या में वृद्धि होगी एवं कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धों का विस्तार एवं आपसी विश्वास एवं सहयोग में वृद्धि होगी। चतुर्थ भाव का अधिपति स्वराशि का होकर लग्न में स्थित है इसके प्रभाव से कृषि क्षेत्र एवं आवासीय क्षेत्र दोनों का विकास होगा। भौम जो कि द्वादशेश होकर दशमस्थ है तथा प्रत्यक्ष सप्तम शत्रु दृष्टि से चतुर्थ भाव को देख रहा है। भौम की इस हानिप्रद दृष्टि के फलस्वरूप कुछ भागों में कृषि क्षेत्र एवं कृषि की हानि होगी तथा कुछ भागों में आवासीय भूमि की हानि होगी तथा लोगों को कुछ आवासीय भागों से प्राकृतिक प्रकोप के कारण विस्थापित होना पड़ेगा। पंचम स्थान का अधिपति भौम शत्रु की राशि में दशमस्थ है अत: शिक्षा के स्तर में सुधार नहीं होगा, अनैतिकता में वृद्धि अनाचार की भी वृद्धि होगी। बाल मृत्युदर में ग्रह स्थिति के अनुसार वृद्धि होगी। लोगों में पाप वृत्ति बढ़ेगी। पंचमेश भौम के प्रभाव से तकनीकी शिक्षा का विकास होगा। षष्ठेश नवम भाव में स्थित है तथा शनि की दशम दृष्टि भी रिपु भाव पर है। इसके प्रभाव से शत्रु को हानि उठानी पड़ेगी। शत्रु अपनी प्रकृति के अनुरूप प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आतंकवाद को पोषित करता रहेगा। सप्तमस्थ मुंथा विदेश व्यापार में प्रतिस्पर्धा बढ़ायेगी तथा कुछ क्षेत्रों में विदेश व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। महिलाओं को प्रोत्साहित करने वाली योजनाओं के वांछित परिणाम जनसंख्याधिक के प्रभाव से प्रोत्साहित करने वाले नहीं होंगे। अष्टम स्थान में स्थित केतु एवं सूर्य आर्थिक विकास की गति को मन्द करने वाले हैं। दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी। नवम भाव का अधिपति अष्टम स्थान में स्थित होने से धार्मिक नेता राजनीति में अधिक रुचि लेंगे। दशम मंगल शासक को कठोर कदम उठाने पर बाध्य करेगा।

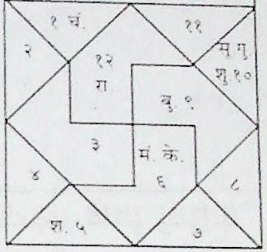
विंशोत्तरी दशा षष्ठेश लग्नेश की है तथा इसमें द्वितीयेश पंचमेश का अन्तर जुलाई २००८ तक चलेगा तथा इसके उपरान्त सप्तमस्थ केतु की दशा होने से अशान्ति का वातावरण बनेगा।

भारतीय गणतंत्र का ५९वाँ वर्ष

५९वें गणतंत्र की कुण्डली



गणतन्त्र की कुण्डली



माघ शु. १ मंगलवार, दि. २७ जनवरी सन् २००८ ई. की प्रात: ७ बजकर ९ मिनट पर भारतीय गणतंत्र के ५९वें वर्ष का प्रवेश होगा। वर्ष लग्न में मुंथा के साथ अष्टमेश सूर्य एवं नवमेश तथा रिपुभावेश बुध भी स्थित है। अत: राष्ट्र की प्रगति एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की दृष्टि से वर्ष शुभफलप्रद है किन्तु आन्तरिक अशान्ति एवं आर्थिक समस्याएं भी अनिश्चितता का कारण बनेगी। लग्नेश अष्टमभाव में तथा अष्टमेश लग्न में स्थित होने से यह वर्ष विभिन्न प्रकार की समस्याओं के उत्पन्न होने को दर्शा रहा है। द्वितीय भाव में भी राहु के स्थित होने से आन्तरिक शान्ति बनाये रखने के लिए तथा आर्थिक आधार को मजबूत बनाये रखने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। अचानक आर्थिक संकट के उत्पन्न होने की सम्भावना है। तृतीय भाव का अधिपति द्वादश भाव में स्वगृही होकर स्थित है तथा भौम की दृष्टि उस पर होने से पड़ौसी राष्ट्र शत्रुवत व्यवहार करता रहेगा किन्तु भौम के प्रभाव से उसे स्वयं भी भारी समस्या का सामना करना पड़ेगा। चतुर्थ भाव का अधिपति शत्रु की राशि में रिपुभाव में स्थित है। इसके प्रभाव से कुछ भागों में कृषि भूमि एवं कृषि की भारी हानि होने का ग्रह स्थिति संकेत दे रही है। चतुर्थ भाव पर गुरु की भी दृष्टि होने से कृषि उत्पादन पर्याप्त होगा। कुछ आवासीय क्षेत्र प्राकृतिक या अन्य कारणों से प्रभावित होंगे। जिसके फलस्वरूप आपदा ग्रस्त भाग से लोगों को विस्थापित होना पड़ सकता है। पंचमेश द्वादश भाव में शत्रु की राशि में स्थित है इसके फलस्वरूप शिक्षा के स्तर में सुधार नहीं होगा तथा मनोरंजन के साधन अप संस्कृति का विस्तार करेंगे एवं बाल मृत्युदर और भ्रूण हत्या के मामलों में भारी वृद्धि होगी। विकास योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारूरूप से नहीं हो पायेगा। रिपु भाव का अधिपति लग्नस्थ होने से लग्न रिपु से पीड़ित हो गया है अत: शत्रु अपनी विरोधी गतिविधियों को नियमित रूप से क्रियान्वित करता रहेगा किन्तु भौम की स्थिति के कारण शत्रु को क्षति उठानी पड़ेगी। सप्तमेश के नवमस्थ होने से महिलाओं के कल्याण की योजनाएं बनेंगी। राज्येश द्वादश भाव में स्थित होने से शासक को सत्ता में बने

रहने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। अष्टम स्थान के शनि एवं केतु आर्थिक संकट अकस्मात उत्पन्न कर सकते हैं। भूमिगत पदार्थों का दोहन तेजी से किया जायेगा। जोकि भविष्य में उन्नति की गति को बढ़ायेंगे। वर्तमान में लग्नस्थ राहु की दशा में लाभ स्थान में स्थित रिपुभाव के स्वामी की दशा होने से भारत को राष्ट्र विरोधी, समाजविरोधी, आतंकवादी व विध्वसंक शक्तियों से जूझना पड़ेगा। जिसके फलस्वरूप जन-धन की हानि उक्त दशा काल में होती रहेगी। महादशा नाथ राहु के लग्नस्थ होने से नाना प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी।

ज्योतिष एक विज्ञान है

विगत ६४ वर्षों से इस पंचांग में यह स्तम्भ लिखा जा रहा है। ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके देश-विदेश के संबंध में जो भी भविष्यवाणी की गयी हैं, वे अधिकांश में सत्य सिद्ध हुई हैं। इसके साक्षी "श्रीविश्वविजयपंचांग" के विज्ञ वाचकवृंद दे रहे हैं। दैवज्ञ ने कभी यह अभिमान नहीं किया कि जो कुछ भविष्यवाणी वह करता है वह शत-प्रतिशत सही होती है। जहां राज्याश्रय प्राप्त एलौपैथी डाक्टरी और आयुर्वेद-विज्ञान अभी तक शत-प्रतिशत सफलता की गारंटी नहीं दे पाये, वहां निराश्रित ज्योतिष-विज्ञान के गणित-विज्ञान ने शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दिखाई है। ज्योतिष गणित के द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्र ग्रहणों के स्पर्श मोक्ष का जो समय निश्चित कर दिया जाता है उसमें एक मिनट का भी अंतर नहीं आता। यद्यपि ज्योतिष शास्त्र के फलित विभाग में अभी इतनी सूक्ष्मता नहीं बन पायी है। फलित ज्योतिष को 'दैव-विद्या' कहा गया है, इसलिए राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के संबंध में भविष्यवाणी करने वाले को "दैवज्ञ" कहा जाता है। यह "दैव-विद्या" तपस्या, साधना एवं अनुभव गम्य है। आधुनिक वातावरण का एक साधनहीन दैवज्ञ भी मनुष्य है सर्वज्ञ निर्भ्रान्त नहीं, अतः उसकी बुद्धि भी भ्रान्त हो सकती है। ग्रहगति रूप दैवी संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। उसका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान के समान सत्य ही हो- यह नहीं कहा जा सकता। मेरा विश्वास है कि भारतीय ज्योतिष विज्ञान का भविष्य कथन शास्त्र इस देश का अत्यन्त पुरातन विज्ञान है। इसका निरीक्षण-परीक्षण अवश्य होना चाहिए, और उससे प्राप्त होने वाले तथ्यों का विचार शासकीय स्तर पर भी अवश्य होना चाहिए। आज तक बिना किसी रिसर्च या शासकीय आश्रय के यह शास्त्र देश के कुछ चोटी के विद्वानों के पास सुरक्षित चला आ रहा है, और अब तक चमत्कारी विज्ञान की मान्यता पाने लगा है। आज के विज्ञान ने चाहे प्रगति क्यों न की हो पर भविष्य जानने का उसके पास कोई साधन नहीं है। अतः इस भारतीय विज्ञान की ओर शासन का ध्यान अवश्य जाना चाहिए। अनेक उच्च राज्याधिकारी फलित ज्योतिष पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। श्री नेहरू जी और स्वर्गीया प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी एकाधिक बार दैवज्ञों से परामर्श लिया जिसके प्रमाण मौजूद हैं, किन्तु जो मंत्री निजी तौर पर दैवज्ञों के सामने नतमस्तक होते हैं वे सार्वजनिक रूप से कहते हैं कि "हम ज्योतिष पर आस्था नहीं रखते।" इस पर सर्वसाधारण जनता को इनके दोहरे चरित्र पर आश्चर्य और खेद ही होगा, अस्तु।

मेदिनीय अथवा राष्ट्रीय भविष्य

राष्ट्रीय भविष्य अनेक प्रकार से देखा जाता है। इस विज्ञान की अनेक शाखाएं हैं, जिसके लिए जो मार्ग प्रशस्त हो जिसको गुरु से जैसा ज्ञान मिलता हो- निर्णय करें, यही उचित है। हमारे सामने सर्वप्रथम वराह-मिहिराचार्य कृत 'वाराही-संहिता' प्रमुख ग्रन्थ है, इसके अनुसार ग्रहों के परस्पर युद्ध, उदयास्त वक्रमार्ग, ग्रहों के विशेष योग और विश्व में कहाँ पर शांति और कहाँ अशांति रहेगी, इसके निर्णयार्थ सर्वतोभद्रचक्र, कर्पूरचक्र, कूर्मचक्र और नरपतिजयचर्या का संघट्ट चक्र भी है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, झंझावातादि के लिए सप्तनाड़ी चक्र उपयोगी है। इन्हीं को आधार मानकर जो कुछ इस पंचांग में लिखा जा रहा है वह भी ८० प्रतिशत से अधिक सत्य सिद्ध हुआ है। यदि इस विज्ञान को राज्याश्रय प्राप्त हो और सभी शाखाओं के विशेषज्ञ अनुभवी विद्वान एकत्र होकर सामूहिक निर्णय दें, तो इसमें शत-प्रतिशत सफलता निश्चित है। नये वर्ष का फल जानने के लिए ग्रहों की राश्यंशात्मक सूक्ष्म स्थिति का पर्यवेक्षण आवश्यक है अतः यहाँ प्रमुख ग्रहों की स्थिति का वर्षारंभ और वर्षांत का उल्लेख किया जाता है।

नये वर्ष सम्वत् २०६५ विक्रमी में ग्रह स्थिति

नये वर्ष सम्वत् २०६५ विक्रमी में प्रमुख ग्रहों की स्थिति चित्रापक्षीय निरयणमान से इस प्रकार है :-

	चैत्र शु. प्रतिपदा दि. ७ अप्रैल २००८ ई.						चैत्र कृ. अमावस्या दि. २६ मार्च २००९ ई.					
प्रमुख ग्रह	राशि	अं.	क.	मार्गी/वक्री	उदय/अस्त	नक्षत्र	राशि	अं.	क.	मार्गी/वक्री	उदय/अस्त	नक्षत्र
शनि	सिंह	८	१७	वक्री	उदय	मघा	सिंह	२३	०३	वक्री	उदय	पूफा
गुरु	धनु	२६	४६	मार्गी	उदय	उ.षाढ़ा	मकर	२३	५७	मार्गी	उदय	धनिष्ठा
मंगल	मिथुन	१९	२८	मार्गी	उदय	आर्द्रा	कुम्भ	१४	३०	मार्गी	उदय	शतभिषा
हर्षल	कुम्भ	२६	१७	मार्गी	उदय	पूभा	कुम्भ	२९	२१	मार्गी	उदय	पूभा
नेप्च्यून	मकर	२९	३७	मार्गी	उदय	धनिष्ठा	कुम्भ	१	२५	मार्गी	उदय	धनिष्ठा
वेंकटेश	धनु	७	१०	मार्गी	उदय	मूल	धनु	९	१७	मार्गी	उदय	मूल
राहु	कुम्भ	१	१३	वक्री	अस्त	धनिष्ठा	मकर	१२	३१	वक्री	अस्त	श्रवण
केतु	सिंह	१	१३	वक्री	अस्त	मघा	कर्क	१२	३१	वक्री	अस्त	पुष्य

गुरु- वर्षारम्भ में गुरु मार्गी है। ९ मई को गुरु वक्री होकर ८ सितम्बर को मार्गी होगा। वर्षारम्भ में गुरु धनु राशि में है। ९ दिसम्बर को गुरु मकर राशि में प्रवेश करेगा एवं वर्षान्त तक मकर राशि में ही रहेगा।

शनि- वर्षारम्भ में शनि वक्री है। ३ मई को शनि मार्गी होगा। ३१ दिसम्बर को शनि वक्री होगा तथा वर्षान्त तक वक्री रहेगा। शनि पूरे वर्ष सिंह राशि में रहेगा।

मंगल- मंगल पूरे वर्ष मार्गी रहेगा। वर्षारम्भ में मंगल मिथुन राशि में है। २८ अप्रैल को कर्क राशि में, २१ जून को सिंह राशि में, ९ अगस्त को कन्या में, २५ सितम्बर को तुला में, ७ नवम्बर को वृश्चिक में, १९ दिसम्बर को मूल धनु में, २७ जनवरी को मकर में, ७ मार्च को कुम्भ में मंगल प्रवेश करेगा तथा वर्षान्त तक कुम्भ राशि में ही रहेगा।

राहु एवं केतु- मध्यम गति से सदैव वक्री चलने वाले राहु-केतु वर्षारम्भ में राहु कुम्भ राशि में एवं केतु सिंह राशि में है। ३० अप्रैल को राहु मकर राशि में प्रवेश करेगा तथा केतु कर्क राशि में प्रवेश करेगा तथा वर्षान्त तक राहु मकर में व केतु कर्क राशि में रहेगा।

नेपच्यून- वर्षारम्भ में नेपच्यून मकर राशि में है। २४ अप्रैल को यह कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। २८ जून को वक्र गति द्वारा मकर राशि में एवं १३ फरवरी को पुन: कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। वर्षारम्भ में नेपच्यून मार्गी है २६ मई को वक्री होगा तथा २ नवम्बर को मार्गी होकर वर्षान्त तक मार्गी ही रहेगा।

हर्षल- वर्षारम्भ में हर्षल मार्गी है। २६ जून को वक्री होकर २७ नवम्बर को मार्गी होगा तथा वर्षान्त तक मार्गी रहेगा।

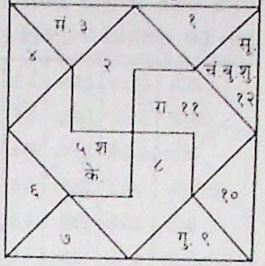
वेंकटेश- वर्षारम्भ में प्लूटो वक्री है। ११ सितम्बर को मार्गी होगा तथा वर्षान्त तक मार्गी रहेगा। पूरे वर्ष प्लूटो धनु राशि में रहेगा।

कुछ मुख्य अशुभ योग- वैशाख कृष्ण पक्ष से ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तक शनि-मंगल का द्विर्द्वादश योग, वैशाख मास में पांच मंगलवार, आषाढ़ कृष्ण पक्ष से श्रावण कृष्ण पक्ष तक शनि-मंगल की युति, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष में चतुर्ग्रही योग, आषाढ़ मास में विग्रह कारक पांच गुरुवार, श्रावण मास में पांच शनिवार, श्रावण कृष्ण पक्ष में चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योग, श्रावण शुक्ल पक्ष से आश्विन कृष्ण पक्ष तक शनि-मंगल का द्विर्द्वादश योग, आश्विन मास में पांच मंगलवार, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में चतुर्ग्रही योग, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में पुन: चतुर्ग्रही योग, पौष कृष्ण पक्ष में पंचग्रही योग, पौष मास में पांच शनिवार व पांच रविवार, पौष शुक्ल पक्ष में चतुर्ग्रही योग, माघ कृष्ण पक्ष में पंचग्रही एवं षड्ग्रही योग तथा माघ शुक्ल पक्ष में षड्ग्रही योग तथा माघ से शनि-मंगल का षड्ष्टक योग, फाल्गुन कृष्ण पक्ष में चतुर्ग्रही योग, फाल्गुन में पांच मंगलवार एवं फाल्गुन शुक्ल पक्ष में पंचग्रही योग, वर्षान्त चैत्र कृष्ण पक्ष में चतुर्ग्रही योग, फाल्गुन शुक्ल पक्ष से शनि-मंगल का प्रतियोग।

कुछ अन्य अशुभ योग- श्रावण शुक्ल पक्ष में खण्डग्रास चन्द्रग्रहण, श्रावण कृष्ण पक्ष में खण्डग्रास सूर्य ग्रहण, माघ कृष्ण पक्ष में दक्षिणी पूर्वी भारत में खण्डग्रास सूर्य ग्रहण।

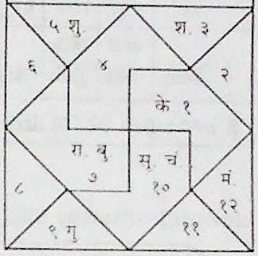
वर्ष २००८-२००९ ईस्वी

नववर्ष प्रवेश कुण्डली



चैत्र कृ. अमावस्या, रविवार, दिनांक ६ अप्रैल २००८ ई. को प्रात: ९ बजकर २५ मिनट पर वृष लग्न के कर्क नवांश के समय नववर्ष आरम्भ होगा। लग्न का स्वामी उच्च राशि का होकर लाभ स्थान में स्थित है। इसके प्रभाव से राष्ट्र की उन्नति होगी एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धन स्थान में भौम शत्रु राशि का होकर स्थित है तथा कुटुम्ब स्थान का अधिपति नीच राशि का होकर लाभ स्थान में स्थित है। इसके प्रभाव से जनता में असन्तोष होगा। अशान्ति का वातावरण बनेगा। लोगों की क्रय शक्ति में कमी होगी, मंहगाई बढ़ेगी, 'समस्याओं' के विरोध में जन आन्दोलन, उग्र विरोध-प्रदर्शन होंगे। इस वर्ष मुद्रा संकट, आर्थिक विकास में अचानक बाधा उत्पन्न होने की सम्भावना है। तृतीय भाव का अधिपति लाभ स्थान में स्थित होने से औद्योगिक विकास की गति बढ़ेगी। किन्तु कुछ व्यवधान भी कुछ अवधि के लिए पड़ेंगे। चतुर्थ भाव का स्वामी लाभ स्थान में मित्र के घर स्थित है तथा शनि नवमेश दशमेश होकर शत्रु की राशि में केतु के साथ चतुर्थ भाव में स्थित है इसके प्रभाव से प्राकृतिक प्रकोपों की अधिकता होगी। समाज विरोधी, राष्ट्र विरोधी, आतंकवादी तत्व भय-आतंक फैलाने के उद्देश्य से आतंकवादी कार्रवाई करेंगे। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि चतुर्ग्रही, पंचग्रही एवं षड्ग्रही योग इस वर्ष बन रहे हैं एवं शनि-मंगल के प्रतियोग, षड्ष्टक योग तथा द्विर्द्वादश योग से वर्ष की अधिकांश अवधि प्रभावित हो रही है। इन अनिष्टकारी योगों के प्रभाव से धन-जन की हानि बड़ी दुर्घटनाओं एवं आतंकवादी कार्रवाइयों के परिणाम स्वरूप होने का योग है। कृषि की हानि भी कुछ भागों में अधिक होगी तथा कुछ कृषि भूमि की हानि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण होगी। कुछ आवासीय क्षेत्रों से लोगों को प्रकृतिजन्य कारणों से विस्थापित होना पड़ेगा। प्राकृतिक कारणों से कुछ क्षेत्रों की हानि होगी। यह क्षेत्र कृषि क्षेत्र तथा आवासीय दोनों प्रकार के होंगे। चतुर्थाधिप के लाभस्थ होने से आवासीय एवं कृषि दोनों प्रकार की भूमियों का विकास किया जायेगा। प्रतिपक्ष की स्थिति में सुधार होगा। पंचम भाव का अधिपति नीच राशि का होकर लाभ भाव

नवांश कुण्डली



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
इष्टबल	४५	२३	३२	७	२४	३४	४२
कष्टबल	१५	३७	२८	५३	३६	२६	१८

में स्थित है इसके प्रभाव से शिक्षा के स्तर में सुधार नहीं होगा एवं भ्रूण हत्या एवं बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी। मनोरंजन के साधन अपसंस्कृति का विस्तार करेंगे। विकास योजनाओं का क्रियान्वयन दोषपूर्ण होने से लाभार्थियों को इसका समुचित लाभ नहीं मिल पायेगा। रिपु भाव का अधिपति उच्च का होकर लाभ स्थान में स्थित है रिपुभावाधिप ही लग्नाधिप भी है इस कारण लग्नेश व रिपु भाव में सम्बन्ध स्थापित होने से शत्रु आतंकवादियों, समाजविरोधियों-राष्ट्र विरोधियों को प्रोत्साहित करके अव्यवस्था फैलाने की अपनी कुत्सित चाल चलता रहेगा। किन्तु रिपु भाव पर शनि की दृष्टि होने से शत्रु अपनी योजना में सफल नहीं हो पायेगा। रिपु भाव से ही रोग का भी विचार होता है अतः इस वर्ष किसी रोग विशेष के महामारी का रूप लेने की सम्भावना है जिससे लोगों को पीड़ा होगी एवं भय का वातावरण बनेगा। सप्तम स्थान का अधिपति शत्रु राशि का होकर धन स्थान में स्थित है इसके प्रभाव से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। महिलाओं के कल्याण की योजनाओं का क्रियान्वयन किया जायेगा किन्तु उसके वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। व्यापार में प्रतिस्पर्धा अधिक होने से निर्यात में विशेष सुधार नहीं होगा। अष्टम स्थान का अधिपति स्वग्रही है अतः भूगर्भ पदार्थों का दोहन करने में सफलता प्राप्त होगी। खनिज व पेट्रोलियम पदार्थों के भूगर्भस्थ नये स्रोतों का इस वर्ष पता चलेगा। राजकीय कोष की वृद्धि होगी। विदेशी मुद्रा भण्डार बढ़ेगा। इस वर्ष किसी विशिष्ट अवधि में आर्थिक संकट या अर्थ सम्बन्धी समस्या किसी कम अवधि के लिए उत्पन्न हो सकती है। नवम भाव का अधिपति शत्रु राशि में चतुर्थ भाव में केतु के साथ स्थित है अतः कानून व्यवस्था, आन्तरिक सुरक्षा की दृष्टि से यह वर्ष चिन्ता का है। अतः आन्तरिक सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक होगा। आन्तरिक शान्ति व व्यवस्था बनाये रखना भी एक समस्या हो सकती है। धार्मिक नेता धर्म में रुचि लेने की अपेक्षा राजनीति में अधिक रुचि लेंगे। न्याय व्यवस्था अपना कार्य दृढ़तापूर्वक करेगी। शनि नवमाधिपति होकर चतुर्थ स्थान में स्थित है तथा दशम भाव को जोकि उसका अपना घर है पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अतः नवमभाव दशमभाव को प्रभावित कर रहा है। न्यायव्यवस्था का इस वर्ष कार्यपालिका पर प्रभाव पड़ने की प्रबल सम्भावना है। दशमभाव में राहु भी स्थित है तथा दशमेश शत्रु के घर में स्थित है इसके फलस्वरूप इस वर्ष सत्ता पक्ष को विषम स्थिति का सामना करना पड़ेगा तथा शासक को शासन पर अपनी पकड़ कमजोर होती दिखाई देगी। अतः सत्ता पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए शासक को विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। इस वर्ष सत्ता के अस्थिर होने की प्रबल सम्भावना है। इसका कारण यह है कि चतुर्थाधिपति जो कि विपक्ष का ग्रह है उच्च राशि में स्थित हो गया है जबकि दशमाधिपति शत्रु की राशि में स्थित है अतः तुलनात्मक दृष्टि से विपक्ष के ग्रह की स्थित अधिक अनुकूल है। किन्तु शासक का ग्रह अपने घर को भी पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अतः यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है कि शासन में अस्थिरता आयेगी ही किन्तु शासक को असहज स्थिति का सामना करना पड़ेगा। एकादश भाव में चतुर्ग्रही योग बना हुआ है इसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में उतार-चढ़ाव की सम्भावना है। कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी एवं कुछ राष्ट्रों से सम्बन्ध शिथिल पड़ेंगे। मान प्रतिष्ठा की दृष्टि से विचार करने पर स्पष्ट है कि लग्नाधिप उच्च राशि का होकर स्थित है अतः अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का महत्व बढ़ेगा। द्वादश भाव का अधिपति भौम शत्रु की राशि में स्थित है अतः जलमार्ग-समुद्री मार्ग में आवांछित गतिविधियां बढ़ेंगी तथा देशद्रोही व आतंकवादी, समाजविरोधी तत्व जल मार्ग को घुसपैठ के उपयोग में लायेंगे एवं गुप्त षड्यन्त्रों द्वारा राष्ट्र को क्षति पहुंचाने का प्रयास किया जायेगा। कुछ महत्वपूर्ण गुप्त सूचनाएं भी इस वर्ष शत्रु के हाथ लगेगी।

संवत्सर के आरम्भ तथा उसकी नवांश कुण्डली की ग्रह स्थिति का मनन करने पर संकेत मिलते हैं कि राष्ट्र के स्तर पर तथा विश्व स्तर पर पर्याप्त मात्रा में समृद्धि तथा उन्नति होगी। विश्व स्तर पर भारत को प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त होगा। भले ही आर्थिक दृष्टिकोण से लाभ की मात्रा में न्यूनाधिक संतोषजनक स्थिति बनी रहेगी। आकस्मिक निरर्थक 'व्यय' के भी योगायोग हैं। इस कारण से मंहगाई रोक सकने में शासनतन्त्र को अधिक सफलता नहीं मिल पायेगी। अन्य सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्रों में 'शासनतन्त्र की' अदूरदर्शितापूर्ण नीतियां समस्याओं को जन्म देंगी। फलस्वरूप जनसाधारण में अशान्ति तथा रोष उत्पन्न होगा। इस वर्ष अपना आक्रोष प्रकट करने हेतु जनता का अहिंसक आन्दोलन पर उतारू होना सम्भावित रहेगा। मुद्रा स्फीति के बढ़ने के लक्षण हैं। मुस्लिम उग्रवादी तथा विधर्मी तत्व मिलकर समाज विरोधी व राष्ट्रद्रोही खेल खेलेंगे तथापि सरकार की नीतियां तथा 'छद्म धर्म-निरपेक्ष मानसिकता' इस गिरती स्थिति को और गहरे गर्त में पहुंचाने में सहायक सिद्ध होगी। धर्म-निरपेक्षता की आड़ में जनद्रोही, समाजद्रोही तथा राष्ट्रघातक मानसिकता का खुला प्रदर्शन होता रहेगा। सेक्युलर विचार धारा के प्रवर्तक, सत्तालोलुप भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री की अंग्रेजों द्वारा प्रेरित 'फूट डालो और राज करो' की राष्ट्रघातक नीति काफी हद तक जनता को स्पष्ट रूप से समझ आने लगेगी। प्राकृतिक उपद्रव, भूकम्प, जलप्लावन व अनावृष्टि के योग भी समय-समय पर स्थान-स्थान पर घटित होंगे। राष्ट्र की अधिकतर कृषियोग्य भूमि अत्यधिक रसायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशक रसायनों के दुष्प्रयोग के कारण अपनी उर्वरा शक्ति खोने लगेगी। फलस्वरूप कृषि उत्पादन की दर पर्याप्त रूप से कुप्रभावित होगी। देश के भीतर और बाहर के शत्रु, राष्ट्र को अस्थिर करने में कोई कसर न छोड़ेंगे। आगामी लोकसभा चुनाव के परिणाम अप्रत्याशित होने की सम्भावना नहीं है। पूर्व की भांति 'दलदलीय' सरकार के ही गठन की सम्भावना बनती है। शासक दलों को अपना बहुमत स्थापित करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ेगा फिर भी स्थायित्व 'मृगमरीचिका' की भांति वास्तविकता से कोसों दूर रहेगा। सांसदों का अनैतिक क्रय-विक्रय जोरों से चलेगा। उनको नैतिकता व मर्यादा की परिधि में रखने की चेष्टा किसी

टोकरी में मेंडक बिठाने सरीखी होगी। सरकार के गठन तथा सत्ता के आसन पर येन-केन-प्रकारेण आरूढ़ होने की दुराभिलाषा राजनेताओं को मात्र क्रय-विक्रय की वस्तु बना देंगी। किसी प्रकार की नैतिकता व मर्यादा का लेश मात्र दर्शन दुर्लभ होगा। परिणामस्वरूप देश व समाज की सुरक्षा को भी दुर्लक्ष्य कर नेतागण अपनी मर्यादाहीन मानसिकता का भौंडा प्रर्दशन करेंगे। प्रकारान्तर से हर सम्भव किस्म का नैतिक पतन नेताओं के क्रियाकलापों में स्पष्ट दिखाई देगा। उनके द्वारा राष्ट्र की अस्मिता व सुरक्षा निज स्वार्थ के लिए दाँव पर लगा दी जाएगी।

विश्व परिदृश्य

अमेरिका- वृश्चिक लग्न में भारतीय पद्धति से नववर्ष प्रवेश हुआ है। लग्न का स्वामी अष्टम स्थान में शत्रु की राशि में स्थिति है तथा चतुर्थ भाव में राहु स्थित है तथा चतुर्थ भाव पर शनि की दृष्टि भी है किन्तु वह शनि का अपना घर है, शनि वक्री है। अत: यह वर्ष सुरक्षा एवं आन्तरिक शान्ति की दृष्टि से सामान्य नहीं कहा सकता है। देशद्रोही व समाजविरोधी, आतंकवादी गुट इस राष्ट्र की शान्ति को भंग करने का प्रयास करेंगे। धन भाव का गुरु स्वगृही होकर धन भाव में हो स्थित है तथा धन-भाव पर अष्टमस्थ भौम की दृष्टि है अत: गुरु आर्थिक दृष्टि से मजबूती प्रदान करेगा किन्तु मंगल के कारण आर्थिक स्थिति को कुछ समय के लिए कुप्रभावित करेगा। तृतीय भाव का अधिपति शत्रु की राशि में केतु के साथ स्थित है अत: कुछ सहयोगी राष्ट्र प्रभावित होंगे। चतुर्थभाव में राहु की स्थिति प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प, तूफान आदि से कुछ भाग विशेष में कृषि क्षेत्र या आवासीय क्षेत्रों की क्षति भी दर्शाता है। पंचम भाव में उच्च का शुक्र तथा सूर्य की स्थितियां यद्यपि शिक्षा, योजनाओं के क्रियान्वयन आदि की दृष्टि से प्रगतिकारक है किन्तु अष्टमेश बुध की स्थिति बालमृत्युदर में वृद्धि करने वाली है। सप्तमेश के उच्च का होने से महिलाओं के लिए उन्नतिकारक व व्यापार की वृद्धि करने वाला है किन्तु अष्टम स्थान का मंगल बड़ी दुर्घटना का द्योतक है दशमस्थ शनि-केतु, शासक के लिए यह वर्ष सामान्य नहीं दर्शाते हैं। शासक को भारी विरोधों का सामना करना पड़ेगा।

ब्रिटेन- भारतीय पद्धति से नववर्ष प्रवेश मकर लग्न में हो रहा है। लग्न का स्वामी अष्टम स्थान में केतु के साथ स्थित है इसके प्रभाव से यह वर्ष समस्याओं से युक्त रहेगा। कुटुम्ब भाव का अधिपति जोकि लग्नाधिप भी है शत्रु के घर स्थित है तथा चतुर्थाधिप भी रिपुभाव में शत्रु के घर स्थित है अत: यह वर्ष विभिन्न कारणों से अशान्तियुक्त एवं भय के वातावरण से युक्त रहेगा। प्राकृतिक प्रकोपों या राष्ट्र विरोधी तत्वों, आतंकवादी तत्वों की विध्वंसक गतिविधियों, बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड, यान दुर्घटनाओं से जन-धन की हानि का संकेत ग्रह स्थिति दे रही है। पराक्रम भाव में चतुर्ग्रही योग कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धों की समीक्षा करायेगा तथा कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। दशम भाव का अधिपति उच्च का होकर पराक्रम भाव में स्थित है। अत: विपरीत परिस्थिति होने पर भी शासक की सत्ता पर पकड़ बनी रहेगी तथा राष्ट्र की प्रगति व स्थिरता के लिए गम्भीर प्रयास किये जायेंगे। पंचमेश जोकि राज्येश भी है शिक्षा, औद्योगिक शिक्षा, बाल कल्याण पर विशेष ध्यान दिलायेगा। नवमाधिपति नीच राशि में स्थित है अत: धार्मिक मतभेद उभरेंगे कुछ असामाजिक तत्व संप्रदायवाद की अग्नि प्रज्वलित करके शान्ति भंग करने का प्रयास करेंगे।

पाकिस्तान- वृष लग्न में नववर्षारम्भ हो रहा है लग्नाधिपति उच्च का होकर लाभ स्थान में स्थित है किन्तु लग्नाधिपति ही रिपु भाव का स्वामी भी है अत: राष्ट्र की प्रगति के लिए यद्यपि ग्रह स्थिति अनुकूल है किन्तु समाज विरोधी, राष्ट्र विरोधी तत्व एवं कट्टरपंथी, शासन तन्त्र के लिए नित्य नई समस्या उत्पन्न करेंगे। धन भाव में भौम स्थित है तथा चतुर्थ भाव में शनि एवं केतु स्थित है अत: आन्तरिक शान्ति की दृष्टि से यह वर्ष समस्यायुक्त रहेगा। प्राकृतिक प्रकोपों, रोगादि से लोगों को कष्ट उठाने पड़ेंगे। बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड, यान दुर्घटना तथा आपसी मतभेद, विरोधों, प्रदर्शनों के चलते अशान्ति का वातावरण बनेगा तथा प्राकृतिक प्रकोपों, रोगों आदि से कृषि व कृषि क्षेत्र की हानि होगी। राज्य स्थान का अधिपति शत्रु के घर में केतु के साथ स्थित है इसके प्रभाववश शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। विपक्षी मुखर होंगे एवं शासक की सत्ता पर पकड़ कमजोर होगी। सत्ता पर बने रहने के लिए शासक को गम्भीर प्रयास करने पड़ेंगे। नवमेश ही दशमेश भी है अत: धार्मिक नेता भी शासक के लिए समस्या उत्पन्न करेंगे। लाभ स्थान में लग्नेश के साथ चतुर्ग्रही योग होने से अकस्मात कोई घटनाक्रम घटेगा जिसके परिणाम अप्रत्याशित होंगे तथा अशान्ति का वातावरण बनेगा। विदेश व्यापार में इस वर्ष कुछ कमी होगी।

फ्रांस- कुम्भ लग्न का अधिपति अपने घर को सप्तम दृष्टि से देख रहा है तथा लग्नेश के साथ केतु भी स्थित है तथा लग्न में राहु भी स्थित है। अत: इस देश की आन्तरिक राजनीति में परिवर्तन की सम्भावना है। कुटुम्ब भाव में चतुर्ग्रही योग है तथा कुटुम्बेश लाभ स्थान में स्वगृही होकर स्थित है अत: आर्थिक दृष्टि से यह देश समृद्ध होगा। लोगों की क्रय शक्ति बढ़ेगी। चतुर्थ भाव का अधिपति द्वितीय भाव में उच्च का होकर स्थित है तथा शनि की दशम दृष्टि चतुर्थ भाव पर है अत: कृषि का उत्पादन यद्यपि पर्याप्त होगा किन्तु प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि क्षेत्र व आवासीय क्षेत्र की हानि सम्भव है। पंचम भाव में मंगल के स्थित होने से बाल मृत्युदर में इस वर्ष वृद्धि होगी। औद्योगिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जायेगी। सप्तम स्थान में शनि एवं केतु के स्थित होने से इस वर्ष विदेश व्यापार का सन्तुलन गड़बड़ा सकता है। महिलाओं को विभिन्न कारणों से कष्ट झेलना पड़ेगा। नवम भाव का अधिपति उच्च का होने से कानून व्यवस्था की स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। शिक्षा में सुधार के प्रयासों को इस वर्ष बल नहीं मिलेगा। दशमेश के शत्रु के घर में स्थित होने से इस वर्ष शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा।

शेष पृष्ठ २३२ पर

दैनिक स्पष्ट ग्रह

इस पंचांग में यहां नीचे सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु विकला पर्यन्त तथा हर्षल और नेपच्यून कला पर्यन्त दिये गये हैं। ये दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ बजकर ३० मिनट के हैं। प्रारंभ में सूर्य से पूर्व से साम्पादिक काल मध्य रात्रि १२ बजे का लगाया गया है। इन स्पष्ट ग्रहों के प्रत्येक स्थान के तात्कालिक स्पष्ट ग्रह जानने की विधि यह है जैसे भारत में कहीं भी किसी दिन स्टैण्डर्ड टाईम दिन के २ बजकर ४५ मिनट पर किसी व्यक्ति का जन्म या प्रश्न है तो प्रातः घण्टा ५, मिनट ३० से मध्यान्होत्तर घं. १४/४५ तक घटा ९/१५ हुए, यह घंटात्मक धन चालन हुआ। इस चालन को २॥ (ढाई) से गुणा करने पर २३।७।३० घटी, पल, विपलात्मक चालन बन गया। इस चालन के द्वारा दैनिक ग्रह गति को त्रैराशिक या गोमूत्रिका क्रम से गुणा कर दें, कलादिफल को मार्गी ग्रह में जोड़ने से तथा वक्री ग्रह में घटाने से तात्कालिक स्पष्ट राहु में ६ राशि जोड़ने पर केतु स्पष्ट हो जाता है अतएव यहां केतु अलग से नहीं लिखा है। इन दैनिक ग्रहों से गति जानने की विधि यह है कि जिस दिन गति स्पष्ट करनी है, उस दिन के राश्यादि ग्रह को अगले दिन के राश्यादि स्पष्ट ग्रह में से घटाने से जो शेष रहे वह उस दिन की गति होगी। यह चांद्र वर्ष ७ अप्रैल २००८ से प्रारंभ होकर २६ मार्च २००९ ई. को समाप्त हो रहा है जिसके दैनिक स्पष्ट ग्रह यहां नीचे दिये जा रहे हैं-

अप्रैल सन् २००८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।३०'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०७°।१०' (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
अप्रैल	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	अप्रैल
७	१३।०२।३३	११।२३।३४।४१	००।०५।११।५८	०२।१९।२८।३८	११।१३।५७।२३	०८।२६।४६।४१	११।०६।५८।२०	०४।०८।१७।३९	१०।०१।१३।४३	१०।२६।१७	९।२९।३८	७
८	१३।०६।३०	११।२४।३३।४२	००।२०।१०।४९	०२।१९।५६।३७	११।१५।५२।४९	०८।२६।५२।२३	११।०८।१२।२४	०४।०८।१५।०३	१०।०१।१०।३२	१०।२६।२०	९।२९।३९	८
९	१३।१०।२६	११।२५।३२।४०	०१।०५।१०।४८	०२।२०।२४।४७	११।१७।४९।३९	०८।२६।५७।५६	११।०९।२६।२८	०४।०८।१२।३२	१०।०१।०७।२२	१०।२६।२४	९।२९।४०	९
१०	१३।१४।२३	११।२६।३१।३७	०१।१९।५४।२७	०२।२०।५३।०७	११।१९।४७।५३	०८।२७।०३।१९	११।१०।४०।३१	०४।०८।१०।०७	१०।०१।०४।११	१०।२६।२७	९।२९।४२	१०
११	१३।१८।१९	११।२७।३०।३१	०२।०४।२४।२०	०२।२१।२१।३७	११।२१।४७।२९	०८।२७।०८।३२	११।११।५४।३३	०४।०८।०७।४८	१०।०१।०१।००	१०।२६।३०	९।२९।४३	११
१२	१३।२२।१६	११।२८।२९।२२	०२।१८।३३।४८	०२।२१।५०।१७	११।२३।४८।२३	०८।२७।१३।३५	११।१३।०८।३५	०४।०८।०५।३५	१०।००।५७।४९	१०।२६।३३	९।२९।४५	१२
१३	१३।२६।१२	११।२९।२८।१२	०३।०२।११।४२	०२।२२।१९।०७	११।२५।५०।३३	०८।२७।१८।२८	११।१४।२२।३६	०४।०८।०३।२७	१०।००।५४।३८	१०।२६।३६	९।२९।४६	१३
१४	१३।३०।०९	००।००।२६।५९	०३।१५।४८।५७	०२।२२।४८।०५	११।२७।५३।५३	०८।२७।२३।११	११।१५।३६।३७	०४।०८।०१।२५	१०।००।५१।२७	१०।२६।३९	९।२९।४७	१४
१५	१३।३४।०५	००।०१।२५।४४	०३।२८।५७।३८	०२।२३।१७।१३	११।२९।५८।१८	०८।२७।२७।४४	११।१६।५०।३७	०४।०७।५९।२९	१०।००।४८।१६	१०।२६।४२	९।२९।४८	१५
१६	१३।३८।०२	००।०२।२४।२६	०४।११।५०।२५	०२।२३।४६।२९	००।०२।०३।४२	०८।२७।३२।०७	११।१८।०४।३६	०४।०७।५७।४०	१०।००।४५।०६	१०।२६।४५	९।२९।५०	१६
१७	१३।४१।५९	००।०३।२३।०६	०४।२४।२९।५३	०२।२४।१५।५४	००।०४।०९।५५	०८।२७।३६।१९	११।१९।१८।३५	०४।०७।५५।५६	१०।००।४१।५५	१०।२६।४८	९।२९।५१	१७
१८	१३।४५।५५	००।०४।२१।४५	०५।०६।५८।२०	०२।२४।४५।२७	००।०६।१६।४६	०८।२७।४०।२२	११।२०।३२।३३	०४।०७।५४।१८	१०।००।३८।४४	१०।२६।५१	९।२९।५३	१८
१९	१३।४९।५२	००।०५।२०।२१	०५।१९।१७।३३	०२।२५।१५।०८	००।०८।२४।०३	०८।२७।४४।१४	११।२१।४६।३१	०४।०७।५२।४६	१०।००।३५।३४	१०।२६।५३	९।२९।५४	१९
२०	१३।५३।४८	००।०६।१८।५५	०६।०१।२८।५६	०२।२५।४४।५८	००।१०।३१।३४	०८।२७।४७।५५	११।२३।००।२८	०४।०७।५१।२१	१०।००।३२।२३	१०।२६।५६	९।२९।५५	२०
२१	१३।५७।४५	००।०७।१७।२७	०६।१३।३३।३४	०२।२६।१४।५५	००।१२।३९।०२	०८।२७।५१।२६	११।२४।१४।२५	०४।०७।५०।०१	१०।००।२९।१२	१०।२६।५९	९।२९।५६	२१
२२	१४।०१।४१	००।०८।१५।५८	०६।२५।३२।३१	०२।२६।४५।००	००।१४।४६।१२	०८।२७।५४।४६	११।२५।२८।२१	०४।०७।४८।४८	१०।००।२६।०२	१०।२७।०२	९।२९।५७	२२
२३	१४।०५।३८	००।०९।१४।२६	०७।०७।२७।०७	०२।२७।१५।१२	००।१६।५२।४६	०८।२७।५७।५६	११।२६।४२।१७	०४।०७।४७।४१	१०।००।२२।५१	१०।२७।०५	९।२९।५८	२३
२४	१४।०९।३४	००।१०।१२।५३	०७।१९।१९।०६	०२।२७।४५।३२	००।१८।५८।२५	०८।२८।००।५५	११।२७।५६।१३	०४।०७।४६।४०	१०।००।१९।४०	१०।२७।०७	९।२९।५९	२४
२५	१४।१३।३१	००।११।११।१८	०८।०१।१०।५४	०२।२८।१५।५९	००।२१।०२।५०	०८।२८।०३।४३	११।२९।१०।०८	०४।०७।४५।४५	१०।००।१६।२९	१०।२७।१०	१०।००।००	२५
२६	१४।१७।२८	००।१२।०९।४१	०८।१३।०५।३६	०२।२८।४६।३४	००।२३।०५।४२	०८।२८।०६।२१	००।००।२४।०३	०४।०७।४४।५७	१०।००।१३।१८	१०।२७।१३	१०।००।०१	२६
२७	१४।२१।२४	००।१३।०८।०३	०८।२५।०७।०९	०२।२९।१७।१५	००।२५।०६।४३	०८।२८।०८।४७	००।०१।३७।५८	०४।०७।४४।१५	१०।००।१०।०८	१०।२७।१५	१०।००।०२	२७
२८	१४।२५।२१	००।१४।०६।२३	०९।०७।१९।५१	०२।२९।४८।०४	००।२७।०५।३४	०८।२८।११।०२	००।०२।५१।५२	०४।०७।४३।३९	१०।००।०६।५७	१०।२७।१८	१०।००।०३	२८
२९	१४।२९।१७	००।१५।०४।४२	०९।१९।४९।००	०३।००।१८।५९	००।२९।०१।५९	०८।२८।१३।०७	००।०४।०५।४६	०४।०७।४३।०९	१०।००।०३।४६	१०।२७।२१	१०।००।०४	२९
३०	१४।३३।१४	००।१६।०२।५९	१०।०२।३९।१०	०३।००।५०।०२	०१।००।५५।४३	०८।२८।१५।००	००।०५।१९।४०	०४।०७।४२।४६	१०।००।००।३५	१०।२७।२३	१०।००।०५	३०

मई सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।३४'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०६°।५८'(वक्री)

ता. मई	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु (मध्यम) रा. अं. क. वि.	हर्षल घं. मि. सै.	नेपच्यून घं. मि. सै.	ता. मई
१	१४।३७।१०	००।१७।०१।१५	१०।१५।५४।५२	०३।०१।२१।११	०१।०२।४६।३२	०८।२८।१६।४२	००।०६।३३।३४	०४।०७।४२।२९	०९।२९।५७।२४	१०।२७।२६	१०।००।०६	१
२	१४।४१।०७	००।१७।५९।२९	१०।२९।३९।१०	०३।०१।५२।२६	०१।०४।३४।१३	०८।२८।१८।२३	००।०७।४७।२७	०४।०७।४२।१९	०९।२९।५४।१४	१०।२७।२८	१०।००।०७	२
३	१४।४५।०३	००।१८।५७।४२	११।१३।५२।५५	०३।०२।२३।४९	०१।०६।१८।३६	०८।२८।१९।३२	००।०९।०१।२०	०४।०७।४२।१५	०९।२९।५१।०३	१०।२७।३१	१०।००।०८	३
४	१४।४९।००	००।१९।५५।५३	११।२८।३३।४९	०३।०२।५५।१८	०१।०७।५९।३२	०८।२८।२०।४०	००।१०।१५।१२	०४।०७।४२।१७	०९।२९।४७।५२	१०।२७।३३	१०।००।०८	४
५	१४।५२।५७	००।२०।५४।०२	००।१३।३६।०१	०३।०३।२६।५३	०१।०९।३६।५१	०८।२८।२१।३७	००।११।२९।०४	०४।०७।४२।२६	०९।२९।४४।४२	१०।२७।३५	१०।००।०९	५
६	१४।५६।५३	००।२१।५२।१०	००।२८।५०।२१	०३।०३।५८।३४	०१।११।१०।२९	०८।२८।२२।२२	००।१२।४२।५६	०४।०७।४२।४१	०९।२९।४१।३१	१०।२७।३८	१०।००।१०	६
७	१५।००।५०	००।२२।५०।१६	०१।१४।०५।४६	०३।०४।३०।२२	०१।१२।४०।१८	०८।२८।२२।५६	००।१३।५६।४७	०४।०७।४३।०३	०९।२९।३८।२०	१०।२७।४०	१०।००।१०	७
८	१५।०४।४६	००।२३।४८।२१	०१।२९।११।१६	०३।०५।०२।१५	०१।१४।०६।१३	०८।२८।२३।१९	००।१५।१०।३८	०४।०७।४३।३१	०९।२९।३५।०९	१०।२७।४२	१०।००।११	८
९	१५।०८।४३	००।२४।४६।२३	०२।१३।५७।५३	०३।०५।३४।१५	०१।१५।२८।१०	व.०८।२८।२३।३०	००।१६।२४।२८	०४।०७।४४।०५	०९।२९।३१।५८	१०।२७।४४	१०।००।१२	९
१०	१५।१२।३९	००।२५।४४।२४	०२।२८।१९।५७	०३।०६।०६।२०	०१।१६।४६।०४	०८।२८।२३।३०	००।१७।३८।१८	०४।०७।४४।४६	०९।२९।२८।४७	१०।२७।४७	१०।००।१२	१०
११	१५।१६।३६	००।२६।४२।२३	०३।१२।२५।११	०३।०६।३८।३१	०१।१७।५९।५२	०८।२८।२३।१८	००।१८।५२।०७	०४।०७।४५।३३	०९।२९।२५।३६	१०।२७।४९	१०।००।१३	११
१२	१५।२०।३२	००।२७।४०।२०	०३।२५।४४।१५	०३।०७।१०।४७	०१।१९।०९।३०	०८।२८।२२।५६	००।२०।०५।५६	०४।०७।४६।२६	०९।२९।२२।२६	१०।२७।५१	१०।००।१३	१२
१३	१५।२४।२९	००।२८।३८।१५	०४।०८।४९।४५	०३।०७।४३।०९	०१।२०।१४।५४	०८।२८।२२।२२	००।२१।१९।४४	०४।०७।४७।२५	०९।२९।१९।१५	१०।२७।५३	१०।००।१४	१३
१४	१५।२८।२६	००।२९।३६।०८	०४।२१।३५।१९	०३।०८।१५।३५	०१।२१।१६।००	०८।२८।२१।३६	००।२२।३३।३२	०४।०७।४८।३१	०९।२९।१६।०४	१०।२७।५५	१०।००।१४	१४
१५	१५।३२।२२	०१।००।३४।००	०५।०४।०४।५३	०३।०८।४८।०७	०१।२२।१२।४४	०८।२८।२०।३९	००।२३।४७।१९	०४।०७।४९।४३	०९।२९।१२।५३	१०।२७।५७	१०।००।१४	१५
१६	१५।३६।१९	०१।०१।३१।५०	०५।१६।२२।०८	०३।०९।२०।४४	०१।२३।०५।०२	०८।२८।१९।३१	००।२५।०१।०५	०४।०७।५१।०२	०९।२९।०९।४३	१०।२७।५९	१०।००।१५	१६
१७	१५।४०।१५	०१।०२।२९।३८	०५।२८।३०।१७	०३।०९।५३।२६	०१।२३।५२।५२	०८।२८।१८।१२	००।२६।१४।५२	०४।०७।५२।२६	०९।२९।०६।३२	१०।२८।०१	१०।००।१५	१७
१८	१५।४४।१२	०१।०३।२७।२५	०६।१०।३१।५५	०३।१०।२६।१३	०१।२४।३६।०८	०८।२८।१६।४१	००।२७।२८।३८	०४।०७।५३।५७	०९।२९।०३।२१	१०।२८।०३	१०।००।१५	१८
१९	१५।४८।०८	०१।०४।२५।१०	०६।२२।२९।०१	०३।१०।५९।०४	०१।२५।१४।४७	०८।२८।१५।००	००।२८।४२।२३	०४।०७।५५।३३	०९।२९।००।११	१०।२८।०५	१०।००।१६	१९
२०	१५।५२।०५	०१।०५।२२।५४	०७।०४।२३।१०	०३।११।३२।०१	०१।२५।४८।४६	०८।२८।१३।०७	००।२९।५६।०९	०४।०७।५७।१६	०९।२८।५७।००	१०।२८।०६	१०।००।१६	२०
२१	१५।५६।०१	०१।०६।२०।३६	०७।१६।१५।४३	०३।१२।०५।०१	०१।२६।१८।०२	०८।२८।११।०३	०१।०१।०९।५४	०४।०७।५९।०५	०९।२८।५३।४९	१०।२८।०८	१०।००।१६	२१
२२	१५।५९।५८	०१।०७।१८।१७	०७।२८।०८।०५	०३।१२।३८।०७	०१।२६।४२।३२	०८।२८।०८।४९	०१।०२।२३।३८	०४।०८।०१।००	०९।२८।५०।३८	१०।२८।१०	१०।००।१६	२२
२३	१६।०३।५५	०१।०८।१५।५७	०८।१०।०२।०१	०३।१३।११।१७	०१।२७।०२।१५	०८।२८।०६।२३	०१।०३।३७।२३	०४।०८।०३।०१	०९।२८।४७।२७	१०।२८।११	१०।००।१६	२३
२४	१६।०७।५१	०१।०९।१३।३५	०८।२२।१५।४३	०३।१३।४४।३१	०१।२७।१७।१०	०८।२८।०३।४६	०१।०४।५१।०८	०४।०८।०५।०८	०९।२८।४४।१६	१०।२८।१३	१०।००।१७	२४
२५	१६।११।४८	०१।१०।११।१३	०९।०४।०४।०६	०३।१४।१७।५०	०१।२७।२७।१९	०८।२८।००।५९	०१।०६।०४।५२	०४।०८।०७।२०	०९।२८।४१।०५	१०।२८।१५	१०।००।१७	२५
२६	१६।१५।४४	०१।११।०८।५०	०९।१६।१८।४२	०३।१४।५१।१४	व.०१।२७।३२।४२	०८।२७।५८।०१	०१।०७।१८।३६	०४।०८।०९।३९	०९।२८।३७।५५	१०।२८।१६	व.१०।००।१७	२६
२७	१६।१९।४१	०१।१२।०६।२५	०९।२८।४७।४०	०३।१५।२४।४२	०१।२७।३३।२६	०८।२७।५४।५२	०१।०८।३२।२०	०४।०८।१२।०३	०९।२८।३४।४४	१०।२८।१८	१०।००।१७	२७
२८	१६।२३।३७	०१।१३।०४।००	१०।११।३५।२७	०३।१५।५८।१४	०१।२७।२९।३७	०८।२७।५१।३३	०१।०९।४६।०४	०४।०८।१४।३४	०९।२८।३१।३३	१०।२८।१९	१०।००।१७	२८
२९	१६।२७।३४	०१।१४।०१।३४	१०।२४।४६।२३	०३।१६।३१।५०	०१।२७।२१।२२	०८।२७।४८।०३	०१।११।००।४९	०४।०८।१७।१०	०९।२८।२८।२२	१०।२८।२०	१०।००।१७	२९
३०	१६।३१।३०	०१।१४।५९।०७	११।०८।२३।५९	०३।१७।०५।३१	०१।२७।०८।४४	०८।२७।४४।२३	०१।१२।१४।३३	०४।०८।१९।५२	०९।२८।२५।१२	१०।२८।२२	१०।००।१६	३०
३१	१६।३५।२७	०१।१५।५६।३९	११।२२।३०।०४	०३।१७।३९।१७	०१।२६।५१।३०	०८।२७।४०।३२	०१।१३।२८।१७	०४।०८।२२।३९	०९।२८।२२।०१	१०।२८।२३	१०।००।१६	३१

जून सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह।

जून सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।३९'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०६°।२१'(वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून (वक्री)	ता.
जून	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	जून
१	१६।३९।२४	०१।१६।५४।११	००।०७।०३।५२	०३।१८।१३।०६	०१।२६।३२।२५	०८।२७।३६।३१	०१।१४।४१।०१	०४।०८।२५।३३	०९।२८।१८।५०	१०।२८।२४	१०।००।१६	१
२	१६।४३।२०	०१।१७।५१।४१	००।२२।०१।०८	०३।१८।४७।००	०१।२६।०९।००	०८।२७।३२।२०	०१।१५।५४।४६	०४।०८।२८।३२	०९।२८।१५।३९	१०।२८।२६	१०।००।१६	२
३	१६।४७।१७	०१।१८।४९।११	०१।०७।१४।०८	०३।१९।२०।५८	०१।२५।४२।४०	०८।२७।२८।००	०१।१७।०८।३०	०४।०८।३१।३६	०९।२८।१२।२८	१०।२८।२७	१०।००।१६	३
४	१६।५१।१३	०१।१९।४६।४०	०१।२२।३२।२८	०३।१९।५५।०१	०१।२५।१३।५०	०८।२७।२३।२९	०१।१८।२२।१४	०४।०८।३४।४६	०९।२८।०९।१७	१०।२८।२८	१०।००।१६	४
५	१६।५५।१०	०१।२०।४४।०७	०२।०७।४४।४५	०३।२०।२९।०७	०१।२४।४३।०१	०८।२७।१८।४९	०१।१९।३५।५८	०४।०८।३८।०२	०९।२८।०६।०६	१०।२८।२९	१०।००।१५	५
६	१६।५९।०६	०१।२१।४१।३४	०२।२२।४०।४७	०३।२१।०३।१८	०१।२४।१०।४४	०८।२७।१४।००	०१।२०।४९।४१	०४।०८।४१।२३	०९।२८।०२।५६	१०।२८।३०	१०।००।१५	६
७	१७।०३।०३	०१।२२।३९।००	०३।०७।१३।०५	०३।२१।३७।३२	०१।२३।३७।३२	०८।२७।०९।०१	०१।२२।०३।२५	०४।०८।४४।५०	०९।२७।५९।४५	१०।२८।३१	१०।००।१५	७
८	१७।०७।००	०१।२३।३६।२५	०३।२२।१७।४३	०३।२२।११।५०	०१।२३।०३।५९	०८।२७।०३।५४	०१।२३।१७।०८	०४।०८।४८।२२	०९।२७।५६।३४	१०।२८।३२	१०।००।१४	८
९	१७।१०।५६	०१।२४।३३।३८	०४।०४।५३।५८	०३।२२।४६।१३	०१।२२।३०।३९	०८।२६।५८।३७	०१।२४।३०।५२	०४।०८।५१।५९	०९।२७।५३।२३	१०।२८।३३	१०।००।१४	९
१०	१७।१४।५३	०१।२५।३१।११	०४।१८।०३।४२	०३।२३।२०।३८	०१।२१।५८।०८	०८।२६।५३।१२	०१।२५।४४।३६	०४।०८।५५।४१	०९।२७।५०।१२	१०।२८।३४	१०।००।१३	१०
११	१७।१८।४९	०१।२६।२८।३२	०५।००।५०।२३	०३।२३।५५।०८	०१।२१।२६।५७	०८।२६।४७।३९	०१।२६।५८।१९	०४।०८।५९।२९	०९।२७।४७।०२	१०।२८।३५	१०।००।१३	११
१२	१७।२२।४६	०१।२७।२५।५२	०५।१३।१८।२५	०३।२४।२९।४१	०१।२०।५७।४०	०८।२६।४१।५८	०१।२८।१२।०२	०४।०९।०३।२१	०९।२७।४३।५१	१०।२८।३५	१०।००।१२	१२
१३	१७।२६।४२	०१।२८।२३।१२	०५।२५।३१।४३	०३।२५।०४।१८	०१।२०।३०।४५	०८।२६।३६।०८	०१।२९।२५।४४	०४।०९।०७।१९	०९।२७।४०।४०	१०।२८।३६	१०।००।१२	१३
१४	१७।३०।३९	०१।२९।२०।३०	०६।०७।३४।५७	०३।२५।३८।५८	०१।२०।०६।४०	०८।२६।३०।११	०२।००।३९।२७	०४।०९।११।२२	०९।२७।३७।२९	१०।२८।३७	१०।००।११	१४
१५	१७।३४।३५	०२।००।१७।४८	०६।१९।३१।३६	०३।२६।१३।४१	०१।१९।४५।४९	०८।२६।२४।०६	०२।०१।५३।०९	०४।०९।१५।३०	०९।२७।३४।१९	१०।२८।३७	१०।००।११	१५
१६	१७।३८।३२	०२।०१।१५।०५	०७।०१।२४।४४	०३।२६।४८।२८	०१।१९।२८।३२	०८।२६।१७।५४	०२।०३।०६।५१	०४।०९।१९।४२	०९।२७।३१।०८	१०।२८।३८	१०।००।१०	१६
१७	१७।४२।२९	०२।०२।१२।२१	०७।१३।१६।४७	०३।२७।२३।१९	०१।१९।१५।०८	०८।२६।११।३६	०२।०४।२०।३४	०४।०९।२४।००	०९।२७।२७।५७	१०।२८।३८	१०।००।०९	१७
१८	१७।४६।२५	०२।०३।०९।३६	०७।२५।०९।४८	०३।२७।५८।१३	०१।१९।०५।५१	०८।२६।०५।१०	०२।०५।३४।१६	०४।०९।२८।२२	०९।२७।२४।४६	१०।२८।३९	१०।००।०९	१८
१९	१७।५०।२२	०२।०४।०६।५१	०८।०७।०५।१९	०३।२८।३३।१०	मा.०१।१९।००।५४	०८।२५।५८।३८	०२।०६।४७।५८	०४।०९।३२।४९	०९।२७।२१।३५	१०।२८।३९	१०।००।०८	१९
२०	१७।५४।१८	०२।०५।०४।०६	०८।१९।०४।५९	०३।२९।०८।१०	०१।१९।००।२५	०८।२५।५१।५९	०२।०८।०१।४०	०४।०९।३७।२१	०९।२७।१८।२४	१०।२८।३९	१०।००।०७	२०
२१	१७।५८।१५	०२।०६।०१।१९	०९।०१।१०।२५	०३।२९।४३।१४	०१।१९।०४।३२	०८।२५।४५।१४	०२।०९।१५।२३	०४।०९।४१।५७	०९।२७।१५।१३	१०।२८।४०	१०।००।०६	२१
२२	१८।०२।११	०२।०६।५८।३३	०९।१३।२३।३४	०४।००।१८।२१	०१।१९।१३।२८	०८।२५।३८।२४	०२।१०।२९।०५	०४।०९।४६।३८	०९।२७।१२।०२	१०।२८।४०	१०।००।०६	२२
२३	१८।०६।०८	०२।०७।५५।४७	०९।२५।४६।५०	०४।००।५३।३२	०१।१९।२६।४७	०८।२५।३१।२८	०२।११।४२।४८	०४।०९।५१।२४	०९।२७।०८।५२	१०।२८।४०	१०।००।०५	२३
२४	१८।१०।०४	०२।०८।५३।००	१०।०८।२३।०३	०४।०१।२८।४६	०१।१९।४४।५८	०८।२५।२४।२७	०२।१२।५६।३१	०४।०९।५६।१३	०९।२७।०५।४१	१०।२८।४०	१०।००।०४	२४
२५	१८।१४।०१	०२।०९।५०।१३	१०।२१।१५।२२	०४।०२।०४।०३	०१।२०।०७।५२	०८।२५।१७।२१	०२।१४।१०।१४	०४।१०।०१।०८	०९।२७।०२।३०	१०।२८।४१	१०।००।०३	२५
२६	१८।१७।५८	०२।१०।४७।२६	११।०४।२७।००	०४।०२।३९।२४	०१।२०।३५।२७	०८।२५।१०।१०	०२।१५।२३।५७	०४।१०।०६।०६	०९।२६।५९।१९	१०।२८।४१	१०।००।०२	२६
२७	१८।२१।५४	०२।११।४४।३९	११।१८।००।४५	०४।०३।१४।४८	०१।२१।०७।४१	०८।२५।०२।५४	०२।१६।३६।४१	०४।१०।११।०९	०९।२६।५६।०९	व.१०।२८।४१	१०।००।०१	२७
२८	१८।२५।५१	०२।१२।४१।५२	००।०१।५८।१७	०४।०३।५०।१५	०१।२१।४४।३१	०८।२४।५५।३५	०२।१७।५१।२५	०४।१०।१६।१७	०९।२६।५२।५८	१०।२८।४१	१०।००।००	२८
२९	१८।२९।४७	०२।१३।३९।०६	००।१६।१९।२८	०४।०४।२५।४६	०१।२२।२५।५३	०८।२४।४८।११	०२।१९।०५।०९	०४।१०।२१।२८	०९।२६।४९।४७	१०।२८।४१	०९।२९।५८	२९
३०	१८।३३।४४	०२।१४।३६।१९	०१।०१।०१।३६	०४।०५।०१।२०	०१।२३।११।४५	०८।२४।४०।४४	०२।२०।१८।५४	०४।१०।२६।४४	०९।२६।४६।३६	१०।२८।४०	०९।२९।५८	३०

जुलाई सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।४४'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०५°।३५' (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
जुलाई	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	जुलाई
१	१८|३७|४०	०२|१५|३३|३२	०१|१५|५९|१०	०४|०५|३६|५७	०१|२४|०२|०३	०८|२४|३३|१४	०२|२१|३२|३८	०४|१०|३२|०३	०९|२६|४३|२५	१०|२८|४०	९|२९|५७	१
२	१८|४१|३७	०२|१६|३०|४६	०२|०१|०४|१०	०४|०६|१२|३८	०१|२४|५६|४२	०८|२४|२५|४१	०२|२२|४६|२३	०४|१०|३७|२७	०९|२६|४०|१४	१०|२८|४०	९|२९|५६	२
३	१८|४५|३३	०२|१७|२७|५९	०२|१६|०७|०७	०४|०६|४८|२३	०१|२५|५५|४०	०८|२४|१८|०६	०२|२४|००|०८	०४|१०|४२|५५	०९|२६|३७|०३	१०|२८|४०	९|२९|५५	३
४	१८|४९|३०	०२|१८|२५|१३	०३|००|५८|४३	०४|०७|२४|१०	०१|२६|५८|५३	०८|२४|१०|२८	०२|२५|१३|५४	०४|१०|४८|२७	०९|२६|३३|५२	१०|२८|३९	९|२९|५४	४
५	१८|५३|२७	०२|१९|२२|२६	०३|१५|३१|१०	०४|०८|००|०१	०१|२८|०६|१८	०८|२४|०२|४१	०२|२६|२७|३९	०४|१०|५४|०२	०९|२६|३०|४२	१०|२८|३९	९|२९|५३	५
६	१८|५७|२३	०२|२०|१९|३९	०३|२९|३९|१९	०४|०८|३५|५५	०१|२९|१७|५१	०८|२३|५५|०८	०२|२७|४१|२४	०४|१०|५९|४२	०९|२६|२७|३१	१०|२८|३९	९|२९|५२	६
७	१९|०१|२०	०२|२१|१६|५२	०४|१३|२०|५२	०४|०९|११|५२	०२|००|३३|२८	०८|२३|४७|२६	०२|२८|५५|१०	०४|११|०५|२५	०९|२६|२४|२०	१०|२८|३८	९|२९|५१	७
८	१९|०५|१६	०२|२२|१४|०५	०४|२६|३६|०७	०४|०९|४७|५३	०२|०१|५३|०८	०८|२३|३९|४२	०३|००|०८|५५	०४|११|११|११	०९|२६|२१|०९	१०|२८|३८	९|२९|४९	८
९	१९|०९|१३	०२|२३|११|१८	०५|०९|२७|२१	०४|१०|२३|५६	०२|०३|१६|४५	०८|२३|३१|५७	०३|०१|२२|४०	०४|११|१७|०२	०९|२६|१७|५९	१०|२८|३७	९|२९|४८	९
१०	१९|१३|०९	०२|२४|०८|३०	०५|२१|५८|०९	०४|११|००|०२	०२|०४|४४|१७	०८|२३|२४|१८	०३|०२|३६|२६	०४|११|२२|५६	०९|२६|१४|४८	१०|२८|३७	९|२९|४७	१०
११	१९|१७|०६	०२|२५|०५|४३	०६|०४|१२|४७	०४|११|३६|१२	०२|०६|१५|३९	०८|२३|१६|३४	०३|०३|५०|११	०४|११|२८|५३	०९|२६|११|३७	१०|२८|३६	९|२९|४६	११
१२	१९|२१|०२	०२|२६|०२|५५	०६|१६|१५|४५	०४|१२|१२|२४	०२|०७|५०|४६	०८|२३|०८|५१	०३|०५|०३|५६	०४|११|३४|५४	०९|२६|०८|२६	१०|२८|३५	९|२९|४४	१२
१३	१९|२४|५९	०२|२७|००|०८	०६|२८|११|२२	०४|१२|४८|३९	०२|०९|२९|३१	०८|२३|०१|०९	०३|०६|१७|४१	०४|११|४०|५८	०९|२६|०५|१६	१०|२८|३४	९|२९|४३	१३
१४	१९|२८|५६	०२|२७|५७|२०	०७|१०|०३|४०	०४|१३|२४|५७	०२|११|११|४८	०८|२२|५३|२९	०३|०७|३१|२६	०४|११|४७|०५	०९|२६|०२|०५	१०|२८|३४	९|२९|४२	१४
१५	१९|३२|५२	०२|२८|५४|३३	०७|२१|५६|०६	०४|१४|०१|१९	०२|१२|५७|२९	०८|२२|४५|५०	०३|०८|४५|११	०४|११|५३|१५	०९|२५|५८|५४	१०|२८|३३	९|२९|४१	१५
१६	१९|३६|४९	०२|२९|५१|४५	०८|०३|५१|३७	०४|१४|३७|४३	०२|१४|४६|२३	०८|२२|३८|१२	०३|०९|५८|५६	०४|११|५९|२९	०९|२५|५५|४३	१०|२८|३२	९|२९|३९	१६
१७	१९|४०|४५	०३|००|४८|५८	०८|१५|५२|३८	०४|१५|१४|१०	०२|१६|३८|१९	०८|२२|३०|३७	०३|११|१२|४१	०४|१२|०५|४६	०९|२५|५२|३२	१०|२८|३१	९|२९|३८	१७
१८	१९|४४|४२	०३|०१|४६|१२	०८|२८|०१|०२	०४|१५|५०|४०	०२|१८|३३|०४	०८|२२|२३|०५	०३|१२|२६|२६	०४|१२|१२|०५	०९|२५|४९|२१	१०|२८|३०	९|२९|३६	१८
१९	१९|४८|३८	०३|०२|४३|२५	०९|१०|१८|२४	०४|१६|२७|१३	०२|२०|३०|२३	०८|२२|१५|३५	०३|१३|४०|११	०४|१२|१८|२८	०९|२५|४६|१०	१०|२८|२९	९|२९|३५	१९
२०	१९|५२|३५	०३|०३|४०|४०	०९|२२|४६|०५	०४|१७|०३|४८	०२|२२|३०|००	०८|२२|०८|०८	०३|१४|५३|५६	०४|१२|२४|५४	०९|२५|४३|००	१०|२८|२८	९|२९|३४	२०
२१	१९|५६|३२	०३|०४|३७|५४	१०|०५|२५|१८	०४|१७|४०|२७	०२|२४|३१|३८	०८|२२|००|४५	०३|१६|०७|४१	०४|१२|३१|२२	०९|२५|३९|४९	१०|२८|२७	९|२९|३२	२१
२२	२०|००|२८	०३|०५|३५|१०	१०|१८|१७|२०	०४|१८|१७|०९	०२|२६|३४|५७	०८|२१|५३|२५	०३|१७|२१|२६	०४|१२|३७|५३	०९|२५|३६|३८	१०|२८|२६	९|२९|३१	२२
२३	२०|०४|२५	०३|०६|३२|२६	११|०१|२३|३०	०४|१८|५३|५४	०२|२८|३९|३८	०८|२१|४६|०९	०३|१८|३५|११	०४|१२|४४|२७	०९|२५|३३|२७	१०|२८|२५	९|२९|२९	२३
२४	२०|०८|२१	०३|०७|२९|४३	११|१४|४५|०३	०४|१९|३०|४२	०३|००|४५|२२	०८|२१|३८|५७	०३|१९|४८|५७	०४|१२|५१|०४	०९|२५|३०|१७	१०|२८|२४	९|२९|२८	२४
२५	२०|१२|१८	०३|०८|२७|०१	११|२८|२३|००	०४|२०|०७|३२	०३|०२|५१|५०	०८|२१|३१|५०	०३|२१|०२|४२	०४|१२|५७|४३	०९|२५|२७|०६	१०|२८|२२	९|२९|२६	२५
२६	२०|१६|१४	०३|०९|२४|२०	००|१२|१७|४६	०४|२०|४४|२६	०३|०४|५८|४३	०८|२१|२४|४८	०३|२२|१६|२८	०४|१३|०४|२५	०९|२५|२३|५५	१०|२८|२१	९|२९|२५	२६
२७	२०|२०|११	०३|१०|२१|४०	००|२६|२८|४६	०४|२१|२१|२३	०३|०७|०५|४४	०८|२१|१७|५१	०३|२३|३०|१३	०४|१३|११|०९	०९|२५|२०|४४	१०|२८|२०	९|२९|२३	२७
२८	२०|२४|०७	०३|११|१९|०१	०१|१०|५४|०२	०४|२१|५८|२४	०३|०९|१२|३६	०८|२१|११|००	०३|२४|४३|५९	०४|१३|१७|५६	०९|२५|१७|३३	१०|२८|१८	९|२९|२२	२८
२९	२०|२८|०४	०३|१२|१६|२२	०१|२५|३०|००	०४|२२|३५|२७	०३|११|१९|०४	०८|२१|०४|१४	०३|२५|५७|४५	०४|१३|२४|४६	०९|२५|१४|२३	१०|२८|१७	९|२९|२०	२९
३०	२०|३२|०१	०३|१३|१३|४५	०२|१०|११|३०	०४|२३|१२|३३	०३|१३|२४|५५	०८|२०|५७|३४	०३|२७|११|३१	०४|१३|३१|३७	०९|२५|११|१२	१०|२८|१६	९|२९|१९	३०
३१	२०|३५|५७	०३|१४|११|०९	०२|२४|५२|१३	०४|२३|४९|४३	०३|१५|२९|५७	०८|२०|५१|००	०३|२८|२५|१७	०४|१३|३८|३१	०९|२५|०८|०१	१०|२८|१४	९|२९|१७	३१

अगस्त सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।४८'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०४°।५३' (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
अगस्त	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	अगस्त
१	२०।३९।५४	०३।१५।०८।३४	०३।०९।२५।२६	०४।२४।२६।५६	०३।१७।३४।०१	०८।२०।४४।३४	०३।२९।३९।०३	०४।१३।४५।२७	०९।२५।०४।५०	१०।२८।१२	९।२९।२५	१
२	२०।४३।५०	०३।१६।०६।००	०३।२३।४४।५६	०४।२५।०४।११	०३।१९।३६।५९	०८।२०।३८।१३	०४।००।५२।४९	०४।१३।५२।२६	०९।२५।०१।३९	१०।२८।११	९।२९।२४	२
३	२०।४७।४७	०३।१७।०३।२६	०४।०७।४५।४५	०४।२५।४१।३०	०३।२१।३८।४३	०८।२०।३२।०१	०४।०२।०६।३५	०४।१३।५९।२६	०९।२४।५८।२८	१०।२८।०९	९।२९।२२	३
४	२०।५१।४३	०३।१८।००।५३	०४।२१।२४।४५	०४।२६।१८।५२	०३।२३।३९।०८	०८।२०।२५।५५	०४।०३।२०।२१	०४।१४।०६।२९	०९।२४।५५।१८	१०।२८।०८	९।२९।११	४
५	२०।५५।४०	०३।१८।५८।२२	०५।०४।४०।४६	०४।२६।५६।१७	०३।२५।३८।११	०८।२०।१९।५७	०४।०४।३४।०७	०४।१४।१३।३३	०९।२४।५२।०७	१०।२८।०६	९।२९।०९	५
६	२०।५९।३६	०३।१९।५५।५०	०५।१७।३४।२९	०४।२७।३३।४५	०३।२७।३५।४७	०८।२०।१४।०७	०४।०५।४७।५२	०४।१४।२०।३९	०९।२४।४८।५६	१०।२८।०४	९।२९।०८	६
७	२१।०३।३३	०३।२०।५३।२०	०६।००।०८।१०	०४।२८।११।१५	०३।२९।३१।५५	०८।२०।०८।२६	०४।०७।०१।३७	०४।१४।२७।४७	०९।२४।४५।४६	१०।२८।०२	९।२९।०६	७
८	२१।०७।३०	०३।२१।५०।५०	०६।१२।२५।१०	०४।२८।४८।४९	०४।०१।२६।३२	०८।२०।०२।५२	०४।०८।१५।२२	०४।१४।३४।५७	०९।२४।४२।३५	१०।२८।०१	९।२९।०४	८
९	२१।११।२६	०३।२२।४८।२२	०६।२४।२९।३३	०४।२९।२६।२६	०४।०३।१९।३९	०८।१९।५७।२७	०४।०९।२९।०६	०४।१४।४२।०८	०९।२४।३९।२४	१०।२७।५९	९।२९।०३	९
१०	२१।१५।२३	०३।२३।४५।५४	०७।०६।२५।४९	०५।००।०४।०५	०४।०५।११।१४	०८।१९।५२।११	०४।१०।४२।५०	०४।१४।४९।११	०९।२४।३६।१३	१०।२७।५७	९।२९।०१	१०
११	२१।१९।१९	०३।२४।४३।२६	०७।१८।१८।३०	०५।००।४१।४७	०४।०७।०१।१८	०८।१९।४७।०४	०४।११।५६।३४	०४।१४।५६।३६	०९।२४।३३।०२	१०।२७।५५	९।२८।५९	११
१२	२१।२३।१६	०३।२५।४१।००	०८।००।११।५६	०५।०१।१९।३३	०४।०८।४९।५०	०८।१९।४२।०५	०४।१३।१०।१७	०४।१५।०३।५२	०९।२४।२९।५२	१०।२७।५३	९।२८।५८	१२
१३	२१।२७।१२	०३।२६।३८।३५	०८।१२।२१।१०	०५।०१।५७।११	०४।१०।३६।५२	०८।१९।३७।१७	०४।१४।२३।५९	०४।१५।११।१०	०९।२४।२६।४१	१०।२७।५१	९।२८।५६	१३
१४	२१।३१।०९	०३।२७।३६।११	०८।२४।१६।४०	०५।०२।३५।१२	०४।१२।२२।२३	०८।१९।३२।३७	०४।१५।३७।४२	०४।१५।१८।२८	०९।२४।२३।३०	१०।२७।४९	९।२८।५४	१४
१५	२१।३५।०५	०३।२८।३३।४७	०९।०६।३४।१५	०५।०३।१३।०५	०४।१४।०६।२५	०८।१९।२८।०७	०४।१६।५१।२३	०४।१५।२५।४९	०९।२४।२०।१९	१०।२७।४७	९।२८।५३	१५
१६	२१।३९।०२	०३।२९।३१।२५	०९।१९।०५।०१	०५।०३।५१।०२	०४।१५।४८।५८	०८।१९।२३।४७	०४।१८।०५।०५	०४।१५।३३।१०	०९।२४।१७।०८	१०।२७।४५	९।२८।५१	१६
१७	२१।४२।५९	०४।००।२९।०५	१०।०१।५०।१५	०५।०४।२९।०२	०४।१७।३०।०४	०८।१९।१९।३७	०४।१९।१८।४६	०४।१५।४०।३३	०९।२४।१३।५७	१०।२७।४३	९।२८।५०	१७
१८	२१।४६।५५	०४।०१।२६।४५	१०।१४।५०।२८	०५।०५।०७।०४	०४।१९।०९।४२	०८।१९।१५।३६	०४।२०।३२।२६	०४।१५।४७।५६	०९।२४।१०।४७	१०।२७।४१	९।२८।४८	१८
१९	२१।५०।५२	०४।०२।२४।२७	१०।२८।०५।२५	०५।०५।४५।१०	०४।२०।४७।५३	०८।१९।११।४६	०४।२१।४६।०६	०४।१५।५५।२१	०९।२४।०७।३६	१०।२७।३९	९।२८।४६	१९
२०	२१।५४।४८	०४।०३।२२।१०	११।११।३४।१८	०५।०६।२३।१८	०४।२२।२४।३९	०८।१९।०८।०६	०४।२२।५९।४६	०४।१६।०२।४७	०९।२४।०४।२५	१०।२७।३७	९।२८।४५	२०
२१	२१।५८।४५	०४।०४।१९।५५	११।२५।२५।४९	०५।०७।०१।३०	०४।२३।५९।५९	०८।१९।०४।३७	०४।२४।१३।२५	०४।१६।१०।१४	०९।२४।०१।१५	१०।२७।३५	९।२८।४३	२१
२२	२२।०२।४१	०४।०५।१७।४२	००।०९।०८।२२	०५।०७।३९।४४	०४।२५।२३।५३	०८।१९।०१।१७	०४।२५।२७।०४	०४।१६।१७।४१	०९।२३।५८।०४	१०।२७।३३	९।२८।४१	२२
२३	२२।०६।३८	०४।०६।१५।३०	००।२३।१०।०८	०५।०८।१८।०२	०४।२७।०६।२३	०८।१८।५८।०१	०४।२६।४०।४३	०४।१६।२५।१०	०९।२३।५४।५३	१०।२७।३१	९।२८।४०	२३
२४	२२।१०।३४	०४।०७।१३।१०	०१।०७।१९।१०	०५।०८।५६।२३	०४।२८।३७।२८	०८।१८।५५।११	०४।२७।५४।२१	०४।१६।३२।३९	०९।२३।५१।४३	१०।२७।२८	९।२८।३८	२४
२५	२२।१४।३१	०४।०८।११।१२	०१।२१।३३।१९	०५।०९।३४।४७	०५।००।०७।०७	०८।१८।५२।१४	०४।२९।०७।५९	०४।१६।४०।१०	०९।२३।४८।३२	१०।२७।२६	९।२८।३७	२५
२६	२२।१८।२८	०४।०९।०९।०५	०२।०५।५०।०९	०५।१०।१३।१४	०५।०१।३५।२१	०८।१८।४९।४८	०५।००।२१।३७	०४।१६।४७।४०	०९।२३।४५।२१	१०।२७।२४	९।२८।३५	२६
२७	२२।२२।२४	०४।१०।०७।००	०२।२०।०६।५४	०५।१०।५१।४४	०५।०३।०२।०८	०८।१८।४७।२३	०५।०१।३५।१४	०४।१६।५५।१२	०९।२३।४२।१०	१०।२७।२१	९।२८।३३	२७
२८	२२।२६।२१	०४।११।०४।५८	०३।०४।२०।१४	०५।११।३०।१८	०५।०४।२७।२८	०८।१८।४५।०१	०५।०२।४८।५१	०४।१७।०२।४४	०९।२३।३८।५९	१०।२७।२०	९।२८।३२	२८
२९	२२।३०।१७	०४।१२।०२।५७	०३।१८।२७।०१	०५।१२।०८।५५	०५।०५।५१।१९	०८।१८।४३।०६	०५।०४।०२।२८	०४।१७।१०।१६	०९।२३।३५।४८	१०।२७।१७	९।२८।३०	२९
३०	२२।३४।१४	०४।१३।००।५७	०४।०२।२३।३७	०५।१२।४७।३४	०५।०७।१३।४०	०८।१८।४१।१४	०५।०५।१६।०४	०४।१७।१७।४९	०९।२३।३२।३७	१०।२७।१५	९।२८।२९	३०
३१	२२।३८।१०	०४।१३।५८।५९	०४।१६।०६।२९	०५।१३।२६।१७	०५।०८।३४।२९	०८।१८।३९।३४	०५।०६।२९।४०	०४।१७।२५।२२	०९।२३।२९।२७	१०।२७।१३	९।२८।२७	३१

जुलाई सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।४४'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०५°।३५' (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
जुलाई	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	जुलाई
१	१८।३७।४०	०२।१५।३३।३२	०१।१५।५९।१०	०४।०५।३६।५७	०१।२४।०२।०३	०८।२४।३३।१४	०२।२१।३२।३८	०४।१०।३२।०३	०९।२६।४३।२५	१०।२८।४०	९।२९।५७	१
२	१८।४१।३७	०२।१६।३०।४६	०२।०१।०४।१०	०४।०६।१२।३८	०१।२४।५६।४२	०८।२४।२५।४१	०२।२२।४६।२३	०४।१०।३७।२७	०९।२६।४०।१४	१०।२८।४०	९।२९।५६	२
३	१८।४५।३३	०२।१७।२७।५९	०२।१६।०७।०७	०४।०६।४८।२३	०१।२५।५५।४०	०८।२४।१८।०६	०२।२४।००।०८	०४।१०।४२।५५	०९।२६।३७।०३	१०।२८।४०	९।२९।५५	३
४	१८।४९।३०	०२।१८।२५।१३	०३।००।५८।४३	०४।०७।२४।१०	०१।२६।५८।५३	०८।२४।१०।२८	०२।२५।१३।५४	०४।१०।४८।२७	०९।२६।३३।५२	१०।२८।३९	९।२९।५४	४
५	१८।५३।२७	०२।१९।२२।२६	०३।१५।३१।१०	०४।०८।००।०१	०१।२८।०६।१८	०८।२४।०२।४९	०२।२६।२७।३९	०४।१०।५४।०२	०९।२६।३०।४२	१०।२८।३९	९।२९।५३	५
६	१८।५७।२३	०२।२०।१९।३९	०३।२९।३९।१९	०४।०८।३५।५५	०१।२९।१७।५१	०८।२३।५५।०८	०२।२७।४१।२४	०४।१०।५९।४२	०९।२६।२७।३१	१०।२८।३९	९।२९।५२	६
७	१९।०१।२०	०२।२१।१६।५२	०४।१३।२०।५२	०४।०९।११।५२	०२।००।३३।२८	०८।२३।४७।२६	०२।२८।५५।१०	०४।११।०५।२५	०९।२६।२४।२०	१०।२८।३८	९।२९।५१	७
८	१९।०५।१६	०२।२२।१४।०५	०४।२६।३६।०७	०४।०९।४७।५३	०२।०१।५३।०८	०८।२३।३९।४२	०३।००।०८।५५	०४।११।११।११	०९।२६।२१।०९	१०।२८।३८	९।२९।४९	८
९	१९।०९।१३	०२।२३।११।१८	०५।०९।२७।२१	०४।१०।२३।५६	०२।०३।१६।४५	०८।२३।३१।५७	०३।०१।२२।४०	०४।११।१७।०२	०९।२६।१७।५९	१०।२८।३७	९।२९।४८	९
१०	१९।१३।०९	०२।२४।०८।३०	०५।२१।५८।०९	०४।११।००।०२	०२।०४।४४।१७	०८।२३।२४।१८	०३।०२।३६।२६	०४।११।२२।५६	०९।२६।१४।४८	१०।२८।३७	९।२९।४७	१०
११	१९।१७।०६	०२।२५।०५।४३	०६।०४।१२।४७	०४।११।३६।१२	०२।०६।१५।३९	०८।२३।१६।३४	०३।०३।५०।११	०४।११।२८।५३	०९।२६।११।३७	१०।२८।३६	९।२९।४६	११
१२	१९।२१।०२	०२।२६।०२।५५	०६।१६।१५।४५	०४।१२।१२।२४	०२।०७।५०।४६	०८।२३।०८।५१	०३।०५।०३।५६	०४।११।३४।५४	०९।२६।०८।२६	१०।२८।३५	९।२९।४४	१२
१३	१९।२४।५९	०२।२७।००।०८	०६।२८।११।२२	०४।१२।४८।३९	०२।०९।२९।३१	०८।२३।०१।०९	०३।०६।१७।४१	०४।११।४०।५८	०९।२६।०५।१६	१०।२८।३४	९।२९।४३	१३
१४	१९।२८।५६	०२।२७।५७।२०	०७।१०।०३।४०	०४।१३।२४।५७	०२।११।११।४८	०८।२२।५३।२९	०३।०७।३१।२६	०४।११।४७।०५	०९।२६।०२।०५	१०।२८।३४	९।२९।४२	१४
१५	१९।३२।५२	०२।२८।५४।३३	०७।२१।५६।०६	०४।१४।०१।१९	०२।१२।५७।२९	०८।२२।४५।५०	०३।०८।४५।११	०४।११।५३।१५	०९।२५।५८।५४	१०।२८।३३	९।२९।४१	१५
१६	१९।३६।४९	०२।२९।५१।४५	०८।०३।५१।३७	०४।१४।३७।४३	०२।१४।४६।२३	०८।२२।३८।१२	०३।०९।५८।५६	०४।११।५९।२९	०९।२५।५५।४३	१०।२८।३२	९।२९।३९	१६
१७	१९।४०।४५	०३।००।४८।५८	०८।१५।५२।३८	०४।१५।१४।१०	०२।१६।३८।१९	०८।२२।३०।३७	०३।११।१२।४१	०४।१२।०५।४६	०९।२५।५२।३२	१०।२८।३१	९।२९।३८	१७
१८	१९।४४।४२	०३।०१।४६।१२	०८।२८।०१।०२	०४।१५।५०।४०	०२।१८।३३।०४	०८।२२।२३।०५	०३।१२।२६।२६	०४।१२।१२।०५	०९।२५।४९।२१	१०।२८।३०	९।२९।३६	१८
१९	१९।४८।३८	०३।०२।४३।२५	०९।१०।१८।२५	०४।१६।२७।१३	०२।२०।३०।२३	०८।२२।१५।३५	०३।१३।४०।११	०४।१२।१८।२८	०९।२५।४६।१०	१०।२८।२९	९।२९।३५	१९
२०	१९।५२।३५	०३।०३।४०।४०	०९।२२।४६।०५	०४।१७।०३।४८	०२।२२।३०।००	०८।२२।०८।०८	०३।१४।५३।५६	०४।१२।२४।५४	०९।२५।४३।००	१०।२८।२८	९।२९।३४	२०
२१	१९।५६।३२	०३।०४।३७।५४	१०।०५।२५।१८	०४।१७।४०।२७	०२।२४।३१।३८	०८।२२।००।४५	०३।१६।०७।४१	०४।१२।३१।२२	०९।२५।३९।४९	१०।२८।२७	९।२९।३२	२१
२२	२०।००।२८	०३।०५।३५।१०	१०।१८।१७।२०	०४।१८।१७।०९	०२।२६।३४।५७	०८।२१।५३।२५	०३।१७।२१।२६	०४।१२।३७।५३	०९।२५।३६।३८	१०।२८।२६	९।२९।३१	२२
२३	२०।०४।२५	०३।०६।३२।२६	११।०१।२३।३०	०४।१८।५३।५४	०२।२८।३९।३८	०८।२१।४६।०९	०३।१८।३५।११	०४।१२।४४।२७	०९।२५।३३।२७	१०।२८।२५	९।२९।२९	२३
२४	२०।०८।२२	०३।०७।२९।४३	११।१४।४५।०३	०४।१९।३०।४२	०३।००।४५।२२	०८।२१।३८।५७	०३।१९।४८।५७	०४।१२।५१।०४	०९।२५।३०।१७	१०।२८।२४	९।२९।२८	२४
२५	२०।१२।१८	०३।०८।२७।०१	११।२८।२३।००	०४।२०।०७।३२	०३।०२।५१।५०	०८।२१।३१।५०	०३।२१।०२।४२	०४।१२।५७।४३	०९।२५।२७।०६	१०।२८।२२	९।२९।२६	२५
२६	२०।१६।१४	०३।०९।२४।२०	००।१२।१७।४६	०४।२०।४४।२६	०३।०४।५८।४३	०८।२१।२४।४८	०३।२२।१६।२८	०४।१३।०४।२५	०९।२५।२३।५५	१०।२८।२१	९।२९।२५	२६
२७	२०।२०।११	०३।१०।२१।४०	००।२६।२८।४६	०४।२१।२१।२३	०३।०७।०५।४४	०८।२१।१७।५१	०३।२३।३०।१३	०४।१३।११।०९	०९।२५।२०।४४	१०।२८।२०	९।२९।२३	२७
२८	२०।२४।०७	०३।११।१९।०१	०१।१०।५४।०२	०४।२१।५८।२४	०३।०९।१२।३६	०८।२१।११।००	०३।२४।४३।५९	०४।१३।१७।५६	०९।२५।१७।३३	१०।२८।१८	९।२९।२२	२८
२९	२०।२८।०४	०३।१२।१६।२२	०१।२५।३०।००	०४।२२।३५।२७	०३।११।१९।०४	०८।२१।०४।१४	०३।२५।५७।४५	०४।१३।२४।४६	०९।२५।१४।२३	१०।२८।१७	९।२९।२०	२९
३०	२०।३२।०१	०३।१३।१३।४५	०२।१०।११।३०	०४।२३।१२।३३	०३।१३।२४।५५	०८।२०।५७।३४	०३।२७।११।३१	०४।१३।३१।३७	०९।२५।११।१२	१०।२८।१६	९।२९।१९	३०
३१	२०।३५।५७	०३।१४।११।०९	०२।२४।५२।१३	०४।२३।४९।४३	०३।१५।२९।५७	०८।२०।५१।००	०३।२८।२५।१७	०४।१३।३८।३१	०९।२५।०८।०१	१०।२८।१४	९।२९।१७	३१

अगस्त सन् २००८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।४८'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०४°।५३'(वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य								हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
अगस्त	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.							वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	अगस्त
१	२०।३९।५४	०३।१५।०८।३४								१०।२८।१२	९।२९।१५	१
२	२०।४३।५०	०३।१६।०६।००								१०।२८।११	९।२९।१४	२
३	२०।४७।४७	०३।१७।०३।२६								१०।२८।०९	९।२९।१२	३
४	२०।५१।४३	०३।१८।००।५३								१०।२८।०८	९।२९।११	४
५	२०।५५।४०	०३।१८।५८।२२								१०।२८।०६	९।२९।०९	५
६	२०।५९।३६	०३।१९।५५।५०								१०।२८।०४	९।२९।०८	६
७	२१।०३।३३	०३।२०।५३।२०								१०।२८।०२	९।२९।०६	७
८	२१।०७।३०	०३।२१।५०।५०								१०।२८।०१	९।२९।०४	८
९	२१।११।२६	०३।२२।४८।२२								१०।२७।५९	९।२९।०३	९
१०	२१।१५।२३	०३।२३।४५।५४								१०।२७।५७	९।२९।०१	१०
११	२१।१९।१९	०३।२४।४३।२६								१०।२७।५५	९।२८।५९	११
१२	२१।२३।१६	०३।२५।४१।००								१०।२७।५३	९।२८।५८	१२
१३	२१।२७।१२	०३।२६।३८।३५								१०।२७।५१	९।२८।५६	१३
१४	२१।३१।०९	०३।२७।३६।११								१०।२७।४९	९।२८।५४	१४
१५	२१।३५।०५	०३।२८।३३।४७								१०।२७।४७	९।२८।५३	१५
१६	२१।३९।०२	०३।२९।३१।२५								१०।२७।४५	९।२८।५१	१६
१७	२१।४२।५९	०४।००।२९।०५								१०।२७।४३	९।२८।५०	१७
१८	२१।४६।५५	०४।०१।२६।४५								१०।२७।४१	९।२८।४८	१८
१९	२१।५०।५२	०४।०२।२४।२७								१०।२७।३९	९।२८।४६	१९
२०	२१।५४।४८	०४।०३।२२।१०								१०।२७।३७	९।२८।४५	२०
२१	२१।५८।४५	०४।०४।१९।५५								१०।२७।३५	९।२८।४३	२१
२२	२२।०२।४१	०४।०५।१७।४२								१०।२७।३३	९।२८।४१	२२
२३	२२।०६।३८	०४।०६।१५।३०								१०।२७।३१	९।२८।४०	२३
२४	२२।१०।३४	०४।०७।१३।२०								१०।२७।२८	९।२८।३८	२४
२५	२२।१४।३१	०४।०८।११।१२								१०।२७।२६	९।२८।३७	२५
२६	२२।१८।२८	०४।०९।०९।०५								१०।२७।२४	९।२८।३५	२६
२७	२२।२२।२४	०४।१०।०७।००								१०।२७।२२	९।२८।३३	२७
२८	२२।२६।२१	०४।११।०४।५८								१०।२७।२०	९।२८।३२	२८
२९	२२।३०।१७	०४।१२।०२।५७	०३।१८।२७।०९	०५।१२।०८।५५	०५।०५।५१।१९	०८।१८।४३।०६	०५।०४।०२।२८	०४।१७।१०।१६	०९।२३।३५।४८	१०।२७।१७	९।२८।३०	२९
३०	२२।३४।१४	०४।१३।००।५७	०४।०२।२३।३७	०५।१२।४७।३४	०५।०७।१३।४०	०८।१८।४१।१४	०५।०५।१६।०४	०४।१७।१७।४९	०९।२३।३२।३७	१०।२७।१५	९।२८।२९	३०
३१	२२।३८।१०	०४।१३।५८।५९	०४।१६।०६।२९	०५।१३।२६।१७	०५।०८।३४।२९	०८।१८।३९।३४	०५।०६।२९।४०	०४।१७।२५।२२	०९।२३।२९।२७	१०।२७।१३	९।२८।२७	३१

रोली, मोली, लौंग, इलायची, सुपारी, पान पत्ते, फूलमाला, चावल, धूपबत्ती, कपूर, रुई, घी, मीठा, पंचमेवा, नारियल, गोला, फल

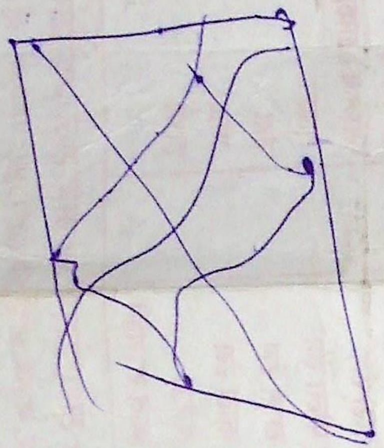
गंगाजल, कपड़ा, दूध, दही, शहद, चीनी, केले का पत्ता, थाली, लोटा, चम्मच, कटोरी, हरा रंग, पीला रंग, लाल रंग, काल रंग, जनेऊ, हवन सामग्री

गुग्गल, काले तिल, इन्द्र जौ, पीली सरसों, शक्कर, बब्बल बूरा, नागर मोथा, छाल छबीला, अगरतगर, भोजपत्र, कमलगट्टे, आम की लकड़ी, तसला, रेता, आटा, हल्दी

स्वतन्त्र सर्वज्ञ प० राधारमण जी महाराज ज्योतिषाचार्य
श्री सिद्ध गुफा हनुमान मन्दिर, नजफगढ़ रोड, नवादा बाजार, नजफगढ़, नई दिल्ली-43
फोन: नं0 : 011-25011469, 9968319425, 9868744192

जुलाई सन् २००८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।४४'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०५°।३५' (वक्री)

ता. जुलाई	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (…म) …वि.	हर्षल (वक्री) घं. मि. सै.	नेपच्चून (वक्री) घं. मि. सै.	ता. जुलाई
१	१८।३७।४०	०२।१५।३३।३२							…।२५	१०।२८।४०	९।२९।५७	१
२	१८।४१।३७	०२।१६।३०।४६							…।२४	१०।२८।४०	९।२९।५६	२
३	१८।४५।३३	०२।१७।२७।५९							…।०३	१०।२८।४०	९।२९।५५	३
४	१८।४९।३०	०२।१८।२५।१३							…।५२	१०।२८।३९	९।२९।५४	४
५	१८।५३।२७	०२।१९।२२।२६							…।४२	१०।२८।३९	९।२९।५३	५
६	१८।५७।२३	०२।२०।१९।३९							…।३१	१०।२८।३९	९।२९।५२	६
७	१९।०१।२०	०२।२१।१६।५२							…।२०	१०।२८।३८	९।२९।५१	७
८	१९।०५।१६	०२।२२।१४।०५							…।०९	१०।२८।३८	९।२९।४९	८
९	१९।०९।१३	०२।२३।११।१८							…।५९	१०।२८।३७	९।२९।४८	९
१०	१९।१३।०९	०२।२४।०८।३…							…।४८	१०।२८।३७	९।२९।४७	१०
११	१९।१७।०६	०२।२५।०५।४३							…।३७	१०।२८।३६	९।२९।४६	११
१२	१९।२१।०२	०२।२६।०२।५…							…२६	१०।२८।३५	९।२९।४४	१२
१३	१९।२४।५९	०२।२७।००।०…							…२६	१०।२८।३४	९।२९।४३	१३
१४	१९।२८।५६	०२।२७।५७।२…							…०५	१०।२८।३४	९।२९।४२	१४
१५	१९।३२।५२	०२।२८।५४।३३							…५४	१०।२८।३३	९।२९।४१	१५
१६	१९।३६।४९	०२।२९।५१।४५							…४३	१०।२८।३२	९।२९।३९	१६
१७	१९।४०।४५	०३।००।४८।५८							…३२	१०।२८।३१	९।२९।३८	१७
१८	१९।४४।४२	०३।०१।४६।१२							…२१	१०।२८।३०	९।२९।३६	१८
१९	१९।४८।३८	०३।०२।४३।२५							…१०	१०।२८।२९	९।२९।३५	१९
२०	१९।५२।३५	०३।०३।४०।४०							…००	१०।२८।२८	९।२९।३४	२०
२१	१९।५६।३२	०३।०४।३७।५४							…४९	१०।२८।२७	९।२९।३२	२१
२२	२०।००।२८	०३।०५।३५।१०							…३८	१०।२८।२६	९।२९।३१	२२
२३	२०।०४।२५	०३।०६।३२।२६							…२७	१०।२८।२५	९।२९।२९	२३
२४	२०।०८।२१	०३।०७।२९।४३							…१७	१०।२८।२४	९।२९।२८	२४
२५	२०।१२।१८	०३।०८।२७।०१							…०६	१०।२८।२२	९।२९।२६	२५
२६	२०।१६।१४	०३।०९।२४।२०							…५	१०।२८।२१	९।२९।२५	२६
२७	२०।२०।११	०३।१०।२१।४०							…४४	१०।२८।२०	९।२९।२३	२७
२८	२०।२४।०७	०३।११।१९।०१							…३	१०।२८।१८	९।२९।२२	२८
२९	२०।२८।०४	०३।१२।१६।२२							०९।२५।१४।२३	१०।२८।१७	९।२९।२०	२९
३०	२०।३२।०१	०३।१३।१३।४५	०२।१०।११।३०	०४।२३।१२।३३	०३।१३।२४।५५	०८।२०।५७।३४	०३।२७।११।३१	०४।१३।३१।३७	०९।२५।११।१२	१०।२८।१६	९।२९।१९	३०
३१	२०।३५।५७	०३।१४।११।०९	०२।२४।५२।१३	०४।२३।४९।४३	०३।१५।२१।५७	०८।२०।५१।००	०३।२८।२५।१७	०४।१३।३८।३१	०९।२५।०८।०१	१०।२८।१४	९।२९।१७	३१



अगस्त सन् २००८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।४८'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०४°।५३'(वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
अगस्त	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	अगस्त
१	२०।३९।५४	०३।१५।०८।३४	०३।०९।२५।२६	०४।२४।२६।५६	०३।१७।३४।०१	०८।२०।४४।३४	०३।२९।३९।०३	०४।१३।४५।२७	०९।२५।०४।५०	१०।२८।१२	९।२९।१५	१
२	२०।४३।५०	०३।१६।०६।००	०३।२३।४४।५६	०४।२५।०४।११	०३।१९।३६।५९	०८।२०।३८।१३	०४।००।५२।४९	०४।१३।५२।२६	०९।२५।०१।३९	१०।२८।११	९।२९।१४	२
३	२०।४७।४७	०३।१७।०३।२६	०४।०७।४५।४५	०४।२५।४१।३०	०३।२१।३८।४३	०८।२०।३२।०१	०४।०२।०६।३५	०४।१३।५९।२६	०९।२४।५८।२८	१०।२८।०९	९।२९।१२	३
४	२०।५१।४३	०३।१८।००।५३	०४।२१।२४।४५	०४।२६।१८।५२	०३।२३।३९।०८	०८।२०।२५।५५	०४।०३।२०।२१	०४।१४।०६।२९	०९।२४।५५।१८	१०।२८।०८	९।२९।११	४
५	२०।५५।४०	०३।१८।५८।२२	०५।०४।४०।४६	०४।२६।५६।१७	०३।२५।३८।११	०८।२०।१९।५७	०४।०४।३४।०७	०४।१४।१३।३३	०९।२४।५२।०७	१०।२८।०६	९।२९।०९	५
६	२०।५९।३६	०३।१९।५५।५०	०५।१७।३४।२९	०४।२७।३३।४५	०३।२७।३५।४७	०८।२०।१४।०७	०४।०५।४७।५२	०४।१४।२०।३९	०९।२४।४८।५६	१०।२८।०४	९।२९।०८	६
७	२१।०३।३३	०३।२०।५३।२०	०६।००।०८।१०	०४।२८।११।१५	०३।२९।३१।५५	०८।२०।०८।२६	०४।०७।०१।३७	०४।१४।२७।४७	०९।२४।४५।४६	१०।२८।०२	९।२९।०६	७
८	२१।०७।३०	०३।२१।५०।५०	०६।१२।२५।१०	०४।२८।४८।४९	०४।०१।२६।३२	०८।२०।०२।५२	०४।०८।१५।२२	०४।१४।३४।५७	०९।२४।४२।३५	१०।२८।०१	९।२९।०४	८
९	२१।११।२६	०३।२२।४८।२२	०६।२४।२९।३३	०४।२९।२६।२६	०४।०३।१९।३९	०८।१९।५७।२७	०४।०९।२९।०६	०४।१४।४२।०८	०९।२४।३९।२४	१०।२७।५९	९।२९।०३	९
१०	२१।१५।२३	०३।२३।४५।५४	०७।०६।२५।४९	०५।००।०४।०५	०४।०५।११।१४	०८।१९।५२।११	०४।१०।४२।५०	०४।१४।४९।२१	०९।२४।३६।१३	१०।२७।५७	९।२९।०१	१०
११	२१।१९।१९	०३।२४।४३।२६	०७।१८।१८।३०	०५।००।४१।४७	०४।०७।०१।१८	०८।१९।४७।०४	०४।११।५६।३४	०४।१४।५६।३६	०९।२४।३३।०२	१०।२७।५५	९।२८।५९	११
१२	२१।२३।१६	०३।२५।४१।००	०८।००।११।५६	०५।०१।१९।३३	०४।०८।४९।५०	०८।१९।४२।०५	०४।१३।१०।१७	०४।१५।०३।५२	०९।२४।२९।५२	१०।२७।५३	९।२८।५८	१२
१३	२१।२७।१२	०३।२६।३८।३५	०८।१२।१०।१०	०५।०१।५७।११	०४।१०।३६।५२	०८।१९।३७।२७	०४।१४।२३।५९	०४।१५।११।१०	०९।२४।२६।४१	१०।२७।५१	९।२८।५६	१३
१४	२१।३१।०९	०३।२७।३६।११	०८।२४।१६।४०	०५।०२।३५।१२	०४।१२।२२।२३	०८।१९।३२।३७	०४।१५।३७।४२	०४।१५।१८।२८	०९।२४।२३।३०	१०।२७।४९	९।२८।५४	१४
१५	२१।३५।०५	०३।२८।३३।४७	०९।०६।३४।१५	०५।०३।१३।०५	०४।१४।०६।२५	०८।१९।२८।०७	०४।१६।५१।२३	०४।१५।२५।४९	०९।२४।२०।१९	१०।२७।४७	९।२८।५३	१५
१६	२१।३९।०२	०३।२९।३१।२५	०९।१९।०५।०१	०५।०३।५१।०२	०४।१५।४८।५८	०८।१९।२३।४७	०४।१८।०५।०५	०४।१५।३३।१०	०९।२४।१७।०८	१०।२७।४५	९।२८।५१	१६
१७	२१।४२।५९	०४।००।२९।०५	१०।०१।५०।१५	०५।०४।२९।०२	०४।१७।३०।०४	०८।१९।१९।३७	०४।१९।१८।४६	०४।१५।४०।३३	०९।२४।१३।५७	१०।२७।४३	९।२८।५०	१७
१८	२१।४६।५५	०४।०१।२६।४५	१०।१४।५०।२८	०५।०५।०७।०४	०४।१९।०९।४२	०८।१९।१५।३६	०४।२०।३२।२६	०४।१५।४७।५६	०९।२४।१०।४७	१०।२७।४१	९।२८।४८	१८
१९	२१।५०।५२	०४।०२।२४।२७	१०।२८।०५।२५	०५।०५।४५।१०	०४।२०।४७।५३	०८।१९।११।४६	०४।२१।४६।०६	०४।१५।५५।२१	०९।२४।०७।३६	१०।२७।३९	९।२८।४६	१९
२०	२१।५४।४८	०४।०३।२२।१०	११।११।३४।१८	०५।०६।२३।१८	०४।२२।२४।३९	०८।१९।०८।०६	०४।२२।५९।४६	०४।१६।०२।४७	०९।२४।०४।२५	१०।२७।३७	९।२८।४५	२०
२१	२१।५८।४५	०४।०४।१९।५५	११।२५।१५।४९	०५।०७।०१।३०	०४।२३।५९।५९	०८।१९।०४।३७	०४।२४।१३।२५	०४।१६।१०।१४	०९।२४।०१।१५	१०।२७।३५	९।२८।४३	२१
२२	२२।०२।४१	०४।०५।१७।४२	००।०९।०८।२२	०५।०७।३९।४४	०४।२५।३३।५३	०८।१९।०१।१७	०४।२५।२७।०४	०४।१६।१७।४१	०९।२३।५८।०४	१०।२७।३३	९।२८।४१	२२
२३	२२।०६।३८	०४।०६।१५।३०	००।२३।१०।०८	०५।०८।१८।०२	०४।२७।०६।२३	०८।१८।५८।०९	०४।२६।४०।४३	०४।१६।२५।१०	०९।२३।५४।५३	१०।२७।३१	९।२८।४०	२३
२४	२२।१०।३४	०४।०७।१३।२०	०१।०७।१९।१०	०५।०८।५६।२३	०४।२८।३७।२८	०८।१८।५५।११	०४।२७।५४।२१	०४।१६।३२।३९	०९।२३।५१।४३	१०।२७।२८	९।२८।३८	२४
२५	२२।१४।३१	०४।०८।११।१२	०१।२१।३३।१९	०५।०९।३४।४७	०५।००।०७।०७	०८।१८।५२।१४	०४।२९।०७।५९	०४।१६।४०।१०	०९।२३।४८।३२	१०।२७।२६	९।२८।३७	२५
२६	२२।१८।२८	०४।०९।०९।०५	०२।०५।५०।०९	०५।१०।१३।१४	०५।०१।३५।११	०८।१८।४९।४८	०५।००।२१।३७	०४।१६।४७।४०	०९।२३।४५।२१	१०।२७।२४	९।२८।३५	२६
२७	२२।२२।२४	०४।१०।०७।००	०२।२०।०६।५४	०५।१०।५१।४४	०५।०३।०२।०८	०८।१८।४७।२३	०५।०१।३५।१४	०४।१६।५५।१२	०९।२३।४२।१०	१०।२७।२२	९।२८।३३	२७
२८	२२।२६।२१	०४।११।०४।५८	०३।०४।२०।२४	०५।११।३०।१८	०५।०४।२७।२८	०८।१८।४५।०९	०५।०२।४८।५१	०४।१७।०२।४४	०९।२३।३८।५९	१०।२७।२०	९।२८।३२	२८
२९	२२।३०।१७	०४।१२।०२।५७	०३।१८।२७।०९	०५।१२।०८।५५	०५।०५।५१।१९	०८।१८।४३।०६	०५।०४।०२।२८	०४।१७।१०।१६	०९।२३।३५।४८	१०।२७।१७	९।२८।३०	२९
३०	२२।३४।१४	०४।१३।००।५७	०४।०२।२३।३७	०५।१२।४७।३४	०५।०७।१३।४०	०८।१८।४१।१४	०५।०५।१६।०४	०४।१७।१७।४९	०९।२३।३२।३७	१०।२७।१५	९।२८।२९	३०
३१	२२।३८।१०	०४।१३।५८।५९	०४।१६।०६।२९	०५।१३।२६।१७	०५।०८।३४।२९	०८।१८।३९।३४	०५।०६।२९।४०	०४।१७।२५।२२	०९।२३।२९।२७	१०।२७।१३	९।२८।२७	३१

सितम्बर सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५८'।५३'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०४°।३२' (वक्री/मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
सित.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	सित.
१	२२।४२।०७	०४।१४।५७।०३	०४।२९।३३।०५	०५।१४।०५।०४	०५।०९।५३।४२	०८।१८।३८।०५	०५।०७।४३।२५	०४।१७।३२।५६	०९।२३।२६।२६	१०।२७।१०	९।२८।२५	१
२	२२।४६।०३	०४।१५।५५।०९	०५।१२।४१।४३	०५।१४।४३।५३	०५।११।११।१८	०८।१८।३६।४८	०५।०८।५६।५०	०४।१७।४०।२९	०९।२३।२३।०६	१०।२७।०८	९।२८।२४	२
३	२२।५०।००	०४।१६।५३।१६	०५।२५।३१।५५	०५।१५।२२।४५	०५।१२।२७।१४	०८।१८।३५।४२	०५।१०।१०।२४	०४।१७।४८।०३	०९।२३।१९।५५	१०।२७।०६	९।२८।२२	३
४	२२।५३।५७	०४।१७।५१।२४	०६।०८।०४।३१	०५।१६।०१।४०	०५।१३।४१।२४	०८।१८।३४।४८	०५।११।२३।५७	०४।१७।५५।३६	०९।२३।१६।४४	१०।२७।०३	९।२८।२१	४
५	२२।५७।५३	०४।१८।४९।३४	०६।२०।२१।३५	०५।१६।४०।३९	०५।१४।५३।४६	०८।१८।३४।०५	०५।१२।३७।२९	०४।१८।०३।०९	०९।२३।१३।३४	१०।२७।०१	९।२८।१९	५
६	२३।०१।५०	०४।१९।४७।४५	०७।०२।२६।१६	०५।१७।१९।४०	०५।१६।०४।१५	०८।१८।३३।३४	०५।१३।५१।०१	०४।१८।१०।४३	०९।२३।१०।२३	१०।२६।५८	९।२८।१८	६
७	२३।०५।४६	०४।२०।४५।५८	०७।१४।२२।२८	०५।१७।५८।४४	०५।१७।१२।४४	०८।१८।३३।१५	०५।१५।०४।३२	०४।१८।१८।१६	०९।२३।०७।१२	१०।२६।५६	९।२८।१६	७
८	२३।०९।४३	०४।२१।४४।१३	०७।२६।१४।४४	०५।१८।३७।५२	०५।१८।१९।०९	मा.०८।१८।३३।०७	०५।१६।१८।०२	०४।१८।२५।५०	०९।२३।०४।०१	१०।२६।५४	९।२८।१५	८
९	२३।१३।३९	०४।२२।४२।२९	०८।०८।०७।५२	०५।१९।१७।०२	०५।१९।२३।११	०८।१८।३३।१०	०५।१७।३१।३१	०४।१८।३३।२३	०९।२३।००।५०	१०।२६।५१	९।२८।१३	९
१०	२३।१७।३६	०४।२३।४०।४६	०८।२०।०६।४२	०५।१९।५६।१६	०५।२०।२५।१३	०८।१८।३३।२५	०५।१८।४४।५९	०४।१८।४०।५६	०९।२२।५७।३९	१०।२६।४९	९।२८।१२	१०
११	२३।२१।३२	०४।२४।३९।०५	०९।०२।२५।५०	०५।२०।३५।३२	०५।२१।२४।३७	०८।१८।३३।५२	०५।१९।५८।२६	०४।१८।४८।२८	०९।२२।५४।२९	१०।२६।४७	९।२८।११	११
१२	२३।२५।२९	०४।२५।३७।२६	०९।१४।३९।२२	०५।२१।१४।५१	०५।२२।२१।२२	०८।१८।३४।३०	०५।२१।११।५३	०४।१८।५६।००	०९।२२।५१।१८	१०।२६।४४	९।२८।०९	१२
१३	२३।२९।२६	०४।२६।३५।४८	०९।२७।२०।२८	०५।२१।५४।१४	०५।२३।१५।१९	०८।१८।३५।१९	०५।२२।२५।१८	०४।१९।०३।३१	०९।२२।४८।०७	१०।२६।४२	९।२८।०८	१३
१४	२३।३३।२२	०४।२७।३४।१२	१०।१०।२१।१३	०५।२२।३३।३९	०५।२४।०६।१५	०८।१८।३६।२२	०५।२३।३८।४२	०४।१९।११।०२	०९।२२।४४।५६	१०।२६।३९	९।२८।०६	१४
१५	२३।३७।१९	०४।२८।३२।३८	१०।२३।४२।१०	०५।२३।१३।०८	०५।२४।५३।५७	०८।१८।३७।३३	०५।२४।५२।०६	०४।१९।१८।३२	०९।२२।४१।४६	१०।२६।३७	९।२८।०५	१५
१६	२३।४१।१५	०४।२९।३१।०५	११।०७।२२।१३	०५।२३।५२।३९	०५।२५।३८।११	०८।१८।३७।५७	०५।२६।०५।२८	०४।१९।२६।०१	०९।२२।३८।३५	१०।२६।३५	९।२८।०४	१६
१७	२३।४५।१२	०५।००।२९।३५	११।२१।१८।४२	०५।२४।३२।१४	०५।२६।१८।४१	०८।१८।४०।३२	०५।२७।१८।५०	०४।१९।३३।३०	०९।२२।३५।२५	१०।२६।३२	९।२८।०२	१७
१८	२३।४९।०८	०५।०१।२८।०६	००।०५।२७।३७	०५।२५।११।५२	०५।२६।५५।१०	०८।१८।४२।१८	०५।२८।३२।११	०४।१९।४०।५८	०९।२२।३२।१४	१०।२६।३०	९।२८।०१	१८
१९	२३।५३।०५	०५।०२।२६।४०	००।१९।४४।१३	०५।२५।५१।३३	०५।२७।२७।१९	०८।१८।४४।१६	०५।२९।४५।३०	०४।१९।४८।२५	०९।२२।२९।०३	१०।२६।२७	९।२८।००	१९
२०	२३।५७।०१	०५।०३।२५।१६	०१।०४।०३।४३	०५।२६।३१।१७	०५।२७।५४।४१	०८।१८।४६।२५	०६।००।५८।४१	०४।१९।५५।५१	०९।२२।२५।५२	१०।२६।२५	९।२७।५८	२०
२१	००।००।५८	०५।०४।२३।५४	०१।१८।२१।५२	०५।२७।११।०४	०५।२८।१७।१८	०८।१८।४८।४५	०६।०२।१२।०८	०४।२०।०३।१६	०९।२२।२२।४२	१०।२६।२३	९।२७।५७	२१
२२	००।०४।५४	०५।०५।२२।३४	०२।०२।३५।२७	०५।२७।५०।५५	०५।२८।३४।२४	०८।१८।५१।१६	०६।०३।२५।२५	०४।२०।१०।४०	०९।२२।१९।३१	१०।२६।२०	९।२७।५६	२२
२३	००।०८।५१	०५।०६।२१।१७	०२।१६।४२।१६	०५।२८।३०।४१	०५।२८।४५।४४	०८।१८।५३।५१	०६।०४।३८।४२	०४।२०।१८।०२	०९।२२।१६।२०	१०।२६।१८	९।२७।५५	२३
२४	००।१२।४८	०५।०७।२०।०१	०३।००।४१।०३	०५।२९।१०।४६	व.०५।२८।५०।५६	०८।१८।५६।४२	०६।०५।५१।५८	०४।२०।२५।२४	०९।२२।१३।०९	१०।२६।१६	९।२७।५४	२४
२५	००।१६।४४	०५।०८।१८।४१	०३।१४।३१।०१	०५।२९।५०।४७	०५।२८।४१।३६	०८।१८।५९।५७	०६।०७।०५।१३	०४।२०।३२।४४	०९।२२।०९।५८	१०।२६।१३	९।२७।५२	२५
२६	००।२०।४१	०५।०९।१७।३८	०३।२८।११।३६	०६।००।३०।५१	०५।२८।४१।२४	०८।१९।०३।१३	०६।०८।१८।२७	०४।२०।४०।०३	०९।२२।०६।४७	१०।२६।११	९।२७।५१	२६
२७	००।२४।३७	०५।१०।१६।२९	०४।११।४२।०२	०६।०१।१०।५८	०५।२८।२६।०२	०८।१९।०६।३९	०६।०९।३१।४०	०४।२०।४७।२१	०९।२२।०३।३७	१०।२६।०९	९।२७।५०	२७
२८	००।२८।३४	०५।११।१५।२३	०४।२५।०१।२२	०६।०१।५१।०९	०५।२८।०३।१५	०८।१९।१०।१७	०६।१०।४४।५३	०४।२०।५४।३७	०९।२२।००।२६	१०।२६।०६	९।२७।४९	२८
२९	००।३२।३०	०५।१२।१४।१९	०५।०८।०८।२८	०६।०२।३१।२३	०५।२७।३२।५८	०८।१९।१४।०५	०६।११।५८।०५	०४।२१।०१।५१	०९।२१।५७।१६	१०।२६।०४	९।२७।४८	२९
३०	००।३६।२७	०५।१३।१३।१७	०५।२१।०२।२८	०६।०३।११।४०	०५।२६।५५।११	०८।१९।१८।०४	०६।१३।११।१६	०४।२१।०९।०४	०९।२१।५४।०५	१०।२६।०२	९।२७।४७	३०

अक्टूबर सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°५८'५७'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०४°।३८' (मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
अक्टू.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	अक्टू.
१	००।४०।२३	०५।१४।१२।२६	०६।०३।४२।१३	०६।०३।५२।००	०५।२६।१०।०८	०८।१९।२२।१४	०६।१४।२४।२६	०४।२१।१६।१५	०९।२१।५०।५४	१०।२५।५९	९।२७।४६	१
२	००।४४।२०	०५।१५।११।२८	०६।१६।०८।१७	०६।०४।३२।२४	०५।२५।१८।१३	०८।१९।२६।३४	०६।१५।३७।३४	०४।२१।२३।२५	०९।२१।४७।४४	१०।२५।५७	९।२७।४५	२
३	००।४८।१७	०५।१६।१०।२२	०६।२८।२१।२८	०६।०५।१२।५१	०५।२४।२०।१०	०८।१९।३१।०५	०६।१६।५०।४२	०४।२१।३०।३२	०९।२१।४४।३३	१०।२५।५५	९।२७।४४	३
४	००।५२।१३	०५।१७।०९।२७	०७।१०।२३।४४	०६।०५।५३।२१	०५।२३।१६।५७	०८।१९।३५।४७	०६।१८।०३।४९	०४।२१।३७।३८	०९।२१।४१।२२	१०।२५।५३	९।२७।४३	४
५	००।५६।१०	०५।१८।०८।३४	०७।२२।१८।०७	०६।०६।३३।५४	०५।२२।०९।४९	०८।१९।४०।३८	०६।१९।१६।५४	०४।२१।४४।४१	०९।२१।३८।११	१०।२५।५१	९।२७।४२	५
६	०१।००।०६	०५।१९।०७।४३	०८।०४।०८।२९	०६।०७।१४।३०	०५।२१।००।१७	०८।१९।४५।४०	०६।२०।२९।५८	०४।२१।५१।४३	०९।२१।३४।००	१०।२५।४८	९।२७।४१	६
७	०१।०४।०३	०५।२०।०६।५४	०८।१५।५९।२७	०६।०७।५५।०९	०५।१९।५०।०७	०८।१९।५०।५३	०६।२१।४३।०१	०४।२१।५८।४२	०९।२१।३१।५०	१०।२५।४६	९।२७।४०	७
८	०१।०७।५९	०५।२१।०६।०७	०८।२७।५६।०६	०६।०८।३५।५२	०५।१८।४१।१२	०८।१९।५६।१५	०६।२२।५६।०२	०५।२२।०५।३९	०९।२१।२८।३९	१०।२५।४४	९।२७।४०	८
९	०१।११।५६	०५।२२।०५।२१	०९।१०।०३।४४	०६।०९।१६।३८	०५।१७।३५।२८	०८।२०।०१।४७	०६।२४।०९।०२	०४।२२।१२।३४	०९।२१।२५।२८	१०।२५।४२	९।२७।३९	९
१०	०१।१५।५२	०५।२३।०४।३८	०९।२२।२७।२९	०६।०९।५७।२६	०५।१६।३४।४८	०८।२०।०७।२९	०६।२५।२२।०१	०४।२२।१९।२७	०९।२१।२२।१७	१०।२५।४०	९।२७।३८	१०
११	०१।१९।४९	०५।२४।०३।५६	१०।०५।११।५७	०६।१०।३८।१८	०५।१५।४०।५७	०८।२०।१३।२१	०६।२६।३४।५८	०४।२२।२६।१७	०९।२१।१९।०७	१०।२५।३८	९।२७।३७	११
१२	०१।२३।४६	०५।२५।०३।१६	१०।१८।२०।३०	०६।११।१९।१४	०५।१४।५५।२४	०८।२०।१९।२३	०६।२७।४७।५३	०४।२२।३३।०५	०९।२१।१५।५६	१०।२५।३६	९।२७।३७	१२
१३	०१।२७।४२	०५।२६।०२।३७	११।०१।५४।४६	०६।१२।००।१२	०५।१४।१९।२२	०८।२०।२५।३४	०६।२९।००।४७	०४।२२।३९।५०	०९।२१।१२।४५	१०।२५।३४	९।२७।३६	१३
१४	०१।३१।३९	०५।२७।०२।०१	११।१५।५४।०४	०६।१२।४१।१३	०५।१३।५३।४०	०८।२०।३१।५५	०७।००।१३।४०	०४।२२।४६।३३	०९।२१।०९।३५	१०।२५।३२	९।२७।३५	१४
१५	०१।३५।३५	०५।२८।०१।२६	००।००।१५।००	०६।१३।२२।१८	०५।१३।३८।५२	०८।२०।३८।२५	०७।०१।२६।३१	०४।२२।५३।१२	०९।२१।०६।२४	१०।२५।३०	९।२७।३५	१५
१६	०१।३९।३२	०५।२९।००।५४	००।१४।५१।३९	०६।१४।०३।२६	मा.०५।१३।३५।०८	०८।२०।४५।०४	०७।०२।३९।२०	०४।२२।५९।५०	०९।२१।०३।१३	१०।२५।२८	९।२७।३४	१६
१७	०१।४३।२९	०६।००।००।२४	००।२९।३६।२४	०६।१४।४४।३७	०५।१३।४२।२२	०८।२०।५१।५३	०७।०३।५२।०८	०४।२३।०६।२४	०९।२१।००।०२	१०।२५।२६	९।२७।३४	१७
१८	०१।४७।२५	०६।००।५९।५६	०१।१४।२१।०९	०६।१५।२५।५१	०५।१४।००।१४	०८।२०।५८।५०	०७।०५।०४।५५	०४।२३।१२।५६	०९।२०।५६।५२	१०।२५।२५	९।२७।३३	१८
१९	०१।५१।२२	०६।०१।५९।३०	०१।२८।५८।४१	०६।१६।०७।०९	०५।१४।२८।१३	०८।२१।०५।५७	०७।०६।१७।४०	०४।२३।१९।२५	०९।२०।५३।४१	१०।२५।२३	९।२७।३३	१९
२०	०१।५५।१८	०६।०२।५९।०६	०२।१३।२३।४०	०६।१६।४८।३०	०५।१५।०५।३६	०८।२१।१३।१२	०७।०७।३०।२३	०४।२३।२५।५०	०९।२०।५०।३०	१०।२५।२१	९।२७।३२	२०
२१	०१।५९।१५	०६।०३।५८।४५	०२।२७।३३।०४	०६।१७।२९।५५	०५।१५।५१।३९	०८।२१।२०।३७	०७।०८।४३।०५	०४।२३।३२।१३	०९।२०।४७।१९	१०।२५।१९	९।२७।३२	२१
२२	०२।०३।१२	०६।०४।५८।२६	०३।११।२५।५४	०६।१८।११।२३	०५।१६।४५।३२	०८।२१।२८।१०	०७।०९।५५।४६	०४।२३।३८।३३	०९।२०।४४।०८	१०।२५।१८	९।२७।३१	२२
२३	०२।०७।०८	०६।०५।५८।१०	०३।२५।०२।४५	०६।१८।५२।५४	०५।१७।४६।२५	०८।२१।३५।५२	०७।११।०८।२५	०४।२३।४४।४९	०९।२०।४०।५७	१०।२५।१६	९।२७।३१	२३
२४	०२।११।०५	०६।०६।५७।५५	०४।०८।२४।५७	०६।१९।३४।२९	०५।१८।५३।३०	०८।२१।४३।४३	०७।१२।२१।०३	०४।३३।५१।०२	०९।२०।३७।४७	१०।२५।१४	९।२७।३१	२४
२५	०२।१५।०१	०६।०७।५७।४३	०४।२१।३४।०३	०६।२०।१६।०७	०५।२०।०५।५८	०८।२१।५१।४२	०७।१३।३३।३९	०४।२३।५७।१२	०९।२०।३४।३६	१०।२५।१३	९।२७।३०	२५
२६	०२।१८।५८	०६।०८।५७।३३	०५।०४।३१।११	०६।२०।५७।४९	०५।२१।२३।०७	०८।२१।५९।४९	०७।१४।४६।१४	०४।२४।०३।१९	०९।२०।३१।२५	१०।२५।११	९।२७।३०	२६
२७	०२।२२।५४	०६।०९।५७।२६	०५।१७।१७।४३	०६।२१।३९।३४	०५।२२।४४।१४	०८।२२।०८।०५	०७।१५।५८।४७	०४।२४।०९।११	०९।२०।२८।१५	१०।२५।१०	९।२७।३०	२७
२८	०२।२६।५१	०६।१०।५७।२०	०५।२९।५३।३५	०६।२२।२१।२२	०५।२४।०८।४५	०८।२२।१६।२९	०७।१७।११।१९	०४।२४।१५।२१	०९।२०।२५।०४	१०।२५।०८	९।२७।३०	२८
२९	०२।३०।४७	०६।११।५७।१६	०६।१२।१९।०९	०६।२३।०३।१४	०५।२५।३६।०६	०८।२२।२५।०१	०७।१८।२३।४८	०४।२४।२१।१६	०९।२०।२१।५३	१०।२५।०७	९।२७।२९	२९
३०	०२।३४।४४	०६।१२।५७।१४	०६।२४।३४।३८	०६।२३।४५।०९	०५।२७।०५।४७	०८।२२।३३।४२	०७।१९।३६।१६	०४।२४।२७।०८	०९।२०।१८।४२	१०।२५।०६	९।२७।२९	३०
३१	०२।३८।४१	०६।१३।५७।१४	०७।०६।४०।३७	०६।२४।२७।०७	०५।२८।३७।२५	०८।२२।४२।३०	०७।२०।४८।४२	०४।२४।३२।५७	०९।२०।१५।३२	१०।२५।०४	९।२७।२९	३१

नवम्बर सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५९'।०२'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०५°।१४' (मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
नव.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	नव.
१	०२।४२।३७	०६।१४।५७।१६	०७।१८।३८।१९	०६।२५।०९।०८	०६।००।१०।३६	०८।२२।५१।२६	०७।२२।०१।०६	०४।२४।३८।४१	०९।२०।१२।२१	१०।२५।०३	९।२७।२९	१
२	०२।४६।३३	०६।१५।५७।२०	०८।००।२९।४७	०६।२५।५१।१३	०६।०१।४५।०१	०८।२३।००।२९	०७।२३।१३।२८	०४।२४।४४।२१	०९।२०।०९।१०	१०।२५।०२	मा.९।२७।२९	२
३	०२।५०।३०	०६।१६।५७।२५	०८।१२।१७।५६	०६।२६।३३।२१	०६।०३।२०।२६	०८।२३।०९।४१	०७।२४।२५।४८	०४।२४।४९।५८	०९।२०।०५।५९	१०।२५।००	९।२७।२९	३
४	०२।५४।२६	०६।१७।५७।३२	०८।२४।०६।३४	०६।२७।१५।३२	०६।०४।५६।३५	०८।२३।१८।५९	०७।२५।३८।०५	०४।२४।५५।३०	०९।२०।०२।४८	१०।२४।५९	९।२७।२९	४
५	०२।५८।२३	०६।१८।५७।४०	०९।०६।००।१८	०६।२७।५७।४६	०६।०६।३३।१७	०८।२३।२८।२५	०७।२६।५०।२०	०४।२५।००।५८	०९।१९।५९।३७	१०।२४।५८	९।२७।२९	५
६	०३।०२।१९	०६।१९।५७।५०	०९।१८।०४।१८	०६।२८।४०।०४	०६।०८।१०।२३	०८।२३।३७।५९	०७।२८।०२।३३	०४।२५।०६।२२	०९।१९।५६।२७	१०।२४।५७	९।२७।२९	६
७	०३।०६।१६	०६।२०।५८।०२	१०।००।२४।०३	०६।२९।२२।२४	०६।०९।४७।४४	०८।२३।४७।३९	०७।२९।१४।४२	०४।२५।११।४२	०९।१९।५३।१६	१०।२४।५६	९।२७।२९	७
८	०३।१०।१३	०६।२१।५८।१५	१०।१३।०४।५५	०७।००।०४।४८	०६।११।२५।१५	०८।२३।५७।२७	०८।००।२६।५०	०४।२५।१६।५७	०९।१९।५०।०५	१०।२४।५५	९।२७।३०	८
९	०३।१४।०९	०६।२२।५८।२९	१०।२६।११।३३	०७।००।४७।१५	०६।१३।०२।४८	०८।२४।०७।२१	०८।०१।३८।५४	०४।२५।२२।०८	०९।१९।४६।५५	१०।२४।५४	९।२७।३०	९
१०	०३।१८।०६	०६।२३।५८।४५	११।०९।४७।०६	०७।०१।२९।४५	०६।१४।४०।२१	०८।२४।१७।२३	०८।०२।५०।५५	०४।२५।२७।१४	०९।१९।४३।४४	१०।२४।५३	९।२७।३०	१०
११	०३।२२।०२	०६।२४।५९।०३	११।२३।५२।२०	०७।०२।१२।२८	०६।१६।१७।४८	०८।२४।२७।३१	०८।०४।०२।५४	०४।२५।३२।१६	०९।१९।४०।३३	१०।२४।५२	९।२७।३०	११
१२	०३।२५।५९	०६।२५।५९।२२	००।०८।२४।५२	०७।०२।५४।५५	०६।१७।५५।०९	०८।२४।३७।४५	०८।०५।१४।४९	०४।२५।३७।१४	०९।१९।३७।२२	१०।२४।५१	९।२७।३१	१२
१३	०३।२९।५५	०६।२६।५९।४३	००।२३।१८।५१	०७।०३।३७।३४	०६।१९।३२।२०	०८।२४।४८।०६	०८।०६।२६।४१	०४।२५।४२।०७	०९।१९।३४।१२	१०।२४।५१	९।२७।३१	१३
१४	०३।३३।५२	०६।२८।००।०५	०१।०८।२५।२८	०७।०४।२०।१७	०६।२१।०९।२०	०८।२४।५८।२४	०८।०७।३८।३०	०४।२५।४६।५५	०९।१९।३०।०१	१०।२४।५०	९।२७।३१	१४
१५	०३।३७।४८	०६।२९।००।२९	०१।२३।३४।२५	०७।०५।०३।०३	०६।२२।४६।०८	०८।२५।०९।०८	०८।०८।५०।१५	०४।२५।५१।३८	०९।१९।२७।५०	१०।२४।४९	९।२७।३२	१५
१६	०३।४१।४५	०७।००।००।५५	०२।०८।३५।०५	०७।०५।४५।५३	०६।२४।२२।४२	०८।२५।१९।४८	०८।१०।०१।५७	०४।२५।५६।१७	०९।१९।२४।४७	१०।२४।४९	९।२७।३२	१६
१७	०३।४५।४२	०७।०१।०१।२२	०२।२३।१९।४८	०७।०६।२८।४५	०६।२५।५९।०४	०८।२५।३०।३४	०८।११।१३।३६	०४।२६।००।५०	०९।१९।२१।२८	१०।२४।४८	९।२७।३३	१७
१८	०३।४९।३८	०७।०२।०१।५२	०३।०७।४३।१४	०७।०७।११।४१	०६।२७।३५।१२	०८।२५।४१।२६	०८।१२।२५।१२	०४।२६।०५।१९	०९।१९।१८।१७	१०।२४।४८	९।२७।३३	१८
१९	०३।५३।३५	०७।०३।०२।२३	०३।२१।४३।१८	०७।०७।५४।४१	०६।२९।११।०७	०८।२५।५२।२५	०८।१३।३६।४४	०४।२६।०९।४३	०९।१९।१५।०६	१०।२४।४७	९।२७।३४	१९
२०	०३।५७।३१	०७।०४।०२।५६	०४।०५।१०।२४	०७।०८।३७।४३	०७।००।४६।४८	०८।२६।०३।२९	०८।१४।४८।१२	०४।२६।१४।०१	०९।१९।११।५५	१०।२४।४७	९।२७।३४	२०
२१	०४।०१।२८	०७।०५।०३।३१	०४।१८।३६।३४	०७।०९।२०।४९	०७।०२।२२।१७	०८।२६।१४।३९	०८।१५।५९।३७	०४।२६।१८।१५	०९।१९।०८।४५	१०।२४।४६	९।२७।३५	२१
२२	०४।०५।२४	०७।०६।०४।०७	०५।०१।३४।३८	०७।१०।०३।५९	०७।०३।५७।३४	०८।२६।२५।५४	०८।१७।१०।५८	०४।२६।२२।२३	०९।१९।०५।३४	१०।२४।४६	९।२७।३६	२२
२३	०४।०९।२१	०७।०७।०४।४६	०५।१४।१७।३३	०७।१०।४७।११	०७।०५।३२।३९	०८।२६।३७।१६	०८।१८।२२।१६	०४।२६।२६।२६	०९।१९।०२।२३	१०।२४।४६	९।२७।३६	२३
२४	०४।१३।१७	०७।०८।०५।२६	०५।२६।४८।०१	०७।११।३०।२७	०७।०७।०७।३३	०८।२६।४८।४३	०८।१९।३३।२९	०४।२६।३०।२४	०९।१८।५९।१३	१०।२४।४६	९।२७।३७	२४
२५	०४।१७।१४	०७।०९।०६।०७	०६।०९।०८।१३	०७।१२।१३।४६	०७।०८।४२।२८	०८।२७।००।१५	०८।२०।४४।३८	०४।२६।३४।१६	०९।१८।५६।०२	१०।२४।४५	९।२७।३८	२५
२६	०४।२१।११	०७।१०।०६।५०	०६।२१।१९।४७	०७।१२।५७।०९	०७।१०।१६।५४	०८।२७।११।५३	०८।२१।५५।४३	०४।२६।३८।०३	०९।१८।५२।५१	१०।२४।४५	९।२७।३९	२६
२७	०४।२५।०७	०७।११।०७।३५	०७।०३।२४।०१	०७।१३।४०।३५	०७।११।५१।२१	०८।२७।२३।३६	०८।२३।०६।४४	०४।२६।४१।४४	०९।१८।४९।४०	मा.१०।२४।४५	९।२७।३९	२७
२८	०४।२९।०४	०७।१२।०८।२१	०७।१५।२१।५८	०७।१४।२४।०३	०७।१३।२५।४१	०८।२७।३५।२४	०८।२४।१७।४०	०४।२६।४५।२०	०९।१८।४६।२९	१०।२४।४५	९।२७।४०	२८
२९	०४।३३।००	०७।१३।०९।०८	०७।२७।१४।५०	०७।१५।०७।३५	०७।१४।५९।५३	०८।२७।४७।१७	०८।२५।२८।३२	०४।२६।४८।५०	०९।१८।४३।१८	१०।२४।४५	९।२७।४१	२९
३०	०४।३६।५७	०७।१४।०९।५६	०८।०९।०४।०७	०७।१५।५१।२०	०७।१६।३४।०१	०८।२७।५९।१५	०८।२६।३९।२८	०४।२६।५२।१४	०९।१८।४०।०८	१०।२४।४५	९।२७।४२	३०

दिसम्बर सन् २००८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५९'।०६'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०६°।१९'(मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
दिस.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	दिस.
१	०४।४०।५३	०७।१५।१०।४६	०८।२०।५१।५५	०७।१६।३४।४९	०७।१८।०८।०४	०८।२८।११।१८	०८।२७।४९।५९	०४।२६।५५।३३	०९।१८।३६।५७	१०।२४।४५	९।२७।४३	१
२	०४।४४।५०	०७।१६।११।३६	०९।०२।४१।००	०७।१७।१८।३०	०७।१९।४२।०२	०८।२८।२३।२६	०८।२९।००।३५	०४।२६।५८।४५	०९।१८।३३।४६	१०।२४।४६	९।२७।४४	२
३	०४।४८।४६	०७।१७।१२।२८	०९।१४।३४।५६	०७।१८।०२।१४	०७।२१।१५।५८	०८।२८।३५।३८	०९।००।११।०५	०४।२७।०१।५२	०९।१८।३०।३५	१०।२४।४६	९।२७।४५	३
४	०४।५२।४३	०७।१८।१३।२०	०९।२६।३७।५७	०७।१८।४६।०२	०७।२२।४९।५२	०८।२८।४७।५५	०९।०१।२२।२९	०४।२७।०४।५३	०९।१८।२७।२४	१०।२४।४६	९।२७।४६	४
५	०४।५६।४०	०७।१९।१४।१३	१०।०८।५४।५२	०७।१९।२९।५२	०७।२४।२३।४५	०८।२९।००।१६	०९।०२।३३।४७	०४।२७।०७।४८	०९।१८।२४।१३	१०।२४।४७	९।२७।४७	५
६	०५।००।३६	०७।२०।१५।०७	१०।२१।३०।४५	०७।२०।१३।४५	०७।२५।५७।३६	०८।२९।१२।४२	०९।०३।४१।५९	०४।२७।१०।३७	०९।१८।२१।०३	१०।२४।४७	९।२७।४८	६
७	०५।०४।३३	०७।२१।१६।०२	११।०४।३०।२८	०७।२०।५७।४०	०७।२७।३१।२८	०८।२९।२५।११	०९।०४।५२।०४	०४।२७।१३।२०	०९।१८।१७।५२	१०।२४।४७	९।२७।४९	७
८	०५।०८।२९	०७।२२।१६।५७	११।१७।५८।००	०७।२१।४१।३९	०७।२९।०५।१९	०८।२९।३७।४५	०९।०६।०२।०२	०४।२७।१५।५६	०९।१८।१४।४१	१०।२४।४८	९।२७।५०	८
९	०५।१२।२६	०७।२३।१७।५३	००।०१।५५।३६	०७।२२।२५।४१	०८।००।३९।१२	०८।२९।५०।२३	०९।०७।११।५३	०४।२७।१८।२७	०९।१८।११।३१	१०।२४।४८	९।२७।५२	९
१०	०५।१६।२२	०७।२४।१८।५०	००।१६।२२।४६	०७।२३।०९।४६	०८।०२।१३।०५	०९।००।०३।०५	०९।०८।२१।३६	०४।२७।२०।५२	०९।१८।०८।२०	१०।२४।४९	९।२७।५३	१०
११	०५।२०।१९	०७।२५।१९।४७	०१।०१।१५।३८	०७।२३।५३।५४	०८।०३।४७।००	०९।००।१५।५१	०९।०९।३१।१२	०४।२७।२३।१०	०९।१८।०५।०९	१०।२४।५०	९।२७।५४	११
१२	०५।२४।१५	०७।२६।२०।४६	०१।१६।२६।४४	०७।२४।३८।०५	०८।०५।२०।५५	०९।००।२८।४०	०९।१०।४०।४०	०४।२७।२५।२२	०९।१८।०१।५८	१०।२४।५०	९।२७।५५	१२
१३	०५।२८।१२	०७।२७।२१।४५	०२।०१।४५।५६	०७।२५।२२।१९	०८।०६।५४।५२	०९।००।४१।३३	०९।११।५०।००	०४।२७।२७।२८	०९।१७।५८।४७	१०।२४।५१	९।२७।५७	१३
१४	०५।३२।०९	०७।२८।२२।४४	०२।१७।०१।५८	०७।२६।०६।३६	०८।०८।२८।४८	०९।००।५४।३०	०९।१२।५९।११	०४।२७।२९।२८	०९।१७।५५।३६	१०।२४।५२	९।२७।५८	१४
१५	०५।३६।०५	०७।२९।२३।४५	०३।०२।०४।३१	०७।२६।५०।५६	०८।१०।०२।४३	०९।०१।०७।३०	०९।१४।०८।१४	०४।२७।३१।२१	०९।१७।५२।२५	१०।२४।५३	९।२७।५९	१५
१६	०५।४०।०२	०८।००।२४।४७	०३।१६।४५।४७	०७।२७।३५।१८	०८।११।३६।३६	०९।०१।२०।३४	०९।१५।१७।०८	०४।२७।३३।०८	०९।१७।४९।१४	१०।२४।५४	९।२८।०१	१६
१७	०५।४३।५८	०८।०१।२५।४९	०४।०१।०१।१४	०७।२८।१९।४४	०८।१३।१०।२६	०९।०१।३३।४१	०९।१६।२५।५३	०४।२७।३४।४८	०९।१७।४६।०३	१०।२४।५५	९।२८।०२	१७
१८	०५।४७।५५	०८।०२।२६।५३	०४।१४।४९।३०	०७।२९।०४।१३	०८।१४।४४।०९	०९।०१।४६।५१	०९।१७।३४।२९	०४।२७।३६।२३	०९।१७।४२।५२	१०।२४।५६	९।२८।०४	१८
१९	०५।५१।५१	०८।०३।२७।५७	०४।२८।११।४१	०७।२९।४८।४५	०८।१६।१७।४४	०९।०२।००।०४	०९।१८।४२।५५	०४।२७।३७।५०	०९।१७।३९।४२	१०।२४।५७	९।२८।०५	१९
२०	०५।५५।४८	०८।०४।२९।०२	०५।११।१०।३३	०८।००।३३।२०	०८।१७।५१।०७	०९।०२।१३।२१	०९।१९।५१।१२	०४।२७।३९।११	०९।१७।३६।३१	१०।२४।५८	९।२८।०७	२०
२१	०५।५९।४५	०८।०५।३०।०८	०५।२३।४९।४२	०८।०१।१७।५८	०८।१९।२४।१४	०९।०२।२६।४१	०९।२०।५९।१८	०४।२७।४०।२६	०९।१७।३३।२०	१०।२४।५९	९।२८।०८	२१
२२	०६।०३।४१	०८।०६।३१।१५	०६।०६।१२।४६	०८।०२।०२।३९	०८।२०।५६।५९	०९।०२।४०।०३	०९।२२।०७।१५	०४।२७।४१।३४	०९।१७।३०।१०	१०।२५।००	९।२८।१०	२२
२३	०६।०७।३८	०८।०७।३२।२२	०६।१८।२३।५४	०८।०२।४७।२२	०८।२२।२९।१६	०९।०२।५३।२९	०९।२३।१५।००	०४।२७।४२।३५	०९।१७।२६।५९	१०।२५।०२	९।२८।११	२३
२४	०६।११।३४	०८।०८।३३।३१	०७।००।२५।५२	०८।०३।३२।०९	०८।२४।००।५९	०९।०३।०६।५७	०९।२४।२२।३५	०४।२७।४३।३०	०९।१७।२३।४८	१०।२५।०३	९।२८।१३	२४
२५	०६।१५।३१	०८।०९।३४।३९	०७।१२।२१।३३	०८।०४।१६।५९	०८।२५।३१।५८	०९।०३।२०।२८	०९।२५।२९।५८	०४।२७।४४।१८	०९।१७।२०।३७	१०।२५।०४	९।२८।१५	२५
२६	०६।१९।२७	०८।१०।३५।४८	०७।२४।१३।१६	०८।०५।०१।४१	०८।२७।०२।०२	०९।०३।३४।०२	०९।२६।३७।०९	०४।२७।४५।००	०९।१७।१७।२६	१०।२५।०६	९।२८।१६	२६
२७	०६।२३।२४	०८।११।३६।५८	०८।०६।०२।५५	०८।०५।४६।४६	०८।२८।३१।०१	०९।०३।४७।३८	०९।२७।४४।०८	०४।२७।४५।३५	०९।१७।१४।१५	१०।२५।०७	९।२८।१८	२७
२८	०६।२७।२०	०८।१२।३८।०८	०८।१७।५२।१७	०८।०६।३१।४४	०८।२९।५८।३८	०९।०४।०१।१७	०९।२८।५०।५५	०४।२७।४६।०३	०९।१७।११।०४	१०।२५।०९	९।२८।२०	२८
२९	०६।३१।१७	०८।१३।३९।१८	०८।२९।४३।११	०८।०७।१६।४४	०९।०१।२४।३८	०९।०४।१४।५८	०९।२९।५७।२८	०४।२७।४६।२५	०९।१७।०७।५३	१०।२५।१०	९।२८।२१	२९
३०	०६।३५।१४	०८।१४।४०।२८	०९।११।३७।३५	०८।०८।०१।४८	०९।०२।४८।४१	०९।०४।२८।४१	१०।०१।०३।४७	०४।२७।४६।४०	०९।१७।०४।४३	१०।२५।१२	९।२८।२३	३०
३१	०६।३९।१०	०८।१५।४१।३८	०९।२३।३७।५५	०८।०८।४६।५३	०९।०४।१०।२३	०९।०४।४२।२६	१०।०२।०९।५३	व.०४।२७।४६।४८	०९।१७।०१।३२	१०।२५।१३	९।२८।२५	३१

जनवरी सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५९'।११'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०७°।१६'(मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
जन.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	जन.
१	०६।४३।०७	०८।१६।४२।४९	१०।०५।४७।०३	०८।०९।३२।०२	०९।०५।२९।१९	०९।०४।५६।१४	१०।०३।१५।४४	०४।२७।४६।४९	०९।१६।५८।२१	१०।२५।१५	९।२८।२७	१
२	०६।४७।०३	०८।१७।४३।५९	१०।१८।०८।१८	०८।१०।१७।१३	०९।०६।४४।५९	०९।०५।१०।०३	१०।०४।२१।१९	०४।२७।४६।४४	०९।१६।५५।१०	१०।२५।१७	९।२८।२९	२
३	०६।५१।००	०८।१८।४५।०९	११।००।४५।२३	०८।११।०२।२६	०९।०७।५६।४८	०९।०५।२३।५४	१०।०५।२६।३९	०४।२७।४६।३३	०९।१६।५२।००	१०।२५।१९	९।२८।३०	३
४	०६।५४।५६	०८।१९।४६।१८	११।१३।४२।०५	०८।११।४७।४२	०९।०९।०४।०९	०९।०५।३७।४७	१०।०६।३१।४२	०४।२७।४६।१४	०९।१६।४८।४९	१०।२५।२०	९।२८।३२	४
५	०६।५८।५३	०८।२०।४७।२८	११।२७।०१।५०	०८।१२।३३।००	०९।१०।०६।१८	०९।०५।५१।४२	१०।०७।३६।२८	०४।२७।४५।४९	०९।१६।४५।३८	१०।२५।२२	९।२८।३४	५
६	०७।०२।४९	०८।२१।४८।३७	००।१०।४७।०७	०८।१३।१८।२१	०९।११।०२।२९	०९।०६।०५।३८	१०।०८।४०।५६	०४।२७।४५।१८	०९।१६।४२।२७	१०।२५।२४	९।२८।३६	६
७	०७।०६।४६	०८।२२।४९।४५	००।२४।५८।४२	०८।१४।०३।४४	०९।११।५१।५१	०९।०६।१९।३६	१०।०९।४५।०६	०४।२७।४४।४०	०९।१६।३९।१६	१०।२५।२६	९।२८।३८	७
८	०७।१०।४३	०८।२३।५०।५४	०१।०९।३४।५४	०८।१४।४९।१०	०९।१२।३३।३२	०९।०६।३३।३५	१०।१०।४८।५६	०४।२७।४३।५५	०९।१६।३६।०६	१०।२५।२८	९।२८।४०	८
९	०७।१४।३९	०८।२४।५२।०१	०१।२४।३१।१०	०८।१५।३४।३८	०९।१३।०६।३६	०९।०६।४७।३५	१०।११।५२।२७	०४।२७।४३।०४	०९।१६।३२।५५	१०।२५।३०	९।२८।४२	९
१०	०७।१८।३६	०८।२५।५३।०९	०२।०९।४०।०८	०८।१६।२०।०८	०९।१३।३०।१०	०९।०७।०१।३७	१०।१२।५५।३७	०४।२७।४२।०७	०९।१६।२९।४४	१०।२५।३२	९।२८।४४	१०
११	०७।२२।३२	०८।२६।५४।१६	०२।२४।५२।२६	०८।१७।०५।४०	व.०९।१३।४३।२५	०९।०७।१५।४०	१०।१३।५८।२७	०४।२७।४१।०३	०९।१६।२६।३३	१०।२५।३४	९।२८।४६	११
१२	०७।२६।२९	०८।२७।५५।२२	०३।०९।५८।०६	०८।१७।५१।१६	०९।१३।४५।३८	०९।०७।२९।४४	१०।१५।००।५४	०४।२७।३९।५२	०९।१६।२३।२२	१०।२५।३६	९।२८।४८	१२
१३	०७।३०।२५	०८।२८।५६।२९	०३।२४।४८।०९	०८।१८।३६।५३	०९।१३।३६।१८	०९।०७।४३।४९	१०।१६।०२।५९	०४।२७।३८।३५	०९।१६।२०।११	१०।२५।३९	९।२८।५०	१३
१४	०७।३४।२२	०८।२९।५७।३५	०४।०९।१५।४८	०८।१९।२२।३३	०९।१३।१५।१०	०९।०७।५७।५५	१०।१७।०४।४०	०४।२७।३७।१२	०९।१६।१७।००	१०।२५।४१	९।२८।५२	१४
१५	०७।३८।१९	०९।००।५८।४१	०४।२३।१७।०६	०८।२०।०८।१५	०९।१२।४२।२१	०९।०८।१२।०२	१०।१८।०५।५८	०४।२७।३५।४३	०९।१६।१३।४९	१०।२५।४३	९।२८।५४	१५
१६	०७।४२।१५	०९।०१।५९।४७	०५।०६।५०।५४	०८।२०।५४।००	०९।११।५८।२०	०९।०८।२६।१०	१०।१९।०६।५१	०४।२७।३४।०७	०९।१६।१०।३९	१०।२५।४५	९।२८।५६	१६
१७	०७।४६।१२	०९।०३।००।५३	०५।१९।५८।२४	०८।२१।३९।४७	०९।११।०४।०६	०९।०८।४०।१९	१०।२०।०७।१८	०४।२७।३२।२५	०९।१६।०७।२८	१०।२५।४८	९।२८।५८	१७
१८	०७।५०।०८	०९।०४।०१।५८	०६।०२।४२।२८	०८।२२।२५।३७	०९।१०।०१।०३	०९।०८।५४।२८	१०।२१।०७।१९	०४।२७।३०।३७	०९।१६।०४।१७	१०।२५।५०	९।२९।००	१८
१९	०७।५४।०५	०९।०५।०३।०३	०६।१५।०६।५७	०८।२३।११।२९	०९।०८।५१।०२	०९।०९।०८।३८	१०।२२।०६।५३	०४।२७।२८।४३	०९।१६।०१।०७	१०।२५।५३	९।२९।०२	१९
२०	०७।५८।०१	०९।०६।०४।०८	०६।२७।१६।११	०८।२३।५७।२३	०९।०७।३६।११	०९।०९।२२।४९	१०।२३।०५।५९	०४।२७।२६।४३	०९।१५।५७।५६	१०।२५।५५	९।२९।०४	२०
२१	०८।०१।५८	०९।०७।०५।१३	०७।०९।१४।३३	०८।२४।४३।१९	०९।०६।१८।५३	०९।०९।३७।००	१०।२४।०४।३६	०४।२७।२४।३६	०९।१५।५४।४५	१०।२५।५८	९।२९।०७	२१
२२	०८।०५।५४	०९।०८।०६।१७	०७।२१।०६।१०	०८।२५।२९।१८	०९।०५।०१।३१	०९।०९।५१।१२	१०।२५।०२।४३	०४।२७।२२।२४	०९।१५।५१।३४	१०।२६।००	९।२९।०९	२२
२३	०८।०९।५१	०९।०९।०७।२०	०८।०२।५४।४८	०८।२६।१५।१८	०९।०३।४६।२१	०९।१०।०५।२४	१०।२६।००।१८	०४।२७।२०।०५	०९।१५।४८।२३	१०।२६।०३	९।२९।११	२३
२४	०८।१३।४८	०९।१०।०८।२३	०८।१४।४३।३९	०८।२७।०१।२१	०९।०२।३५।२५	०९।१०।१९।३६	१०।२६।५७।२१	०४।२७।१७।४१	०९।१५।४५।१२	१०।२६।०५	९।२९।१३	२४
२५	०८।१७।४४	०९।११।०९।२५	०८।२६।३५।२७	०८।२७।४७।२६	०९।०१।३०।२५	०९।१०।३३।४५	१०।२७।५३।५०	०४।२७।१५।११	०९।१५।४२।०१	१०।२६।०८	९।२९।१५	२५
२६	०८।२१।४१	०९।१२।१०।२७	०९।०८।३२।३०	०८।२८।३३।३३	०९।००।३२।३८	०९।१०।४७।५८	१०।२८।४९।४५	०४।२७।१२।३६	०९।१५।३८।५१	१०।२६।१०	९।२९।१७	२६
२७	०८।२५।३७	०९।१३।११।२८	०९।२०।३६।४१	०८।२९।१९।४२	०८।२९।४३।००	०९।११।०२।१०	१०।२९।४५।०३	०४।२७।०९।५४	०९।१५।३५।४०	१०।२६।१३	९।२९।२०	२७
२८	०८।२९।३४	०९।१४।१२।२७	१०।०२।४९।४३	०९।००।०५।५३	०८।२९।०२।०२	०९।११।१६।२२	११।००।३९।४३	०४।२७।०७।०८	०९।१५।३२।२९	१०।२६।१६	९।२९।२२	२८
२९	०८।३३।३०	०९।१५।१३।२६	१०।१५।१३।०८	०९।००।५२।०५	०८।२८।२९।५७	०९।११।३०।३४	११।०१।३३।४४	०४।२७।०४।१५	०९।१५।२९।१८	१०।२६।१९	९।२९।२४	२९
३०	०८।३७।२७	०९।१६।१४।२४	१०।२७।४८।३४	०९।०१।३८।१९	०८।२८।०६।४४	०९।११।४४।४५	११।०२।२७।०५	०४।२७।०१।१८	०९।१५।२६।०८	१०।२६।२१	९।२९।२६	३०
३१	०८।४१।२३	०९।१७।१५।२२	११।१०।१३।३८	०९।०२।२४।३५	०८।२७।५२।०९	०९।११।५८।५६	११।०३।१९।४३	०४।२६।५८।१५	०९।१५।२२।५७	१०।२६।२४	९।२९।२९	३१

फरवरी सन् २००९ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५९'।१६'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०८°।१९'(मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
फर.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	फर.
१	०८।४५।२०	०९।१८।१६।१६	११।२३।४२।०४	०९।०३।१०।५३	मा.०८।२७।४५।४१	०९।१२।१३।०६	११।०४।११।३६	०४।२६।५५।०७	०९।१५।१९।४६	१०।२६।२७	९।२९।३१	१
२	०८।४९।१७	०९।१९।१७।१०	००।०७।०३।२८	०९।०३।५७।१३	०८।२७।४७।२१	०९।१२।२७।१६	११।०५।०२।४४	०४।२६।५१।५४	०९।१५।१६।३६	१०।२६।३०	९।२९।३३	२
३	०८।५३।१३	०९।२०।१८।०३	००।२०।४३।०७	०९।०४।४३।३४	०८।२७।५६।११	०९।१२।४१।२५	११।०५।५३।०४	०४।२६।४८।३७	०९।१५।१३।२५	१०।२६।३३	९।२९।३५	३
४	०८।५७।१०	०९।२१।१८।५४	०१।०४।४१।३३	०९।०५।२९।५६	०८।२८।११।४९	०९।१२।५५।३३	११।०६।४२।३४	०४।२६।४५।१४	०९।१५।१०।१४	१०।२६।३६	९।२९।३८	४
५	०९।०१।०६	०९।२२।१९।४४	०१।१८।५८।०८	०९।०६।१६।२०	०८।२८।३३।४४	०९।१३।०९।४१	११।०७।३१।१३	०४।२६।४१।४७	०९।१५।०७।०३	१०।२६।३९	९।२९।४०	५
६	०९।०५।०३	०९।२३।२०।३२	०२।०३।३०।३९	०९।०७।०२।४६	०८।२९।०१।२५	०९।१३।२३।४७	११।०८।१८।५७	०४।२६।३८।१५	०९।१५।०३।५२	१०।२६।४२	९।२९।४२	६
७	०९।०८।५९	०९।२४।२१।१९	०२।१८।१५।०३	०९।०७।४९।१३	०८।२९।३४।२४	०९।१३।३७।५३	११।०९।०५।४५	०४।२६।३४।३९	०९।१५।००।४१	१०।२६।४५	९।२९।४४	७
८	०९।१२।५६	०९।२५।२२।०४	०३।०३।०५।३१	०९।०८।३५।४२	०९।००।१२।१४	०९।१३।५१।५७	११।०९।५१।३४	०४।२६।३०।५८	०९।१४।५७।३०	१०।२६।४८	९।२९।४७	८
९	०९।१६।५२	०९।२६।२२।४८	०३।१७।५४।५७	०९।०९।२२।१२	०९।००।५४।३१	०९।१४।०६।००	११।१०।३६।२३	०४।२६।२७।१३	०९।१४।५४।१९	१०।२६।५१	९।२९।४९	९
१०	०९।२०।४९	०९।२७।२३।३१	०४।०२।३५।५२	०९।१०।०८।४४	०९।०१।४०।५१	०९।१४।२०।०३	११।११।२०।०९	०४।२६।२३।२४	०९।१४।५१।०९	१०।२६।५४	९।२९।५१	१०
११	०९।२४।४६	०९।२८।२४।१२	०४।१७।०१।१७	०९।१०।५५।१७	०९।०२।३०।५४	०९।१४।३४।०३	११।१२।०२।४९	०४।२६।१९।३१	०९।१४।४७।५८	१०।२६।५७	९।२९।५४	११
१२	०९।२८।४२	०९।२९।२४।५३	०५।०१।०५।४९	०९।११।४१।५१	०९।०३।२४।२३	०९।१४।४८।०३	११।१२।४४।२१	०४।२६।१५।३४	०९।१४।४४।४७	१०।२७।००	९।२९।५६	१२
१३	०९।३२।३९	१०।००।२५।३२	०५।१४।४६।०९	०९।१२।२८।२८	०९।०४।२०।५९	०९।१५।०२।०१	११।१३।२४।४४	०४।२६।११।३४	०९।१४।४१।३७	१०।२७।०३	९।२९।५८	१३
१४	०९।३६।३५	१०।०१।२६।०९	०५।२८।०१।१६	०९।१३।१५।०५	०९।०५।२०।२७	०९।१५।१५।५८	११।१४।०३।५३	०४।२६।०७।३०	०९।१४।३८।२६	१०।२७।०६	१०।००।००	१४
१५	०९।४०।३२	१०।०२।२६।४६	०६।१०।५२।१४	०९।१४।०१।४४	०९।०६।२२।३६	०९।१५।२९।५३	११।१४।४१।४६	०४।२६।०३।२२	०९।१४।३५।१५	१०।२७।१०	१०।००।०३	१५
१६	०९।४४।२८	१०।०३।२७।२१	०६।२३।२१।४९	०९।१४।४८।२५	०९।०७।२७।११	०९।१५।४३।४७	११।१५।१८।२०	०४।२५।५९।११	०९।१४।३२।०५	१०।२७।१३	१०।००।०५	१६
१७	०९।४८।२५	१०।०४।२७।५६	०७।०५।३३।५७	०९।१५।३५।०६	०९।०८।३४।०४	०९।१५।५७।३९	११।१५।५३।३३	०४।२५।५४।५६	०९।१४।२८।५४	१०।२७।१६	१०।००।०७	१७
१८	०९।५२।२१	१०।०५।२८।२९	०७।१७।३३।१४	०९।१६।२१।४९	०९।०९।४३।०३	०९।१६।११।२९	११।१६।२७।२१	०४।२५।५०।३९	०९।१४।२५।४३	१०।२७।१९	१०।००।०९	१८
१९	०९।५६।१८	१०।०६।२९।००	०७।२९।२४।३५	०९।१७।०८।३४	०९।१०।५४।०२	०९।१६।२५।१७	११।१६।५९।४१	०४।२५।४६।१८	०९।१४।२२।३२	१०।२७।२३	१०।००।१२	१९
२०	१०।००।१५	१०।०७।२९।३१	०८।११।१२।५०	०९।१७।५५।१९	०९।१२।०६।५१	०९।१६।३९।०३	११।१७।३०।३०	०४।२५।४१।५५	०९।१४।१९।२१	१०।२७।२६	१०।००।१४	२०
२१	१०।०४।११	१०।०८।३०।००	०८।२३।०२।३१	०९।१८।४२।०६	०९।१३।२१।२६	०९।१६।५२।४७	११।१७।५९।४४	०४।२५।३७।२९	०९।१४।१६।१०	१०।२७।२९	१०।००।१६	२१
२२	१०।०८।०८	१०।०९।३०।२७	०९।०४।५७।४०	०९।१९।२८।५४	०९।१४।३७।३९	०९।१७।०६।२९	११।१८।२७।२०	०४।२५।३३।०१	०९।१४।१३।००	१०।२७।३२	१०।००।१८	२२
२३	१०।१२।०४	१०।१०।३०।५३	०९।१७।०१।४०	०९।२०।१५।४२	०९।१५।५५।२६	०९।१७।२०।०९	११।१८।५३।१३	०४।२५।२८।३०	०९।१४।०९।४९	१०।२७।३६	१०।००।२१	२३
२४	१०।१६।०१	१०।११।३१।१८	०९।२९।१७।०८	०९।२१।०२।३२	०९।१७।१४।४२	०९।१७।३३।४७	११।१९।१७।२१	०४।२५।२३।५७	०९।१४।०६।३८	१०।२७।३९	१०।००।२३	२४
२५	१०।१९।५७	१०।१२।३१।४१	१०।११।४५।४९	०९।२१।४९।२३	०९।१८।३५।२४	०९।१७।४७।२२	११।१९।३९।३९	०४।२५।१९।२२	०९।१४।०३।२७	१०।२७।४२	१०।००।२५	२५
२६	१०।२३।५४	१०।१३।३२।०२	१०।२४।२८।३७	०९।२२।३६।१४	०९।१९।५७।२८	०९।१८।००।५४	११।२०।००।०४	०४।२५।१४।४५	०९।१४।००।१७	१०।२७।४६	१०।००।२७	२६
२७	१०।२७।५०	१०।१४।३२।२२	११।०७।२५।४३	०९।२३।२३।०६	०९।२१।२०।५१	०९।१८।१४।२४	११।२०।१८।३१	०४।२५।१०।०६	०९।१३।५७।०६	१०।२७।४९	१०।००।३०	२७
२८	१०।३१।४७	१०।१५।३२।३९	११।२०।३६।४०	०९।२४।०९।५९	०९।२२।४५।३०	०९।१८।२७।५२	११।२०।३४।५७	०४।२५।०५।२५	०९।१३।५३।५५	१०।२७।५२	१०।००।३२	२८

मार्च सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५९'।२०'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०८°।५९'(मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
मार्च	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	मार्च
१	१०।३५।४३	१०।१६।३२।५५	००।०४।००।३७	०९।२४।५६।५३	०९।२४।११।२४	०९।१८।४१।१६	११।२०।४९।१७	०४।२५।००।४४	०९।१३।५०।४५	१०।२७।५६	१०।००।३४	१
२	१०।३९।४०	१०।१७।३३।०९	००।१७।३६।३३	०९।२५।४३।४७	०९।२५।३८।३१	०९।१८।५४।३८	११।२१।०१।२९	०४।२४।५६।०१	०९।१३।४७।३४	१०।२७।५९	१०।००।३६	२
३	१०।४३।३७	१०।१८।३३।२१	०१।०१।२३।२७	०९।२६।३०।४१	०९।२७।०६।५०	०९।१९।०७।५७	११।२१।११।२७	०४।२४।५१।१७	०९।१३।४४।२३	१०।२८।०३	१०।००।३९	३
४	१०।४७।३३	१०।१९।३३।३०	०१।१५।२०।२०	०९।२७।१७।३६	०९।२८।३६।१८	०९।१९।२१।१३	११।२१।१९।०८	०४।२४।४६।३२	०९।१३।४१।१२	१०।२८।०६	१०।००।४१	४
५	१०।५१।३०	१०।२०।३३।३८	०१।२९।२६।११	०९।२८।०४।३२	१०।००।०६।५६	०९।१९।३४।२५	११।२१।२४।३०	०४।२४।४१।४६	०९।१३।३८।०२	१०।२८।०९	१०।००।४३	५
६	१०।५५।२६	१०।२१।३३।४३	०२।१३।३९।४४	०९।२८।५१।२८	१०।०१।३८।४२	०९।१९।४७।३५	व.११।२१।२७।२८	०४।२४।३७।००	०९।१३।३४।५१	१०।२८।१३	१०।००।४५	६
७	१०।५९।२३	१०।२२।३३।४६	०२।२७।५९।०८	०९।२९।३८।२४	१०।०३।११।३७	०९।२०।००।४१	११।२१।२८।००	०४।२४।३२।१३	०९।१३।३१।४०	१०।२८।१६	१०।००।४७	७
८	११।०३।१९	१०।२३।३३।४७	०३।१२।२१।४३	१०।००।२५।२१	१०।०४।४५।३९	०९।२०।१३।४४	११।२१।२६।०४	०४।२४।२७।२६	०९।१३।२८।२९	१०।२८।२०	१०।००।४९	८
९	११।०७।१६	१०।२४।३३।४६	०३।२६।४३।५१	१०।०१।१२।१८	१०।०६।२०।५०	०९।२०।२६।४३	११।२१।२१।३८	०४।२४।२२।४०	०९।१३।२५।१८	१०।२८।२३	१०।००।५१	९
१०	११।११।१३	१०।२५।३३।४३	०४।११।०१।००	१०।०१।५९।१५	१०।०७।५७।०९	०९।२०।३९।३९	११।२१।१४।४१	०४।२४।१७।५३	०९।१३।२२।०८	१०।२८।२७	१०।००।५४	१०
११	११।१५।०९	१०।२६।३३।३८	०४।२५।०८।१५	१०।०२।४६।१३	१०।०९।३४।३७	०९।२०।५२।३१	११।२१।०५।१३	०४।२४।१३।०७	०९।१३।१८।५७	१०।२८।३०	१०।००।५६	११
१२	११।१९।०६	१०।२७।३३।३१	०५।०९।००।५३	१०।०३।३३।११	१०।११।१३।१४	०९।२१।०५।२०	११।२०।५३।१३	०४।२४।०८।२०	०९।१३।१५।४६	१०।२८।३३	१०।००।५८	१२
१३	११।२३।०२	१०।२८।३३।२२	०५।२२।३५।०५	१०।०४।२०।०९	१०।१२।५३।००	०९।२१।१८।०५	११।२०।३८।४४	०४।२४।०३।३४	०९।१३।१२।३६	१०।२८।३७	१०।०१।००	१३
१४	११।२६।५९	१०।२९।३३।११	०६।०५।४८।३०	१०।०५।०७।०८	१०।१४।३३।५६	०९।२१।३०।४६	११।२०।२१।४८	०४।२३।५८।४९	०९।१३।०९।२५	१०।२८।४०	१०।०१।०२	१४
१५	११।३०।५५	११।००।३२।५८	०६।१८।४०।३३	१०।०५।५४।०७	१०।१६।१६।०३	०९।२१।४३।२४	११।२०।०२।२८	०४।२३।५४।०४	०९।१३।०६।१४	१०।२८।४४	१०।०१।०४	१५
१६	११।३४।५२	११।०१।३२।४४	०७।०१।१२।२७	१०।०६।४१।०६	१०।१७।५९।२२	०९।२१।५५।५७	११।१९।४०।४७	०४।२३।४९।२१	०९।१३।०३।०४	१०।२८।४७	१०।०१।०६	१६
१७	११।३८।४८	११।०२।३२।२८	०७।१३।२६।५६	१०।०७।२८।०५	१०।१९।४३।५२	०९।२२।०८।२७	११।१९।१६।५२	०४।२३।४४।३८	०९।१२।५९।५३	१०।२८।५०	१०।०१।०८	१७
१८	११।४२।४५	११।०३।३२।१०	०७।२५।२७।५६	१०।०८।१५।०४	१०।२१।२९।३६	०९।२२।२०।५२	११।१८।५०।४९	०४।२३।३९।५७	०९।१२।५६।४२	१०।२८।५४	१०।०१।१०	१८
१९	११।४६।४२	११।०४।३१।५१	०८।०७।२०।१४	१०।०९।०२।०४	१०।२३।१६।३४	०९।२२।३३।१४	११।१८।२२।४४	०४।२३।३५।१७	०९।१२।५३।३१	१०।२८।५७	१०।०१।१२	१९
२०	११।५०।३८	११।०५।३१।२९	०८।१९।०९।०१	१०।०९।४९।०३	१०।२५।०४।४६	०९।२२।४५।३०	११।१७।५२।४८	०४।२३।३०।३९	०९।१२।५०।२०	१०।२९।०१	१०।०१।१४	२०
२१	११।३४।३५	११।०६।३१।०६	०९।००।५९।३७	१०।१०।३६।०३	१०।२६।५४।१३	०९।२२।५७।४३	११।१७।२१।०९	०४।२३।२६।०२	०९।१२।४७।१०	१०।२९।०४	१०।०१।१६	२१
२२	११।५८।३१	११।०७।३०।४१	०९।१२।५७।०७	१०।११।२३।०२	१०।२८।४४।५६	०९।२३।०९।५१	११।१६।४७।५९	०४।२३।२१।२८	०९।१२।४३।५९	१०।२९।०८	१०।०१।१८	२२
२३	१२।०२।२८	११।०८।३०।१५	०९।२५।०६।०८	१०।१२।१०।०१	११।००।३६।५५	०९।२३।२१।५४	११।१६।१३।२९	०४।२३।१६।५५	०९।१२।४०।४८	१०।२९।११	१०।०१।२०	२३
२४	१२।०६।२४	११।०९।२९।४६	१०।०७।३०।२६	१०।१२।५७।००	११।०२।३०।०९	०९।२३।३३।५३	११।१५।३७।५२	०४।२३।१२।२५	०९।१२।३७।३७	१०।२९।१४	१०।०१।२२	२४
२५	१२।१०।२१	११।१०।२९।१६	१०।२०।१२।३९	१०।१३।४३।५९	११।०४।२४।३९	०९।२३।४५।४७	११।१५।०१।२२	०४।२३।०७।५७	०९।१२।३४।२७	१०।२९।१८	१०।०१।२४	२५
२६	१२।१४।१७	११।११।२८।४४	११।०३।१३।५९	१०।१४।३०।५७	११।०६।२०।२३	०९।२३।५७।३६	११।१४।२४।१३	०४।२३।०३।३१	०९।१२।३१।१६	१०।२९।२१	१०।०१।२५	२६

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
चैत्र शुक्ल पक्ष: १

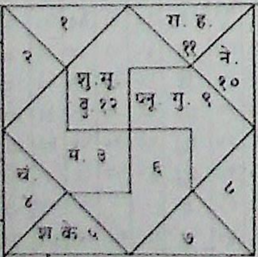
ता. ७ से २० अप्रैल सन् २००८ ई., राष्ट्रीय ामात १८ से ३१ चैत्र तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

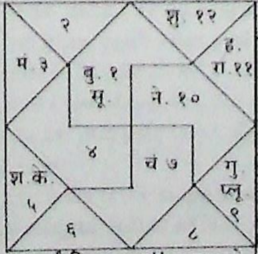
ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. (चैत्र)	मु. (र.उ.अ.)	अं. (अप्रैल)	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१८	चै.१	चं	००	०२	०६	०९	अश्वि	३१	०१	१८	३२	वै	७/२७	२०/२३	ब	१५	५५	३१	१५	६	०८	१८	३९	२५	२१	७	मेष	चन्द्रदर्शन मु. १५, द. श्रृंगोन्नति, संवत्सर प्रा., चेतीचांद (सिन्धी), चन्द्रव्रत, श्री गौतम जं.,
०	२	चं	५१	३०	२६	४४	०	००	००	००	००	०	००	००	०	००	००	००	००	०	००	००	००	००	०	०	० ० ०	द्वितीया तिथि क्षय C मेला बाहूफोर्ट (का.), अन्नपूर्णा जं., मेला मनसा देवी (हरि.)
१९	३	मं	४३	००	२३	११	भ	२४	२६	१५	५४	प्री	२३	२७	तै	१३	०१	३१	१९	६	०७	१८	३९	२६	१	८	वृ. २१।१५	पुन में मंगल ८/२३, रेवती में बुध १५/१३, मत्स्य जयंती, गौरी व्रत, गणगौर A
२०	४	बु	३४	५१	२०	०६	कृ	१८	११	१३	२२	आ	११	४०	व	०९	४०	३१	२३	६	०६	१८	४०	२७	२	९	वृष	भद्रा ९/४० से २०/०६ तक, विनायक ४, D आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण, अम्बेडकर ज.,
२१	५	गु	२७	४५	१७	११	रो	१२	३७	११	०८	सौ	१६	०८	ब	०६	३५	३१	२८	६	०५	१८	४०	२८	३	१०	मि. २२।०९	श्रीपंचमी, हयव्रत, नागपंचमी, A आन्दोलन ३ (सरहुल-बिहार), १ ३ मु ४.
२२	६	शु	२१	३८	१४	४३	मृ	०८	०५	०९	१८	शो	१२	५८	तै	१४	४३	३१	३२	६	०४	१८	४१	२९	४	११	मिथुन	कालरात्रि ७, स्कन्द षष्ठी, मेला माईसरखाना (पं.), यमुना षष्ठी,
२३	७	श	१६	५०	१२	४७	आ	०४	४१	०७	५८	अ	१०	१४	व	१२	४७	३१	३६	६	०३	१८	४१	३०	५	१२	क. २५।२१	भद्रा १२/४७ से २४/०२ तक, आयंबिल ओली प्रा. (जैन),
२४	८	र	१३	२१	११	२५	पुन	०२	५८	०७	१३	सु	०७	५८	ब	११	२५	३१	४०	६	०२	१८	४२	वै.१	६	१३	कर्क	अश्वि. मेष में सूर्य १८/२९, मु. ३०, विषुवत् सं. पुण्य १२/०५ से, वैशाख प्रा., श्रीदुर्गाष्टमी B
२५	९	चं	११	३६	१०	३९	पु	०२	३४	०७	०२	धृ	०६/२८	११/५०	कौ	१०	३९	३१	४४	६	०१	१८	४२	०२	७	१४	कर्क	अश्वि मेष में बुध २१/४९, रेवती में शुक्र २६/१३, श्रीरामनवमी व्र. (वै. का), तारा ज., नवरात्र समाप्त D
२६	१०	मं	११	०७	१०	२६	आ	०३	३४	०७	२५	ग	२७	५४	ग	०३	५४	३१	४८	६	००	१८	४३	०३	८	१५	सिं. ७।२५	भद्रा २२/३२ से, व्य. महापात २१/०५ से २५/१५ तक, हिमाचल दिवस,
२७	११	बु	११	५५	१०	४४	म	०५	५१	०८	११	वृ	२७	२१	वि	१०	४४	३१	५२	५	५९	१८	४४	०४	९	१६	सिंह	भद्रा १०/४४ तक, कामदा ११ व्रत सबका, B अशोकाष्टमी, श्रीरामनवमी व्रत (स्मार्तों का), C
२८	१२	वृ	१३	५१	११	३०	पूफा	०९	१४	०९	३१	ध्रु	२७	०६	बा	११	३०	३१	५६	५	५८	१८	४४	०५	१०	१७	क. १६।०३	प्रदोष व्रत, अशोक १३, अनंग १३, हरि दमनोत्सव, (वि मु उ.फा. में).
२९	१३	शु	१६	४५	१२	३९	उफा	१३	३५	११	२२	व्या	२७	०९	तै	१२	३८	३२	००	५	५६	१८	४५	०६	११	१८	कन्या	श्री महावीर जयंती (जैन), (वि मु. हस्त में). E सत्यव्रत, (वि मु. हस्त में)
३०	१४	श	२०	३१	१४	०८	ह	१८	४६	१३	२६	ह	२७	२६	व	१४	०८	३२	०४	५	५५	१८	४५	०७	१२	१९	तु. २६।३४	भद्रा १४/०८ से २६/५९ तक, महापात १५/२१ से २०/२८ तक, सायन वृष में सूर्य २२/२८, ग्रीष्मऋतु प्रा. E
३१	१५	र	२५	०२	१५	५५	चि	२४	४१	१५	४७	व	२७	५६	ब	१५	५५	३२	०८	५	५४	१८	४६	०८	१३	२०	तुला	श्री हनुमान जयंती (द. भा.), वैशाख स्नान प्रा., सिद्धांचल यात्रा, आयंबिल ओली समाप्त (जैन).

चैत्र शुक्ल ८ रवौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५८५२ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) चैत्र शुक्ल १५ रवौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५८५९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	३	२	११	८	११	४	१०	४
२१	२	२२	२५	२७	१४	८	०	०
२८	२१	११	५०	१८	२२	३	५४	५४
११	४२	६	३२	२७	३६	२६	३८	३८
५८	०७	२८	१२३	४	७४	२	३	३
४७	१५	५८	२०	४३	१	२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



प्लव नामक इस संवत्सर का प्रारम्भ सोमवार को हो रहा है। शास्त्र में इस संवत्सर का फल रोगकारक, दुर्भिक्षकारक एवं पीड़ादायक बताया गया है। रविवार के दिन सूर्य मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप दक्षिण तथा पश्चिम के देशों में दुर्भिक्ष आदि का भय, उत्तर के देशों में अशान्ति एवं युद्ध आदि का भय, पूर्व के देशों में सुभिक्ष आदि शुभफल होंगे। **"नैऋत्ये च यदा दृष्टि भयक्लेसं च दारुणम्। नृपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत्"**॥ नवमी को बुध मेष राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप पशु मंहगे होते हैं तथा स्वर्ण का भाव समान रहता है। **"यदा सौम्य: स्थितो मेषे महर्घ च चतुष्पदाम्। सुवर्ण समतां याति नात्र कार्या विचारणा"**॥ बुध के रेवती नक्षत्र में संचार से केशर के भाव तेज होते हैं। **"रेवत्यां नन्दनं चन्द्री महर्घ कुंकुमापि"**॥ मंगल के पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश करने से तिल एवं भैंसों की हानि होगी। सूर्य बुध एवं शुक्र के एक ही राशि में होने से वर्षा कम होती है एवं सब धान्यों के भावों में तेजी होती है। **"एक राशौ गता होते सौम्य शुक्रदिनाधिपा:। सर्वधान्यमहर्घत्वं मेघा स्वल्पजलप्रदा:"**॥ मंगल के पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश करने से रुई के भावों में तेजी होती है। शुक्र के रेवती नक्षत्र में प्रवेश करने से कपास, रुई, चन्दन और रत्नों के भाव गिर जाते हैं।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	६	२	०	८	११	४	१०	४
६	१	२५	१०	२७	२३	७	०	०
१८	२८	४४	३१	४७	०	५१	३२	३२
५५	५५	५७	३३	५५	२७	२०	२३	२३
५८	७२४	२९	१२७	३	७३	१	३	३
३२	३८	५७	२८	३१	५७	२०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- पक्ष के पूर्वार्द्ध में सूर्य बुध के दहना नाड़ी में रहने से तथा सूर्य, बुध, शुक्र के एक ही राशि में स्थित होने से वर्षा में कमी रहेगी। पक्ष के उत्तरार्द्ध में सूर्य के वायु नाड़ी में होने से तथा भौम शनि के नीरा नाड़ी में स्थित होने से तेज हवा के साथ कुछ स्थानों में बूंदाबांदी होगी तथा समुद्री भागों में भारी वर्षा व तूफान की सम्भावना है। पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, बंगाल में तेज वायु प्रवाह के साथ बूंदाबांदी होगी।

श्रीसंवत् २०६५ शकः १९३०
वैशाख कृष्ण पक्षः २

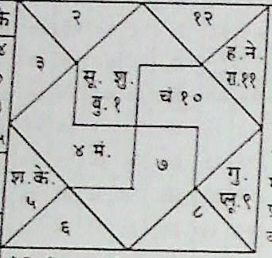
ता. २१ अप्रैल से ५ मई सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति १ से १५ वैशाख तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

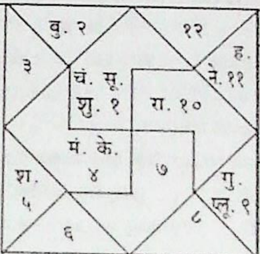
ता. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	हि. वैशाख	मु. र.उ.	अं. अप्रैल	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
वै.१	१	चं	३०	१३	१७	५९	स्वा	३१	१३	१८	२३	सि	२८	३७	कौ	१७	५८	३२	१२	५	५३	६	४६	०९	१४	२१	तुला	भरणी में बुध १३/१३, राष्ट्रीय वैशाख प्रा., श्री एकलिंगजी महोत्सव (राज.), A
२	२	मं	३५	५५	२०	१५	वि	३८	१७	२१	११	व्य	२९	२७	तै	०७	०५	३२	१६	५	५३	६	४७	१०	१५	२२	वृ.१०।२३	A (वि.मु. स्वाति में).
३	३	बु	४२	००	२२	४०	अनु	४५	४१	२४	०८	व	-	-	व	०९	२६	३२	२०	५	५२	६	४८	११	१६	२३	वृश्चिक	भद्रा ९/२७ से २२/४० तक,
४	४	गु	४८	११	२५	०७	ज्ये	५३	११	२७	०७	व	०६	२२	व	११	५३	३२	२३	५	५१	६	४९	१२	१७	२४	ध.२७।०७	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २२/३९,
५	५	शु	५४	०६	२७	२८	मू	६०	०	-	-	प	०७	१८	कौ	१४	११	३२	२७	५	५०	६	४९	१३	१८	२५	धनु	अश्विनी मेष में शुक्र २१/४१, अगस्त्य अस्त १६/२३,
६	६	श	५९	१८	२९	३२	मू	०	२६	०५	५९	शि	०८	०७	ग	१६	३३	३२	३१	५	४९	६	४९	१४	१९	२६	धनु	भद्रा २९/३२ से,
७	७	र	६०	००	-	-	पूषा	०६	५५	०८	३४	सि	०८	४२	वि	१८	२४	३२	३५	५	४८	६	५०	१५	२०	२७	म.१५।०९	भद्रा १८/२४ तक, भरणी में सूर्य १०/२४, कृतिका में बुध २४/१८, (वि.मु. उ.षाढ़ा में),
८	७	चं	०३	२३	०७	०८	उषा	१२	१४	१०	४१	सा	०८	५५	बा	०७	०८	३२	३८	५	४७	६	५१	१६	२१	२८	मकर	कर्क में मंगल १४/४६, बुध पश्चिम में उदय १२/५२, कालाष्टमी,
९	८	मं	०५	४९	०८	०५	श्र	१५	५७	१२	०९	शु	०८	३७	कौ	०८	०५	३२	४२	५	४६	६	५१	१७	२२	२९	कु.२४।३६	पंचक २४/३६ से, वृष में बुध १७/४०, वै. महापात १७/१६ से २१/४९ तक,
१०	९	बु	०६	१८	०८	१७	ध	१७	४५	१२	५१	शु	०७	४३	ग	०८	१६	३२	४६	५	४५	६	५२	१८	२३	३०	कुम्भ	भद्रा २०/०३ से, वक्री धनिष्ठा २ मकर में राहु आश्लेषा ४ कर्क में केतु ९/५५,
११	१०	गु	०४	४२	०७	३७	श	१७	२९	१२	४४	ब्र	६ २७	१० ५६	वि	०७	३७	३२	४९	५	४४	६	५२	१९	२४	म.१	कुम्भ	भद्रा ७/३७ तक, वरूथिनी ११ व्रत स्मार्तों का, मई मा. ५ दि. ३१.
१२	११	शु	०१	००	०६	०८	पूभा	१५	१०	११	४७	वै	२५	०४	बा	०६	०७	३२	५३	५	४४	६	५३	२०	२५	२	मी.६।०६	शुक्र वृद्धत्वारम्भ १२/५७, वरूथिनी ११ व्रत वैष्णवों का, त्रिस्पर्शाद्वादशी, B
०	१२	शु	५५	२१	२७	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	द्वादशी तिथि क्षय,
१३	१३	श	४८	०६	२४	५७	उभा	१०	५९	१०	०७	वि	२१	३९	ग	१४	२९	३२	५६	५	४३	६	५३	२१	२६	३	मीन	B श्री बल्लभाचार्य ज.,
१४	१४	र	३९	३६	२१	३२	रे	५ ५८	१८ २८	७ २९	४९ ०५	प्री	१७	४८	वि	११	१८	३३	००	५	४२	६	५४	२२	२७	४	मे.७।४९	भद्रा २४/५७ से, शनि मार्गी ८/४५, शनि प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि,
१५	३०	चं	३०	१८	१७	४८	भर	५१	०	२६	०५	आ	१३	४०	च	०७	४२	३३	०३	५	४१	६	५५	२३	२८	५	मेष	भद्रा ११/१८ तक, पंचक ७/४९ तक, पुष्य में मंगल २४/१६, महा. १६/५४ से २१/३६ तक, रोहिणी में बुध ११/२२, शुक्रास्त पूर्व में १२/५७, सोमवती अमावस्या,

वैशाख कृष्ण ८ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८६८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) **वैशाख कृष्ण ३० चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८७४**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	९	३	०	८	०	४	१०	४
१५	११	०	२१	२८	४	७	०	०
४	४१	१८	१	१३	५	४३	३	३
४१	०	५१	५१	६	४६	९	४५	४५
५८	७७०	३१	११३	१	७३	०	३	३
१७	१०	३	४४	५३	५४	२३	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
भरणी २	श्रवण ३	पुनर्वसु ४	कृत्तिका २	उषा १	अश्वि २	मघा ३	धनिष्ठा ३	मघा १



पंचमी के दिन शुक्र मेष राशि एवं अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप सब धान्य मंहगे होते हैं तथा भैंस आदि पशुओं को पीड़ा होती है। **''दैत्यगुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषीपशुपीड़ा च मेघवर्षा भविष्यति''॥** सप्तमी को मंगल अपनी नीच राशि कर्क में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से सब प्रकार के धान्यों के भावों में तेजी होगी तथा भैंस, गन्ना के भावों में तेजी का रुख होगा। **''भूमिपुत्रो यदा कर्के सर्वधान्य महर्घता। महिषीक्षुमहर्घं च भवेनैवात्र संशयः''॥** अष्टमी के दिन बुध वृष राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पृथ्वी में सर्वत्र अशान्ति-कलह होगी तथा महाभय का वातावरण बनेगा। **''सोमपुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुर्याच्च लक्षणम्। मेदिनीनवखण्डेषु कलहश्च महद्भयम्''॥** इस पक्ष में शुक्र देवतागण नक्षत्र में रहते हुए पूर्व दिशा में अस्त होगा इसके प्रभाव से गुर्जर-मालव आदि देशों में भय का वातावरण बनेगा तथा शासकों में आपसी विरोध बढ़ेगा तथा पहले धान्य मंहगा होगा तथा एक माह के उपरान्त धान्य सस्ता होगा। वर्षा अधिक होगी। सोने एवं चांदी के भावों में तेजी होगी। मारवाड़ देश में दुर्भिक्ष होगा एवं दिल्ली राज्य में सत्ता परिवर्तन सम्भव तथा भाग विशेष में संक्रामक रोग होता है एवं उत्तरी भाग में व्यापार द्वारा बहुत लाभ होता है एवं सुभिक्ष होता है। **''सुरगणेभृगुजास्तगतिर्यदा दिवस गुर्जरमालवमण्डले। भवतिदेशभयं नृपविग्रहः प्रथमतोऽपि च धान्यमहर्धता॥ पश्चात्समर्घता किंचिन्मासमेकं प्रवर्तते। खुरासाने महोत्पातो द्रव्यनाशोऽति दण्डता। प्रबला जलवृष्टिश्च मासषट्कात्परं भवेत्॥ हेमरुप्यमहर्घत्वं निद्रालुः सकलोजनः॥ मरुस्थलेषु दुर्भिक्षं दिल्यां राजविवर्तनम्। गोपालगिरि देशे स्यान्मारको नरकोपमः रोग बाहुल्यमथवा परचक्रपराभवः। व्यापारे बहुला लक्ष्मीः सुभिक्षमुत्तरापथे''॥**



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	०	३	१	८	०	४	९	३
२०	१३	३	९	२८	११	७	२९	२९
५४	३६	२६	३६	२१	२९	४२	४४	४४
२	१	५२	५१	३७	४	२५	४१	४१
५८	११४	३१	१३	०	७३	०	३	३
८	२०	४१	३८	४५	५८	१५	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
भरणी ३	भरणी २	पुष्य १	कृत्तिका ४	उषा. १	अश्वि. ४	मघा ३	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

आकाश लक्षण- सूर्य-बुध-शुक्र के एक ही राशि में स्थित होने तथा पक्ष के उत्तरार्द्ध में सूर्य-शुक्र के आगे बुध के स्थित होने से वर्षा में कमी होगी। तेज वायु का प्रवाह होगा। कहीं-कहीं तेज आंधी व तूफान के साथ बूंदाबांदी भी होगी। तेज वायु के साथ ऋतु परिवर्तन के लक्षण प्रकट होंगे एवं वायु के साथ गर्मी में वृद्धि होगी। कुछ भागों में बादलचाल के साथ छिटपुट बूंदाबांदी होगी।

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
वैशाख शुक्ल पक्ष: ३

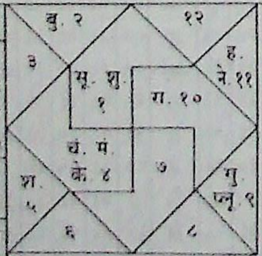
ता. ६ से २० मई सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति १६ से ३० वैशाख तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

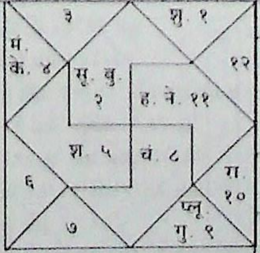
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. वैशाख	मु.	अं. मई	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१६	१	मं	२०	४०	१३	५६	कृ	४३	२६	२३	०३	सौ	९ २९	२३ ०६	ब	१३	५६	३३	०७	५	४०	१८	५५	२४	२१	६	वृ. ७।२०	भरणी में शुक्र १७/३२, चन्द्रदर्शन मु. ३०, द. श्रृंगोन्नति, देव दामोदर तिथि (आसाम),
१७	२	बु	११	१०	१०	०८	रो	३६	१२	२०	०९	अ	२५	०	कौ	१०	०८	३३	१०	५	४०	१८	५६	२५	ज.१	७	वृष	ज. उल अ. मु. ५, अक्षया ३, श्रीपरशुराम ज., बद्रीकेदार यात्रा प्रा., श्रीशिवाजी ज.,
१८	३	गु	०२	१७	०६	३४	मृ	२९	४९	१७	३४	सु	२१	१२	ग	६	३४	३३	१३	५	३९	१८	५६	२६	२	८	मि.६।४८	भद्रा १६/५६ से २७/२४ तक, विनायक ४, वर्षी तप पारणा (जैन), श्री मातङ्गी ज., A
०	४	गु	५४	२३	२७	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्थी तिथि क्षय A टैगोर जयंती,
१९	५	शु	४७	५४	२४	४८	आ	२४	३९	१५	३०	धृ	१७	४९	ब	१४	०१	३३	१७	५	३८	१८	५७	२७	३	९	मिथुन	गुरु वक्री १७/०६, आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य जयंती,
२०	६	श	४३	०३	२२	५१	पुन	२१	०१	१४	०२	शू	१४	५८	कौ	११	४४	३३	२०	५	३८	१८	५८	२८	४	१०	क.८।२०	कृतिका में सूर्य २८/३०, श्रीरामानुजाचार्य जयंती,
२१	७	र	४०	०१	२१	३७	पु	१९	०९	१३	१६	गं	१२	४१	ग	१०	०८	३३	२३	५	३७	१८	५८	२९	५	११	कर्क	भद्रा २१/३७ से, व्यति महापात १३/४६ से १८/३९ तक, श्रीगंगासप्तमी,
२२	८	चं	३८	४८	२१	०७	श्ले	१९	०६	१३	१४	वृ	११	०	वि	९	१७	३३	२६	५	३६	१८	५९	३०	६	१२	सिं.१३।१४	भद्रा ९/१७ तक, श्री बग्लामुखी जयंती,
२३	९	मं	३९	११	२१	११	म	२०	४७	१३	५५	ध्रु	९	५३	बा	९	०८	३३	२९	५	३६	१८	५९	३१	७	१३	सिंह	श्री सीतानवमी, B श्रीमहावीर केवल ज्ञान दिवस (जैन),
२४	१०	बु	४१	२३	२२	०८	पूफा	२४	०३	१५	१२	व्या	९	१८	तै	९	३९	३३	३२	५	३५	१९	०	ज्ये१	८	१४	क.२१।३७	वृष में सूर्य १५/२३, मु. ४५, सं पुण्य ८/५९ से, सौर ज्येष्ठ प्रा., B
२५	११	गु	४४	४२	२३	२७	उफा	२८	३७	१७	०१	ह	९	०८	व	१०	४४	३३	३५	५	३४	१९	०१	२	९	१५	कन्या	भद्रा १०/४४ से २३/२७ तक, मोहिनी ११ व्रत सबका, श्रीबल्लभाचार्य जयंती,
२६	१२	शु	४९	०	२५	१०	ह	३४	१२	१९	१५	व	९	२०	ब	१२	१६	३३	३८	५	३४	१९	०१	३	१०	१६	कन्या	मृगशीर्ष में बुध १२/५०,
२७	१३	श	५४	०१	२७	१०	चि	४०	३२	२१	४६	सि	९	४८	कौ	१४	०८	३३	४१	५	३३	१९	०२	४	११	१७	तु.८।२९	कृतिका में शुक्र १३/४०, शनि प्रदोष व्रत, C यमप्रीत्यर्थ जल घटदान,
२८	१४	र	५९	३२	२९	२२	स्वा	४७	२४	२४	३०	व्य	१०	२८	ग	१६	१४	३३	४४	५	३३	१९	०२	५	१२	१८	तुला	भद्रा २९/२२ से, महापात १५/०१ से २१/२९ तक, श्रीनृसिंह जयंती,
२९	१५	चं	६०	०	-	-	वि	५४	३६	२७	२३	व	११	१६	वि	१८	३१	३३	४६	५	३२	१९	०३	६	१३	१९	वृ.२०।३९	भद्रा १८/३१ तक, कूर्म जयंती, सत्यव्रत, बुद्ध पूर्णिमा, श्री छिन्नमस्ता जयंती,
३०	१५	मं	०५	२४	०७	४१	अनु	६०	००	-	-	प	१२	१०	ब	७	४१	३३	४९	५	३२	१९	०४	७	१४	२०	वृश्चिक	वृष में शुक्र ६/४५, सायन मिथुन में रवि २१/३४, वैशाख स्नान समाप्त, C

वैशाख शुक्ल ८ चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५८८१ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) वैशाख शुक्ल १५ भौमे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५८८९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	३	३	१	८	०	४	९	३
२७	२५	७	१९	२८	२०	७	२९	२९
४०	४४	१०	९	२२	५	४६	२२	२२
१९	१५	४७	३०	५५	५५	२५	२५	२५
५७	७८५	३२	६५	०	७३	०	३	३
५५	२१	२२	२४	३५	४८	५१	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस मास में पांच मंगलवार होने से छत्रभंग होता है एवं कहीं भारी रक्तपात भी होता है। **"यत्रमासे महासूनोर्जायन्ते पंचवासरा:। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्"**॥ दशमी बुधवार को सूर्य वृष राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप उत्तर तथा पश्चिम के देशों में पीड़ा, पूर्व के देशों में युद्ध आदि का भय व अशान्ति होती है तथा दक्षिण के देशों में सुख शान्ति सुभिक्ष होता है। **"वायव्ये च यदादृष्टि: सर्वसौख्य समन्विता। सुभिक्षं च विजानीयात् नृपाणां च कलिर्भवेत्"**॥ पूर्णिमा के दिन शुक्र वृष राशि में प्रवेश करेगा।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	७	३	१	८	०	४	९	३
५	४	११	२५	२८	२९	७	२८	२८
२२	२३	३२	४८	१३	५६	५७	५६	५६
५३	९	०	४५	६	८	१६	५९	५९
५७	७१२	३३	२९	२	७३	१	३	३
४२	३३	०	१५	४	४५	४९	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इसका फल शास्त्र में शुभफलकारक, लोगों को सुखशान्तिदायक होता है। कहीं कहीं कुछ विग्रह भी इसके प्रभाव से होता है। **"भृगुपुत्रो वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथिवीतले। प्रजानां सुखमुत्पन्नं किंचिद्विग्रहकारणम्"**॥ इस मास में भौम के राशि परिवर्तन करने से मंगल शनि का परस्पर अशुभकारी द्विर्द्वादश योग बन गया है इस योग के कुप्रभाव से भय एवं अशान्ति का वातावरण बनेगा। समाजविरोधी एवं राष्ट्रविरोधी तत्वों की विध्वंसक गतिविधियों में वृद्धि होगी। शुक्र के कृतिका नक्षत्र में प्रवेश करने से हीरे, मणि, मोती आदि रत्नों एवं जौ तथा चावल के भाव तेज हो जाते हैं। गुरु के वक्री होने से रुई के भावों में मन्दी आ जाती है।

आकाश लक्षण- अधिकांश ग्रहों के नीरा अमृता जला नाड़ी में होने से तथा सूर्य के साथ बुध के चण्डा तथा वायु नाड़ी में स्थित होने से गर्मी बढ़ेगी, तेज हवा, आंधी-तूफान के साथ कहीं कहीं तेज बादल चाल के साथ बूंदाबांदी भी होगी। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल, बिहार, उत्तराखण्ड में बादल चाल के साथ कहीं कहीं बूंदाबांदी भी होगी तथा तापमान में वृद्धि होगी।

श्री संवत् २०६५ शकः १९३०
ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः ४

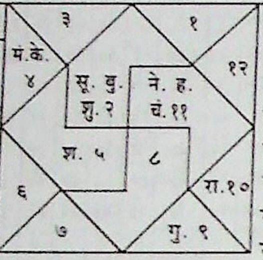
ता. २१ मई से ३ जून सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति ३१ वैशाख से १३ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. ज्येष्ठ	मु. ज.उ.ल.	अं. मई	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
३१	१	बु	११	२४	१०	०५	अनु	०२	०	६	११	शि	१३	०६	कौ	१०	०५	३३	५२	५	३१	१९	०४	८	१५	२१	वृश्चिक	श्री नारद जयंती,
ज्ये.१	२	गु	१७	२३	१२	२८	ज्ये	०९	२३	९	१६	सि	१४	०१	ग	१२	२८	३३	५४	५	३१	१९	०५	९	१६	२२	ध.९।१६	भद्रा २५/३८ से, राष्ट्रीय ज्येष्ठ प्रारम्भ,
२	३	शु	२३	०७	१४	४५	मू	१६	३५	१२	०८	सा	१४	५२	वि	१४	४५	३३	५७	५	३१	१९	०५	१०	१७	२३	धनु	भद्रा १४/४५ तक, श्री गणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २२/१२, श्री मां आनन्दमयी ज.,
३	४	श	२८	२०	१६	५०	पूषा	२३	१८	१४	४९	शु	१५	३३	बा	१६	५०	३३	५९	५	३०	१९	०६	११	१८	२४	म.२१।२७	रोहिणी में सूर्य २४/४९,
४	५	र	३२	४१	१८	३४	उषा	२९	१२	१७	११	शु	१५	५९	कौ	५	४५	३४	०१	५	३०	१९	०६	१२	१९	२५	मकर	वै.महापात १२/११ से १८/२१ तक,
५	६	चं	३५	४८	१९	४९	श्र	३३	५७	१९	०४	ब्र	१६	०३	ग	७	१६	३४	०३	५	२९	१९	०७	१३	२०	२६	मकर	भद्रा १९/४९ से, बुध वक्री २१/१७,
६	७	मं	३७	११	२०	२५	धनि	३७	०९	२०	२१	ऐं	१५	३८	वि	८	१२	३४	०६	५	२९	१९	०८	१४	२१	२७	कु.७।४७	भद्रा ८/१२ तक, पंचक ७/४७ से,
७	८	बु	३७	००	२०	१७	शत	३८	३३	२०	५४	वै	१४	३९	बा	८	२६	३४	०८	५	२९	१९	०८	१५	२२	२८	कुम्भ	रोहिणी में शुक्र १०/०१, बुध पश्चिम में अस्त २२/४१, कालाष्टमी,
८	९	गु	३४	४२	१९	२१	पूभा	३८	००	२०	४०	वि	१३	०३	तै	७	५५	३४	१०	५	२९	१९	०९	१६	२३	२९	मी.१४।४८	आश्लेषा में मंगल ११/१८,
९	१०	शु	३०	२५	१७	३८	उभा	३५	३०	१९	४०	प्री	१०	४८	व	६	३५	३४	१२	५	२८	१९	०९	१७	२४	३०	मीन	भद्रा ६/३६ से १७/३८ तक,
१०	११	श	२४	२०	१५	१२	रे	३१	१२	१७	५७	आ	७ २८	५६ ३२	बा	१५	१२	३४	१४	५	२८	१९	१०	१८	२५	३१	मे.१७।५७	पंचक १७/५७ तक, अपरा (भद्रकाली) ११ व्रत सबका,
११	१२	र	१६	४२	१२	०९	अश्वि	२५	२५	१५	३८	शो	२४	४२	तै	१२	०९	३४	१५	५	२८	१९	१०	१९	२६	१जू	मेष	प्रदोष व्रत, जून मा. ६ दि. ३०,
१२	१३	चं	०७	५४	०८	३७	भ	१८	३१	१२	५२	अ	२०	३३	व	८	३७	३४	१७	५	२८	१९	११	२०	२७	२	वृ.१८।०८	भद्रा ८/३७ से १८/४४ तक, महापात ६/५१ से १३/०२ तक, मासशिवरात्रि,
०	१४	चं	५८	३१	२८	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्दशी तिथि क्षय,
१३	३०	मं	४८	३३	२४	५३	कृति	१०	५७	९	५०	सु	१६	१४	च	१४	५०	३४	१९	५	२७	१९	११	२१	२८	३	वृष	भौमवती अमावस्या, वट्सावित्री व्रत, भावुका अमावस्या, शनि जयंती,

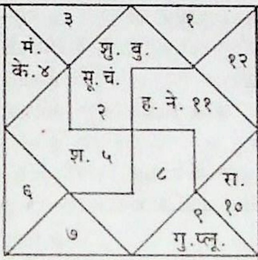
ज्येष्ठ कृष्ण ८ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८९७ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१०	३	१	८	१	४	९	३
१३	११	१५	२७	२७	९	८	२८	२८
३	३५	५८	२९	५१	४६	१४	३१	३१
५१	२७	१३	३६	३२	४	३३	३३	३३
५७	७९०	३३	८	३	७३	२	३	३
३४	५६	३६	१५	३०	४४	३६	११	११
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
रोहिणी २	शत. २	पुष्य ४	मृग. २	उषा १	कृत्तिका ४	मघा ३	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४



इस पक्षान्त में चन्द्र के राशि परिवर्तन से चतुर्ग्रही योग बन रहा है शास्त्र में इस अशुभ योग का फल कहीं पर जलप्लावन होना या भारी रक्तपात होना कहा गया है। **"एकाराशौ यदा यांति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयंति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा"॥** सूर्य-बुध-शुक्र के एक ही राशि में स्थित होने से सब धान्यों के भावों में तेजी का रुख होता है तथा मेघ वर्षा कम करते हैं। **"एक राशौ गता ह्येते सौम्य शुक्रदिनाधिपाः। सर्वधान्यमहर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः"॥** शनि-मंगल का द्विर्द्वादश योग इस पक्ष में चल रहा है तथा चतुर्ग्रही योग भी पक्षान्त में बन रहा है। इन दोनों अशुभ योगों के फलस्वरूप आतंकवादी घटनाओं, दुर्घटनाओं, बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड की घटनाओं में वृद्धि होगी तथा समाज विरोधी, राष्ट्रविरोधी तत्व मुखर होंगे एवं अशान्ति एवं भय का वातावरण बनेगा। इराक, ईरान, इटली, फ्रांस, अमेरिका, अफ्रीका, हालैण्ड, जर्मनी, पोलैण्ड, भारत, अफगानिस्तान, सिन्ध इस योग से विशेष प्रभावित होंगे। नवमी के दिन मंगल आश्लेषा नक्षत्र में संचार करेगा इसके फलस्वरूप वर्षा कम होती है, धान्य का प्राकृतिक कारणों से नाश अधिक होता है, सर्पभय होता है एवं अधिक दुर्भिक्ष होता है। **"सार्पेल्पवृष्टिर्बहुधान्यनाशो दुर्भिक्ष मेवो रगदंशभीतिः"॥**

ज्येष्ठ कृष्ण ३० भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५९०३



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१	३	१	८	१	४	९	३
१८	७	१९	२५	२७	१७	८	२८	२८
४१	१४	२०	४२	२७	८	३१	१२	१२
१०	८	५८	३१	५१	२१	३६	२८	२८
५७	११८	३४	२८	४	७३	३	३	३
२१	२०	३	५०	३१	४४	१०	११	११
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
रोहिणी ३	कृत्तिका ४	आश्लेषा १	मृग. १	उषा १	रोहिणी ३	मघा ३	धनिष्ठा २	आश्लेषा ४

आकाश लक्षण- इस पक्ष में सूर्य-बुध-शुक्र के चण्डा-वायु-दहना सप्तनाड़ी चक्र में स्थित होने से तेज गर्मी के साथ तेजगर्म हवा से लोग व्याकुल होंगे। शुक्र के स्वराशिस्थ होने से कहीं-कहीं बादल चाल के साथ बूंदाबांदी भी होगी। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड के मैदानी भागों में लोग गर्मी से व्याकुल होंगे।

श्री संवत् २०६५ शकः १९३०
ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः ५

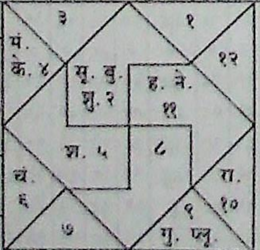
ता. ४ से १८ जून सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २८ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

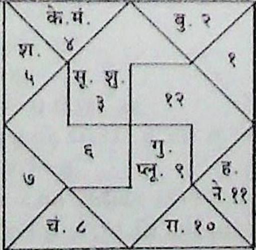
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय स्टैं.टा. घंटा	मिनट	सूर्यास्त स्टैं.टा. घंटा	मिनट	तारीखें हि. (ज्येष्ठ)	मु. (जमादि उल)	अं. (जून)	चन्द्र दर्शन स्टैं.टा. रा. घं. मि.	
१४	१	बु	३८	५५	२१	०१	रो	३ / ५५	१४ / ४९	६ / २७	४५ / ४७	धृ	११	५६	किं	१०	५६	३४	२०	५	२७	१९	१२	२२	२९	४	मि.१७।१४	श्रीगंगादशाश्व मेघ स्नान प्रा.,
१५	२	गु	२९	५७	१७	२६	आ	४९	१५	२५	०९	शू	७ / २७	४६ / ५५	बा	७	११	३४	२२	५	२७	१९	१२	२३	३०	५	मिथुन	चन्द्रदर्शन मु. १५, उ.श्रृंगोन्नति,
१६	३	शु	२२	०३	१४	१६	पुन	४३	५५	२३	०१	वृ	२४	२९	ग	१४	१६	३४	२३	५	२७	१९	१३	२४	१	६	क.१७।३०	भद्रा २४/५४ से, व्य.महा. १९/२० से २५/३८ तक, जमादिउलउस्सानी मु. ६, A
१७	४	श	१५	३७	११	४२	पु	४०	११	२२	३१	ध्रु	२२	३५	वि	११	४२	३४	२४	५	२७	१९	१३	२५	२	७	कर्क	भद्रा ११/४२ तक, मृग. में सूर्य २२/३८, वक्री रोहिणी में बुध १८/०२, B
१८	५	र	१०	५६	९	४९	श्ले	३८	१७	२०	४६	व्या	१९	१८	बा	९	४९	३४	२६	५	२७	१९	१३	२६	३	८	सिं.२०।४६	मृगशीर्ष में शुक्र ६/२६, B विनायक ४, श्री गुरु अर्जुनदेव बलि. दिवस,
१९	६	चं	०८	११	८	४३	मघा	३८	२२	२०	४८	ह	१७	३९	तै	८	४३	३४	२७	५	२७	१९	१४	२७	४	९	सिंह	अरण्य ६, स्कन्द ६, श्री महावीर च्यवन दिवस (जैन),
२०	७	मं	०७	२६	८	२५	पूफा	४०	२१	२१	३५	व	१६	३२	व	८	२५	३४	२८	५	२७	१९	१४	२८	५	१०	क.२७।५४	भद्रा ८/२५ से २०/३४ तक, C सौर आषाढ़ प्रा., निर्जला ११ व्रत सबका,
२१	८	बु	०८	३४	८	५३	उफा	४४	०६	२३	०५	सि	१६	१२	ब	८	५३	३४	२९	५	२७	१९	१५	२९	६	११	कन्या	श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती ज., मेलाक्षीर भवानी (का.),
२२	९	गु	११	२२	१०	०	ह	४९	१७	२५	१०	व्य	१६	१५	कौ	१०	०	३४	३०	५	२७	१९	१५	३०	७	१२	कन्या	वक्री पूर्वाषाढ़ा में गुरु १३/३७, श्रीगंगादशहरा, श्री बटुक भैरव जयंती,
२३	१०	शु	१५	३०	११	३९	चि	५५	३३	२७	४०	व	१६	४२	ग	११	३९	३४	३०	५	२७	१९	१५	३१	८	१३	तु.१४।२२	भद्रा २४/३८ से, मिथुन में शुक्र १६/३९,
२४	११	श	२०	३६	१३	४१	स्वा	६०	०	-	-	प	१७	२४	वि	१३	४१	३४	३१	५	२७	१९	१६	आ.१	९	१४	तुला	भद्रा १३/४१ तक, मिथुन में सूर्य २२/०२ मु. १५, सं. पुण्य १५/३८ से, C
२५	१२	र	२६	१७	१५	५८	स्वा	२	३०	६	२७	शि	१८	११	ब	१५	५८	३४	३२	५	२७	१९	१६	२	१०	१५	वृ.२६।३९	महापात २०/११ से २८/२७ तक, प्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी,
२६	१३	चं	३२	१३	१८	२१	वि	९	५०	९	२३	सि	१९	१४	तै	१८	२१	३४	३२	५	२७	१९	१६	३	११	१६	वृश्चिक	A रम्भा ३ व्रत, महाराणा प्रताप ज., मेला हल्दीघाटी मेवाड़ (राज.)
२७	१४	मं	३८	०९	२०	४३	अनु	१७	१४	१२	२१	सा	२०	११	ग	७	३२	३४	३३	५	२७	१९	१७	४	१२	१७	वृश्चिक	भद्रा २०/४३ से, बुधोदय पूर्व में १०/२५, D कबीर जयंती,
२८	१५	बु	४३	५२	२३	०	ज्ये	२४	२८	१५	१५	शु	२१	०४	वि	९	५३	३४	३३	५	२८	१९	१७	५	१३	१८	ध.१५।१५	भद्रा ९/५३ तक, आर्द्रा में शुक्र २६/५४, सत्यव्रत, वट्सावित्री व्रत (द.भा.), D

ज्येष्ठ शुक्ल ८ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५९११ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) ज्येष्ठ शु. १५ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५९१८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	५	३	१	८	१	४	९	३
२६	०	२३	२१	२६	२६	८	२७	२७
२८	५०	५५	२६	४७	५८	५९	४७	४७
३२	२३	७	५७	३९	११	२८	१	१
५७	७०७	३४	२९	५	७३	३	३	३
२०	५२	३३	१७	४१	४३	५२	११	११
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
२ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	४ [illegible]	२ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	४ [illegible]



दशमी को शुक्र मिथुन राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप जौ, गेहूँ, चना तथा चावल यह विशेष करके मंहगे होंगे। ''मिथुने च यदा शुक्रो महर्घ तत्र जायते। यवगोधूमचणकाः शालिश्चैव विशेषतः॥'' बुध के रोहिणी नक्षत्र में संचार से तिल, सूत, कपास यह मंहगे होंगे। ''रोहिण्यां च बुधे कार्पासतिलसूत्र महर्घता।'' शनिवार को सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पूर्व तथा उत्तर के भागों (देशों) में कष्ट-अशान्ति तथा बालकों को पीड़ा होगी, दक्षिण के देशों में युद्ध आदि का भय और पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि शुभ फलों का सुख होता है। ''ईशान्ये यत्र दृष्टिःस्यात् नृपमन्येनग्रासितम्। देशभङ्ग विजानीयात् शिशूनां च विनाशहि॥'' इस पक्ष में भी मंगल-शनि का अशुभ फलकारी द्विर्द्वादश योग बना हुआ है। अतः समाजविरोधी, राष्ट्रविरोधी, आतंकवादी गतिविधियों के कारण अशांति एवं भय का वातावरण बनेगा। अग्निकाण्ड, यान दुर्घटना, बम्ब विस्फोट एवं दुर्घटनाओं के कारण अशान्ति होगी एवं जन-धन की हानि होगी। श्री गंगा दशहरा निर्णय- ''ज्येष्ठे मासि सितेपक्षे दशम्यां बुध हस्तयो। गरानन्दे व्यतीपाते कन्या चन्द्रे वृषे रवौ''॥ गुरुवार के दिन हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग होने से गुरुवार को श्रीगंगादशहरा है। शास्त्र में लिखा है कि ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की हस्त नक्षत्र से युक्त दशमी दश पापों को दूर करती है। ''ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्त संयुता। हरते दशपापानि तस्माद्दशहरास्मृता''॥



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	७	३	१	८	२	४	९	३
३	२५	२७	११	२६	५	९	२७	२७
९	९	५८	५	५	३४	२८	२४	२४
३६	४८	१२	५१	९	१५	२२	४५	४५
५७	७१५	३४	४	६	७३	४	३	३
१५	३१	५७	५७	३२	४२	२७	११	११
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
३ [illegible]	३ [illegible]	४ [illegible]	३ [illegible]	४ [illegible]	४ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	४ [illegible]

आकाश लक्षण- सूर्य एवं बुध-शुक्र के वायु तथा दहना नामक सप्तनाड़ी चक्र में स्थित होने से आंधी-तूफान-चक्रवात के साथ तेज गर्म हवाओं का प्रवाह होगा। पक्ष के उत्तरार्द्ध में सूर्य के राशि संक्रमण करने से मंगल के सूर्य से अगली राशि में स्थित हो जाने से वर्षा का अवरोध होगा। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड में लोग अत्यधिक गर्मी से व्याकुल होंगे। पक्ष के पूर्वार्द्ध में सूर्य-बुध शनि से दृष्ट होने से प्राकृतिक प्रकोपों की अधिकता होगी।

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
आषाढ़ कृष्ण पक्ष: ६

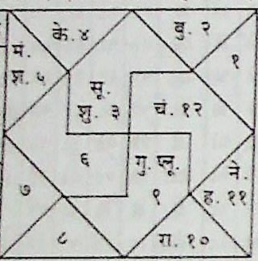
ता. १९ जून से ३ जुलाई सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति २९ ज्येष्ठ से १२ आषाढ़ तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

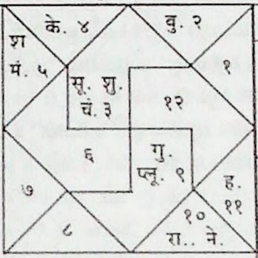
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं.टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आषाढ़	मु. ज.उ.	अं. जून	चन्द्र दर्शन स्टैं.टा. रा. घं. मि.	
२९	१	गु	४९	११	२५	०८	मूल	३२	२३	१८	०१	शु	२१	४९	बा	१२	०६	३४	३३	५	२८	१९	१७	६	१४	१९	धनु	बुध मार्गी २०/०३, श्री गुरुहरगोविन्द जयंती,
३०	२	शु.	५३	५५	२७	०२	पूषा	३७	४७	२०	३५	ब्र	२२	२५	तै	१४	०७	३४	३३	५	२८	१९	१८	७	१५	२०	म.२७।११	वै. महापात २३/२६ से, मेला शूलिनी सोलन (हि.प्र.) प्रारम्भ,
३१	३	श	५७	५३	२८	३७	उषा	४३	३०	२२	५२	ऐं	२२	४७	व	१५	५२	३४	३३	५	२८	१९	१८	८	१६	२१	मकर	भद्रा १५/५२ से २८/३७ तक, मघा सिंह में मंगल १६/५७, A
आ.१	४	र	६०	००	-	-	श्र	४८	१८	२४	४७	वै	२२	५२	ब	१७	१६	३४	३३	५	२८	१९	१८	९	१७	२२	मकर	श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २२/०८, रा. आषाढ़ प्रा., शूलिनी महो. समा.,
२	४	चं	०	५०	५	४९	धनि	५१	५७	२६	१५	वि	२२	३५	बा	५	४९	३४	३३	५	२९	१९	१८	१०	१८	२३	कु.१३।३५	पंचक १३/३५ से,
३	५	मं	२	३६	६	३१	शत	५४	१६	२७	११	प्री	२१	५२	तै	६	३१	३४	३३	५	२९	१९	१८	११	१९	२४	कुम्भ	A आर्द्रा में सूर्य २१/४३, वै. महा. ७/२० तक, सायन कर्क में सूर्य ५/३३, B
४	६	बु	२	५६	६	३९	पूभा	५५	०१	२७	३०	आ	२०	४१	व	६	३९	३४	३३	५	२९	१९	१८	१२	२०	२५	मी.२१।२९	भद्रा ६/३९ से १८/२९ तक, B दक्षिणायन, वर्षाऋतु प्रा.,
५	७	गु	१	४०	६	१०	उभा	५४	०९	२७	०९	सौ	१८	५८	बा	६	०९	३४	३२	५	२९	१९	१९	१३	२१	२६	मीन	कालाष्टमी,
०	८	गु	५८	४७	२९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	अष्टमी तिथि क्षय,
६	९	शु	५४	१३	२७	११	रे	५१	३९	२६	०९	शो	१६	४२	तै	१६	१०	३४	३२	५	३०	१९	१९	१४	२२	२७	मे.२६।०९	पंचक २६/०९ तक,
७	१०	श	४८	१०	२४	४६	अश्वि	४७	३८	२४	३३	अ	१३	५६	व	१४	०३	३४	३१	५	३०	१९	१९	१५	२३	२८	मेष	भद्रा १४/०३ से २४/४६ तक, C योगिनी ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
८	११	र	४०	५०	२१	५१	भर	४२	११	२२	२६	सु	१०	४१	ब	११	२२	३४	३०	५	३०	१९	१९	१६	२४	२९	वृ.२७।५०	पुनर्वसु में शुक्र २३/०१, व्य.महा. २१/०५ से २७/३७ तक, C
९	१२	चं	३२	३३	१८	३२	कृ	३६	०३	१९	५६	धृ	७ २७	४ ११	कौ	८	१३	३४	३०	५	३१	१९	१९	१७	२५	३०	वृष	योगिनी ११ व्रत निम्बार्कों का, मृगशीर्ष में बुध ९/३१, सोम प्रदोष व्रत,
१०	१३	मं	२३	३९	१४	५९	रो	२९	१२	१७	१२	गं	२३	०९	व	१४	५९	३४	२९	५	३१	१९	१९	१८	२६	जु.१	मि.२७।४८	भद्रा १४/५९ से २५/१० तक, मास शिवरात्रि, जुलाई मा. ७ दि. ३१
११	१४	बु	१४	३४	११	२१	मृग	२२	१२	१४	२४	वृ	१९	०६	श	११	२१	३४	२८	५	३२	१९	१९	१९	२७	२	मिथुन	
१२	३०	गु	५	४२	७	४९	आ	१५	३०	११	४४	ध्रु	१५	११	ना	७	४८	३४	२७	५	३२	१९	१९	२०	२८	३	क.२७।५४	महापात २८/१९ से, अमावस्या पुण्य,

आषाढ़ कृष्ण ७ गुरौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५९२६ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) आषाढ़ कृष्ण ३० गुरौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५९३३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	११	४	१	८	२	४	९	३
१०	४	२	२०	२५	१५	१०	२६	२६
४७	२६	३९	३५	१०	२३	६	५९	५९
२६	५९	२३	२६	९	५७	०६	११	११
५७	८१३	३५	३२	७	७३	५	३	३
१३	४५	२४	१४	१६	४४	०३	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
२ आर्द्रा	१ पुष्य	१ मघा	४ रोहिणी	४ पू.षा.	३ आर्द्रा	४ मघा	२ धनिष्ठा	४ पूर्वाफा



इस मास में पांच गुरुवार होने से पश्चिम देश में विग्रह, अशान्ति होती है तथा युद्ध की स्थिति बनती है। **''यत्रमासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते:। विग्रह: पश्चिमेदेशे खड्गयुद्धञ्च जायते''**॥ तृतीया के दिन मंगल राशि परिवर्तन कर सिंह राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप सुवर्ण, चांदी, तांबा एवं लाल रंग की सब वस्तुएं महंगी होती हैं। **''यदा सिंह गतो भौम: काचनं रुक्मताम्रकम्। आरक्तसर्वद्रव्याणि महर्घाणि भवंति हि''**॥ मंगल के ही राशि परिवर्तन करने से शनि मंगल की युति अशुभ फलदायी होने से दुर्घटनाओं में वृद्धि करने वाली तथा अशान्ति, भय का वातावरण, रोगों की अधिकता, आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि, बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड, यान दुर्घटनाओं को जन्म देगी। इसी मास में पांच शुक्रवार भी होने से अशुभ फलों में कुछ कमी होगी। मंगल-शनि के एक राशि में होने से आगे वर्षा काल में भारी वर्षा होगी उसके पश्चात् जल की कमी होती है। **''एकराशिगतश्चैव भौम: सौरिर्यदा भवेत्। द्विमासं च भवेदवृष्टि: पश्चादवृष्टिर्निवर्तते''**॥ पक्षारम्भ में बुध मार्गी हो रहा है इसके प्रभाव से आरम्भ में रुई के भाव घट जाते हैं तथा बाद में रुई के भावों में तेजी आ जाती है तथा शेयरों के भाव गिर जाते हैं। चांदी महंगी हो जाती है।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	२	४	१	८	२	४	९	३
१७	१६	६	२५	२४	२४	१०	२६	२६
२७	७	४८	५५	१८	०	४२	३७	३७
५९	०७	२२	४०	०५	०८	५५	०३	०३
५७	८११	३५	६३	७	७३	५	३	३
१४	३६	४७	१३	३८	४६	३२	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
४ आर्द्रा	३ आर्द्रा	३ मघा	१ पुनं.	४ पू.षा.	२ पुन.	४ मघा	१ धनि.	३ पूर्वाफा

आकाश लक्षण- सूर्य-शुक्र सौम्यानाड़ी में तथा बुध दहना नाड़ी में स्थित है इसके प्रभाव से तेज गर्म वायु से लोग त्रस्त रहेंगे। प्राकृतिक प्रकोप, आंधी-तूफान से कुछ भागों में लोग ज्यादा त्रस्त रहेंगे। सूर्य-शुक्र के आगे केतु के स्थित होने से तथा मंगल-शनि के अमृता सप्तनाड़ी में स्थित होने से कहीं तेज वायु के साथ वर्षा भी होगी या तेज बादल चाल के साथ बूंदाबांदी भी होगी। आसाम, महाराष्ट्र, उड़ीसा, केरल में कहीं-कहीं अच्छी वर्षा की सम्भावना है।

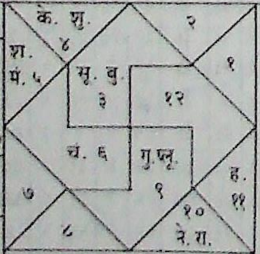
श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
आषाढ़ शुक्ल पक्ष: ७

ता. ४ से १८ जुलाई सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २७ आषाढ़ तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु।

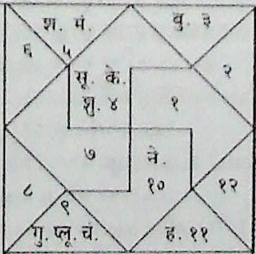
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	हि. आषाढ़	मु. ज.उ.अ.	अं. जुलाई	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
०	१	गु	५७	३०	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा तिथि क्षय, E सत्यव्रत, कोकिला १५, जन्म श्री हजरतअली,
१३	२	शु	५०	११	२५	४०	पुन	९	३१	९	२१	व्या	११	३३	बा	१५	०२	३४	२६	५	३२	१९	१९	२१	२९	४	कर्क	महापात १०/५४ तक, चन्द्रदर्शन मु.३०, उ.श्रृंगोन्नति, रथोत्सव २, A
१४	३	श	४४	३३	२३	२२	पुष्य	४	४२	७	२५	ह	८	१७	तै	१२	२६	३४	२५	५	३३	१९	१९	२२	र.१	५	कर्क	पुनर्वसु में सूर्य २१/१५, रज्जब मु. ७, A श्रीजगदीश रथयात्रा (पुरी),
१५	४	र	४०	२१	२१	४५	श्ले	१ / ५९	२२ / ४७	६ / २९	६ / २८	व	५ / २७	३२ / २१	व	१०	२८	३४	२३	५	३३	१९	१९	२३	२	६	सिं ६।०६	भद्रा १०/२८ से २१/४५ तक, मिथुन में बुध १९/०१, विनायक ४,
१६	५	चं	३८	१९	२०	५३	पूफा	६०	०	-	-	व्य	२५	४७	बा	९	१३	३४	२२	५	३४	१९	१९	२४	३	७	सिंह	कर्क में शुक्र २६/३५, G तेरापन्थ स्थापना दिवस, अष्टान्हिक समाप्त,
१७	६	मं	३८	०६	२०	४१	पूफा	०	०८	५	३७	व	२४	५१	कौ	८	४५	३४	२०	५	३४	१९	१८	२५	४	८	क.११।४७	श्रीमहावीर च्यवन दिवस, कुमारषष्ठी, F संन्यासियों का चातुर्मास प्रा. G
१८	७	बु	३९	४७	२१	२१	उफा	२	२४	६	३२	प	२४	३०	ग	९	०३	३४	१९	५	३५	१९	१८	२६	५	९	कन्या	भद्रा २१/२९ से, विवस्वत् सप्तमी,
१९	८	गु	४३	०६	२२	५०	ह	६	२५	८	०१	शि	२४	४०	वि	१०	०५	३४	१७	५	३५	१९	१८	२७	६	१०	तु.२१।११	भद्रा १०/०५ तक, पुष्य में शुक्र १९/४०, अष्टान्हिक व्रतारम्भ (जैन),
२०	९	शु	४७	४४	२४	४१	चि	११	५६	१०	२२	सि	२५	१३	बा	११	४२	३४	१६	५	३५	१९	१८	२८	७	११	तुला	आर्द्रा में बुध ११/४२, भड्डली नवमी, मेला शरीफ भवानी (का.), B
२१	१०	श	५३	१५	२६	५४	स्वा	१८	३१	१३	०	सा	२६	०२	तै	१३	४६	३४	१४	५	३६	१९	१८	२९	८	१२	तुला	वै.महापात १५/३६ से २२/१७ तक, B मनसा पूजा प्रा. (बंगाल),
२२	११	र	५९	०९	२९	१६	वि	२५	४३	१५	५४	शु	२६	५८	व	१६	०४	३४	१२	५	३६	१९	१७	३०	९	१३	वृ.९।०९	भद्रा १६/०४ से २९/१६ तक, पू.फा. में मंगल २६/१३, शुक्रोदय पश्चिम में C
२३	१२	चं	६०	००	-	-	अनु	३३	०७	१८	५२	शु	२७	५५	व	१८	२८	३४	१०	५	३७	१९	१७	३१	१०	१४	वृश्चिक	देवशयनी ११ व्रत वैष्णवों का, D शुक्रबाल्यत्व समा. २३/४०, सौर श्रावण प्रा.,
२४	१२	मं	५	०२	७	३८	ज्ये	४०	११	२१	४५	ब्र	२८	४७	बा	७	३८	३४	८	५	३७	१९	१७	३२	११	१५	ध.२१।४५	भौम प्रदोष व्रत, C २३/४०, देवशयनी ११ व्रत स्मार्तों का, चातुर्मास व्रत प्रा.
२५	१३	बु	१०	३४	९	५२	मूल	४७	१	२४	२६	ऐं	२९	२७	तै	९	५२	३४	६	५	३८	१९	१७	श्रा.१	१२	१६	धनु	कर्क में सूर्य ८/५७, मु. ३०, दक्षिणायन संक्रांति पुण्य १५/२१ तक, D
२६	१४	गु	१५	२९	११	५०	पूषा	५३	०१	२६	५१	वै	६०	०	व	११	५०	३४	४	५	३९	१९	१६	२	१३	१७	धनु	भद्रा ११/५० से २४/४२ तक, बुधास्त पूर्व में १९/३५, शिवशयनोत्सव १५, E
२७	१५	शु	१९	३५	१३	२९	उषा	५८	०८	२८	५४	वै	५	५३	व	१३	२९	३४	१	५	३९	१९	१६	३	१४	१८	म.९।२४	पुनर्वसु में बुध २३/१८, महापात २३/४८ से, गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा, F

आषाढ़ शु. ८ गुरौ प्रात: स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५९४० (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) आषाढ़ शु. १५ शुक्रे प्रात: स्टैं. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५९४८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	४	२	८	३	४	९	३
२४	२१	११	४	२३	२	११	२६	२६
८	५८	०	४४	२४	३६	२२	१४	१४
३०	९	२	१७	१७	२५	५५	४७	४७
५७	७२४	३६	११	७	७३	५	३	३
१३	३८	१०	२२	४४	४५	५७	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



सोमवार को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से सब रसपदार्थ मंहगे होंगे तथा सब धान्य सस्ते होते हैं तथा पृथ्वी पर मेघ प्रबल होते हैं। ''दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता। सर्वधान्यसमर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि''॥ बुधवार को सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से उत्तर तथा पश्चिम के देशों पीड़ा, पूर्व के देशों में अशान्ति एवं युद्ध आदि का भय होगा, दक्षिण के देशों में सुभिक्षादि शुभ फल होता है। ''वायव्ये च यदा दृष्टि: सर्वे। सौख्यसमन्विता। सुभिक्षं च विजानीयात् नृपाणां च कलिर्भवेत।'' शुक्र देवतागण नक्षत्र में उदित हो रहा है इसके प्रभाव से सिंधु, गुर्जर देशों में कृषि की हानि होती है एवं रोग महामारी के रूप में रूप में होते हैं। जालन्धर में दुर्भिक्ष, अशान्ति होती है। ''भृगुसुत:कुरुतेऽभ्युदयं यदा सुरगणर्क्षगत: खलु सिंधुषु। सकल गुर्जर कर्वट मण्डले भवतिशस्य विनाशमहारुजे॥ जालंधरेऽपिदुर्भिक्षं विग्रहो रणसंभव:॥ शुक्र के कर्क



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	८	४	२	८	३	४	९	३
१	२८	१५	१८	२२	१२	१२	२५	२५
४६	१	५०	३३	२३	२६	१२	४९	४९
११	२	३९	४	४	२६	५	२१	२१
५७	७३७	३६	११७	७	७३	६	३	३
१३	२३	३३	१९	३०	४५	२३	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

राशि में प्रवेश से चांदी के भावों में मन्दी होती है तथा रुई के भावों में पहले कुछ मन्दी होगी तथा बाद में तेजी होगी। घी, तेल, खाण्ड, गुड़, शक्कर, अलसी, एरण्ड के भावों में तेजी होती है।

आकाश लक्षण- सूर्य-बुध के आगे शुक्र के स्थित होने से तथा अधिकांश ग्रहों के सौम्या, नीरा, अमृता नामक सप्तनाड़ी चक्रों में स्थित होने से कहीं भारी वर्षा होगी एवं जल की कमी होगी, कहीं-कहीं खण्डवृष्टि भी होगी। शनि-मंगल की अंशात्मक युति कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि करेगी। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, आसाम, उड़ीसा, कश्मीर, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ में कहीं तेज वर्षा, कहीं साधारण तथा कहीं-कहीं खण्डवृष्टि होगी।

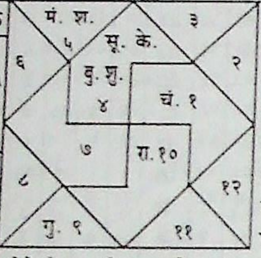
श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
श्रावण कृष्ण पक्ष: ८

ता. १९ जुलाई से १ अगस्त सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति २८ आषाढ़ से १० श्रावण तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

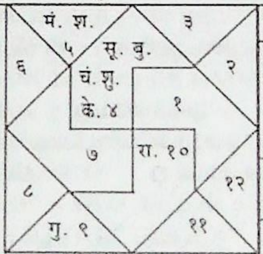
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. श्रावण	मु. रज्जब	अं. जुलाई	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
२८	१	श	२२	४५	१४	४६	श्र	६०	०	-	-	वि	६	०३	कौ	१४	४५	३३	५९	५	४०	१९	१५	४	१५	१९	मकर	पुष्य में सूर्य २०/५०, महापात ६/२२ तक, हिण्डोले प्रा., ब्रजमण्डल, अशून्यशयन व्रत,
२९	२	र	२४	५३	१५	३७	श्र	२	१७	६	३५	प्री	५ २९	५४ २४	ग	१५	३७	३३	५७	५	४०	१९	१५	५	१६	२०	कु.१९।१६	भद्रा २७/५४ से, पंचक १९/१६ से,
३०	३	चं	२५	५६	१६	०३	ध	५	२५	७	५०	सौ	२८	३४	वि	१६	०३	३३	५४	५	४१	१९	१५	६	१७	२१	कुम्भ	भद्रा १६/०३ तक, आश्लेषा में शुक्र १६/०१, श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २१/१३,
३१	४	मं	२५	५१	१६	०२	शत	७	२६	८	४०	शो	२७	२१	बा	१६	०१	३३	५२	५	४१	१९	१४	७	१८	२२	मी.२६।५८	सायन सिंह में सूर्य १६/२९,
श्रा.१	५	बु	२४	३५	१५	३२	पूभा	८	१९	९	०१	अ	२५	४६	तै	१५	३२	३३	४९	५	४२	१९	१४	८	१९	२३	मीन	कर्क में बुध २०/५१, श्रीतिलक ज., राष्ट्रीय श्रावण प्रा., नाग पंचमी (राज.),
२	६	गु	२२	०६	१४	३३	उभा	८	०	८	५४	सु	२३	४७	व	१४	३३	३३	४७	५	४२	१९	१३	९	२०	२४	मीन	भद्रा १४/३३ से २५/५३ तक,
३	७	शु	१८	२७	१३	०५	रे	६	३०	८	१९	धृ	२१	२५	ब	१३	०५	३३	४४	५	४३	१९	१३	१०	२१	२५	मे.८।१९	पंचक ८/१९ तक, पुष्य में बुध १०/४९, कालाष्टमी,
४	८	श	१३	४०	११	११	अश्वि	३	५२	७ ५	१६ ४९	शू	१८	४२	कौ	११	११	३३	४१	५	४३	१९	१२	११	२२	२६	मेष	व्य. महापात ७/२५ से १२/२९ तक,
५	९	र	७	५२	८	५३	भ	० ५५	१३ ४३	२८	०१	गं	१५	४०	ग	८	५३	३३	३८	५	४४	१९	११	१२	२३	२७	वृ.११।२४	भद्रा १९/३६ से, A भारत में खण्डग्रास सूर्य ग्रहण, हरियाली अमावस्या, B
६	१०	चं	१	१५	६	१४	रो	५०	३२	२५	५७	वृ	१२	२३	वि	६	१४	३३	३६	५	४४	१९	११	१३	२४	२८	वृष	भद्रा ६/१४ तक, पू.फा. में शनि १२/४५, कामिका ११ व्रत स्मार्तों का,
०	११	चं	५४	०२	२७	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	एकादशी तिथि क्षय B अगस्त मा.८ दि. ३१, नक्त व्रतारम्भ, C
७	१२	मं	४६	२७	२४	२०	मृ	४५	०	२३	४५	ध्रु	८ २९	५५ २२	कौ	१३	५१	३३	३३	५	४५	१९	१०	१४	२५	२९	मि.१२।५२	कामिका ११ व्रत वैष्णवों का, C तिलक पुण्य तिथि,
८	१३	बु	३८	५०	२१	१८	आ	३९	२५	२१	३२	ह	२५	४९	ग	१०	४८	३३	३०	५	४६	१९	१०	१५	२६	३०	मिथुन	भद्रा २१/१८ से, प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि,
९	१४	गु	३१	३२	१८	२२	पुन	३४	०८	१९	२५	व	२२	२४	वि	७	४९	३३	२७	५	४६	१९	०९	१६	२७	३१	क.१३।५६	भद्रा ७/४९ तक, आश्लेषा में बुध १९/०१, शब-ए-मिराज,
१०	३०	शु	२४	५०	१५	४३	पु	२९	३०	१७	३५	सि	१९	१३	ना	१५	४२	३३	२४	५	४७	१९	०८	१७	२८	अ.१	कर्क	मघा सिंह में शुक्र १२/१८, महापात १७/०३ से २२/११ तक, A

श्रावण कृष्ण ८ शनौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५९५६ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) श्रावण कृष्ण ३० शुक्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५९६२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	०	४	३	८	३	४	९	३
९	१२	२०	४	२१	२२	१३	२५	२५
२४	१७	४४	५८	२४	१६	४	२३	२३
२०	४६	२६	४३	४८	२८	२५	५५	५५
५७	८५९	३६	१२६	६	७३	६	३	३
२०	०	५७	१	५७	४५	४४	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



पंचमी बुधवार को बुध कर्क राशि में प्रवेश करेगा इसके कारण सुभिक्ष में कमी होती है तथा लोगों को विविध प्रकार से कष्ट उठाना पड़ता है। **''निशापतेश्च तनय: कर्क राशौयदा भवेत्। ततोति दु:ख भवति सुभिक्षं स्वल्पकारकम्''**॥ पक्षान्त में शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप सुवर्ण, सब प्रकार की लाल वस्तुएं तथा पशु एवं सब प्रकार के धान्य मंहगे होते हैं तथा वर्षा नहीं होती है या अल्प होती है। **''दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेमरक्तं चतुष्पद:। धान्यानि च महर्घाणि नाशं याति च वारिद:''**॥ इस मास में पांच शनिवार होने से प्राकृतिक प्रकोप, अन्न के भाव तेज, ईशान देश में अशान्ति तथा अग्नि का भय होता है। **''शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कंपते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता''**॥ इस पक्ष में चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योग बन रहे हैं। जिसके फलस्वरूप कहीं जल प्लावन होगा या भारी रक्तपात होगा एवं जनधन की हानि होती है तथा पशुओं की भी हानि होती है। **''एकाराशौ यदा यांति चत्वार: पंचखेचरा:। प्लावयंति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा''**॥ इस पक्ष में बुध कर्क राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप सोने के भाव में मन्दी आती है। श्वेत वस्त्रों के भाव घटते हैं। रुई में अधिक मन्दी आती है तथा चांदी के भाव में कुछ तेजी हो जाती है।



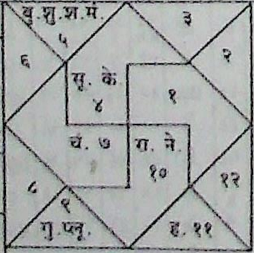
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	३	४	३	८	३	४	९	३
१५	९	२४	१७	२०	२९	१३	२५	२५
८	२५	६	३४	४४	३९	४५	४	४
३३	२६	५५	१	३३	३	२७	४९	४९
५७	८५९	३७	१२२	६	७३	६	३	३
२६	३०	१५	५८	२१	४६	५९	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- इस पक्ष में चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योग बन रहे हैं अमृता, जलानाड़ी में ग्रहों के होने से कहीं जलप्लावन, तूफान, अधिक वर्षा आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धन हानि की सम्भावना है। इस पक्ष में व्यापक वर्षा होने का योग है। मंगल-शनि की युति के कारण कुछ स्थानों में अधिक वर्षा व कुछ स्थानों में खण्डवृष्टि होगी।

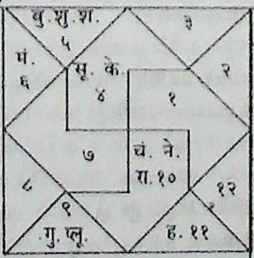
श्री संवत् २०६५ शक: १९३० श्रावण शुक्ल पक्ष: ९																		दिन मान		स्टैं. टा. सूर्योदय		सूर्यास्त		तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा.	ता. २ से १६ अगस्त सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २५ श्रावण तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु।
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	श्रावण	रज्जब	अगस्त	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
११	१	श	११	६	१३	२६	श्ले	२५	५२	१६	०८	व्य	१६	२२	व	१३	२६	३३	२०	५	४७	१९	०८	१८	२९	२	सिं.१६।०८	आश्लेषा में सूर्य १९/४२, चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ.श्रृंगोन्नति, B कल्कि जयंती,
१२	२	र	१४	४०	११	४०	मघा	२३	३३	१५	१३	व	१३	५६	कौ	११	४०	३३	१७	५	४८	१९	०७	१९	शा.१	३	सिंह	शाबान मु. ८ A सिंधारा, मधुश्रवा तीज,
१३	३	चं	११	४६	१०	३१	पूफा	२२	४८	१४	५५	प	१२	०२	ग	१०	३१	३३	१४	५	४८	१९	०६	२०	२	४	क.२०।५७	भद्रा २२/१२ से, उ.फा. में मंगल १९/०३, विनायक ४, हरियाली तीज, A
१४	४	मं	१०	३६	१०	०३	उफा	२३	४६	१५	११	शि	१०	४०	वि	१०	०३	३३	११	५	४९	१९	०५	२१	३	५	कन्या	भद्रा १०/०३ तक, D रक्षा बन्धन भद्रा के बाद, श्रीगायत्री ज., E
१५	५	बु	११	१५	१०	११	ह	२६	३१	१६	२६	सि	९	५३	बा	१०	११	३३	०८	५	४९	१९	०५	२२	४	६	तुला.२१।१४	नागपंचमी, शुक्ल-कृष्णयजु.-ऋक्, व हिरण्यकेशी तैत्तिरीय श्रावणी, B
१६	६	गु	१३	३८	११	१७	चि	३०	५५	१८	१२	सा	९	३९	तै	११	१७	३३	०४	५	५०	१९	०४	२३	५	७	तुला	मघा सिंह में बुध ११/२१, वै.महापात १४/५७ से १९/५४ तक, वर्ण षष्ठी,
१७	७	शु	१७	३३	१२	५२	स्वा	३६	४३	२०	३२	शु	९	५४	व	१२	५२	३३	०१	५	५१	१९	०३	२४	६	८	तुला	भद्रा १२/५२ से २५/५० तक, शीतला ७, गोस्वामी तुलसीदास जयंती,
१८	८	श	२२	३८	१४	५४	वि	४३	३१	२३	१५	शु	१०	३१	ब	१४	५४	३२	५७	५	५१	१९	०२	२५	७	९	वृ.१६।३३	कन्या में मंगल २६/५३, श्रीदुर्गाष्टमी, मेला श्रीनयना देवी व चिंतपूर्णी (हि.प्र.),
१९	९	र	२८	२४	१७	१३	अनु	५०	४८	२६	११	ब्र	११	२२	कौ	१७	१३	३२	५४	५	५२	१९	०१	२६	८	१०	वृश्चिक	C सं.मु. ३०, सं. पुण्य १०/५१ से, सौर भाद्रपद प्रा., खण्डग्रास चन्द्रग्रहण, D
२०	१०	चं	३४	२०	१९	३६	ज्ये	५८	०५	२९	०६	ऐं	१२	१८	तै	६	२५	३२	५०	५	५२	१९	०१	२७	९	११	ध.२९।०६	बुधोदय पश्चिम में २०/४१, E संस्कृत दिवस, सत्यव्रत, हयग्रीव जयंती, F
२१	११	मं	३९	५४	२१	५१	मू	६०	००	-	-	वै	१३	१०	व	८	४५	३२	४७	५	५३	१९	०	२८	१०	१२	धनु	भद्रा ८/४५ से २१/५१ तक, पू.फा. में शुक्र ८/३९, पवित्रा ११ व्रत स्मार्तों का,
२२	१२	बु	४४	४३	२३	४७	मू	४	५०	७	४९	वि	१३	५०	व	१०	५१	३२	४३	५	५३	१८	५९	२९	११	१३	धनु	पवित्रा ११ व्रत वैष्णवों का, श्री विष्णु पवित्रार्पण,
२३	१३	गु	४८	[illegible]	२५	१७	पूषा	१०	४५	१०	१२	प्री	१४	१३	कौ	१२	३५	३२	४०	५	५४	१८	५८	३०	१२	१४	म.१६।४३	पू.फा. में बुध १८/४५, प्रदोष व्रत, F श्रीअमरनाथ यात्रा,
२४	१४	शु	५०	५७	२६	१७	उषा	१५	३३	१२	०७	आ	१४	१३	ग	१३	५१	३२	३६	५	५४	१८	५७	३१	१३	१५	मकर	भद्रा २६/१७ से, स्वतंत्रता दिवस,
२५	१५	श	५२	०१	२६	४६	श्र	११	०५	१३	३३	सौ	१३	४१	वि	१४	३६	३२	३२	५	५५	१८	५६	भा.१	१४	१६	कु.२६।०४	भद्रा १४/३६ तक, पंचक २६/०४ से, मघा सिंह में सूर्य १७/२३, महा. २१/५२ से २६/५२ तक, C

श्रावण शुक्ल ८ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५९७० (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) श्रावण शुक्ल १५ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५९७७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	६	४	४	८	४	४	९	३
२२	२४	२९	३	११	९	१४	२४	२४
४८	२९	२६	१९	५७	२१	४२	३१	३१
११	३३	२५	३८	२७	६	०८	२४	२४
५७	७३६	३७	१११	५	७३	७	३	३
३२	१६	३९	३५	१६	४४	१३	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



अष्टमी शनिवार के दिन मंगल कन्या राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से चन्दन, रेशमी वस्त्र, लाल वस्तुएं तथा लाल रंग का द्रव्य यह सब मंहगे होते हैं ''कन्या राशि गते भौमे चंदनं पट्टवस्त्रकम्। आरक्ताधर्घवस्त्राणां प्रभवेत्तु महर्घता''। षष्ठी गुरुवार को बुध सिंह राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से सुवर्ण तथा देवदारू मंहगे होते हैं तथा धान्यों के भाव समान रहते है। ''सिंह राशौ बुधः स्याच्चेत्सुर्वधान्यमहर्घता। सुवर्ण देवदारुश्च महर्घ प्रभवेत्तदा''। पूर्णिमा शनिवार को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पूर्व तथा उत्तर के देशों में अशान्ति, कष्ट तथा बालकों को पीड़ा होती है, दक्षिण के देशों में युद्ध आदि का भय और पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है। ''ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितम्। देशभङ्गं विजानीयात् शिशूनां च विनाशहि''॥ इस पक्ष में भी चतुर्ग्रही योग बना हुआ है इसके प्रभाव से कहीं जलप्लावन या भारी रक्तपात होने से जनधन की हानि होगी। शनि-मंगल की युति से बम्ब विस्फोट, यान दुर्घटना, अग्निकाण्ड तथा आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि होगी। बुध के सिंह राशि में प्रवेश करने से सूत, कपड़े, देवदारू, रुई, चांदी, सोना आदि में तेजी हो जाती है। खाण्ड, शक्कर और कपूर के भाव घट जाते हैं।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	९	५	४	८	४	४	९	३
२९	११	३	१५	११	१८	१५	२४	२४
३१	५	५१	४८	२३	५	३३	१७	१७
२५	०	२	५८	४७	४	१०	८	८
५७	७६५	३८	१०१	४	७३	७	३	३
४०	१४	०	६	१०	४१	२३	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- सूर्य के आगे बुध, शुक्र, शनि, मंगल के स्थित होने से तेज हवा के साथ कहीं खण्डवृष्टि व कहीं- कहीं भारी वर्षा होगी। शनि-मंगल के एक राशि में स्थित होने से कहीं भारी वर्षा व प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन- धन हानि होगी। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, बिहार, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ के अधिकांश भागों में अच्छी वर्षा होगी।

श्रीसंवत् २०६५ शकः १९३०
भाद्रपद कृष्ण पक्षः १०

ता. १७ से ३० अगस्त सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति २६ श्रावण से ८ भाद्रपद तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु।

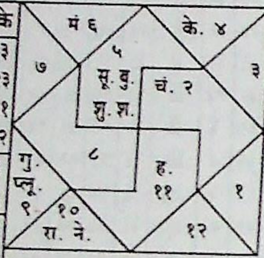
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	भाद्रपद (हि.)	श्रावण (मु.)	अगस्त (अं.)	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
२६	१	र	५२	०३	२६	४५	ध	२१	२२	१४	२८	शो	१३	०१	बा	१४	४९	३२	२९	५	५५	१८	५५	२	१५	१७	कुम्भ	शनि पश्चिम में अस्त १०/३१, शब-ए-बारात,
२७	२	चं	५०	४६	२६	१५	श	२२	२५	१४	५४	अ	११	४९	तै	१४	३३	३२	२५	५	५६	१८	५४	३	१६	१८	कुम्भ	A सायन कन्या में सूर्य २३/३७, शरद् ऋतु प्रारम्भ, हल ६,
२८	३	मं	४८	२५	२५	१९	पूभा	२२	२१	१४	५३	सु	१०	१४	व	१३	४९	३२	२१	५	५६	१८	५३	४	१७	१९	मी.८।५५	भद्रा १३/५० से २५/१९ तक, कज्जली ३,
२९	४	बु	४५	०८	२४	०	उभा	२१	१८	१४	२८	धृ	८	२१	ब	१२	४२	३२	१७	५	५७	१८	५२	५	१८	२०	मीन	व्य.महा. २८/३२ से, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०/४९, बहुला ४,
३०	५	गु	४१	०४	२२	२३	रे	१९	२५	१३	४४	शू	६ २७	०९ ४४	कौ	११	१४	३२	१४	०	५८	१८	५१	६	१९	२१	मे.१३।४४	पंचक १३/४४ तक, व्य.महापात ८/४० तक,
३१	६	शु	३६	२१	२०	३१	अश्वि	१६	५०	१२	४२	वृ	२५	०६	ग	९	२९	३२	१०	५	५८	१८	५०	७	२०	२२	मेष	भद्रा २०/३१ से, उ.फा. में बुध २२/३७, उ.फा. में शुक्र २९/१६, A
भा.१	७	श	३१	०८	१८	२६	भर	१३	४१	११	२७	ध्रु	२२	१८	वि	७	२९	३२	०६	५	५९	१८	४९	८	२१	२३	वृ.१७।०७	भद्रा ७/३० तक, श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत स्मार्तो का, चंद्रोदय २२/२९, B
२	८	र	२५	३१	१६	११	कृति	१०	०७	१०	०२	व्या	२९	२४	कौ	१६	११	३२	०२	५	५९	१८	४८	९	२२	२४	वृष	कन्या में बुध २७/३५, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों का,
३	९	चं	१९	३९	१३	५१	रो	६	१५	८	३०	ह	१६	२४	ग	१३	५१	३१	५८	६	०	१८	४७	१०	२३	२५	मि.१९।४२	भद्रा २४/४० से, कन्या में शुक्र २२/२७, हस्त में मंगल २१/१४, गुग्गा नवमी,
४	१०	मं	१३	४१	११	२८	मृ	२ ५८	१४ १५	६ २९	५४ १८	व	१३	२३	वि	११	२८	३१	५४	६	०	१८	४६	११	२४	२६	मिथुन	भद्रा ११/२८ तक, B कालाष्टमी, आद्याकाली जयंती, रा.भाद्रपद प्रा.,
५	११	बु	७	४६	०९	०७	पुन	५४	२८	२७	४८	सि	१०	२३	बा	९	०७	३१	५०	६	०१	१८	४५	१२	२५	२७	क.२२।१०	अजा ११ व्रत सबका, पर्यूषण पर्व प्रारम्भ (जैन),
६	१२	गु	२	०५	०६	५१	पु	५१	०५	२६	२७	व्य	७ २८	२८ ४२	तै	६	५१	३१	४६	६	०१	१८	४४	१३	२६	२८	कर्क	भद्रा २८/४६ से, प्रदोष व्रत, C कैलाशयात्रा, डाकिनी १४,
०	१३	गु	५६	५२	२८	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशीतिथि क्षय, D लोहार्गलयात्रा, रानी सती मेला झुंझनु (राज.),
७	१४	शु	५२	१६	२६	५६	श्ले	४८	११	२५	२१	प	२६	०८	वि	१५	४८	३१	४२	६	०२	१८	४३	१४	२७	२९	सिं.२५।२१	भद्रा १५/४९ तक, अगस्त्य उदय १३/२८, मासशिवरात्रि, अघोरा १४, C
८	३०	श	४८	३५	२५	२८	मघा	४६	२६	२४	३७	शि	२३	५२	च	१४	०९	३१	३८	६	०२	१८	४२	१५	२८	३०	सिंह	पू.फा. में सूर्य १३/२२, शनैश्चरी अमावस्या पुण्य, कुश ग्रहणी ३०, पिठौरी ३०, D

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

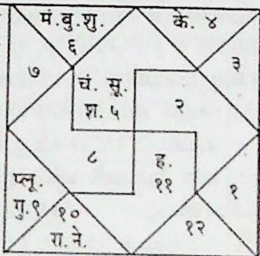
भाद्रपद कृष्ण ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५९८५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१	५	४	८	४	४	९	३
७	७	८	२८	१८	२७	१६	२३	२३
१३	१२	५६	३७	५५	५४	३२	५१	५१
१९	९	२२	२७	११	२१	३९	४२	४२
५७	८५४	३८	८९	२	७३	७	३	३
५२	९	२४	३९	४७	३८	३१	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
मघा ३	कृत्तिका ४	उफा ४	उफा १	पूभा ३	उफा १	पूफा १	धनि १	पूफा ३



अष्टमी रविवार को बुध कन्या राशि में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप सुवर्ण तथा शक्कर छठे माह तक लाभ देते हैं एवं इसके पश्चात इनके मूल्यों में कमी हो जाती है। **''कन्या राशि गते ज्ञेहि कांचनं शुद्धशर्करा। मासे षष्ठे ददेल्लाभं पुनः शस्तो भविष्यति''**। मंगल हस्त नक्षत्र में नवमी के दिन प्रवेश करेगा। इसके प्रभाव से वर्षा कम होती है तथा धान्य की उपज कम होती है एवं घी तथा लवण के भावों में तेजी होती है। **''हस्तेकुजेल्पांबु च तुच्छधान्यं घृतं गुरौ वा लवणं महर्घम्''**॥ सोमवार को शुक्र कन्या राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से धान्यों का नाश होता है तथा धान्यों के मूल्यों में वृद्धि होती है एवं इसके प्रभाव से चावल के मूल्य विशेष करके बढ़ जाते हैं। **''कन्याराशिगते शुक्रे सर्वसस्यं विनश्यति। तत्रधान्य महर्घाणि शालिश्चैव विशेषतः''**। इस पक्ष के पूर्वार्द्ध में भी चतुर्ग्रही योग बना हुआ है जिसके फलस्वरूप कहीं जलप्लावन होगा या रक्तपात से जन-धन की हानि होगी। मंगल के राशि परिवर्तन करने से शनि-मंगल का अशुभकारी द्विर्द्वादश योग बन गया है इसके प्रभाव से दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी, अशान्ति का वातावरण बनेगा तथा आतंकवादी व राष्ट्र विरोधी तत्व भय का वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे।

भाद्रपद कृष्ण ३० शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५९९१



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	४	५	५	८	५	४	९	३
१३	२	१२	७	१८	५	१७	२३	२३
०	२३	४७	१३	४१	१६	१७	३२	३२
५७	३७	३४	४०	१४	४	४८	३७	३७
५७	८२२	३८	८०	१	७३	७	३	३
२	५२	४३	४९	४०	३६	३३	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
मघा ४	मघा १	उफा १	उफा ४	पूभा १	हस्त ३	पूफा १	धनि १	पूफा ३

आकाश लक्षण- इस पक्ष में चतुर्ग्रही योग बन रहा है तथा सूर्य बुध शुक्र शनि मंगल के नीरा अमृता जला सप्तनाड़ी चक्र में स्थित होने से अधिकांश भागों में तेज वर्षा होगी। सूर्य के आगे मंगल के स्थित होने से कुछ भागों में वर्षा अल्प होगी या वर्षा का अवरोध होगा। चतुर्ग्रही योग होने से कहीं जलप्लावन होगा या प्राकृतिक प्रकोप से जनधन की हानि होगी। अतिवर्षण, अल्पवर्षण, ओलावृष्टि, आंधी, तूफान से कृषि की हानि होगी।

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
भाद्रपद शुक्ल पक्ष: ११

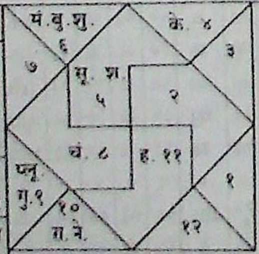
ता. ३१ अगस्त से १५ सितम्बर सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २४ भाद्रपद तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद्ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिन मान घटी	दिन मान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. भाद्रपद	मु. शाबान	अं. अगस्त	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
९	१	र	४६	०१	२४	२७	पूफा	४५	४०	२४	१८	सि	२१	५७	किं	१२	५४	३१	३४	६	०३	१८	४०	१६	२९	३१	सिंह	मौन व्रत, A २ में केतु २८/५१. गौरी ३, वराह जयंती, हरितालिका ३, साम श्रावणी, B
१०	२	चं	४४	४८	२३	५९	उफा	४६	१२	२४	३२	सा	२०	२७	बा	१२	०८	३१	३०	६	०३	१८	३९	१७	३०	सि.१	क.६।१९	हस्त में बुध ७/२६. चन्द्रदर्शन मु. ४५ उ.श्रृंगो. सितम्बर मा. ९ दि. ३०. B रमजान मु. ९.
११	३	मं	४५	०६	२४	०६	ह	४८	१४	२५	२१	शु	१९	२६	तै	११	५८	३१	२६	६	०४	१८	३८	१८	र.१	२	कन्या	हस्त में शुक्र २६/०६. वै महा. ९/५० से १३/५५ तक. वक्री श्रवण ४ में राहु आश्लेषा A
१२	४	बु	४६	५८	२४	५१	चि	५१	४७	२६	४७	शु	१८	५४	व	१२	२४	३१	२२	६	०४	१८	३७	१९	२	३	तु.१३।५९	भद्रा १२/२४ से २४/५१ तक. विनायक ४, श्री गणेश जन्मोत्सव, कलंक ४, C
१३	५	गु	५०	२१	२६	१३	स्वा	५६	४७	२८	४७	ब्र	१८	५१	ब	१३	२८	३१	१८	६	०५	१८	३६	२०	३	४	तुला	ऋषि पंचमी, मेलापाट (काश्मीर), संवत्सरी (जैन), I प्रतिपदा श्राद्ध,
१४	६	शु	५५	०३	२८	०६	वि	६०	०	-	..	ऐं	१९	१३	कौ	१५	०६	३१	१४	६	०५	१८	३५	२१	४	५	वृ.२४।३८	सूर्य ६, बलदेव ६, श्री कालु निर्वाण दिवस C चन्द्रदर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त २०/०१
१५	७	श	६०	००	-		वि	३	०	७	१८	वै	११	५५	ग	१७	१२	३१	१०	६	०६	१८	३४	२२	५	६	वृश्चिक	मेला पाट समाप्त (का.), मुक्ताभरण ७, G मेला सोढल (प्रा.),
१६	७	र	०	३१	६	२२	अनु	१०	०४	१०	०८	वि	२०	४८	व	६	२२	३१	०५	६	०७	१८	३२	२३	६	७	वृश्चिक	भद्रा ६/२२ से १९/३४ तक. श्री राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ,
१७	८	चं	६	४२	८	४७	ज्ये	१७	२८	१३	०६	प्री	२२	४३	ब	८	४७	३१	०१	६	०७	१८	३१	२४	७	८	ध.१३।०६	दुर्गाष्टमी, स्वामी शिवानन्द ज. H महालयारम्भ, संन्यासियों का चातुर्मास समा., I
१८	९	मं	१२	३४	११	०१	मू	२४	३६	१५	५७	आ	२२	३०	कौ	११	०१	३०	५७	६	०७	१८	३०	२५	८	९	धनु	श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), E फूलडोल महोत्सव,
१९	१०	बु	१७	४२	१३	१२	पूषा	३०	५६	१८	३०	सौ	२२	५९	ग	१३	१२	३०	५३	६	०८	१८	२९	२६	९	१०	म.२५।०४	भद्रा २६/०५ से, D जलझूलनी मेला श्रीचारभुजानाथ गढ़बोर, मेवाड़ (राज.), E
२०	११	गु	२१	३८	१४	४७	उषा	३६	०२	२०	३३	शो	२३	०४	वि	१४	४७	३०	४९	६	०८	१८	२८	२७	१०	११	मकर	भद्रा १४/४७ तक. पद्मा ११ व्रत सबका, श्रवण द्वादशी व्रत (विष्णुश्रृंखल योग), D
२१	१२	शु	२४	०३	१५	४६	श्र	३९	३६	२१	५९	अ	२२	३८	बा	१५	४५	३०	४५	६	०८	१८	२६	२८	११	१२	मकर	श्री भुवनेश्वरी ज., वामन द्वादशी, प्रदोष व्रत, F आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस
२२	१३	श	२४	४७	१६	०४	ध	४१	३२	२२	४६	सु	२१	४१	तै	१६	०४	३०	४०	६	०९	१८	२५	२९	१२	१३	कु.१०।२७	पंचक १०/२७ से. उफा. में सूर्य ७/१३, चित्रा में बुध ७/४०, चित्रा में शुक्र २३/२२, F
२३	१४	र	२३	५१	१५	४२	श	४१	५२	२२	५४	धृ	२०	१३	व	१५	४२	३०	३६	६	०९	१८	२४	३०	१३	१४	कुम्भ	भद्रा १५/४२ से २७/१७ तक. महापात २५/३० से २९/५१ तक. सत्यव्रत, अनन्त १४, G
२४	१५	चं	२१	२३	१४	४३	पूभा	४०	४५	२२	२८	शू	१८	१६	ब	१४	४३	३०	३२	६	१०	१८	२३	३१	१४	१५	मी.१६।३८	चित्रा में मंगल ९/४०, व्य महा. २३/२० से २७/०७ तक. प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, H

भाद्रपद शुक्ल ८ चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६००० (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

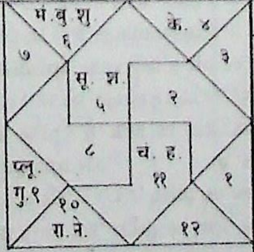
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	७	५	५	८	५	४	९	३
२२	२६	१८	१८	१८	१६	१८	२३	२३
४४	१४	३७	१९	३३	१८	२५	४	४
१२	४८	५१	८	६	१	४९	१	१
५८	७३	३९	६४	०	७३	७	३	३
१६	८	१०	१२	३	२९	३३	११	११
मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



सप्तमी शनिवार के दिन अनुराधा नक्षत्र होने से वर्षा होती है। यदि वर्षा न हो तो आगे वर्षा नहीं होती है। "**भाद्रपदे शुक्ल पक्षे सप्तमी मैत्र संयुता। न वृष्टौ न भपर्जन्यो जलाशां मुंच सर्वथा**"। द्वितीया के दिन बुध हस्त नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इसके प्रभाव से धान्य की उत्पत्ति उत्तम होती है, सुभिक्ष होता है, मनुष्य अरोग्य होते हैं तथा वर्षा श्रेष्ठ होती है। "**हस्ते बुधे सुभिक्षं स्याद्धान्यमारोग्यमम्बुदा:**"। इस पक्ष में भी शनि एवं मंगल का परस्पर द्विर्द्वादश योग बना हुआ है जिसके प्रभाव से आतंकवादी, राष्ट्रविरोधी तत्त्व अपनी गतिविधियों को बढ़ायेंगे। बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड, विमान दुर्घटना आदि दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी। शुक्ल सप्तमी की वृद्धि होने से धान्यों के मूल्यों से कमी होगी। पश्चात्त में चित्रा नक्षत्र में मंगल प्रवेश करेगा। इसके प्रभाव से लोगों को रोगों की अधिकता होने से पीड़ा होगी। चावल तथा गेहूं के भावों में तेजी का रुख होगा। "**चित्रा कुजेऽतीवरुजोतिपीडाशाशीष्टगोधूममहर्घतापि**"। शुक्र के हस्त नक्षत्र में प्रवेश करने से रुई के भावों में कमी हो जाती है। राहु मंगलवार को वक्रगति से श्रवण नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से गेहूं, अलसी व अनाज के भावों में तेजी आ जाती है।

आकाश लक्षण- सूर्य-शनि के जला एवं नीरा नाड़ी में स्थित होने तथा इनसे अगले भाव में सप्तनाड़ी चक्र की सौम्यानाड़ी में स्थित मंगल बुध शुक्र के स्थित होने से व्यापक तेज वर्षा होगी, बुध की स्थिति के कारण वायु का तेज प्रवाह होगा एवं मंगल की स्थिति के कारण कहीं-कहीं खण्डवृष्टि एवं कहीं वर्षा का अवरोध भी सम्भव है।

भाद्रपद शुक्ल १५ चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६००७



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१०	५	५	८	५	४	९	३
२८	२३	२३	२४	१८	२४	१९	२२	२२
३२	४२	१३	५३	३७	५२	१८	४१	४१
३७	९	७	५७	३२	५	३२	४५	४५
५८	८२०	३९	४४	१	७३	७	३	३
२७	३	३१	१४	२४	२९	२९	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रीसंवत् २०६५ शकः १९३०
आश्विन कृष्ण पक्षः १२

ता. १६ से २९ सितम्बर सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति २५ भाद्रपद से ७ आश्विन तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरदृतु।

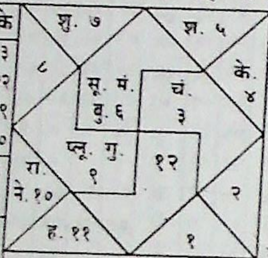
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आश्विन	मु. रमजान	अं. सितम्बर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.
२५	१	मं	१७	३८	१३	१४	उभा	३८	२६	२१	३३	गं	१५	५५	कौ	१३	३४	३०	२८	६	१०	१८	२२	आ.१	१५	१६	मीन
२६	२	बु	१२	५२	११	२०	रे	३५	१४	२०	१६	वृ	१३	१५	ग	११	२०	३०	२३	६	११	१८	२०	२	१६	१७	मे.२०।१६
२७	३	गु	७	२२	९	०८	अ	३१	२५	१८	४५	ध्रु	१०	२१	वि	९	०८	३०	१९	६	११	१८	१९	३	१७	१८	मेष
२८	४	शु	१	२६	६	४६	भर	२७	१७	१७	०७	व्या	७ २८	१९ १३	बा	६	४६	३०	१५	६	१२	१८	१८	४	१८	१९	वृ.२२।४२
०	५	शु	५५	२३	२८	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
२९	६	श	४९	२२	२५	५७	कृति	२३	०७	१५	२७	व	२५	९	ग	१५	०८	३०	११	६	१२	१८	१७	५	१९	२०	वृष
३०	७	र	४३	३७	२३	४०	रोहि	११	०८	१३	५२	सि	२२	१०	वि	१२	४७	३०	०७	०	१३	१८	१६	६	२०	२१	मि.२५।०७
३१	८	चं	३८	१६	२१	३२	मृग	१५	२८	१२	२५	व्य	११	११	बा	१०	३४	३०	०२	६	१३	१८	१४	७	२१	२२	मिथुन
आ.१	९	मं	३३	२४	११	३६	आ	१२	१६	११	०८	व	१६	३७	तै	८	३२	२९	५८	६	१४	१८	१३	८	२२	२३	क.२८।१९
२	१०	बु	२९	०६	१७	५३	पुन	९	३६	१०	०५	प	१४	५	वा	६	४२	२९	५४	६	१४	१८	१२	९	२३	२४	कर्क
३	११	गु	२५	२६	१६	२५	पु	७	३१	९	१५	शि	११	४५	बा	१६	२५	२९	५०	६	१५	१८	११	१०	२४	२५	कर्क
४	१२	शु	२२	२६	१५	१४	श्ले	६	०६	८	४२	सि	९	३९	तै	१५	१४	२९	४५	६	१५	१८	१०	११	२५	२६	सिं.८।४२
५	१३	श	२०	१३	१४	२१	म	५	२४	८	२५	सा	७	४६	व	१४	२१	२९	४१	६	१६	१८	०८	१२	२६	२७	सिंह
६	१४	र	१८	५३	१३	५०	पूफा	५	३२	८	२९	शु	३०	०९	श	१३	४९	२९	३७	६	१६	१८	०७	१३	२७	२८	क.१४।३४
७	३०	चं	१८	३३	१३	४२	उफा	६	३८	८	५६	ब्र	२८	५१	ना	१३	४२	२९	३३	६	१७	१८	०६	१४	२८	२९	कन्या

कन्या में सूर्य १७/२१, मु.४५, सं.पुण्य१०/५७ से, सौर आश्विन प्रा., द्वितीया का श्राद्ध,
भद्रा २२/१६ से, पंचक २०/१६ तक, तृतीया का श्राद्ध,
भद्रा ९/०८ तक, चतुर्थी का श्राद्ध, **गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०/०३,**
तुला में शुक्र १०/१४, पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
पंचमी तिथि क्षय, **A** अष्टमी का श्राद्ध, शहादत-ए-हजरतअली,
भद्रा २५/५७ से, षष्ठी का श्राद्ध, **चंद्र षष्ठी व्रत,** **C** **मास शिवरात्रि,**
भद्रा १२/४८ तक, शनि पूर्व में उदित २२/३३, सप्तमी का श्राद्ध, **श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त,**
कालाष्टमी, सायन तुला में सूर्य २१/१९, **सूर्य दक्षिण गोल में प्रवेश, A**
नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, रा. आश्विन प्रा., **B** त्रयोदशी व चतुर्दशी श्राद्ध, **C**
भद्रा ६/४३ से १७/५३ तक, स्वाती में शुक्र २१/१४, बुध वक्री १२/४७, दशमी का श्राद्ध,
तुला में मंगल ११/०१, **इन्दिरा ११ व्रत सबका,** एकादशी का श्राद्ध,
हस्त में सूर्य २२/४६, **संन्यासियों का श्राद्ध,** द्वादशी का श्राद्ध, जमातुलविदा, प्रदोष व्रत, मघा श्राद्ध,
भद्रा १४/२१ से २६/०३ तक, वै.महा. २६/५७ से, जल-शस्त्र-अग्नि-विषादि से मृतकों का श्राद्ध, **B**
वै.महा. ६/५१ तक, **सर्वपैत्री श्राद्ध १३/५० के बाद, D** गजच्छाया योग ८/५६ के बाद
सोमवती अमावस्या, सर्वपैत्री ३०, शवएकद्र, मेला फल्गू एवं कपालमोचन (हरि.), मातामाह श्राद्ध, **D**

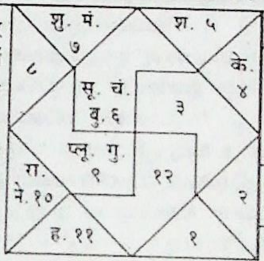
आश्विन कृष्ण ८ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६०१४ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	२	५	५	८	६	४	९	३
५	२	२७	२८	१८	३	२०	२२	२२
२२	३५	५०	३४	५१	२५	१०	११	११
३४	२६	५५	२३	१६	२५	३१	३०	३०
५८	८१६	३९	११	२	७३	७	३	३
४३	४९	५४	२०	४३	१७	२२	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
३ उफा	३ मृग	२ चित्रा	२ चित्रा	२ पूषा	४ चित्रा	३ पूफा	४ श्रवण	२ श्लेषा



मंगलवार को सूर्य कन्या राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप उत्तर तथा पश्चिम के देशों में पीड़ा एवं अशान्ति होती है, पूर्व के देशों में युद्धादि की संभावना से भय का वातावरण बनता है तथा दक्षिण के देशों में सुभिक्ष आदि शुभ फल होते हैं। **''वायव्ये च यदादृष्टिः सर्वसौख्य समन्विता। सुभिक्षं च विजानीयात् नृपाणां च कलिर्भवेत्''**॥ शुक्रवार के दिन शुक्र अपनी राशि तुला में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप पृथ्वी पर क्षेम व आरोग्यता रहती है तथा कहीं-कहीं विरोध भी होता है। **''यदा दैत्यगुरुश्चैव तुलाराशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत्''**॥ एकादशी को मंगल तुला राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से सब धान्य महंगे होंगे तथा उड़द, मूंग, सूत, कपास आदि वस्तु विशेष महंगे होते हैं। **''भूमिपुत्रस्तुले जातः सर्वधान्यमहर्घता। माषामुद्गास्तथा सूत्रंकार्पासादि विशेषतः''**॥ इस पक्ष में भी दशमी तिथि तक शनि-मंगल का द्विर्द्वादश योग बना हुआ है इसके प्रभाव से अशान्ति का वातावरण बनेगा तथा राष्ट्रविरोधी, समाजविरोधी आतंकी तत्व अपनी कार्यवाई से जन-धन की हानि करने का प्रयास करेंगे। शुक्र के तुला राशि में प्रवेश करने से सोने के भावों में तेजी आ जाती है। रुई तथा चांदी के भावों में पहले तेजी आती है तथा बाद में मन्दी आती है। चांदी के भावों में घटबढ़ अधिक होती है।

आश्विन कृष्ण ३० चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६०२१



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	५	६	५	८	६	४	९	३
१२	८	२	२७	१९	११	२१	२१	२१
१४	८	३१	३२	१४	५८	१	५७	५७
१८	२७	२२	५८	४	४	५१	१५	१५
५८	७७३	४०	३७	३	७३	७	३	३
५८	५०	१७	४७	५१	११	१३	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
१ हस्त	४ उफा	३ चित्रा	२ चित्रा	२ पूषा	२ स्वाती	३ पूफा	४ श्रवण	२ श्लेषा

आकाश लक्षण- सूर्य-मंगल-बुध के आगे स्वगृही शुक्र के स्थित होने से तेज वायु के साथ कुछ भागों में सामान्य वर्षा होगी व कुछ भागों में अच्छी वर्षा होगी। कहीं खण्डवृष्टि व कहीं अल्पवर्षा व वर्षा में कमी होगी। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, गुजरात, उड़ीसा, कर्नाटक, गोवा, आसाम, पंजाब, हिमाचल प्रदेश में कहीं अच्छी वर्षा व कहीं खण्डवृष्टि होगी।

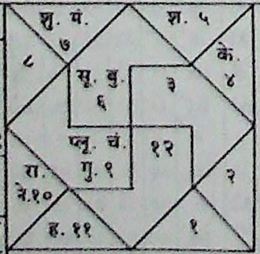
श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
आश्विन शुक्ल पक्ष : १३

ता. ३० सितम्बर से १४ अक्टूबर सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति ८ से २२ आश्विन तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदृतु।

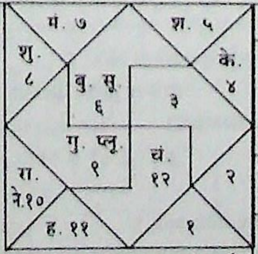
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आश्विन	मु. रमजान	अं. सितम्बर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
८	१	मं	१९	२२	१४	०२	ह	८	४९	०९	४९	ऐं	२७	१८	ब	१४	०२	२९	२८	६	१७	१८	०४	१५	२९	३०	तु.२२।२६	बुधास्त पश्चिम में १८/०६, घटस्थापन, शारदीय नवरात्रारम्भ, A
९	२	बु	२१	२७	१४	५३	चि	१२	१२	११	११	वै	२७	०७	कौ	१४	५३	२९	२४	६	१८	१८	०४	१६	३०	अ.१	तुला	अक्टूबर मा.१० दि. ३१, चन्द्रदर्शन मु. १५, उ.श्रृंगोन्नति, A अग्रसेन जयंती,
१०	३	गु	२४	४९	१६	१४	स्वा	१६	५०	१३	०३	वि	२७	१९	ग	१६	१४	२९	२४	६	१८	१८	०३	१७	श.१	२	तुला	भद्रा २९/०७ से, श्री महात्मा गांधी ज., श्रीलालबहादुर शास्त्री जयंती, B
११	४	शु	२९	२५	१८	५	वि	२२	४०	१५	२३	प्री	२७	५१	वि	१८	०५	२९	१६	६	१९	१८	०१	१८	२	३	वृ.८।४५	भद्रा १८/०५ तक, विनायक ४, B शव्वाल मु. १०, इदुलफितर,
१२	५	श	३५	०१	२०	२०	अनु	२९	२८	१८	०७	आ	२८	४०	ब	७	१०	२९	११	६	२०	१८	००	१९	३	४	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता पंचमी व्रत, D भरतमिलाप,
१३	६	र	४१	१५	२२	५०	ज्ये	३६	५५	२१	०६	सौ	२९	३७	कौ	९	३४	२९	०७	६	२०	१७	५९	२०	४	५	ध.२१।०६	स्वाती में मंगल ९/०६, विशाखा में शुक्र १९/३९, C श्री भद्रकाली ज.,
१४	७	चं	४७	३३	२५	२२	मूल	४४	२८	२४	०८	शो	-	-	ग	१२	०७	२९	०३	६	२१	१७	५८	२१	५	६	धनु	भद्रा २५/२२ से, कालरात्रि ७, सरस्वती आवाहन, आयंबिल ओली प्रा. (जैन),
१५	८	मं	५३	२०	२७	४१	पूषा	५१	३२	२६	५८	शो	६	३३	वि	१४	३४	२८	५९	६	२१	१७	५७	२२	६	७	धनु	भद्रा १४/३४ तक, मंगल पश्चिम में अस्त ३०/०९, श्रीदुर्गामहाष्टमी, सरस्वती पूजन, C
१६	९	बु	५७	५९	२९	३४	उषा	५७	३२	२९	२३	अ	७	१७	बा	१६	४२	२८	५४	६	२२	१७	५६	२३	७	८	म.९।३७	महानवमी, गजाश्वनवमी, नवरात्र समाप्त, सरस्वती बलिदान,
१७	१०	गु	६०	०	-	-	श्र	६०	००	-	-	सु	७	३९	तै	१८	१६	२८	५०	६	२२	१७	५५	२४	८	९	मकर	विजयादशमी, दशहरा, आयुध पूजा, अपराजिता पूजा, सरस्वती विसर्जन,
१८	१०	शु	१	०	६	४७	श्र	०१	५८	०७	१०	ध	७	३०	ग	६	४७	२८	४६	६	२३	१७	५३	२५	९	१०	कुं.१९।४८	भद्रा १९/०७ से, पंचक १९/४८ से, चित्रा में सूर्य ११/४३, श्री माध्वाचार्य जयंती,
१९	११	श	२	०७	७	१४	ध	०४	३४	०८	१३	शू	६ २९	४६ २४	वि	७	१४	२८	४२	६	२३	१७	५२	२६	१०	११	कुम्भ	भद्रा ७/१४ तक, व्य.महापात १७/५३ से २१/५६ तक, पापांकुशा ११ व्रत सबका, D
२०	१२	र	१	१२	६	५३	श	०५	११	०८	२९	वृ	२७	२४	बा	६	५३	२८	३८	६	२४	१७	५१	२७	११	१२	मी.२६।१०	प्रदोष व्रत, E कोजागर व्रत, शरद् पूर्णिमा, महर्षि बाल्मीकि जयंती, F
०	१३	र	५८	२२	२९	४५	०	००	००	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशी तिथि क्षय, F कार्तिक स्नान प्रा., ओली समाप्त (जैन),
२१	१४	चं	५३	४६	२७	५५	पूभा	०३	५४	०७	५८	ध्रु	२४	५१	ग	१६	५५	२८	३३	६	२५	१७	५०	२८	१२	१३	मीन	भद्रा २७/५५ से, वृश्चिक में शुक्र २४/५९, महा. २९/३७ से, बुधोदय पूर्व में १९/३३,
२२	१५	मं	४७	४८	२५	३२	उभा	०० ५६	५६ ३९	६ २९	४८ ०५	व्या	२१	४९	वि	१४	४७	२८	२९	६	२५	१७	४९	२९	१३	१४	मे.२९।०५	भद्रा १४/४८ तक, पंचक २९/०५ तक, महापात १०/०० तक, सत्यव्रत, E

आश्विन शुक्ल ८ भौमे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६०२९ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है) आश्विन शु.१५ भौमे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६०३६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	८	६	५	८	६	४	९	३
२०	१५	७	१९	१९	२१	२१	२१	२१
६	५९	५५	५०	५०	४३	५८	३१	३१
५४	२६	९	७	५२	०	४२	४९	४९
५९	७९६	४०	६८	५	७३	६	३	३
१३	३९	४३	५५	२२	१	५७	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस मास में पांच मंगलवार होने से कहीं रक्तपात होगा तथा छत्रभंग होता है। **यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासरा:। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्**"। मंगल के स्वाति नक्षत्र में संचार से अनावृष्टि होती है। चतुर्दशी को शुक्र वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप सब धान्यों के भाव सस्ते होते हैं। शान्ति होती है, सब लोग निर्भय रहते हैं एवं स्वस्थचित्त होते हैं। "**वृश्चिकचे च गते शुक्रे सर्वधान्यसमर्घता। लोकस्तु निर्भयस्तत्र सुखस्वस्थं प्रवर्तते**"॥ आश्विन शुक्ल एकादशी के दिन शनिवार होने से छत्रभंग होता है अथवा नगर-ग्राम का नाश होता है, समाज विरोधी तत्व अशान्ति उत्पन्न करते हैं तथा चोरों का उपद्रव होता है। "**एकादश्यां शनौ तस्मिञ्छत्रभंगो अथवा भुवि। नगरग्रामभंग: स्याद्वैरिचौराद्युपद्रवा:**"॥ इस पक्ष के आरम्भ में बुध वक्रगति से चलते हुए अस्त हो रहा है इसके प्रभाव से चांदी के भावों में अत्यधिक तेजी आ जाती है। इसी पक्ष में भौम स्वाती नक्षत्र में प्रवेश कर रहा है इसके फलस्वरूप ऊनी वस्त्रों के भाव बढ़ जाते हैं। रुई एवं गेहूं के भावों में भी तेजी होती है। मंगल के अस्त होने से रुई के भाव कुछ घटते हैं। गेहूं, चना, गुड़, अलसी के भावों में तेजी होती है।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	११	६	५	८	७	४	९	३
२७	१५	१२	१३	२०	०	२२	२१	२१
२	५४	४१	५३	३१	१३	४६	९	९
०	४	१३	४०	५४	३९	३२	३४	३४
५९	८६०	४१	१४	६	७२	६	३	३
२५	५६	५	४८	३०	५१	३९	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- इस पक्ष में सूर्य के साथ बुध के स्थित होने तथा सूर्य के आगे शुक्र-मंगल के स्थित होने से कहीं वर्षा व कहीं-कहीं तेजवायु के साथ खण्डवृष्टि होगी। कुछ स्थानों पर तेज वायु के साथ छिटपुट बूंदाबांदी होगी। भौम की सूर्य के आगे स्थिति कहीं-कहीं वर्षा का अवरोध उत्पन्न करेगी। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड में ऋतु परिवर्तन के लक्षण दिखाई देंगे।

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३० कार्तिक कृष्ण पक्ष: १४

ता. १५ से २८ अक्टूबर सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति २३ आश्विन से ६ कार्तिक तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदृऋतु।

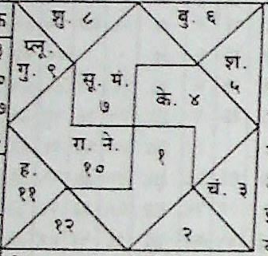
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय स्टैं. टा. घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आश्विन	मु. शव्वाल	अं. अक्टूबर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.
२३	१	बु	४०	४१	२२	४६	अश्वि	५१	२६	२७	००	ह	१८	२७	बा	१२	११	२८	२५	६	२६	१७	४८	३०	१४	१५	मेष
२४	२	गु	३३	१५	१९	४५	भ	४५	४२	२४	४३	व	१४	५१	तै	९	१६	२८	२१	६	२६	१७	४७	का.१	१५	१६	वृ.३०।०८
२५	३	शु	२५	३०	१६	३९	कृ	३९	५३	२२	२४	सि	११	१०	वि	१६	३९	२८	१७	६	२७	१७	४६	२	१६	१७	वृष
२६	४	श	१७	५८	१३	३९	रो	३४	२१	२०	१२	व्य	७ २८	३१ ००	बा	१३	३९	२८	१३	६	२८	१७	४५	३	१७	१८	वृष
२७	५	र	१०	५७	१०	५१	मृ	२९	२७	१८	१५	प	२४	४४	तै	१०	५१	२८	०९	६	२८	१७	४४	४	१८	१९	मि.७।११
२८	६	चं	४	४४	०८	२३	आ	२५	२४	१६	३९	शि	२१	४५	व	८	२२	२८	०५	६	२९	१७	४३	५	१९	२०	मिथुन
०	७	चं	५९	३०	३०	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२०	०	०००
२९	८	मं	५५	२२	२८	३८	पुन	२२	२२	१५	२६	सि	११	०७	बा	१७	२५	२८	००	६	३०	१७	४२	६	०	२१	क.९।४२
३०	९	बु	५२	११	२७	२६	पु	२०	२६	१४	४१	सा	१६	५०	तै	१५	५९	२७	५६	६	३०	१७	४१	७	२१	२२	कर्क
का.१	१०	गु	५०	२२	२६	४०	श्ले	१९	३४	१४	२१	शु	१४	५४	व	१५	००	२७	५२	६	३१	१७	४०	८	२२	२३	सिं.२४।२१
२	११	शु	४१	२७	२६	११	मघा	१९	४५	१४	२६	शु	१३	१८	व	१४	२६	२७	४८	६	३२	१७	३९	९	२३	२४	सिंह
३	१२	श	४१	३०	२६	२१	पूफा	२०	५५	१४	५४	ब्र	१२	०१	कौ	१४	१७	२७	४४	६	३२	१७	३८	१०	२४	२५	क.२१।०५
४	१३	र	५०	३१	२६	४५	उफा	२३	००	१५	४५	ऐं	११	०२	ग	१४	३०	२७	४१	६	३३	१७	३७	११	२५	२६	कन्या
५	१४	चं	५२	२८	२७	३३	ह	२६	००	१६	५८	वै	१०	२०	वि	१५	०६	२७	३७	६	३४	१७	३६	१२	२६	२७	तु.२९।४२
६	३०	मं	५५	२३	२८	४४	चि	२९	५५	१८	३३	वि	९	५५	च	१६	०५	२७	३३	६	३४	१७	३६	१३	२७	२८	तुला

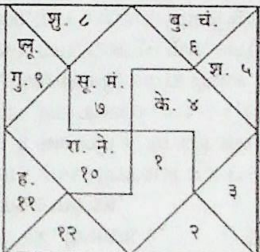
बुध मार्गी २५/३६,
भद्रा ३०/१२ से, तुला में सूर्य २९/२०, अनुराधा में शुक्र १८/५४, सं.मु. ३०, A
भद्रा १६/३९ तक, श्री गणेश ४ व्रत, करक-करवा चौथ, चन्द्रोदय १९/३३,
A पुण्य काल अगले दिन ११/४४ तक, सौर कार्तिक प्रा.
C श्रीहनुमान जयंती, मास शिवरात्रि
भद्रा ८/२३ से १९/१७ तक,
सप्तमी तिथि क्षय, D कमला जयंती, महावीर निर्वाण दिवस (जैन),
कालाष्टमी, अहोई अष्टमी,
B सायन वृश्चिक में सूर्य ६/४२, हेमन्तऋतु प्रा., रा. कार्तिक प्रा.,
भद्रा १५/०० से २६/४० तक, स्वाती में सूर्य २२/१८, वै.महा. १७/१८ से २१/३३ तक, B
विशाखा में मंगल २०/१२, रमा ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
रमा ११ व्रत निम्बार्कों का, गोवत्स द्वादशी,
भद्रा २६/४५ से, प्रदोष व्रत, यमदीपदान, धनतेरस, श्रीधनवन्तरी जयंती,
भद्रा १५/०६ तक, चित्रा में बुध १५/४४, ज्येष्ठा में शुक्र १९/०८, नरक चतुर्दशी, C
भौमवती अमावस्या पुण्य, श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, D

कार्तिक कृष्ण ८ भौमे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६०४३ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) कार्तिक कृष्ण ३० भौमे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६०५०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	२	६	५	८	७	४	९	३
३	२७	१७	१५	२१	८	२३	२०	२०
५८	३३	२९	५१	२०	४३	३२	४७	४७
४५	३	५५	३१	३६	५	१३	१८	१८
५९	८३२	४१	५३	७	७२	६	३	३
४१	५०	२८	५३	३३	४१	२०	११	११
मा उ	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
चित्रा ४	पुनर्वसु ३	स्वाति ४	हस्त २	पू.षा. ३	अनु. २	पू.फा. ४	श्रवण ४	आश्लेषा २



सूर्य तुला राशि में गुरुवार को प्रवेश कर रहा है इसके प्रभाव से पूर्व तथा दक्षिण के देशों में अशान्ति, दु:ख-पीड़ा होती है, पश्चिम के देशों में युद्ध आदि का भय और उत्तर के देशों में सुख शान्ति होती है। **"आग्नेयां दृष्टिमार्गस्तु वारुणादौयथाक्रमम्। देशभंगं विजानीयात् सृष्टिसंहारकारकम्"**॥ मंगल के विशाखा नक्षत्र में प्रवेश से गेहूं और कपास मंहगे होते हैं। **"द्विदेवे कार्पासगोधूममहर्घभाव:"**॥ इस मास में पांच गुरुवार होने से पश्चिम देश में विग्रह, अशान्ति तथा युद्धादि का भय होता है। **"यत्रमासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पते:। विग्रह: पश्चिमे देशे खड्गयुद्धञ्च जायते"**॥ सूर्य के आगे शुक्र के स्थित होने से अच्छी वर्षा होती है। **"सूर्याग्रे च यदा शुक्रस्तदा वृष्टि: सुशोभना"**। मंगल के विशाखा नक्षत्र में प्रवेश करने से रुई, कपास और गेहूं के भावों में तेजी का रुख होता है। पक्षान्त से एक दिन पूर्व शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप सोने एवं चांदी के भावों में कमी हो जाती है तथा अनाज के भाव भी घट जाते हैं।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	५	६	५	८	७	४	९	३
१०	२९	२२	२४	२२	१७	२४	२०	२०
५७	५३	२१	८	१६	११	१५	२५	२५
१९	३५	२२	४५	२९	१८	२०	३	३
५९	७४४	४१	८७	८	७२	५	३	३
५६	३४	५२	२१	३२	२९	५५	११	११
मा उ	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
स्वाति २	चित्रा २	विशाखा १	चित्रा १	पू.षा. ३	ज्येष्ठा १	पू.फा. ४	श्रवण ४	आश्लेषा २

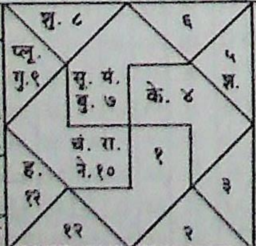
आकाश लक्षण- सूर्य के साथ मंगल तथा इनके आगे शुक्र तथा पीछे सप्तनाड़ी चक्र की सौम्यानाड़ी में स्थित बुध के होने से तेज वायु के साथ आंधी तूफान की सम्भावना है। कुछ स्थानों में तेज बादल चाल के साथ छिटपुट बूंदाबांदी होगी। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर, आसाम, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड में कुछ स्थानों में हल्की बूंदाबांदी होगी। ऋतु परिवर्तन के लक्षण शीत बढ़ने के साथ प्रकट होंगे।

श्री संवत् २०६५ शकः १९३० कार्तिक शुक्ल पक्षः १५	दिन मान	स्टैं. टा. सूर्योदय	स्टैं. टा. सूर्यास्त	तारीखें हि.	तारीखें मु.	तारीखें अं.	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा.	ता. २९ अक्टूबर से १३ नवम्बर सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति ७ से २२ कार्तिक तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु।

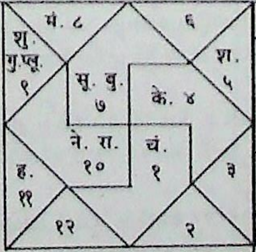
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	कार्तिक	जिल्काद	अक्टूबर	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
७	१	बु	५९	११	३०	११	स्वा	३४	४७	२०	३०	प्री	९	४९	कि	८	०४	२७	२९	६	३५	१७	३५	१४	२८	२९	तुला	अन्नकूट, गोवर्द्धन पूजा, बलिपूजा, गौ, क्रीड़ा, A विश्वकर्मा पूजा,
८	२	गु	६०	०	-	-	विशा	४०	३६	२२	५०	आ	१०	००	बा	११	१५	२७	२५	६	३६	१७	३४	१५	२९	३०	वृ.१६।१३	चन्द्रदर्शन मु.४५, उ.श्रृंगो., भैयादूज, यम द्वितीया, चित्रगुप्त पूजा, A
९	२	शु	४	११	८	१७	अनु	४७	१८	२५	३२	सौ	१०	२९	कौ	८	१७	२७	२१	६	३६	१७	३३	१६	१	३१	वृश्चिक	तुला में बुध २६/४६, जिल्कादि मु. ११, F सिद्धांचल यात्रा (जैन),
१०	३	श	९	५७	१०	३६	ज्ये	५४	४१	२८	३०	शो	११	१३	ग	१०	३६	२७	१७	६	३७	१७	३२	१७	२	न.१	ध.२८।३०	भद्रा २३/५२ से, विनायक ४, नवम्बर मा. ११ दि. ३०,
११	४	र	१६	२२	१३	११	मू	६०	००	-	-	अ	१२	०९	वि	१३	११	२७	१४	६	३८	१७	३२	१८	३	२	धनु	भद्रा १३/११ तक, B तुलसी विवाह प्रा., पण्डरपुर यात्रा (महा.)
१२	५	चं	२३	०१	१५	५१	मू	२	२४	०७	३६	सु	१३	०९	बा	१५	५१	२७	१०	६	३९	१७	३१	१९	४	३	धनु	श्री ज्ञान पंचमी, पांडव पंचमी, सौभाग्य पंचमी,
१३	६	मं	२९	२५	१८	२५	पूषा	१०	०३	१०	४१	धृ	१४	०५	तै	१८	२५	२७	६	६	३९	१७	३०	२०	५	४	म.१७।२५	बुधास्त पूर्व में १७/४५, सूर्य ६, E पद्मक योग १०/५१ के बाद, F
१४	७	बु	३४	५६	२०	३१	उषा	१७	०३	१३	३०	शू	१४	४८	ग	७	३६	२७	३	६	४०	१७	२९	२१	६	५	मकर	भद्रा २०/३९ से, स्वाती में बुध ७/०९, विशाखा में सूर्य ३०/२१, अष्टाह्निक व्रत प्रा. (जैन),
१५	८	गु	३९	०२	२२	१८	श्रव	२२	५०	१५	४९	गं	१५	०६	वि	९	३३	२६	५९	६	४१	१७	२९	२२	७	६	कुं.२८।४४	भद्रा ९/३३ तक, पंचक २८/४४ से व्य.महापात ९/२८ से १४/३० तक, गोपाष्टमी,
१६	९	शु	४१	१४	२३	११	ध	२६	५४	१७	२७	वृ	१४	५३	बा	१०	५१	२६	५५	६	४२	१७	२८	२३	८	७	कुम्भ	मूल धनु में शुक्र २०/३४, वृश्चिक में मंगल २६/४६, अक्षया ९, कूष्माण्ड ९,
१७	१०	श	४१	१५	२३	१३	श	२८	५४	१८	१६	ध्रु	१४	००	तै	११	११	२६	५२	६	४२	१७	२७	२४	९	८	कुम्भ	D श्री गुरुनानक ज., तुलसी विवाह व अष्टाह्निक समाप्त, E
१८	११	र	३९	०३	२२	२१	पूभा	२८	४५	१८	१३	व्या	१२	२६	व	१०	५३	२६	४८	६	४३	१७	२७	२५	१०	९	मी.१२।१९	भद्रा १०/५३ से २२/२१ तक, हरिबोधिनी ११ व्रत सबका, भीष्म पंचक व्रत प्रा., B
१९	१२	चं	३४	४५	२०	३८	उभा	२६	२१	१७	२०	ह	१०	११	ब	९	३५	२६	४५	६	४४	१७	२६	२६	११	१०	मीन	C मेला पुष्करराज गढ़गंगा रेणुका तीर्थ (हि.प्र.), निम्बार्काचार्य ज., D
२०	१३	मं	२८	३८	१८	१२	रे	२२	२३	१५	४२	व	७ २७	१७ ५२	कौ	७	३०	२६	४२	६	४५	१७	२६	२७	१२	११	मे.१५।४२	पंचक १५/४२ तक, भौम प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ १४, विद्यापति ज.,
२१	१४	बु	२१	०५	१५	१२	अश्वि	१६	४८	१३	२१	व्य	२४	३	व	१५	११	२६	३८	६	४६	१७	२५	२८	१३	१२	मेष	भद्रा १५/१२ से २५/३२ तक, अनु. में मंगल १९/३७, महा. ६/४९ से १२/०८, सत्यव्रत,
२२	१५	गु	१२	३२	११	४७	भर	१०	११	१०	५१	व	११	५७	ब	११	४७	२६	३५	६	४६	१७	२५	२९	१४	१३	वृ.१६।०९	विशाखा में बुध १२/२०, कार्तिक पूर्णिमा, कार्तिक स्नान समाप्त, C

कार्तिक शुक्ल ८ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६०५९ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) **कार्तिक शुक्ल १५ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६०६६**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	१	६	६	८	७	४	९	३
१९	१८	२८	८	२३	२८	२५	११	११
५७	४	४०	१०	३७	२	६	५६	५६
५०	१७	३	२२	५८	३२	२१	२६	२६
६०	७३९	४२	१७	९	७२	५	३	३
१२	४५	२०	२१	४०	९	२०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



तृतीया को बुध तुला राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से क्लेश कलह, अशान्ति एवं युद्ध आदि का वातावरण बनता है। **"यदा च तुलराशिस्थो निशाकरसुतस्तदा। मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहान्विता"**॥ नवमी को शुक्र धनु राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप सब धान्य मंहगे होते हैं और कृषि की भारी हानि होती है। **"यदा च धनराशिस्थो दैत्याचार्यः प्रवर्त्तते। महर्घं च विजानीयात्सर्वसस्यं विनश्यति"**॥ मंगल वृश्चिक राशि में शुक्रवार को प्रवेश कर रहा है इसके प्रभाव से सब द्रव्य मंहगे होते हैं तथा शासकों में क्रोध की अधिकता एवं ईर्ष्या होती है। **"यदा वृश्चिकराशिस्थो जायते च महीसुतः। महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्"**॥ कार्तिक शुक्ल पंचमी को सोमवार होने से अशुभ फलों में कमी होती है। नर-नारी तथा शासक सब लोग प्रसन्न व सुखी होते हैं। **"कार्तिकस्य सिते पक्षे पंचम्यां सोमवासरः। नर-नारीनृपाणां च सर्वत्र सुखदो भवेत्"**॥ तृतीया के दिन बुध तुला राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप मूंगफली, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों तथा चांदी के भावों में मन्दी आ जाती है। रुई, गुड़ खाण्ड और सोने के भावों में तेजी आ जाती है।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	०	७	६	८	८	४	९	३
२६	२३	३	११	२४	६	२५	११	११
५९	१८	३७	३२	४८	२६	४२	३४	३४
४२	५१	३४	११	६	४०	६	११	११
६०	१०६	४२	९७	१०	७१	४	३	३
२२	३७	४३	००	२८	४९	४८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- पक्ष के पूर्वार्ध में सूर्य के साथ मंगल एवं बुध स्थित है तथा इनके आगे शुक्र स्थित है इसके प्रभाव से तेज वायु, आंधी, तूफान तथा तेज बादल चाल के साथ कहीं-कहीं छिटपुट बूंदाबांदी एवं कहीं-कहीं साधारण वर्षा, खण्डवृष्टि होगी एवं शीत का प्रभाव बढ़ेगा। पर्वतीय क्षेत्रों एवं दक्षिण भारत में कुछ स्थानों पर वर्षा के साथ शीत में वृद्धि होगी। पक्ष के उत्तरार्द्ध में भौम के सूर्य के आगे स्थित हो जाने से वर्षा में अवरोध होगा।

श्रीसंवत् २०६५ शकः १९३०
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः १६

ता. १४ से २७ नवम्बर सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति २३ कार्तिक से ६ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु।

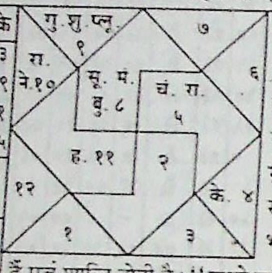
इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. कार्तिक	मु. जिल्काद	अं. नवम्बर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.
२३	१	शु	३	२८	०८	११	कृ	३ / ५५	०१ / ५०	०८ / २१	०० / ०७	प	१५	४५	कौ	८	१०	२६	३२	६	४७	१७	२४	३०	१५	१४	वृष
०	२	शु	५४	२५	२८	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
२४	३	श	४५	४०	२५	०४	मृग	४१	०२	२६	२५	शि	११	३६	व	१४	४६	२६	२९	६	४८	१७	२४	मा.१	१६	१५	मि.१५।४४
२५	४	र	३७	४५	२१	५५	आर्द्रा	४३	०३	२४	०२	सि	७ / २७	३७ / ५६	ब	११	२७	२६	२६	६	४९	१७	२३	२	१७	१६	मिथुन
२६	५	चं	३०	५८	१९	४३	पुन	३८	१३	२२	२७	शु	२४	३९	कौ	८	३०	२६	२३	६	५०	१७	२३	३	१८	१७	क.१६।३३
२७	६	मं	२५	३४	१७	०४	पुष्य	३४	४८	२०	४६	शु	२१	४९	व	१७	०४	२६	२०	६	५०	१७	२२	४	१९	१८	कर्क
२८	७	बु	२२	४३	१५	३२	श्ले	३२	५४	२०	०१	ब्र	११	३०	ब	१५	३२	२६	१७	६	५१	१७	२२	५	२०	१९	सि.२०।०१
२९	८	गु	१९	२६	१४	३९	मघा	३२	३३	१९	५३	ऐं	१७	४०	कौ	१४	३९	२६	१४	६	५२	१७	२२	६	२१	२०	सिंह
३०	९	शु	१८	४३	१४	२२	पूफा	३३	४१	२०	२१	वै	१६	१९	ग	१४	२२	२६	११	६	५३	१७	२१	७	२२	२१	क.२६।३३
मा.१	१०	श	१९	२४	१४	३९	उफा	३६	०९	२१	२१	वि	१५	२४	वि	१४	३९	२६	०८	६	५४	१७	२१	८	२३	२२	कन्या
२	११	र	२१	२९	१५	२७	ह	३९	४६	२२	४९	प्री	१४	५२	बा	१५	२७	२६	०५	६	५४	१७	२१	९	२४	२३	कन्या
३	१२	चं	२४	२२	१६	४०	चि	४४	२३	२४	४०	आ	१४	३९	तै	१६	४०	२६	०३	६	५५	१७	२१	१०	२५	२४	तु.११।४२
४	१३	मं	२८	२०	१८	१६	स्वा	४९	५०	२६	५२	सौ	१४	४४	व	१८	१६	२६	००	६	५६	१७	२०	११	२६	२५	तुला
५	१४	बु	३३	०७	२०	१२	वि	५६	०३	२९	२२	शो	१५	०३	वि	७	१२	२५	५८	६	५७	१७	२०	१२	२७	२६	वृ.२२।४३
६	३०	गु	३८	३७	२२	२५	अनु	६०	००	-	-	अ	१५	३६	च	९	१६	२५	५६	६	५८	१७	२०	१३	२८	२७	वृश्चिक

श्री पं. जवाहरलाल नेहरू जयंती, बाल दिवस,
द्वितीया तिथि क्षय, **A** सं.पुण्य अगले दिन ११/३२ तक, सौर मार्गशीर्ष प्रा.,
भद्रा १४/४७ से २५/०४ तक, वृश्चिक में सूर्य २९/०८ मु. १५, **A**
श्री गणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २०/३०
B वै.महापात १०/११ से १५/२६ तक,
भद्रा १७/०४ से २८/१४ तक, पू.षा. में शुक्र २३/५३, **B**
वृश्चिक में बुध १७/४५, अनु. में सूर्य १२/२९, श्री कालभैरवाष्टमी,
C (वि.मु. उफा. हस्त में),
भद्रा २६/२७ से, अनु. में बुध २०/०१, सायन धनु में सूर्य २८/१८, (वि.मु.उ.फा. में),
भद्रा १४/३९ तक, श्रीमहावीर दीक्षा दिवस (जैन), रा.मार्गशीर्ष प्रारम्भ, **C**
उषा में गुरु ११/१५, उत्पत्तिका ११ व्रत सबका, (वि.मु. हस्त में)
गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस,
भद्रा १८/१६ से, महापात २४/१२ से, भौम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि,
भद्रा ७/१२ तक, उफा. में शनि १८/०७, महापात ७/२५ तक, **D**
अमावस्या पुण्य, **D** मेला पुरमण्डल, देविका स्नान (का.)

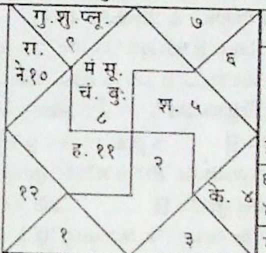
मार्गशीर्ष कृष्ण ८ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६०७३ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	४	७	७	८	८	४	९	३
४	५	८	०	२६	२४	२६	११	११
२	२०	३७	४६	३	४८	१४	११	११
५५	२४	४३	४८	२८	१२	१	५५	५५
६०	७१६	४३	९५	११	७१	४	३	३
३५	१०	६	२९	१०	२५	१४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
१	१	१	४	४	१	४	३	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



तृतीया शनिवार को सूर्य वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप पूर्व तथा उत्तर के देशों में कष्ट होता है तथा बालकों को पीड़ा होती है। दक्षिण के देशों में युद्ध आदि का भय होता है एवं पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है। **''ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितम्। देशभङ्गं विजानीयात् शिशूनां च विनाशहि''**॥ वृश्चिक राशि में बुध सप्तमी के दिन प्रवेश करेगा। इसके प्रभाव से घृत, तैल के भावों में तेजी होगी तथा धान्य का सुभिक्ष होता है एवं लोग सुखी होते हैं एवं शान्ति होती है। **''बुधो वृश्चिक राशिस्थो घृततैलमहर्घता। सुभिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां च शुभं भवेत्''**॥ एकादशी रविवार को गुरु उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से लोग सुखी होते हैं, शान्ति होती है, तीन मास तक वर्षा होती है तथा एक मास वर्षा नहीं होती है। **''जीवे पूर्वोत्तराषाढ़ायुक्ते लोकसुखावहम्। त्रिमासाज्जायतेवर्षा मासमेकं न वर्षति''**॥ शनि के उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश से पशुओं का नाश होता है और छह माह तक उपधान्य मंहगे रहते हैं। **''उत्तरायां यदा सौरिः पशून्वैनाशयेत्खलु उपधान्यमहर्घाणि षण्मासानि निरन्तरम्''**॥

मार्गशीर्ष कृष्ण ३० गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६०८०



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	७	७	८	८	४	९	३
११	३	१३	११	२७	२३	२६	१८	१८
७	२४	४०	५१	२३	६	४१	४९	४९
३४	०	३४	४१	३५	४४	४४	४०	४०
६०	७१७	४३	९७	११	७०	३	३	३
४६	५७	१८	२०	४८	५६	३६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
३	१	४	३	[illegible]	३	१	३	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- इस पक्ष में सूर्य-मंगल-बुध के आगे गुरु एवं शुक्र स्थित है। सूर्य-मंगल-बुध सप्तनाड़ी चक्र में चण्डानाड़ी में स्थित है अतः तेज वायु का प्रकोप शीतलहर के रूप में होगा। सूर्य के आगे गुरु-शुक्र के स्थित होने से कहीं-कहीं वर्षा होगी एवं शीत में वृद्धि होगी। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं वर्षा के साथ हल्का हिमपात सम्भव है। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में हल्की वर्षा के साथ शीत में वृद्धि होगी।

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३० मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष: १७

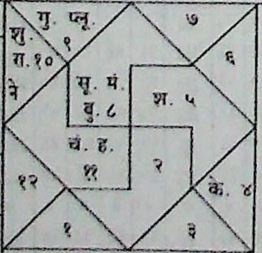
ता. २८ नवम्बर से १२ दिसम्बर सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति ७ से २१ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

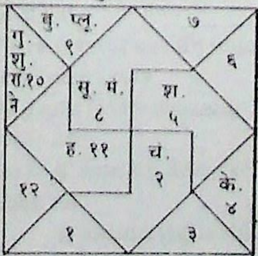
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. मार्गशीर्ष	मु. जिल्हीज	अं. नवम्बर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
७	१	शु	४४	४३	२४	५२	अनु	२	५२	०८	०७	सु	१६	२०	किं	११	३६	२५	५३	६	५८	१७	२०	१४	२९	२८	वृश्चिक	
८	२	श	५१	१६	२७	३०	ज्ये	१०	१४	११	०५	धृ	१७	१३	बा	१४	१०	२५	५१	६	५९	१७	२०	१५	३०	२९	ध.११।०५	उषा में शुक्र २९/४४, चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ.श्रृंगोन्नति, (वि.मु. मूल में),
९	३	र	५८	०	३०	१२	मूल	१७	५६	१४	११	शू	१८	११	तै	१६	५१	२५	४९	७	०	१७	२०	१६	जि.१	३०	धनु	ज्येष्ठा में बुध ७/०१, जिल्हेज मु. १२, (वि.मु. मूल में),
१०	४	चं	६०	०	-	-	पूषा	२५	४२	१७	१८	गं	११	०९	व	११	३२	२५	४७	७	०१	१७	२०	१७	२	दि.१	म.२४।०४	भद्रा १९/३३ से, ज्येष्ठा में मंगल ८/२१, व्य.महा. २६/२६ से, दिस. मा. १२ दि. ३१, विनायक ४,
११	४	मं	४	३३	०८	५१	उषा	३३	०१	२०	१७	वृ	२०	०	वि	८	५१	२५	४५	७	०१	१७	२०	१८	३	२	मकर	भद्रा ८/५१ तक, मकर में शुक्र २५/४३, ज्येष्ठा में सूर्य १६/५१, A
१२	५	बु	१०	३१	११	१५	श्रव	३९	४९	२२	५८	ध्रु	२०	३७	बा	११	१५	२५	४३	७	०२	१७	२०	१९	४	३	मकर	श्री नागपंचमी, स्कन्द षष्ठी, A व्य.महा. ९/३६ तक, (वि.मु. उषा में),
१३	६	गु	१५	२४	१३	१३	धनि	४५	१५	२५	०९	व्या	२०	५२	तै	१३	१३	२५	४१	७	०३	१७	२०	२०	५	४	कु.१२।०८	पंचक १२/०८ से, चम्पा षष्ठी, मित्र सप्तमी,
१४	७	शु	१८	४२	१४	३३	शत्	४८	५९	२६	३९	ह	२०	३५	व	१४	३३	२५	४०	७	०४	१७	२०	२१	६	५	कुम्भ	भद्रा १४/३३ से २६/५६ तक,
१५	८	श	१०	०३	१५	०६	पूभा	५०	४३	२७	२२	व	१९	४२	ब	१५	०६	२५	३८	७	०४	१७	२०	२२	७	६	मी.२१।१६	B श्रीगीता जयंती, ईदुलजुहा,
१६	९	र	१९	१५	१४	४८	उभा	५०	२०	२७	१३	सि	१८	०८	कौ	१४	४७	२५	३६	७	०५	१७	२०	२३	८	७	मीन	(वि.मु. उ.भाद्रपद में),
१७	१०	चं	१६	१६	१३	३७	रे	४७	५१	२६	१४	व्य	१५	५३	ग	१३	३६	२५	३५	७	०६	१७	२०	२४	९	८	मे.२६।१४	भद्रा १४/४२ से, पंचक २६/१४ तक, मूल धनु में बुध १९/२८,
१८	११	मं	११	१४	११	३६	अश्वि	४३	२९	२४	३०	व	१२	५९	वि	११	३६	२५	३४	७	०७	१७	२०	२५	१०	९	मेष	भद्रा ११/३६ तक, मकर में गुरु २३/४१, मोक्षदा ११ व्रत सबका, B
१९	१२	बु	४	२५	०८	५४	भर	३७	३५	२२	०९	शि	९ २९	३२ ३७	बा	८	५३	२५	३२	७	०८	१७	२१	२६	११	१०	वृ.२७।२९	महापात २०/०८ से २७/१७ तक, प्रदोष व्रत,
०	१३	बु	५६	१४	२९	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशी तिथि क्षय, C श्री अन्नपूर्णा जयंती,
२०	१४	बु	४७	०५	२५	५८	कृति	३०	३३	१९	२१	सि	२५	२३	ग	१५	५०	२५	३१	७	०८	१७	२१	२७	१२	११	वृष	भद्रा २५/५८ से, श्रवण में शुक्र १५/२६, पिशाचमोचिनी चतुर्दशी,
२१	१५	गु	३७	२६	२२	०७	रो	२२	५३	१६	१८	सा	२१	०	वि	१२	०३	२५	३०	७	०९	१७	२१	२८	१३	१२	मि.२६।४४	भद्रा १२/०४ तक, सत्यव्रत, श्रीदत्तात्रेय जयंती, श्रीषोड्शी जयंती, C

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ शनी प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६०८९ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) मार्गशीर्ष शुक्ल १५ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६०९५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	१०	७	७	८	९	४	९	३
२०	२१	२०	२५	२९	३	२७	१८	१८
१५	३०	१३	५७	१२	४१	१०	२१	२१
७	४४	४४	३६	४१	५८	०	२	२
६०	७७१	४३	९३	१२	७०	२	३	३
५५	४३	५५	५२	२९	५	४३	११	११
मा उ	मा उ	मा अ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



मंगलवार को शुक्र मकर राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप कृषि की हानि होती है और सब धान्यों के भावों में तेजी का रुख होगा। "**मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्यविनाशकृत्। जायते अत्र महर्घाणि नात्र कार्या विचारणा**"॥ बुध के धनुराशि में प्रवेश करने से मृग, हाथी इनका नाश होता है तथा शासक एवं जनता में विरोध होता है। "**धने-मीने बुधो यातिमारयति मृगान्गजान्। राजाविरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविश्यति**"। एकादशी के दिन वृहस्पति मकर राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से शासकों में विग्रह होता है तथा घोर दुर्भिक्ष पड़ता है तथा तीन माह के उपरान्त सुभिक्ष होता है। "**मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोरदारुणम्। विग्रहं यांति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्**"। इस पक्ष में नेपच्यून सहित चतुर्ग्रही अशुभ योग भी बन रहा है। इसके कुप्रभाव से कहीं भारी रक्तपात होगा या जलप्लावन से जनधन की हानि होगी। द्वितीया को शनिवार है यदि इस दिन दक्षिण दिशा की ओर वायु चले तो लोगों को कष्ट होता है। "**मार्गशुक्ल द्वितीयायां शनिवारेऽथ दक्षिणः। वातो वहति लोकानां तदा कष्ट प्रदायकः**"॥ बुध के धनु राशि में प्रवेश करने से रुई, कपास, चांदी आदि के भाव घट जाते हैं। मंगल के ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करने से रुई के भावों में घट-बढ़ होती रहती है।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	१	७	८	९	९	४	९	३
२६	१६	२४	५	०	१०	२७	१८	१८
२०	२६	३८	२०	२८	४०	२४	१	१
४५	४४	५	५५	३९	४०	२२	५७	५७
६०	११९	४४	९३	१२	६१	२	३	३
५९	१२	१४	५७	५३	२०	६	११	११
मा उ	मा उ	मा अ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- सूर्य के आगे गुरु के स्थित होने व पक्ष के उत्तरार्द्ध में सूर्य के आगे बुध आ जाने से दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बंगाल, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ में बादल चाल के साथ हल्की वर्षा होगी। कुछ भागों में तेज वायु के साथ वर्षा होगी एवं शीत में वृद्धि होगी। समुद्रतटीय भागों में तेजवायु के साथ तूफान आने की सम्भावना है एवं शीत में वृद्धि होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में शीतलहर चलेगी। कुछ भागों में हल्की वर्षा के साथ शीत में वृद्धि होगी।

श्रीसंवत् २०६५ शकः १९३० पौष कृष्ण पक्षः १८

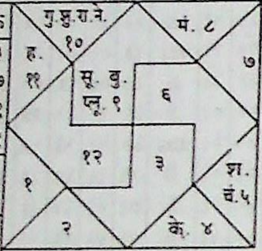
ता. १३ से २७ दिसम्बर सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति २२ मार्गशीर्ष से ६ पौष तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

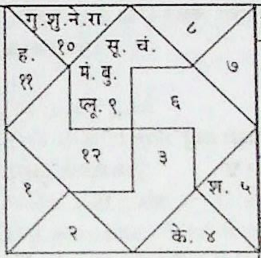
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. मार्गशीर्ष	मु. जिल्हेज	अं. दिसम्बर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
२२	१	श	२७	४६	१८	१६	मृ	१५	०४	१३	११	शु	१६	३५	बा	१८	११	२५	२९	७	०९	१७	२१	२९	१४	१३	मिथुन	A सौर पौष प्रा., श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०/३०,
२३	२	र	१८	३३	१४	३५	आ	७	३५	१०	१२	शु	१२	११	ग	१४	३५	२५	२९	७	१०	१७	२२	३०	१५	१४	क.२६।१०	भद्रा २४/५३ से, वै.महापात १९/११ से २६/१४ तक,
२४	३	चं	१०	१३	११	१६	पुन	०० / ५५	५३ / २३	७ / २९	३२ / २०	ब्र	८ / २८	१९ / ४३	वि	११	१६	२५	२८	७	११	१७	२२	पौ.१	१६	१५	कर्क	भद्रा ११/१६ तक, मूल धनु में सूर्य १९/४५ मु. ३०, सं.पुण्य १३/२१ से, A
२५	४	मं	३	०९	८	२७	श्ले	५१	२५	२७	४५	वै	२५	३६	बा	८	२७	२५	२७	७	११	१७	२२	२	१७	१६	सिं.२७।४५	B उत्तरायण शिशिर ऋतु प्रारम्भ, जन्मदिन श्री पार्श्वनाथ जी,
०	५	मं	५७	४२	३०	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	पंचमी तिथि क्षय,
२६	६	बु	५३	५७	२८	४७	मघा	४९	११	२६	५२	वि	२३	०३	ग	१७	२६	२५	२७	७	१२	१७	२३	३	१८	१७	सिंह	भद्रा २८/४७ से, पूर्वाषाढ़ा में बुध ७/५६,
२७	७	गु	५२	०८	२८	०४	पूफा	४८	४७	२६	४३	प्री	२१	०५	वि	१६	२०	२५	२६	७	१२	१७	२३	४	१९	१८	सिंह	भद्रा १६/२० तक,
२८	८	शु	५२	११	२८	०६	उफा	५०	१२	२७	१८	आ	१९	४३	बा	१५	५९	२५	२६	७	१३	१७	२४	५	२०	१९	क.८।४८	मूल धनु में मंगल ११/३३, कालाष्टमी,
२९	९	श	५३	५९	२८	४९	हस्त	५३	११	२८	३३	सौ	१८	५४	तै	१६	२२	२५	२६	७	१३	१७	२४	६	२१	२०	कन्या	बुधोदय पश्चिम में २६/०३,
३०	१०	र	५७	१८	३०	०९	चि	५७	५२	३०	२३	शो	१८	३५	व	१७	२५	२५	२६	७	१४	१७	२४	७	२२	२१	तु.१७।२४	भद्रा १७/२६ से ३०/०९ तक, सूर्य सायन मकर में १७/३५, B
पौ.१	११	चं	६०	०	-	-	स्वा	६०	०	-	-	अ	१८	४०	ब	१९	०१	२५	२६	७	१५	१७	२५	८	२३	२२	तुला	राष्ट्रीय पौष प्रा.
२	११	मं	१	४८	७	५९	स्वा	०३	३४	८	४१	सु	१९	४	बा	७	५८	२५	२६	७	१५	१७	२५	९	२४	२३	वृ.२८।३८	धनिष्ठा में शुक्र ७/१६, महापात २२/४७ से, सफला ११ व्रत सबका,
३	१२	बु	७	१६	१०	१०	वि	१०	१०	११	१९	धृ	१९	४३	तै	१०	१०	२५	२६	७	१५	१७	२६	१०	२५	२४	वृश्चिक	महापात ७/२४ तक, प्रदोष व्रत,
४	१३	गु	१३	२२	१२	३७	अनु	१७	२१	१४	१२	शू	२०	३१	व	१२	३७	२५	२६	७	१६	१७	२७	११	२६	२५	वृश्चिक	भद्रा १२/३७ से २५/५४ तक, उषा में बुध २३/३६, मासशिवरात्रि, क्रिसमस डे,
५	१४	शु	११	५१	१५	१३	ज्ये	२४	५२	१७	१३	गं	२१	२४	श	१५	१३	२५	२७	७	१६	१७	२७	१२	२७	२६	ध.१७।१३	जोड़ मेला प्रा. ३ दिन का (पं.), C कालबा देवी यात्रा (महा.),
६	३०	श	२६	२९	१७	५२	मूल	३२	३२	२०	१७	वृ	२२	२०	ना	१७	५२	२५	२७	७	१७	१७	२८	१३	२८	२७	धनु	मकर में बुध २९/५२, शनैश्चरी अमावस्या, पावागढ़ यात्रा (गुजरात), C

पौष कृष्ण ८ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६१०२ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) पौष कृष्ण ३० शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६११०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	४	७	८	९	९	४	९	३
३	२८	२९	१६	२	१८	२७	१७	१७
२७	११	४८	१७	०	४२	३७	३९	३९
५६	४१	४५	४४	४	५५	५०	४१	४१
६१	७७८	४४	९३	१३	६८	१	३	३
५	५२	३५	२३	१७	१७	२१	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मूल २	उफा १	ज्ये ४	पूषा १	उषा २	श्रवण ३	उफा १	श्रवण ३	श्लेषा १



तृतीया के दिन सूर्य धनु राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप पूर्व तथा उत्तर के देशों में अशान्ति एवं कष्ट तथा बालकों को पीड़ा होती है। दक्षिण के देशों में युद्ध आदि का भय और पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है। **"ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितम्। देशभङ्गंविजानीयात् शिशूनां च विनाशहि"॥** अष्टमी के दिन मंगल धनु राशि में प्रवेश करेगा। इसके प्रभाव से मूलद्रव्य, तृण, काष्ठ, घृत, कपास और पशु यह सब मंहगे होते हैं। **"धनराशिगते भौमे मूलद्रव्यतृणानि च। काष्ठं च घृतकार्पासं महर्घं च चतुष्पदाम्"॥** पक्षान्त में बुध मकर राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से अन्नादि का समभाव रहता है और शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के फल होते हैं। **"निशा५..श्च तनयः शनिक्षेत्रे यदा भवेत्। समभावः सुखं दुःखं तथैव च शुभाशुभम्"।** इस पक्ष में चतुर्ग्रही योग नेपच्यून सहित बन रहा है एवं पंचग्रही योग प्लूटो सहित बन रहा है। चतुर्ग्रही योग के अशुभ प्रभाव से कहीं रक्तपात होगा या जलप्लावन से जन-धन की हानि होगी। पंचग्रही योग के अशुभ प्रभाव से पशुओं का नाश होना भी शास्त्र में कहा गया है।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	८	८	८	९	९	४	९	३
११	६	५	२८	३	२७	२७	१७	१७
३६	२	४६	३१	४७	४४	४५	१४	१४
५८	५५	४६	१	३८	८	३५	१५	१५
६१	७०१	४४	८७	१३	६६	०	३	३
१०	२२	५८	३७	३९	४७	२८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मूल ४	मूल २	मूल २	उषा १	उषा ३	धनि २	उफा १	श्रवण ३	श्लेषा १

"एकाराशौ यदायांति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयंति महीं सर्वांरुधिरेण जलेन वा"। शुक्र के धनिष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करने से गेहूं के भाव गिर जाते हैं तथा चांदी, चावल, मोठ, उड़द के भावों में तेजी आ जाती है। इस पक्ष में बुध के पश्चिम में उदय होने से चावल, धान्य, घी, तेल, बिनौला, अरण्डी, सरसों आदि वस्तुओं के भाव तेज होते हैं।

आकाश लक्षण- सूर्य के साथ बुध के स्थित होने एवं सूर्य के आगे गुरु-शुक्र के होने से कुछ भागों में हल्की बूंदाबांदी के साथ शीत में वृद्धि होगी एवं कुछ भागों में तेज वायु के साथ शीत में वृद्धि होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में हल्की बूंदा-बांदी के साथ हिमपात होने की सम्भावना है। दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश में बादलचाल के साथ हल्की बूंदाबांदी होगी एवं शीत का प्रकोप बढ़ेगा।

श्रीसंवत् २०६५ शकः १९३०
पौष शुक्ल पक्षः १९

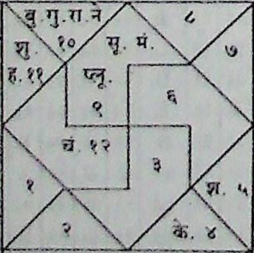
ता. २८ दिस. २००८ ई. से ११ जन सन् २००९ ई. तक, राष्ट्रीय मिति ७ से २१ पौष तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

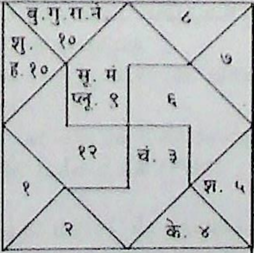
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. (पौष)	मु. (जिल्हिज)	अं. (दिसम्बर)	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
७	१	र	३३	०३	२०	३०	पूषा	४०	०६	२३	२०	ध्रु	२३	१३	ब	२०	३०	२५	२८	७	१७	१७	२८	१४	२९	२८	म.३०।०४	कुंभ में शुक्र ३०/२५, पूषा में सूर्य २१/५५, व्य.महापात २१/१५ से २९/५४ तक,
८	२	चं	३९	१८	२३	०१	उषा	४७	२१	२६	१४	व्या	२४	०	बा	९	४७	२५	२९	७	१७	१७	२९	१५	३०	२९	मकर	चन्द्रदर्शन मु. ४५, उ.श्रृंगोन्नति,
९	३	मं	४४	५९	२५	१७	श्र	५४	०२	२८	५४	ह	२४	३७	तै	१२	११	२५	२९	७	१८	१७	३०	१६	मु.१	३०	मकर	मुहर्रम मु. १, हिजरी सन् १४३० प्रा.,
१०	४	बु	४९	४६	२७	१२	धनि	५९	४९	३१	१३	व	२४	५८	व	१४	१८	२५	३०	७	१८	१७	३०	१७	२	३१	कु.१८।०७	भद्रा १४/१८ से २७/१२ तक, पंचक १८/०७ से, शनि वक्री २३/१०, विनायक ४,
११	५	गु	५३	२२	२८	३८	शत	६०	०	-	-	सि	२४	५८	ब	१६	०	२५	३१	७	१८	१७	३१	१८	३	ज.१	कुम्भ	जनवरी मा. १ दि. ३१ सन् २००९ ईस्वी प्रारम्भ,
१२	६	शु	५५	२८	२९	२९	शत	४	२५	०९	०४	व्य	२४	३२	कौ	१७	०९	२५	३२	७	१९	१७	३२	१९	४	२	मी.२८।०४	A श्रीदुर्गाष्टमी, शाकम्भरी नवरात्रारम्भ,
१३	७	श	५५	४९	२९	३८	पूभा	७	३३	१०	१९	व	२३	३५	ग	१७	३९	२५	३४	७	१९	१७	३२	२०	५	३	मीन	भद्रा २९/३८ से,
१४	८	र	५४	१९	२९	०२	उभा	८	५८	१०	५३	प	२२	०३	वि	१७	२६	२५	३५	७	१९	१७	३३	२१	६	४	मीन	भद्रा १७/२६ तक, शतभिषा में शुक्र ८/३४, श्रवण में बुध २७/००, A
१५	९	चं	५०	५६	२७	४१	रे	८	३४	१०	४४	शि	१९	५६	बा	१६	२७	२५	३६	७	१९	१७	३४	२२	७	५	मे.१०।४४	पंचक १०/४४ तक, पूषा में मंगल ३०/२२, गुरु गोविन्द सिंह जयंती,
१६	१०	मं	४५	४८	२५	३८	अश्वि	६	२१	०९	५१	सि	१७	१५	तै	१४	४५	२५	३८	७	१९	१७	३५	२३	८	६	मेष	वै.महापात २६/०० से, वक्री श्रवण २ में राहु पुष्य ४ में केतु २४/०१,
१७	११	बु	३९	०७	२२	५८	भ	२/५७	२८/०७	८/३०	१८/१०	सा	१४	०३	व	१२	२२	२५	४०	७	१९	१७	३५	२४	९	७	वृ.१३।४९	भद्रा १२/२२ से २२/५८ तक, वै.महापात ८/३२ तक, पुत्रदा ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
१८	१२	गु	३२	१३	१९	४८	रो	५०	४३	२७	३६	शु	१०/३०	२४/२४	ब	९	२७	२५	४१	७	१९	१७	३६	२५	१०	८	वृष	पुत्रदा ११ व्रत निम्बार्कों का, मुर्हरम (ताजिया), प्रदोष व्रत,
१९	१३	शु	२२	२८	१६	१८	मृ	४३	३५	२४	४५	ब्र	२६	१२	तै	१६	११	२५	४३	७	१९	१७	३७	२६	११	९	मि.१४।१२	B माघ स्नानारम्भ, शाकम्भरी जयंती, पौषी पूर्णिमा
२०	१४	श	१३	१६	१२	३७	आ	३६	११	२१	४७	ऐं	२१	५५	व	१२	३८	२५	४५	७	२०	१७	३८	२७	१२	१०	मिथुन	भद्रा १२/३७ से २२/४७ तक, उषा में सूर्य २३/५३, सत्य व्रत,
२१	१५	र	४	०३	०८	५६	पुन	२८	५८	१८	५४	वै	१७	४२	ब	८	५७	२५	४७	७	२०	१७	३९	२८	१३	११	क.१३।३६	महापात १५/५५ से २२/१६ तक, बुध वक्री २२/१३, गुरु वृद्धत्वारम्भ ७/३६, B

पौष शुक्ल ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६११८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) पौष शुक्ल १५ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६१२५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	११	८	९	९	१०	४	९	३
१९	१३	११	९	५	६	२७	१६	१६
४६	४२	४७	४	३७	३१	४६	४८	४८
१८	४	४१	९	४७	४१	१४	४८	४८
६१	७११	४५	६२	१३	६४	०	३	३
१०	४५	१८	९	५५	४६	२५	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



शुक्र कुंभ राशि में रविवार को प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से वर्षा बहुत होती है, सुभिक्ष, शान्ति होती है एवं सब मनुष्य निरोग होते है। **"कुंभराशौस्थिते-शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम्। भवत्यत्र न संदेहो लोकाः सर्वे निरामयाः"**॥ बुध के श्रवण में प्रवेश से प्राकृतिक प्रकोप (शीत) से अलसी, धान्य, चणा, गुड़ की हानि होती है। **"श्रुतौ गुडातसीधान्यचणकेषु-हिमद्भवेत्"**। सोमवार को मंगल पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप वर्षा अधिक होती है, गाय दूध कम देती हैं, पृथ्वी पर अन्न पर्याप्त होता है, धान, तिल, घृत, उड़द इनके भावों में तेजी होती है। **"पूषाकुजे भूरिजलाः पयोदा गावोऽल्पदुग्धावसुधान्नपूर्ण। महर्घता शालितिलाज्य माषेष्वग्नौ हि तत्पूर्वषदेव भावम्"**॥ इस पक्ष में भी नेपच्यून सहित चतुर्गही योग बना हुआ है इसके फलस्वरूप अशान्ति कहीं रक्तपात होना या जलप्लावन से जन-धन हानि होना शास्त्र में कहा गया है। शुक्र के कुम्भ राशि में प्रवेश करने से रुई और चांदी के भावों में कमी हो जाती है तथा शेयरों में तेजी आती है। इस पक्ष में शनि वक्री हो रहा है इसके प्रभाव से रुई के भाव गिर जाते हैं। शीशा, कलई, गेहूं, चावल, ज्वार, अलसी, सरसों, तेल, तम्बाकू तथा वस्त्रों के भावों में तेजी आ जाती है। सोने के भाव गिर जाते हैं। अरण्डी के भावों में घट-बढ़ होती रहती है। बुध के वक्री होने से खाण्ड, बिनौला, मूंगफली, घी, तेल, तिल, गुड़, शक्कर और कपूर के भाव बढ़ जाते हैं।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	२	८	९	९	१०	४	९	३
२६	२४	१७	१३	७	१३	२७	१६	१६
५४	५२	५	४३	१५	५८	४१	२६	२६
१५	२५	४०	२४	३९	२६	२	३२	३२
६१	१०५	४५	२	१४	६२	१	३	३
०६	४०	३६	१३	०४	२७	११	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- सूर्य के साथ मंगल स्थित है तथा बुध-गुरु सूर्य के आगे स्थित है अतः तेज वायु के साथ शीत लहर का प्रकोप बढ़ेगा। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, काश्मीर, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, झारखण्ड में तेज शीतलहर के साथ बूंदाबांदी होगी तथा पर्वतीय क्षेत्रों में शीतलहर के साथ ओलावृष्टि या हिमपात की सम्भावना है।

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
माघ कृष्ण पक्ष: २०

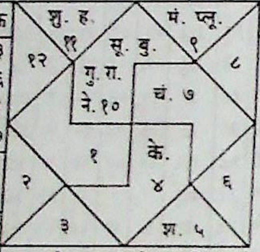
ता. १२ से २६ जनवरी सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति २२ पौष से ६ माघ तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

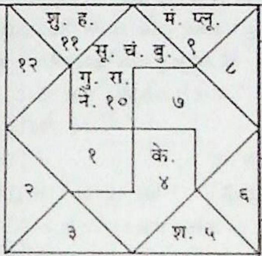
रा. थि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय (स्टैं. टा.) घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. पौष	मु. मुहर्रम	अं. जनवरी	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
०	१	र	५५	१४	२१	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा तिथि क्षय, B चन्द्रोदय २१/२७,
२२	२	चं	४७	१६	२६	१३	पुष्य	२२	२२	१६	१६	वि	१३	४०	तै	१५	४७	२५	४९	७	२०	१७	३९	२१	१४	१२	कर्क	लोहिड़ी (पं.), A पुण्य काल अगले दिन, सौर माघ प्रा.,
२३	३	मं	४०	३१	२३	३१	श्ले	१६	४९	१४	०२	प्री	१ / ३०	५८ / ४३	व	१२	४९	२५	५१	७	१९	१७	४०	मा.१	१५	१३	सिं.१४।०२	भद्रा १२/४९ से २३/३१ तक, मकर में सूर्य ३०/२६, उत्तरायण सं. मु. ३०, A
२४	४	बु	३५	२०	२१	२७	मघा	१२	४०	१२	२२	सौ	२७	५९	ब	१०	२५	२५	५३	७	१९	१७	४१	२	१६	१४	सिंह	बुधास्त पश्चिम में ८/२१, गुरु पश्चिमास्त ७/३६, श्रीगणेश ४ व्रत, B
२५	५	गु	३१	५९	२०	०६	पूफा	१०	१३	११	२४	शो	२५	५१	कौ	८	४१	२५	५६	७	१९	१७	४२	३	१७	१५	क.१७।१६	
२६	६	शु	३०	३८	१९	३४	उफा	९	४१	११	११	अ	२४	२१	ग	७	४४	२५	५८	७	१९	१७	४३	४	१८	१६	कन्या	भद्रा १९/३४, से पूभा में शुक्र २६/३५,
२७	७	श	३१	१८	१९	४९	ह	११	०८	११	४५	सु	२३	२९	वि	७	३६	२६	०१	७	१९	१७	४३	५	१९	१७	तु.२४।२०	भद्रा ७/३६ तक, वक्री उषा में बुध २९/५२, श्रीरामानन्दाचार्य जयंती, C
२८	८	र	३३	५३	२०	५१	चि	१४	२७	१३	०५	धृ	२३	११	बा	८	१६	२६	०३	७	१९	१७	४४	६	२०	१८	तुला	कालाष्टमी, C स्वामी विवेकानन्द जयंती,
२९	९	चं	३८	०७	२२	३३	स्वा	१९	२८	१५	०५	शू	२३	२२	तै	९	३८	२६	०६	७	१९	१७	४५	७	२१	१९	तुला	व्य. महापात ७/१८ से १३/३० तक, सायन कुंभ में सूर्य २८/१५,
३०	१०	मं	४३	३७	२४	४५	वि	२५	४७	१७	३६	गं	२३	५६	व	११	३६	२६	०८	७	१८	१७	४६	८	२२	२०	वृ.१०।५६	भद्रा ११/३६ से २४/४६ तक,
मा.१	११	बु	४९	५७	२७	१६	अनु	३३	०१	२०	३०	वृ	२४	४४	ब	१३	५९	२६	११	७	१८	१७	४७	९	२३	२१	वृश्चिक	षट्तिला ११ व्रत सबका, राष्ट्रीय माघ प्रा.,
२	१२	गु	५६	४०	२९	५७	ज्ये	४०	४२	२३	३४	ध्रु	२५	४१	कौ	१६	३७	२६	१४	७	१८	१७	४८	१०	२४	२२	ध.२३।३४	श्रवण में गुरु २०/२२, D नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती,
३	१३	शु	६०	०	-	-	मूल	४८	२७	२६	४०	व्या	२६	३७	ग	१९	१९	२६	१७	७	१७	१७	४८	११	२५	२३	धनु	उषा में मंगल १८/२२, श्रवण में सूर्य २६/१२, प्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी, D
४	१३	श	३	२२	०८	३७	पूषा	५५	५५	२९	३८	ह	२७	२९	व	८	३८	२६	२०	७	१७	१७	४९	१२	२६	२४	धनु	भद्रा ८/३७ से २१/५५ तक, मास शिवरात्रि, F गणतंत्र दिवस
५	१४	र	९	४१	११	०९	उषा	६०	०	-	-	व	२८	१०	श	११	९	२६	२३	७	१७	१७	५०	१३	२७	२५	म.१२।२१	E खण्डग्रास सूर्य ग्रहण दक्षिणी व पूर्वी भारत में दृश्य, मौनी ३०, F
६	३०	चं	१५	२२	१३	२५	उषा	२	५१	०८	२४	सि	२८	३८	ना	१३	२५	२६	२६	७	१६	१७	५१	१४	२८	२६	मकर	बुधोदय पूर्व में २५/२४, वक्री धनु में बुध २०/५४, सोमवती अमावस्या, E

माघ कृष्ण ८ रवौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६१३२ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) माघ कृष्ण ३० चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६१४०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	६	८	९	९	१०	४	९	३
४	२	२२	१०	८	२१	२७	१६	१६
१	४२	२५	१	५४	७	६०	४	४
५८	२७	३६	२	२८	११	३७	१७	१७
६१	७३४	४५	७०	१४	५९	१	३	३
५	२९	५२	१	१०	३४	५४	११	११
मा उ	मा उ	मा अ	व अ	मा अ	मा उ	व उ	व अ	व अ
३ उषा	३ चित्रा	३ पूषा	१ श्रवण	४ उषा	१ पूभा.	१ उफा	२ श्रवण	४ पुष्य



मंगलवार को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप उत्तर तथा पश्चिम के देशों में अशान्ति एवं पीड़ा होती है। पूर्व के देशों में युद्ध आदि का भय और दक्षिण देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है। **''वायव्ये च यदादृष्टि: सर्व-सौख्यसमन्विता। सुभिक्षं च विजानीयात् नृपाणां च कलिर्भवेत्''**॥ श्रवण नक्षत्र में गुरु गुरुवार के दिन प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप पृथ्वी पर धान्य बहुत होता है तथा क्षेम, आरोग्य, शान्ति व सुभिक्ष होता है। **''श्रवणे वा धनिष्ठायां वारुणे गुरुसंगमे। सुभिक्षक्षेममारोग्यं बहुसस्या च मेदिनी''**॥ इस प५. में बहुत अशुभकारी पंचग्रही एवं षड्ग्रही योग भी बन रहे हैं। पंचग्रही योग के होने से पशुओं का नाश होता है तथा षड्ग्रही योग के होने से शासकों की हानि होती है यह शास्त्र में लिखा है। **''षड्वै ग्रहा हनंति समस्तभूपान्''**। बुध वक्री होकर पक्षान्त में पुन: धनु राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से मृग-हाथी वन्यजीवों का नाश होना शास्त्र में कहा गया है बुध वक्री होने के पश्चात वक्रावस्था में अस्त हो रहा है इसके प्रभाव से चांदी के भावों में अत्यधिक तेजी होती है। गुरु के अस्त होने से सोना, चांदी और अनाज के भाव गिर जाते हैं। रुई और शेयरों के भावों में तेजी होती है। मकर राशि में रहते हुए गुरु के अस्त होने से उड़द और तिल के भाव गिर जाते हैं।



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	९	८	९	९	१०	४	९	३
१२	८	२८	०	१०	२८	२७	१५	१५
१०	३२	३३	३२	४७	४९	१२	३८	३८
२६	२९	३३	३८	५७	४४	३५	५०	५०
६१	७२६	४६	४९	१४	४५	२	३	३
१	११	९	३८	१२	१८	४२	११	११
मा उ	मा अ	मा अ	व अ	मा अ	मा उ	व उ	व अ	व अ
१ श्रवण	४ उषा	१ उषा	२ उषा	१ श्रवण	३ पूभा.	१ उफा	२ श्रवण	४ पुष्य

आकाश लक्षण- इस पक्ष में पंचग्रही एवं षड्ग्रही योग बन रहा है तथा सूर्य के पीछे मंगल एवं सूर्य के आगे शुक्र है तथा नीरा एवं अमृतानाड़ियों में ग्रहों के होने से कहीं जलप्लावन, अधिक वर्षा व प्राकृतिक प्रकोपों से हानि होगी। कुछ स्थानों पर तेज शीतलहर, वायु के साथ वर्षा भी होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात की सम्भावना है।

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
माघ शुक्ल पक्ष: २१

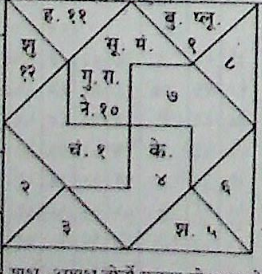
ता. २७ जनवरी से ९ फरवरी सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति ७ से २० माघ तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. माघ	मु. मुहर्रम	अं. जनवरी	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
७	१	मं	२०	१३	१५	२१	श्र	९	०१	१०	५२	व्य	२८	४१	ब	१५	२१	२६	२१	७	१६	१७	५२	१५	२१	२७	कु.२३।५८	पंचक २३/५८ से, मीन में शुक्र १२/०२, मकर में मंगल २६/२६, A
८	२	बु	२४	०६	१६	५३	धनि	१४	१७	१२	५८	व	२८	४२	कौ	१६	५४	२६	३२	७	१६	१७	५३	१६	स.१	२८	कुम्भ	सफर मु. २, लाला लाजपतराय जयंती, A चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ.श्रृंगोन्नति
९	३	गु	२६	५४	१८	०	शत	१८	३२	१४	३९	प	२८	१४	ग	१८	०	२६	३६	७	१५	१७	५४	१७	२	२९	कुम्भ	भद्रा ३०/२३ से, गौरी तृतीया,
१०	४	शु	२८	२९	१८	३८	पूभा	२१	३९	१५	५३	शि	२७	२४	वि	१८	३८	२६	३९	७	१५	१७	५४	१८	३	३०	मी.९।३७	भद्रा १८/३८ तक, उ.भा. में शुक्र २९/३८, विनायक ४, तिलकुंद वरद् चतुर्थी,
११	५	श	२८	४१	१८	४५	उभा	२३	३२	१६	३८	सि	२६	०९	बा	१८	४६	२६	४२	७	१४	१७	५५	१९	४	३१	मीन	श्री बसन्त पंचमी, श्रीसरस्वती पूजा, श्री पंचमी,
१२	६	र	२७	४१	१८	२०	रेव	२४	०९	१६	५२	सा	२४	३०	तै	१८	२१	२६	४६	७	१३	१७	५६	२०	५	फ. १	मे.१६।५२	पंचक १६/५२ तक, वै.महा. २७/३२ से, बुध मार्गी १२/४१, फरवरी मा. २ दि. २८,
१३	७	चं	२५	२७	१७	२३	अश्वि	२३	२७	१६	३५	शु	२२	२५	व	१७	२४	२६	४९	७	१३	१७	५७	२१	६	२	मेष	भद्रा १७/२३ से १८/४३ तक, वै. महापात ८/२६ तक, रथ आरोग्य सप्तमी,
१४	८	मं	२१	४६	१५	५४	भर	२१	२७	१५	४६	शु	१९	५६	ब	१५	५५	२६	५३	७	१२	१७	५८	२२	७	३	वृ.२१।२९	भीष्माष्टमी, B वक्री पूफा. में शनि १७/३९,
१५	९	बु	१६	५०	१३	५५	कृति	१८	१३	१४	२८	ब्र	१७	०३	कौ	१३	५६	२६	५६	७	१२	१७	५८	२३	८	४	वृष	C माघ स्नान समा., श्री रविदास जयंती, श्री ललिता ज., माघी पूर्णिमा,
१६	१०	गु	१०	४८	११	२९	रोहि	१३	५४	१२	४४	ऐं	१३	४९	ग	११	३०	२७	०	७	११	१७	५९	२४	९	५	मि.२३।४४	भद्रा २२/०९ से, धनिष्ठा में सूर्य २९/१७, जया ११ व्रत स्मार्तों का, B
१७	११	शु	३	५२	८	४२	मृग	८	४३	१०	३९	वै	१० ३०	१८ ३५	वि	८	४३	२७	०४	७	१०	१८	००	२५	१०	६	मिथुन	भद्रा ८/४२ तक, जया ११ व्रत वैष्णवों का, भीष्म द्वादशी,
०	१२	शु	५६	१४	२९	४०	आ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	द्वादशी तिथि क्षय,
१८	१३	श	४८	२२	२६	३०	पुन	२ ५६	५६ ४८	८ २९	१९ ५३	प्री	२६	४६	कौ	१६	०६	२७	०७	७	१०	१८	०१	२६	११	७	क.२४।३०	मकर में बुध २१/५८, शनि प्रदोष व्रत, मरुधरा उत्सव ३ दिन का (जैसलमेर),
१९	१४	र	४०	२१	२३	२०	पुष्य	५०	४८	२७	२८	आ	२२	५८	ग	१२	५५	२७	११	७	०९	१८	०२	२७	१२	८	कर्क	भद्रा २३/२० से, मेला जयंती देवी (पं.),
२०	१५	चं	३२	५७	२०	१८	श्ले	४५	१४	२५	१३	सौ	१९	१६	वि	९	४८	२७	१५	७	०८	१८	०२	२८	१३	९	सिं.२५।१३	भद्रा ९/४८ तक, श्रवण में मंगल २४/५९, महापात १३/३१ से १८/१८ तक, सत्य व्रत, C

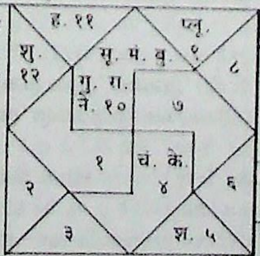
माघ शुक्ल ८ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६१४८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	०	९	८	९	११	४	९	३
२०	२०	४	२७	१२	५	२६	१५	१५
१६	४३	४३	५६	४१	५३	४८	१३	१३
२	६	३३	११	२५	४	२६	२४	२४
६०	८४	४६	१५	१४	४९	३	३	३
५१	२६	२२	३८	८	३०	२३	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



पक्षारम्भ में मंगल मकर राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से घृत, तैल मंहगे होते हैं और सब धान्य सस्ते होते हैं तथा लोगों को दुःख व पीड़ा भी होती है। **"मकरे च स्थिते भौमे घृततैल महर्घता। सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःखपीडनम्"**॥ पक्षारम्भ में ही शुक्र मीन राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से अत्यंत सुभिक्ष होता है और पृथ्वी सुख से संयुक्त होती है अत: भौम के संचार से जनित अशुभ फलों में कमी होगी। **"मीनराशिगतेशुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत्। मेदिनी सुखसंयुक्ता भविष्यति न संशयः"**॥ त्रयोदशी को बुध मकर राशि में प्रवेश करेगा जिसके फलस्वरूप अन्नादि का समभाव रहता है तथा शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के फल होते हैं। **"निशापतेश्च तनयः शनिक्षेत्रे यदा भवेत्। समभावः सुखंदुःखं तथैव च शुभाशुभम्"**॥ इस पक्ष में भी अशुभकारी पंचग्रही तथा षड्ग्रही योग बन रहे हैं एवं भौम के राशिपरिवर्तन करने से शनि-मंगल का षड्ष्टक योग बन रहा है। इसके प्रभाव से विश्व में अशान्ति का वातावरण बनेगा। यान दुर्घटना, अग्निकाण्ड, बम्बविस्फोट की घटनाओं में वृद्धि होगी। राष्ट्र विरोधी तथा आतंकवादी, समाजविरोधी तत्व भय एवं अशान्ति का वातावरण अपनी समाजविरोधी गतिविधियों से उत्पन्न करेंगे। प्राकृतिक प्रकोपों में वृद्धि होगी एवं जन-धन की हानि होगी।

माघ शु. १५ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६१५४



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	३	९	९	९	११	४	९	३
२६	१७	९	०	१४	१०	२६	१४	१४
२२	५४	२२	५४	६	३६	२७	५४	५४
४८	५७	११	३०	०	२२	१३	१९	१९
६०	८८०	४६	४६	१४	४३	३	३	३
४३	५५	३२	२०	३	४६	४९	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- इस पक्ष में पंचग्रही एवं षड्ग्रही योग बन रहा है तथा अधिकांश ग्रह नीरा, जला तथा अमृता नाड़ी में स्थित हैं इसके प्रभाव से उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में बादलों की गर्जना एवं तेज बादल चाल के साथ शीत वायु का तेज प्रवाह होगा तथा हिमपात की भी सम्भावना है। कहीं भारी वर्षा, जलप्लावन, आंधी-तूफान, ओलावृष्टि प्राकृतिक प्रकोप से हानि होने की सम्भावना है। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश के मैदानी भागों में तेज शीत लहर का प्रभाव रहेगा तथा कहीं-कहीं वर्षा भी होगी। दक्षिण भारत में वायु के साथ वर्षा भी होगी।

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
फाल्गुन कृष्ण पक्ष: २२

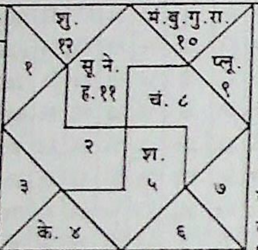
ता. १० से २५ फरवरी सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति २१ माघ से ६ फाल्गुन तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. माघ	मु. मफ़र	अं. फरवरी	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
२१	१	मं	२६	०९	१७	३५	म	४०	२८	२३	१८	शो	१५	४९	कौ	१७	३५	२७	१९	७	०८	१८	०३	२९	१४	१०	सिंह	A सौर फाल्गुन प्रा., श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २१/११,
२२	२	बु	२०	२८	१५	१८	पूफा	३६	५४	२१	५२	अ	१२	४२	ग	१५	१८	२७	२२	७	०७	१८	०४	३०	१५	११	क.२७।३६	भद्रा २६/२२ से, गुरु पूर्वोदय ७/४२,
२३	३	गु	१६	१४	१३	३५	उफा	३४	५२	२१	०२	सु	१०	०३	वि	१३	३६	२७	२६	७	०६	१८	०५	फा.१	१६	१२	कन्या	भद्रा १३/३५ तक, कुम्भ में सूर्य १९/२३ मु. ४५, सं. पुण्य १२/५९ से, A
२४	४	शु	१३	४४	१२	३४	ह	३४	३६	२०	५५	धृ	७ ३०	५६ २५	बा	१२	३५	२७	३०	७	०५	१८	०६	२	१७	१३	कन्या	व्य. महापात २६/३० से ३१/०१ तक, मंगल पूर्वोदय २५/३४,
२५	५	श	१३	१०	१२	२०	चि	३६	१५	२१	३३	गं	२९	३१	तै	१२	२१	२७	३४	७	०४	१८	०६	३	१८	१४	तु.९।०८	गुरु बाल्यत्व समाप्त ७/४२, (वि.मु. स्वाती में),
२६	६	र	१४	३६	१२	५३	स्वा	३९	४८	२२	५८	वृ	२९	१३	व	१२	५४	२७	३८	७	०४	१८	०७	४	१९	१५	तुला	भद्रा १२/५३ से २५/२८ तक, (वि.मु. स्वाती में),
२७	७	चं	१७	५५	१४	१२	वि	४५	०४	२५	०४	ध्रु	२९	२६	ब	१४	१३	२७	४२	७	०३	१८	०८	५	२०	१६	वृ.१८।२८	कालाष्टमी, श्रीनाथजी महोत्सव (नाथद्वारा, राज.), चेहल्लम, (वि.मु अनु. में),
२८	८	मं	२२	५०	१६	०९	अनु	५१	४२	२७	४२	व्य	३०	०३	कौ	१६	१०	२७	४६	७	०२	१८	०९	६	२१	१७	वृश्चिक	श्री सीताष्टमी जयंती, हलाष्टमी, (वि.मु. अनुराधा में), B वसन्त ऋतु प्रा.,
२९	९	बु	२८	५४	१८	३४	ज्ये	५९	१३	३०	४१	ह	३०	५६	ग	१८	३५	२७	५०	७	०१	१८	०९	७	२२	१८	ध.३०।४१	श्रवण में बुध ११/१६, रेवती में शुक्र १४/४६, सायन मीन में सूर्य १८/२१, B
३०	१०	गु	३५	३३	२१	१३	मूल	६०	००	-	-	व	-	-	व	७	५३	२७	५४	७	००	१८	१०	८	२३	१९	धनु	भद्रा ७/५३ से २१/१३ तक, शत. में सूर्य ९/५१, दयानन्द सरस्वती ज., (वि.मु. मूल में),
फा.१	११	शु	४२	१३	२३	५२	मूल	०७	०३	०९	४८	'व	७	५५	ब	१०	३४	२७	५८	६	५९	१८	११	९	२४	२०	धनु	विजया ११ व्रत सबका, राष्ट्रीय फाल्गुन प्रा., (वि.मु. मूल में),
२	१२	श	४८	२२	२६	१९	पूषा	१४	३८	१२	४९	सि	८	५०	कौ	१३	०८	२८	०२	६	५८	१८	११	१०	२५	२१	म.१९।३२	C (निशीथकाल २४/४९ से २५/३९ तक),
३	१३	र	५३	३६	२८	२३	उषा	२१	३१	१५	३३	व्य	९	३३	ग	१५	२५	२८	०६	६	५७	१८	१२	११	२६	२२	मकर	भद्रा २८/२३ से, प्रदोष व्रत,
४	१४	चं	५७	३९	२९	५९	श्रवण	२७	२४	१७	५३	व	९	५८	वि	१७	१६	२८	११	६	५६	१८	१३	१२	२७	२३	मकर	भद्रा १७/१६ तक, सोमवार युत श्रीमहाशिवरात्रि, C
५	३०	मं	६०	००	-	-	धनि	३२	०४	१९	४४	प	१०	०१	च	१८	३६	२८	१५	६	५५	१८	१४	१३	२८	२४	कु.६।५२	पंचक ६/५२ से, शहादत ए इमामहसन,
६	३०	बु	००	२७	०७	०४	शत	३५	२९	२१	०५	शि	९	४०	ना	७	०५	२८	१९	६	५४	१८	१४	१४	२९	२५	कुम्भ	अमावस्या पुण्य, आखिरी चहार शम्बा,

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

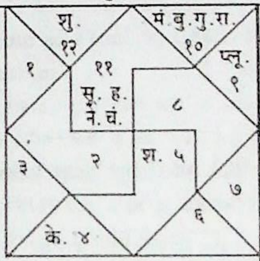
फाल्गुन कृष्ण ८ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६१६२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	७	९	९	९	११	४	९	३
४	५	१५	८	१५	१५	२५	१४	१४
२७	३३	३५	३४	५७	५३	५४	२८	२८
५५	५६	६	३	३८	३३	५६	५३	५३
६०	७११	४६	६८	१३	३३	४	३	३
३३	१७	४३	५९	५०	४८	१७	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
धनि ४	अनु १	श्रवण २	उषा ४	श्रवण २	उभा ४	पूफा ४	श्रवण २	पुष्य ४



वृहस्पतिवार को सूर्य कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पूर्व तथा दक्षिण के देशों में पीड़ा, पश्चिम के देशों में युद्धभय ओर उत्तर के देशों में सुख-शान्ति होती है। **"आग्नेयां दृष्टिमार्गस्तु वारुणादौ यदा क्रमम्। देशभंगं विजानीयात् सृष्टिसंहारकारकम्"**॥ गुरु मकर राशि में रहते हुए उदय हो रहा है इसके प्रभाव से लोगों को पीड़ा होती है, वर्षा अधिक होती है एवं धान्य की उत्पत्ति होती है। **"लोके रुजो मकरके बहुधान्यवृद्धिः**। षष्ठी के दिन सप्तमी नक्षत्र के होने से आगे तीन माह तक दुर्भिक्ष होता है। **"फाल्गुने कृष्ण षष्ठी चेच्चित्रानक्षत्रसंयुता। त्रिभिर्मासैः सुभिक्षाय स्वात्यां दुर्भिक्षसाधनम्"**॥ इसी पक्ष में चतुर्ग्रही योग भी बन रहा है। इसके प्रभाव से कहीं रक्तपात होगा अथवा जलप्लावन से जनधन की हानि होगी। **"एकाराशौ यदायांति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयंति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा"**॥ गुरु के उदय होने से चांदी के भाव बढ़ जाते हैं तथा रुई के बढ़े भाव घट जाते हैं एवं यदि रुई के भाव घटे हुए हों तो बढ़ जाते हैं। सोने के भावों में मन्दी हो जाती है। गुरु के मकर राशि में रहते हुए उदय होने से वर्षा अधिक होती है। अनाज की पैदावार बढ़ती है तथा अनाज सस्ता हो जाता है। मंगल के उदय होने से उड़द, तिल, तेल के भावों में तेजी होती है।

फाल्गुन कृष्ण ३० बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६१७०



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१०	९	९	९	११	४	९	३
१२	११	२१	१८	१७	१९	२५	१४	१४
३१	४५	४९	३५	४७	३९	११	३	३
४०	४८	२२	२३	२१	३९	२१	२७	२७
६०	७६२	४६	८२	१३	२०	४	३	३
२१	४८	५१	४	३२	२५	३७	११	११
मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
शत २	शत २	श्रवण ४	श्रवण ३	श्रवण ३	रेवती १	पूफा ४	श्रवण २	पुष्य ४

आकाश लक्षण- इस पक्ष में चतुर्ग्रही योग बन रहा है तथा सूर्य के आगे शुक्र स्थित है इसके प्रभाव से पर्वतीय भागों में शीत के साथ वर्षा की बौछार पड़ेगी। उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में शीत के प्रकोप के साथ कहीं-कहीं ओलवृष्टि या हिमपात सम्भव है। कहीं शीत के प्रकोप के साथ वर्षा भी होगी। मैदानी भागों में ऋतु परिवर्तन के लक्षण दृष्टिगोचर होंगे। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश में बादल चाल के साथ-साथ कहीं बूंदाबांदी तथा कहीं-कहीं वर्षा भी होगी।

श्रीसंवत् २०६५ शक: १९३०
फाल्गुन शुक्ल पक्ष: २३

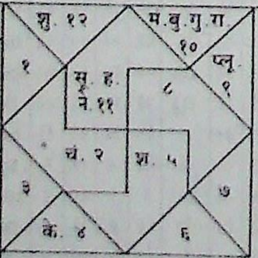
ता. २६ फरवरी से ११ मार्च सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति ७ से २० फाल्गुन तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्तऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	हि. फाल्गुन	मु. सफर	अं. फरवरी	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	विवरण
७	१	गु	१	५३	०७	३८	पूभा	३७	४०	२२	५७	सि	८	५६	ब	७	३९	२८	२३	६	५३	१८	१५	१५	३०	२६	मी.१५।४७	धनिष्ठा में मंगल २७/५४, चन्द्रदर्शन मु. ३०, द.श्रृंगोन्नति, (वि.मु. उ.भा. में),
८	२	शु	२	०५	०७	४२	उभा	३८	४३	२२	२१	सा	७ / ३०	४९ / २१	कौ	७	४२	२८	२७	६	५२	१८	१६	१६	१	२७	मीन	वै. महापात १९/०३ से २३/१२ तक, **श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती,** A
९	३	श	१	१०	०७	११	रे	३८	४५	२२	२१	शु	२८	३४	ग	७	११	२८	३२	६	५१	१८	१६	१७	२	२८	मे.२२।२१	भद्रा १८/५८ से ३०/३१ तक, पंचक २२/२१ तक, धनिष्ठा में बुध १५/१०, B
०	४	श	५९	०९	३०	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्थी तिथि क्षय, A र.उ.अ. मु. ३, (वि.मु. उ.भा. रेवती में),
१०	५	र	५६	२३	२९	२३	अ	३७	५३	२१	५१	ब्र	२६	३०	ब	१८	००	२८	३६	६	५०	१८	१७	१८	३	मा.१	मेष	मार्च मास ३ दि. ३१, **B विनायक ४,** (वि.मु. रेवती में),
११	६	चं	५२	४८	२७	५६	भर	३६	१३	२१	१८	ऐं	२४	११	कौ	१६	४२	२८	४०	६	४९	१८	१८	१९	४	२	वृ.२७।०५	**D होलिका दहन २१/०५ के बाद, श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती, E**
१२	७	मं	४८	३२	२६	१२	कृति	३३	५१	२०	२०	वै	२१	३९	ग	१५	०७	२८	४४	६	४८	१८	१८	२०	५	३	वृष	भद्रा २६/१२ से, **अष्टाह्निक प्रा. (जैन),** **E ईद-ए-मिलाद,**
१३	८	बु	४३	४०	२४	१४	रो	३०	५३	१९	०८	वि	१८	५५	वि	१३	१६	२८	४९	६	४७	१८	१९	२१	६	४	मि.३०।२७	भद्रा १३/१५ तक, कुम्भ में बुध २७/४०, पूभा में सूर्य १६/०४, **होलाष्टक प्रा.**
१४	९	गु	३८	१७	२२	०४	मृग	२७	२३	१७	४३	प्री	१६	०१	बा	११	११	२८	५३	६	४६	१८	१९	२२	७	५	मिथुन	**C मेला खाटू श्याम २ दिन का, रामस्नेही सम्प्दाय का फूलडोल महोत्सव,**
१५	१०	शु	३२	३०	१९	४४	आ	२३	२८	१६	०७	आ	१२	५९	तै	८ / ३०	५६ / ३२	२८	५७	६	४५	१८	२०	२३	८	६	मिथुन	भद्रा ३०/३२ से, शुक्र वक्री २२/४५,
१६	११	श	२६	२६	१७	१८	पुन	१९	५१	१४	२५	सौ	९	५०	वि	१७	१८	२९	०१	६	४४	१८	२१	२४	९	७	क.८।५१	भद्रा १७/१८ तक, कुम्भ में मंगल १६/३२, **आमला ११ व्रत सबका, C**
१७	१२	र	२०	१७	१४	४९	पु	१४	५६	१२	४०	शो	६ / २७	३९ / २८	बा	१४	५०	२९	०६	६	४३	१८	२१	२५	१०	८	कर्क	**प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी,** **G वसंतोत्सव,**
१८	१३	चं	१४	१६	१२	२३	श्ले	१०	४२	१०	५८	सु	२४	२२	तै	१२	२४	२९	१०	६	४२	१८	२२	२६	११	९	सिं.१०।५८	शत. में बुध १०/१६, **F होलाष्टक समाप्त, अष्टाह्निक समाप्त (जैन), G**
१९	१४	मं	८	३८	१०	०७	मघा	६	५१	०९	२४	धृ	२१	२८	व	१०	०८	२९	१४	६	४१	१८	२३	२७	१२	१०	सिंह	भद्रा १०/०७ से २१/०५ तक, महापात १७/१२ से २१/३२ तक, **सत्यव्रत, D**
२०	१५	बु	३	४१	०८	०७	पूफा	३	४०	०८	०७	शू	१८	५०	ब	८	०८	२९	१९	६	४०	१८	२३	२८	१३	११	क.१३।५१	व्य.महा. २१/२६ से २५/१८ तक, **होली, छरोली, होलिका धूलिधारण, F**

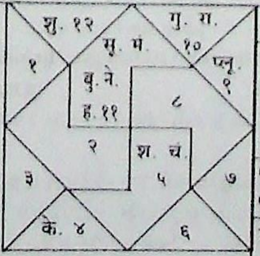
फाल्गुन शुक्ल ८ बुधे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६१७७ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१	९	९	९	११	४	९	३
१९	१५	२७	२८	१९	२१	२४	१३	१३
३३	२०	१७	३६	२१	१९	४६	४१	४१
३०	१९	३६	१७	१२	८	३१	१२	१२
६०	८८	४६	९०	१३	५	४	३	३
८	५१	५६	३८	११	२२	४६	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



एकादशी को मंगल कुंभ राशि में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप सब धान्यों के भाव में तेजी होती है तथा अन्य प्रकार की वस्तुएं भी मंहगी होती हैं किन्तु लोग निर्भय रहते हैं। **''भूसुत: कुम्भराशिस्थ: सर्वधान्यमहर्घता। एवं प्रजायते ह्यर्घं लोकमध्ये तु निर्भयम्॥''** अष्टमी के दिन रोहिणी नक्षत्र कुम्भ एवं मीन की संक्रांतियों के मध्य होने से वर्षा अल्प होती है। **''कुम्भ मीनान्तरेष्टम्यां नवम्यां दशमी दिने। रोहिणी चेत्तदा: वृष्टिरल्पा मध्याधिका: क्रमात्''॥** बुध अष्टमी के दिन कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से अन्नादि का समभाव रहता है एवं शुभ अशुभ दोनों प्रकार के फल होते हैं। **''निशापतेश्च तनय: शनिक्षेत्रे यदाभवेत्। समभाव: सुखं दु:खं तथैव च शुभाशुभम्''॥** इस पक्ष में चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योग भी बन रहे हैं। इसके प्रभाव से कहीं रक्तपात होगा या जलप्लावन से जनधन की हानि होगी। पंचग्रही योग के प्रभाव से वन्यजीवों का नाश होगा। शनि-मंगल का अशुभकारी षडष्ट्क योग दुर्घटना, अग्निकाण्ड आतंकवादी गतिविधियाँ, बम्ब विस्फोटादि से भय एवं अशान्ति का वातावरण उत्पन्न करेगा।

फाल्गुन शुक्ल १५ बुधे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ६१८४



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	४	१०	१०	९	११	४	९	३
२६	२५	२	१	२०	२१	२४	१३	१३
३३	८	४६	३४	५२	५	१३	१८	१८
३७	१५	१२	३७	३१	१२	६	५६	५६
५९	८३२	४६	९८	१२	१२	४	३	३
५३	३८	५८	३७	४९	०	४७	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण- इस पक्ष में चतुर्ग्रही योग बन रहा है अत: ऋतु में अचानक अस्थायी परिवर्तन होगा, तेज हवाओं के साथ कहीं बादलचाल तथा कहीं छिटपुट बूंदाबांदी होगी तथा कहीं ओलावृष्टि सम्भव है। दक्षिण भारत में गर्मी बढ़ेगी तथा उत्तर भारत में ऋतु परिवर्तन के लक्षण दिखाई देंगे। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़ में दिन में गर्मी एवं रात्रि में शीत पड़ेगी।

श्री संवत् २०६५ शकः १९३०
चैत्र कृष्ण पक्षः २४

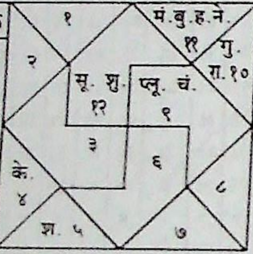
ता. १२ से २६ मार्च सन् २००९ ई., राष्ट्रीय मिति २१ फाल्गुन से ५ चैत्र तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. फाल्गुन	मु. र.उ.अ.	अं. मार्च	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
०	१	बु	५९	३१	३०	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा तिथि क्षय,
२१	२	गु	५७	०१	२९	२६	उफा	१	२८	७	१३	गं	१६	३३	तै	१७	५५	२९	२३	६	३८	१८	२४	२४	२९	१२	कन्या	सन्त तुकाराम जयंती, (वि.मु. हस्त में), B बुधास्त पूर्व में ९/५१,
२२	३	शु	५५	५६	२८	५९	ह	०	३३	६	५०	वृ	१४	४५	व	१७	०८	२९	२७	६	३७	१८	२४	२४	३०	१३	तु.१८।५२	भद्रा १७/०७ से २८/५९ तक, A श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१/५४,
२३	४	श	५६	३६	२९	१४	चि	१	१२	७	०४	ध्रु	१३	२७	ब	१७	०२	२९	३२	६	३६	१८	२५	२५	चै.१	१४	तुला	मीन में सूर्य १६/१५, मु. १५, सं. पुण्य ९/५१ से, सौर चैत्र प्रारम्भ, A
२४	५	र	५९	०५	३०	१२	स्वा	३	३४	८	०	व्या	१२	४३	कौ	१७	३८	२९	३६	६	३५	१८	२६	२६	२	१५	वृ.२७।०९	शतभिषा में मंगल २८/५६, ईद-ए-मिलाद, रंग पंचमी, श्री जयंती,
२५	६	चं	६०	०	-	-	वि	७	४०	९	३७	ह	१२	३२	ग	१८	५७	२९	४०	६	३४	१८	२६	२६	३	१६	वृश्चिक	
२६	६	मं	३	१८	०७	५१	अनु	१३	२२	११	५३	व	१२	५१	व	७	५२	२९	४४	६	३३	१८	२७	२७	४	१७	वृश्चिक	भद्रा ७/५१ से २०/५३ तक, पूभा में बुध ९/१०, उभा में सूर्य २४/३६, B
२७	७	बु	८	४९	१०	०२	ज्ये	२०	१८	१४	३८	सि	१३	३३	ब	१०	०३	२९	४९	६	३२	१८	२७	२७	५	१८	ध.१४।३८	कालाष्टमी, C कैलादेवी मेला करौली (राज.),
२८	८	गु	१५	११	१२	३४	मूल	२७	५६	१७	४०	व्य	१४	२९	कौ	१२	३५	२९	५३	६	३०	१८	२८	२८	६	१९	धनु	शीतलाष्टमी, वर्षीतपारम्भ (जैन), ऋषभदेव केशरिया मेला मेवाड़, C
२९	९	शु	२१	४७	१५	११	पूषा	३५	४०	२०	४४	व	१५	२८	ग	१५	१२	२९	५७	६	२९	१८	२८	२८	७	२०	म.२७।२९	भद्रा २८/२७ से, सायन मेष में सूर्य १७/१९, उत्तरगोल में सूर्य प्रवेश, विषुवदिन,
३०	१०	श	२७	५५	१७	३७	उषा	४२	५१	२३	३६	प	१६	११	वि	१७	३८	३०	०२	६	२८	१८	२९	२९	८	२१	मकर	भद्रा १७/३७ तक, D वक्री उभा में शुक्र ११/०६, राष्ट्रीय चैत्र प्रा.,
चै.१	११	र	३३	०३	११	४०	श्र	४८	५८	२६	०१	शि	१६	५२	ब	६	४३	३०	०६	६	२७	१८	३०	३०	९	२२	मकर	मीन में बुध २१/३६, धनिष्ठा में गुरु २५/४२, पापमोचिनी ११ व्रत सबका, D
२	१२	चं	३६	४६	२१	०७	ध	५३	४०	२७	५३	सि	१७	०	कौ	८	२९	३०	१०	६	२६	१८	३०	३०	१०	२३	कु.१५।०२	पंचक १५/०२ से, शुक्र वृद्धत्वारम्भ ११/०६, E मेला पिहोवा (हरि.),
३	१३	मं	३८	५०	२१	५६	शत	५६	४५	२९	०६	सा	१६	३९	ग	९	३७	३०	१५	६	२५	१८	३१	३१	११	२४	कुम्भ	भद्रा २१/५६ से, उभा में बुध १५/५८, वारुणी त्रयोदशी, भौम प्रदोष व्रत,
४	१४	बु	३९	१४	२२	०४	पूभा	५८	१४	२९	४०	शु	१५	४७	वि	१०	०६	३०	१९	६	२३	१८	३१	३१	१२	२५	मी.२३।३५	भद्रा १०/०५ तक, वै.महा. ९/५४ से १३/५६ तक, मासशिवरात्रि, E
५	३०	गु	३८	०४	२१	३५	उभा	५८	१६	२९	४०	शु	१४	२४	च	९	५५	३०	२३	६	२२	१८	३२	३२	१३	२६	मीन	शुक्र पश्चिम में अस्त ११/०६, अमावस्या पुण्य, चान्द्र संवत्सर २०६५ समाप्त,

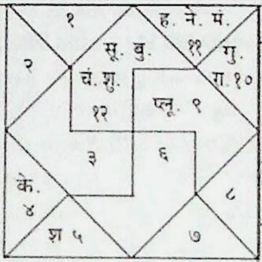
चैत्र कृष्ण ८ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६११२ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	८	१०	१०	९	११	४	९	३
४	७	९	२३	२२	१८	२३	१२	१२
३१	२०	२	१६	३३	२२	३५	५३	५३
५०	१४	३	३३	१३	४४	१७	३१	३१
५९	७०८	४६	१०८	१२	२९	४	३	३
३८	४७	५९	१२	१६	५६	३८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
१	३	१	१	४	१	४	१	३
उभा	मूल	शत	पूभा	श्रवण	रेवती	पूफा	श्रवण	पुष्य



शनिवार के दिन सूर्य मीन राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पूर्व तथा उत्तर के देशों में अशान्ति, कष्ट, बालकों को पीड़ा, दक्षिण के देशों में युद्ध आदि का भय व अशान्ति होती है और पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है। ''ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितम्। देशभङ्गं विजानीयात् शिशूनां च विनाशहि''॥ रविवार को बुध मीन राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से मृग, हाथी इनका नाश होता है तथा शासक व लोगों में विरोध होता है अशान्ति होती है। ''धने-मीने बुधोयाति मारयति मृगान् गजान्। राजा विरोध कृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति''॥ इस पक्ष में शनि-मंगल का अशुभफलदायी समसप्तक योग बना हुआ है। इसके कुप्रभाव से विश्व में अशान्ति का वातावरण बनेगा। बम्ब विस्फोट, अग्निकाण्ड, यान दुर्घटना एवं आतंकवादी गतिविधियों की अधिकता से भय का वातावरण बनेगा। कहीं रक्तपात होने से या जलप्लावनादि से जन-धन की हानि होगी तथा प्राकृतिक प्रकोपों से लोगों को कष्ट होगा। बुध के पूर्व दिशा में अस्त होने से गेहूं, चावल आदि सर्व प्रकार के अनाजों के भाव बढ़ जाते हैं। सोना पहले कुछ मन्दा होकर बाद में तेज हो जाता है। रुई में घट-बढ़ होती रहती है। शतभिषा में मंगल के आने से कृषि की हानि होती है।

चैत्र कृष्ण १५ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ६११९



सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	११	१०	११	९	११	४	९	३
११	३	१४	६	२३	१४	२३	१२	१२
२८	१३	३०	२०	५७	२४	३	३१	३१
४३	५८	५७	२२	३५	१२	३०	१६	१६
५९	८००	४६	११६	११	३७	४	३	३
२६	०३	५८	५७	४४	३४	२३	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
३	४	३	१	१	४	३	१	३
उभा	पूभा	शत	उभा	धनिष्ठा	उभा	पूफा	श्रवण	पुष्य

आकाश लक्षण- इस पक्ष में सूर्य के साथ शुक्र एवं बुध है तथा चतुर्ग्रही योग भी बन रहा है इससे पर्वतीय क्षेत्रों में वायु के तेज प्रवाह के साथ बूंदाबांदी होगी तथा मैदानी भागों में गर्मी बढ़ने लगेगी। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, बिहार में बादल चाल के साथ वायु का प्रवाह भी तेज होगा। शुक्र के प्रभाव से छिटपुट बूंदाबांदी भी कहीं-कहीं सम्भव है।

स्मार्त्त वैष्णव विचार

पंचाङ्ग में एकादशी व्रत प्रायः स्मार्त्त वैष्णव भेद से दो दिन अलग-अलग होते हैं, स्मार्त्त व्रत पहले दिन और वैष्णवों का दूसरे दिन लिखते हैं। इनका निर्णय धर्म-शास्त्रीय व्यवस्था से पंचाङ्गों में लिखा जाता है। यदि ५४ घटी से एक पल भी दशमी अधिक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय का व्रत एकादशी को न होकर द्वादशी में होता है। निम्बार्क सम्प्रदाय वाले कपाल वेध मानते हैं। स्मार्त्त लोग जिस समय अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी हो उसी दिन श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत करते हैं और वैष्णव सम्प्रदाय वाले उदय व्यापिनी अष्टमी मानते हैं।

स्मार्त्त कौन और वैष्णव कौन?- साधारण जन यह नहीं समझ पाते कि वे स्मार्त्त हैं या वैष्णव उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि श्रुति- स्मृति को मानने वाले सभी आस्तिक जन स्मार्त्त हैं। वैसे तो द्विज-मात्र (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक सभी स्मार्त्त हैं। **'श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।'** *(मनुः)* जो लोग यह समझते हैं कि मांस मदिरा प्याज लहसुन से दूर रहने वाले राम-कृष्ण-विष्णु के उपासक सब वैष्णव हैं, यह उनका भ्रम है। जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शङ्ख चक्र अंकित करवाये हैं वे या जिन्होंने किसी वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा लेकर कण्ठी और तुलसी की माला धारण की हुई है वे ही वैष्णव कहला सकते हैं, उनको और विधवा स्त्रियों को दूसरे दिन वैष्णव व्रत करने का अधिकार है, अन्य को नहीं।

दैनिक-लग्नसारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी हुई यह दैनिक लग्नसारिणी दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए हुए लग्न का समाप्तिकाल रेलवे-स्टैण्डर्ड-टाइम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा गया है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भ काल समझें। ता. ३ अप्रैल, को सारिणी में मीन लग्न के नीचे घण्टे ६ मिनट ४२ लिखे हैं, अतः मीन लग्न प्रातः ६ बजकर ४२ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे हुए घण्टा-मिनट अर्धरात्रोत्तर क्रमशः अर्ध रात्रि-पर्यन्त २४ घण्टे में लिखे हैं। जैसे रात्रि के १२ बजकर १५ मिनट की जगह घ.२४ मि.१५ लिखे हुए मिलेंगे,ऐसे ही मध्यान्ह के पश्चात् एक बजे की जगह १३,दो की जगह १४ आदि क्रमशः समझें।

लग्नसारिणी-परिवर्तन उदाहरण

किसी को इस लग्न सारिणी से अन्य स्थान का लग्न-समाप्ति-काल लाना हो तो जिस तारीख को जो लग्न लाना हो उस तारीख का वह लग्न-समाप्ति काल का घण्टा-मिनट लिखें, पश्चात-पंचांग-परिवर्तन में जिस नगर का लग्न परिवर्तन करना हो उस नगर के आगे या नगर के समीप के नगर के आगे लिखे हुए देशान्तर मिनट लें वह देशान्तर मिनट ऋण(—) हो तो ऊपर के (इस पंचांग के) लग्न समाप्ति- काल में मिलावें, देशान्तर मिनट धन(+) हो तो ऋण करें तो वह देशान्तर संस्कृत स्थानीय रेलवे टाइम का लग्न-समाप्ति-काल होगा फिर जिस स्थान का लग्न समाप्ति-काल लाना है उसके अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर कोष्ठक से चरान्तर साधन करें वह चरान्तर धन आया हो तो उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल में मिला दें,ऋण आया हो तो घटा देवें, तो वह स्थानीय रेलवे टाइम से स्पष्ट लग्न का समाप्ति-काल होगा उदाहरण ता. ३ अप्रैल को मीन लग्न समाप्तिकाल ६ घण्टा ४२ मिनट है, इसी लग्न का सोलन में समाप्ति-काल लाना है। पंचांग परिवर्तन में अक्षांशादि-सारिणी में दिल्ली से सोलन में समाप्तिकाल लाना है। पंचांग परिवर्तन में अक्षांशादि-सारिणी में दिल्ली से सोलन का देशान्तर मिनट ०।१२ है, वहां यह मिनट ऋण होने से ६ घण्टा ४२ मिनट में मिला दें तो ६ घं. ४२ मि. १२ सै. यह सोलन का देशान्तर संस्कृत मीन लग्न का समाप्ति-काल हुआ। इस दिन ३ अप्रैल को सूर्य की क्रांति+उत्तर ५ अंश ७ क. है और सोलन के अक्षांश ३०।५५ है इन क्रांति और अक्षांश से चरान्तर लिया तो वह १ आया, अतः उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल घ. ६ मि. ४३ सै. १२ यही सोलन का मीन लग्न समाप्तिकाल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र समझें। दिल्ली के समीपवर्ती नगर या ग्राम के लिए संस्कार नहीं किया जाए तो भी कोई हानि नहीं, परन्तु दूरस्थ नगरों के लिए ऊपर दिए उदाहरण में बताई प्रक्रिया के अनुसार लग्न समाप्तिकाल ला करके उपयोग करने से वह सूक्ष्म लग्न होगा।

नवांश का प्रारम्भ और अन्त लाने का उदाहरण

ऊपर कहे अनुसार जिस लग्न में नवांश-समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्ति-काल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें, शेष घं. मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे, उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्ध १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणा क. फिर ९ का भाग देने पर सैकण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट हो वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आयेगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समाप्ति-काल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारंभ मकर से, मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। उदाहरणार्थ (—) उपर्युक्त सोलन का आया हुआ मेषारम्भ समय घं. ६ मि. ४३ सै.१२ तथा अन्त घंटा ८ मिनट १७ अन्त में प्रारम्भ घटाया तो घंटा १ मि. ३३ इसके मिनट किये तो मिनट ९३ हुए इसमें ९ का भाग देने पर मिनट १० सै. २० यह एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। हमको मेष लग्न में वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त समय लेना है तो मेषादि से ७ नवांश भुक्त हुए, अतः एक नवांश के मान (मि.१० से. २०) को ७ से गुणा किया तो घंटा १ मि. १२ सै. २० आये, यह घण्टादि मेष लग्न के प्रारम्भ समय घंटा ६ मि. ४३ में जोड़ दिये तो वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ समय घं. ७ मिनट ५५ सै. २० हुआ, इसी में एक नवांश का मान मि. १० से. २० जोड़ें तो घण्टा ८ मि. ५ से. २० हुआ वह वृश्चिक नवांश का समाप्ति-काल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त्त योग्य समय में होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश-सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

वास्तुशान्ति (शिलान्यास या गृहप्रवेश) सम्भार

- रोली 10ग्रा०
- मौली 2
- हल्दी 10ग्रा.
- मेंहदी ,,
- अबीर ,,
- ~~अभ्रक~~
- सुपारी 1 पाव
- कर्पूर 1 पैकिट
- लवंग 10ग्रा.
- इलायची ,,
- केशर 1 डिब्बी
- इत्र 1
- सिन्दूर 5 ग्रा.
- सरसों पीली 10ग्रा.
- मिश्री 500ग्रा.
- द्राक्षा 1 पाव
- आमला ,,
- सौंठ 100ग्रा.
- तैल सरसों 100ग्रा.
- गोला(गिरि) 2
- ~~पंचमेवा~~
- बादाम 1 पाव
- अखरोट ,,
- काजू ,,
- किसमिस ,,
- छुहारा ,,
- मधु
- चन्दनमूठा श्वेत 1
- होरसा 1
- यज्ञोपवीत 10
- रूई
- दियासलाई
- नारियल 5
- पान 10
- ऋतुफल
- पुष्प
- पुष्पमाला
- बिल्वपत्र
- दूर्वा
- तुलसी
- गंगाजल

होमसामग्री

- तिल 1 कि.
- चावल 500ग्रा.
- जौ 250ग्रा.
- शर्करा ,,
- घृत 2 कि.
- गुग्गुल 100ग्रा.
- भोजपत्र 50ग्रा.
- कमलगट्टा 1 पाव
- जायफल 100ग्रा.
- जावित्री 10ग्रा.
- पंचमेवा 1 पाव
- चन्दनचूरा 100ग्रा.
- अगर 10ग्रा.
- तगर ,,
- नागरमोथा ,,

सर्वौषधि

- कूठ 10ग्रा.
- जटामासी ,,
- आमाहल्दी ,,
- दारूहल्दी ,,
- मुरा ,,
- छारछड़ीला ,,
- कचूर/शटी 10ग्रा.
- वच ,,
- चम्पा ,,
- नागरमोथा ,,

पञ्चगव्य

- गोदुग्ध 1 पाव
- गोदधि 100ग्रा.
- गोघृत 50ग्रा.
- गोमय
- गोमूत्र

पञ्चपल्लव

- आम्र
- वट
- गूलर
- पीपल
- पिलखन

पञ्चधान्य

- मूंग 1 पाव
- मसूरलाल ,,
- उरदकाला ,,
- चनादाल ,,
- चावल 5 कि०

सप्तधान्य

- जौ
- गेहूँ
- चावल
- तिल
- काकुनी
- सावां
- चनाकाला

सप्तमृत्तिका

- अश्वशाला
- गजशाला
- वल्मीक
- संगम
- तडाग
- राजद्वार
- गोशाला

नवग्रहसमिधा

- अर्क
- पलाश
- खदिर
- अपामार्ग
- पीपल
- गूलर
- शमी
- दूर्वा
- कुशा
- समिधा आम या पीपल

देववस्त्रादि

- धोती मर्दानी
- ~~धोती जनानी~~
- दुपट्टा
- अगौंछा
- ~~कम्बल~~
- सूती श्वेतवस्त्र
- ~~सूती रक्तवस्त्र~~
- ~~सूती पीतवस्त्र~~
- ~~शृंगार सामग्री~~
- ~~प्रधान स्वर्ण प्रतिमा~~
- सर्प जोड़ा
- ~~पंचरत्नपुड़िया~~
- ~~सुवर्ण का टुकड़ा~~

अगर	चांदी " "	दौना
चन्दन	तांवा " "	पत्तल
कुटज	पीतल का टुकड़ा	कच्चा सूत्र
शिगरु	शीशा " "	**वरण सामग्री**
हरिद्रा	रांगा " "	धोती
जटामासी	प्रधानकलश ताम्र	दुपट्टा
वच	सामान्यकलशपीतल	अंगौछा
कूठ	पुण्याहकलश(सागर)	~~कम्बल~~
तेज	कर्मपात्र पीतल	लोटा ~~पंचपात्रादि~~
दारुहल्दी	पूर्णपात्र पीतल	~~पादुका~~
बन्धुजीव	आज्यस्थाली कांस्य	रुद्राक्षमाला
सिन्धूवार	चरुस्थाली कांस्य	ऊर्णासन
सठी	थाली बड़ी ''	~~सस्ती~~
अष्ठवगन्धा	~~तस्तरी " "~~	ईंट ~~या शिला~~
मुस्ता	कटोरी " "	~~मृत्तिका~~
कुरण्टक	~~परात " पीतलकी~~	~~रंग काला~~
पनस	करछुल" "	~~रंग लाल~~
जीवक	गिलास	~~चूना~~
जाती	चम्मच	
मालती	सड़सी	
मधूक	पंचपात्र बड़ा पीतल	
खदिर	आचमनी " "	
सप्तच्छद	अर्घा " "	
शिरीष्ठा	तष्टा " "	
काकमाची	आरती दानी	
केतकी	घण्टा	
जंबू	शंख	
प्लाखा	लोहे की कील	
वेतस	काष्ठकी चौकी	
आमलक	काष्ठ का पटरा	
सरल	सकोरे	
गिरिकिर्णी	दीवला	

अप्रैल की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	६।५०	८।२३	१०।२२	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।४९	२४।०७	२।११	३।५४	५।२२
२	६।४६	८।२०	१०।१८	१२।३१	१४।५०	१७।०७	१९।२५	२१।४५	२४।०३	२।०७	३।५०	५।१८
३	६।४२	८।१७	१०।१४	१२।२७	१४।४६	१७।०३	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।०४	३।४६	५।१४
४	६।३९	८।१३	१०।१०	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५९	३।४२	५।१०
५	६।३५	८।१०	१०।०६	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५५	३।३८	५।०६
६	६।३१	८।०६	१०।०२	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१९।०९	२१।२९	२३।४७	१।५१	३।३४	५।०२
७	६।२७	८।०३	०९।५७	१२।११	१४।३०	१६।४७	१९।०५	२१।२५	२३।४३	१।४७	३।३०	४।५७
८	६।२२	७।५८	०९।५३	१२।०६	१४।२५	१६।४३	१९।००	२१।२०	२३।३८	१।४२	३।२५	४।५३
९	६।१८	७।५४	०९।४९	१२।०२	१४।२१	१६।३९	१८।५६	२१।१६	२३।३४	१।३८	३।२१	४।४९
१०	६।१४	७।५०	०९।४५	११।५८	१४।१७	१६।३५	१८।५२	२१।१२	२३।३०	१।३४	३।१७	४।४५
११	६।१०	७।४६	०९।४१	११।५४	१४।१३	१६।३१	१८।४८	२१।०८	२३।२६	१।३०	३।१३	४।४२
१२	६।०६	७।४३	०९।३७	११।५१	१४।१०	१६।२७	१८।४५	२१।०४	२३।२३	१।२७	३।१०	४।३८
१३	६।०३	७।३९	०९।३४	११।४७	१४।०६	१६।२४	१८।४१	२१।००	२३।१९	१।२३	३।०६	४।३४
१४	५।५९	७।३५	०९।३०	११।४३	१४।०२	१६।२०	१८।३७	२०।५६	२३।१५	१।१९	३।०२	४।३०
१५	५।५६	७।३२	०९।२७	११।४०	१३।५९	१६।१७	१८।३४	२०।५३	२३।१२	१।१६	२।५९	४।२७
१६	५।५२	७।२८	०९।२३	११।३६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४९	२३।०८	१।१२	२।५५	४।२३
१७	५।४८	७।२४	०९।१९	११।३२	१३।५१	१६।०९	१८।२६	२०।४५	२३।०४	१।०८	२।५१	४।१९
१८	५।४४	७।२०	०९।१५	११।२८	१३।४७	१६।०५	१८।२२	२०।४१	२३।००	१।०४	२।४७	४।१५
१९	५।४०	७।१६	०९।११	११।२४	१३।४३	१६।०२	१८।१८	२०।३७	२२।५६	१।०१	२।४३	४।११
२०	५।३६	७।१२	०९।०७	११।२०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।३३	२२।५२	०।५६	२।३९	४।०७
२१	५।३२	७।०७	०९।०३	११।१६	१३।३४	१५।५३	१८।१०	२०।२९	२२।४८	०।५२	२।३४	४।०३
२२	५।२७	७।०३	०८।५८	११।११	१३।३०	१५।४८	१८।०५	२०।२४	२२।४३	०।४७	२।३०	३।५८
२३	५।२३	६।५९	०८।५४	११।०७	१३।२६	१५।४४	१८।०१	२०।२०	२२।३९	०।४३	२।२६	३।५४
२४	५।१९	६।५५	०८।५०	११।०३	१३।२२	१५।४०	१७।५७	२०।१६	२२।३५	०।३९	२।२२	३।५०
२५	५।१५	६।५१	०८।४६	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।५३	२०।१२	२२।३१	०।३५	२।१८	३।४६
२६	५।११	६।४७	०८।४२	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।४९	२०।०८	२२।२७	०।३१	२।१४	३।४२
२७	५।०६	६।४२	०८।३७	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०।०४	२२।२२	०।२६	२।०९	३।३७
२८	५।०३	६।३८	०८।३३	१०।४६	१३।०६	१५।२४	१७।४१	२०।००	२२।१८	०।२२	२।०५	३।३३
२९	४।५८	६।३४	०८।२९	१०।४२	१३।०२	१५।२०	१७।३७	१९।५६	२२।१४	०।१८	२।०१	३।२९
३०	४।५५	६।३१	०८।२६	१०।३९	१२।५९	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।११	०।१५	१।५८	३।२६

मई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	६।२६	८।२१	१०।३३	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४८	२२।०६	००।०९	०१।५३	०३।२२	०४।४६
२	६।२२	८।१७	१०।२९	१२।४९	१५।०७	१७।२४	१९।४४	२२।०२	००।०५	०१।४९	०३।१८	०४।४२
३	६।१८	८।१३	१०।२५	१२।४५	१५।०३	१७।२०	१९।४०	२१।५८	००।०१	०१।४५	०३।१४	०४।३८
४	६।१५	८।१०	१०।२२	१२।४२	१५।००	१७।१७	१९।३७	२१।५५	२३।५८	०१।४२	०३।११	०४।३५
५	६।११	८।०६	१०।१८	१२।३७	१४।५६	१७।१३	१९।३३	२१।५१	२३।५४	०१।३७	०३।०७	०४।३१
६	६।०७	८।०२	१०।१४	१२।३३	१४।५२	१७।०९	१९।२९	२१।४७	२३।५०	०१।३४	०३।०३	०४।२७
७	६।०३	७।५७	१०।१०	१२।२९	१४।४८	१७।०५	१९।२५	२१।४३	२३।४५	०१।३०	०२।५९	०४।२३
८	५।५८	७।५४	१०।०६	१२।२५	१४।४४	१७।०१	१९।२१	२१।३९	२३।४२	०१।२६	०२।५५	०४।१९
९	५।५४	७।५०	१०।०२	१२।२१	१४।४०	१६।५७	१९।१७	२१।३५	२३।३७	०१।२२	०२।५१	०४।१४
१०	५।५०	७।४६	०९।५७	१२।१७	१४।३६	१६।५३	१९।१३	२१।३१	२३।३४	०१।१८	०२।४७	०४।१०
११	५।४५	७।४१	०९।५३	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१९।०८	२१।२६	२३।२९	०१।१३	०२।४२	०४।०५
१२	५।४१	७।३७	०९।४९	१२।०९	१४।२७	१६।४४	१९।०४	२१।२२	२३।२५	०१।०९	०२।३८	०४।०२
१३	५।३८	७।३४	०९।४६	१२।०५	१४।२४	१६।४१	१९।०१	२१।१९	२३।२२	०१।०६	०२।३५	०३।५८
१४	५।३४	७।३०	०९।४२	१२।०१	१४।२०	१६।३७	१८।५७	२१।१५	२३।१८	०१।०२	०२।३१	०३।५४
१५	५।३१	७।२६	०९।३७	११।५७	१४।१६	१६।३३	१८।५३	२१।११	२३।१४	००।५७	०२।२७	०३।५१
१६	५।२७	७।२३	०९।३५	११।५४	१४।१३	१६।३०	१८।५०	२१।०८	२३।११	००।५५	०२।२४	०३।४८
१७	५।२५	७।२०	०९।३२	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४७	२१।०५	२३।०८	००।५२	०२।२१	०३।४५
१८	५।२१	७।१६	०९।२८	११।४६	१४।०६	१६।२३	१८।४३	२१।०१	२३।०४	००।४८	०२।१७	०३।४१
१९	५।१७	७।१३	०९।२५	११।४३	१४।०३	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३।०१	००।४५	०२।१४	०३।३८
२०	५।१४	७।०९	०९।२२	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२२।५७	००।४१	०२।१०	०३।३४
२१	५।१०	७।०५	०९।१७	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२२।५३	००।३७	०२।०६	०३।३०
२२	५।०६	७।०१	०९।१३	११।३३	१३।५१	१६।०८	१८।२८	२०।४६	२२।४९	००।३३	०२।०२	०३।२५
२३	५।०३	६।५७	०९।०९	११।२९	१३।४७	१६।०४	१८।२४	२०।४२	२२।४५	००।२९	०१।५८	०३।२२
२४	४।५८	६।५३	०९।०५	११।२५	१३।४३	१६।००	१८।२०	२०।३८	२२।४१	००।२५	०१।५४	०३।१८
२५	४।५४	६।४९	०९।०२	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।३७	००।२१	०१।५०	०३।१४
२६	४।५०	६।४५	०८।५७	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।१२	२०।३०	२२।३३	००।१७	०१।४६	०३।१०
२७	४।४६	६।४१	०८।५३	११।१२	१३।३१	१५।४८	१८।०८	२०।२६	२२।२९	००।१३	०१।४२	०३।०६
२८	४।४२	६।३७	०८।४९	११।०८	१३।२७	१५।४४	१८।०४	२०।२२	२२।२५	००।०९	०१।३८	०३।०३
२९	४।३८	६।३३	०८।४५	११।०३	१३।२३	१५।४०	१८।००	२०।१७	२२।२१	००।०५	०१।३४	०२।५८
३०	४।३४	६।२९	०८।४१	१०।५९	१३।१९	१५।३६	१७।५६	२०।१४	२२।१७	००।०२	०१।३०	०२।५४
३१	४।२९	६।२४	०८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३१	१७।५१	२०।०९	२२।१२	२३।५६	०१।२५	०२।४९

जून की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	०६।१९	०८।३१	१०।५१	१३।०९	१५।२६	१७।४६	२०।०४	२२।०८	२३।५२	०१।२०	०२।४५	०४।२१
२	०६।१५	०८।२८	१०।४७	१३।०५	१५।२२	१७।४२	२०।००	२२।०३	२३।४७	०१।१५	०२।४०	०४।१६
३	०६।११	०८।२४	१०।४३	१३।०१	१५।१८	१७।३८	१९।५६	२१।५९	२३।४३	०१।११	०२।३६	०४।१२
४	०६।०७	०८।२०	१०।३९	१२।५७	१५।१४	१७।३४	१९।५२	२१।५५	२३।३९	०१।०७	०२।३२	०४।०८
५	०६।०३	०८।१६	१०।३५	१२।५३	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२१।५४	२३।३५	०१।०३	०२।२८	०४।०४
६	०५।५९	०८।१२	१०।३१	१२।४९	१५।०६	१७।२६	१९।४४	२१।४७	२३।३१	००।५९	०२।२४	०४।००
७	०५।५५	०८।०८	१०।२७	१२।४५	१५।०२	१७।२२	१९।४०	२१।४३	२३।२७	००।५५	०२।२०	०३।५६
८	०५।५२	०८।०५	१०।२४	१२।४२	१४।५९	१७।१९	१९।३७	२१।४०	२३।२४	००।५२	०२।१७	०३।५३
९	०५।४८	०८।०१	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१५	१९।३३	२१।३६	२३।२०	००।४८	०२।१३	०३।४९
१०	०५।४४	०७।५७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।११	१९।२९	२१।३२	२३।१६	००।४४	०२।०९	०३।४५
११	०५।४०	०७।५३	१०।१२	१२।३०	१४।४७	१७।०७	१९।२५	२१।२८	२३।१२	००।४०	०२।०५	०३।४१
१२	०५।३६	०७।४९	१०।०८	१२।२६	१४।४३	१७।०३	१९।२१	२१।२४	२३।०८	००।३६	०२।०१	०३।३७
१३	०५।३२	०७।४५	१०।०४	१२।२२	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।२०	२३।०४	००।३२	०१।५७	०३।३३
१४	०५।२९	०७।४२	१०।०१	१२।१९	१४।३६	१६।५६	१९।१४	२१।१७	२३।०१	००।२९	०१।५३	०३।३०
१५	०५।२५	०७।३८	०९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।५२	१९।१०	२१।१३	२२।५७	००।२५	०१।५०	०३।२६
१६	०५।२१	०७।३४	०९।५३	१२।११	१४।२८	१६।४८	१९।०६	२१।०९	२२।५३	००।२१	०१।४६	०३।२२
१७	०५।१७	०७।३०	०९।४९	१२।०७	१४।२४	१६।४४	१९।०२	२१।०५	२२।४९	००।१७	०१।४२	०३।१८
१८	०५।१३	०७।२६	०९।४५	१२।०३	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।०१	२२।४५	००।१३	०१।३८	०३।१४
१९	०५।१०	०७।२३	०९।४२	१२।००	१४।१८	१६।३७	१८।५५	२०।५७	२२।४२	००।१०	०१।३५	०३।११
२०	०५।०६	०७।१९	०९।३८	११।५६	१४।१४	१६।३३	१८।५१	२०।५४	२२।३८	००।०६	०१।३१	०३।०७
२१	०५।०२	०७।१५	०९।३४	११।५२	१४।१०	१६।२९	१८।४७	२०।५०	२२।३४	००।०२	०१।२७	०३।०३
२२	०४।५८	०७।११	०९।३०	११।४८	१४।०६	१६।२५	१८।४३	२०।४६	२२।३०	२३।५८	०१।२३	०२।५९
२३	०४।५४	०७।०७	०९।२६	११।४४	१४।०२	१६।२१	१८।३९	२०।४२	२२।२६	२३।५४	०१।१९	०२।५५
२४	०४।५०	०७।०३	०९।२२	११।४०	१३।५८	१६।१७	१८।३५	२०।३८	२२।२२	२३।५०	०१।१५	०२।५१
२५	०४।४७	०७।००	०९।१९	११।३७	१३।५५	१६।१४	१८।३२	२०।३५	२२।१९	२३।४७	०१।१२	०२।४८
२६	०४।४३	०६।५६	०९।१५	११।३३	१३।५१	१६।१०	१८।२८	२०।३१	२२।१५	२३।४३	०१।०८	०२।४४
२७	०४।३९	०६।५२	०९।११	११।२९	१३।४७	१६।०६	१८।२४	२०।२७	२२।११	२३।३९	०१।०४	०२।४०
२८	०४।३५	०६।४८	०९।०७	११।२५	१३।४३	१६।०२	१८।२०	२०।२३	२२।०७	२३।३५	०१।००	०२।३६
२९	०४।३१	०६।४४	०९।०३	११।२१	१३।३९	१५।५८	१८।१६	२०।१९	२२।०३	२३।३१	००।५५	०२।३२
३०	०४।२७	०६।४०	०८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५४	१८।१२	२०।१५	२१।५९	२३।२७	००।५२	०२।२८

जुलाई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	०६।३६	०८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८।०८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	००।४९	०२।२४	०४।१९
२	०६।३२	०८।५२	११।०९	१३।२७	१५।४७	१८।०४	२०।०८	२१।५१	२३।२०	००।४५	०२।२०	०४।१५
३	०६।२८	०८।४८	११।०५	१३।२३	१५।४३	१८।००	२०।०४	२१।४७	२३।१६	००।४१	०२।१६	०४।११
४	०६।२४	०८।४४	११।०१	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०।०१	२१।४३	२३।१२	००।३७	०२।१२	०४।०७
५	०६।२०	०८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३।०८	००।३३	०२।०८	०४।०३
६	०६।१६	०८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३।०४	००।२९	०२।०४	०३।५९
७	०६।१२	०८।३२	१०।४९	१३।०७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३।००	००।२५	०२।००	०३।५५
८	०६।०८	०८।२८	१०।४५	१३।०३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	००।२१	०१।५६	०३।५१
९	०६।०४	०८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	००।१७	०१।५२	०३।४७
१०	०६।००	०८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	००।१३	०१।४८	०३।४३
११	०५।५७	०८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	००।१०	१०।४५	०३।४०
१२	०५।५३	०८।१३	१०।३०	१२।४८	१५।०८	१७।२५	१९।३०	२१।१२	२२।४१	००।०६	०१।४१	०३।३६
१३	०५।४९	०८।०९	१०।२६	१२।४४	१५।०४	१७।२१	१९।२६	२१।०८	२२।३७	००।०२	०१।३७	०३।३२
१४	०५।४५	०८।०५	१०।२२	१२।४०	१५।००	१७।१७	१९।२२	२१।०४	२२।३३	२३।५८	०१।३३	०३।२८
१५	०५।४१	०८।०१	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१।००	२२।२९	२३।५४	०१।२९	०३।२४
१६	०५।३७	०७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७।०९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	०१।२५	०३।२०
१७	०५।३३	०७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७।०५	१९।१०	२०।५१	२२।२१	२३।४६	०१।२१	०३।१६
१८	०५।२९	०७।४९	१०।०६	१२।२४	१४।४५	१७।०१	१९।०८	२०।४८	२२।१७	२३।४२	०१।१७	०३।१२
१९	०५।२५	०७।४५	१०।०२	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९।०२	२०।४४	२२।१३	२३।३८	०१।१३	०३।०८
२०	०५।२१	०७।४१	०९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२।०९	२३।३४	०१।०९	०३।०४
२१	०५।१७	०७।३७	०९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२।०५	२३।३०	०१।०५	०३।००
२२	०५।१३	०७।३३	०९।५०	१२।०८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२।०१	२३।२६	०१।०१	०२।५४
२३	०५।१०	०७।३०	०९।४७	१२।०५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	००।५८	०२।५१
२४	०५।०६	०७।२६	०९।४४	१२।०१	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	००।५४	०२।४७
२५	०५।०२	०७।२२	०९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	००।५०	०२।४३
२६	०४।५८	०७।१८	०९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	००।४६	०२।३९
२७	०४।५४	०७।१४	०९।३२	११।४९	१४।०९	१६।२६	१८।३१	२०।१२	२१।४२	२३।०७	००।४२	०२।३५
२८	०४।५०	०७।१०	०९।२८	११।४५	१४।०५	१६।२२	१८।२७	२०।०९	२१।३८	२३।०३	००।३८	०२।३१
२९	०४।४६	०७।०६	०९।२४	११।४१	१४।०१	१६।१८	१८।२३	२०।०५	२१।३४	२२।५९	००।३४	०२।२७
३०	०४।४२	०७।०२	०९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०।०१	२१।३०	२२।५४	००।३०	०२।२३
३१	०४।३९	०६।५९	०९।१७	११।३४	१३।५४	१६।११	१८।१६	१९।५८	२१।२७	२२।५१	००।२७	०२।२०

अगस्त की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
१	०६।५५	०९।२३	११।३१	१३।५०	१६।०८	१८।२१	१९।५५	२१।२३	२२।४८	००।२४	०२।२८	०४।३१
२	०६।५१	०९।०९	११।२७	१३।४६	१६।०४	१८।०७	१९।५१	२१।१९	२२।४४	००।२०	०२।२४	०४।२७
३	०६।४७	०९।०५	११।२३	१३।४२	१६।००	१८।०३	१९।४७	२१।१५	२२।४०	००।१६	०२।२०	०४।२३
४	०६।४३	०९।०१	११।१९	१३।३७	१५।५६	१७।५९	१९।४३	२१।११	२२।३६	००।१२	०२।०६	०४।१९
५	०६।३९	०८।५७	११।१५	१३।३४	१५।५२	१७।५५	१९।३९	२१।०७	२२।३२	००।०८	०२।०२	०४।१५
६	०६।३५	०८।५३	११।११	१३।३०	१५।४८	१७।५१	१९।३५	२१।०३	२२।२८	००।०४	०१।५८	०४।११
७	०६।३१	०८।४९	११।०७	१३।२६	१५।४४	१७।४७	१९।३१	२०।५९	२२।२४	००।००	०१।५४	०४।०७
८	०६।२८	०८।४६	११।०४	१३।२३	१५।४१	१७।४४	१९।२८	२०।५६	२२।२१	२३।५७	०१।५१	०४।०४
९	०६।२४	०८।४२	११।००	१३।१९	१५।३७	१७।४०	१९।२४	२०।५२	२२।१७	२३।५३	०१।४७	०४।००
१०	०६।२०	०८।३८	१०।५६	१३।१५	१५।३३	१७।३६	१९।२०	२०।४८	२२।१३	२३।४९	०१।४३	०३।५६
११	०६।१६	०८।३४	१०।५२	१३।११	१५।२९	१७।३२	१९।१६	२०।४४	२२।०९	२३।४५	०१।३९	०३।५२
१२	०६।१२	०८।३०	१०।४८	१३।०७	१५।२५	१७।२८	१९।१२	२०।४०	२२।०५	२३।४१	०१।३५	०३।४८
१३	०६।०८	०८।२६	१०।४४	१३।०३	१५।२१	१७।२४	१९।०८	२०।३६	२२।०१	२३।३७	०१।३१	०३।४४
१४	०६।०४	०८।२२	१०।४०	१२।५९	१५।१७	१७।२०	१९।०४	२०।३२	२१।५७	२३।३३	०१।२७	०३।४०
१५	०६।००	०८।१८	१०।३६	१२।५५	१५।१३	१७।१६	१९।००	२०।२८	२१।५३	२३।२९	०१।२३	०३।३६
१६	०५।५५	०८।१३	१०।३१	१२।५०	१५।०८	१७।११	१८।५५	२०।२३	२१।४८	२३।२४	०१।१८	०३।३२
१७	०५।५१	०८।०९	१०।२७	१२।४६	१५।०४	१७।०७	१८।५१	२०।१९	२१।४४	२३।२०	०१।१४	०३।२७
१८	०५।४७	०८।०५	१०।२३	१२।४२	१५।००	१७।०३	१८।४७	२०।१५	२१।४०	२३।१६	०१।१०	०३।२३
१९	०५।४३	०८।०१	१०।१९	१२।३८	१४।५६	१६।५९	१८।४३	२०।११	२१।३६	२३।१२	०१।०६	०३।१९
२०	०५।३९	०७।५७	१०।१५	१२।३४	१४।५२	१६।५५	१८।३९	२०।०७	२१।३२	२३।०८	०१।०२	०३।१५
२१	०५।३५	०७।५३	१०।११	१२।३०	१४।४८	१६।५१	१८।३५	२०।०३	२१।२८	२३।०४	००।५८	०३।११
२२	०५।३१	०७।४९	१०।०७	१२।२६	१४।४४	१६।४७	१८।३१	१९।५९	२१।२४	२३।००	००।५४	०३।०७
२३	०५।२७	०७।४५	१०।०३	१२।२२	१४।४०	१६।४३	१८।२७	१९।५५	२१।२०	२२।५६	००।५०	०३।०३
२४	०५।२३	०७।४१	०९।५९	१२।१८	१४।३६	१६।३९	१८।२३	१९।५१	२१।१६	२२।५२	००।४६	०२।५९
२५	०५।१९	०७।३७	०९।५५	१२।१४	१४।३२	१६।३५	१८।१९	१९।४७	२१।१२	२२।४८	००।४२	०२।५५
२६	०५।१६	०७।३४	०९।५२	१२।११	१४।२९	१६।३२	१८।१६	१९।४४	२१।०९	२२।४५	००।३९	०२।५२
२७	०५।१२	०७।३०	०९।४८	१२।०७	१४।२५	१६।२८	१८।१२	१९।४०	२१।०५	२२।४१	००।३५	०२।४८
२८	०५।०८	०७।२६	०९।४४	१२।०३	१४।२१	१६।२४	१८।०८	१९।३६	२१।०१	२२।३७	००।३१	०२।४४
२९	०५।०४	०७।२२	०९।४०	११।५९	१४।१७	१६।२०	१८।०४	१९।३२	२०।५७	२२।३३	००।२७	०२।४०
३०	०५।०१	०७।१९	०९।३७	११।५६	१४।१४	१६।१७	१८।०१	१९।२९	२०।५४	२२।३०	००।२४	०२।३७
३१	०४।५८	०७।१६	०९।३४	११।५३	१४।११	१६।१४	१७।५८	१९।२६	२०।५१	२२।२७	००।२१	०२।३४

सितम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता०	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
१	०७।२२	०९।३०	११।५०	१४।०७	१६।२१	१७।५४	१९।२३	२०।४८	२२।२३	००।२८	०२।३०	०४।५०
२	०७।०८	०९।२६	११।४६	१४।०३	१६।०७	१७।५०	१९।१९	२०।४४	२२।१९	००।२४	०२।२६	०४।४६
३	०७।०४	०९।२२	११।४२	१३।५९	१६।०३	१७।४६	१९।१५	२०।४०	२२।१५	००।२०	०२।२२	०४।४२
४	०७।००	०९।१८	११।३८	१३।५५	१५।५९	१७।४२	१९।११	२०।३६	२२।११	००।०६	०२।१८	०४।३८
५	०६।५६	०९।१४	११।३४	१३।५१	१५।५५	१७।३८	१९।०७	२०।३२	२२।०७	००।०२	०२।१४	०४।३४
६	०६।५२	०९।१०	११।३०	१३।४७	१५।५१	१७।३४	१९।०३	२०।२८	२२।०३	२३।५८	०२।१०	०४।३०
७	०६।४८	०९।०६	११।२६	१३।४३	१५।४७	१७।३०	१८।५९	२०।२४	२१।५९	२३।५४	०२।०६	०४।२६
८	०६।४४	०९।०२	११।२२	१३।३९	१५।४३	१७।२६	१८।५५	२०।२०	२१।५५	२३।५०	०२।०२	०४।२२
९	०६।४०	०८।५८	११।१८	१३।३२	१५।३९	१७।२२	१८।५१	२०।१६	२१।५१	२३।४६	०१।५८	०४।१८
१०	०६।३६	०८।५४	११।१४	१३।३१	१५।३५	१७।१८	१८।४७	२०।१२	२१।४७	२३।४२	०१।५४	०४।१४
११	०६।३२	०८।५०	११।१०	१३।२७	१५।३१	१७।१४	१८।४३	२०।०८	२१।४३	२३।३७	०१।५०	०४।१०
१२	०६।२८	०८।४६	११।०६	१३।२३	१५।२७	१७।१०	१८।३९	२०।०४	२१।३९	२३।३४	०१।४६	०४।०६
१३	०६।२४	०८।४२	११।०२	१३।१९	१५।२३	१७।०६	१८।३५	२०।००	२१।३५	२३।३०	०१।४२	०४।०२
१४	०६।२२	०८।३८	१०।५८	१३।१५	१५।१९	१७।०२	१८।३१	१९।५६	२१।३१	२३।२६	०१।३८	०३।५८
१५	०६।१६	०८।३४	१०।५४	१३।११	१५।१५	१६।५८	१८।२७	१९।५२	२१।२७	२३।२२	०१।३४	०३।५४
१६	०६।११	०८।२९	१०।४९	१३।०६	१५।१०	१६।५३	१८।२२	१९।४७	२१।२२	२३।१७	०१।२९	०३।५०
१७	०६।०७	०८।२५	१०।४५	१३।०२	१५।०६	१६।४९	१८।१८	१९।४३	२१।१८	२३।१३	०१।२५	०३।४६
१८	०६।०३	०८।२१	१०।४१	१२।५८	१५।०२	१६।४५	१८।१४	१९।३९	२१।१४	२३।०९	०१।२१	०३।४२
१९	०६।५९	०८।१७	१०।३७	१२।५४	१४।५८	१६।४२	१८।१०	१९।३५	२१।१०	२३।०५	०१।१७	०३।३७
२०	०५।५५	०८।१३	१०।३३	१२।५०	१४।५४	१६।३७	१८।०४	१९।३१	२१।०६	२३।०१	०१।१३	०३।३३
२१	०५।५१	०८।०९	१०।२९	१२।४६	१४।५०	१६।३३	१८।००	१९।२७	२१।०२	२२।५७	०१।०९	०३।२९
२२	०५।४७	०८।०५	१०।२५	१२।४२	१४।४६	१६।२९	१७।५६	१९।२३	२०।५८	२२।५३	०१।०५	०३।२५
२३	०५।४३	०८।०१	१०।२१	१२।३८	१४।४२	१६।२५	१७।५२	१९।१९	२०।५४	२२।४९	०१।०१	०३।२१
२४	०५।३९	०७।५७	१०।१७	१२।३४	१४।३८	१६।२१	१७।४८	१९।१५	२०।५०	२२।४५	००।५७	०३।१७
२५	०५।३५	०७।५३	१०।१३	१२।३०	१४।३४	१६।१७	१७।४४	१९।११	२०।४६	२२।४२	००।५३	०३।१३
२६	०५।३१	०७।४९	१०।०९	१२।२६	१४।३०	१६।१३	१७।४०	१९।०७	२०।४२	२२।३७	००।४९	०३।०९
२७	०५।२७	०७।४५	१०।०५	१२।२२	१४।२६	१६।०९	१७।३६	१९।०३	२०।३८	२२।३३	००।४५	०३।०५
२८	०५।२३	०७।४२	१०।०१	१२।१८	१४।२२	१६।०५	१७।३२	१८।५९	२०।३४	२२।२९	००।४२	०३।०१
२९	०५।१९	०७।३७	०९।५७	१२।१४	१४।१८	१६।०१	१७।२८	१८।५५	२०।३०	२२।२५	००।३७	०२।५७
३०	०५।१४	०७।३४	०९।५४	१२।११	१४।१५	१५।५८	१७।२५	१८।५२	२०।२७	२२।२२	००।३३	०२।५४

अक्टूबर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	०७।३०	०९।५०	१२।०७	१४।११	१५।५४	१७।२१	१८।४८	२०।२३	२२।२८	००।३०	०२।५०	०५।०८
२	०७।२६	०९।४६	१२।०३	१४।०७	१५।५०	१७।१७	१८।४४	२०।१९	२२।२४	००।२६	०२।४६	०५।०४
३	०७।२२	०९।४२	११।५९	१४।०३	१५।४६	१७।१३	१८।४०	२०।१५	२२।२०	००।२२	०२।४२	०५।००
४	०७।१८	०९।३८	११।५५	१३।५९	१५।४२	१७।०९	१८।३६	२०।११	२२।०६	००।१८	०२।३८	०४।५६
५	०७।१४	०९।३४	११।५१	१३।५५	१५।३८	१७।०५	१८।३२	२०।०७	२२।०२	००।१४	०२।३४	०४।५२
६	०७।१०	०९।३०	११।४७	१३।५१	१५।३४	१७।०१	१८।२८	२०।०३	२१।५८	००।१०	०२।३०	०४।४८
७	०७।०६	०९।२६	११।४३	१३।४७	१५।३०	१६।५७	१८।२४	१९।५९	२१।५४	००।०६	०२।२६	०४।४४
८	०७।०२	०९।२२	११।३९	१३।४३	१५।२६	१६।५३	१८।२०	१९।५५	२१।५०	००।०२	०२।२२	०४।४०
९	०६।५८	०९।१८	११।३५	१३।३९	१५।२२	१६।४९	१८।१६	१९।५१	२१।४६	२३।५८	०२।१८	०४।३६
१०	०६।५३	०९।१३	११।३०	१३।३४	१५।१७	१६।४४	१८।११	१९।४६	२१।४१	२३।५३	०२।१३	०४।३१
११	०६।४९	०९।०९	११।२६	१३।३०	१५।१३	१६।४०	१८।०७	१९।४२	२१।३७	२३।४९	०२।०९	०४।२७
१२	०६।४५	०९।०५	११।२२	१३।२६	१५।०९	१६।३६	१८।०३	१९।३८	२१।३३	२३।४५	०२।०५	०४।२३
१३	०६।४१	०९।०१	११।१८	१३।२२	१५।०५	१६।३२	१७।५९	१९।३४	२१।२९	२३।४१	०२।०१	०४।१९
१४	०६।३८	०८।५८	११।१५	१३।१९	१५।०२	१६।२९	१७।५६	१९।३१	२१।२६	२३।३८	०१।५८	०४।१६
१५	०६।३४	०८।५४	११।११	१३।१५	१४।५८	१६।२५	१७।५२	१९।२७	२१।२२	२३।३४	०१।५४	०४।१२
१६	०६।३०	०८।५०	११।०७	१३।११	१४।५४	१६।२१	१७।४८	१९।२३	२१।१८	२३।३०	०१।५०	०४।०८
१७	०६।२५	०८।४५	११।०२	१३।०६	१४।४९	१६।१६	१७।४३	१९।१८	२१।१३	२३।२५	०१।४५	०४।०३
१८	०६।२१	०८।४१	१०।५८	१३।०२	१४।४५	१६।१२	१७।३९	१९।१४	२१।०९	२३।२१	०१।४१	०३।५९
१९	०६।१७	०८।३७	१०।५४	१२।५८	१४।४१	१६।०८	१७।३५	१९।१०	२१।०५	२३।१७	०१।३७	०३।५५
२०	०६।१३	०८।३३	१०।५०	१२।५४	१४।३७	१६।०४	१७।३१	१९।०६	२१।०१	२३।१३	०१।३३	०३।५१
२१	०६।०९	०८।२९	१०।४६	१२।५०	१४।३३	१६।००	१७।२७	१९।०२	२०।५७	२३।०९	०१।२९	०३।४७
२२	०६।०५	०८।२५	१०।४२	१२।४६	१४।२९	१५।५६	१७।२३	१८।५८	२०।५३	२३।०५	०१।२५	०३।४३
२३	०६।०१	०८।२१	१०।३८	१२।४२	१४।२५	१५।५२	१७।१९	१८।५४	२०।४९	२३।०१	०१।२१	०३।३९
२४	०५।५७	०८।१७	१०।३४	१२।३८	१४।२१	१५।४८	१७।१५	१८।५०	२०।४५	२२।५७	०१।१७	०३।३५
२५	०५।५३	०८।१३	१०।३०	१२।३४	१४।१७	१५।४४	१७।११	१८।४६	२०।४१	२२।५३	०१।१३	०३।३१
२६	०५।५०	०८।१०	१०।२७	१२।३१	१४।१४	१५।४१	१७।०८	१८।४३	२०।३७	२२।५०	०१।१०	०३।२८
२७	०५।४६	०८।०६	१०।२३	१२।२७	१४।१०	१५।३७	१७।०४	१८।३९	२०।३२	२२।४६	०१।०६	०३।२४
२८	०५।४२	०८।०२	१०।१९	१२।२३	१४।०६	१५।३३	१७।००	१८।३५	२०।२९	२२।४२	०१।०२	०३।२०
२९	०५।३८	०७।५८	१०।१५	१२।१९	१४।०२	१५।२९	१६।५६	१८।३१	२०।२५	२२।३८	००।५८	०३।१६
३०	०५।३४	०७।५४	१०।११	१२।१५	१३।५८	१५।२५	१६।५२	१८।२७	२०।२१	२२।३४	००।५४	०३।१२
३१	०५।३०	०७।५०	१०।०७	१२।११	१३।५४	१५।२२	१६।४८	१८।२३	२०।१७	२२।३०	००।५०	०३।०७

नवम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	०७।४५	१०।०३	१२।०७	१३।५०	१५।१९	१६।४३	१८।१९	२०।१४	२२।२६	००।४६	०३।०३	०५।२१
२	०७।४१	०९।५९	१२।०३	१३।४६	१५।१५	१६।३९	१८।१५	२०।१०	२२।२२	००।४२	०२।५९	०५।१७
३	०७।३७	०९।५५	११।५९	१३।४२	१५।११	१६।३५	१८।११	२०।०६	२२।१८	००।३८	०२।५५	०५।१३
४	०७।३३	०९।५१	११।५५	१३।३८	१५।०७	१६।३१	१८।०७	२०।०२	२२।१४	००।३४	०२।५१	०५।०८
५	०७।२९	०९।४७	११।५१	१३।३४	१५।०३	१६।२७	१८।०३	१९।५८	२२।१०	००।३०	०२।४७	०५।०५
६	०७।२५	०९।४३	११।४७	१३।३०	१४।५९	१६।२३	१७।५९	१९।५४	२२।०६	००।२६	०२।४३	०५।०१
७	०७।२१	०९।३९	११।४३	१३।२६	१४।५५	१६।१९	१७।५५	१९।५०	२२।०२	००।२२	०२।३९	०४।५७
८	०७।१८	०९।३६	११।४०	१३।२३	१४।५२	१६।१६	१७।५२	१९।४७	२१।५९	००।१९	०२।३६	०४।५४
९	०७।१४	०९।३२	११।३६	१३।१९	१४।४८	१६।१२	१७।४९	१९।४३	२१।५५	००।१५	०२।३२	०४।५०
१०	०७।१०	०९।२८	११।३२	१३।१५	१४।४४	१६।०८	१७।४४	१९।३९	२१।५१	००।११	०२।२८	०४।४६
११	०७।०६	०९।२४	११।२८	१३।११	१४।४०	१६।०४	१७।४०	१९।३५	२१।४७	००।०७	०२।२४	०४।४२
१२	०७।०२	०९।२०	११।२४	१३।०७	१४।३६	१६।००	१७।३६	१९।३१	२१।४३	००।०३	०२।२०	०४।३८
१३	०६।५८	०९।१७	११।२०	१३।०३	१४।३२	१५।५६	१७।३२	१९।२७	२१।३९	२३।५९	०२।१६	०४।३४
१४	०६।५४	०९।१३	११।१६	१२।५९	१४।२८	१५।५२	१७।२८	१९।२३	२१।३५	२३।५५	०२।१२	०४।३०
१५	०६।५०	०९।०९	११।१२	१२।५५	१४।२४	१५।४८	१७।२४	१९।१९	२१।३१	२३।५१	०२।०८	०४।२६
१६	०६।४७	०९।०६	११।०९	१२।५२	१४।२१	१५।४५	१७।२१	१९।१६	२१।२८	२३।४८	०२।०५	०४।२३
१७	०६।४३	०९।०२	११।०५	१२।४८	१४।१७	१५।४१	१७।१७	१९।१२	२१।२५	२३।४४	०२।०१	०४।१९
१८	०६।३९	०८।५८	११।०१	१२।४४	१४।१३	१५।३७	१७।१३	१९।०८	२१।२१	२३।४१	०१।५७	०४।१५
१९	०६।३५	०८।५४	१०।५७	१२।४०	१४।०९	१५।३३	१७।०९	१९।०४	२१।१७	२३।३७	०१।५३	०४।११
२०	०६।३१	०८।५०	१०।५२	१२।३६	१४।०५	१५।२९	१७।०५	१९।००	२१।१३	२३।३३	०१।४९	०४।०७
२१	०६।२७	०८।४६	१०।४९	१२।३२	१४।०१	१५।२५	१७।०१	१८।५६	२१।०९	२३।२९	०१।४५	०४।०३
२२	०६।२३	०८।४२	१०।४५	१२।२८	१३।५७	१५।२१	१६।५७	१८।५२	२१।०५	२३।२५	०१।४१	०३।५९
२३	०६।१९	०८।३८	१०।४१	१२।२४	१३।५३	१५।१७	१६।५३	१८।४८	२१।०१	२३।२१	०१।३७	०३।५५
२४	०६।१५	०८।३४	१०।३७	१२।२०	१३।४९	१५।१३	१६।४९	१८।४४	२०।५७	२३।१७	०१।३३	०३।५१
२५	०६।११	०८।३०	१०।३३	१२।१६	१३।४५	१५।०९	१६।४५	१८।४०	२०।५३	२३।१३	०१।२९	०३।४७
२६	०६।०७	०८।२६	१०।२९	१२।१२	१३।४१	१५।०५	१६।४१	१८।३६	२०।४९	२३।०९	०१।२५	०३।४३
२७	०६।०३	०८।२२	१०।२५	१२।०८	१३।३७	१५।०१	१६।३७	१८।३२	२०।४५	२३।०५	०१।२१	०३।३९
२८	०५।५९	०८।१८	१०।२१	१२।०४	१३।३३	१४।५७	१६।३३	१८।२८	२०।४१	२३।०१	०१।१७	०३।३५
२९	०५।५५	०८।१४	१०।१७	१२।००	१३।२९	१४।५३	१६।२९	१८।२४	२०।३७	२२।५७	०१।१३	०३।३१
३०	०५।५२	०८।१०	१०।१४	११।५७	१३।२६	१४।५०	१६।२६	१८।२१	२०।३४	२२।५४	०१।१०	०३।२८

दिसम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	०८०५	१००९	११५३	१३२१	१४४६	१६२१	१८२६	२०२९	२२४८	०१०६	०३२३	०५४३
२	०८०१	१००५	११४९	१३१७	१४४२	१६१७	१८२२	२०२५	२२४४	०१०२	०३१९	०५३९
३	०७५७	१००१	११४५	१३१३	१४३८	१६१३	१८१८	२०२१	२२४०	००५८	०३१५	०५३५
४	०७५३	०९५७	११४१	१३०९	१४३४	१६०९	१८१४	२०१७	२२३६	००५४	०३११	०५३१
५	०७४९	०९५३	११३७	१३०५	१४३०	१६०५	१८१०	२०१३	२२३२	००५०	०३०७	०५२७
६	०७४६	०९४९	११३३	१३०१	१४२६	१६०१	१७५६	२००९	२२२८	००४६	०३०३	०५२३
७	०७४३	०९४६	११३०	१२५८	१४२३	१५५८	१७५३	२००६	२२२५	००४३	०३००	०५२०
८	०७३९	०९४३	११२७	१२५५	१४२०	१५५५	१७५०	२००३	२२२२	००४०	०२५७	०५१७
९	०७३५	०९३९	११२३	१२५१	१४१६	१५५१	१७४६	१९५९	२२१८	००३६	०२५३	०५१३
१०	०७३१	०९३५	१११९	१२४७	१४१२	१५४७	१७४२	१९५५	२२१४	००३२	०२४९	०५०९
११	०७२७	०९३१	१११५	१२४३	१४०८	१५४३	१७३८	१९५१	२२१०	००२८	०२४५	०५०५
१२	०७२३	०९२७	११११	१२३९	१४०४	१५३९	१७३४	१९४७	२२०६	००२४	०२४१	०५०१
१३	०७१९	०९२३	११०७	१२३५	१४००	१५३५	१७३०	१९४३	२२०२	००२०	०२३७	०४५७
१४	०७१५	०९१९	११०३	१२३१	१३५६	१५३१	१७२७	१९३९	२१५८	००१६	०२३३	०४५३
१५	०७१०	०९१४	१०५८	१२२६	१३५१	१५२६	१७२१	१९३४	२१५३	००११	०२२८	०४४८
१६	०७०६	०९१०	१०५४	१२२२	१३४७	१५२२	१७१७	१९३०	२१४९	०००७	०२२४	०४४४
१७	०७०२	०९०६	१०५०	१२१८	१३४३	१५१८	१७१३	१९२६	२१४७	०००३	०२२०	०४४०
१८	०६५८	०९०२	१०४६	१२१४	१३३९	१५१४	१७०९	१९२२	२१४१	२३५९	०२१६	०४३६
१९	०६५४	०८५८	१०४२	१२१०	१३३५	१५१०	१७०५	१९१८	२१३७	२३५५	०२१२	०४३२
२०	०६५०	०८५४	१०३८	१२०६	१३३१	१५०६	१७०१	१९१४	२१३३	२३५१	०२०८	०४२८
२१	०६४६	०८५०	१०३४	१२०२	१३२७	१५०२	१६५७	१९१०	२१२९	२३४७	०२०४	०४२४
२२	०६४२	०८४६	१०३०	११५८	१३२३	१४५८	१६५३	१९०६	२१२५	२३४३	०२००	०४२०
२३	०६३८	०८४२	१०२६	११५४	१३१९	१४५४	१६४९	१९०२	२१२१	२३३९	०१५६	०४१६
२४	०६३४	०८३८	१०२३	११५१	१३१६	१४५१	१६४६	१८५९	२११८	२३३६	०१५३	०४१३
२५	०६३१	०८३५	१०१९	११४७	१३१२	१४४७	१६४२	१८५५	२११४	२३३२	०१४९	०४०९
२६	०६२८	०८३२	१०१६	११४४	१३०९	१४४४	१६३९	१८५२	२१११	२३२९	०१४६	०४०६
२७	०६२४	०८२८	१०१२	११४०	१३०५	१४४०	१६३५	१८४८	२१०७	२३२५	०१४२	०४०२
२८	०६२०	०८२४	१००८	११३६	१३०१	१४३६	१६३१	१८४४	२१०३	२३२१	०१३८	०३५८
२९	०६१६	०८२०	१००४	११३२	१२५७	१४३२	१६२७	१८४०	२०५९	२३१७	०१३४	०३५४
३०	०६१३	०८१७	१००१	११२९	१२५४	१४२९	१६२४	१८३७	२०५६	२३१४	०१३१	०३५१
३१	०६०९	०८१३	०९५७	११२५	१२५०	१४२५	१६२०	१८३३	२०५२	२३१०	०१२७	०३४७

जनवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	०८०९	०९५३	११२१	१२४६	१४२२	१६१६	१८२९	२०४९	२३०६	०१२४	०३४३	०६०१
२	०८०५	०९४९	१११७	१२४२	१४१८	१६१२	१८२५	२०४५	२३०२	०१२०	०३३९	०५५७
३	०८०१	०९४५	१११३	१२३८	१४१४	१६०८	१८२१	२०४१	२२५८	०११६	०३३५	०५५३
४	०७५७	०९४१	११०९	१२३४	१४१०	१६०४	१८१७	२०३७	२२५४	०११२	०३३१	०५४९
५	०७५३	०९३७	११०५	१२३०	१४०६	१६००	१८१३	२०३३	२२५०	०१०८	०३२७	०५४५
६	०७४९	०९३३	११०१	१२२६	१४०२	१५५६	१८०९	२०२९	२२४६	०१०४	०३२३	०५४१
७	०७४५	०९२९	१०५७	१२२२	१३५८	१५५२	१८०५	२०२५	२२४२	०१००	०३१९	०५३७
८	०७४२	०९२६	१०५४	१२१९	१३५५	१५४९	१८०२	२०२२	२२३९	००५७	०३१६	०५३४
९	०७३७	०९२२	१०५०	१२१५	१३५१	१५४५	१७५८	२०१८	२२३५	००५३	०३१२	०५३०
१०	०७३४	०९१८	१०४६	१२११	१३४७	१५४१	१७५४	२०१४	२२३१	००४९	०३०८	०५२६
११	०७३१	०९१५	१०४३	१२०८	१३४४	१५३८	१७५१	२०११	२२२८	००४६	०३०५	०५२३
१२	०७२७	०९११	१०३९	१२०४	१३४०	१५३४	१७४७	२००७	२२२४	००४२	०३०१	०५१९
१३	०७२४	०९०८	१०३६	१२०१	१३३७	१५३१	१७४४	२००४	२२२१	००३९	०२५८	०५१६
१४	०७२०	०९०४	१०३२	११५७	१३३३	१५२७	१७४०	२०००	२२१७	००३५	०२५४	०५१२
१५	०७१७	०९०१	१०२९	११५४	१३३०	१५२४	१७३७	१९५७	२२१४	००३२	०२५१	०५०९
१६	०७१३	०८५७	१०२५	११५०	१३२६	१५२०	१७३३	१९५३	२२१०	००२८	०२४७	०५०५
१७	०७०९	०८५३	१०२१	११४६	१३२२	१५१६	१७२९	१९४९	२२०६	००२४	०२४२	०५०१
१८	०७०४	०८४८	१०१६	११४२	१३१७	१५११	१७२४	१९४४	२२०१	००१९	०२३८	०४५६
१९	०७००	०८४४	१०१२	११३७	१३१३	१५०७	१७२०	१९४०	२१५७	००१५	०२३४	०४५२
२०	०६५६	०८४०	१००८	११३३	१३०९	१५०३	१७१६	१९३६	२१५३	००११	०२३०	०४४८
२१	०६५२	०८३६	१००४	११२९	१३०५	१४५९	१७१२	१९३२	२१४९	०००७	०२२६	०४४४
२२	०६४८	०८३२	१०००	११२५	१३०१	१४५५	१७०८	१९२८	२१४४	०००३	०२२२	०४४०
२३	०६४३	०८२७	०९५५	११२०	१२५६	१४५०	१७०३	१९२३	२१४०	२३५८	०२१७	०४३५
२४	०६३९	०८२३	०९५१	१११६	१२५१	१४४६	१६५९	१९१९	२१३६	२३५४	०२१३	०४३१
२५	०६३५	०८१९	०९४७	१११२	१२४८	१४४२	१६५५	१९१५	२१३२	२३५०	०२०९	०४२७
२६	०६३१	०८१५	०९४३	११०८	१२४४	१४३८	१६५१	१९११	२१२८	२३४६	०२०५	०४२३
२७	०६२७	०८११	०९३९	११०४	१२४०	१४३४	१६४७	१९०७	२१२४	२३४२	०२०१	०४१९
२८	०६२३	०८०७	०९३५	११००	१२३६	१४३०	१६४३	१९०३	२१२०	२३३८	०१५७	०४१५
२९	०६१९	०८०३	०९३१	१०५६	१२३२	१७२६	१६३९	१८५९	२११६	२३३४	०१५३	०४११
३०	०६१५	०७५९	०९२७	१०५२	१२२८	१४२२	१६३५	१८५५	२११२	२३३०	०१४९	०४०७
३१	०६११	०७५५	०९२३	१०४८	१२२४	१४१८	१६३१	१८५१	२१०७	२३२६	०१४५	०४०३

फरवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
१	०७५०	०९१९	१०४३	१२१९	१४१४	१६२६	१८४६	२१०४	२३२१	०१४१	०३५८	०६०२
२	०७४६	०९१५	१०३९	१२१५	१४१०	१६२२	१८४२	२१००	२३१७	०१३७	०३५४	०५५८
३	०७४२	०९१२	१०३६	१२१२	१४०७	१६१९	१८३९	२०५७	२३१४	०१३४	०३५१	०५५५
४	०७३९	०९०८	१०३२	१२०८	१४०३	१६१५	१८३५	२०५३	२३१०	०१३०	०३४७	०५५१
५	०७३६	०९०५	१०२९	१२०५	१४००	१६१२	१८३२	२०५०	२३०७	०१२७	०३४४	०५४८
६	०७३२	०९०१	१०२५	१२०१	१३५६	१६०८	१८२८	२०४६	२३०३	०१२३	०३४१	०५४४
७	०७२८	०८५७	१०२१	११५७	१३५२	१६०४	१८२४	२०४२	२२५९	०११९	०३३७	०५४०
८	०७२४	०८५३	१०१७	११५३	१३४८	१६००	१८२०	२०३८	२२५५	०११५	०३३३	०५३६
९	०७२०	०८४९	१०१३	११४९	१३४४	१५५६	१८१६	२०३४	२२५१	०१११	०३२९	०५३२
१०	०७१५	०८४४	१००८	११४४	१३३९	१५५१	१८११	२२२९	२२४६	०१०६	०९२४	०५२७
११	०७११	०८४०	१००४	११४०	१३३५	१५४७	१८०७	२०२५	२२४२	०१०२	०३२०	०५२३
१२	०७०७	०८३६	१०००	११३६	१३३१	१५४३	१८०३	२०२१	२२३८	००५८	०३१६	०५१९
१३	०७०३	०८३२	०९५६	११३२	१३२७	१५३९	१७५९	२०१७	२२३४	००५४	०३१२	०५१५
१४	०६५९	०८२८	०९५२	११२८	१३२३	१५३५	१७५५	२०१३	२२३०	००५०	०३०८	०५११
१५	०६५५	०८२४	०९४८	११२४	१३१९	१५३१	१७५१	२००९	२२२६	००४६	०३०४	०५०७
१६	०६५१	०८२०	०९४४	११२०	१३१५	१५२७	१७४७	२००५	२२२२	००४२	०३००	०५०३
१७	०६४७	०८१६	०९४०	१११६	१३११	१५२३	१७४३	२००१	२२१८	००३८	०२५६	०४५९
१८	०६४३	०८१२	०९३६	१११२	१३०७	१५१९	१७३९	१९५७	२२१४	००३४	०२५२	०४५५
१९	०६३९	०८०८	०९३२	११०८	१३०३	१५१५	१७३५	१९५३	२२१०	००३०	०२४८	०४५१
२०	०६३४	०८०३	०९२७	११०३	१२५८	१५१०	१७३०	१९४८	२२०५	००२५	०२४३	०४४६
२१	०६३०	०७५९	०९२३	१०५९	१२५४	१५०६	१७२६	१९४४	२२०१	००२१	०२३९	०४४२
२२	०६२६	०७५५	०९१९	१०५५	१२५०	१५०२	१७२२	१९४०	२१५७	००१७	०२३५	०४३८
२३	०६२२	०७५१	०९१५	१०५१	१२४६	१४५८	१७१८	१९३६	२१५३	००१३	०२३१	०४३४
२४	०६१८	०७४७	०९११	१०४७	१२४२	१४५४	१७१४	१९३२	२१४९	०००९	०२२७	०४३०
२५	०६१४	०७४३	०९०७	१०४३	१२३८	१४५०	१७१०	१९२८	२१४५	०००५	०२२३	०४२६
२६	०६११	०७४०	०९०४	१०४०	१२३५	१४४७	१७०७	१९२५	२१४२	०००२	०२२०	०४२३
२७	०६०७	०७३६	०९००	१०३६	१२३१	१४४३	१७०३	१९२१	२१३८	२३५८	०२१६	०४१९
२८	०६०३	०७३२	०८५६	१०३२	१२२७	१४३९	१६५९	१९१७	२१३४	२३५४	०२१२	०४१५

यह लग्न का समाप्ति काल है। प्रत्येक मास में दिए हुए स्टैण्डर्ड टाइम को ऊपर लिखी राशि का समाप्तिकाल ही समझें।

मार्च की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
१	०७२८	०८५३	१०२८	१२२३	१४३६	१६५५	१९१३	२११३०	२३५०	०२०८	०४११	०५५५
२	०७२४	०८४९	१०२४	१२१९	१४३२	१६५१	१९०९	२१२६	२३४६	०२०४	०४०७	०५५२
३	०७२०	०८४३	१०२०	१२१५	१४२८	१६४७	१९०५	२१२२	२३४२	०२००	०४०३	०५४७
४	०७१६	०८४१	१०१६	१२११	१४२४	१६४३	१९०१	२११८	२३३८	०१५६	०३५९	०५४३
५	०७१३	०८३८	१०१३	१२०८	१४२१	१६४०	१८५८	२११५	२३३५	०१५३	०३५६	०५४०
६	०७०९	०८३४	१००९	१२०४	१४१७	१६३६	१८५४	२१११	२३३१	०१४९	०३५२	०५३६
७	०७०५	०८३०	१००५	१२००	१४१३	१६३२	१८५०	२१०७	२३२७	०१४५	०३४८	०५३२
८	०७०१	०८२६	१००१	११५६	१४०९	१६२८	१८४६	२१०३	२३२३	०१४१	०३४४	०५२८
९	०६५७	०८२२	०९५७	११५२	१४०५	१६२४	१८४२	२०५९	२३१९	०१३७	०३४०	०५२४
१०	०६५२	०८१७	०९५२	११४७	१४००	१६१९	१८३७	२०५४	२३१४	०१३२	०३३५	०५१९
११	०६४८	०८१३	०९४८	११४३	१३५६	१६१५	१८३३	२०५०	२३१०	०१२८	०३३१	०५१५
१२	०६४४	०८०९	०९४४	११३९	१३५२	१६११	१८२९	२०४६	२३०६	०१२४	०३२७	०५११
१३	०६४०	०८०५	०९४०	११३५	१३४८	१६०७	१८२५	२०४२	२३०२	०१२०	०३२३	०५०७
१४	०६३६	०८०१	०९३६	११३१	१३४४	१६०३	१८२१	२०३८	२२५८	०११६	०३१९	०५०३
१५	०६३२	०७५७	०९३२	११२७	१३४०	१५५९	१८१७	२०३४	२२५४	०११२	०३१५	०४५९
१६	०६२८	०७५३	०९२८	११२३	१३३६	१५५५	१८१३	२०३०	२२५०	०१०८	०३११	०४५५
१७	०६२४	०७४९	०९२४	१११९	१३३२	१५५१	१८०९	२०२६	२२४६	०१०४	०३०७	०४५१
१८	०६२०	०७४५	०९२०	१११५	१३२८	१५४७	१८०५	२०२२	२२४२	०१००	०३०३	०४४७
१९	०६१६	०७४१	०९१६	११११	१३२४	१५४३	१८०१	२०१८	२२३८	००५६	०२५९	०४४३
२०	०६१२	०७३७	०९१२	११०७	१३२०	१५३९	१७५७	२०१६	२२३४	००५२	०२५५	०४३९
२१	०६०८	०७३३	०९०८	११०३	१३१६	१५३५	१७५३	२०१०	२२३०	००४८	०२५१	०४३५
२२	०६०४	०७२९	०९०४	१०५९	१३१२	१५३१	१७४९	२००६	२२२६	००४४	०२४७	०४३१
२३	०६००	०७२५	०९००	१०५५	१३०८	१५२७	१७४३	२००२	२२२२	००४०	०२४३	०४२७
२४	०५५५	०७२१	०८५६	१०५१	१३०४	१५२३	१७४१	१९५८	२२१८	००३६	०२३९	०४२३
२५	०५५२	०७१७	०८५२	१०४७	१३००	१५१९	१७३७	१९५४	२२१४	००३२	०२३५	०४१९
२६	०५४८	०७१३	०८४८	१०४३	१२५६	१५१५	१७३३	१९५०	२२१०	००२८	०२३१	०४१५
२७	०५४४	०७०९	०८४४	१०३९	१२५२	१५११	१७२९	१९४६	२२०६	००२४	०२२७	०४११
२८	०५४०	०७०५	०८४०	१०३५	१२४८	१५०७	१७२५	१९४२	२२०२	००२०	०२२३	०४०७
२९	०५३६	०७०१	०८३६	१०३१	१२४४	१५०३	१७२१	१९३८	२१५८	००१६	०२१९	०४०३
३०	०५३२	०६५७	०८३२	१०२७	१२४०	१४५९	१७१७	१९३४	२१५४	००१२	०२१५	०३५९
३१	०५२८	०६५३	०८२८	१०२३	१२३६	१४५५	१७१३	१९३०	२१५०	०००८	०२११	०३५५

अथ जन्म-समयादि विचार

सर्वशास्त्र- शिरोमणि ज्योतिःशास्त्र की महत्ता को सारा संसार जानता है, क्योंकि वह प्रत्यक्ष फलदायक है, अतः प्राचीन काल से लेकर आज तक इसका प्रभाव चलता आ रहा है। इसके बिना और कोई शास्त्र नहीं, जो कि तीनों काल (भूत,भविष्य,वर्तमान) की वर्ता को बतला सके और वेद के छः अंगों में से यह नेत्र स्थानीय है। जिस प्रकार सम्पूर्ण अंगों के सुन्दर तथा पुष्ट होने पर भी नेत्र विहीन मनुष्य का जन्म व्यर्थ होता है, इसी प्रकार सम्पूर्ण शास्त्रों के पढ़ लेने पर भी ज्योतिःशास्त्र विहीन भूत, भविष्य को बतलाने में मूक सा रह जाता है। परन्तु खेद इस बात का है कि ऐसा होने पर भी आजकल फलादेश के पूरा न मिलने से लोगों की श्रद्धा बहुत घट गई है, इसमें कारण तो बहुत है, परन्तु दो चार यहां बतलाये जाते है- जब बालक का जन्म होता है उस समय गांव वालों के पास कोई घड़ी आदि का सुप्रबन्ध न होने से वे लोग समय को निश्चित रूप से नहीं बता सकते, यदि किसी ने सब प्रकार से अपना प्रबंध करके समय को निश्चित रूप से नोट किया भी हो तो वह घर में आने वाले पुरोहित या किसी ज्योतिःशास्त्र के अनभिज्ञ पंडित से कुण्डली बनवाकर रख लेते है और पंडितजी रुपये के लालच में फंसकर मनमाना लग्न बनाकर यजमान को दे देते है, जिसका परिणाम यह होता है कि भविष्य में उसका फल ठीक नहीं मिलता, परंतु कलंक का टीका ज्योतिःशास्त्र पंर मढ़ा जाता है। क्योंकि लग्न के ठीक होने पर ही फलादेश ठीक मिल सकता है, वह फलादेश इष्ट पर निर्भर है, और वह इष्ट नोट किये हुए समय पर निर्भर है, अतः समय के नोट करने में सावधानी रखनी चाहिए और वह लग्न ठीक है कि नहीं, इसके निश्चय के लिए निम्नलिखित योगों पर विचार कर लेना चाहिए :-

तत्रादौ पितृपरोक्ष ज्ञान- बालक के जन्म के समय पिता घर में था कि नहीं? इसका विचार इस प्रकार से करना चाहिए कि जन्मकुण्डली में लग्न को यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो तो बालक के जन्म के समय उसका पिता घर में नहीं था, ऐसा कहना। इसमें इतना विशेष है कि यदि सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थानों में चरराशि का होकर पड़ा हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था, इन्हीं स्थानों में सूर्य स्थिर राशि का हो और चन्द्रमा लग्न को न देखें तो पिता अपने देश में ही था, परन्तु घर में नहीं था। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव राशि में होने पर मार्ग में कहें, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसा कहना। यदि चन्द्रमा देखता हो तो पिता घर में ही था ऐसा जानना चाहिए।

जन्म समय शनि लग्न में हो अथवा सातवें स्थान पड़ा हो अथवा इसी प्रकार बुध और शुक्र में से एक तो चन्द्रमा से द्वादश स्थान में और द्वितीय स्थान में पड़ा हो तो भी पिता के परोक्ष में बालक का जन्म जानना, परन्तु यहाँ चन्द्रमा का बुध शुक्र के बीच में होना अंशों के योग से भी ज्ञान लेना, जैसे बुध के स्पष्ट पांच अंश हों चन्द्रमा के दश अंश हों शुक्र के पन्द्रह अंश हों और तीनों एक ही राशि में बैठे हों तो भी पूर्वोक्त योग जानना चाहिए।

चिन्ह ज्ञान :- जिसके जन्म समय १।५।६।९ इन स्थानों में सूर्य हो उसकी भुजा में कोई चिन्ह होगा, यदि लग्न में सूर्य तथा शनि हो, दूसरे मंगल हो और केन्द्र में चन्द्रमा हो तो उस बालक की छः अंगुलियाँ होती है। चिन्ह विचार करते समय इतना पहले विचार कर लेना कि योगकर्ता ग्रह कौन है? उसमें यदि सूर्य हो तः शिर में चन्द्रमा के होने से मुख में, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि में, शुक्र पीठ या जांघ में, शनि राहु तथा केतु इनके योग से पेट, होठ या दाँतों पर चिन्ह जानना चाहिए। **विशेष विचार-** सातवें घर में गुरु या लग्न में राहु के साथ गुरु हो, आठवें घर पाप ग्रह हों या लग्न में शुक्र और आठवें पाप ग्रह के होने से बाँई भुजा पर चिन्ह होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु होवे तो माथे या बाएँ कान में चिन्ह होवे। लग्न से ३।६।११ इन स्थानों में मंगल या बारहवें घर में मंगल शुक्र एक साथ हों तो बाएँ बगल की और तिल का चिन्ह होवे। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थान में शनि हो, इसको शुक्र देखे तो घुदा (मलद्वार) या लिङ्ग के समीप तिल का चिन्ह होगा। लग्न से ५।६ स्थान में शनि हो इसको ८वें बुध, गुरु लब्ध में या चौथे शनि होने से पेट पर चिन्ह होता है। दूसरे घर पर शुक्र या तीसरे मंगल शनि हो, लग्न में आठवें सूर्य हों तो कमर में चिन्ह होगा। चौथे घर पर शुक्र राहु हो लग्न में मंगल या शनि हो तो पादमुल या बाएँ पैर पर चिन्ह होगा। बारहवें बृहस्पति दूसरे चन्द्रमा ३।६।११वें स्थान में बुध के होने से गुदा के समीप गोलाकार चिन्ह या व्रणादि होते हैं। छठे घर का स्वामी पाप ग्रह के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में व्रणादि चिन्ह होते हैं। लग्न में मंगल, सातवें बृहस्पति या शुक्र हो तो उसके शिर में चोट या व्रणादि के चिन्ह हों। लग्न में मंगल, शुक्र चन्द्रमा के साथ होने से दूसरे या छठे वर्ष शिर में चिन्ह होता है। मंगल से व्रणादि, चन्द्र शुक्र से तिल जानना।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान - यहाँ पर समभूमि से जो ऊँचा स्थान हो उसकी अंतरिक्ष संज्ञा जाननी। जिसके जन्म समय मिथुन, कन्या, धनु और मीन ये लग्न हों उसका जन्म अंतरिक्ष में जानना, शेष लग्न हों तो समभूमि में जानना।

बालक का रोदन ज्ञान- जन्म समय यदि मेष, मिथुन, सिंह और धनुः लग्न हों, तो बालक ने जन्म समय के बाद जल्दी ही रुदन किया था ऐसा कहना। कन्या, तुला और कुम्भ ये लग्न हों तो थोड़ा शब्द किया हो, शेष लग्नों में बालक ने देरी से शब्द किया था, ऐसा जानना। परन्तु इसमें इतना विशेष है कि लग्न और चन्द्रमा में जिसकी राशि बलवान् हो उससे फल कहना।

उपसूतिका का ज्ञान- लग्न अथवा लग्नेश के साथ और इसके दूसरे बारहवें स्थान में जितने ग्रह हों, उतनी उपसूतिका कहना।

दूसरा प्रकार- लग्न और चन्द्रमा के बीच जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका जानना। लग्न से सप्तम स्थान पर्यन्त अदृश्यार्थ और सप्तम से लग्न पर्यन्त दृश्यार्थ होता है, लग्न से लेकर यदि ग्रह अदृश्यार्थ में हो तो उपसूतिका घर के अन्दर और दृश्यार्थ में हो तो उपसूतिका बाहर जानना। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति अवस्था आदि का विचार उन ग्रहों से ही कहना, परन्तु उन ग्रहों में जितने ग्रह उच्च के तथा वक्री हों उनकी संख्या को तीन से गुणा, अपने नवांश, अपनी राशि अथवा अपने द्रेष्काण में स्थित की संख्या को दूगुना और नीच राशि में स्थित और अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके सूतिका के पास उपसूतिकाएँ कहनीं चाहियें।

शिर: पादजात ज्ञान- शीर्षोदय राशि ३।५।६।७।८।११ जन्म के समय इन राशियों का नवांश लग्न में हो तो शिर से, पृष्ठोदय राशि १।२।४।९।१० इन राशियों का नवांश जन्म समय हो तो पैरों से और मीन का नवांश हो तो हाथ से जन्म जानना।

सूतिकागृह द्वार ज्ञान- केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा में सूतिका का गृह का द्वार जानना, यदि केन्द्र में कई ग्रह पड़े हो तो उनमें जो अधिक बली हो उसकी दिशा कहनी। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो लग्न की दिशा में कहना।

पुरुष के शरीर में सूर्यादि-ग्रहों का अधिकार- पुरुष के शिर और मुख प्रदेश में सूर्य का अधिकार है, वक्ष:स्थल और गले में चन्द्रमा का अधिकार है, पृष्ठ स्थल और उदर में मंगल का अधिकार है। हस्त और पादों में बुध का अधिकार है। कटि प्रदेश और जघन स्थान में गुरु का अधिकार है। गुप्तेन्द्रिय और वृष्णों में शुक्र का अधिकार, जानु और उरु प्रदेश में शनि का अधिकार है। जन्म समय, प्रश्न समय और गोचर में जब-जब सूर्यादि ग्रह अनिष्ट-स्थान में जाते हैं तब पुरुषों के उपरोक्त अंगों को पीड़ित करते हैं।

मेषादि-राशियों का अंग-विभाग- कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, उरु (दोनों जंघाओं) में धनुः राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं। जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में उरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपर्युक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

अथ प्रसूति लग्न-विचार

मेष- सूतिका गृह पुराना, द्वार पूर्व में, माता का शिर पूर्व में, वस्त्र लाल रंग के। प्रसव से पहले मीठा भोजन किया हो, प्रसव में कष्ट अधिक, भूमि में जन्म, प्रसव बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३। बालक के मुख का रंग कुछ श्यामता पर हो, नेत्र भूरे, प्रकृति वात- श्लेष्म कद छोटा, शरीर दृढ़। वाणी चंचल। कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८। **उपाय-** गोदान, तुला दान, मृत्युंजय जप इत्यादि। उपरांत आयु १०० वर्ष।

वृष- माता का शिर दक्षिण में, सूतिका घर नया, द्वार दक्षिण में, माता के सफेद वस्त्र, माता ने शुष्क शाकादि खाया हो, अधोमुख होकर पाद से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्तपित्त। कष्टवर्ष १।२।८।३३।४४।६१। **उपाय-** अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप। उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मिथुन- माता का शिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के वस्त्र पीले रंग के पुराने, प्रसव से पहले भोजन नमकीन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिन्ह हो, जन्म अंतरिक्ष में (छत पर) प्रसव शिर में, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम उतरे, बालक के नेत्र रोगयुक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, अग्निमन्द, बुद्धि विलक्षण, माता को पहले कुछ ज्वर आदि भी हुआ हो। कष्टवर्ष ४।१०।१४।३८।५८। **उपाय-** शिवार्चन, मृत्युंजय जप, होम। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क- माता का शिर उत्तर में, मकान नया, द्वार उत्तर में, वस्त्र पुराने सफेद या लाल, पिता क्लेश में, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर शीतल भोजन किया हो, भूमि में जन्म, पाद से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिन्ह, बालक का शिर मोटा, आँखें चंचल, प्रकृति वात श्लेष्म, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल ५।२५।४०।४८।६२ वर्षों में कष्ट हो। **उपाय-** छाया पात्र, तुलादान, मृत- संजीवनी-मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह- माता का शिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र विचित्र, भोजन के साथ शाक और खट्टा खाया हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिन्ह, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ पित्त, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८। **उपाय-** सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न- दान यदि कष्टकारक वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष आयु हो।

कन्या- माता का शिर उत्तर में, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर हो, माता के वस्त्र कुछ जीर्ण लाल रंग के, मिष्ठान भोजन किया, छत पर या ऊँची जगह जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले और जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५। उपाय- मुद्गान्न दान, गोदान, मृत्युजंय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला- माता का शिर पश्चिम में, मकान कुछ नूतन, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के वस्त्र साधारण श्वेत, प्रसव कष्ट अधिक, पिता क्लेश में, माता ने कुछ खाकर ठण्डा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई झगड़ा हुआ हो, भूमि में जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहाँ एक कन्या भी हो दीपक हाथ में उठाया गया, बालक का रंग जर्दी पर, बदन में फोड़े, शरीर दुबला, ८।१५।३१।३५।६२।६४। इन वर्षों में कष्ट हो। गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन और होम से शान्ति होगी, यदि इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ८५ वर्ष आयु भोगे।

वृश्चिक- माता का शिर दक्षिण या उत्तर में, मकान जीर्ण, द्वार उत्तर में, वस्त्र लाल या दग्ध, कष्ट अधिक, साधारण भोजन कुछ क्रोधयुक्त, भूमि पर जन्म, रोदन की आधी आवाज, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश में, बालक के केश लम्बे और काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग

श्याम, प्रकृति रक्त पित्त, कष्टकारक वर्ष ११।२८।३८।५२।६२। **उपाय-** तुलादान, मृत्युंजय जप और मिष्ठान भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु:- माता का शिर पूर्व में, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान तथा माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, पक्वान्न भोजन कर जल पिया हो। जन्म ऊँचे स्थान या छत पर, रोदन स्वर अतिदीर्घ, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, शिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह २१।०१८।३१।३४।४२ वें वर्षो में महाकष्ट भोग कर बने तो ८१ वर्ष जिये। उपायः कष्टकारक वर्षारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप और ब्राह्मण-भोजन कराने से कल्याण हो।

मकर- माता का शिर दक्षिण में, मकान पुराना, द्वार उत्तर या दक्षिण में, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले, पुराने, शाकादि के साथ भोजन करके ठण्डा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर के बाद बालक अर्द्ध स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७। **उपाय-** रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, माषान्न दान, छायापात्र, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ- माता का शिर पश्चिम में, मकान का बहुत सा भाग जीर्ण हो, सूतिका घर दक्षिण पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले या मैले पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, साधारण कसैला और चटपटा भोजन किया हो, पिता घर में न हो, भूमि पर जन्म होने के चिर पीछे बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे, मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट २।२८।३३।४८।६४। **उपाय-** तुलादान, महिषीदान, मृत्युंजय जप। उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन- माता का शिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसृति गृह उत्तर भाग में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मलिन या बसन्ती, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान में, बालक जन्म के उपरान्त देर से रोया, माता ने ठण्डा जल पिया, उपसूतिका पहले २ पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी हुई, आंखें भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बलगमी, कष्टकारक वर्ष १।८।१३।३६।४८। इनसे बच जाये तो ८३ वर्ष की आयु भोगे। **उपाय-** मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजप-जप कराने से कल्याण हो।

सूचना- जिस लग्न के लक्षण अधिक मिले, वही लग्न ठीक मानना चाहिए। ऊपर लिखे लक्षण साधारण लग्न के आधार पर लिखे गये है अत: सम्भव है कि किसी-किसी स्थान पर इनसे भी लग्न का निश्चय न हो सके। क्योंकि बलाबल विचार से ही लग्न का पूर्ण निश्चय हो सकता है। उसके लिए कुण्डली पर से विशेष प्रसूति लग्न का विचार पहले लिखा जा चुका है।

बालारिष्ट के योग- जन्म लग्न से ६।८।१२ वें स्थान में स्थित चन्द्रमा को यदि क्रूर ग्रह देखते हों तो वह बालक अल्पायु जानना। यदि पूर्वोक्त चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो बालक की आयु ८ वर्ष की जानना। शनि अथवा शुभ ग्रह ६।८।१२ इन स्थानों में हों या वक्री तथा क्रूर ग्रहों से देखे भी जाते हों, लग्न में कोई ग्रह शुभ नहीं हो तो बालक की आयु एक मास जानना। जिसके लग्न में पांचवें स्थान में सूर्य मंगल और शनि यह तीनों पड़ें हों, उस बालक की माता सहित मृत्यु जाननी, तथा भाई को भी हानि हो। जिसके दशम स्थान में शनि, छठे चन्द्रमा और सातवें स्थान में मंगल हो उस बालक की माता सहित मृत्यु जानना। जिसके लग्न में शनि हो, चन्द्रमा आठवें हों बृहस्पति तीसरे हों उस बालक की शीघ्र ही मृत्यु जानना। जन्म लग्न से बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह शुभ फल करने वाला नहीं होता, परन्तु सूर्य, चन्द्रमा,शुक्र और राहु ये विशेष करके कष्टकारक जानने तथा इनकी दृष्टि भी शुभ नहीं है। जिसके जन्म लग्न बारहवें तथा छठे आठवें दूसरे ग्रह पड़े हों तथा लग्न क्रूर ग्रहों के बीच में पड़ा हो उस बालक की शीघ्र मृत्यु जाननी।

अरिष्ट भंग योग- बुध, बृहस्पति, शुक्र इनमे से एक भी यदि केन्द्र (१।४।७।१०) में हो। बलवान होकर यदि बृहस्पति लग्न में हो। बली होकर लग्न का स्वामी यदि केन्द्र में हो। शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तथा लग्न शुभ ग्रहों से देखा जाता हो, इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और पूर्ववत् लग्न शुभ ग्रहों से दृष्ट हो। इन पाँचों योगों में से एक भी योग पड़ जाये तो ऊपर कहे हुए अरिष्टों को भंग करने वाला योग जानना।

माता-पिता को अरिष्ट योग- हर एक बालक के लिए सूर्य से पिता का विचार और चन्द्रमा से माता का विचार करना चाहिए। अतएव जिस बालक की जन्मकुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पापी ग्रहों के बीच पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा के साथ २।१२ स्थान में और ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जानना।

प्रसवदोष अरिष्ट का फल- चैत्र में कुतिया, वैशाख में ऊँटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, श्रावण में गधी व घोड़ी, भाद्रपद में गौ, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हों तो पिता या गर्भवती की ६ मास में मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। श्रावण में दिन को घोड़ी और माघ में बुधवार को भैंस प्रसूत हो तो घर धनी को महाभय अरिष्ट होवे। शान्त्यर्थ प्रसूता गौ आदि का शीघ्र दान करें, घर में हवन शान्तिपाठ, पुण्याहवाचन, श्वेतसर्षपहवन कर व्याहृति मन्त्रों से आहूति दें, जिससे शान्ति हो।

त्रिखल-जन्म-फल- तीन पुत्रों के बाद कन्या हो, या तीन कन्याओं के पश्चात पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है, इससे माता-पिता को अरिष्ट, महाभय धनहानि आदि होती है, शान्त्यर्थ त्रिखल शान्ति करें।

दन्तोत्पत्ति फल- बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता-पिता को महा अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्में तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में

देखते हों तो वह बालक अल्पायु जानना। यदि पूर्वोक्त [illegible] तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में

दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकलें तो मातुल पक्ष को भय हो। १ मास में दाँत निकलें तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनि नष्ट चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७ वें में पितृ सुख, ८ वें में पुष्टि, ९ वें में धनी, १० वें में सुख, ११ वें सुख, १२ वें में धनी।

एकनक्षत्र जातक फल- पिता पुत्र, माता पुत्र या कन्या, दो भ्राता इनका एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों में से एक की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। स्वर्ण दान, शान्ति हवन आदि करने से अरिष्ट निवारण होता है।

गण्डमूल के नक्षत्र					
अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

ये ६ नक्षत्र गण्ड मूल कहलाते है, इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक, माता-पिता, कुल या अपने शरीर को नष्ट करता है। स्वयं का शरीर नष्ट न हो तो धन वैभव ऐश्वर्य हाथी, घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का २७ दिन तक पिता मुख न देखे। प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में गौ, स्वर्णदान आदि शांति कर पश्चात् शुभ बेला में बालक का मुख देखे।

मूलनिवासचक्र

जन्म मासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चै. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ.भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२। ५। ८। ११	३। ६। ९। १२	१। ४। ७। १०
मूल निवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

अथ मूलाश्लेषा-पादफल

मूल पादफल		अश्लेषा पादफल		समय फल	
चरण	फल	चरण	फल	समय	फल
१	पितृ-नाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृ-नाश	२	धन-नाश	सन्ध्या में	स्वशरीर भय
३	धन-नाश	३	मातृ-नाश	रात्रि में	माता को भय
४	शांति से शुभ	४	पितृ-नाश		

मूलजनने-वृक्षविभागः

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूलनाशः	वंश-नाशः	मातृ-क्लेशः	मातुलनाशः	मैत्री-पदम्	मंत्री-पदम्	विपुल-लाभः	अल्पजीवी	फलम्

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशुनाश	धन नाश	धनलाभ	कुटिला	धनलाभ	दयावः	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्य	फलम्

अथ अश्लेषाचक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थानं
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्यः
पुत्रादि	पितृना.	मातृना.	स्त्रीलाभ	गुरुभक्त	बली	आत्मह.	भ्रमः	तपस्वी	धनहानि	फलम्

अथ अश्लेषापुरुषवृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृहानिः	पितृहानिः	अल्पायुः

अथ अभुक्तमूलविचार- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें।

अश्विनी पादफल	मघा पादफल	ज्येष्ठा पादफल	रेवती पादफल
१ पिता को भय	१ माता को नेष्ट	१ बड़े भ्राता को नेष्ट	१ राज्य-सम्मान
२ सुख ऐश्वर्य	२ पितृभय	२ छोटे भ्राता को नेष्ट	२ मंत्रित्व प्राप्ति
३ मन्त्री पद	३ सुख	३ मातृ नाश	३ धन सुख की प्राप्ति
४ राज्य सम्मान	४ धन विद्या प्राप्ति	४ खुद का नाश	४ अनेक कष्ट

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृनाश	मातृनाश	मातुलनाश	कुलहानिः	धनहानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटाकर चतुर्दशी की घटियाँ युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जाने। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली-कुहूजनन फल

सिनीवाली जनन फल- सिनीवाली उसे कहते है कि अमावस्या जन्म के अनन्तर कुछ घटी बाकी हों अर्थात् चन्द्र की कुछ कला दृश्यमान हो। ऐसी अमावस्या में बालक का जन्म हो तथा घर में गौ, भैंस, घोड़ी आदि पशु प्रसूति हुए हों तो धन हानि, अपयश आदि भय होते है।

कुहुजनन फल- कुहू कहते है चन्द्र की कला बिल्कुल नष्ट हो जाये। अर्थात् अमावस्या का अन्त समय हो, (यह सूक्ष्म केतकी गणना से ही ठीक-ठीक समय आयेगा प्राचीन गणित से नहीं), उस समय से बालक का जन्म या पशु जन्म हो तो अधिक अरिष्ट फल होता है। इसका शास्त्र में कहे अनुसार शान्ति-विधान अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट-दोषों में जन्म फल- व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृ हानि, परिघ योग में मृत्यु होती है, तथा मृत्युयोग, दग्धयोग, भद्रा, संक्रांति दिन, सूर्य-चन्द्र-ग्रहण, शूल योग, व्याघात, गण्ड, वज्र, क्षयतिथि, महापात (क्रांति साम्य) विश्वधस्त्र पक्ष, क्षय मास आदि कुयोगों में बालक जन्मे तो अरिष्ट-शात्यर्थ शांति-विधान करना चाहिए, ताकि आयु और आरोग्य प्राप्त हो।

स्त्री-दासी-गौ-आदि पशु-यमल जन्मफलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितासिह। सुतौ च सुतकन्ये वा कन्या एव तथा पुनः।
एकलिंगौ विनाशाय द्विलिंगौ मध्यमौ स्मृतौ। पित्रौर्विघ्नकरौ ज्ञेयौ तत्र शांतिर्विधीयते।

जन्म स्थान विचार- जन्मलग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो, अथवा पूर्णचन्द्र लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखे अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के दशवें, चौथे और लग्न में हो तो बालक का जन्म जल के ऊपर या जल के समीप स्थान में पैदा हुआ ऐसा कहना। पूर्ण चन्द्रमा अपनी राशि कर्क में हो, बुध लग्न में हो, बृहस्पति चतुर्थ स्थान में हो अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सातवें हो तो बालक का जन्म नौका में, जहाज में अथवा पुल के ऊपर या नदी के सानिध्य में हुआ ऐसा कहना। लग्न और चन्द्रमा से बारहवें स्थान में शनि हो, पापग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में वा एकांत में हुआ ऐसा कहना। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा देखता हो तो खाई वा खात में जन्म हुआ कहना। नरराशि में शनैश्चर लग्न में हो और मंगल देखता हो तो शमशान के समीप जन्म हुआ कहना और नरलग्नगत शनि को शुक्र चंद्र देखते हों तो सुन्दर दर्शन योग्य रमणीक घर में बालक का जन्म कहना। बृहस्पति हो तो राजमन्दिर वा देवालय गोशाला में वा उसके समीप का जन्म कहना। बुध देखता हो तो शिल्पालय, चित्रकारी से बने हुए सुन्दर स्थान में जन्म कहना। बुद्धिमान् ज्योतिषी ग्रहों के बलाबल को देखकर फलादेश कहें।

अन्य शुभशुभ योग- मंगल शनि दोनों त्रिकोण में हो और चन्द्रमा सातवें घर में हो तो जन्मा बालक माता से जुदा हो जाए तथा ऐसे योग में चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो माता से त्यागा हुआ बालक दीर्घायु और सुखी होता है। दशम स्थान में बुध गुरु हो, केन्द्र में सूर्य, तीसरे मंगल हो ग्यारहवें पाप ग्रह हो तो बालक को छः अंगुली है ऐसा कहना। बारहवें स्थान में चन्द्रमा मंगल हो, तो बायां नेत्र और सूर्य राहु हो तो दाहिना नेत्र बालक को दुःखित हो या नष्ट हो ऐसा कहें। मंगल, शनि, राहु पांचवें स्थान में हों तो बायें कोख में लहसुन कहना। तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष वा सिंह बृहस्पति हो, दसवें घर में सूर्य मंगल हो तो बालक मूक (गूंगा) होता है। कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो और शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तो छठे आठवें में बैठा हुआ चन्द्र अरिष्ट निवारक और मातृवत् पालन करने वाला होता है। चन्द्र ८वें में, मंगल सातवें में, राहु नवम स्थान में, शनि लग्न में हो, बृहस्पति तीसरे स्थान में, सूर्य पांचवें, शुक्र छठे, बुध चौथे हो तो बालक अल्पायुषी होता है। जिस बालक की जन्मकुण्डली में लग्न में बुध, शुक्र न हो, केन्द्र में बृहस्पति न हो, दशम स्थान में मंगल न हो तो वह बालक जन्म लेकर क्या कर सकता है, अर्थात् उसका जन्म व्यर्थ है। यही योग जैसे केन्द्र त्रिकोण में बुध शुक्र बृहस्पति हों, दसवें स्थान में मंगल हो तो वह बालक अपने कुल में दीपक, ज्ञानवान, दीर्घायुषी, बुद्धिमान, चतुर (किसी से ठगा नहीं जाये) ऐसा कर्तव्यमान्, कीर्तिमान, सर्वमानी, राज में तथा जनमानस में बहुमानी, अधिकारी महान पुरूष होता है। लग्न में शनि हो छठे चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो उसका पिता अधिक नहीं जीये। छठे बारहवें स्थान में पापग्रह हो या चन्द्र पापग्रह युक्त हो तो माता को अरिष्ट जानना। दशम स्थान में पापग्रह हो तो पिता को अरिष्ट जाने। दशम स्थान में पापग्रह हो और दशम में मंगल शत्रु राशि का हो तो बालक का पिता शीघ्र ही मर जाये। लग्न में गुरु, दूसरे शनि, सूर्य भौम तथा बुध हो तो बालक के विवाह समय में उसका पिता मरे। जन्म कुण्डली में सातवें राहु छठे ८वें में चन्द्रमा हो शेष ग्रहों की पापदृष्टि हो तो बालक की आयु बहुत अल्प होती है ऐसा आचार्यों का मत है। शनि के घर में सूर्य हो, सूर्य के घर में शनि हो या लग्न में मंगल, ८वें में गुरु हो तो बालक की केवल १२ वर्ष की आयु होती है। जन्म समय लग्न में छठे ८वें में बुध हो और उनका लग्नेश अष्टमेश पाप ग्रह युक्त या परस्पर सम्बन्धित हो तो बालक की चौथे वर्ष में मृत्यु होती है। मंगल के घर में बृहस्पति हो और ६.८ वें में चन्द्रमा हो तो बालक आठवें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है। लग्न से दशम में राहु हो या अष्टमेश क्षीण चन्द्रमा राहु से युक्त हो तो वह बालक माता-पिता तथा स्वयं का नाश करने वाला होता है। चन्द्र राहु के साथ न हो तो वह बालक १६ वर्ष पर्यन्त जीवित रहता है। बालक की कुण्डली में तीसरे सूर्य हो तो बड़े भाई को, शनि हो तो पीठ पर छोटे भाई को और मंगल हो तो पीठ पर के भाई को हानि करता है। यह फलित विचार करते समय ज्योतिषी को चाहिए कि ठीक समय लेकर जहां का जन्म हो वहां के सूर्योदय से तथा उसी नगर की लग्न सारिणी से लग्न साधन करें। जन्म टाईम स्टैण्डर्ड हो तो सूर्योदय स्टैण्डर्ड टाइम का लेकर इष्ट बनावें। सूर्योदय और जन्म टाइम समान जाति के लेकर इष्ट साधन करना चाहिए।

बाल कष्टावली चक्रम

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आये।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा, रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ- पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृशता।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हां हां हीं हीं हुं हुं दुष्टग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानादुरुद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रूदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चंदन, रक्त पुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूँ के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग साँप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वांस, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिल चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प, श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुनवृक्ष के पुष्प।	भात, एक सेर आटे के पूड़े, आध सेर पूर्ण पोली, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५. श्वेत ध्वजा ५, गेहूँ के आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	ॐ भगवती हीं हीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं ग्राह-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हँसना, कभी-कभी रोना, मोह, मुर्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर।	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गल, राई, हाथी दांत घृत।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना।	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वांस, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूँ का आटा	चंदन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वांस।	एक सेर गेहूँ का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायं. दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ हीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्यमांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हूं २ हन २ दुष्टान् हां हूं फट् स्वाहा।	

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन				गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु	बलिद्रव्य	होम द्रव्य	करे धारणम्	जप सं०	जपनीय वेदोक्त मंत्र
			१	२	३	४							
अश्विनी दस्रौ	वातज्वर, गात्रपीड़ा निद्राभय, बुद्धिभ्रम	९	९	११	१०	२०	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृत दीप, क्षीर मोदक गुडनैवेद्य	सुवर्ण घृत कुम्भ	गुडौदन तिल	खण्ड यव घृत	अपमार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐअश्विनातेजसाचक्षुः प्राणेनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः।।
(भरणी) (यमः)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	०	८०	४०	११	अगरगंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत गुग्गुल धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गोमहिषीघृत शर्करा, छायापात्र	कृषरान्न (खिचड़ी)	घृत मधु तिलाक्षत	अगस्त मूलम्	१० सहस्र	ॐयमायत्वाङ्गिरस्वतैपितृमतेस्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ यमाय नमः।।
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्रपीड़ा, अनिद्रा अतिदाह, उरूशूल	९	९	११	१६	२८	श्वेत चन्दन गंध, जुही पुष्प, घृतदीप, घृत गुग्गुल धूप, तिलमाषान्न, बडाधीका नैवेद्य	स्वर्ण, गोदान	पायस घृत मोदक	तिलयव घृत	कार्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐअग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा॑ऽरेता॑ऽ सिजिन्वति ॐअग्नये नमः।।
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिरपीडा, ज्वर कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७	९	१८	३०	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप घृतदीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्णगौ दान, ५कन्याभोजन	मध्वाज्यक्षौद्र शाख्यन्नक्षीर	तिलाज्य घृतयव	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐब्रह्मजज्ञानंप्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरूचोवेनआवःसुबे धन्याउपमाअस्य विष्ठाः शतश्चयोनिमसतश्चविवः ॐब्रह्मणेनमः
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष, महाकष्ट अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९	५	७	१०	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप घृतदीप, पायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तण्डुल सवत्सा गोदान	दधि शर्करा शाल्यन्न	दधि पायस	जयन्ती मूलम्	१० सहस्र	ॐइमन्देवा असपत्न॑ऽसुवध्वं महतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठायायमहते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां॑ऽराजा ॐचन्द्रमसेनमः
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर सर्वाङ्ग पीड़ा, अनिद्रा	मृ. तु.	०	१८	०	०	श्वेत चन्दनगंध, सौरभ पुष्प, दशांङ्ग धूप घृतदीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्यामवृषभ दान श्याम वस्त्र	दध्योदन मध्वाज्य	घृत मधु	सचंदनाश्च त्यमूलम्	१० सहस्र	ॐनमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः। ॐरुद्राय नमः।।
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिरपीड़ा कटिपीड़ा	७	७	१४	२	२१	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प अष्टगंध धूप, घृत दीप घृताक्तपीतवर्णान्नि नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५, ५ कन्याभोजन	साज्य पीततण्डुल	घृत तण्डुल	अर्क मूलम्	१० सहस्र	ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिमाता सपिता स पुत्रःविश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॐअदि०
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७	७	१०	२१	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत गुग्गल, धूप, घृतदीप, घृतपावस, शर्करा नैवेद्य।	सुवर्ण, गौ, पीत वस्त्र	समण्डक मोदक	घृत पायस	तुषार मूलम्	१० सहस्र	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छत्रसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम। ॐबृहस्पतये नमः।।
आश्लेषा (सर्प)	सर्वाङ्ग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसमकष्ट	मृ. तु.	०	०	४१	०	कुंकुम अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, घृतक्षीर नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ सर्पेभ्यो नमः।।
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा, अर्द्धगात्रपीड़ा	२०	१५	७	१७	२०	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, घृतमिष्टान्न नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, माष दान	सतिलाज्य दुग्धान	तिल घृत तण्डुल	भृंगराज मूलम्	१० सहस्र	ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नपि- त्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्। ॐपि०
पू.फा. (भगः)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ. तु.	०	१५	०	३०	श्वेत चन्दनगंध, मालती पुष्प, घृतबिल्व धूप, घृतदीप अपूपोदनमोदक नैवेद्य।	पित्तल, यवमाषान्न, स्वर्ण, गौ दान	घृतौदन पायस	कङ्गनी तिलघृत	कष्टकारि मूलम्	१० सहस्र	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः। भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भयप्रनृभिर्नृ वनःस्याय।। ॐभगायनमः।
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर शिरपीड़ा अतिकष्ट	७	७	१४	७	६०	कर्पूर, केसरगंध अर्कपुष्प, घृतगुग्गल धूप, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, स्वर्ण रजत, अन्न, गौदान	घृत शर्करा शाल्यन्न	तिल घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐदेवावध्वर्यू श्चागतरथेनसूर्यैत्वचा मध्वायज्ञँ॑ऽसमंजाथे तं प्रलथा यं वेनश्चित्रं देवानाम।। ॐअर्यम्णे नमः।।
हस्त (सविता)	उरुशूल, अफारा सर्वांग पीड़ा प्रस्वेद	१५	१५	१७	१५	०	रक्त चन्दन, केसर गंध, कमल पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	सुवर्ण, पयस्विनी गौ दान	मिष्टान्न पायस	दधि घृत	जाति मूलम्	५ सहस्र	ॐविभ्राड्बृहन्पिवतु सौम्य मध्यायुर्दध ज्ञपत चविहुतमम् वातुजूतो योअभिरक्षतितमनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति ॐसवित्रे नमः।
चित्रा विश्वकर्मा	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११	९	९	१६	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, विचित्रान्नमोदक नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य घृत तण्डुल	मखव्र मूलम्	१० सहस्र	ॐत्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदाछन्दऽ इन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदधः।। ॐविश्वकर्मणे नमः।।

13 - ~~प्रायश्चित~~, कलश यात्रा,

14 — ~~प्रायश्चित~~, पंचांग, मण्डप प्रवेश

वास्तु, अग्नि स्थापन, ग्रह स्थापन,

15 — पंचांग, वास्तु ग्रह पूजन, आवाहित देवता पूजन, योगिनी, क्षेत्रपाल, प्रधान पीठ स्थापन पूजन, रुद्राभिषेक (यज्ञ)

16 — आवाहित देवता पूजन, रुद्राभिषेक - 2

17. भारतीय संस्कृति के सभी धर्मानुरागी भक्त जनों के लिए यह शुभ और बड़ा पुण्य का

18. अवसर है कि देवभूमि हिमाचल में 14 जून 2008 से महामाहेश्वर यज्ञ एवं श्रीमद्देवी भागवत पारायण एवं कथा प्रवचन का आयोजन किया जा रहा है अतः आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि

19. इस शुभ अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में आमंत्रित होकर और यज्ञ भगवान की परिक्रमा

20. 108 परिक्रमा लगाकर पुण्य प्राप्त करें। यज्ञ भगवान आप सबके मनोरथ पूर्ण करेंगे। - कार्यक्रम इस प्रकार है—

बलिदान, पूर्णाहुति

9313131500

5। महामाहेश्वर यज्ञ एवं श्रीमद्देवी भागवत प्रवचन एवं कथा प्रवचन

वैदिक समाज (पञ्जी०)

वेदाचार्य रामजीलाल पालीवाल साङ्गवेद विद्यालयः
४६, संगमविहार, नजफगढ़, नई दिल्ली-४३, दूर०-०९८६८५८९९७६

॥ श्रीः ॥

विक्रमी सम्वत्सर संख्या २०६५ शालिवाहन शक सम्वत् १९३० तथा प्रभवादि षष्टि संवत्सरों में **प्लव** नामक नये संवत्सर का शुभागमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि को हो रहा है। आप सभी वैदिकधर्मानुरागी सज्जनों को इस नवसंवत्सर के शुभागमन की पुण्य वेला पर अनन्त शुभ मङ्गल कामनाएँ।

जयतु वेदः जयतु भारती

6-6-77 at 4.40-45 pm
Delhi

मङ्गलकामः-
वैदिकसमाजः

घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसुशोभनम्।।

अथ घातचक्र

यह घातचक्र द्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य करें। विवाह व उपनयनादि में यह घातचक्र वर्ज्य नहीं है।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घाततिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घातनक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घातकरण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरुषघातचन्द्रः	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनुः	वृषभ	मीन	सिंह	धनुः	कुम्भ
स्त्री घातचन्द्रः	मेष	धनुः	धनुः	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनुः	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

नामाक्षरों से वैरवर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय-वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढ़ा

अवकहडाचक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधकचक्र)

नक्षत्र	नाड़ी	योनि	गण	चरणाक्षर १	चरणाक्षर २	चरणाक्षर ३	चरणाक्षर ४
अश्विनी	आद्या नाड़ी	अश्व योनी	देव गण	चू	चे	चो	ला
भरणी	मध्या नाड़ी	गज योनी	मनुष्य गण	ली	लु	ले	लो
कृत्तिका	अन्त्या नाड़ी	मेष योनी	राक्षस गण	अ	इ	उ	ए
रोहिणी	अन्त्या नाड़ी	सर्प योनी	मनुष्य गण	ओ	वा	वी	वू
मृगशीर्ष	मध्या नाड़ी	सर्प योनी	देव गण	वे	वो	क	की
आर्द्रा	आद्या नाड़ी	श्वान योनी	मनुष्य गण	कू	घ	ङ	छ
पुनर्वसु	आद्या नाड़ी	मार्जार योनी	देव गण	के	को	हा	ही
पुष्य	मध्या नाड़ी	मेष योनी	देव गण	हू	हे	हो	डा
अश्लेषा	अन्त्या नाड़ी	मार्जार योनी	राक्षस गण	डी	डू	डे	डो

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
राश्यधिपति	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	मानव	जलचर

नक्षत्र	नाड़ी	योनि	गण	चरणाक्षर १	चरणाक्षर २	चरणाक्षर ३	चरणाक्षर ४
मघा	अन्त्या नाड़ी	मूषक योनी	राक्षस गण	मा	मी	मू	मे
पूर्वाफाल्गुनी	मध्या नाड़ी	मूषक योनी	मनुष्य गण	मो	टा	टी	टू
उत्तरा फाल्गुनी	आद्या नाड़ी	गो योनी	मनुष्य गण	टे	टो	पा	पी
हस्त	आद्या नाड़ी	महिष योनी	देव गण	पू	ष	ण	ठ
चित्रा	मध्या नाड़ी	व्याघ्र योनी	राक्षस गण	पे	पो	रा	री
स्वाति	अन्त्या नाड़ी	महिष योनी	देव गण	रू	रे	रो	ता
विशाखा	अन्त्या नाड़ी	व्याघ्र योनी	राक्षस गण	ती	तू	ते	तो
अनुराधा	मध्या नाड़ी	मृग योनी	देव गण	ना	नी	नू	ने
ज्येष्ठा	आद्या नाड़ी	मृग योनी	राक्षस गण	नो	या	यी	यू

राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
राश्यधिपति	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	वनचर	मानव	मानव	कीटक

नक्षत्र	नाड़ी	योनि	गण	चरणाक्षर १	चरणाक्षर २	चरणाक्षर ३	चरणाक्षर ४
मूला	आद्या नाड़ी	श्वान योनी	राक्षस गण	ये	यो	भा	भी
पूर्वाषाढ़ा	मध्या नाड़ी	वानर योनी	मनुष्य गण	भू	धा	फा	ढा
उत्तराषाढ़ा	अन्त्या नाड़ी	नकुल योनी	मनुष्य गण	भे	भो	जा	जी
श्रवण	अन्त्या नाड़ी	वानर योनी	देव गण	खी	खू	खे	खो
धनिष्ठा	मध्या नाड़ी	सिंह योनी	राक्षस गण	गा	गी	गू	गे
शततारका	आद्या नाड़ी	अश्व योनी	राक्षस गण	गो	सा	सी	सू
पूर्वभाद्रपदा	आद्या नाड़ी	सिंह योनी	मनुष्य गण	से	सो	दा	दी
उत्तराभाद्रपदा	मध्या नाड़ी	गो योनी	मनुष्य गण	दू	थ	झ	ञ
रेवती	अन्त्या नाड़ी	गज योनी	देवगण	दे	दो	चा	ची

राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
राश्यधिपति	गुरु	शनि	शनि	गुरु
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण	वैश्य वर्ण	शूद्र वर्ण	विप्र वर्ण
वश्य	मानव	जलचर	मानव	जलचर

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तमुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्य	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मन्त्री	दुःशीलः	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुचिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्महा	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पतिः ७	मृत्यु ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढया	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सघना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौमः	दुःखार्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढया	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम०	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढया	सुभगा	सुरुपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रिय	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढया	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढया	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

अथ सूर्यादिग्रहाणां गोचरफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानाश	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्य	विजयः	मार्गः	पीड़ाः	सुकृना	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्य नाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्री लाभ	रोगः	धर्म लाभ	सौख्यं	धनलाभ	धन नाश
भौमः	शत्रुभीः	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्री कष्ट	शत्रुभीः	शत्रु पीडा	शोकः	धनलाभ	धन नाश
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रु भीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धन लाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धन नाश
गुरुः	भय	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमा	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्र लाभः	शत्रुभीः	शोकः	धन लाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	मयं	धननाश	एश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्र कष्ट	धन लाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धननाश	धन लाभ	वैर	शोकः	श्रीः	क्लहः	मृत्युः	दुःखं	वैर	सुख	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धन लाभ	क्लहः	रोगः	पापं	शौकः	कीर्ति	शत्रु भीः

अथ वर्षकुण्डल्यांतन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धन लाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रु नाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसर्न	दुर्भति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सोख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्र लाभ	क्लेह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखलाभ	रोग
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.लाभ	पुत्रः प्रा.	अष्टम्	सुखम्	रोग	धर्म लाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धन लाभ	शत्रुभीः	स्त्री सुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानलाभ	क्षेमलाभ	व्यय
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धन लाभः	दुःखम्	पुत्र पीड़ा	जयः	स्त्री कष्ट	रोग	भाग्याहा	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभी.	कष्टम्	धर्म हानि	विजय	सुलाम	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश	पीड़ा	भाग्याना	धनलाभ	लाभः	शोकः
मुन्थाः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखप्राप्ति	कष्टम्	व्यसर्न	दुःखम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अङ्ग और स्त्रियों का बायां अङ्ग फड़कना शुभ है। इन्हीं अङ्गों में तिल, लहसुन, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज उठे तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कपोल	शुभाप्ति	हस्त	द्रव्य-लाभ	पादोपरि	स्थानलाभ	हृदय	इष्ट सिद्धि	नामि	स्त्री नाश	भग	पति प्राप्ति	उदर	कोषलाभ
ललाट	स्थानलाभ	भ्रु मध्य	सुख प्राप्ति	नेत्र	धनाप्ति	नेत्रोर्ह्व	विजय	वक्षः स्थल	विजय	कटि	प्रमोद	आंत्रिक	कोषवृद्धि	कुक्षि	सुप्रीति	लिंग	स्त्रीलाभ

ग्रहाः गौचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः													जप सं.	जपनीय मन्त्रः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्तगौ	रक्त चन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेत वस्त्र	श्वेत पुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेत चन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्त वस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरा वस्त्र	सर्व पुष्प	हाथी दांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपा मार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीत वस्त्र	पीत पुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेत वस्त्र	श्वेत पुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू.उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्ण वस्त्र	कृष्ण पुष्प	कस्तूरी	कृष्णगो	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नील वस्त्र	कृष्ण पुष्प	खड़ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्र वस्त्र	धूम्र पुष्प	नारियल	कंबल	कबरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेत वस्त्र	श्वेत पुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेत चन्दन	हाथी दांत	मुथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि- (यथा सिद्धौषधै रोगन्नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति।।)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालती पुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्त चन्दन	अक्षत	श्वेत सरसों	मनशिला	सुरमा	तिल पत्र	तिल पत्र
देवदारू	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षमूल	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
खश, केशर	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
मुलहठी	श्वेत चन्दन	सिंगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्त पुष्प	स्फटिक	माल कंगनी	मोती			मुत्थरा		
रक्तकनेर		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		

सप्त धान्य- उड़द १, मूंगी २, कणक- (गेहूँ) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कंगनी ७।।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुईमुई) कूट, खिल्लां, कांगनी, जव सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधी, लौध इन सब औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करनेसे सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शांति होती है। गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वन्दना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)।।

शनि विचार- गोचरे द्वादशे नेत्रे हृदये जन्मभे शनिः। द्वितीये गुल्फयोर्मध्ये द्यना नादौ च विलोमतः।।
फलं- नेत्रस्थे शत्रुसन्तापो हृद मानसीव्यथा, चरणे भ्रमणं देशे देशः संचारयेच्छनिः।।
अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्- कल्याणीं प्रवदन्ति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे, व्याधिं बन्धुविरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्यु चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निर्भयं, लोहं शस्त्र भयं, सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा।।१।। **अथ बृहत् कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्-** राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिर्नाना क्लेशं करोति दुर्जनभयं पुत्रान्यशून्पीड़येत्। हानिः स्थानमरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्। रामाऋद्धि विनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे बाधवा।।२।।

अथ ग्रहाणां राशि प्रवेश समये पाद निर्णय- किसी ग्रह का राशि प्रवेश समय में पाद देखना हो तो अपनी राशि से जिस दिन ग्रह बदलता हो उस दिन जिस राशि में चन्द्रमा हो उस राशि तक गिनें, वह संख्या २।५।९ हो तो रजतपाद, ३।७।१० में ताम्रपाद, १।६।११ में सुवर्णपाद, ४।८।१२ में लोहपाद जानना। गुरु सुवर्णपाद में शनि लोहपाद में, मङ्गल ताम्रपाद में, शुक्र रजतपाद में शुभ होते हैं। शनिवाहन- जन्म नक्षत्र से जिस दिन शनि बदले उस दिन के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देवें, शेष क्रमशः शनि का वाहन समझें- १ गर्दभ, २ अश्व, ३ हस्ति, ४ महिष, ५ जम्बूक, ६ सिंह, ७ छाग, ८ मयूर, ९ हंस। इसमें वाहनों के गुणानुसार फल समझें।

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीय महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	१	०	०	र	०	६	०	च	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पूभा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	च	१	७	०
र	०	१०	२४	च	१	४	०	मं	१	१	९
च	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				पूफा. पूषा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	च	१	८	०
र	०	१०	६	च	०	७	०	मं	१	२	०
च	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

त्रिराशिपति चक्रम

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	च.	बु.
गु.	चं.	बु.	म.	सू.	शु.	श.
वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः	
मं.	श.	मं.	गु.	चं.	दि.	प.
शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रा.	प.

दशा का भुक्त भोग्य- गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणाकर फल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर भभोग की पलों से भाग देवें, लब्ध अंक वर्ष। शेषांक को १२ से गुणें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास, फिर शेष को ३० से गुणा कर भभोग की पलों से भाग दें लब्ध दिन आवेंगे। यह दशा के भुक्त वर्षादि होंगे। इन्हें दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

योगिनी दशाऽन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
अ. आर्द्रा चित्रा			ध. पुनर्वसु स्वाति			श. पुष्य विशा.			अश्वि अश्ले अनु. पूभा.		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	गु.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सिं.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सिं.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सिं.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सिं.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पिं.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०

भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
भर. मघा ज्ये. उ. भा.			कृ. पूफा. मू. रे.			रो. उ. फा. पू. षा.			मृग. हस्त उ. षा.		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सिं.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सिं.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सिं.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पिं.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पिं.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

अथांङ्ग विभागे पल्ली (छिपकली कोढ़किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रू मध्ये	राज्य संबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	प्रधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयं	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यताः
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजन
ललाटे	बंधुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
द.कर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तोषः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने (छिपकली के गिरने पर) शुभ तिथिवार नक्षत्र- यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो तो श्रेष्ठ लाभदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन चारों में भी शुभ फल होता है। अश्वि. रो. मृ. पु. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इनके अतिरिक्त तिथि नक्षत्र वारादि में छिपकली गिरे तो अशुभ होता है। **पल्लीपातेकर्त्तव्य कर्म-** पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श पर वस्त्र-सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्यु योग, दग्ध दिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है उसकी शांति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल स्वर्णदान पंचगव्य से स्नान तथा घृत काछयापात्रदान करना भी उचित है।

छिक्का फल- छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा "छींक/सूंघनी छलकर लीन्हीं। पीनस, सर्दी, धांस फल हीनों।। छींक पीठ की कुशल उचारे। बांई कारज सबै सवांरे।।१।। सम्मुख छींक लड़ाई भाषै, छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै।।२।। ऊंची छींक कहे जयकारी, नीची छींक होये भयकारी। अपनी छींक महादुखदायी, ऐसे छींक विचारों भाई।।३।। कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले। शयन के समय और सन्ध्यावन्दन जपादि के आरम्भ में छींक अशुभ नहीं होती।

विविध मुहूर्त्ता:

अथ स्त्रीणामाद्यरजोदर्शने शुभाशुभ विचार:

शुभ मासा: - वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास और शुक्ल पक्ष श्रेष्ठ है।

शुभ तिथि- १।२।५।७।१०।११।१३।१५, कृष्णपक्ष में दशमी पर्यन्त मध्यम, उपरान्त नेष्ट। चन्द्र, बुध, गुरु शुक्रवार श्रेष्ठ। अश्विनी, रो. मू. पूष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. श. ध. रे. नक्षत्र शुभ। पुन. कृ. म. वि. मू. नक्षत्र मध्यम, अन्य अशुभ। वृ. मि. कर्क, कं. तुला ध. मी. लग्न शुभयुक्त तथा शुभ दृष्ट हों तो प्रथम रजोदर्शन शुभ है।

अशुभ समय- अष्टमी, द्वादशी, षष्ठी, रिक्ता, अमावस, संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति ग्रहण, मार्ग में, कुदेश, उत्पात का समय इन योगों में प्रथम रजोदर्शन होवे तो अनिष्ट है। इसका यथा विधि जाति विधान करने पर शुभ होवे।

स्नान मुहूर्त्त- ह. स्वा. मृ. अश्विनी अनु. ध. रो. उत्तरा ३. पु. शुभ तिथि, शुभ वार में कुयोग रहित समय में, लग्नबल देख शुभनवांश में, प्रथम ऋतुमती स्नान करें।

अथ गर्भाधान मुहूर्त्त विचार- रजो दर्शन की ४ रात्रि को छोड़कर समरात्रि में, रो. मृ. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. नक्षत्र तथा मेष कर्क सिंह तुला ध. म. इन लग्नों में, लग्न से ३।६।११ वें में पाप ग्रह और र.मं.गु. लग्न को देखें तथा विषम राशि नवांश में हो, पति पत्नि को चन्द्र शुभ हो, ऐसे समय में गर्भाधान संस्कार करें। पुन. अश्वि. पुष्य चि. नक्षत्र गर्भाधान में मध्यम माने है। गर्भाधान में चन्द्रबल स्त्री को विशेष होना चाहिए।

गर्भाधानान्तर दश मासों के स्वामी- प्रथम मास का स्वामी शुक्र, द्वितीय का मंगल, तृतीय का गुरु, चतुर्थ का सूर्य, पंचम का चन्द्र, षष्ठ का शनि, सप्तम का बुध, अष्टम का गर्भ लग्नपति, नवम का चन्द्र और दशम मास का स्वामी सूर्य है। अष्टम मास में श्र. रो. पुष्य. नक्षत्र शुभ तिथिवार और अष्टम स्थान शुद्ध लग्न में गर्भ रक्षार्थ विष्णु-पूजन करें।

पुंसवन सीमान्त मुहूर्त्त विचार- गर्भ के द्वितीय तृतीय मास में पुंसवन करना चाहिए। छठे और आठवें मास में मासाधिपति बलवान होने पर सीमन्त कर्म करे। पुंसवन सीमन्त में गुरु शुक्र के अस्त का दोष नहीं है। र.मं.गुरूवार, मतांतर से सो. बु. शुक्रवार, दम्पत्ति का चन्द्रबल, तारा शुद्धि देख रो.,मृ.,पुष्य.,पुन.,हस्त,मू.,मं,उत्तरा ३ जन्म नक्षत्र बिना इन नक्षत्रों में तथा १।२।३।५।७।१०।११।१३ शुक्ल पक्ष की तिथियों में, कृष्ण पक्ष में १० पर्यन्त शुभ, पूर्वान्हि श्रेष्ठ है। पुरुष संज्ञक लग्न तथा नवांश में लग्न से १।४।५।८।९।१० में शुभग्रह ३।६।११ में पापग्रह, चन्द्र १।६।८।१२ वें वर्ज्यकर अन्य स्थानों में हो ऐसे मुहूर्त्त में पुंसवन और सीमान्त संस्कार करना श्रेष्ठ है।

मेधाजनन संस्कार- नालछेदन से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में स्वर्ण लगाकर स्वर्ण सहित अंगुली से शहद में गौघृत मिलाकर 'ॐ भूस्त्वयि दधामि.' 'ॐ भुवस्त्वयि दधामि', 'ॐ स्वस्त्वयि दधामि', 'ॐ भूर्भुवः स्वः सव त्वयि दधामि',इन चारों मन्त्रों से नवजात बालक को थोड़ा-थोड़ा मधु धृत चार बार चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान और यशस्वी होता है।

स्तनपान मुहूर्त्त- पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृति रिक्ता तिथि का त्याग कर शुभ तिथि वार में पुन पुष्य. मृ. ह. श्र. रे. नक्षत्र में स्तनपान करना शुभ है।

प्रसूति स्नान मुहूर्त्त- रिक्ता तिथि को छोड़कर शुभ तिथि, र. मं. गु. वार अश्विनी रो. मृ. तीनों उत्तरा, ह. स्वा. अनु. रेवती नक्षत्रों में कुयोग रहित दिन में प्रसूति स्नान शुभ है।

जल पूजन मुहूर्त्त- मास के समाप्त होने पर बु. गु. चन्द्रवार, रिक्ता अमावस रहित तिथियों में मृ. पुन. पु. ह. अनु. मू. नक्षत्रों जल पूजन श्रेष्ठ है। चैत्र, पौष, अधिक मास, गुरु शुक्र का अस्त, मास पूरा होने पर वर्ज्य करें अर्थात् एक मास तक इनका दोष नहीं।

जातक कर्म नामकरण संस्कार- जातक कर्म नाल छेदने के पूर्व करना योग्य है। उस समय न हो सके तो सूतक निवृत्त होने पर ब्राह्मण ११वें, क्षत्रिय १३वें, वैश्य १६वें, शूद्र २१वें दिन नाम कर्म पूर्वकुलाचार के अनुसार करें। सूतक समाप्ति पर ११वें या १२वें दिन जातक कर्म नामकर्म संस्कार न हुआ हो तो भद्रा व्यतिपात वैवृति संक्रांति रहित १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, शुभवार, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. तीनों उत्तरा अभि. श्र. ध. श. रे. इन नक्षत्रों में लग्न नवांश बल की योजना कर विधि के अनुसार बालक के दक्षिण कर्ण में तीन बार राम कहें।

दोलारोहरण (बालक को झूले में झुलाना)- जन्म दिवस से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन रिक्ता अमावस रहित तिथि, शुक्रवार, अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. तीनों उत्तरा रे. नक्षत्रों में शुभ होता है। सूर्य नक्षत्र से आगे ५ और पीछे ७ नक्षत्र शुभ होते हैं।

अथ निष्क्रमण मुहूर्त्त- बारहवें दिन बालक का निष्क्रमण करें। सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य और नक्षत्रों के दर्शन करावें। यह न हो तो तृतीय चतुर्थ मास में मं. श. वर्जित वारों में रिक्ता भद्रा अमावस आदि कुयोग रहित शुभ दिन में, अश्वि. रो. पुन. पुष्य. ह. अनु. स्वा. मू. श्र. ध. नक्षत्रों में शुभ है।

भूम्युपवेशन- पांचवें मास में पृथ्वी और वराह का पूजन कर रिक्ता अमा. रहित तिथि शुभवार, अश्वि., रो. मृ. पूष्य. हस्त. अनु. ज्ये. अभि. तीनों उत्तरा नक्षत्रों में, स्थिर लग्न में बालक की कमर में सूत्र बांधकर पृथ्वी पर बिठावें। मन्त्र यह है- "**ॐ रक्षैनं वसुधे देवि! सदा सर्वगते शुभे! आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये!।।**"

बालक को पृथ्वी पर बिठाने के समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, दवात, सुवर्ण, चांदी, शस्त्र, वेद की पुस्तकें, धान्य, मशीनें, छोटी मोटरें, इन्जिन आदि वस्तुएँ रखें, इनमें से जिस वस्तु को बालक पहले ग्रहण करे उसी से उसकी जीविका होती है, इसलिए आगे वही विद्या उसकी पढ़ाई जावे।

अन्नप्राशन- जन्म से ६।८।१०।१२ वें मास में पुत्र को और ५।७।९।११ वें मास

में कन्या को भद्रा व्यतिपातादि दोष रहित १।३।५।७।१०।१३।१५ इन तिथियों में शुभ वार, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रे. इन नक्षत्रों में, जन्मलग्न या जन्मराशि से आठवां लग्न या नवांश तथा मीन, मेष, वृश्चिक लग्न को त्याग कर दशम स्थान में पापग्रह न हो तो अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है।

कर्णवेध- चातुर्मास (आषाढ़ शु.११ से कार्तिक शु. ११ तक) चैत्र पौष जन्म मास तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि ४।९।१४ और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२वें या १६वें दिन अथवा ६।७।८ वें मास में या विषम वर्षों में, शुभवार अश्वि. मृ. पुन. पु. ह. चि. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, वृ. तु. ध. मीन लग्न और लग्न में गुरु हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ होता है।

मुण्डन चौल (चूड़ाकर्म) संस्कार- बालक की माता को ५ मास का गर्भ हो तो ५ वर्ष से न्यून के बालक का चौलकर्म नहीं करना। ज्येष्ठ मास में नहीं करना, तथा चैत्र मास को छोड़ विषम वर्ष में उत्तरायण में, २।३।५।७।१०।११३ तिथियों में, अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. अभिजित्, श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में। अष्टम स्थान शुद्ध होने पर चौल करना श्रेष्ठ है। तथा कुलाचारानुसार इष्टदेवता के आगे भी मुण्डन संस्कार और कर्णविध कर दिया जाता है, यह 'यथा कुलधर्मतः' इस स्मृति के अनुसार ठीक ही है।

क्षौर करने के नियम तथा मुहूर्त- चौलकर्म की तिथि क्षौर नक्षत्र क्षौर (बाल कटाने) के लिए श्रेष्ठ है। रवि मंगल शनिवार, पूर्व क्षौर से ९वां दिन, ४।८।९।१४।१५।३० तिथि, संक्रांति, रात्रि, संध्याकाल, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा के दिन, स्नान करके शरीर में उबटन लगाने के अनन्तर भोजन के बाद क्षौर कराना अशुभ है। परन्तु विवाह, यज्ञ, मृतक कार्य, कारागार से छूटने पर ब्राह्मणाज्ञा, राजाज्ञा से किसी समय में क्षौर बनवा सकते हैं। राजकर्मचारी तथा रूपजीवी जैसे नट, भाट बहुरूपिये नाटक कम्पनी, फिल्म कम्पनियों में काम करने वाले प्रतिदिन क्षौर बनवा सकते है, उनके लिए मुहूर्त्त की आवश्यकता नहीं। ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय मंगल को, वैश्य शूद्र शनिवार को भी क्षौर बनवा सकते हैं, तथा ब्राह्मण को शाखेश के वार में भी क्षौर करवाने में हानि नहीं।

कन्या का नाक छेदन मुहूर्त- शुक्ल पक्ष, शुभ तिथि शुभ वार कुयोग रहित प्रथम प्रहर में कर्णविधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, स्वाति शत. इनमें नाकछेदन करना शुभ है।

कन्या को सीना पिरोना सिखाने का मुहूर्त- रिक्ता अमावस रहित तिथि, रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। अश्वि. पुन. चि. अनु. ध. इन नक्षत्रों में कुयोगादि रहित शुद्ध दिन में कन्या को चन्द्र बल देख सीना कसीदा आदि का कार्य सिखाना आरम्भ करें।

अक्षरारम्भ- उत्तरायण में जन्म से ५,७ वें वर्ष २।३।५।६।११।१२ तिथि, शुक्रवार,अश्वि, आर्द्रा.,पुन.,पु.,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,अभि.,श्र.,रे. इनमें तथा चररहित लग्नों में गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मी तथा अपने कुल देवताओं का पूजन कर अक्षरारम्भ करें।

विद्यारम्भ मुहूर्त- उत्तरायण, फाल्गुन मास छोड़कर २।३।५।६।१०।११।१२ तिथि तथा रवि, गुरू, शुक्रवार और अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा. पुन. पु. आश्ले. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. उत्तरा तीनों और रेवती नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है। र. मं. श. वार, रिक्ता तिथि, ज्ये. अश्ले. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा. उषा. श. नक्षत्र अंग्रेजी फारसी विद्यारम्भ के लिए शुभ है।

उपनयन संस्कार- बालक के जन्म से वा गर्भ से ब्राह्मण ८ वें, क्षत्रिय ११वें,वैश्य १२ वें वर्ष यज्ञोपवीत धारण करें। किसी कारणवश यह काल लोप हो तो ब्राह्मण १६वें, क्षत्रिय २२वें और वैश्य २४ वें वर्ष तक संस्कार करा सकते हैं। उत्तरायण देवशयन के पूर्व र. चं. बु. गु. शु. वार, सामवेदी को मंगलवार भी विहित है, शुक्लपक्ष की २।३।५।१०।११।१२ तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथि अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा पुष्य आश्ले. तीनों उत्तरा ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. क्रूरयुक्त तथा वेधरहित इन नक्षत्रों में उपनयन संस्कार शुभ है। बालक का गुरुबल तथा चन्द्रबल देखे। सामवेदी को भोमबल भी आवश्यक है। ज्ये. शु. २, आषाढ़ शु. १०, पौष शु. ११, माघ शु. १२, संक्रांति दिवस, रोगबाण (८।९७।२६ रवि के गतांशाः) गुरु शुक्र के बालवृद्धास्त को छोड़कर पूर्वान्ह में तथा अभिजित् मुहूर्त में यज्ञोपवीत धारण करावें। लग्नेश और च. शु. गु. ६, ८ में और च. शु. १२ वें, पापग्रह १।५।८ में अशुभ है। वृष तथा कर्क का पूर्णचन्द्र लग्न में शुभ होता है। चैत्र में मीन के सूर्य में यज्ञोपवीत संस्कार श्रेष्ठ है।

अभिजित मुहूर्त- नित्य मध्यान्ह संधिकाल की एक घटी अर्थात् स्थानीय (लोकल) ११ बजकर ४८ से १२ बजकर १२ मिनट दोपहर तक अभिजित् मुहूर्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है, अतः कोई शुभ लग्न न बनता हो तो उपनयनादि इस अभिजितमुहूर्त्त में करना शुभ है। यथा-

"अभिजित्सर्वदेशेषु मुख्यदोषविनाशकृत। मध्यंदिन गते भानौ मुहूर्त्तोऽभिजिदाह्वयः।।
नाशयत्यखिलान्दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा।"

अथ विवाह संस्कार

विवाह संस्कार सर्वश्रेष्ठ संस्कार है, इससे मनुष्य धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि कर सकता है। विवाह के पश्चात् ही पुरूष पुरूषत्व को प्राप्त होता है। विवाह होने पर पूर्ण पुरुष होता है और सदाचारी सन्तान उत्पन्न करके देश, धर्म जाति सेवा के साथ देव, ऋषि, पितृऋण से भी उन्मुक्त हो सकता है। इसलिए इस संस्कार को मुनियों ने श्रेष्ठ बताया है, यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही दाम्पत्य सुख, ऐश्वर्य भोग और उत्तम प्रजोत्पादन करके मनुष्य अपने पितृऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह-संस्कार का समय-निर्णय हमारे ऋषि-मुनियों ने अतिसूक्ष्मता से किया है। आजकल नास्तिक लोग सर्वकाल विवाह के लिए शुभ मान कर चाहे जब रजिस्टर पद्धति से कोर्ट में जाकर तथा कपोल-कल्पित नियमानुसार विवाह करवा लेते हैं, यह सर्वथा अनुचित है। विवाह के लिए वेदों में भी पर्याप्त निर्णय है। जैसे-जैसे विज्ञान-विद्या का विकास होता रहा तैसे-तैसे इस पर सूक्ष्म विचार प्राचीन आचार्यों ने किए है, जो कि आधुनिक नूतन विज्ञान से भी बहुत श्रेष्ठतम माना जा रहा है। जिसका यहाँ संक्षेप में विचार लिखते हैं-

ब्रह्मचर्य के पश्चात मनुष्य अपने विषम वर्षो में गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें। पुरुष २५ के पूर्व तथा कन्या १६के पूर्व विवाह न करें। कन्या के समवर्षों में शुभ मुहूर्त में कन्या का पिता वा पालक योग्य वर्ण के वर का निश्चय कर पहले वाग्दान करें। कन्या का वाग्दान करने से पूर्व वर-कन्या की कुण्डली का मिलान तथा गुण-मिलान अवश्य करें, ताकि नूतन दम्पती अपना जीवन सुखमय

व्यतीत कर सकें। कई नास्तिक मतवादी यह कहते है कि इतना घटित मिलान करने पर भी कहीं-कहीं वर कन्या को दुःख का सामना करना पड़ता है, तथा दाम्पत्य वियोग होता है, यह क्यों? परन्तु घटित मिलान करते समय निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए- (१) क्या वर-कन्या का जन्म टाइम ठीक-ठीक है? (२) कई वर्षों से प्राचीन गणित में अन्तर आता है अतः ऐसे गणित से बनाया जन्म पत्र ठीक-ठीक फलदायक नहीं हो सकता, इसलिए वर कन्या के जन्म पत्र.शुद्ध सूक्ष्म एवं दृक्तुल्य केतकी गणित से ज्योतिषशास्त्र के अनुसार बने है या नहीं? इसकी जांच उत्तम गणितज्ञ से करावे। (३) क्या ज्योतिषीजी ने बालक का जहाँ का जन्म है वहीं का सूर्योदय लेकर जन्म पत्र बनाया है? (४) क्या लग्नसारिणी एवं सूर्योदय जन्म स्थान के लेकर लग्नसाधन किया है? आदि बातों का निर्णय कर जन्म पत्र विद्वान् गणितज्ञ से बनवाकर मिलाने पर ही वह मिलान योग्य होकर फलदायक होता है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना- यदि कन्या और वर की जन्म कुण्डली न हो और दोनों के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम बदलने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहाँ दोषाक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझकर ऋण (—) का चिन्ह लिखी हो उसी खाने में ऊपर गुणसंख्या भी १८ से अधिक मिले उसी कोष्ठक के बाई ओर जो नक्षत्र मिले उसी के आद्यक्षरानुसार सुन्दर नाम रख लेना चाहिए।

जन्मम जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम्॥

वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम, कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म-नाम ऐसा विपरीत कदापि न लें, यह वर कन्या के लिए हानिप्रद है या दोनों का जन्म-नाम ही लें और जन्म-नाम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम लें। विशेषतः दोनों के जन्म नाम ही लेना शास्त्रोक्त और आवश्यक है। यथा-

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशेःप्रधानत्व जामराशि न चिन्तयेत् ॥१॥
कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते॥२॥
मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता। कुर्यात्षोड्शकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते ॥३॥

नाम राशि विचार

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामाराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्॥४॥
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता॥५॥
विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नाम भात् चिन्तयेत् सर्व जन्म न ज्ञायते यदा॥६॥

इत्यादि विचारों से विवाह-मेलन में जन्म समय से प्राप्त हुए नाम राशि से ही मिलान करना चाहिये। जन्म नाम प्राप्त न हो तो प्रसिद्ध नाम लेकर विवाह मिलायें।

ताराबल विचार-कृष्णाष्टम्यूर्ध्वनो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबल ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु। तारापवादः- पर्याय प्रथमे वर्ज्यःविपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वशंका वऽर्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यांशोविपदि त्याज्यः प्रत्यरौ चरमो शुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने, गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१	१०	१९	२	११	२०	३	१२	२१	४	१३	२२	५	१४	२३	६	१५	२४	७	१६	२५	८	१७	२६	९	१८	२७
जन्म शुभ			सम्पत शुभ			विपत् अशुभ			क्षेम शुभ			प्रत्यरि अशुभ			साधक शुभ			वध अशुभ			मित्र शुभ			परम मित्र शुभ		

वर वरण मुहूर्त्त

पंचांग-शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, शुभ तिथि शुभ वार, कृ.रो.पू. ३ उ. ३ नक्षत्रों में, चन्द्र बल देख शुभ लग्न तथा शुभ नवांश में, अपने कुल का पुरोहित या कन्या का भ्राता वर के यहाँ आकर पूर्वोत्तर या पूर्वा पर दिशा में बैठ कुंकुम वा केसर से वर के तिलक करें, वस्त्र यज्ञोपवीत आदि वर को देकर वर का सत्कार करें। कुलानुसार रुपया, मोहर (अशरफी) और श्रीफल वर को देकर गुड़ खजूर या बताशा वर के मुँह में देकर "मेरी बहन अमुक नाम की (भ्राता हो तो अन्य हो तो यथा उचित संबोधन दें) आपको दी है" ऐसा कहकर यह मन्त्र पढ़ें-

तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे।
अव्यंगेऽपतितेऽक्लीवे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति॥

कन्या वरण मुहूर्त्त :-

पंचांग शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, कृ. पूर्वा. ३. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. वा. विवाह -होक्त नक्षत्रों में शुभ समय में वस्त्रालंकार सहित फल पुष्पों से कन्या वरण कर कुलानुसार आचार करें।

विवाह निश्चय के कुछ नियम

वधू, वर की सगोत्र और वर की माता की सात पीढ़ी में से न हो। दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से न करें। दो सगी बहनों का, दो सगे भाइयों का वा भाई बहिनों का एक संस्कार ६ मास में साथ ही न करें। लड़की के विवाह के पीछे लड़के का विवाह हो सकता है। पृथक् माता (सौतेली) से हुए भाई बहनों का एक संस्कार द्वार भेद, मण्डपभेद और आचार्य भेद से हो सकता है। यमल (जोड़े) भाई बहनों का एक ही मण्डप में विवाह करने में हानि नहीं। इसी प्रकार विवाह से पीछे मुण्डन, यज्ञोपवीत ६ मास तक न करे। विवाह, उपनयन, चूड़ा, सीमन्त, केशान्त से ६ मास तक लघु मंगलकार्य न करें। संवत्सर भेद से जैसे मांघ, फाल्गुन में एक मंगलकार्य हो तो आगे चैत्र के बाद दूसरा मंगलकार्य कर सकते हैं, उसमें कोई दोष नहीं। ऊपर कहा हुआ ६ मास का त्यवधान तीन पीढ़ी तक के ही पुरुषों को कहा है, अन्य पीढ़ी के पुरुषों को यह बन्धन नहीं।

मंगलकार्य के मध्य पितृकर्म (श्राद्धादि) अमंगल कार्य न करें। वाग्दान के अनन्तर वर कन्या के तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाय तो १ मास के बाद अथवा सूतक निवृत्त होने पर शांति करके विवाह करने में हानि नहीं। विवाह के पूर्व नांदीमुख श्राद्ध के बाद तथा विनायक स्थापन (बड़ा विनायक) हुए बाद तीन पीढ़ी तक की मृत्यु हो जाये तो वह कन्या तथा वर कन्या के माता पिता को अशौच नहीं लगता है। निश्चित समय पर विवाह कर लेना चाहिए।

त्वखिला: शुभा:। आद्याशोविपदि त्याज्य: प्रत्यरौ चरम ... मृत्यु हो जाये तो वह कन्या तथा वर कन्या के माता
अंशास्तु शोभना:।

वर-वधू गुण मेलापक सारिणी (भाग-१)

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।१।।

कन्या	वर ▷		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
	चरण→		४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
	↓	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
मेष	४	अ.	२८ / ३	३३ / ०	२८॥	१८॥ / ४	२१॥ / −४	२२॥ / −४	२६	१७ / ३	१९ / ३	२३॥ / ३	३१॥	२८	२२ / +५	२५ / +५	१५॥ / ३५	११ / ३६	९ / २३६	१३ / ६	२२॥	२६॥ / −२	२२॥	१८॥ / −६	२५॥ / −६	१४ / ३६	१३॥ / ३५	२५ / +५	२३॥ / +५	२५	२६	२०	२०	१५ / ३	१६ / ३	१४॥ / ३४	२४॥ / +४	२६॥ / +४	अ.
	४	भ.	३४	२८ / ३	२९ / ०१	१९ / ०४१	२१॥ / −४	१४॥ / ३४	१८ / ३	२६	२७	३१॥	२३॥ / ३	२५॥ / १	२० / १५−	१८ / ३५	२६ / +५	२१॥ / ६	२० / ६	४ / १३६	१३॥ / १३	२९॥	२१॥ / −१	१७॥ / −१६	१७॥ / ३६	१९॥ / −१६	२० / −१५	१८ / ३५	२६ / +५	२७॥	२६	१० / १३२	१० / १३२	२० / −१	२४ / −२	२२॥ / २४+	१७॥ / +३४	२६॥ / +४	भ.
	१	कृ.	२७॥	२९ / १	२८ / ३	१८ / ३४	१० / २३४०	१६॥ / ४	२०	२० / १	२२	२५॥	२६॥	२३॥ / ३	१६॥ / ३५	२० / १५	२० / १५	१५॥ / १६	१५॥ / ६	१८ / ६	२७॥	१५॥ / ३	१९॥ / ३	१५॥ / ३६	१९॥ / −६	२५॥ / −६	२४॥ / +५	१८ / १२५	१२ / ३१५	१३॥ / १३	११॥ / २३	२५	२५	२७	१९ / १	१७॥ / १४	१९॥ / १४	११॥ / ३४	कृ.
वृष	३	कृ.	१८॥ / −४	२० / १४	१९ / ३४	२८ / ३	२० / ०१३	२६॥	१७॥ / +४	१७॥ / १४	१८॥ / +४	२२	२३	२० / ३	१८॥ / ३	२२ / १	२२ / १	२२ / १५	२२ / +५	२३॥ / +५	२२॥ / −६	१०॥ / ३६	१४॥ / ३६	२०॥ / ३	२४॥	३०॥	२० / ६	१३॥ / १२६	७॥ / १३६	१२ / १३५	१० / ३५२	२३॥ / +५	२९॥	३१॥	२३॥ / १	२० / १	२२ / १	१४ / ३	कृ.
	४	रो.	२३॥ / −४	२३॥ / ४	११ / ३४८	२० / ३१	२८ / ३	३६ / ०	२५॥ / ०४	२३॥ / +४	२२॥ / +४	२६	२७	१२ / ३२	१०॥ / ३२	२४॥	२७	२६ / +५	२६ / +५	२० / १५−	१९ / १६	१५॥ / ३६	९॥ / ३२६	१५॥ / ३२	२९॥	२३॥ / १	१४ / १६	१९॥ / ६	११॥ / ३६२	१६ / ३५२	१७ / ३५	२० / १५−	२४॥ / −१	२४॥ / −१	३०॥	२७	२७	१९ / ३	रो.
	२	मृ.	२३॥ / −४	१४॥ / ३४	१८॥ / −४	२७॥	३५	२८ / ३	१९ / ३४	२४ / ०४	२२॥ / +४	२६	१९ / १	२२	१९॥	१५॥ / ३	२४॥	२२॥ / +५	२६ / +५	१३ / ३५	१२ / ३६	२५ / −६	१८॥ / −६	२४॥	२१॥ / ३	२४॥	१५ / ६	१० / ३६	१७ / २६	२१॥ / +२५	२५ / +५	१३ / ३५	१९ / ३	२७	२९॥	२६	१८ / ३	२७	मृ.
मिथुन	२	मृ.	२७	१८ / ३	२२	२९॥ / +४	२७ / +४	२० / ३४	२८ / ३	३३ / ०	३१॥	१९ / −४	१२ / ३४	१४ / ४	२३॥	२९॥ / ३	२८॥	३१॥	३४	२२ / ३	१४ / ३५	२७ / +५	२०॥ / +५	१४ / ६	११ / ३६	१४ / ६	२३	१८ / ३	२५ / +२	२० / −२६	२३॥ / −६	११॥ / ३६	१३ / ३५	२२ / +५	२३॥ / +५	२५॥	१७॥ / ३	२६॥	मृ.
	४	आ.	१९ / ३	२७	२१ / १	१८॥ / १४+	२४॥ / +४	२६ / +४	३४	२८ / ३	२५ / ०३	१२॥ / ०३४	२० / −४	१३ / १४	२३॥ / १	२९॥	२१॥ / ३	२४॥ / ३	२४॥ / ३	२७ / −१	२० / −१५	२७ / +५	२० / १५+	१३॥ / १६	१७ / २६	५ / १३६२	१६ / १३	२८	२८	२३ / −६	२३ / −६	१७॥ / −१६	१९ / +१५	१२ / १३५	१७ / ३५	१९ / ३	२६॥	२६॥	आ.
	३	पुन.	२० / ३	२७	२३	२०॥ / +४	२२॥ / +४	२३॥ / +४	३१॥	२४ / ३	२८ / ३	१५॥ / ३४−	२२॥ / ०४	१७ / −४	२२॥ / +२	२६॥ / +२	२१॥ / ३	२४॥ / ३	२५॥ / ३	२७॥	२०॥ / +५	२८ / +५	२२ / +५	१५॥ / ६	२१॥ / ६	७ / ३६	१४ / ३	२७	२७	२२ / −६	२३ / −६	१७॥ / −६	१८॥ / +५	१४ / ३५	१६ / ३५	१८ / ३	२८	२७॥	पुन.
कर्क	१	पुन	२२॥ / ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ / ४	१०॥ / ३४	१४॥ / ३४	२८ / ३	३५ / ०	२९॥	१६॥ / २४	२०॥ / २४	१५॥ / ३४	१८ / ३	१९ / ३	२२	२०॥	२८	२२	२०॥ / +५	२६ / +५	११॥ / ३५	८ / ३६	२१ / −६	२१ / −६	२६	२७	२२	१२॥ / ६	८ / ३६	१० / ३६	१६ / ३५	२६ / +५	२५॥ / +५	पुन
	४	पुष्य	३०॥	२१॥ / ३	२६॥	२३	२५	१८ / ३	११ / ३४	१८ / ४	२१॥ / ४	३५	२८ / ३	३० / ०	१९॥ / +४	१५॥ / ३४	२३॥ / +४	२६	२७	१२ / ३	११॥ / ३	२६॥	२२	१९ / −५	१८ / ३५	२२ / −५	१७	११ / २३६	२२ / ६	२६	२५ / −२	१३ / ३	४॥ / ३६	१४॥ / ६	१८ / ६	२४ / +५	१८ / ३५	२७ / +५	पुष्य
	४	श्ले.	२६	२४॥ / १	२२॥ / ३	१९ / ३	११ / ३२	१९	१२ / ४	१२ / १४	१५ / ४	२८॥	२९	२८ / ३	१५ / ३४२	१५॥ / १४२	१८॥ / १४	२२ / १	२२	२६	२५॥	१२॥ / ३	१७॥ / ३	१५॥ / ३५	२० / −५	२६ / −५	२२॥ / ६	१६ / १६	८ / ३१६	१३ / १३	१३ / ३	२६	१७॥ / ६	१९॥ / ६	११॥ / १६	१७॥ / १५−	२१ / १५	१३ / ३५	श्ले.
सिंह	४	मघा	२० / +५	२० / १५	१६॥ / ३५	१७॥ / ३	९॥ / ३२	१७॥	२२॥	२२॥ / १	२०॥ / −२	१६॥ / २४+	१९॥ / +४	१६ / ३४२	२८ / ३	३० / ०१	२७॥ / १	१६॥ / १४	१६॥ / +४	२१॥ / ४	२४॥	११॥ / ३	१६॥ / ३	२२॥ / ३	२५॥	३३	२५ / +५	१९ / १५	८॥ / १३५	३॥ / ३१६	४॥ / ३६	१८॥ / ६	२४॥	२५॥	१८॥ / १	१८॥ / १६−	१९॥ / १६−	१३ / ३६	मघा
	४	पूफा	२६ / +५	१८ / ३५	२० / १५−	२२ / १	२३॥	१५॥ / ३	१९॥ / ३	२८॥	२६॥ / −२	२२॥ / २४+	१७॥ / +३४	१६॥ / १२४	३० / −१	२८ / ३	३५ / ०	२४ / ०४	२२ / +४	७॥ / १३४	१०॥ / १३	२५॥	१८॥ / १	२४॥ / −१	२३॥ / ३	२५॥ / −१	१९ / १५+	१७ / ३५	२४ / +५	१७॥ / ६	१८॥ / ६	४॥ / १३६	१०॥ / १३	१९॥ / १	२४॥	२४॥ / −६	१७॥ / ३६	२५॥ / −६	पूफा
	१	उफा	१६॥ / ३५	२६ / +५	२० / १५−	२२ / १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ / ३	२१॥ / ३	१७॥ / ३४	२५॥ / +४	१९॥ / १४−	२७॥ / −१	३५	२८ / ३	१७ / ३४	१६ / ०३४	१३॥ / १४२	१६॥ / १२	२५॥	१६॥ / १२	२२॥ / −१२	३१॥	१७॥ / १३	९॥ / १३५	२५ / +५	२५ / +५	२० / ६	२० / ६	११॥ / १६	१७॥ / १	११॥ / १३	१५॥ / ३	१५॥ / ३६	२६॥ / −६	२५॥ / −६	उफा
कन्या	३	उफा	१३ / ३६	२२॥ / ६	१६॥ / १६	२२ / १५+	२६ / +५	२४॥ / +५	३१॥	२३॥ / ३	२४॥ / ३	२० / ३	२८	२२ / १	१७॥ / १४	२५ / +४	१८ / ३४	२८ / ३	२७ / ०३	२४॥ / १२+	१६॥ / १२६−	२५॥ / +४	१६॥ / १२४	१८ / १२	२७	१३ / १३	१४ / १३	२९॥	२९॥	२४॥ / +५	२४॥ / +५	१६ / १५+	१६॥ / −६	१०॥ / ३१६	१४॥ / ३६	१७॥ / ३	२८॥	२७॥	उफा
	४	हस्त	१० / २३६	२० / ६	१७॥ / ६	२२ / +५	२५ / +५	२६ / +५	३३	२३॥ / ३	२४॥ / ३	२० / ३	२८	२३	१८॥ / +४	२२॥ / +४	१६ / ३४	२६ / ३	२८ / ३	२८ / ०	२० / ०४	२६॥ / +४	१८॥ / +४	२०	२६	१३ / ३	१५ / ३	२७	२८॥	२३॥ / +५	२४॥ / +५	१८॥ / +५	१९ / ६	८॥ / ३६२	१३॥ / ३६	१६॥ / ३	२६॥	२७॥	हस्त
	२	चि.	१३ / ६	५ / १३६	१९ / ६	२३॥ / +५	२० / १५	१२ / ३५	१९ / ३	२६ / १	२५॥	२२	१२ / ३	२७	२२॥ / +४	८॥ / १३४	१४॥ / १२४	२४॥ / १२	२७	२८ / ३	२० / ३४	१९ / ०४	२६॥ / +४	२८	११ / ३	२५	२७	१४ / १३	२२ / १	१७ / १५	१८॥ / +५	१५॥ / ३५	१६ / ३६	२४ / −६	१६॥ / १६	१९॥ / १	१०॥ / १३२	१९॥	चि.
	नक्षत्र→		अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

इनमें मेलापक (वर्ण वश्य आदि) की गुण सारिणी दी है। ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, तिरछी पंक्ति में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं, ऊपरी भाग में नीचे के महादोषों के चिन्ह दिये हैं। चिन्हों का काम यह है एक नाड़ी के दोष की जगह (३) गण महादोष (मनुष्य, राक्षस) के स्थान में १ भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६) नव पंचम में (५) (द्विर्द्वादश) में (४) वैर योनि में (२) लिखे हैं

वर-वधू गुण मेलापक सारिणी (भाग-२)

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।१।।

कन्या ↓ / वर ▶	चरण →	नक्षत्र	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
			४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२
			अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.
तुला	२	चि.	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४
	४	स्वा.	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ −६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४
	३	वि.	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ --६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४
वृश्चिक	१	वि.	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ −५	१८ −५	१५॥ −५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७
	४	अनु.	२४॥ −६	१५॥ ३६	१९॥ −६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ −५	१८ ३५	२१ −५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३
	४	ज्ये.	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ −६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ −५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४
धनु	४	मूल.	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१३ -६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७
	४	पूषा.	२६ +५	१८ ३५	१८ −२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ −१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३
	१	उषा.	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	[illegible] १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १
मकर	३	उषा.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ −६	२२ −६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५
	४	श्र.	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ −६	२१ −६	२२ −६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५
	२	ध.	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ −६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५
कुम्भ	२	ध.	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२५॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६
	४	शत	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६
	३	पूभा.	१८ ३	२५ +२	२० −१	२४॥ −१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६
मीन	१	पूभा.	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ −१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ −१६	२३॥ +६	१४॥ ३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१
	४	उभा.	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ −१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ −१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२
	४	रेव.	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥
		नक्षत्र →	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.

कन्या ↓ / वर ▶	चरण →	नक्षत्र	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
			२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
			चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
तुला	२	चि.	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६	चि.
	४	स्वा.	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ५३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६	स्वा.
	३	वि.	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६	वि.
वृश्चिक	१	वि.	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५	वि.
	४	अनु.	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	अनु.
	४	ज्ये.	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५	ज्ये.
धनु	४	मूल.	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ २४+	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥	मूल.
	४	पूषा.	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४−	१५॥ ३४	१७॥ १४−	२८ +२	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१	पूषा.
	१	उषा.	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ −१४	२६॥ −१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३	उषा.
मकर	३	उषा.	२४ −१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ ४+	३०॥ .	३०॥	२२॥ ३	उषा.
	४	श्र.	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३	श्र.
	२	ध.	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२	ध.
कुम्भ	२	ध.	१८ ३५	२० −५	२४॥ −५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२	ध.
	४	शत	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४	शत
	३	पूभा.	१८॥ १५+	२६ +५	२० −१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० −१४	२८॥ −१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२	पूभा.
मीन	१	पूभा.	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५−	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२	पूभा.
	४	उभा.	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ −१५	२४ −१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०	उभा.
	४	रेव.	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ −२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३	रेव.
		नक्षत्र →	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

और जहाँ थोड़ा दोष समझा गया वहाँ (-) चिन्ह है। जहाँ स्वामी मैत्री आदि के दोष का पूरा निर्वाह है वहाँ (+) ऐसा चिन्ह बता दिया और जिस जगह भर्ता के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इसका भी महादोष) है। वहाँ (०) शून्य का चिन्ह है। और जहाँ कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां गुण ही लिखे हैं।

... से साथ ...पति मित्र हो तो विवाह शुभ होता है।

और जहाँ थोड़ा दोष समझा गया वहाँ (-) चिन्ह है। जहाँ स्वामी मैत्री आदि के दोष का पूरा निर्वाह है वहाँ (+) ऐसा चिन्ह बता दिया और जिस जगह भर्ता के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इसका भी महादोष) है। वहाँ (०) शून्य का चिन्ह है। और जहाँ कोई भी महादोष नहीं मिलता वहाँ गुण ही लिखे हैं।

विवाह काल निर्णय

प्रथम गर्भ के ज्येष्ठ वर-कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता, इसको त्रि-ज्येष्ठ कहते हैं। वर कन्या में से एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम लिखा है। फिर भी आवश्यकता में कृत्तिका का सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में भी विवाह होते हैं। इस पंचांग के प्रारंभ में देश भेदानुसार बहुत विचारपूर्वक सभी विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।

त्रिबल शुद्धि :-

श्रेष्ठ गुरु :- जन्म राशि से २।५।७।९।११ वाँ। पूज्य गुरु- १।३।६।१०वाँ।

नेष्ट गुरु :-४।८।१२ वाँ। उच्चमित्र स्वराशि का हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य है।

श्रेष्ठ सूर्य :- ३।६।१०।११ वाँ पूज्य सूर्य १।२।५।७।९ वाँ। नेष्ट सूर्य ४।८।१२ वाँ।

श्रेष्ठ चन्द्र :- १।२।३।५।६।७।९।१०।११ वाँ। पूज्य चन्द्र १२वाँ। नेष्ट चन्द्र ४।८ वाँ।

उपनयन में बालक १६ वर्ष से ऊपर हो गया हो और विवाह में कन्या १८ वर्ष से अधिक हो गई हो तो स्वराशि (धनु. मीन राशि) और उच्च (कर्क राशि) का गुरु जन्म या नाम राशि से चौथा १२वां हो तो द्विगुण पूजा से और अष्टम हो तो भी त्रिगुणित पूजा से विवाह और उपनयन संस्कार शुभदायक होता है, ऐसा ऋषियों का मत है।

विवाह में स्तम्भ स्थापन दिग्ज्ञान

मण्डप में प्रथम स्तम्भ-स्थापना के लिये सूर्य ५।६।७ राशि का हो तो ईशान कोण में, ८।९।१० राशि के सूर्य में वायव्य कोण में, ११।१२।१ की संक्रांति में नैर्ऋत्यकोण में, २।३।४ राशि के सूर्य में अग्निकोण में विवाह कार्य के लिए स्तम्भ स्थापित करें।

वधू वर तथा बटु की राशि पर से तैलादि लेपन के दिन

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वधू वर तथा बटु की राशि से दिन तथा मौंजी दिवस के पूर्व दिन लेवें।

१- **नृदूरदोष** - वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूर होने से नृदूर दोष होता है।

२- **कन्या दूर-** कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र बहुत दूर होने 'कन्या दूर' शुभ है।

३- कन्या राक्षस गण की हो और वर मनुष्य गण का हो तथा वश्यादि ६ (वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, कूट, नाड़ी) शुभ हो तो विवाह कल्याणप्रद होता है।

४-वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) होने से धन और कल्याण का देने वाला होता है।

५-कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) हो तो मृत्युदायक विवाह होता है।

६- वर कन्या की एक राशि हो और भिन्न नक्षत्र, भिन्न राशि और एक नक्षत्र हो और चरण भिन्न हो तो विवाह शुभ होता है।

७- अशुभ नवपंचम, अशुभ द्विर्द्वादश, अशुभ षडष्टक (मृत्यु षडष्टक) हो और राशि कूट मैत्री हो तथा नवांशपति मित्र हो तो विवाह शुभ होता है।

न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
ताराविरुद्धे नवपंचमे वा राशीशमैत्री शुभदो विवाहे।।

नाड़िदोषश्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषश्च पादजाम्।।
एकनक्षत्रजातानां नाडिदोषो न विद्यते। अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहे वर्जितः सदा।।
रोहिण्यार्द्रा-मृगेन्द्राग्नी-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्ष मेतेषां नाडिदोषो न विद्यते।।
मरणे पितृमात्रोश्च संग्राह्यौ नवपंचमौ।

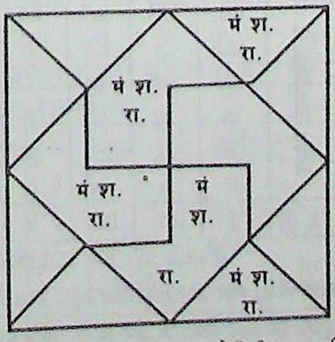
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वर। एतत्त्रिकोणकं ग्राह्य पुत्रपौत्रसुखावहम्।।

कुण्डली मिलान- वर कन्या की कुण्डली मिलान उत्तम होना आवश्यक है, क्योंकि द्रव्य, पुत्र, पति, पत्नी सुख, ऐश्वर्य इत्यादि का विचार कर मिलान करने से दाम्पत्य में सुख होता है। जैसे मनुष्य भाग्यहीन हो और स्त्री भाग्यवती मिले तो मनुष्य स्त्री के भाग्य से अपना जीवन सुखमय बना सकता है। वर कन्या दोनों भाग्यवान् हों तो वह उत्तम होता है। दोनों भाग्यहीन हो तो नेष्ट होता है। ऐसे ही वर को द्विभार्या योग तथा कन्या को वैधव्य योगादि का विचार करें। वर कन्या की कुण्डली में परस्पर मारक हो तो शुभ होता है, जैसे वर की कुण्डली में द्विभार्या योग हो और कन्या की कुण्डली में पति सुख योग न्यून हो तो मिलान उत्तम होता है। तथा कन्या को वैधव्य योग हो और वर को विधुरयोग हो तो मिलान उत्तम होता है। इसी तत्व को ग्राह्य मानकर मंगल आदि का दोष लिखा है। विशेषतः मंगल का निर्णय भावचलित से करना चाहिए।

लग्ने तुर्ये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृ विनाशाय भर्ता कन्या-विनाशकृत्।।

लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और व्यय स्थान में मंगल होने से कन्या पति को नष्ट करती है और वर कन्या को नष्ट करता है, इसलिए वर कन्या दोनों को मंगल होना आवश्यक है। मंगल लग्न कुण्डली से तथा चन्द्र कुण्डली में देखना चाहिए। एक के तो मंगल हो तो और दूसरे के मंगल न होकर मंगल के स्थान में पापग्रह (शनि राहु) हो तो मंगल का दोष नहीं होता। यथा-

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।



अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते।।
जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत।।
सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपिवाऽथवा भौमे।
वक्रिणी नीचारिगृहे वार्कस्थेपि वा न कुजदोषः।।
केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडाये्प्यद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा।।

इत्यादि परिहार से भौम दोष नष्ट होता है। फिर भी वर कन्या के लग्न लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम-अष्टमेश इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योगों को विचार कर ज्योतिषी कुण्डली

का मिलान करे। परन्तु यह स्मरण रहे कि कुण्डली ठीक-ठीक बनी होनी चाहिए। कन्या को अनेक कुयोगों द्वारा वैधव्य योग जान पड़े तो शालिग्राम से, पिप्पल वृक्ष से, अर्क वृक्ष से, वा कुम्भ से यथा विधि विवाह कर गौदान, सुवर्ण-दान, महामृत्युंजयादि जप करके कन्या का विवाह करने से कन्या सौभाग्य पुत्र, धन से युक्त होती है। इस पंचांग में आगे दी गई मेलापक सारिणी से गुण मिलान करें।

जन्मोत्थं च विलोक्य वालविधवायोगं विधाय व्रतम्,
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतरां दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाह स्फुटम्,
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः॥

विवाहांग कार्यारम्भ- पंचांग शुद्धि देख विवाह दिन से पूर्व ३।६।९ दिन को छोड़ कर कन्या को चन्द्र बल देखकर विवाह के नक्षत्र में जिस स्त्री को चन्द्रबल उत्तम हो उसके हाथ से हल्दी हाथ लगाना, दलना, पीसना, कूटना, कलशादि स्थापना करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घडाना, वेदी रचना, चंदोवा, बांधना, वस्त्र सिलाना गणेशादि पूजन, नांदि श्राद्ध आदि करना श्रेष्ठ है।

विवाह में दश दोषों का विचार- विवाह समय निश्चित करने के लिए ग्रन्थकारों ने २१ महादोषों को त्याग ने को लिखा है, परन्तु कई दोषों का परिहार होने से दश दोषों का विचार करते है और इन दश मे से क्रूरयुति, वेध, मृत्यु-बाण, क्रान्तिसाम्य और दग्धा से पांच महा दोष ही विवाह में सर्वत्र वर्ज्य है।

चैत्र, पोष मास को छोड़कर देशाचारानुसार मासों में से रो. मृ. उत्तरा ३, म. ह. स्वा. अनु. मू. रेवती इन नक्षत्रों में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य (महापात) और दग्धा-तिथि ये दश दोष है। इनका विचार कर मुहूर्त करना चाहिए। हमने ये दश दोष तथा देशाचारानुसार विवाह मुहूर्त्त इस पंचांग में दिये है। दोषों के क्रम से जहां दोष है वहां (ऽ) और जहां दोष नहीं है वहां (।) ऐसी खड़ी लकीर दी है। विवाह मुहूर्त्त में वर कन्या के जन्म मास, जन्म तिथि, जन्म नक्षत्र लग्न से तथा राशि से अष्टम लग्न वर्ज्य करें। लग्न तथा राशीश के शत्रु राशि का लग्न नवांश न लें। यह विवाह सूक्ष्म केतकी गणित से निश्चित करने से समय शुद्ध और वर कन्या को कल्याण कारक होता है। अन्तर वाले प्राचीन स्थूल गणित से विवाह मुहूर्त्त देखने से फल में विपरीतता प्राप्त होती है और अशुभ होने की सम्भावना रहती है।

यानाविवाहोत्सवाजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या॥

लत्तादोष चक्र १

ग्रहा.	सूर्य	पूर्णचन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
वि.न.	१२	२२	३	७	६	५	८	९
दिशा	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम
फल	धन नाश	[illegible]	मृत्यु	भय	बन्धु नाश	कार्य हानि	कुल क्षय	मरण

उदाहरण :- सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो तो सूर्य नक्षत्र से १२वां होने से यह सूर्य का लत्ता दोष वाला विवाह नक्षत्र होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष भी जानें।

पातदोष चक्र २ - हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूलयोगों का अंत जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा	उभा	रे.	वि.न.
आर्द्रा पुनः श. पूफा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये. ध म. ह.	अश्वि. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पूफा उभा. पूभा.	भ. मृ. श. पूभा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य. ह. रे.	अ. आ उषा. पूभा. पूषा. पूफा.	रो. ज्ये. ध. अश्ले. मू. उभा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उषा.	भ. श. वि. उफा. मू. पूफा.	अ. म. ध. ज्ये. पूफा. स्वा	सूर्याक्रान्त नक्षत्र

३. युतिदोष :- जिस नक्षत्र का विवाह हो तो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का युति दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता; अपितु श्रेष्ठ होता है। सू.मं.श.रा.के. की युति दारिद्रय, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

वेध दोष चक्र ४

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	वि.न.
अभि.	उषा.	श्र.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.	ग्र.न.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह और नीचे के के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो वेध दोष होता है, यह सर्वत्र विशेष रूप से त्याज्य है।

जामित्र दोष चक्र ५

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	वि.
अनु.	ज्य	ध.	पू.भा.	उभा.	अश्वि	कृ.	मृ.	पुन.	उफा	ह.	ग्र.न.

बाणज्ञानाय सुलभ चक्र ६

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशिअर्कस्यं	५कर्म वर्ज्या	वार वर्ज्या	समय परत्वेन वर्ज्या
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ त्याज्यां
वन्हि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्य
नृप	४।१३।२२	नृप सेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यं
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्योः वर्ज्यम्

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र होता है। ऊपर विवाह नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र है, अर्थात् १४ वें नक्षत्र में, पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्ज्य है।

एकार्गल दोष ७- व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ,

फल | धन नाश | मृत्यु | भय | बन्धु ... मरण ... व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ,

अतिगंड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

उपग्रह दोष ८- सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २४वें, २५वें नक्षत्र पर चन्द्र हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रान्तिसाम्य दोष चक्र ९

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनुः	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

उदाहरण- मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में स्थूल क्रांति साम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्ज्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य गणित से सिद्ध होता है। इस पंचांग के विवाह मुहूर्तों में गणितगत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही लिया गया है।

दग्धा तिथि दोषः १०

ध.	वृष	कर्क	कं.	सिंह	म.	सूर्य
मीन	कुम्भ	मेष	मि.	वृश्चि.	तु.	राशि
२	४	६	८	१०	१२	तिथि

इन उक्त संक्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियां विवाह में वर्जनीय है।

भुजंगं क्रान्तिसाम्यं च वाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पंच विवर्जयेत्। लत्ता-दिदोषाणं परिहारवाक्यानि- लत्तामालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरुक्षेत्र वागर जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रांत) एकार्गल च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। उपग्रहर्क्षकुरुवाल्हीकेषु (आगरा प्रान्त बलखबुखारा) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्त) च लत्तितं भम्। त्यजेतु विद्धंकिल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौड़े (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त) मासदग्धा च तिथया मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष परिहार :- चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्वोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः।

युति परिहार :- चित्रां गते पातवित्रिदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रु-तिश्वोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः।

युति परिहार :- स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे सदा॥ अत्यावश्यके। **वेध परिहार:-** पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)। अतोन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयगो द्वितीयक चतुर्थगस्तु चादिमम् भिनति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः) अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः-भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः। अस्यापवादः- ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानी च भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। जामित्रपरिहारः (व्यवहार समुच्चये)- स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे। हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्॥ मुहूर्तचिन्तामणवपि- एकार्ग लोप- ग्रहपातलता जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपत्रे लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥

विवाहे लग्न शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
च. पापा.	०	शुक्र	०	०	च. शु. लग्नेश	सर्वे	चं.मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्या ग्रहाः
चंद्रक्रूर	कुलिकं क्रान्ति साम्यंच				चं.	मं.	चंद्र भौम	विद्धभंच गोधुला त्याज्याः				

सर्वथा लग्नभंगयोगाः - व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखा न शस्ताः लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतो ग्लौः लग्नेट्शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ)॥ वर्गोत्तमं विनांत्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्याशं पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगत्तस्मोऽपि दम्पत्योर्निघ्नप्रदः॥ पग्वन्धादिलग्नानां गौड़मालवयोरेव त्यागः। वादरायख :- मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गहिताः॥

कर्त्तरी दोष :- लग्नस्य पृष्ठाग्रयोरसाध्वोः। सा कर्त्तरी स्याष्जुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रो यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्त्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या"। केषाचिल्लग्नदोषाणां परिहारः- पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्त्तरी। दोषौ नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमी दोषकृत्रीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न॥

दोषापवादा ज्योतिर्निबंधे :- दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पा कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह। अपवादन्तरम्- उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसस्थे सितौ वापि पन्नमान्गरुडो यथा। मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवाशग्रहोद्भवाः ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी॥ अब्दावनर्तुमासोत्याः पक्षतिथ्यवर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्व ग्रहकृतारिष्टमेकोऽपि विलय नयेद्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। चूनं विहाय दैत्येज्य सहस्र लक्षमंगिराः॥

स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहलग्ने ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	म.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्तगणपतौ
३ ६ ८ १	२ ३ ११	३ ६ ११	१।२ ३।४ ५।६ ९ १० ११	२।१ ३।४ ६।५ ९ १० ११	१।२ ४।५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविंशो पकाधिकम्।
३॥	५॥	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकाबलम

अथ गोधूलि लग्न विचार- लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवन शालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्।। लग्न यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धेसति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते।। गोधूलि त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके, हेमन्तेशिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे। ग्रीष्मेऽर्धास्तमिते वसन्तसमये भानौ गते दृश्यता, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः।।

गोधूलिके त्याज्यदोषाः- कुलिकंक्रान्तिसाम्यश्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पंचदोषैस्तु दूषितः।। अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे। लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः।। **"अस्त याते गुरुदिवसे सौरे सार्के।"** अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्यास्त से पहले (क्योंकि सूर्यास्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा।) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादि जातीनां विवाह मुहूर्त्तः- कृष्णे पक्षे भानुभौमार्कजानां वारे योगे चापि धिरण्ये निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्या।

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम्

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फल

अन्यच्च- सूर्यभात ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेध भृगुगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः।।

वधू प्रवेश मुहूर्त्त :- जब विवाह होने पर वधू पति के घर पहले पहल आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर दिनों में अथवा ५,७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनो में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५ वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिन में तिथ्यादि पंचांग शुद्धि चन्द्रबल गुरु शुक्र के मूढत्वकां भी विचार नही करना। **"व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्।"** रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. भ. म. उत्तरा ३ पुष्य. अनु. इन नक्षत्रों और चं. बु. गु. शु. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में, २।५।८।११ लग्नों में, चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाहः- वधू प्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः। दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः।।

द्विरागमन मुहूर्त्त :- पिता के घर से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे वा ५वें वर्ष में वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध, गुरु, वा शुक्र वार में, २।३।६।७ या १२वीं राशि के लग्न में, ह अश्वि. रेवती तीनों उत्तरा. रो.स्वा.पुन.पुष्य.श्र.ध.श.मृ.मू. चित्रा और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है।

सम्मुख दक्षिण निषेधः- सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र में पितृगृह से पति के घर जाना निषेध है। सम्मुख वा दक्षिण शुक्र में नव वधू जावे तो वन्ध्या हो, बालक को लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो। गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न हो, परन्तु रेवती से मृग. नक्षत्र तक चन्द्रमा रहे तब तक जाने में दोष नहीं। यथा- **रेवत्यादि मृगान्ते च यावतिष्ठति चन्द्रमा। तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः।।** अति आवश्यकता में शुक्र की शान्ति कर श्वेत वस्त्र, छत्र, स्वर्ण दान देकर जावे। राजविग्रह उपद्रव, दुर्भिक्ष, विवाह, देवता यात्रा आदि में जाना हो तो सम्मुख दक्षिण शुक्र का दोष नहीं।

विवाह के पश्चात वधू के रहने का नियम :- विवाह के पश्चात प्रथम ज्येष्ठ महीने में वधू भर्ता के घर रहे तो पति के ज्येष्ठ भ्राता को, अषाढ़ में सास को, पौष में ससुर को अधिक मास में अपने आपको हानि करती है। चैत्र में पिता के यहां रहे तो पिता को हानि करती है। ज्येष्ठादि के अभाव में (न हो तो) उस मास का कोई दोष नहीं होता।

प्रथम युवति स्त्री संगम मुहूर्त्त :- पुत्र चाहने वाले रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्री के बाद समरात्रि में, रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३ रे. रिक्ता अमावसरहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम प्रहर को छोड़कर शुभ समय में चित को प्रसन्न कर प्रथम स्त्री प्रसंग करे।

नववधू को रसोई बनाने का मुहूर्त्त :- पंचांग शुद्धि देखकर वधू को चन्द्रबल देख, रिक्ता और क्षयरहित तिथि, शुभवार कृ.रो.मृ. उत्तरा ३ पुष्य वि.ज्ये.श्र.ध.श. रेवती इन नक्षत्रों में २।५।८।११ लग्नों में, लग्न चतुर्थ अष्टम शुद्ध, सप्तम भाव बलवान होने पर नूतन वधू से रसोई बनवाये।

पतिगृह से पितृगृह आने का मुहूर्त्त :- गुरु, चन्द्र, शुक्रवार शुभतिथि, भ.आ. अश्ले. मघा. पूर्वा.ज्ये.मू. इन नक्षत्रों के बिना अन्य नक्षत्रों में शुभ लग्न पंचांग शुद्धि देखकर मुहूर्त निश्चित करें।

स्त्री को वस्त्रा भूषण धारण मुहूर्त्त :- रिक्तामारहित तिथि चं. गु. शु. बु. वारा. अश्विनी ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे. इन नक्षत्रों में नवीन वस्त्र धारण और स्वर्ण रजत आदि आभूषण धारण करना शुभ है।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त्त :- आश्विन, का., वै., माघ., मार्ग., फा. तथा मेष, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ के सूर्य १।५।७।१०।१३।१५ तिथि या जिस देवता का अनुष्ठान हो उसकी तिथि, र.शु. गुरुवार, चन्द्रवार मध्यम, पुन, पुष्य, स्वा. उ. ३, श्र. ध. श. रे. अ. ह. अनु. रो. मृ. वि. ज्ये. वा स्वस्वामी नक्षत्रों में लग्नसे ३।६।११ वें पापग्रह १।४।५।७।९।१० वें में शुभ ग्रह, चन्द्र ताराबल सहित, गुरु शुक्र के उदय में, शुभ लग्न मृत्यु आदि कुयोग रहित समय में, विष्णुका स्थिर में, शिव का चर में, दुर्गा का द्विस्वभाव लग्न में, कूर्मचक्र शुद्धि सहित अनुष्ठान आरम्भ करें।

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते। चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्धयति।।

बावडी, बगीचा, तालाब, कूआं, मकान का आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ व्रतोद्यापन दान, गोदान, प्रथम उपाकर्म, वृषोत्सर्ग, चौल (मुण्डन) देवता स्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह अपूर्व देव तीर्थ दर्शन, सन्यास, अग्न्याधान, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये

कर्म गुरू के अस्त, बाल वृद्धत्व और मलमास में करना निषेध है।

कुयोगास्तिथिवारोत्था तिथिभोत्था भवारजाः। हूणवंगखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा।।

कुयोग परिहार- तिथि वार में उत्पन्न हुए क्रकच (वारदग्ध) मृत्यु आदि रोग हूणदेश बंगाल और खसदेश (शिलांग) में ही वर्ज्य करने चाहिए, अन्य देशों में नहीं।

परिघार्द्ध पञ्चशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः। व्याघाते नवनाड्यश्च वर्ज्या सर्वेषु कर्मसु।। परिघयोग का अर्धयोग, शूल योग की ५ घटी, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटी, व्याघात की ९ घटी, सर्व कार्य में वर्ज्य करें। तथा जन्म मास, जन्म तिथि जन्म नक्षत्र व्यतीपात, वैधृति, भद्रा पितृदिन, श्राद्ध, तिथि का क्षय, वृद्धि काल, अधिकमास, क्षयमास, कुलिक प्रहरार्ध पात, महापात (क्रान्तिसाम्य) और विष्कम्भ योग की तीन घटी प्रारम्भ की सदा शुभ कार्य में वर्ज्य करनी चाहिए।

दुकान खोलने का मुहूर्त्त- रिक्ता तिथि और मंगल के अतिरिक्त अन्य वारों में ह.वि.रो. रे. तीनों उत्तरा, पुष्य, अनु., अश्वि., अभि., नक्षत्रों में कुम्भ लग्न को त्यागकर अन्य लग्नों में, २।१०।११ भावों में शुभ ग्रह हो, ३।६ में पाप ग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पापरहित हो, चन्द्र शुक्र लग्न में हो तो अत्युत्तम। कर्त्ता की दशान्तर्दशा भी शुभ होनी चाहिए।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त- अश्वि.रो.मृ.पुन. उत्तरा ३ ह.चि.अनु.श्र.रे. नक्षत्र रिक्तारहित तिथि, र.च.बु.गु.शु. वार, चर द्विस्वभाव शुभयुत दृष्ट लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हो और ८।१२ वें स्थान में पाप ग्रह नहीं होने पर शुभ होता है।

सेवाक्रम (नौकरी) मुहूर्त्त- अ.मृ.चि.ह.पुष्य.अनु.रे. नक्षत्र, रिक्तारहित तिथि, र.च.बु.गु.शु. वार शुभ ग्रह लग्न में हो, १०वें या ११वें सूर्य मंगल हो तो अत्युत्तम। स्वामी और सेवक की परस्पर राशीश मैत्री हो तो सर्वश्रेष्ठ समझना।

अष्टम चन्द्रदोष परिहार- **नीचराशिगते चन्द्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।**
चन्द्रेष्टमारिरिः फस्थे दोषो नास्ति न सशयः।।

अष्टम भौमदोष परिहार- **नीचराशिगते भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो किञ्चिदपि न विद्यते।।

षष्ठस्थ शुक्रदोष परिहार- **नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
भृगुषट्कस्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः।।

द्रव्य प्रयोग मुहूर्त्त- पुन.स्वा.मृग.रे.चि.अनु.वि. पुष्य श्र.ध.श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु, ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल- मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग हस्त नक्षत्र युक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिए। कृ.रो.आर्द्रा.अश्ले.उ.३.वि.ज्ये.मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यातिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर ऊतारू होना पड़ता है।

ईंट का भट्ठा- में आग देने या ईंट बनाने में मंगल और शनिवार शुभ है।

श्री काशीनाथमते क्रय-विक्रय मुहूर्त्त- पुष्य.पू.भा.अनु.श्र.ह.म.स्वा, उत्तरा ३, आश्ले.रे. एषु.भेषु सत्तिथौ चंद्र शुभ दिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रय विक्रयणं कार्यम्।

वस्तु बेचने के नक्षत्र- पू.फा.पू.षा.पू.भा.वि.कृ.अश्ले.भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये है, **नोट-** बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ प्रतिशत हानि रहेगी, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचनेके नक्षत्र दिखाये गये है, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० वार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य है।

नालिश अर्जी का मुहूर्त्त- ४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो। कृ.आ.पुन.अश्ले.म.ज्ये.मू.वि. पूर्वा ३ नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार- गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणाकर आठ का भाग देवे जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होती है। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०) काक। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए। और देवस्थान की भूमि को बाहर से नापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौडे घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्रह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वास्तुकर्तु नक्षत्र यावद् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तके	७	धनलाभ
पृष्ठे	७	हानि नैःस्वम्
हृदये	७	सुख लाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान- घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई, चौड़ाई के गुणन) को ८ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग दें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय क्रम हो तो शुभ है, अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमिका शुभाशुभ जानना- नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमि पूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एकहाथ लंबा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें, यदि

जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा- मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे, अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले, अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय जो पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त्त- वैशा.श्रा.मार्ग.फाल्गुन और मे. वृष. कर्क. सिंह. तुला वृश्चिक मृग कु. सूर्यके सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे है, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है। २।३।५।६।७।१०।११। १२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं.,बु.,गु.,शु.,श. वारों में रो., मृ., चित्रा ह., स्वा., अनु. उत्तरा ३ ध. श. रे. बेध रहित नक्षत्रों में १।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पंचवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ-ग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पाप ग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादिका विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्
सूर्य नक्षत्र से गृहारम्भे नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थान	नक्ष	फल
शीर्ष	३	अग्निदाह
अ.पादे	४	शून्यमसत्
पृ.पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द:कुक्षौ	४	लाभ:शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाश
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष- पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. श्र. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते है। वि.आ.चि.ध.श.अश्ले. इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्- "संक्रांति मिति दिन पाचवें, सप्तम नवमे जाय। दस इक्कीस चौबीसवें षट् दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीया:।" अन्यच्च-सूर्यके नक्षत्रसे ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नही होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	उत्तर	वायव्य
अर्थहीन	सुपुष्टि	ऐश्वर्य	पुत्रनाश	स्त्रीनाश:	गृहेशनाश:	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारो तिथिसंप्रयुक्तो वेदाहतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे॥ त्रिशून्य शेषे भुवि संस्थितं च, भूसंस्थिति सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:॥

अथ चुल्लिचक्रविचार- सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्यु प्रद। ८ बाहु के सुन्दर सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुजा के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिकचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनावे, तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त- माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभन:। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेय: सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयो:।। (यहाँ-चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३, अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में, रिक्तामारहित तिथियों में, चं.बु.गु.शु. इन वारों में, २।५।८।११ लग्न में। अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर ग्रह हों, १,६,८,१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८ वी राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो ऐसे समय में आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश वेद ध्वनि मंगलगान वाद्य के साथ से दम्पत्ति को गृह-प्रवेश शुभ है।

गृह प्रवेश का विशेष मुहूर्त्त- पुराने अर्थात् ज़ीर्ण या तृण कुटीर अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै.श्रा.का.मार्ग.फा. मासमें शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठेदिग्भाग: शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायध्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य	मी.मेष वृष	मि.कर्क सिंह	कन्या तुला वृश्चिक	धनु: मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य:	सिंह कं. तु.	वृश्चि.ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क
जलाशायारम्भे सूर्य:	मं. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु:
खातदिशा	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्र सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	नक्ष	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति:
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश:
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त- अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ, नक्षत्र हों या चन्द्रमा मकर के उत्तरार्द्ध, मीन या कर्क में हो लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप वापी जलचक्रम्

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्कूप वापी जलचक्रम्		
ईशान ३	पूर्व ३	आग्नेय ३
क्षार जल	खण्डितजल	सुजल
उत्तर जल	मध्य ३ स्वादु	दक्षिण ३
उत्तम जल	तथा शीघ्रजल	निर्जल
वायव्य ३	पश्चिम ३	नैऋत्य ३
मिश्रितजल	जल	अमृत जल

गणनाक्रम मध्य पूर्व आग्नेयदक्षिणा दिक्रमेण बोध्यम्

ईशान	पूर्व	आग्नेय
अ.भ.कृ. मध्यजल	पुन.पु.अश्ले जलाभाव	म.पूफा.उफा. सुजलम्
उत्तर पूभा.उभा. रे.मिष्ठजल	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्रजलं	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र.ध.श. क्षारजल	पश्चिम मू.पू.उषा अमृतजलं	नैर्ऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजम्

सूर्यभात्तड़ाचक्रम्		
ईशान २	पूर्व २	आग्नेय. २
जलनाश	शोक	जलाधिक्य
उत्तर २	मध्य ५	दक्षिण २
अमृतं जल	बहुजल	जलनाश
वायव्य २	प. २	नैऋत्य २
जलनाश	बहुजल	अमृत जल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलं-वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम-पूर्व आग्नेय द. नै.प.वा.उ.ई. मध्य, वारिवाह। वाहे चामृत संज्ञकम्।

जलाशयारामप्रतिष्ठा मुहूर्त्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठापुत्तरायणे,
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः,
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।

अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा.अनु.श्र.ध.श.उत्तरा. ३.रे.एषु भेषु, कुजशनिवर्जिनवारेषु, २।३।५।६।७। ८।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथौ शुक्ले, १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादि रहितकाले, कर्तुः सूर्य चन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु। लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभे, ३।६।११ सेन्दुभिः पापैः, पूर्वान्हे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्- सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्रा द्व्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त:- श्र. ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३ पुन. पुष्य. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।।

अग्नि का वास किस लोक में है- जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लगजाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है,शेष १बचने पर आकाश में प्राण हानिकारक, शेष२ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि ही गणना शुक्ल प्रति पदा से,वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहूति-चक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम् (सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)									
सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष- यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा। नित्येननैमित्तके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयेऽग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः। दुर्गभङ्गे गृहे वाऽपि विवादे शत्रु विग्रहै। शान्तिकमे नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

पापग्रहमुखेहवनेकृते शान्ति :- क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवनेऽशुभे। शान्ति विधाय गां दद्यात् ब्राह्मणाय कुटम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीन्। गोमूत्रमधुगन्धाद्यै रर्चिता प्रतिमां ततः। कुण्डे निवाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी-धनी विचार :- स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागे योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।

यथा- अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना। फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना, जिसका शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचत वाले का ऋणी जानना।

भूमि का लेन-देन- गुरु, शुक्रवार, १,५,६,११,१५ तिथि, मृग. पुन. अश्ले. म. पूफा. वि. अनु. मूल. पू. षा. उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त - मृ. रे. वि. अनु. रो. उत्तरा ३ ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु. भेषु, रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वारे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु, भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हल चक्रम् सूर्य भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने					बीजवपने राहु चक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त- ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा. ३. चि. अनु. मू. रे. स्वा. ध. रो. मृ. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेष- रवेरौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः। तस्मादिनत्रयंतत्तु बीजवापे परित्यजेत्।

नवान्नभक्षण मुहूर्त्त- मू.रे.वि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.विष घटी रहित नक्षत्रों में शुभ है। नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू.बु.गु. शुक्रवार शुभ है।

जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा- मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे, अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले, अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय जो पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त- वैशा.श्रा.मार्ग.फाल्गुन और मे. वृष. कर्क. सिंह. तुला वृश्चिक मृग कु. सूर्यके सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे है, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं.,बु.,गु.,शु.,श. वारों में रो., मृ., चित्रा ह., स्वा., अनु. उत्तरा ३ ध. श. रे. बेध रहित नक्षत्रों में १।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पंचवाण और भूमिशयन से रहित दिनो में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पाप ग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादिका विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्
सूर्य नक्षत्र से गृहारम्भे नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थान	नक्ष	फल
शीर्ष	३	अग्निदाह
अ.पादे	४	शून्यमसत्
पृ.पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द:कुक्षौ	४	लाभ:शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाश
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष- पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. श्र. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते है। वि.आ.चि.ध.श.अश्ले. इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्- "संक्रांति मिति दिन पाचवें, सप्तम नवमे जाय। दस इक्कीस चौबीसवें षट् दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीया:।" अन्यच्च-सूर्यके नक्षत्रसे ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	उत्तर	वायव्य
अर्थहीन	सुपुष्टि	ऐश्वर्य	पुत्रनाश	स्त्रीनाश:	गृहेशनाश:	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारो तिथिसंप्रयुक्तो वेदाहत तद्गुणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नागे द्वाभ्यां च शेषे सलिलं च स्वर्गे।। त्रिशून्य शेषे भुवि संस्थितं च, भूसंस्थिति सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।।

अथ चुल्लिचक्रविचार- सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्यु प्रद। ८ बाहु के सुन्दर सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुजा के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिकचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनावे, तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त- माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभन:। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेय: सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयो:।। (यहाँ-चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३, अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में, रिक्तामारहित तिथियों में, चं.बु.गु.शु. इन वारों में, २।५।८।११ लग्न में। अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर ग्रह हों, १,६,८,१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो ऐसे समय में आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश वेद ध्वनि मंगलगान वाद्य के साथ से दम्पत्ति को गृह-प्रवेश शुभ है।

गृह प्रवेश का विशेष मुहूर्त्त- पुराने अर्थात् ज़ीर्ण या तृण कुटीर अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै.श्रा.का.मार्ग.फा. मासमें शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठेदिग्भाग: शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायध्यां	नैऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य	मी.मेष वृष	मि.कर्क सिंह	कन्या तुला वृश्चिक	धनु: मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य:	सिंह कं. तु.	वृश्चि.ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क
जलाशायारम्भे सूर्य:	मं. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु:
खातदिशा	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैऋत्यां

द्वारशाखाचक्र सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	नक्ष	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति:
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश:
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त- अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों या चन्द्रमा मकर के उत्तरार्द्ध, मीन या कर्क में हो लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।९।०।४।११।१२लग्न हों तो अत्युत्तम है।

१११

सूर्यनक्षत्रात्कूप वापी जलचक्रम्

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्कूप वापी जलचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्नेय ३ सुजल
उत्तर जल उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

गणनाक्रम मध्य पूर्व आग्नेयदक्षिणा दिक्रमेण बोध्यम्

ईशान	पूर्व	आग्नेय
अ.भ.कृ. मध्यजल	पुन.पु.अश्ले जलाभाव	म.पूफा.उफा. सुजलम्
उत्तर पूभा.उभा. रे.मिष्ठजल	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्रजलं	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र.ध.श. क्षारजल	पश्चिम मू.पू.उषा अमृतजलं	नैर्ऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजम्

सूर्यभात्तड़ाचक्रम्

ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्नेय. २ जलाधिक्य
उत्तर २ अमृतं जल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य २ जलनाश	प. २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृत जल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलं-वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम-पूर्व आग्नेय द. नै.प.वा.उ.ई. मध्य, वारिवाह। वाहे चामृत संज्ञकम्।

जलाशयारामप्रतिष्ठा मुहूर्त्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे,
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः,
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।

अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा.अनु.श्र.ध.श.उत्तरा.३.रे.एषु भेषु, कुजशनिवर्जिनवारेषु, २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथौ शुक्ले, १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादि रहितकाले, कर्तुः सूर्य चन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु। लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभे, ३।६।११ सेन्दुभिः पापैः, पूर्वान्हे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्- सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्रा द्व्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्तः- श्र. ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३ पुन. पुष्य. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।।

अग्नि का वास किस लोक में है- जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लगजाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है,शेष १बचने पर आकाश में प्राण हानिकारक, शेष२ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि ही गणना शुक्ल प्रति पदा से,वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहूति-चक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष- यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा। नित्येननैमित्तके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयेऽग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः। दुर्गभङ्गे गृहे वाऽपि विवादे शत्रु विग्रहै। शान्तिकमे नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

पापग्रहमुखेहवनेकृते शान्ति :- क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवनेऽशुभे। शान्ति विधाय गां दद्यात् ब्राह्मणाय कुटम्बिने। आयसी प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीन्। गोमूत्रमधुगन्धाद्यै रर्चिता प्रतिमां ततः। कुण्डे निवाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी-धनी विचार :- स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागे योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।

यथा- अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना। फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना, जिसका शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचत वाले का ऋणी जानना।

भूमि का लेन-देन- गुरु, शुक्रवार, १,५,६,११,१५ तिथि, मृग. पुन. अश्ले. म. पूफा. वि. अनु. मूल. पू. षा. उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त - मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा ३ ह. अश्वि. पुष्य-अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मृ. म. वि. एषु. भेषु, रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वारे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु, भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हल चक्रम् सूर्य भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने				
३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपने राहु चक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त- ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा. ३. चि. अनु. मू. रे. स्वा. ध. रो. मृ. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेष- रवेरौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः। तस्मादिनत्रयंतत्तु बीजवापे परित्यजेत्।

नवान्नभक्षण मुहूर्त्त- मू.रे.वि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.विष घटी रहित नक्षत्रों में शुभ है। नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू.बु.गु. शुक्रवार शुभ है।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त्त- अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना। अन्य पशु पुन. पूर्वा ३ ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थ लाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक, फिर दो-दो के क्रम से गाय के समान फल जानो। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्र-गणना क्रम शुभाशुभफल सूर्य नक्षत्र तक गिने (नौमी चौदस चौथ चौपाया, मंगल हानि करे घर आया)।

सूर्य नक्षत्रात् काष्ठादि (गुहाराआदि) संस्थापनचक्रम्

६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ क्वाथकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ	नक्षत्र संख्या

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त- मृ.रे.चि.अनु.उत्तरा.३ रो.ह. पुष्य, अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. शुक्रवार हो, शुक्लपक्ष में ४।६।११।१२ लग्न में शुभ है। तृणकाष्ठादि संग्रह निषेध तृण कष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चंद्रमा में नहीं करना चाहिए।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त्त- धनि.,अश्वि.,हस्त-चित्रा.,अनु.,पुन.,पुष्य.,ज्ये. एवं रेवती नक्षत्र में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध मुहूर्त्त: ह. अ. पुष्य अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल. जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

यात्रा मुहूर्त्त विचार

ह. म. श्र. अश्वि. मृ. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. नक्षत्र यात्रा में अत्युत्तम। रो. उत्तरा ३ पूर्वा ३ मू. मध्यम और भ. कृ. आर्द्रा अश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. ये नक्षत्र यात्रा में निन्द्य है। आत्यावश्यकता में भरण्यादि नक्षत्रों में आरम्भ की क्रमशः ७।२१।१०।१४।११।४०।१४।१४।१४ घटियां यात्रा में त्याज्य करें। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा और शुक्लपक्ष की द्वितीया तथा दिग्द्वार लग्न में यात्रा शुभ है। जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टम लग्न नवांश में तथा कुम्भ लग्न या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें।

चन्द्रवास

मेष, सिंह, धनुः का चन्द्र पूर्व में। वृष, कन्या, मकर का चन्द्र दक्षिण में। मिथुन, तुला, कुम्भ का चन्द्र पश्चिम में। कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्र उत्तर दिशा में। सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः। सर्वे दोषाः लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

अथ योगिनीवास चक्र

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१/९	३/११	५/१३	४/१२	६/१४	७/१५	२/१०	८/३०	तिथयः

दिक्शूलचक्र

पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	दिशा
चंद्र	रवि	गुरु	बुध	वार
शनि	शुक्र	०	मंगल	वार

कालराहु चक्र

पूर्व	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	दिशा
श	शु.	गु.	बुध	मं.	चं.	र.	वार

संमुखकालवासवर्ज्यम्

समय	शूल	आवश्यके दिक्शूले पदार्थाः
प्रातःकाल	पूर्वदिशा	[illegible]
मध्याह्न	दक्षिण	[illegible]
संध्याकाल	पश्चिम	[illegible]
अर्धरात्रि	उत्तर	[illegible]

एकराशिस्थ चन्द्रघट्यात्मक निवासः

पूर्व	द०	प०	उ०	पूर्व	द०	प०	उ०	दि
१७	३२	५१	६९	८६	१०१	१३१	१३५	घ

यात्रा शुद्धि- जन्म लग्नेश, राशीश, जन्मदशेश ये अस्त हों और गुरु, शुक्र अस्त सिंहस्थ गुरु, नीचस्थ गुरु ये सब यत्न से वर्ज्य करें।

लग्न शुद्धि- शुभग्रह १।४।५।७।९।१० वें पापग्रह ३।६।१०।११ वें श्रेष्ठ हैं। चन्द्रमा १।६।८।१२ वें, लग्नेश ६।७।८।१२ वें शनि १० वें शुक्र ७ वें नेष्ट है।

अथ यात्रायां दिग्दोहदचक्रम्

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
घृत	तण्डुल	तिलोदक	सक्तुक	मत्स्य	गोधूम	दुग्ध	पायस	वस्तूनि

यात्रायां वारदोहम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	बार
रसाल	पायस	कांजी	पक्वदुग्ध	दधि	पयोश्री	ति.अ.	वस्तुनि

अथ नक्षत्रशूलम्

पू०	द०	प०	उ०	दिशा
ज्ये.	पूभा.	रो.	उफा.	भानि

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशः- १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथि। चं. बु. गु. शु. श. वार। अ. रो. मृ. पुष्य. उ. ३ ह. चित्रा. अनु. स्वा. श्र. रे. ध. श. नक्षत्र। ३।५।६।८।९।११।१२ लग्न, ४।८ शुद्ध हों १।४।७।१०।५।९स्थान में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ वें में पापग्रह हो। शुभ नवांश में प्रवेश करें।

यात्रायां शुभशकुनानि- विप्र २ अश्व, गज, मद, फल, अन्न, दुग्ध, जौ, दधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि,

मत्स्य, समस्त्री, गौरीकन्या, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्तघट, एते प्रयाण सभे

प्रश्न-विचारः

... लग्नगौ कार्यगौ यतौ। मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ

मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरीकन्या, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्तघट, एते प्रयाण समये दृष्टाः सत्फलदा भवन्ति। अशुभशकुनानि-वन्ध्यास्त्री, चर्म, ईन्धन, सन्यासी, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बेकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, रोवन, शत्रु, महिषयुद्ध, छिक्का, दुष्टवाणी एते प्रयाणसमये दृष्टा अशुभफलदा भवन्ति।

सर्वाङ्गसिद्धि योग- शुक्लादि तिथि और नक्षत्र तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखकर क्रमशः ७।८।३ का भाग देना। शेष प्रथम जगह में शून्य हो तो यात्रा में क्लेश, मध्य में शून्य हो तो धन क्षति और अन्त में शून्य हो तो महाकष्ट होता है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्- यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलम्। विप्रादि क्रमत. स्वर्णसर्वधान्याम्बरादिकम्। (सर्वे स्वप्रियवस्तु वा)। गमनदिशी नगराद् बहिः गृहान्तरे वा विपादिभिः यज्ञोपवीतादिना प्रस्थानं कार्यम्। तच्च क्षितीशो १०, माण्डलीकः ७, सामान्यजन ५ दिनाभ्यन्तरे यात्रा कार्या। परतोऽन्यमुहूर्त्तस्यावश्यकतां बोध्या। प्रस्थानकर्तुर्नियमाः- त्रिरात्रं वर्जयेत्क्षीरं पंचाहं क्षुरकर्म्म च। तदहश्चावशेषाणि सप्ताहं मैथुनं त्येजत् ।।१।। कटुतैलगुडक्षार पक्व मासाशनं तथा। भुक्त्वा यो यात्ससौ मोहाद् व्याघितः स निवर्तते।।

उ (उद्वेग) च (चंचल) ला (लाभ) अ (अमृत) का (काल) शु (शुभ) रो (रोग)

इस चर्तुघटिका मुहूर्तमें ३।।। घटी की जगह दिनमान व रात्रिमानके अष्टमांशानुसार कुछ पल न्यूनाधिक भी हो जाते हैं।

जन्मचन्द्रप्रशंसा:- कृषि-भवन-विवाहे-नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादि कृत्ये। पपटविधिअभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्त इति वदति वराहः क्षौर-यात्रां विहाय।। गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।

दिने चतुर्षटिका मुहूर्त्त								रात्रौ चतुर्षटिका मुहूर्त्त						
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	घटी	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	३।।।	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
च	का	उ	अ	रो	ला	शु	३।।।	अ	रो	ला	शु	चं	क	उ
ला	शु	च	का	उ	अ	रो	३।।।	चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ला	शु	च	का	उ	३।।।	रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	र	ला	शु	चं.	३।।।	का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला	३।।।	ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	ला	शु	चं	का	उ	अ	३।।।	उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
रो	अ	रो	ला	शु	चं	का	३।।।	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

प्रश्न-विचारः

कार्यसिद्धिज्ञानम्- लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगौ युतौ। मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ।।१।। एक्षु योगेषु चन्द्रदृष्टौ [illegible] कार्यसिद्धिरवश्यम्भवत्यन्यथा सन्देहः।

प्रश्नतो वर्षशुभाशुभविचार- तिथिवारर्क्ष योगानां युति [illegible] अब्दसरान्विता। प्रष्टुर्नामाक्षरैर्युक्ता त्रिहता शेषके फलम् ।।१।। एकेन क्लेश, समता द्वाभ्यां, त्रितये महात्सुखम्।

पथिकागमन विचार-

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं त्रयोदश समन्वितम्। अष्टभिश्च हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्।।

एकेन गमनं भवति द्वाभ्यां मार्ग उच्यते। तृतीये चार्धमार्गे च चतुर्थे द्वारमागतः।।

पञ्चमे पुनरावृत्ति षष्ठे व्याधि समन्वितः। सप्तमे शून्यतावृत्ति अष्टमे मरणं ध्रुवम्।।

प्रश्नाक्षरों को द्विगुणित कर १३ जोड़ दें और ८ का भाग दें। जो शेष बचे उनका फल इस प्रकार बताए- १. आने की सोच रहा है। २. चल पड़ा है। ३. रास्ते में है। ४. शीघ्र आ जाएगा। ५.ठहर के आएगा। ६. अस्वस्थ है। ७. नहीं आएगा। ८. मृत्यु या कष्ट में है।

देशान्तर से पत्र आयेगा कि नहीं?- प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान में शुभ ग्रह युक्त अथवा दृष्ट हो तो पत्र जल्दी आयेगा, मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले। प्रश्न लग्न में चन्द्र हो और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आयेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा।

पुत्र लाभ होगा कि नहीं?- तत्कालीन तिथि की संख्या को ४ से गुणाकर, १ जोड़ना, तदनन्तर वार तथा योग की संख्या युक्त करके २ से भाग देना, जो लब्धि आये उसको तीन से गुणा करके ४से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें। १ शेष बचे तो विलम्ब से पुत्र सन्तान होगा, चिरंजीविता के लिये पार्थिव शिवपूजन करना चाहिए। शेष २ बचें तो पूर्व जन्म के पाप के कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंश पुराण का नवान्ह सुनने तथा सन्तान गोपाल के सवालक्ष जप से सम्भव है कि ईश्वर कृपा करे। ३ शेष बचे रहें तो पुत्र लाभ होगा, किसी गरीब की कन्या को विवाह दें, या उस विवाह में गुप्त दान से मदद करें, ऐसा करने से होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा। ४।१।० शेष बचे तो सन्तान शीघ्र होगी।

विवाह होगा कि नहीं?- यदि लग्न से २।३।६।७।१०।११ स्थानों में चन्द्रमा को वृहस्पति देखे तो विवाह हो जायेगा। यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध वृहस्पति इनमें से कोई देखे अथवा व्ययेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७ इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा या शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जायेगा।

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन- प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलाये या लिखायें, उनमें १२ का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध हो। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश हो। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि हो, यह फल कहे।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.	आदि
पुन.	मघा	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू.भा.	अश्वि.	रो.	मध्य
पुष्य	अश्ले	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	मृ.	अन्त्य

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र या नाम नक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्र में एक नाड़ी पर हों तो रोगी की मृत्यु होती है। प्रति दिन देखने से जिस दिन वह योग मिले उस दिन रोगी की मृत्यु जाने। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा युद्ध के समय भी वर्जित है।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम्- तृतीय, नवम, द्वादश, षष्ठ स्थान में प्रश्न लग्न से कोई पाप ग्रह हो तो विष, जल, शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना। यह योग पापग्रहों के साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता। यदि बारहवें आठवें स्थान में राहु हो तो प्रेत दोष, बृहस्पति के होने से पितर दोष,चन्द्रमा के होने से जलदेवी का दोष कहें। सूर्य के होने से देवी दोष अथवा लग्न अष्टम द्वादश में सूर्य हो तो श्रेत्रपाल का दोष कहें। शनि के होने से अपने गोत्रकी देवी(सती)का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थानमें हो तो भूतदोष जानना। व्यय तथा अष्टम स्थान में भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्र के होने से जलदेवी का दोष होता है। परंच जो मनुष्य स्वधर्म निष्ठ नहीं है अथवा जो ईश्वर से विमुख रहते है, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते है। दोष सूचक ग्रह अपनी राशि तथा उच्च में हो, बलवान हों तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोष सूचक ग्रह भी नीच शत्रु क्षेत्र में हो तो उक्त दोष असाध्य होते हैं। बलवान् पाप ग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते है, यदि शुभ ग्रह केन्द्र स्थानों में हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उनका दोष दूर हो जाता है।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्- तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न प्रहर इनको जोड़ें और ८ का भाग दें। शेष ३।७ बचें तो देवता की बाधा, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेत की बाधा जानना। "उदयाद्घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ।१॥ राम (३), बाण (५), रसा (६), ऽष्टौ च (८), नन्द (९), रुद्राश्च (११), जीवति। एक (१), पक्ष (२), युगा (४), सप्त (७), दशा (१०), ऽर्काः (१२) नात्र जीवति।"

अथ गर्भिणीपुत्रादि ज्ञानम्- तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्। सप्तभक्ते समे शेषे कन्या च विषमे सुतः॥१॥ तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार की रविवार से और नक्षत्र की अश्विनी से करना।

आयुर्निर्णयः- जन्मलग्नेश अष्टमेश से और जन्मलग्न चंद्र से आयु का निर्णय करें। दोनों में भेद हो तो जन्मलग्न होरालग्न से प्राप्त आयु जाने। चरे चरे, स्थिरे द्विस्वभावे दीर्घायुः। द्विस्वभावे द्विस्वभावे, चरे स्थिरे, मध्यमायुः। स्थिरे स्थिरे, चरे द्विस्वभावे अल्पायुः। १।४।५।७।९।१०।११ में पापग्रह हो तो मध्य आयु, इसके अतिरिक्त अल्पायु होती है। लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यमायु, शत्रु हो तो अल्पायु जाने।

अथ नष्टवस्तु ज्ञानम्

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम्। दिक संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्तथा॥ एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद् भांडसंस्थितम्। तृतीये जलमध्यस्थं अंतरिक्षे चतुर्थके॥ तुषस्थं पंचमे तुस्यात्षठे गोमयमध्यगम्। सप्तमे भस्मध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम्॥

अथ नष्ट वस्तुज्ञानाय चक्रं सफलम्

अन्ध	मन्द	मध्य	सुलोचन	संज्ञा
रो.पुष्य.उ. फा.वि.पूषा. ध.रे.	मृ.आश्ले. ह.अनु.उषा. श. अ.	आ.म.चि. ज्ये.अभि पूभा.भ.	पुन.पू.फा. स्वा.मू.श्र. उभा.कृ.	नक्षत्रा-णि
पूर्वे गतम्	दक्षिणेगतं	पश्चि. गतं	उत्तरे गतं	दिशा
शीघ्र लाभः	यत्नेन लाभः	दूरे श्रवण	नैव प्राप्ति	फलं

पशुरन्वेषणं (सूर्यभात्)
९ भ्रमति वनेषु।
१५ ग्रामसमीपस्थः।
२२ ग्रहे आगतः।
२३।२४ नष्टप्राप्तिः।
२५।२६।२७ निधनमपि न श्रूयते।

जयपराजय प्रश्न- यदि तीसरे भाव से लेकर आठवें तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो प्रतिवादी (मुद्दालह) जीतेगा। यदि नवम भाव से लेकर दूसरे भाव तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो मुदई जीतेगा और यदि पापग्रह लग्न में बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा, परन्तु वहां पापग्रह नीच राशि में हो या अस्त हो अथवा शत्रु राशि के घर में हो तो हार जायेगा। यदि लग्न और सप्तम स्थान में पापग्रह तुल्य बली हो अथवा लग्नेश और सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो सन्धि हो जायेगी। पापग्रह न्यूनाधिक बली हों तो अधिक बली ही जीतेगा, अर्थात् लग्न स्थित पापग्रह बली हो तो प्रश्नकर्त्ता की विजय और यदि सप्तमस्थ पापग्रह बलवान् हो तो शत्रु की विजय होगी। यदि लग्न सप्तमातिरिक्त स्थान में दो पापग्रहों की परस्पर पूर्ण दृष्टि हो तो वादी प्रतिवादी दोनों शस्त्रों से घायल होते हैं। प्रश्न काल में लग्नेश सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो युद्ध छिड़ेगा, अन्यथा नहीं।

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व+ पश्चिम—अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व+ पश्चिम−अन्तर

स्टैण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
अकलेश्वर	२१।३८	७३।०३	−३७।४८	१६/३६
अंजार	२३।०७	७०।०१	−४९।५६	−२८।४४
अंबरनाथ	१९।१२	७३।१०	−३७।२०	−१६।०८
अंबाजी	२४।२२	७२।५६	−३८।१६	−१७/०४
अंबाला	३०।२३	७६।४६	−२२।५६	−०१।४४
अंबिकापुर	२३।१०	८३।१५	+०३।००	+२४।१२
अक्कलकोट	१७।३३	७६।१३	−२५।१२	−०३।५२
अकोला	२०।४३	७७।०२	−२१।५२	−००।४८
अगरतला	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६
अचलगढ़	२४।३८	७२।४८	−३८।४८	−१७।३६
अचलपुर	२१।१९	७७।३०	−२०।१०	+०१।१२
अजन्ता	२०।३६	७५।३६	−२७।३६	−०६।२४
अजमेर	२६।२७	७४।४०	−३१।२०	−१०।०८
अनन्तपुर	१४।४०	७७।३५	−१९।४०	+०१।३२
अनन्तनाग	३३।४४	७५।१०	−२९।२०	−०८।०८
अमरेली	२१।३६	७१।१२	−४५।१२	−२४।००
अमरावती	२०।५६	७७।५१	−१८।३६	+०२।३६
अमलनेर	२१।०३	७५।०३	−२९।४८	−०८।३६
अमृतसर	३१।३८	७४।५३	−३०।२८	−०९।१६
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	−०१।०४	+२०।००
अलवर	२७।३४	७६।३८	−२३।२८	−०२।१६
अल्लेपि	०९।३०	७६।२२	−२४।३२	−०३।२०
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	−११।२०	+०९।५२
अलीबाग	१८।३९	७२।५०	−३८।४०	−१७।३६
अलीगढ़	२७।५४	७८।०५	−१७।४०	+०३।२८
अहमदनगर	१९।०५	७४।४४	−३१।०४	−०९।५२
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३७	−३९।३२	−१८।२८
आँबलीयासण	२३।१७	७२।२५	−४०।२०	−१९।०८
आगरा	२७।११	७८।०२	−१७।५२	+०३।२०
आगास	२२।३०	७२।५४	−३८।२४	−१७।१२
आजमगढ़	२६।०५	८३।१२	+०२।४८	+२४।००
आणंद	२२।३५	७२।५८	−३८।०८	−१६।५६
आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	−१५।५६	+०५।१६
आदोनी	१५।३४	७७।१८	−२०।४८	+००।२४
आबू	२४।३७	७२।४३	−३९।०८	−१७।३६
आमोद	२२।००	७२।५३	−३८।२८	−१७।१६
आरकोणम	१३।०६	७९।४१	−११।१६	+०९।५६

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
आर्वी	२०।५९	७८।१३	−१७। ८	+०४।०४
आर्द्रा	२३।३२	८६।४१	+१६।४४	+३७।५६
ओरवा	२२।२८	६९।०५	−५३।४०	−३२।२८
अखनूर का.	३२।५४	७४।३५	−३१।४०	−१०।२८
अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	−१६।२८	+४०।४४
अलीगंज भो.	२७।२०	७९।१२	−१३।१२	+०८।००
अलीगंज ह.	२६।१२	८४।०८	+०६।३२	+२७।४४
अमेठी	२६।०७	८१।४७	−२०।५२	+१८।२०
अगरतला त्रि.	२३।४९	९१।१७	+३५।०८	+५६।२०
अमरोहा	२८।५४	७८।३४	−१५।४४	+०५।२८
आसनमोल	२३।४२	८७।२०	+१९।२०	+४०।३२
इगतपुरी	१९।४२	७३।३५	−३५।४०	−१४।२२
इचलकरंजी	१६।४१	७४।२७	−३२।१२	−११।००
इटारसी	२२।३७	७७।४६	−१८।५६	+०२।१६
इटावा	२६।४७	७९।०२	−१३।५२	+०७।२०
इटावा बीना	२४।१०	७८।११	−१७।१६	+०३।५६
इन्दगढ़	२५।४४	७६।१२	−२५।१२	+०४।००
इन्दौर	२२।४३	७५।५३	−२६।२८	+०५।१६
इलाहाबाद	२५।२८	८१।५२	−२ ।३२	+१२।४०
इलोरा	२०।०५	७५।१०	−२९।२०	−०८।०८
ईडर	२३।५०	७३।००	−३८।००	−१६।४८
उज्जैन	२३।११	७५।४३	−२७।०८	−०५।५६
उधना	२१।१२	७२।५४	−३८।२४	−१७।१२
उमरखेड	१९।३६	७७।४१	−१९।१६	+०१।५६
उटकमंड	११।१७	७६।४४	−२३।०४	−०१।५२
उदयपुर मेवा.	२४।३५	७३।४२	−३५।१२	−१४।००
उन्नाव	२६।३३	८०।३०	−८०।००	+१३।०४
उम्बरगाँव	२०।१२	७२।४४	−३९।०४	−१७।५२
उमरकोट	२२।४७	७४।५०	−३०।४०	−०९।२८
उमरेठ	२२।४२	७३।०८	−३७।२८	−१६।१६
उल्लासनगर	१९।१३	७३।०७	−३७।३२	−१६।२०
उस्मानाबाद	१८।०८	७६।०५	−२१।४०	−००।२८
ऊधमपुर	३२।५५	७५।०७	−२९।३२	−०८।२०
उडीपी	१३।२१	७४।४५	−३१।००	−०९।४८
ऊंझा	२३।४७	७२।२४	−४०।२४	−१९।१२
एकलिंगजी	२४।४६	७३।४३	−३५।०८	−१३।५६
एटाकासगंज	२७।३५	७८।४१	−१५।१६	+०५।५६

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
एरनाकुलम	०९।५९	७६।१८	−२४।४८	+०३।३६
ऐरंडोल	२०।५५	७५।१९	−२८।४४	−०७।३२
एल्लोर	१६।४३	८१।०५	−०५।४०	+१५।३२
एलिचपुर	२१।१८	७७।३३	−१९।४८	+०१।२४
ओरछा	२५।२१	७८।३८	−१५।२८	+०५।४४
औरंगाबाद	१९।५२	७५।१९	−२८।४४	−०७।४०
ओरंगा वि.	२४।४५	८४।२५	+०७।४०	+२८।५२
कांकरोली	२५।०२	७३।५४	−३४।२४	−१३।१२
कांडला	२३।०१	७०।१४	−४९।०४	−२७।५२
कडपा	१४।२८	७८।४९	−१४।४४	+०६।२८
कडी	२३।१८	७२।२०	−४०।४०	−१९।२८
कडोद	२१।१३	७३।१४	−३७।०४	−१५।५२
कटक	२०।२८	८५।५८	+१३।३६	+३४।४८
कटनी	२३।५०	८०।२३	−०८।२८	+१२।४४
कटोमण	२३।२८	७२।१४	−४१।०४	−१९।५२
कोण्णूर	११।५१	७५।२१	−२८।३६	−०७।२४
कन्याकुमारी	०८।०४	७७।३६	−१९।३६	+०१।३६
कन्नौज	२७।०२	७९।५८	−१०।०८	+१०।५६
कपडवंज	२३।०२	७३।०५	−३७।४०	−१६।२८
कपूरथला	३१।२२	७५।२२	−२८।३२	−०७।२०
करजत	१८।५५	७३।२०	−३६।४०	−१५।२२
करमाला	१८।२४	७५।१२	−२९।१२	−०८।००
कर्णूल	१५।५०	७८।०३	−१७।४८	+०३।२४
करनाल	२९।४२	७७।०२	−२१।५२	−००।४०
करमसद	२२।३४	७२।५४	−३८।२४	−१७।१२
करीमनगर	१८।२८	७९।०६	−१३।३६	+०७।३६
कलकत्ता	२२।३५	८८।२३	+२३।३२	+४४।४४
कलोल	२३।१४	७२।२८	−४०।०८	−१८।५६
कांचीपुरम	१२।५०	७९।४३	−११।०८	+१०।०४
काकीनाडा	१६।५९	८२।१३	−१ ।०८	+२०।०४
कानपुर	२६।२७	८०।२१	−८ ।३६	+१२।३६
काठमांडू ने.	२७।४२	८५।१७	+११।०८	+३२।२०
कानानोर	११।५२	७५।२५	−२८।२०	−०७।०८
कामठी	२१।१०	७९।१२	−१३।१२	+०८।००
कारंजा	२०।२९	७७।२९	−२०।०४	+०१।४८
कारबार	१४।४८	७४।०८	−३३।२८	−१२।१६
कालपी	२६।०८	७९।४५	−११।००	+१०।१२

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
कालका	३०।४७	७६।५७	−२२।१२	−०१।००
कालीकट	११।१५	७५।४५	−२७।००	−०५।४८
कालीघाट	२२।३१	८८।२१	+२३।२४	+४४।३६
कासगंज	२७।४८	७८।३९	−१५।२४	+०५।४८
किशनगंज	२६।०७	८७।५८	+२१।५२	+४३।०४
किशनगढ़	२७।५२	७०।३४	−४७।२८	−२६।१६
किशनगढ़ अ.	२६।३५	७४।५१	−३०।३६	−०९।२४
किशनगढ़ ज.	२७।१०	७५।२२	−२८।३२	−०७।२०
कुंभकोणम्	१०।५८	७९।२३	−१२।२८	+०८।४४
कुमठा	१४।२५	७४।२४	−३२।२४	−११।१२
करूड़वाड़ी	१८।०५	७५।२५	−२८।२०	−०७।०८
कुशलगढ़	२३।०८	७४।२७	−३२।१२	−११।००
कूचबिहार	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।५२
कृष्णा	१६।२५	७७।१९	−२२।४४	+००।२८
केशरीयाजी	२४।०५	७३।४०	−३५।२०	−१४।०८
कोचीन	०९।५८	७६।१५	−२५।००	−०३।४८
कोटा	२५।११	७५।५०	−२६।४०	−०५।२८
कोटायम	०९।०५	७६।३२	−२३।५२	−०२।४०
कोडाइकेनाल	१०।१४	७७।२८	−२०।०८	+०१।०४
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१३	−३३।०८	−११।५६
कोन्नूर	११।२०	७६।४८	−२२।४८	−०१।३६
क्वीलोन	०८।५३	७६।३८	−२३।२८	−०२।१६
कच्छभुज	२३।१५	६९।४०	−५१।२०	−३०।०८
कांगड़ा	३२।०९	७६।१८	−२४।४८	−०३।३६
कालाबाग पा.	३२।५८	७१।३६	−४३।३६	−२२।२४
काबुल अफ.	२४।२७	६९।०६	−५३।३६	−३२।२४
काशी	२५।२०	८३।००	+०२।००	+२३।१२
काडी लंका	०७।२०	८०।४५	−०७।००	+१४।१२
कायमगंज	२७।३५	७९।२१	−१२।३६	+०८।३६
किश्तवाड़	३३।१२	७५।४८	−२६।४८	−०५।३६
कुरूक्षेत्र	२९।५८	७६।४८	−२२।४८	−०१।३६
केम्बलपुर पा.	३३।४८	७८।१८	−४०।४८	−१९।३६
कोलम्बो	०६।५६	७९।५६	−१०।२६	+१०।४६
खंडवा	२१।५०	७६।२०	−२४।४०	−०३।२८
खंडाला	१८।४५	७३।२२	−३६।३२	−१५।२०
खंभांत	२२।१९	७२।३६	−७९।३६	−१८।२४
खंभालिया	२२।१२	६९।४०	−५१।२०	−३०।०८

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व+ पश्चिम–अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
खड़गपुर	२२।२०	८७।१९	+१९।१६	+४०।२८	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	–४७।३६	–२६।२४	पानीपत	२९।२७	७६।५८	–२२।०८	–००।५६	मैसूर स्टेट	१२।१९	७६।४०	–२३।२०	–०२।०८
खाराघोड़ा	२३।१०	७१।४२	–४३।१२	–२२।००	झालावाड़	२४।३६	७४।०९	–३३।२४	–१२।१२	पुरणिया	२५।४९	८७।३१	+२०। ४	+४१।१६	मुँगेर	२५।२३	८६।३०	+१६।००	+३७।१२
खुर्जा	२८।१४	७७।५१	–१८।३६	+०२।३६	झाँसी	२५।२६	७८।३४	–१५।४४	+०५।२०	पूना	१८।३०	७३।५२	–३४।३२	–१३।२०	रतलाँम	२३।१९	७५।०३	–२९।४८	–०८।३६
खडब्रह्मा	२४।०३	७३।०४	–३७।४४	–१८।३२	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	–२५।१२	–०४।००	पोरबंदर	२१।३८	६९।३६	–५१।३६	–३०।२४	रत्नागिरी	१७।००	७३।१९	–३६।४४	–१५।३२
खेड़ा	२२।४५	७२।४०	–३७।२०	–१८।०८	ट्रावनकोर	०९।००	७७।००	–२२।००	–००।४८	फतेहपुर	२७।०६	७७।४०	–१९।२०	+०१।५२	रांची, रामगढ़	२३।२०	८५।२०	+११।२०	+३२।३२
खेरालु	२३।५४	७२।३८	–३७।२८	–१८।१६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	–२६।४०	–०५।२८	फर्रूखाबाद	२७।०३	७९।३७	–११।३२	+०९।४०	रामपुर उ.प्र	२८।४७	७९।०२	–१३।५२	+०७।२०
खैरपुर	२७।२८	६८।४७	–५४।५२	–२३।४०	डलहौजी	३२।३०	७५।५४	–२६।२४	–०५।१२	फरीदकोट	३०।४०	७४।४५	–३१।००	–०९।४२	रामेश्वर	०९।१७	७९।१८	–१२।४८	+०८।२४
गया	२४।४८	८५।०१	+१०।०४	+३१।१६	डिवाई	२८।१२	७८।१५	–१७।००	+०४।१२	फिरोजपुर	३०।५७	७४।३६	–३१।३६	–१०।२४	रायबरेली	२६।१४	८१।१३	–०५।०८	+१६।०४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	–१७।२०	+०३।५२	डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।५६	फैजाबाद	२६।४७	८२।०८	–०१।२८	+१९।४४	राजमहेन्द्री	१७। ५	८१।४८	–०२।४८	+१८।२४
गाजीपुर	२५।३६	८३।३५	+०४।२२	+२५।३४	डूंगरपुर(राज.)	२३।५०	७३।४३	–३५।०८	–१३।५६	बड़ौदा	२२।१८	७३।१३	–३७।०८	–१५।५६	रायपुर म.प्र.	२१।१५	८१।३८	–०३।२८	+१७।४४
गिद्धौर	२४।५१	८६।०७	+१४।२८	+३५।४०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	–४०।०८	–१८।५६	बम्बई	१८।५५	७२।५०	–३८।४०	–१७।२८	रोहतक	२८।५४	७६।३८	–२३।२८	–०२।१६
गिलगित्त	३५।५४	७४।२२	–३२।३३	–११।२१	त्रिवेन्द्रम	०८।३०	७६।५७	–२२।१२	–०१।००	बरेली	२८।२२	७९।२४	–१२।२४	+०८।४२	रोपड़ पंजाब	३०।५७	७६।३०	–२४।००	–०२।४८
गुरदासपुर	३२।०३	७५।२७	–१८।१२	–०७।००	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४२	–१५।१२	+०६।००	बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३०	–१२।००	+०९।१२	लखनऊ	२६।५१	८०।५९	–०६।२०	+१४।५२
गोरखपुर	२६।४७	८३।२४	+०३।३६	+२४।४८	दरभंगा	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।५२	बर्धमान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	+४२।४०	लुधियाना	३०।५६	७५।५२	–२६।३२	–०५।२०
गोण्डा	२७।१०	८१।५७	–०२।१२	+१९।००	द्वारका	२२।१६	६८।५७	–५४।१२	–४२।००	बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५१	–१८।३६	+०२।३६	शिलांग	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	+५८।४८
गोवा	१५।२५	७३।४७	–३४।५२	–१३।४०	दारजिलिंग	२७।०३	८८।१६	+२३।०४	+४४।१६	बीजापुर	१६।५०	७५।४२	–२७।१२	–०६।००	शाहजहाँपुर	२७।५४	७९।५७	–१०।१२	+११।००
गोहाटी	२६।११	९१।४५	+३७।००	–५८।१२	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	–२१।१२	००।००	बीकानेर	२८।०१	७३।१९	–३६।४४	–१५।३२	शिमला	३१।०६	७७।१०	–२१।२०	–००।०८
चितौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	–३१।१२	–१०।००	देहरादून	३०।१९	७८।०४	–१७।४४	+०३।२८	बंगलौर	१२।५८	७७।३५	–१९।४०	+०१।३२	श्रीनगर का.	३४।०६	७४।५१	–३०।३६	–०९।२४
चित्रकूट	२५।१२	८०।५४	–०६।२४	+१४।४०	धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	–२४।२८	–०३।१६	बाँदा(उ.प्र.)	२५।२८	८०।२१	–०८।३६	+१२।२८	सवाईमाधोपुर	२६।००	७६।२३	–२४।२८	–०३।१६
चेरापूंजी	२५।१६	९१।४५	+३७।००	+५८।१२	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	–१८।२८	+०२।४४	बाँसवाड़ा	२३।३३	७८।२६	–१६।१६	+०४।५६	सिकन्दराबाद	१७।२७	७८।३३	–१५।४८	+०५।२४
चम्बा	३२।२५	७६।१०	–२५।२०	–०४।०८	धार (म.प्र.)	२२।३६	७५।१२	–२९।१२	–०८।००	बिलासपुर(हि.)	३१।१९	७६।५०	–२२।४०	–०९।२८	सतारा	१७।४२	७४।००	–३४।००	–१२।४८
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	–२२।३२	–०१।२०	धूलिया	२०।५८	७४।४२	–३१।१२	–१०।००	बिलासपुर(म.)	२२।०५	८२।१०	–०१।२०	+१९।५२	सागर म.प्र.	२३।५०	७८।४५	–१५।००	+०६।१२
छतरपुर	२४।५५	७९।३६	–११।३६	+०९।३६	घ्रांगध्रा	२३।००	७१।२८	–४४।०८	–२२।५६	भड़ोंच	२१।४१	७३।००	–३८।००	–१६।४८	सूरत	२१।१२	७२।५०	–३८।४०	–१७।२८
छपरा बिहार	२५।४७	८४।४१	+०८।४४	+२९।५६	नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	–३६।५०	–१५।३८	भटिन्डा	३०।११	७४।५७	–३०।१२	–०९।००	सोलन	३०।५५	७७।०९	–२१।२४	–००।१२
छिबरा मऊ	२७।१०	७९।२९	–१२।०४	+०९।०८	नाडियाद	२२।४१	७२।५२	–३८।३२	–१७।२०	भरतपुर	२७।१५	७७।३०	–२०।००	–०८।४८	सोलापुर	१७।४०	७५।४८	–२६।४८	–०५।२६
जगन्नाथपुरी	१९।४८	८५।५०	+१३।२०	+३४।३२	नाथद्वारा	२४।५६	७३।४८	–३४।४८	–१३।२६	भुवनेश्वर	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	+३४।४८	सोमनाथ	२१।०१	७०।२६	–४८।१६	–२७।०४
जम्बलपुर	२३।१०	७९।५८	–१०।०८	+११।०४	नाभा	३०।२२	७६।१०	–२५।२०	–०४।०८	भोपाल	२३।१६	७७।२३	–२०।२८	+००।४४	सिरोही	२४।५६	७२।५१	–३८।३६	–१७।२४
जयपुर	२६।५५	७५।५०	–२६।४०	–०५।२२	नागपुर	२१।०९	७९।०६	–१३।३६	+०७।३६	भूटान	२७।३०	९०।००	+३०।००	+५१।१२	हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	–१७।०८	+०४।०४
जलपायी गुडी	२६।३२	८८।४६	+२५।०४	+४६।१६	नासिक	२०।००	७३।४७	–३४।५२	–१३।४०	भुज	२३।१५	६९।००	–५१।१६	–३०।१२	हिसार	२९।१४	७५।४४	–२७।०८	–०५।३६
जम्मू	३२।४४	७४।५४	–३०।२४	–०९।१२	नैनीताल	२९।२५	७९।२७	–१२।१२	+०९।००	मथुरा	२७।२८	७७।४१	–१९।१६	+ १।५६	हाथरस	२७।३६	७८।०६	–१७।३६	+०३।३६
जसवन्त नगर	२६।५१	७८।५५	–१४।२०	+०६।५२	नीमच	२४।२८	७४।५१	–३०।३६	–००।२४	मद्रास	१३।०५	८०।१७	–०८।५२	+१२।१२	हैदराबाद	१७।२७	७८।३०	–१६।००	+०५।१२
जालन्धर	३१।१९	७५।३५	–२७।४०	–०६।२८	पटना	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६	मण्डी (हि.प्र.)	३१।४३	७६।५८	–२२।०८	–००।५६	होशियारपुर	३१।३२	७५।५५	–२६।२०	–०५।०८
जामनगर	२२।२७	७०।०५	–४९।४०	–२८।२२	पठानकोट	३२।१८	७५।४२	–२७।१२	–०६।००	मणिपुर स्टेट	२४।२०	९३।५८	+४५।५२	+६७।०४	होशंगाबाद	२२।४६	७७।४३	–१९।०८	+०२।०४
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	–४६।१२	–२५।०८	पटियाला	३०।२२	७६।२५	–२४।२०	–०३।०८	मालेगाँव ना.	२०।३१	७४।३०	–३२।००	–१०।४८	हथुवा	२६।१२	८४।०५	+०६।२०	+२७।३२
जोधपुर	२६।१८	७३।०२	–३७।५२	–१६।४०	प्रयागराज	२५।२५	८१।५३	–०२।२८	+१८।४४	मुरादाबाद	२८।५०	७८।५०	–१४।४०	+०६।३२	हरदोई	२७।२३	८०।१०	+०९।२०	+३०।३२
जौनपुर	२५।४६	८२।५३	+००।५२	+२२।०४	पाटन (राज.)	१७।२२	७३।५३	–३४।२८	–१३।२६	मुजफ्फरपुर	२६।०७	८५।२७	+११।४२	+३२।५४	हाजीपुर	२५।३५	८३।११	+०१।४४	+२२।५६
जींद	२९।१९	७६।२३	–२४।२८	–०३।१६	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।४८	–१०।४८	+१०।२४	मेरठ	२९।०१	७७।४५	–१९।००	+०२।१२	हाजारीबाग	२४।००	८५।२३	+११।३२	+३२।४४

सूर्योदयास्त स्थानीय मध्यमकाल (बिम्बशीर्ष) घण्टा-मिनटों में

स्टेण्डर्ड टाइम में किसी स्थान का सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए ४ मिनट प्रति अंश की दर से समयावधि का जोड़ करें, जितने रेखांश अभीष्ट स्थल स्टेण्डर्ड रेखांश से पश्चिम है। ४ मिनट प्रति अंश की दर से समयावधि घटा दें, जितने रेखांश अभीष्ट स्थान स्टेण्डर्ड रेखांश से पूर्व में हैं
भारत में भा० स्टे० टा० ज्ञात करने के लिए- यदि स्थान $८२\frac{१}{२}°$ रेखांश से पश्चिम में हों तो जोड़ें + ४ x ($८२\frac{१}{२}°$ – अभीष्ट स्थल का रेखांश) मिनट
और यदि स्थान $८२\frac{१}{२}°$ रेखांश से पूर्व में हों तो घटाएं ४ x (अभीष्ट स्थल का रेखांश – $८२\frac{१}{२}°$) मिनट

अक्षांश / ता०	0°		+१०°		+२०°		+३०°		+३५°		+४०°		+४५°		+५०°		+५२°		+५४°		+५६°		+५८°		+६०°		अक्षांश / ता०
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
जन. १	५।५९	१८।०७	६।१७	१७।५०	६।३५	१७।३२	६।५६	१७।११	७।०८	१६।५९	७।२२	१६।४५	७।३८	१६।२८	७।५९	१६।०८	८।०८	१५।५८	८।१९	१५।४७	८।३२	१५।३५	८।४६	१५।२१	९।०३	१५।०४	जन. १
४	६।०१	१८।०९	६।१८	१७।५२	६।३६	१७।३४	६।५७	१७।१४	७।०९	१७।०२	७।२२	१६।४८	७।३९	१६।३२	७।५९	१६।१२	८।०८	१६।०३	८।१९	१५।५२	८।३०	१५।४०	८।४४	१५।२६	९।०१	१५।१०	४
८	६।०३	१८।११	६।२०	१७।५४	६।३७	१७।३७	६।५७	१७।१७	७।०९	१७।०५	७।२२	१६।५२	७।३८	१६।३६	७।५७	१६।१७	८।०६	१६।०८	८।१७	१५।५७	८।२८	१५।४६	८।४२	१५।३३	८।५७	१५।१७	८
१२	६।०५	१८।१२	६।२१	१७।५६	६।३८	१७।३९	६।५७	१७।२०	७।०९	१७।०९	७।२२	१६।५६	७।३७	१६।४१	७।५५	१६।२२	८।०४	१६।१३	८।१४	१६।०४	८।२५	१५।५३	८।३८	१५।४०	८।५३	१५।२५	१२
१६	६।०६	१८।१४	६।२२	१७।५८	६।३८	१७।४२	६।५७	१७।२३	७।०८	१७।१२	७।२०	१७।००	७।३४	१६।४६	७।५३	१६।२८	८।०१	१६।२०	८।१०	१६।१०	८।२१	१६।००	८।३३	१५।४८	८।४७	१५।३४	१६
२०	६।०८	१८।१५	६।२२	१८।००	६।३८	१७।४५	६।५६	१७।२७	७।०६	१७।१६	७।१८	१७।०५	७।३२	१६।५१	७।४९	१६।३४	७।५७	१६।२६	८।०६	१६।१७	८।१६	१६।०७	८।२७	१५।५६	८।४०	१५।४३	२०
२४	६।०९	१८।१६	६।२३	१८।०२	६।३८	१७।४७	६।५५	१७।३०	७।०४	१७।२०	७।१६	१७।१०	७।२९	१६।५६	७।४५	१६।४१	७।५२	१६।३३	८।००	१६।२५	८।१०	१६।१६	८।२०	१६।०५	८।३२	१५।५३	२४
२८	६।१०	१८।१७	६।२३	१८।०४	६।३७	१७।५०	६।५३	१७।३४	७।०२	१७।२४	७।१३	१७।१४	७।२५	१७।०२	७।४०	१६।४७	७।४७	१६।४०	७।५४	१६।३२	८।०३	१६।२४	८।१३	१६।१४	८।२४	१६।०३	२८
फर. १	६।१०	१८।१७	६।२३	१८।०५	६।३६	१७।५२	६।५१	१७।३७	७।००	१७।२८	७।०९	१७।१९	७।२०	१७।०८	७।३४	१६।५४	७।४१	१६।४८	७।४८	१६।४०	७।५६	१६।३३	८।०५	१६।२४	८।१५	१६।१४	फर. १
५	६।११	१८।१८	६।२२	१८।०६	६।३४	१७।५४	६।४८	१७।४१	६।५६	१७।३२	७।०५	१७।२४	७।१६	१७।१३	७।२८	१७।०१	७।३४	१६।५५	७।४१	१६।४८	७।४८	१६।४१	७।५६	१६।३३	८।०५	१६।२४	५
९	६।११	१८।१८	६।२२	१८।०८	६।३३	१७।५६	६।४६	१७।४४	६।५३	१७।३६	७।०१	१७।२९	७।१०	१७।१९	७।२२	१७।०८	७।२७	१७।०२	७।३३	१६।५६	७।४०	१६।५०	७।४७	१६।४३	७।५५	१६।३५	९
१३	६।११	१८।१८	६।२१	१८।०९	६।३१	१७।५८	६।४२	१७।४७	६।४९	१७।४०	६।५६	१७।३३	७।०५	१७।२५	७।१५	१७।१५	७।२०	१७।१०	७।२५	१७।०४	७।३१	१६।५९	७।३७	१६।५२	७।४५	१६।४५	१३
१७	६।११	१८।१८	६।२०	१८।१०	६।२८	१८।००	६।३९	१७।५०	६।४४	१७।४४	६।५१	१७।३८	६।५९	१७।३०	७।०८	१७।२२	७।१२	१७।१७	७।१७	१७।१३	७।२२	१७।०८	७।२७	१७।०२	७।३४	१६।५६	१७
२१	६।११	१८।१७	६।१८	१८।१०	६।२६	१८।०२	६।३५	१७।५४	६।४०	१७।४८	६।४६	१७।४३	६।५२	१७।३६	७।००	१७।२८	७।०४	१७।२५	७।०८	१७।२१	७।१२	१७।१७	७।१७	१७।१२	७।२३	१७।०६	२१
२५	६।१०	१८।१७	६।१६	१८।११	६।२३	१८।०४	६।३१	१७।५६	६।३५	१७।५२	६।४०	१७।४७	६।४६	१७।४१	६।५२	१७।३५	६।५६	१७।३२	६।५९	१७।२९	७।०२	१७।२५	६।०७	१७।२१	६।११	१७।१६	२५
मार्च १	६।०९	१८।१६	६।१५	१८।११	६।२१	१८।०५	६।२७	१७।५९	६।३०	१७।५६	६।३४	१७।५२	६।३९	१७।४७	६।४४	१७।४२	६।४७	१७।३९	६।५०	१७।३६	६।५२	१७।३४	६।५६	१७।३०	६।००	१७।२६	मार्च १
५	६।०९	१८।१५	६।१३	१८।११	६।१७	१८।०७	६।२२	१८।०२	६।२५	१७।५९	६।२८	१७।५६	६।३२	१७।५२	६।३६	१७।४८	६।३८	१७।४७	६।४०	१७।४४	६।४२	१७।४२	६।४५	१७।४०	६।४८	१७।३७	५
९	६।०८	१८।१४	६।११	१८।११	६।१४	१८।०८	६।१८	१८।०५	६।२०	१८।०३	६।२२	१८।००	६।२४	१७।५८	६।२८	१७।५५	६।२९	१७।५४	६।३१	१७।५२	६।३२	१७।५०	६।३४	१७।४९	६।३६	१७।४७	९
१३	६।०७	१८।१३	६।०८	१८।११	६।११	१८।०९	६।१३	१८।०७	६।१४	१८।०६	६।१६	१८।०४	६।१७	१८।०३	६।१९	१८।०१	६।२०	१८।०१	६।२१	१८।००	६।२२	१७।५९	६।२३	१७।५८	६।२४	१७।५६	१३
१७	६।०६	१८।१२	६।०६	१८।११	६।०७	१८।११	६।०८	१८।१०	६।०९	१८।०९	६।०९	१८।०९	६।१०	१८।०८	६।११	१८।०८	६।११	१८।०७	६।११	१८।०७	६।११	१८।०७	६।१२	१८।०७	६।१२	१८।०६	१७
२१	६।०४	१८।११	६।०४	१८।११	६।०४	१८।१२	६।०४	१८।१२	६।०३	१८।१३	६।०३	१८।१३	६।०२	१८।१४	६।०२	१८।१४	६।०२	१८।१५	६।०१	१८।१५	६।०१	१८।१५	६।०१	१८।१६	६।००	१८।१६	२१
२५	६।०३	१८।१०	६।०२	१८।११	६।००	१८।१३	५।५९	१८।१४	५।५८	१८।१६	५।५६	१८।१७	५।५५	१८।१८	५।५३	१८।२०	५।५२	१८।२२	५।५१	१८।२२	५।५०	१८।२३	५।४९	१८।२५	५।४८	१८।२६	२५
२९	६।०२	१८।०९	५।५९	१८।११	५।५७	१८।१४	५।५४	१८।१७	५।५२	१८।१९	५।५०	१८।२२	५।४७	१८।२३	५।४५	१८।२७	५।४३	१८।२८	५।४१	१८।३०	५।४०	१८।३१	५।३८	१८।३४	५।३६	१८।३६	२९

अक्षांश / ता०	0°		+१०°		+२०°		+३०°		+३५°		+४०°		+४५°		+५०°		+५२°		+५४°		+५६°		+५८°		+६०°		अक्षांश / ता०
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
अप्रैल २	६।०१	१८।०७	५।५७	१८।११	५।५३	१८।१५	५।४९	१८।१९	५।४६	१८।२२	५।४३	१८।२५	५।४०	१८।२९	५।३६	१८।३३	५।३४	१८।३५	५।३२	१८।३७	५।२९	१८।४०	५।२७	१८।४३	५।२४	१८।४५	अप्रैल २
६	६।००	१८।०६	५।५५	१८।१०	५।५०	१८।१६	५।४४	१८।२२	५।४१	१८।२५	५।३७	१८।२९	५।३३	१८।३४	५।२७	१८।३९	५।२५	१८।४२	५।२२	१८।४५	५।१९	१८।४८	५।१६	१८।५२	५।११	१८।५५	६
१०	५।५९	१८।०५	५।५३	१८।१०	५।४७	१८।१७	५।४०	१८।२४	५।३६	१८।२९	५।३१	१८।३३	५।२६	१८।३९	५।१९	१८।४५	५।१६	१८।४९	५।१२	१८।५२	५।०८	१८।५६	५।०५	१९।०१	५।००	१९।०५	१०
१४	५।५८	१८।०४	५।५०	१८।१०	५।४४	१८।१८	५।३५	१८।२७	५।३०	१८।३२	५।२४	१८।३७	५।१८	१८।४४	५।१०	१८।५२	५।०७	१८।५६	५।०३	१९।००	४।५८	१९।०४	४।५४	१९।०९	४।४८	१९।१५	१४
१८	५।५७	१८।०३	५।४८	१८।११	५।४१	१८।१९	५।३१	१८।२९	५।२५	१८।३५	५।१९	१८।४१	५।१२	१८।४९	५।०२	१८।५८	४।५८	१९।०३	४।५४	१९।०७	४।४८	१९।१२	४।४३	१९।१८	४।३६	१९।२५	१८
२२	५।५६	१८।०२	५।४७	१८।११	५।३८	१८।२१	५।२६	१८।३२	५।२०	१८।३८	५।१३	१८।४५	५।०४	१८।५४	४।५४	१९।०४	४।४९	१९।०९	४।४५	१९।१५	४।३८	१९।२०	४।३२	१९।२७	४।२५	१९।३५	२२
२६	५।५५	१८।०२	५।४५	१८।११	५।३५	१८।२२	५।२२	१८।३४	५।१६	१८।४१	५।०७	१८।४९	४।५८	१८।५९	४।४७	१९।१०	४।४१	१९।१६	४।३६	१९।२२	४।२९	१९।२९	४।२१	१९।३६	४।१३	१९।४५	२६
३०	५।५४	१८।०१	५।४३	१८।१२	५।३२	१८।२३	५।१९	१८।३७	५।११	१८।४५	५।०२	१८।५३	४।५२	१९।०४	४।३९	१९।१७	४।३३	१९।२३	४।२७	१९।२९	४।२०	१९।३७	४।११	१९।४५	४।०२	१९।५४	३०
मई ४	५।५४	१८।००	५।४२	१८।१२	५।२९	१८।२५	५।१५	१८।३९	५।०७	१८।४८	४।५७	१८।५७	४।४६	१९।१०	४।३२	१९।२३	४।२६	१९।३०	४।१८	१९।३७	४।११	१९।४५	४।०२	१९।५४	३।५१	२०।०४	मई ४
८	५।५३	१८।००	५।४१	१८।१३	५।२७	१८।२६	५।१२	१८।४२	५।०३	१८।५१	४।५३	१९।०१	४।४०	१९।१४	४।२६	१९।२९	४।१९	१९।३६	४।११	१९।४४	४।०२	१९।५३	३।५२	१९।०३	३।४१	२०।१४	८
१२	५।५३	१८।००	५।४०	१८।१४	५।२५	१८।२८	५।०९	१८।४४	५।००	१८।५४	४।४८	१९।०५	४।३५	१९।१९	४।१९	१९।३५	४।१२	१९।४२	४।०४	१९।५१	३।५४	२०।००	३।४३	२२।११	३।३१	२०।२४	१२
१६	५।५३	१८।००	५।३९	१८।१४	५।२४	१८।२९	५।०६	१८।४७	४।५७	१८।५८	४।४४	१९।०९	४।३१	१९।२३	४।१४	१९।४०	४।०५	१९।४८	३।५७	१९।५८	३।४६	२०।०८	३।३५	२०।२०	३।२१	२०।३४	१६
२०	५।५३	१८।००	५।३८	१८।१५	५।२३	१८।३१	५।०४	१८।४९	४।५४	१९।०१	४।४१	१९।१३	४।२६	१९।२७	४।०९	१९।४६	४।००	१९।५४	३।५०	२०।०४	३।३९	२०।१५	३।२७	२०।२८	३।१२	२०।४३	२०
२४	५।५३	१८।०१	५।३८	१८।१६	५।२२	१८।३३	५।०२	१८।५२	४।५१	१९।०३	४।३८	१९।१६	४।२२	१९।३२	४।०१	१९।५१	३।५५	२०।००	३।४५	२०।१०	३।३३	२०।२२	३।२०	२०।३६	३।०४	२०।५१	२४
२८	५।५४	१८।०१	५।३८	१८।१७	५।२१	१८।३४	५।०१	१८।५४	४।४९	१९।०६	४।३६	१९।२०	४।१९	१९।३६	४।००	१९।५६	३।५०	२०।०६	३।४०	२०।१६	३।२८	२०।२८	३।१३	२०।४३	२।५७	२०।५९	२८
जून १	५।५४	१८।०२	५।३८	१८।१८	५।२०	१८।३६	५।००	१८।५६	४।४८	१९।०९	४।३४	१९।२३	४।१७	१९।३९	३।५७	२०।००	३।४७	२०।१०	३।३५	२०।२१	३।२३	२०।३४	३।०८	२०।४९	२।५०	२१।०७	जून १
५	५।५५	१८।०२	५।३८	१८।१९	५।२०	१८।३७	४।५९	१८।५८	४।४७	१९।११	४।३२	१९।२५	४।१५	१९।४३	३।५४	२०।०४	३।४४	२०।१४	३।३२	२०।२६	३।१९	२०।३९	३।०३	२०।५५	२।४५	२१।१३	५
९	५।५६	१८।०३	५।३९	१८।२०	५।२०	१८।३९	४।५८	१९।००	४।४६	१९।१३	४।३१	१९।२८	४।१४	१९।४५	३।५२	२०।०७	३।४१	२०।१८	३।२९	२०।३०	३।१६	२०।४३	३।००	२०।५९	२।४०	२१।१९	९
१३	५।५७	१८।०४	५।३९	१८।२२	५।२०	१८।४०	४।५८	१९।०२	४।४५	१९।१५	४।३१	१९।३०	४।१३	१९।४७	३।५१	२०।१०	३।४०	२०।२१	३।२८	२०।३३	३।१४	२०।४७	२।५७	२१।०३	२।३७	२१।२३	१३
१७	५।५८	१८।०५	५।४०	१८।२२	५।२१	१८।४१	४।५९	१९।०३	४।४६	१९।१६	४।३१	१९।३१	४।१३	१९।४९	३।५०	२०।१२	३।३९	२०।२३	३।२७	२०।३५	३।१३	२०।४९	२।५६	२१।०६	२।३६	२१।२६	१७
२१	५।५८	१८।०६	५।४१	१८।२३	५।२२	१८।४२	५।००	१९।०४	४।४७	१९।१७	४।३२	१९।३३	४।१३	१९।५१	३।५१	२०।१३	३।४०	२०।२४	३।२८	२०।३६	३।१३	२०।५१	२।५७	२१।०७	२।३६	२१।२८	२१
२५	५।५९	१८।०७	५।४२	१८।२४	५।२३	१८।४३	५।०१	१९।०५	४।४८	१९।१८	४।३३	१९।३३	४।१४	१९।५१	३।५२	२०।१३	३।४१	२०।२४	३।२९	२०।३६	३।१४	२०।५१	२।५८	२१।०७	२।३७	२१।२८	२५
२९	६।००	१८।०७	५।४३	१८।२५	५।२४	१८।४३	५।०२	१९।०५	४।४९	१९।१८	४।३४	१९।३३	४।१६	१९।५१	३।५४	२०।१३	३।४३	२०।२४	३।३१	२०।३६	३।१७	२०।५०	२।००	२१।०६	२।४०	२१।२६	२९
जुलाई ३	६।०१	१८।०८	५।४४	१८।२५	५।२५	१८।४४	५।०३	१९।०५	४।५०	१९।१८	४।३६	१९।३३	४।१८	१९।५०	३।५६	२०।१२	३।४६	२०।२२	३।३४	२०।३४	३।२०	२०।४८	३।०४	२१।०४	२।४४	२१।२४	जुलाई ३
७	६।०१	१८।०९	५।४५	१८।२५	५।२६	१८।४४	५।०५	१९।०५	४।५२	१९।१८	४।३८	१९।३२	४।२१	१९।४९	३।५९	२०।१०	३।४९	२०।२०	३।३७	२०।३२	३।२४	२०।४५	३।०९	२१।०१	२।४९	२१।२०	७
११	६।०२	१८।०९	५।४६	१८।२६	५।२८	१८।४३	५।०७	१९।०४	४।५५	१९।१६	४।४१	१९।३०	४।२४	१९।४७	४।०३	२०।०८	३।५३	२०।१८	३।४२	२०।२९	३।२९	२०।४१	३।१४	२०।५७	२।५६	२१।१४	११
१५	६।०२	१८।१०	५।४७	१८।२६	५।२९	१८।४३	५।०९	१९।०३	४।५७	१९।१५	४।४४	१९।२८	४।२७	१९।४४	४।०७	२०।०४	३।५८	२०।१४	३।४७	२०।२५	३।३४	२०।३७	३।२०	२०।५१	३।०३	२१।०८	१५
१९	६।०३	१८।१०	५।४८	१८।२५	५।३१	१८।४२	५।११	१९।०१	५।००	१९।१३	४।४७	१९।२६	४।३१	१९।४१	४।१२	२०।००	४।०३	२०।१०	३।५२	२०।२०	३।४१	२०।३१	४।२७	२०।४५	३।११	२१।००	१९
२३	६।०३	१८।१०	५।४८	१८।२५	५।३२	१८।४१	५।१३	१८।५९	५।०३	१९।१०	४।५०	१९।२३	४।३५	१९।३८	४।१७	१९।५६	४।०८	२०।०४	३।५८	२०।१४	३।४७	२०।२५	४।३४	२०।३८	३।२०	२०।५२	२३
२७	६।०३	१८।१०	५।४९	१८।२४	५।३४	१८।४०	५।१६	१८।५७	५।०६	१९।०८	४।५४	१९।१९	४।३९	१९।३३	४।२२	१९।५१	४।१४	१९।५८	४।०५	२०।०८	३।५४	२०।१८	४।४२	२०।३०	३।२९	२०।४४	२७
३१	६।०३	१८।१०	५।५०	१८।२४	५।३५	१८।३८	५।१८	१८।५५	५।०९	१९।०४	४।५७	१९।१५	४।४४	१९।२९	४।२७	१९।४५	४।२०	१९।५२	४।११	२०।०१	४।०१	२०।१०	४।५०	२०।२१	३।३८	२०।३४	३१
अग. ४	६।०३	१८।१०	५।५०	१८।२२	५।३७	१८।३६	५।२१	१८।५२	५।१२	१९।००	५।०१	१९।११	४।४८	१९।२३	४।३३	१९।३९	४।२६	१९।४६	४।१८	१९।५३	४।०९	२०।०२	४।५९	२०।१३	३।४७	२०।२४	अग. ४
८	६।०२	१८।०९	५।५१	१८।२१	५।३८	१८।३४	५।२३	१८।४८	५।१५	१८।५६	५।०५	१९।०७	४।५३	१९।१८	४।३९	१९।३२	४।३२	१९।३८	४।२५	१९।४५	४।१६	१९।५४	४।०७	१९।०३	३।५६	२०।१४	८
१२	६।०२	१८।०९	५।५१	१८।१९	५।३९	१८।३१	५।२५	१८।४४	५।१८	१८।५२	५।०८	१९।०२	४।५८	१९।१२	४।४५	१९।२५	४।३९	१९।३१	४।३२	१९।३७	४।२४	१९।४५	४।१६	१९।५३	४।०६	२०।०३	१२
१६	६।०१	१८।०८	५।५१	१८।१८	५।४०	१८।२९	५।२८	१८।४१	५।२१	१८।४८	५।१२	१८।५६	५।०३	१९।०६	४।५०	१९।१७	४।४५	१९।२३	४।३९	१९।२९	४।३२	१९।३६	४।२५	१९।४३	४।१६	१९।५२	१६
२०	६।००	१८।०७	५।५१	१८।१६	५।४२	१८।२६	५।३०	१८।३७	५।२४	१८।४३	५।१६	१८।५०	५।०७	१८।५९	४।५६	१९।०९	४।५२	१९।१४	४।४६	१९।२०	४।४०	१८।२६	४।३३	१८।३३	४।२५	१९।४०	२०
२४	६।००	१८।०६	५।५१	१८।१४	५।४३	१८।२३	५।३२	१८।३२	५।२७	१८।३८	५।२०	१८।४४	५।१२	१८।५२	५।०२	१९।०१	४।५८	१९।०६	४।५३	१९।११	४।४८	१८।१६	४।४२	१८।२२	४।३५	१९।२९	२४
२८	५।५८	१८।०५	५।५१	१८।१२	५।४४	१८।१९	५।३५	१८।२८	५।३०	१८।३३	५।२४	१८।३८	५।१७	१८।४५	५।०८	१८।५३	५।०५	१८।५७	५।०१	१९।०१	५।५६	१८।०६	४।५१	१८।११	५।४५	१९।१७	२८

अक्षांश / ता०	०°		+१०°		+२०°		+३०°		+३५°		+४०°		+४५°		+५०°		+५२°		+५४°		+५६°		+५८°		+६०°		अक्षांश / ता०
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
सित. १	५।५७	१८।०४	५।५१	१८।०९	५।४५	१८।१६	५।३७	१८।२३	५।३३	१८।२८	५।२७	१८।३२	५।२२	१८।३८	५।१४	१८।४५	५।११	१८।४९	५।०८	१८।५२	५।०३	१८।५६	४।५९	१८।००	५।५४	१९।०५	सित. १
५	५।५६	१८।०२	५।५१	१८।०७	५।४६	१८।१२	५।३९	१८।१९	५।३६	१८।२२	५।३१	१८।२६	५।२६	१८।३१	५।२०	१८।३७	५।१८	१८।३९	५।१५	१८।४२	५।११	१८।४५	५।०८	१८।४९	५।०४	१८।५३	५
९	५।५४	१८।०१	५।५०	१८।०५	५।४६	१८।०९	५।४१	१८।१४	५।३९	१८।१६	५।३५	१८।२०	५।३१	१८।२३	५।२६	१८।२८	५।२४	१८।३०	५।२२	१८।३२	५।१९	१८।३५	५।१६	१८।३८	५।१३	१८।४१	९
१३	५।५३	१८।००	५।५०	१८।०२	५।४७	१८।०५	५।४३	१८।०९	५।४१	१८।११	५।३९	१८।१३	५।३६	१८।१६	५।३२	१८।१९	५।३१	१८।२१	५।२९	१८।२२	५।२७	१८।२४	५।२५	१८।२६	५।२२	१८।२९	१३
१७	५।५२	१७।५८	५।५०	१८।००	५।४८	१८।०१	५।४५	१८।०४	५।४४	१८।०५	५।४२	१८।०६	५।४१	१८।०८	५।३८	१८।१०	५।३७	१८।११	५।३६	१८।१२	५।३५	१८।१४	५।३३	१८।१५	५।३२	१८।१६	१७
२१	५।५०	१७।५७	५।४९	१७।५७	५।४९	१७।५८	५।४८	१७।५९	५।४७	१७।५९	५।४६	१८।००	५।४६	१८।००	५।४४	१८।०२	५।४४	१८।०२	५।४३	१८।०२	५।४२	१८।०३	५।४२	१८।०४	५।४१	१८।०४	२१
२५	५।४९	१७।५५	५।४९	१७।५५	५।५०	१७।५४	५।५०	१७।५४	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५१	१७।५२	५।५०	१७।५२	५।५१	१७।५२	५।५१	१७।५२	२५
२९	५।४७	१७।५४	५।४९	१७।५२	५।५१	१७।५०	५।५२	१७।४९	५।५३	१७।४८	५।५४	१७।४७	५।५५	१७।४५	५।५६	१७।४४	५।५८	१७।४३	५।५८	१७।४२	५।५८	१७।४२	५।५९	१७।४१	६।००	१७।४०	२९
अक्टू. ३	५।४६	१७।५३	५।४९	१७।५०	५।५२	१७।४७	५।५४	१७।४४	५।५६	१७।४२	५।५८	१७।४०	६।००	१७।३८	६।०२	१७।३५	६।०४	१७।३४	६।०५	१७।३३	६।०६	१७।३१	६।०८	१७।३०	६।०९	१७।२८	अक्टू. ३
७	५।४५	१७।५२	५।४८	१७।४७	५।५३	१७।४४	५।५७	१७।३९	५।५९	१७।३७	६।०२	१७।३४	६।०५	१७।३०	६।०९	१७।२७	६।११	१७।२५	६।१२	१७।२३	६।१४	१७।२१	६।१७	१७।१९	६।१९	१७।१६	७
११	५।५४	१७।५१	५।४८	१७।४५	५।५४	१७।४०	५।५९	१७।३४	६।०३	१७।२१	६।०६	१७।२७	६।१०	१७।२३	६।१५	१७।१८	६।१७	१७।१६	६।२०	१७।१३	६।२२	१७।११	६।२६	१७।०८	६।२९	१७।०४	११
१५	५।४३	१७।५०	५।४९	१७।४३	५।५५	१७।३७	६।०२	१७।३०	६।०६	१७।२६	६।१०	१७।२१	६।१५	१७।१६	६।२१	१७।१०	६।२४	१७।०७	६।२७	१७।०४	६।३१	१७।००	६।३५	१७।५७	६।३८	१६।५२	१५
१९	५।४२	१७।४८	५।४९	१७।४१	५।५६	१७।३४	६।०५	१७।२६	६।०९	१७।२१	६।१४	१७।१५	६।२०	१७।०९	६।२६	१७।०२	६।३१	१६।५९	६।३४	१७।५५	६।३९	१६।५१	६।४४	१६।४६	६।४८	१६।४१	१९
२३	५।४१	१७।४८	५।४९	१७।४०	५।५८	१७।३१	६।०७	१७।२१	६।१३	१७।१६	६।१९	१७।१०	६।२६	१७।०३	६।३४	१६।५४	६।३८	१६।५०	६।४२	१७।४६	६।४७	१६।४१	६।५३	१६।३६	६।५८	१६।३०	२३
२७	५।४१	१७।४८	५।५०	१७।३९	५।५९	१७।२९	६।१०	१७।१८	६।१६	१७।१२	६।२३	१७।०५	६।३१	१६।५६	६।४१	१६।४७	६।४६	१६।४२	६।५०	१७।३७	६।५६	१६।३२	६।०२	१६।२५	७।०९	१६।१९	२७
३१	५।४०	१७।४७	५।५१	१७।३७	६।०१	१७।२६	६।१३	१७।१५	६।२०	१७।०७	६।२८	१७।००	६।३७	१६।५०	६।४८	१६।४०	६।५३	१६।३४	६।५८	१६।२९	७।०४	१६।२३	६।११	१६।१६	७।११	१६।०८	३१
नव. ४	५।४०	१७।४७	५।५२	१७।३६	६।०३	१७।२४	६।१६	१७।१२	६।२४	१७।०४	६।३२	१६।५५	६।४२	१६।४५	६।५४	१६।३३	७।००	१६।२७	७।०६	१६।२१	७।१३	१६।१४	६।२१	१६।०७	७।२९	१५।५७	नव. ४
८	५।४०	१७।४७	५।५३	१७।३६	६।०५	१७।२३	६।११	१७।०९	६।२७	१६।००	६।३७	१६।५१	६।४८	१६।४०	७।०१	१६।२६	७।०७	१६।२०	७।१४	१६।१४	७।२१	१६।०६	६।३०	१५।५८	७।३९	१५।४८	८
१२	५।४१	१७।४८	५।५४	१७।३५	६।०७	१७।२२	६।२३	१७।०६	६।३१	१६।५७	६।४२	१६।४७	६।५३	१६।३५	७।०८	१६।२१	७।१४	१६।१४	७।२१	१६।०७	७।३०	१५।५८	६।३९	१५।४९	७।५०	१५।३९	१२
१६	५।४२	१७।४९	५।५५	१७।-५	६।०९	१७।२१	६।२६	१७।०४	६।३५	१६।५४	६।४६	१६।४४	६।५८	१६।३१	७।१४	१६।१६	७।२१	१६।०८	७।२९	१६।००	७।३८	१५।५१	६।४८	१५।४१	८।००	१५।३०	१६
२०	५।४२	१७।५०	५।५७	१७।३५	६।१२	[illegible]।२०	६।२९	१७।०२	६।३९	१६।५२	६।५१	१६।४१	७।०४	१६।२७	७।२०	१६।११	७।२८	१६।०३	६।३७	१५।५५	७।४६	१५।४५	६।५७	१५।३४	८।१०	१५।२१	२०
२४	५।४३	१७।५१	५।५८	१७।३५	६।१४	१७।१९	६।३३	१७।०१	६।४३	१६।५१	६।५५	१६।३८	७।०९	१६।२४	७।२६	१६।०७	७।३५	१५।५९	७।४४	१५।५०	७।५४	१५।४०	७।०५	१५।२७	८।१९	१५।१४	२४
२८	५।४५	१७।५२	६।००	१७।३६	६।१७	१७।१९	६।३६	१७।००	६।४७	१६।५०	६।५९	१६।३७	७।१४	१६।२२	७।३२	१६।०४	७।४१	१५।५५	७।५०	१५।४५	८।०१	१५।३५	८।१३	१५।२२	८।२८	१५।०८	२८
दिस. २	५।४६	१७।५३	६।०२	१७।३७	६।१९	१७।२०	६।३९	१७।००	६।५०	१६।४९	७।०३	१६।३६	७।१९	१६।२०	७।३८	१६।०१	७।४७	१५।५२	७।५६	१५।४२	८।०८	१५।३१	८।२१	१५।१७	८।३६	१४।०३	दिस. २
६	५।४७	१७।५५	६।०४	१७।३८	६।२२	१७।२१	६।४२	१७।००	६।५४	१६।४८	७।०७	१६।३५	७।२३	१६।१९	७।४३	१६।००	७।५२	१५।५०	८।०२	१५।३९	८।१४	१५।२८	८।२८	१५।१४	८।४४	१४।५८	६
१०	५।४९	१७।५७	६।०६	१७।४०	६।२४	१७।२२	६।४५	१७।०१	६।५७	१६।४९	७।११	१६।३५	७।२७	१६।१९	७।४७	१५।५९	७।५७	१५।४९	८।०८	१५।३८	८।२०	१५।२६	८।३४	१५।१२	८।५०	१४।५५	१०
१४	५।५१	१७।५८	६।०८	१७।४१	६।२७	१७।२३	६।४८	१७।०२	७।००	१६।५०	७।१४	१६।३६	७।३०	१६।१९	७।५१	१५।५८	८।०१	१५।४९	८।१२	१५।३८	८।२४	१५।२५	८।३९	१५।११	८।५६	१४।५४	१४
१८	५।५३	१८।००	६।१०	१७।४३	६।२९	१७।२४	६।५०	१७।०३	७।०२	१६।५१	७।१७	१६।३७	७।३३	१६।२०	७।५४	१५।५९	८।०४	१५।५०	८।१५	१५।३९	८।२८	१५।२६	८।४३	१५।११	९।००	१४।५४	१८
२२	५।५५	१८।०२	६।१२	१७।४५	६।३१	१७।२६	६।५२	१७।०५	७।०४	१६।५३	७।१९	१६।३८	७।३६	१६।२२	७।५६	१६।०१	८।०६	१५।५१	८।१७	१५।४०	८।३०	१५।२७	८।४५	१५।१२	९।०२	१४।५५	२२
२६	५।५७	१८।०४	६।१४	१७।४७	६।३३	१७।२८	६।५४	१७।०७	७।०६	१६।५५	७।२१	१६।४१	७।३७	१६।२४	७।५८	१६।०४	८।०८	१५।५४	८।१९	१५।४३	८।३२	१५।३०	८।४६	१५।१५	९।०४	१४।५८	२६
३०	५।५९	१८।०६	६।१६	१७।४९	६।३५	१७।३१	६।५६	१७।१०	७।०८	१६।५८	७।२२	१६।४४	७।३८	१६।२७	७।५९	१६।०७	८।०८	१५।५७	८।११	१५।४३	८।३२	१५।३४	८।४६	१५।११	९।०४	१५।०२	३०

पंचांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर सूर्योदय जानना हो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लेवें, वह मिनट+पूर्व के हो तो इस पंचांग के सूर्योदय में हीन करें और मिनट—पश्चिम के हो तो धन करें अर्थात् जोड़ें। अक्षांशादि सारिणी में देशान्तर मिनट से पहले धन + चिन्ह हों तो ऋण करें, ऋण—चिन्ह हों तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा, पश्चात इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लेवें। रविक्रान्ति और इष्टनगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरांतर मिनट लें, वह धन हो तो ऊपर से आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़े, ऋण हो तो हीन करें तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टें. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। आये हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण से चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह दिनमान में ही हीन करें, ऋण किये हों तो धन करें, वह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घंटा मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से है। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि=२॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें, और बाद के मिनट हों तो उनके जितने पल हों—इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें, तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय, तिथ्यादि पंचांग होगा।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष ६ शुक्रवार ता. ५ सितम्बर २००८ ई. तदनुसार राष्ट्रीय मिति १४ भाद्रपद शाके १९३० को हैदराबाद नगर का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में दिल्ली का सूर्योदय स्टै. टा. घं. ६ मि. ०५ है। हैदराबाद दिल्ली से ५ मि. पूर्व में (आक्षाशादि सारिणी में देखें) अतः यह ५ मि. इस पंचाग के सूर्योदय घं. ६ मि. ०५ में घटा दिये तो घं. ६ मि. ०० हुए। यह हैदराबाद का इस पंचांग के माध्यम से सूर्योदय हुआ। अब सितम्बर मास की दैनिक-ग्रह सूर्यक्रान्ति में देखें। ता. ५ सितम्बर को रविक्रान्ति उत्तरा ६/४७ है। हैदराबाद के अक्षांश १७।१८ हैं। (अक्षांशादि सारिणी देखो) आगे चरान्तर सारिणी से १७ अक्षांश और ६ क्रान्तयंश के कोष्ठक में ६ मिनट है और ७ क्रान्तयंश में ७ मिनट है, यहां क्रान्तयंश ६।५ होने से क्रान्तयंश ७ से चरान्तर मिनट लेना चाहिए। अतः क्रान्तयंश ७ में चरान्तर मिनट ७ प्राप्त हुए यह मिनट धन आये। ऊपर के मध्यम सूर्योदय घं. ६ मि. ०० में जोड़ दिये तो हैदराबाद में स्टै. टा. घं. ६ मि. ७ यह स्पष्ट सूर्योदय का समय हुआ। आये हुए चरान्तर मिनट ७ को ५ से गुणों तो ३ पल प्राप्त हुए। चरान्तर धन होने के कारण इस पंचांग के दिनमान ३१।१९ में ३५ पल हीन करने (विपरिणयन करने) से ३०।४४ यह हैदराबाद का दिनमान हुआ। इसका घण्टा मिनट किये तो घं. १२ मि. १७ हुए। यह ऊपर आये हुए हैदराबाद के स्पष्ट सूर्योदय ६।०७ में जोड़ दिया तो घं. १८ मि. २४। यह हैदराबाद का स्टै. टा. से सूर्यास्त हुआ। यहां हैदराबाद सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय घं. ६ मि. ०५ से २ मिनट बाद में है, इसके घटी पल किये तो ० घटी ५ पल हुए; यह घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से हैदराबाद का स्पष्ट सूर्योदय बाद में होने से इस पंचांग के तिथ्यादि की घटी पलो में घटा देने से भाद्रपद शुक्ल ७ मंगलवार को तिथि घटयादि ७/२३ अनु. २५/२२ यह हैदराबाद के स्पष्ट सूर्योदय से तिथि नक्षत्र स्पष्ट हुए। इसी प्रकार योग करण की घटी पलों में घटाकर बना लें। इसी प्रक्रिया से संसार के किसी भी नगर का सूक्ष्म पंचांग ''श्रीविश्वविजय पंचांग'' द्वारा बन सकता है। विशेष बात यह है कि ''श्रीविश्वाविजय पंचांग'' में तिथि नक्षत्र योग करण भद्रा चन्द्रमा आदि के घण्टा मिनट दिये हैं। वह भारत में सर्वत्र समान है। यह इसकी अनुपम विशेषता है।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

जैसे दि. ४ सितम्बर २००८ ई. को हैदराबाद का चरांतर लाना है। तो दैनिक रवि क्रांति सारिणी से इस दिन के रवि क्रांति ७.१२ है और हैदराबाद के आक्षांश १७/१८ है। रविक्रान्ति ७ के तुल्य है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रांत्यंश की हैं और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश का हैं। क्रांत्यंश ७ तथा अक्षांश १७/१८ मे देखो तो अनुपात से दोनों लाइनों के सम्पात में ७ मिनट प्राप्त हुए। अब यहाँ क्रान्ति उत्तर + धन होने से चरान्तर मिनट धन हुए।

यह ५ मि. इस पंचाग के सूर्योदय घं. ६ मि. … तर मिनट धन हुए।

चरान्तर सारणी

उत्तराक्षांश : चरान्तर मिनट

क्रान्त्यंश	यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर हो तो धन																													क्रान्ति दक्षिण हो तो धन उत्तर हो तो ऋण										
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
२	४	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
३	६	६	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	२	३	३	४
४	८	८	८	८	७	७	७	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५
५	११	१०	१०	१०	९	९	९	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४	४	५	५	६
६	१३	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५	५	६	६	७
७	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६	६	७	७	८
८	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१४	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६	७	८	९	९
९	१९	१९	१८	१७	१७	१६	१५	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
१०	२१	२१	२०	१९	१९	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८	८	१०	१२	१२
११	२४	२३	२२	२१	२०	२०	१९	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१४	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३
१२	२६	२५	२४	२३	२२	२२	२१	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९	१०	१२	१३	१४
१३	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०	११	१३	१४	१६
१४	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११	१२	१४	१५	१७
१५	३३	३२	३०	२९	२८	२७	२६	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	५	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२	१३	१५	१७	१८
१६	३५	३४	३३	३१	३०	२९	२८	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०
१७	३७	३६	३५	३४	३२	३१	३०	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४	१५	१६	१९	२१
१८	४०	३८	३७	३६	३४	३३	३२	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४	१६	१८	२०	२२
१९	४२	४१	३९	३८	३६	३५	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५	१७	१९	२१	२४
२०	४४	४३	४२	४०	३९	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६	१८	२०	२३	२५
२१	४७	४५	४४	४२	४१	३९	३८	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२४	२७
२२	४९	४८	४६	४५	४३	४१	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२८
२३	५२	५०	४९	४७	४५	४३	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९	२१	२४	२७	३०
२४	५५	५३	५१	४९	४७	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०	२२	२५	२८	३१
२५	५७	५५	५३	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१३	११	९	७	४	२	१	३	६	९	११	१४	१७	२०	२३	२६	३०	३३
२६	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२५	२३	२१	१९	१६	१४	१२	९	७	५	२	१	४	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८	३१	३५
२७	६३	६१	५९	५७	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३५	३३	३१	२९	२७	२४	२२	२०	१७	१५	१२	१०	७	५	२	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३३	३७
२८	६५	६३	६१	५९	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४४	४२	३९	३७	३५	३२	३०	२८	२५	२३	२०	१८	१५	१३	१०	७	५	२	१	४	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३१	३४	३८
२९	६८	६६	६४	६२	५९	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४३	४१	३९	३६	३४	३१	२९	२७	२४	२१	१९	१६	१३	११	८	५	२	१	४	७	११	१४	१७	२१	२४	२८	३२	३६	४०
३०	७१	६९	६७	६४	६२	६०	५७	५५	५३	५०	४८	४५	४३	४०	३८	३५	३३	३०	२८	२५	२२	२०	१७	१४	११	८	५	२	१	४	८	११	१५	१८	२२	२६	३०	३४	३८	४१
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
अक्षांश	यह मिनट क्रांति तुल्य धन या ऋण करें																													क्रांति के विपरीत धन या ऋण करें										

विदेशों के स्टेण्डर्ड टाईम और भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम का अन्तर ऋण धन चिह्नानुसार भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संस्कार करने पर विदेशी स्टेण्डर्ड टाईम होता है।

विदेशों के नाम	अन्तर घं.मि.
न्यूजीलैंड (क)	+ ६।०
टस्मानिया, विक्टोरिया, न्यू वेल्स ब्रोकेन हिल छोड़कर क्वीन्सलेण्ड	+ ४।३०
जापान कोरिया	+ ३।३०
दक्षिण आस्ट्रेलिया ब्रोकेनहिल प्रांत उत्तर टेरोटोरी (आस्ट्रेलिया)	+ ४।०
सायबेरिया, रेखांश ९७।३० से १११।३० पूर्व तक तथा चीन हाँगकाँग	+ २।३०
साराबान (ख)	+ २।००
भारत (इण्डिया)	०।००
यूरोपियन (रसिया)	− २।३०
यूगेण्डा केनिया कालोनी	− ३।००
पूर्वी यूरोप फिनलैंड (ग) तथा यूरोप कण्ट्री पूर्वीय विभाग तथा यूरोप जोन	− ३।३०
पेलेस्टाइन, सीरिया, इजिप्ट, द. अफ्रीका मध्य यूरोप, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, लिथुआनिया, जर्मनी, पोलेण्ड चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रीया, हंगरी, स्विटजरलैंड, युगोस्लाविया अल्वानिया, इटली, सर्वोनिया, सिसलीमाल्टा ग्रीनवीच (घ) ब्रिटिश द्वीप	− ४।३०
पश्चिमी यूरोप (ङ)	− ५।३०
हालैण्ड	− ५।१०
आइसलैण्ड	− ६।३०
पूर्वी ब्राजील	− ८।३०
युरुगुआ	− ९।००
ब्राउंडर न्यूफाउण्डलेण्ड (च)	− ०९।१
अटलांटिका केनेडा सेण्ट्रल ब्राजील	− ०९।०
पूर्वीय केनेडा ६८ से ८९ रेखांश पूर्वीय U.S.A. स्टेट्स चील (छ) पेरु पश्चिमी ब्राजील	− १०।३०
मध्य केनेडा ८९ से १०३ रेखांश पर मध्य U.S.A. स्टेट्स् ब्रिटिश होण्डर्स (ज)	− ११।३०
केनेडा (१०३ रेखांश से b.c.) हद तक स्टेट U.S.A.	− १२।३०
(पैसेफिक) ब्रिटिश कोलम्बिया, केलिफोर्निया, नेवड़ा आरगिन, वाशिंगटन	− १३।३०

टिप्पणी **(क)** अक्टूबर दूसरे रविवार से मार्च तीसरे रविवार तक घं. ६ मि. ३० का अन्तर रहता है।

(ख) सितम्बर ता. १४ से दिसम्बर ता. १४ तक घं. २ मि. २० का अन्तर रहता है।

(ग) जून २० से सितम्बर ता. ३० तक अन्तर घं. २ मि. ३० रहता है।

(घ) अप्रैल ता. २२ से अक्टूबर ता. ७ अन्तर घं. ४ मि. ३० रहता है।

(ङ) फ्रांस और वेल्जियम के लिए ता. १९ अप्रैल से ता. ४ अक्टूबर तक अन्तर घं. ४ मि. ३० रहता है।

(च) मई के पहले रविवार से अक्टूबर के पहले रविवार तक घं. ८ मि. १ का अन्तर रहता है।

(छ) सितम्बर ता. १ से ३१ मार्च तक घं. ९ मि. ३० का अन्तर रहता है.

(ज) अक्टूबर ता. १ से फरवरी ता. १४ तक घं. ११ मि. ० का अन्तर रहता है।

इस प्रकार उपरोक्त कोष्ठक को काम में लाते समय, समय का अन्तर अवश्य ध्यान में रखकर उपयोग करें।

वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अग.	सित.	अक्टू.	नव.	दिस.
१	+ ४	+१४	+१२	+ ३	− ३	− ३	+ ३	+ ६	०	− ९	−१६	−११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	− १	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	१	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
११	८	१५	१०	+१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	− १	५	५	३	१३	१६	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	− १	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	४	+ १	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	−१
२५	१२	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+१
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	− ३	३	+ ३	६	१	− ९	१६	१२	३
३१	+१४		+ ४		− ३		+ ६	+ १		−१६	−१२	+३

स्टेण्डर्ड स्थानिक मध्यमकाल और स्पष्ट काल- स्टेण्डर्ड (रेलवे) टाईम से स्थानीय (लोकल) मध्यम टाइम और स्थानिक स्पष्ट टाईम बनाने की विधि यह है कि अक्षांशादि सारिणी में प्रत्येक नगर के स्टेण्डर्डान्तर मिनट लिखे हैं, वे मिनट ऋण हों तो स्टेण्डर्ड टाईम में घटा देने से और धन हों तो जोड़ देने से स्थानिक मध्यम काल (लोकल मीन टाईम) होगा। इस स्थानीय मध्यम टाईम में वेलांतर कोष्ठक से उस तारीख का वेलांतर लेकर ऋण हों तो जोड़ने और धन हो तो घटाने से स्थानिक स्पष्टकाल (लोकल टाईम) का मान होगा।

समय-भेद-विवरण- आजकल प्रायः सर्वसाधारण ज्योतिषियों को 'समय भेद' का ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान को लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से एक अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले इस भेद को भलीभांति समझकर तदनन्तर जन्मपत्र आदि बनावें और एक बात का स्मरण रखना चाहिए कि जिस मान का जन्म टाईम हो उसी मान का जहाँ का जन्म हुआ हो वहां का सूर्योदय लेकर ही इष्ट शोधन करना चाहिए। अथवा जहाँ का जन्म हुआ हो वहाँ का दिनमान सूर्योदय लिया हो उसी

जिस मान का जन्म टाईम हो उसी मान का जहाँ का जन्म हुआ हो वहां का सूर्योदय लेकर ही इष्ट शोधन करना चाहिए। अथवा जहाँ का जन्म हुआ हो वहाँ का दिनमान सूर्योदय लिया हो उसी

मान का जन्म टाइम बनाकर इष्ट शोधन करना चाहिए। कई ज्योतिषी जन्म टाइम स्टैण्डर्ड लेकर दिनार्ध से या दिनमास से इष्ट बना लिया करते है, यह भी सर्वथा अनुचित बात है। दिनमान से इष्ट करना हो तो जन्म टाइम भी स्थानिक दिनमान का टाइम (स्पष्ट टाइम) करना पड़ता है, तदनन्तर इष्ट बनाना आवश्यक है। सरकार ने अपने रेलवे आदि व्यवहारों की सुविधा के लिए एक स्थान के मध्यम टाइम को सर्वत्र मान लिया है, जिससे हिन्दुस्तान में चाहे जिस स्थान में सर्वत्र वही टाइम प्रचार में है और सर्वत्र एक ही समय रहा करता है। सन् १९०६ के पूर्व, भारतवर्ष में मद्रास के टाइम को स्टेण्डर्ड टाइम माना गया था, तदनन्तर ग्रीन्विच नगर से पूर्व की ओर ५॥ घंटे रेखांश ८२।३० पर भारत में जहां जो स्थान है वहां का स्टैण्डर्ड टाइम माना गया है, यह स्थान बनारस से कुछ पूर्व आता है, उस स्थान से कुछ प्रसिद्ध नगरों के स्थानिक मध्यम टाइम और स्टेण्डर्ड टाइम का अन्तर दिया है, उसको स्टेण्डर्डान्तर लिखा है। नगरों से आगे जो स्टेण्डर्डान्तर मिनट है उसके ऋण का धन चिन्ह है, जिसमें ऋण के चिन्ह हो वह नगर स्टेण्डर्ड स्थान के पश्चिम में समझे और धन चिन्ह हो तो पूर्व की ओर है ऐसा समझें।

"वर्षफल"- प्राचीन सौर वर्षमान ३६५।१५।३१।३० है। इसी वर्षमान के अनुसार सब वर्ष बनाये जाते हैं परन्तु आधुनिक विज्ञानवेताओं ने सूक्ष्म यन्त्रों के वेधद्वारा शुद्ध वर्षमान ३६५।१५।२२।५७ निर्धारित किया है। अर्थात् नवीन वर्षमान से प्राचीन वर्षमान ८ पल अधिक है। इस प्रकार ८ वर्ष (७ गताब्द) में ही नवीन वर्षमान और प्राचीन वर्षमान से बनाये वर्ष के इष्ट में एक घटी का अन्तर पड़ जाता है और आगे अधिक गताब्द में अधिक अन्तर पड़ने से प्रायः लग्न भी बदल जाता है। पूना, बम्बई, मद्रास आदि के ज्योतिविज्ञान वेत्ताओं का मत है कि वर्ष का फलादेश इसी नवीन मान से बनाये गये वर्ष का ही ठीक मिलता है और कई स्थलों पर हमने भी देखा है कि इसी नवीन मान से फल घटित होता है। यहां विद्वानों के लिए हम नवीन और प्राचीन मान की दोनों वर्ष प्रवेश सारिणियां दे रहे है-

वर्षयोगिनीमते मुद्दादशा

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	स.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

वेधसिद्ध नवीनवर्षनामानुसारेण वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	११	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीन मान से वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

मुद्दादशा विधिः जन्म-नक्षत्र की संख्या में गत वर्ष जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़कर ३ और जोड़ें, ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

मुद्दादशाक्रम

श.	ग्रह	मा.	दि.
१	सूर्य	०	१८
२	चन्द्र	१	०
३	मं.	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी पलभा ६।३२ वर्षादौ केतकी अयनांशा २३

अंशा:	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	४४	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५
वृषभ १	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	४३	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन २	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३
कर्क ३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२
सिंह ४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८
कन्या ५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२
तुला ६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१
वृश्चिक ७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७
धनु ८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९
मकर ९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०
कुम्भ १०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	२८	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३
मीन ११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	१०	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७

दशमलग्न सारणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

अंशा:	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
	३४	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृषभ १	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
मिथुन २	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
कर्क ३	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
सिंह ४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६
कन्या ५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४
तुला ६	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
वृश्चिक ७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
धनुः ८	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
मकर ९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
कुम्भ १०	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६
मीन ११	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३
	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४

इष्ट सांपातिक काल से जन्म लग्न ज्ञात करने की सरल विधि

श्री चन्द्रभान भाटिया, एम.एस.सी.

पिछले कुछ वर्षों से आपके प्रिय ''श्रीविश्वविजय पंचांग'' में प्रतिदिन का सांपातिक काल (Sidereal Time) दिया जा रहा है। **अब सांपातिक काल की गणना रेखांश ०°०'(ग्रीनविचि) पर स्थानीय मध्यम समय (Local Mean Time) के ०.०० बजे मध्य रात्रि के आधार मान पर की गयी है।** इससे विश्व के किसी भी स्थान के लिए इष्ट सांपातिक काल की गणना की जा सकती है। इष्ट सांपातिक काल तथा जन्म स्थान की लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न सुगमता से शुद्ध तथा सूक्ष्म रूप से ज्ञात किया जा सकता है।

इस वर्ष लेख में पूर्ण संशोधन कर सांपातिक काल की गणना एवं लग्न ज्ञात करने की प्रक्रिया को कई उदाहरण देकर समझाया गया है। आशा है इससे पाठक लाभान्वित होंगे। -

सम्पादक

इष्ट सांपातिक काल की गणना

- जन्म समय अधिकतर **भारतीय मानक समय (Indian Standard Time)** के अनुसार ज्ञात होता है।
- सर्वप्रथम इसे **स्थानीय मध्यम समय** (Local Mean Time) में परिवर्तित किया जाता है।
- तत्पश्चात् इष्ट दिन का सांपातिक काल पंचांग मे दी गयी दैनिक स्पष्ट ग्रह सारणी से ज्ञात किया जाता है।
- यदि इष्ट दिन विगत अथवा आगामी वर्षों में से हो, तो इसे पंचांग में दिये गए कोष्टक (अ) (संशोधित), (ब) तथा (स) की सहायता से ज्ञात किया जाता है।
- इस सांपातिक काल की गणना रेखांश ०°०' (ग्रीनविचि) पर स्थानीय मध्यम समय **(L.M.T.)** के ००—०० बजे मध्य रात्रि के अनुसार की गयी है।
- सांपातिक काल की गणना करने के लिए जन्म स्थान के रेखांश के लिए संस्कार किया जाता है। प्रति १° रेखांश के अन्तर के लिए ०.६५७१ सैकन्ड (स्थूलतः २/३सैं.) है।
- यदि जन्म स्थान के रेखांश पूर्वी हों संस्कार धनात्मक और यदि रेखांश पश्चिमी हो तो संस्कार ऋणात्मक होगा। इस संस्कार को कोष्ठक (य) में दर्शाया गया है।
- जन्म स्थान संस्कार के संस्कारित इस सांपातिक काल में जन्म समय के स्थानीय (L.M.T.) को जोड़ा जाता है।
- इस योग में प्रति घण्टा १० सैं. स्थूल रूप से, अथवा सूक्ष्म रूप से ९.५८६ सैं. प्रति घण्टा जोड़ा जाता है। इस संस्कार को कोष्ठक (द) में दर्शाया गया है।
- यदि यह योग २४ घण्टों से अधिक हो तो योग में से २४ घण्टे घटा दिये जाते हैं।
- समय को सर्वदा रेलवे समयानुसार लिखना चाहिए अर्थात दोपहर १ बजकर ४५ मि. को १३ बजकर ४५ मि. रात्रि ११ बजकर २० मिनट को २३ बजकर २० मिनट, मध्य रात्रि के पश्चात २ बजकर १५ मि. को ०२ बजकर १५ मिनट आदि।
- दिनांक का आरम्भ मध्य रात्रि के पश्चात ००—००. बजे से ही मानना चाहिए।

इस प्रकार विश्व के किसी भी स्थान पर इष्ट समय के सांपातिक काल की गणना सरलता से की जा सकती है।

स्थानीय मध्यम समय (Local Mean Time)

हर देश का अपना **मानक समय (Standard Time)** होता है। भारत में पूर्वी रेखांश ८२°३०' के स्थानीय समय (L.M.T.) को ही पूर्ण देश का **मानक समय** (Standard Time) माना गया है। इसी समयानुसार सब सरकारी व गैर सरकारी कार्य होते हैं।

जन्म समय भी अधिकतर इसी मानक समयानुसार ज्ञात होता है। इष्ट सांपातिक काल ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम भा. प्र.स. (I.S.T.) को स्था. म.स. (L.M.T.) में परिवर्तित करते हैं।

- जिस स्थान का स्था. म. स. (L.M.T.) ज्ञात करना हो. उस स्थान के रेखांश यदि पूर्वी रेखांश ८२°३०' से कम हो तो संस्कार ऋणात्मक होगा और यदि स्थान के रेखांश पूर्वी रेखांश ८२°३०' से अधिक हो तो संस्कार धनात्मक होगा।
- स्थानीय रेखांश व पूर्वी रेखांश ८२°३०' के अन्तर को ४ से गुणा करने पर जितना आये, वह मिनट व सैकन्ड में इस संस्कार का मान होगा।
- यह संस्कार **''स्टैण्डर्ड अन्तर''** के नाम से जाना जाता है। इसे प्रत्येक स्थान के लिए पंचांग में दी गयी **''अक्षांशादि सारणी''** में दिया गया है।

उदाहरण: दिल्ली का स्टैण्डर्ड अन्तर कितना है?

दिल्ली के रेखांश पू. ७७°१२' हैं। अतः (८२°३०')–(७७°१२')=५°१८'। इसे ४ से गुणा करने परः ५°१८'x४=२१ मि. १२ सैं.। ये रेखांश पू. रेखांश ८२°३०' से कम होने के कारण ऋणात्मक है।

उदाहरण: दिल्ली में १७ बजकर ३० मि. भा. मा. स. (I.S.T.) का मान स्था. म.स. (L.M.T.) में कितना होगा?

दिल्ली का स्टै. अन्तर =२१ मि. १२सैं.।

	घं.	मि.	सैं.	
	१७	३०	००	भा.मा.स.
–		२१	१२	स्टै. अन्तर
	१७	०८	४८	स्था.म.सं.

उदाहरण: १० अक्टूबर १९९३ को दिल्ली में १७-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सां. का. (Sidereal Time) ज्ञात करना।

	घं.	मि.	सैं.	
	१७	५०	०	भा. मा. स.
–		२१	१२	स्टै. अन्तर
	१७	२८	४८	स्था. म.स.

घं. मि. सैं.
१ १४ २७ १० अक्टूबर १९९३ का ग्रह स्पष्ट सारणी से लिया ग्रीनविच का सां.का.
– ० ० ५१ दिल्ली के लिए संस्कार, कोष्ठक (य) से
+ १ १३ ३६ दिल्ली का ००-०० बजे स्था.म.स. (L.M.T) का सां.का.
+ १७ २८ ४८ दिल्ली का १७-५० बजे भा.मा.स. (I.S.T) पर स्था.मा.स.(L.M.T)
२ ४८ १७ घंटा का संस्कार कोष्ठक (द) से
+ ५ २९ मि. का संस्कार कोष्ठक (द) से
१८ ४५ १७ इष्ट समय का सां का.

उदाहरण: ४/५ जुलाई १९९३ की रात्रि को कलकत्ते में ०३-१५ बजे भा.मा.स. (I.S.T.) का सां.का. ज्ञात करना।

कलकत्ते के पूर्वी रेखांश ८८°२३' के लिए स्टै. अन्तर +२३ मिं. ३२ सैं.

घं. मि. सैं.
०३ १५ ०० भा. मा. स. (I.S.T.)
+ २३ ३२ स्टैं. अन्तर
०३ ३८ ३२ कलकत्ता का स्था. मा. स. (L.M.T.)
१८ ५२ ०० ५ जुलाई १९९३ का ग्रह स्पष्ट सारणी से लिया ग्रीनविच का सा. का.
– ५८ पूर्वी रेखांश ८८°२३' के लिए संस्कार, कोष्ठक (य) से:
१८ ५१ ०२ कलकत्ता के लिए ००-०० बजे स्था. म. स. का सां. का.
+ ०३ ३८ ३२ इष्ट समय का स्था. मा. स. (L.M.T)
३० ३ घं. का कोष्ठक (द) से संस्कार
+ ०६ ३८ मि. का कोष्ठक (द) से संस्कार
२२ ३०.१० इष्ट समय का सां. का.

अन्य वर्षों के लिए गणना

उदाहरण: बम्बई पू. रेखांश ७२°५०', स्टैं अन्तर -३८ मि. ४० सैं. के लिए ४ फरवरी १९५० को २३-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सं. का ज्ञात करना।

घं. मि. सैं.
२३ ५० ०० बम्बई में भा. मा. स.
– ३८ ४० बम्बई के लिए स्टैं. अन्तर
२३ ११ २० बम्बई के लिए स्था. मा. स.

पंचांग में दिये गए कोष्ठक (अ), (ब) तथा (स) से ४ फरवरी १९५० के लिए सा. का.
६ ४० १८ कोष्ठक (अ) से १९५० का सां. का.
+ २ २ १३ कोष्ठक (ब) से साधारण वर्ष के लिए फरवरी माह का सां. का.
+ ० ११ ५० कोष्ठक (स) से दिनांक ४ के लिए सां का.
८ ५४ २१ रेखांश ०°० का ००-०० बजे स्था.मा.स. पर ४ फरवरी १९५० का सां.का.
– ४८ बम्बई रेखांश ७२°५०' के लिए कोष्ठक (य) से संस्कार
८ ५३ ३३ बम्बई का ००-०० बजे स्था. म. स. पर ४ फरवरी १९५० का सां.का.
+ २३ ११ २० इष्ट समय का स्था. म. स. (L.M.T.)
३ ४७ २३ घं. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
+ ०२ ११ मि. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
३२ ८ ४२ योग २४ घं. से अधिक होने पर २४ घं.घटाये
– २४ ०० ००
८ ८ ४२ इष्ट समय का सां. का.

विदेश स्थित स्थान के लिए गणना

उदाहरण: ५ मई १९७६ को लन्दन पश्चिमी रेखांश ०°५' पर १३-३० बजे G.M.T. का सां. का. ज्ञात करना।

लन्दन पश्चिमी रेखांश ०°-५' का स्टैं. अन्तर :-० मि. २० सैं. होगा।

घं. मि. सैं.
१३ ३० ०० (G.M.T.) में समय
– ०० ०० २० स्टैं अन्तर
१३ २९ ४० स्था. म. स. (L.M.T.)
०६ ३९ ०९ कोष्ठक (अ) से १९७६ का सां. का.
+ ०७ ५७ ०३ कोष्ठक (ब) से मई माह का प्लुत वर्ष के लिए
+ ०० १५ ४६ सा. का दिनांक ५ का कोष्ठक (स) से सां. का.
१४ ५१ ५८ रेखांश ०°०' पर ५ मई १९७६ को ००-०० बजे स्था. म.स. पर सां. का.
०० ०० ०० पश्चिमी रेखांश ०५' के लिए कोष्ठक (य) से संस्कार
१४ ५१ ५८ लन्दन का ५ मई १९७२ का ००-०० बजे स्था.म.स. से सा.का.
+ १३ २९ ४० इष्ट समय का स्था. स. स.
+ ०० ०२ ०८ १३ घं. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
+ ० ० ०५ २९ मि. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
२८ २३ ५१
२४ ०० ०० २४ घं. घटाने पर
४ २३ ५१ इष्ट समय का सां. का.

सांपातिक काल व लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न ज्ञात करना

इस वर्ष आपके प्रिय "श्रीविश्वविजय पंचांग" में दिल्ली अक्षांश २८°३८' की लग्न सारणी एवं सर्वत्रोपयोगी दशम सारणी के अतिरिक्त बम्बई अक्षांश १८°५८' के लिए अक्षांश १९° की, कलकत्ता अक्षांश २२°३४' की, वाराणसी अक्षांश २५°१९' के लिए अक्षांश २५°२३' की लग्न सारणियां दी

+ २ २ १३ कोष्ठक (ब) से साधारण ...
+ ० ११ ५० कोष्ठक (स) से दिनांक ४ के लिए सां का.

इस वर्ष आपके प्रिय "श्रीविश्वविजय पंचांग" में दिल्ली अक्षांश २८°३८' की लग्न सारणी एवं सर्वत्रापयोगी दशम सारणी के अतिरिक्त बम्बई अक्षांश १८°५८' के लिए अक्षांश १९° की, कलकत्ता अक्षांश २२°३५' की, वाराणसी अक्षांश २५°१९' के लिए अक्षांश २५°२३' की लग्न सारणियां दी

जा रही हैं। ये लग्न सारणियां इनके अतिरिक्त भारत के कई स्थानो के लिय भी उपयोगी होंगी।

सभी लग्न सारणियां २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणियां हैं।

यदि जिस समय की गणना हो उस समय यदि अयनांश २३°४५' अयनांश से अधिक हो तो जितना अधिक हो, वह सारणी से ज्ञात लग्न में से घटाना होगा और यदि यह अयनांश २३°४५' अयनांश से कम हो तो जितना कम हो वह सारणी से ज्ञात लग्न में जोड़ना होगा। इस संस्कार को कोष्ठक (र) में दर्शाया गया है।

इन सारणियों के अतिरिक्त अक्षांश ०° से ६०° तक की सायन अर्थात ०° अयनांशीय लग्न सारणियां (कोष्ठक २ क व २ ख) भी दी जा रही है।

उदाहरण: १० अक्टूबर १९९३ को दिल्ली में १७-५० बजे भा. मा. स. के लिए जन्म लग्न ज्ञात करना।

इससे पूर्व उदाहरण में दिल्ली में १० अक्टूबर १९९३ को १७-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सां. का. १८ घं. ४५ मि. ३७ सैं. ज्ञात कर चुके हैं।

दिल्ली की लग्न सारणी से :

घं.	मि.	सैं.		रा.	अं.	क.
१८	४८	००	सां. का के लिए लग्न	११	२३	१५
१८	४४	००	सां. का. के लिए लग्न –	११	२१	५१
अतः ४ मि. अथवा २४० सैं. के लिए लग्न में अन्तर				००	०१	२४

अतः २४० सैं. के लिए लग्न में अन्तर ८४' हुआ।

अब इष्ट सां. का. १८ घं. ४५ मि. ३७ सैं. सां. का. १८-४४-० से कितना अधिक है?

	१८	४५	३७
–	१८	४४	००
	००	०१	३७

अर्थात १ मि. ३७ सैं. अथवा ९७ सैं. अधिक है।

२४० सैं. के सां. का. में अन्तर के लिए – लग्न में ८४' का अन्तर

तो ९७ सैं. के सा. का.में अन्तर – $\frac{८४\times९७}{२४०}$

= ३३'५७" का अन्तर होगा।

अतः १८ घं. ४५ मि. ३७ सैं. के सां.का. के लिए लग्नः

	रा.	अं.	क.	वि.
	११	२१	५१	००
+			३३	५७
	११	२२	२४	५७ होगा

यह लग्न सारणी २३°४५' अयनांशीय है।

इस उदाहरण में १० अक्टूबर १९९३ का अयनांश २३°४६'३०" लग्न सारणी २३°४५' अयनांशीय है।

अन्तर = २३°४६'३०"–२३°४५' = १'३०"

इष्ट दिन का अयनांश अधिक होने के कारण जन्म लग्न में संस्कारः

	रा.	अं.	का.	वि.	
	११	२२	२४	५७	
–			१	३०	अयनांश संस्कार
	११	२२	२३	२७	स्पष्ट व शुद्ध लग्न

उदाहरण: बम्बई पू. रेखांश ७२°५०, उत्तरी अक्षांश १८°५८' के लिए ४ फरवरी १९५० को २३-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का जन्म लग्न ज्ञात करना।

इसके पूर्व के उदाहरण से इष्ट दिन व समय का सां. का. ८ घं. ८ मि. ४२ सैं. ज्ञात कर चुके हैं।

पंचांग में दी गयी बम्बई की लग्न सारणी से:

घं.	मि.	सैं.		रा.	अं.	क.
८	१२	०		६	६	२०
८	८	०		६	५	२४
०	४	०		०	०	५६

अतः ४ मि. अथवा २४० सैं. के लिए लग्न में अन्तर - ५६'

अतः ४२ सैं. के लिए लग्न में अन्तर $\frac{५६\times४२}{२४०}$ =९'४८"

अतः जन्म लग्न

	रा.	अं.	क.	वि.
	६	५	२४	००
+			९	४८
	६	५	३३	४८

४ फरवरी १९५० का अयनांश २३°९'३६" है।

२३°	४५'	००"
-२३	०९	३६
०	३५	२४

यह २३°४५' से ३५'२४" कम है। अतः स्पष्ट व शुद्ध लग्न

	६	५	३३	४८
+			३५	२४
	६	६	०९	१२ होगी

इसी प्रकार दशम लग्न सारणी से दशम भाव स्पष्ट ज्ञात किया जा सकता है।

आगामी वर्ष आपके प्रिय "श्रीविश्वविजय पंचांग" में अन्य प्रसिद्ध नगरो की निरयन लग्न सारणियां दी जायेगी।

इस प्रकार इष्ट सांपातिक काल ज्ञात कर विश्व के किसी भी स्थान के लिए शुद्ध निरयन लग्न सुगमतापूर्वक ज्ञात की जा सकती है।

४, तिलक नगर, मथुरा (उ. प्र.) २८१००१

संशोधित कोष्ठक (अ)

प्रत्येक वर्ष की १ जनवरी को मध्यरात्रि ००-०० बजे स्था.म.स.(L.M.T.) के अनुसार रेखांश ००' पर सांपातिक काल कोष्ठक

ई. सन्	सांपातिक काल			ई. सन्	सांपातिक काल			ई. सन्	सांपातिक काल		
	घं.	मि.	सैं.		घं.	मि.	सैं.		घं.	मि.	सैं.
१९२६	६	३९	३३	१९५४	६	४०	२६	१९८२	६	४१	१६
१९२७	६	३८	३५	१९५५	६	३९	२९	१९८३	६	४०	१९
१९२८	६	३७	३८	१९५६	६	३८	३२	१९८४	६	३९	२२
१९२९	६	४०	३८	१९५७	६	४१	३१	१९८५	६	४२	२१
१९३०	६	३९	४१	१९५८	६	४०	३४	१९८६	६	४१	२४
१९३१	६	३८	४४	१९५९	६	३९	३६	१९८७	६	४०	२७
१९३२	६	३७	४७	१९६०	६	३८	३८	१९८८	६	३९	३०
१९३३	६	४०	४६	१९६१	६	४१	३७	१९८९	६	४२	३०
१९३४	६	३९	४९	१९६२	६	४०	४०	१९९०	६	४१	३३
१९३५	६	३८	५२	१९६३	६	३९	४२	१९९१	६	४०	३६
१९३६	६	३७	५५	१९६४	६	३८	४५	१९९२	६	३९	३८
१९३७	६	४०	५४	१९६५	६	४१	४४	१९९३	६	४२	३८
१९३८	६	३९	५७	१९६६	६	४०	४७	१९९४	६	४१	४०
१९३९	६	३८	५९	१९६७	६	३९	५०	१९९५	६	४०	४३
१९४०	६	३८	०२	१९६८	६	३८	५३	१९९६	६	३९	४५
१९४१	६	४१	०१	१९६९	६	४१	५२	१९९७	६	४२	४४
१९४२	६	४०	०३	१९७०	६	४०	५५	१९९८	६	४१	४७
१९४३	६	३९	०५	१९७१	६	३९	५८	१९९९	६	४०	४९
१९४४	६	३८	०८	१९७२	६	३९	०१	२०००	६	३९	५१
१९४५	६	४१	०७	१९७३	६	४२	०१	२००१	६	४२	५०
१९४६	६	४०	१०	१९७४	६	४१	०४	२००२	६	४१	५३
१९४७	६	३९	१२	१९७५	६	४०	०६	२००३	६	४०	५६
१९४८	६	३८	१५	१९७६	६	३९	०९	२००४	६	३९	५९
१९४९	६	४१	१५	१९७७	६	४२	०८	२००५	६	४२	५८
१९५०	६	४०	१८	१९७८	६	४१	१०	२००६	६	४२	०१
१९५१	६	३९	२१	१९७९	६	४०	१३	२००७	६	४१	०४
१९५२	६	३८	२४	१९८०	६	३९	१५	२००८	६	४०	०६
१९५३	६	४१	२४	१९८१	६	४२	१४	२००९	६	४३	०५

संशोधित कोष्ठक (य) सांपातिक के स्थानीय संस्कार हेतु

रेखांश	संस्कार सै.	पू. रेखांश	संस्कार सै.	पू. रेखांश	संस्कार सै.
१°३१'	— १	३९°३४'	— २६	७७°३७'	— ५१
३°०३'	— २	४१°०५'	— २७	७९°०८'	— ५२
४°३४'	— ३	४२°३७'	— २८	८०°३९'	— ५३
६°०५'	— ४	४४°०८'	— २९	८२°११'	— ५४
७°३७'	— ५	४५°३९'	— ३०	८३°४२'	— ५५
९°०८'	— ६	४७°११'	— ३१	८५°१३'	— ५६
१०°३९'	— ७	४८°४२'	— ३२	८६°४५'	— ५७
१२°१०'	— ८	५०°१३'	— ३३	८८°१६'	— ५८
१३°४२'	— ९	५१°४५'	— ३४	८९°४७'	— ५९
१५°१३'	— १०	५३°१६'	— ३५	९१°१९'	— ६०
१६°४४'	— ११	५४°४७'	— ३६	९२°५०'	— ६१
१८°१६'	— १२	५६°१८'	— ३७	९४°२१'	— ६२
१९°४७'	— १३	५७°५०'	— ३८	९५°५३'	— ६३
२१°१८'	— १४	५९°२१'	— ३९	९७°२४'	— ६४
२२°५०'	— १५	६०°५२'	— ४०	९८°५५'	— ६५
२४°२१'	— १६	६२°२४'	— ४१	१००°२६'	— ६६
२५°५२'	— १७	६३°५५'	— ४२	१०१°५८'	— ६७
२७°२४'	— १८	६५°२६'	— ४३	१०३°२९'	— ६८
२८°५५'	— १९	६६°५८'	— ४४	१०५°००'	— ६९
३०°२६'	— २०	६८°२९'	— ४५	१०६°३२'	— ७०
३१°५८'	— २१	७०°००'	— ४६	१०८°०३'	— ७१
३३°२९'	— २२	७१°३२'	— ४७	१०९°३४'	— ७२
३५°००'	— २३	७३°०३'	— ४८	१११°०६'	— ७३
३६°३१'	— २४	७४°३४'	— ४९	११२°३७'	— ७४
३८°०३'	— २५	७६°०६'	— ५०	११४°०८'	— ७५

विशेष : पश्चिम रेखांश के लिए संस्कार धनात्मक होगा।

१९५३	६	४१	२४	१९८१	६	४२	१४	२००९	६	४३	०५

...रेखांश के लिए संस्कार धनात्मक होगा।

कोष्ठक (र) अयनांश संस्कार हेतु

सन्	अयनांश संस्कार	सन्	अयनांश संस्कार	सन्	अयनांश संस्कार	सन्	अयनांश संस्कार
१९०१	+१°१६'	१९२६	+०°५५'	१९५१	+०°३४'	१९७६	+०°१३'
१९०२	१°१५'	१९२७	०°५४'	१९५२	०°३३'	१९७७	०°१२'
१९०३	१°१४'	१९२८	०°५३'	१९५३	०°३२'	१९७८	०°१२'
१९०४	१°१४'	१९२९	०°५३'	१९५४	०°३२'	१९७९	०°११'
१९०५	१°१३'	१९३०	०°५२'	१९५५	०°३१'	१९८०	०°१०'
१९०६	+१°१२'	१९३१	+०°५१'	१९५६	+०°३०'	१९८१	+०°९'
१९०७	१°११'	१९३२	०°५०'	१९५७	०°२९'	१९८२	०°८'
१९०८	१°१०'	१९३३	०°४९'	१९५८	०°२८'	१९८३	०°७'
१९०९	१°९'	१९३४	०°४८'	१९५९	०°२७'	१९८४	०°६'
१९१०	१°८'	१९३५	०°४८'	१९६०	०°२७'	१९८५	०°६'
१९११	+१°८'	१९३६	+०°४७'	१९६१	+०°२६'	१९८६	+०°५'
१९१२	१°७'	१९३७	०°४६'	१९६२	०°२५'	१९८७	०°४'
१९१३	१°६'	१९३८	०°४५'	१९६३	०°२४'	१९८८	०°३'
१९१४	१°५'	१९३९	०°४४'	१९६४	०°२३'	१९८९	०°२'
१९१५	१°४'	१९४०	०°४३'	१९६५	०°२२'	१९९०	०°१'
१९१६	+१°३'	१९४१	+०°४३'	१९६६	+०°२२'	१९९१	+०°१'
१९१७	१°३'	१९४२	०°४२'	१९६७	०°२१'	१९९२	०°०'
१९१८	१°२'	१९४३	०°४१'	१९६८	०°२०'	१९९३	−०°१'
१९१९	१°१'	१९४४	०°४०'	१९६९	०°१९'	१९९४	−०°२'
१९२०	१°०'	१९४५	०°३९'	१९७०	०°१८'	१९९५	−०°३'
१९२१	+०°५९'	१९४६	+०°३८'	१९७१	+०°१७'	१९९६	−०°४'
१९२२	०°५८	१९४७	०°३७'	१९७२	०°१७'	१९९७	−०°४'
१९२३	०°५८'	१९४८	०°३७'	१९७३	०°१६'	१९९८	−०°५'
१९२४	०°५७'	१९४९	०°३६'	१९७४	०°१५'	१९९९	−०°६'
१९२५	०°५६'	१९५०	०°३५'	१९७५	०°१४'	२०००	−०°७'

कोष्ठक (ब)

प्रतिमास के आरम्भ में साम्पातिक काल की वृद्धि

मास	साधारण वर्ष			प्लुत वर्ष		
	घं.	मि.	सैं.	घं.	मि.	सैं.
जनवरी	०	०	०	०	०	०
फरवरी	२	२	१३	२	२	१३
मार्च	३	५२	३७	३	५६	३३
अप्रैल	५	५४	५०	५	५८	४७
मई	७	५३	७	७	५७	३
जून	९	५५	२०	९	५९	१६
जुलाई	११	५३	३६	११	५७	३३
अगस्त	१३	५५	५०	१३	५९	४६
सितम्बर	१५	५८	३	१६	२	०
अक्टूबर	१७	५६	२०	१८	०	१६
नवम्बर	१९	५८	३३	२०	२	२९
दिसम्बर	२१	५६	५०	२२	०	४६

प्रत्येक तारीख को साम्पातिक काल की वृद्धि

कोष्ठक (स)

ता.	साम्पा. काल			ता.	साम्पा. काल		
	घं.	मि.	सैं.		घं.	मि.	सैं.
१	०	०	०	१६	०	५९	०८
२	०	३	५७	१७	१	३	५
३	०	७	५३	१८	१	७	१
४	०	११	५०	१९	१	१०	५७
५	०	१५	४६	२०	१	१४	५५
६	०	१९	४३	२१	१	१८	५१
७	०	२३	३९	२२	१	२२	४८
८	०	२७	३६	२३	१	२६	४४
९	०	३१	३२	२४	१	३०	४१
१०	०	३५	२९	२५	१	३४	३७
११	०	३९	२६	२६	१	३८	३४
१२	०	४३	२२	२७	१	४२	३०
१३	०	४७	१९	२८	१	४६	२७
१४	०	५१	१५	२९	१	५०	२४
१५	०	५५	१२	३०	१	५४	२०
				३१	१	५८	१७

कोष्ठक (द)

प्रति घंटे (मिनट या सैकेन्ड) के लिए साम्पातिक काल का संस्कार

घं. मि. सैं.	मि. सैं. प्रसे.	सैं. प्रसे. –	प्रसे. – —	घं. मि. सैं.	मि. सैं. प्रसे.	सैं. प्रसे. –	प्रसे. – —
१	०	९	५१	३१	५	५	३३
२	०	१९	४२	३२	५	१५	२४
३	०	२९	३४	३३	५	२५	१६
४	०	३९	२५	३४	५	३५	७
५	०	४९	१६	३५	५	४४	५९
६	०	५९	८	३६	५	५४	५०
७	१	९	०	३७	६	४	४१
८	१	१८	२१	३८	६	१४	३७
९	१	२८	४२	३९	६	२४	२४
१०	१	३८	३४	४०	६	३४	१५
११	१	४८	२५	४१	६	४४	७
१२	१	५८	१७	४२	६	५३	५८
१३	२	८	८	४३	७	३	५०
१४	२	१८	०	४४	७	१३	४१
१५	२	२७	५१	४५	७	२३	३२
१६	२	३७	४२	४६	७	३३	२४
१७	२	४७	३३	४७	७	४३	१५
१८	२	५७	२५	४८	७	५३	३
१९	३	७	१६	४९	८	२	५८
२०	३	१७	८	५०	८	१२	४९
२१	३	२६	५९	५१	८	२२	४१
२२	३	३६	५०	५२	८	३२	३२
२३	३	४६	४२	५३	८	४२	२३
२४	३	५६	३३	५४	८	५२	१५
२५	४	६	२५	५५	९	२	६
२६	४	१६	१६	५६	९	११	५८
२७	४	२६	७	५७	९	२१	४९
२८	४	३५	५९	५८	९	३१	४०
२९	४	४५	५०	५९	९	४१	३२
३०	४	५५	४२	६०	९	५१	२३

अयनांश सारिणी (त)

ई.सन्.	अ.	क.	वि.	ई.सन्.	अ.	क.	वि.
१९५०	२३	९	३१	१९८६	२३	३९	४०
१९५१	२३	१०	२१	१९८७	२३	४०	३०
१९५२	२३	११	११	१९८८	२३	४१	२०
१९५३	२३	१२	०२	१९८९	२३	४२	११
१९५४	२३	१२	५२	१९९०	२३	४३	०२
१९५५	२३	१३	४२	१९९१	२३	४३	५२
१९५६	२३	१४	३२	१९९२	२३	४४	४२
१९५७	२३	१५	२३	१९९३	२३	४५	५०
१९५८	२३	१६	१३	१९९४	२३	४६	२३
१९५९	२३	१७	०३	१९९५	२३	४७	१४
१९६०	२३	१७	५३	१९९६	२३	४८	०४
१९६१	२३	१८	४४	१९९७	२३	४८	५१
१९६२	२३	१९	३४	१९९८	२३	४९	४४
१९६३	२३	२०	२४	१९९९	२३	५०	३४
१९६४	२३	२१	१४	२०००	२३	५१	२४
१९६५	२३	२२	०२	२००१	२३	५२	१४
१९६६	२३	२२	५५	२००२	२३	५३	०४
१९६७	२३	२३	४५	२००३	२३	५३	५४
१९६८	२३	२४	३५	२००४	२३	५४	४४
१९६९	२३	२५	२६	२००५	२३	५५	३५
१९७०	२३	२६	१६	२००६	२३	५६	२५
१९७१	२३	२७	०५	२००७	२३	५७	१५
१९७२	२३	२७	५६	२००८	२३	५८	०६
१९७३	२३	२८	४७	२००९	२३	५८	५६
१९७४	२३	२९	३७	२०१०			
१९७५	२३	३०	२७	२०११			
१९७६	२३	३१	१७	२०१२			
१९७७	२३	३२	०८				
१९७८	२३	३२	५८				
१९७९	२३	३३	४८				
१९८०	२३	३४	३८				
१९८१	२३	३५	२९				
१९८२	२३	३६	१९				
१९८३	२३	३७	०९				
१९८४	२३	३७	५९				
१९८५	२३	३८	५०				

अयनांश सारिणी (थ)
तारीख से अयनगति ज्ञान

मास	ता.	अयनगति विकला	मास	ता.	अयनगति विकला
जनवरी	१	०	जुलाई	२	२५
	८	१		९	२६
	१५	२		१७	२७
	२३	३		२४	२८
	३०	४		३१	२९
फरवरी	६	५	अगस्त	७	३०
	१४	६		१५	३१
	२१	७		२२	३२
	२८	८		२९	३३
मार्च	७	९	सितम्बर	६	३४
	१५	१०		१३	३५
	२२	११		२०	३६
	२९	१२		२७	३७
अप्रैल	६	१३	अक्टूबर	५	३८
	१३	१४		१२	३९
	२०	१५		१९	४०
	२७	१६		२७	४१
मई	५	१७	नवम्बर	३	४२
	१२	१८		१०	४३
	१९	१९		१७	४४
	२७	२०		२५	४५
जून	३	२१	दिसम्बर	२	४६
	१०	२२		९	४७
	१७	२३		१७	४८
	२५	२४		२४	४९
				३१	५०

विदेश और द्वीपान्तरों के अक्षांशादि

नगर देश नाम	अक्षांश अं. क.	ग्रीन्विच से रेखांश अं. क.	दिल्ली से देशान्तर घं. मि.
अदन (एडन अरब)	उ. १३।२५	पू. ४५।००	- २।०९
अर्जेन्टाइना (द. अमे.)	द. २६।१२	पू. ६४।४५	– ९।२८
आस्ट्रेलिया दक्षि.	द. ३२।००	पू. १४६।१७	+ ४।३६
काबुल (अफगानिस्तान)	उ. ३४।३०	पू. ६९।१७	– ०।३२
कांडी (सीलोन लंका)	उ. ०७।११	पू. ८०।३२	+ ०।१३
कांगो (प. अफ्रीका)	द. ०६।००	पू. १५।५०	– ४।०६
काहिरा (मिश्र)	उ. ३०।०२	पू. ३१।१५	– ३।०४
क्वेटा (बिलोचिस्तान)	उ. ३०।१३	पू. ६७।०१	– ०।४१
ग्रीन्विच (यूरोप)	उ. ५१।२०	०.०।००	– ५।०९
जेनेवा (स्विट्जर. पू.)	उ. ४६।१३	पू. ०६।०७	– ४।४५
जेरूशलम (इजरा.)	उ. ३१।४६	पू. ३५।१४	– २।४८
ट्रांसवाल (द. अफ्रीका)	द. २५।००	पू. २९।००	– ३।१३
ट्रिपोली (उ. अफ्रीका)	उ. ३२।४५	पू. १३।१५	– ४।१६
टोकियो (जापान)	उ. ३५।४२	पू. १३९।४५	+ ४।१०
तेहरान (ईरान)	उ. ३५।४१	पू. ५१।२५	– १।४३
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ. ४०।४३	पू. ७४।००	–१०।०५
नाईरोबी (पू. अफ्रीका)	द. ०१।२०	पू. ३६।४९	– २।४२
पेरिस (फ्रांस)	उ. ४८।५०	पू. ०२।२०	– ५।००
पेचिंग (चीन)	उ. ३९।५५	पू. ११६।२४	+ २।३७
बर्लिन (जर्मनी)	उ. ५२।३२	पू. १३।२५	– ४।१५
बल्गारिया (यूरोप)	उ. ४३।१८	पू. २६।१७	– ३।२४
बगदाद (ईराक)	उ. ३३।१८	पू. ४४।२७	– २।११
मका (अरब)	उ. २१।२५	पू. ४०।१२	– २।२८
मास्को (रूस)	उ. ५५।४५	पू. ३७।३७	– २।३९
माण्डले (ब्रह्मा)	उ. २२।००	पू. ९६।०८	+ १।१६
रोम (इटली)	उ. ४१।५५	पू. १२।२८	– ४।१९
लंदन (इंग्लैण्ड)	उ. ५१।३०	पू. ००।०५	– ५।०९
ल्हासा (तिब्बत)	उ. २९।४०	पू. ९१।०५	+ ०।५५
वाशिंगटन (अमेरिका)	उ. ३८।५५	पू. ७७।०४	– १०।१६
सिंगापुर (मलाया)	उ. ०१।१६	पू. १०३।४५	+ १।४६
हांगकांग (चीन)	उ. २२।००	पू. ११४।०१.	+ २।२७

१९८५ २३ ३८ ५० उ. २२१०० पू. ११४१०१. + २१२७

विश्व के स्टैण्डर्ड टाईम और समय क्षेत्रों का विवरण

विभिन्न देशों के और क्षेत्रों के स्थानीय स्टेण्डर्ड टाईम (U.T.) या ग्रीनविच टाईम (G.M.T.) से आगे का समय (+), पीछे का समय (-)	क्षेत्रीय स्टै. टाईम घं.	याम्योत्तर वृत्त या मेरिडियन	भा.स्टै.टा. से क्षेत्रीय स्टै. टा. का अन्तर (घं.)
अल्जीरिया, एशेन्सन द्वीप, आइसलैण्ड, उत्तरी आयरलैण्ड[A], आइवरी कोस्ट, मौरीटानिया, मोरक्को[A], रियोडि ओरो[B], सेनेगल, सिएरालियोने, टनजिअर, इंग्लैण्ड (यू.के.), गैम्बिया, घाना, आइवरी कोस्ट, जी.एम.टी. या यू.टी	०	०	-५.५०
अल्बानिया[A], अंगोला, आस्ट्रिया, बेल्जियम, केमरून, सेन्ट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक, कांगो गणराज्य, चेकोस्लोवाकिया, दहोमी, डेनमार्क, जर्मनी, फ्रांस[B], क्रोशिया[B], जिब्राल्टर[B], हंगरी, आइरिश रिपब्लिक, इटली[A], माल्टा, मोनाको[B], नीदरलैण्ड (हार्लैण्ड, नाइजर, नाईजीरिया, नार्वे[A], पोलैण्ड[A], पुर्तगाल, सारडिनीया, स्पेन[B], स्वीडन, स्विटजरलैण्ड, टयूनिशिया[A], यूगोस्लाविया, लक्जमबर्ग[B], केमरून	+ १	१५° पूर्व	- ४.५
बेक्युआनालैण्ड, बल्गारिया, साइप्रस, मिश्र[A], ग्रीस, क्रीट, जोर्डन, मलावी, मोजाम्बिक, रोडेशिया, दक्षिण अफ्रीका गणराज्य, सीरिया[A], टर्की[A], जाम्बिया, लेबनान, लीबिया, जेयरे, सूडान[A],	+ २	३०° पूर्व	- ३.५
अदन, अस्टोनिया, इथोपिया, इराक, केन्या, कुवैत, लाटविया[A], लिथुआनिया, मालागासी गणराज्य, सऊदी अरब का जद्दा क्षेत्र, सोमालिया, तंजानिया, जन्जीबार, रूस का [मास्को क्षेत्र, ४०° पूर्व रेखांश से पश्चिम का क्षेत्र, यूक्रेन,]	+ ३	४५° पूर्व	- २.५
ईरान, जिम्बाबवे,	+ ३.५	५२.५° पूर्व	- २
बहरीन द्वीप, मारीशस, ओमान, मस्कट, सलाला, कतर, सऊदी अरब का दहरान क्षेत्र, रूस का [४०°पूर्व रेखांश से ५२.५°पूर्व रेखांश तक का क्षेत्र (काला सागर से कश्यप सागर तक)]	+ ४	६०° पूर्व	- १.५
अफगानिस्तान	+ ४.५	६७.५° पूर्व	- १
चागोस द्वीप समूह, मालदीप द्वीप समूह, पाकिस्तान, रूस का [५२.५° पूर्व रेखांश से ६७.५°पूर्व रेखांश तक का क्षेत्र (सेवरडलीवाक्स और पश्चिमी कजाक)]	+ ५	७५° पूर्व	- ०.५
भूटान, भारत, श्री लंका,	+ ५.५	८२.५° पूर्व	०
रूस का [पूर्व रेखांश ६७.५° से ८२.५° तक का क्षेत्र (ओमस्क, पूर्वी कजाक)], बांग्लादेश	+ ६	९०° पूर्व	+ ०.५
कोकोस-कीलींग द्वीप समूह, म्यामार (बर्मा)	+ ६.५	९७.५	+ १
रूस का [पूर्वी रेखांश ८२.५° से ९७.५° तक का क्षेत्र (क्रासनोयार्स्क, न्यू साइबेरिया)], इंडोनेशिया के [सुमात्रा, जावा, बाली, बंङ्का, बिलियेन, लोमबोक द्वीप], लाओस, थाइलैण्ड (श्याम), कम्बोडिया, वियतनाम,	+ ७	१०५° पूर्व	+ १.५
मलेशिया का, [फेडरेशन ऑफ मलाया क्षेत्र], सिंगापुर,	+ ७.५	११२.५° पूर्व	+ २

	क्षेत्रीय स्टै.टा.घं.	याम्योत्तर वृत्त या मेरिडियन	भा.स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. का अन्तर (घं.)
पश्चिमी आस्ट्रेलिया, चीन, ताइवान, इंडोनेशिया के [बोर्निओ, सेलेबेस, तिमोर, फ्लोरेस, सुम्बावा द्वीप] मलेशिया के [सारावाक और साबाह क्षेत्र], फिलीपीन, रूस का [पूर्व रेखांश ९७.५° से ११२.५° के मध्य का क्षेत्र इरकुत्सक]	+ ८	१२०° पूर्व	+ २.५
इंडोनेशिया के [अरु, केयी, तनिम्बार, मोलुकास, पं. इरियान, द्वीप], जापान, कोरिया, मंचुरिया (चीन), रूस का [पूर्व रेखांश ११२.५° से १२७.५° के मध्य का क्षेत्र, यकुत्सक, चिटीन्स्क]	+ ९	१३५° पूर्व	+ ३.५
आस्ट्रेलिया महाद्वीप में [दक्षिणी आस्ट्रेलिया, नार्दन टेरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया]	+ ९.५	१४२.५° पूर्व	+ ४
आस्ट्रेलिया महाद्वीप में [केपीटल टेरिटरी (केनबेरा), विक्टोरिया, न्यू साउथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया], केरोलिन द्वीप समूह का [पूर्वी रेखांश १६०° से पश्चिम का क्षेत्र], इरियान (ब्रिटिश न्यू ग्यानिआ), मेरिआना (लाड्रोन) द्वीप, पापुआ द्वीप, रूस का [पूर्व रेखांश १२७.५° से १४२.५° तक का क्षेत्र, खाबरोवास्क, व्लाडीवोस्टोक],	+ १०	१५०° पूर्व	+ ४.५
केरोलिनद्वीप समूह के (ट्रूक, पोनापे द्वीप), न्यू कालेडोनिया, न्यू हेब्राइडस, साखालिन, सोलोमन द्वीप समूह, रूस का [पूर्व रेखांश १४२.५° से १५७.५° तक का क्षेत्र, मगादान], कुरील द्वीप समूह	+ ११	१६५° पूर्व	+५.५
नोरफोक आइलैण्ड,	+ ११.५	१७२.५° पूर्व	+ ६
कैरोलिन द्वीप समूह का [पूर्वी रेखांश १६०° से पूर्व का क्षेत्र], फीजि (एलिस, गिलबर्ट द्विपों सहित), मार्शल आइलैण्डस्, न्यूजीलैण्ड, रूस का [पूर्व रेखांश १५७.५° से १७२.५° तक का क्षेत्र पेट्रोपाव्लोव्स्क)	+ १२	१८०° पूर्व	+ ६.५
टोंगा (फ्रेन्डली आइलैन्ड)	+ १३	१९५° पूर्व	+ ७.५
ग्रीनविच से पश्चिम के समय क्षेत्र			
लाईबेरिया	− ०.७५	११.२५° पश्चिम	− ६.२५
एजोर्स, मदैरा^A, पुर्तगीज़ गाइना,	− १	१५° पश्चिम	− ६.५
केपवर्ड आइलैण्ड, ग्रीनलैण्ड-स्कोर्सबाई साउण्ड,	− २	३०° पश्चिम	− ७.५
अर्जेन्टाइना, ब्राजील का [पूर्वी तटीय क्षेत्र], ग्रीनलैण्ड का [अंगमागसालिक, वेस्टकोस्ट, प. तट] उरुग्वे^A,	− ३	४५° पश्चिम	− ८.५
कनाडा का [न्यू फाउण्डलैण्ड, क्यूबेक, पश्चिमी रेखांश ६३° से पूर्व का क्षेत्र], डच सूरिनाम,	− ३.५	५२.५° पश्चिम	− ९
ब्रिटिश गियाना,	− ३.७५	५६.२५° पश्चिम	− ९.२५
बोलिविया, ब्राजील का (पश्चिमी भाग), चिली, फाकलैण्ड आइलैण्ड (पोर्ट स्टेनले सहित), ग्रीनलैण्ड का (थूले क्षेत्र), फ्रेन्च सूरिनाम, प्राग्वे, प्युर्टोरिको, वेनेजुएला, वेस्ट इंडिज का [बारबाडोस, ग्युडेलोप, लीवार्ड आइल, मार्टिनीक, टोबागो, त्रिनिदाद, विन्डवार्ड आइल], क्यूराको, बरमूडा, बोलिविया, कनाडा^A का [उ.-प. क्षेत्र, पश्चिमी रेखांश ६८° से पूर्व का भाग, न्यू ब्रून्स्विक, नोवा स्कोटिया, प्रिन्स एडवर्ड आइलैण्ड] - **अटलान्टिक टाइम A.T.**	− ४	६०° पश्चिम	− ९.५

भाग, न्यू ब्रून्स्विक, नोवा स्कोटिया, प्रिन्स एडवर्ड आइलैण्ड] - अटलांटिक टाईम A.T.

	क्षेत्रीय स्टै.टा.घं.	याम्योत्तर वृत्त या मेरिडियन	भा.स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. का अन्तर (घं.)
ब्राजील का एक्रे क्षेत्र, कनाडा^A का [क्यूबेक, (पश्चिमी रेखांश ६३° से पश्चिम का क्षेत्र), ओन्टारियो, (पश्चिमी रेखांश ९०° से पूर्व का क्षेत्र), ओटावा, उत्तर पश्चिमी क्षेत्र ६८° प. से ८५° प. तक - **इस्टर्न टाईम E.T.**], हैति, पनामा, पेरू, संयुक्त राज्य अमेरिका^A का [कानेक्टीकट, डेलवारे, फ्लोरिडा, जार्जिया, मैने, मेरीलैण्ड, मेसाचुसेटस्, मिशिगन, न्यूहेम्पशायर, न्यू जर्सी, न्यूयॉर्क, नार्थ केरोलिना, ओहियो, पेन्सिलवानिया, रोडस् आइलैण्ड, साउथ केरोलिना, वरमाउण्ट, विर्जीनिया, वाशिंगटन डी. सी, वेस्ट विर्जीनिया- **इस्टर्न टाईम E.T.**], डोमिनिकन रिपब्लिक^C, बहामास, जमैका, कोलम्बिया, क्यूबा^A, एक्वेडोर	- ५	७५° पश्चिम	- १०.५
ब्रिटिश होन्डुरास^C, ग्वोटेमाला, होन्डुरास, निकारागुआ, कनाडा का [ओन्टारियो, रेखांश ९०° (प.) से पश्चिम का क्षेत्र, मनिटोबा, एन. डब्लू. टेरिटरिज, (प. रेखांश ८५° से १०२°), इस्ट सस्क्टेचेवान], मेक्सिको का मेक्सिको सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका का [अलाबामा, अरकन्सास, इलियोनिस, इण्डियाना, आयोवा, कन्सास, केन्टुकी, ल्युसिन्प, मिनिसोटा, मिसिसिपी, मिसुरी, नेब्रास्का, नोर्थ डकोटा, ओकलहोमा, साउथ डकोटा, टेनेसी, टेक्सास, विन्स्कोन्सिन] - - **सेन्ट्रल - टाईम (सी.टी.)**	- ६	९०° पश्चिम	- ११.५
कनाडा^A का [वेस्ट सस्क्ट्चेवान, एन. डब्ल्यू टेरिटरीज़ (पश्चिमी रेखांश १०२° से १२०° तक) अल्ब्रेटा] मेक्सिको का [सोनोरा, सिनालोआ, नयरिट, साउदर्न डिस्ट्रिक्ट आफ लोअर केलिफोर्निया] संयुक्त राज्य अमेरिका का [अरिजोना, कोलोराडो, इडाहो, मोन्टाना, न्यू मेक्सिको, साउथ डकोटा (पश्चिमी भाग), ऊटा, वायोमिंग] - **माउन्टेन टाईम (एम.टी)**	- ७	१०५° पश्चिम	- १२.५
कनाडा^A का [कोलम्बिया, एन. डब्ल्यू टेरिटरीज़ (पश्चिमी रेखांश १२०° से पश्चिम का क्षेत्र)], मेक्सिको का [नार्दन डिस्ट्रिक्ट आफ लोअर केलिफोर्निया], संयुक्त राज्य अमेरिका का [कैलिफोर्निया, नेवाडा, ओरेगान, वाशिंगटन स्टेट], अलास्का का केट्चीकन से स्कागवे तक का क्षेत्र - **पेसिफिक टाईम (पी.टी.)**	- ८	१२०° पश्चिम	-१३.५
अमेरिका के अलास्का का स्कागवे से प. रेखांश १४१° तक का क्षेत्र	- ९	१३५° पश्चिम	- १४.५
मार्क्यूसस आइलैण्ड	- ९.५	१४२.५° पश्चिम	- १५
अलास्का का [पश्चिमी रेखांश १४१° से १६१° तक का क्षेत्र], आस्ट्रल आइलैण्ड,	- १०	१५०° पश्चिम	- १५.५
कुक आइलैण्डस्	- १०.५	१५७.५° पश्चिम	- १६
अलास्का का [१६१° प. रेखांश से अन्तिमी सुदूरवर्ती पश्चिमी भाग], एल्यूशिन आइलैण्ड, मिडवे आइलैण्ड,	- ११	१६५° पश्चिम	- १६.५

A - इस चिन्ह के क्षेत्रों व देशों में ग्रीष्मकाल में घड़ियों का समय, तत्सम्बन्धित स्टैण्डर्ड टाईम से भिन्न होता है। इन क्षेत्रों में ग्रीष्मकाली समय में घड़ियां एक घंटा आगे कर दी जाती हैं।
B - इस चिन्ह के क्षेत्रों में पूरे वर्ष दर्शाया गया समय प्रयुक्त होता है परन्तु यह वहां के (वैधानिक समय) से भिन्न हो सकता है।
C - इस चिन्ह के क्षेत्रों व देशों में शीतकालीन समय का प्रयोग होता है।
टिप्पणी :- उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में निम्न स्टेण्डर्ड टाईम प्रयुक्त होते हैं। ए.एस.टी., इ.एस.टी., सी.एस.टी., एम.एस.टी. और पी.एस.टी और यह (युनिवर्सल टाईम) या (ग्रीनविच मीन टाईम) से क्रमशः ४.५.६.७ और ८ घंटा पीछे होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में जब ग्रीष्म काल प्रचालित किया जाता है तो इन समयों को क्रमशः (ए.डी.टी., इ.डी.टी., सी.डी.टी., एम. डी.टी. और पी.डी.टी.) के नाम से जाना जाता है और यह (युनिवर्सल टाईम) या (ग्रीनविच मीन टाईम) से क्रमशः ३, ४, ५, ६ और ७ घंटा पीछे होते हैं।

दिल्ली अक्षांश २८°३८' की २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी उपकरण: सांपातिक काल

घं. / मि.	०			२			४			६			८			१०		
	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.
०	२	१८	३१	३	१४	१४	४	९	५७	५	६	१५	६	२	३३	६	२८	१६
४		१९	२३		१५	५		१०	५०		७	८		३	२५	६	२९	७
८		२०	१६		१५	५६		११	४२		८	०		४	१७	६	२९	५८
१२		२१	८		१६	४७		१२	३४		८	५३		५	९	७	०	४९
१६		२२	०		१७	३८		१३	२६		९	४७		६	१	७	१	४०
२०	२	२२	५२	३	१८	२९	४	१४	१९	५	१०	४०	६	६	५३	७	२	३१
२४		२३	४४		१९	२०		१५	११		११	३२		७	४४		३	२२
२८		२४	३६		२०	११		१६	३		१२	२५		८	३६		४	१३
३२		२५	२८		२१	२		१६	५५		१३	१८		९	२८		५	४
३६		२६	२०		२१	५३		१७	४८		१४	१०		१०	२०		५	५५
४०	२	२७	११	३	२२	४४	४	१८	४०	५	१५	३	६	११	११	७	६	४६
४४		२८	३		२३	३६		१९	३३		१५	५६		१२	३		७	३७
४८		२८	५४		२४	२७		२०	२५		१६	४९		१२	५५		८	२९
५२	२	२९	४६		२५	१९		२१	१८		१७	४२		१३	४६		९	२०
५६	३	०	३७		२६	१०		२२	११		१८	३४		१४	३७		१०	११

घं. / मि.	१२			१४			१६			१८			२०			२२		
	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.
०	७	२३	५९	८	२१	४९	९	२५	२०	११	६	१५	०	१७	१०	१	२०	४१
४		२४	५२		२२	५०		२६	३६		७	४१		१८	२५		२१	४०
८		२५	४५		२३	५०		२७	५२		९	६		१९	३९		२२	४०
१२		२६	३८		२४	५१		२९	८		१०	३२		२०	५२		२३	३९
१६		२७	३१		२५	५३	१०	०	२५		११	५८		२२	५		२४	३८
२०	७	२८	२४	८	२६	५५	१०	१	४२	११	१३	२३	०	२३	१८	१	२५	३६
२४		२९	१७		२७	५७		३	०		१४	४९		२४	३०		२६	३४
२८	८	०	११		२८	५९		४	१९		१६	१३		२५	४१		२७	३२
३२		१	४	९	०	२		५	३८		१७	३८		२६	५१		२८	३०
३६	८	१	५८		१	६		६	५८		१९	३		२८	२	१	२९	२७
४०	८	२	५५	९	२	१०	१०	८	१८	११	२०	२७	०	२९	११	२	०	२४
४४		३	४७		३	१५		९	३९		२१	५१	१	०	२१		१	२०
४८		४	४१		४	२०		११	०		२३	१५		१	३०		२	१७
५२		५	३६		५	२४		१२	२१		२४	३८		२	३८		३	१३
५६		६	३१		६	३१		१३	४३		२६	१		३	४५		४	९

घं. / मि.	१			३			५			७			९			११		
०	३	१	२८	३	२७	१	४	२३	३	५	१९	२७	६	१५	२९	७	११	२
४		२	१९		२७	५३		२३	५६		२०	१९		१६	२०		११	५३
८		३	१०		२८	४४		२४	४८		२१	१२		१७	११		१२	४४
१२		४	१		२९	३५		२५	४१		२२	५		१८	३		१३	३६
१६		४	५३	४	०	२७		२६	३४		२२	५७		१८	५४		१४	२७
२०	३	५	४४	४	१	१९	४	२७	२७	५	२३	५०	६	१९	४६	७	१५	१९
२४		६	३५		२	१०		२८	२०		२४	४२		२०	३७		१६	१०
२८		७	२६		३	२	४	२९	१२		२५	३५		२१	२८		१७	२
३२		८	१७		३	५४	५	०	५		२६	२७		२२	१९		१७	५४
३६		९	८		४	४६	५	०	५८		२७	१९		२३	१०		१८	४६
४०	३	९	५९	४	५	३७	५	१	५०	५	२८	११	६	२४	१	७	१९	३८
४४		१०	५०		६	२९		२	४३	५	२९	४		२४	५२		२०	३०
४८		११	४१		७	२१		३	३७	५	२९	५६		२५	४३		२१	२२
५२		१२	३२		८	१३		४	३०	६	०	४८		२६	३४		२२	१४
५६	३	१३	२३	४	९	२५	५	५	२२	६	१	४०	६	२७	२५		२३	७

घं. / मि.	१३			१५			१७			१९			२१			२३		
०	८	७	२६	९	७	३८	१०	१५	६	११	२७	२४	१	४	५२	२	५	४
४		८	२१		८	४५		१६	२९		२८	४७		५	४९		५	५९
८		९	१७		९	५२		१७	५२	०	०	९		६	५		६	५४
१२		१०	१३		११	०		१९	१५		१	३०		७	१०		७	४९
१६		११	१०		१२	९		२०	३९		२	५१		९	१५		८	४३
२०	८	१२	६	९	१३	१९	१०	२२	३	०	४	१२	१	१०	२०	२	९	३८
२४		१३	३		१४	२८		२३	२७		५	३२		११	२४		१०	३२
२८		१४	०		१५	३९		२४	५२		६	५२		१२	३०		११	२६
३२		१४	५८		१६	४९		२६	१७	०	८	११		१३	३०		१२	१९
३६		१५	५६		१८	०		२७	४२		९	२९		१४	३३		१३	१३
४०	८	१६	५४	९	१९	१२	१०	२९	७		१०	४७	१	१५	३५	२	१४	६
४४		१७	५२		२०	२५	११	०	३२		१२	५		१६	३७		१४	५९
४८		१८	५१		२१	३८		१	५८		१३	२२		१७	३९		१५	४२
५२		१९	५०		२२	५१		३	५४		१४	३८		१८	४०		१६	४५
५६	८	२०	५०	९	२४	[illegible]	११	४	४९	०	१५	५४	१	१९	४०	२	१७	२८

कलकत्ता अक्षांश २२°३५' की २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी उपकरण: सांपातिक काल

(विलासपुर २२°५', द्वारका २२°१६', बड़ौदा २२°१८', राजकोट २२°१८', जामनगर २२°२७', खड़गपुर २२°३०', आनन्द २२°३४', इटारसी २२°३६', नड़ियाद २२°४९' आदि स्थानों के लिए भी इस लग्न-सारिणी का प्रयोग किया जा सकता है।

घं० / मि०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	२ १५ ३९	३ १२ २	४ ८ ४४	५ ६ १५	६ ३ ४६	७ ० २८	७ २६ ५१	८ २४ ५७	९ २७ ४६	११ ६ १५	० १४ ४४	१ १७ ३३
४	१६ ३३	१२ ५४	९ ३८	७ १०	४ ४०	१ २१	२७ ४५	२५ ५७	२८ ५८	७ ३५	१५ ५६	१८ ३३
८	१७ २६	१३ ४७	१० ३३	८ ५	५ ३४	२ १३	२८ ३९	२६ ५८	२९ ११	८ ५५	१७ ७	१९ ३२
१२	१८ १९	१४ ४०	११ २७	९ १	६ २८	३ ६	७ २९ ३२	२७ ५८	१० १ २३	१० १४	१८ १७	२० ३१
१६	१९ १३	१५ ३३	१२ २२	९ ५५	७ २२	३ ५८	८ ० २६	८ २८ ५९	२ ३७	११ ३४	१९ २८	२१ ३०
२०	२ २० ६	३ १६ २६	४ १३ १७	५ १० ५२	६ ८ १७	७ ४ ५१	८ १ २१	९ ० ०	१० ३ ५१	११ १२ ५३	० २० ३८	१ २२ २९
२४	२० ५९	१७ १९	१४ ११	११ ४७	९ ११	५ ४४	२ १५	१ २	५ ६	१४ १३	२१ ४८	२३ २७
२८	२१ ५२	१८ १२	१५ ६	१२ ४३	१० ४	६ ३६	३ ९	२ ५	६ २०	१५ ३२	२२ ५७	२४ २५
३२	२२ ४४	१९ ४	१६ १	१३ ३८	१० ५८	७ २९	४ ४	३ ७	७ ३५	१६ ५१	२४ ६	२५ २२
३६	२३ ३७	१९ ५७	१६ ५६	१४ ३४	११ ५२	८ २१	४ ५९	४ १०	८ ५०	१८ ११	२५ १४	२६ २०
४०	२ २४ ३०	३ २० ५०	४ १७ ५१	५ १५ २९	६ १२ ४६	७ ९ १४	८ ५ ५३	५ १४	१० १० ६	११ १९ ३०	० २६ २२	१ २७ १७
४४	२५ २३	२१ ४३	१८ ४६	१६ २४	१३ ४०	१० ६	६ ४८	६ १७	११ २२	२० ४८	२७ २९	२८ १४
४८	२६ १६	२२ ३६	१९ ४०	१७ १९	१४ ३३	१० ५९	७ ४४	७ २१	१२ ३८	२२ ७	२८ ३६	१ २९ ११
५२	२७ ९	२३ ३०	२० ३५	१८ १४	१५ २७	११ ५१	८ ३९	८ २६	१३ ५५	२३ २४	० २९ ४३	२ ० ७
५६	२८ १	२४ २३	२१ ३०	१९ १०	१६ २१	१२.४३	९ ३५	९ ३०	१५ १२	२४ ४२	१ ० ४९	१ ४

घं० / मि०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	२ २८ ५४	३ २५ १७	४ २२ २५	५ २० १०	६ १७ १३	७ १३ ३६	८ १० ३०	९ १० ३५	१० १६ ३०	११ २६ ०	१ १ ५५	२ २ ०
४	२ २९ ४७	२६ १०	२३ २०	२१ ०	१८ ७	१४ २९	११ २६	११ ४१	१७ ४८	२७ १८	३ ०	२ ५
८	३ ० ३९	२७ ३	२४ १६	२१ ५५	१९ ०	१५ २१	१२ २३	१२ ४७	१९ ६	२८ ३५	४ ४	३ ५१
१२	१ ३१	२७ ५७	२५ ११	२२ ५०	१९ ५४	१६ १४	१३ १९	१३ ५४	२० २३	२९ ५२	५ ९	४ ४६
१६	२ २४	२८ ५०	२६ ५	२३ ४४	२० ४७	१७ ७	१४ १६	१५ १	२१ ४२	० १ ८	६ १३	५ ४२
२०	३ ३ १७	३ २९ ४४	४ २७ १	५ २४ ३९	६ २१ ४०	७ १८ ०	८ १५ १३	९ १६ ८	१० २३ ०	० २ २४	१ ७ १६	२ ६ ३७
२४	४ ९	४ ० ३८	२७ ५६	२५ ३४	२२ ३३	१८ ५३	१६ १०	१७ १६	२४ १९	३ ४०	८ २०	७ ३१
२८	५ १	१ ३२	२८ ५२	२६ २९	२३ २६	१९ ४६	१७ ८	१८ २४	२५ ३९	४ ५५	९ २३	८ २६
३२	५ ५४	२ २६	४ २९ ४७	२७ २४	२४ १८	२० ३८	१८ ५	१९ ३३	२६ ५८	६ १०	१० २५	९ २१
३६	६ ४६	३ १९	५ ० ४३	२८ १९	२५ ११	२१ ३१	१९ ३	२० ४२	२८ १७	७ २४	११ २७	१० १५
४०	३ ७ ३९	४ ४ १३	५ १ ३८	५ २९ १३	६ २६ ३	७ २२ २४	८ २० १	९ २१ ५२	१० २९ ३७	० ८ ३९	१ १२ २९	२ ११ ९
४४	८ ३२	५ ८	२ ३३	६ ० ८	२६ ५७	२३ १७	२१ ०	२३ २	११ ० ५६	९ ५३	१३ ३१	१२ ३
४८	९ २४	६ २	३ २९	१ ३	२७ ५०	२४ ११	२१ ५९	२४ १३	२ १६	११ ७	१४ ३२	१२ ५७
५२	१० १७	६ ५६	४ २५	१ ५७	२८ ४३	२५ ४	२२ ५८	२५ २३	३ ३५	१२ १९	१५ ३२	१३ ५१
५६	३ ११ ९	४ ७ ५०	५ ५ २०	६ २ ५२	६ २९ ३६	७ २५ ५७	८ २३ ५७	२६ ३४	११ ४ ५५	० १३ ३२	१ १६ ३३	२ १४ ४५

अक्षांश १९° की २३° ४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी (बंबई अक्षांश १८°५८' के लिए) उपकरण : सांपातिक काल

मि० \ घं०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	२ १४ ३	३ १० ४६	४ ८ १	५ ६ १५	६ ४ २९	७ १ ४४	७ २८ २७	८ २६ ३८	९ २९ ०	११ ६ १५	० १३ ३०	१ १५ ५२
४	१४ ५७	११ ४०	८ ५७	७ १२	५ २४	२ ३७	२९ २१	२७ ३८	१० ० १०	७ ३२	१४ ४०	१६ ५२
८	१५ ५१	१२ ३४	९ ५३	८ ९	६ २०	३ ३१	८० १५	२८ ३८	१ २१	८ ४९	१५ ५०	१७ ५१
१२	१६ ४५	१३ २७	१० ४९	९ ६	७ १५	४ २४	१ ९	८ २९ ३८	२ ३२	१० ६	१६ ५९	१८ ५०
१६	१७ ३९	१४ २३	११ ४५	१० ३	८ १०	५ १७	२ ४	९ ० २९	३ ४४	११ २२	१८ ८	१९ ४९
२०	२ १८ ३२	३ १५ १५	४ १२ ४१	५ १० ५९	६ ९ ६	७ ६ ११	८२ ५८	९ १ ४०	१० ४ ५६	११ १२ ३९	० १९ १७	१ २० ४७
२४	१९ २६	१६ ९	१३ ३७	११ ५६	१० १	७ ५	३ ५३	२ ४१	६ ८	१३ ५६	२० २५	२१ ४५
२८	२० १९	१७ २	१४ ३३	१२ ५३	१० ५६	७ ५७	४ ४८	३ ४३	१० ७ ३०	१५ १२	२१ ३३	२२ ४३
३२	२१ १३	१७ ५६	१५ २९	१३ ५०	११ ५१	८ ५१	५ ४३	४ ४५	८ ३३	१६ २८	२२ ४०	२३ ४१
३६	२२ ६	१८ ५०	१६ २५	१४ ४७	१२ ४६	९ ४४	६ ३८	५ ५७	९ ४६	१७ ४५	२३ ४७	२४ ३९
४०	२ २३ ०	१९ ४४	४ १७ २१	५ १५ ४३	६ १३ ४१	७ १० ३७	८ ७ ३३	९ ६ ५०	१० ११ ०	११ १९ १	० २४ ५४	१ २५ ३६
४४	२३ ५३	२० ३९	१८ १७	१६ ४०	१४ ३६	११ ३१	८ ५८	७ ५३	१२ १४	२० १७	२६ ०	२६ ३३
४८	२४ ४७	२१ ३३	१९ १४	२ ७ ३७	१५ ३०	१२ २४	९ २४	८ ५६	१३ २८	२१ ३३	२७ ६	२७ ३०
५२	२५ ४०	२२ २७	२० १०	१८ ३४	१६ २५	१३ १७	१० १९	१० ०	१४ ४२	२२ ४८	२८ १२	२८ २६
५६	२६ ३३	२३ २१	२१ ७	१९ ३०	१७ २०	१४ १०	११ १५	११ ४	१५ ५७	२४ ३	० २९ १०	१ २९ २३

मि० \ घं०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	२ २७ २६	३ २४ १६	४२२ ३	५ २० २७	६ १८ १४	७ १५ ४	८ १२ ११	९ १२ ८	१०१७ ११	११ २५ १८	१ ० २२	२ ० १९
४	२८ २०	२५ १०	२३ ०	२१ २३	१९ ९	१५ ५७	१३ ७	१३ १३	१८ २७	२६ ३३	१ २६	१ १५
८	२ २९ १३	२६ ५	२३ ५६	२२ २०	२० ३	१६ ५०	१४ ४	१४ १८	१९ ४२	२७ ४८	२ ३०	२ ११
१२	३ ० ६	२७ ०	२४ ५३	२३ १६	२० ५७	१७ ४३	१५ ०	१५ २४	२० ५७	११ २९ २	३ ३४	३ ६
१६	३ ० ५९	२७ ५४	२५ ५०	२४ १३	२१ ५१	१८ ३७	१५ ५७	१६ ३०	२२ १३	० ० १६	४ ३७	४ २
२०	३ १ ५३	३ २८ ४९	४ २६ ४७	५ २५ ९	६ २२ ४६	७ १९ ३०	८ १६ ५४	९ १७ ३६	१०२३ २९	० १ ३०	१ ५ ४०	२ ४ ५७
२४	२ ४६	२९ ४४	२७ ४३	२६ ५	२३ ४०	२० २४	१७ ५१	१८ ४३	२४ ४५	२ ४४	६ ४३	५ ५२
२८	३ ३९	४ ० ३९	२८ ४०	२७ १	२४ ३४	२१ १७	१८ ४९	१९ ५०	२६ २	३ ५७	७ ४५	६ ४७
३२	४ ३३	१ ३४	४ २९ ३७	२७ ५७	२५ २८	२२ ११	१९ ४७	२० ५७	२७ १८	५ १०	८ ४७	७ ४२
३६	५ २६	२ २९	५ ० ३४	२८ ५३	२६ २१	२३ ४	२० ४५	२२ ५	२८ ३४	६ २२	९ ४९	८ ३७
४०	३ ६ १९	४ ३ २४	५ १ ३१	५ २९ ४९	६ २७ १५	७ २३ ५८	८ २१ ४३	९ २३ १३	१०२९ ५१	० ७ ३४	१ १० ५०	२ ९ ३२
४४	७ १३	४ २०	२ २७	६ ० ४५	२८ ९	२४ ५१	२२ ४१	२४ २२	११ १ ८	८ ४६	११ ५१	१० २६
४८	८ ६	५ १५	३ २४	१ ४१	२८ ३	२५ ४५	२३ ४०	२५ ३१	२ २४	९ ५८	१२ ५२	११ २२
५२	८ ५९	६ १०	४ २१	२ ३७	६ २९ ५५	२६ २९	२४ ३९	२६ ४०	३ ४१	११ ९	१३ ५२	१२ १५
५६	३ ९ ५३	४ ७ ६	५ ५ १८	६ ३ ३३	७ ० ५०	७ २७ ३३	८ २५ ३८	९ २७ ५०	११ ४ ५८	० १२ २०	१ १४ ५२	२ १३ २

अक्षांश २५°२३' की २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी उपकरण : साम्पातिक काल
(वाराणसी २५°१९' हैदराबाद (सिंध) २५°२२' प्रयाग २५°२५' झांसी २५°२७' आदि स्थानों के लिए)

मि० \ घं०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	२ १६ ५७	३ १३ २	४ ९ १८	५ ६ १५	६ ३ १२	६ २९ २८	७ २५ ३३	८ २३ ३३	९ २६ ४३	११ ६ १५	० १५ ४७	१ १८ ५७
४	१७ ५०	१३ ५४	१० ११	७ ९	४ ५	७ ० २०	२६ २६	२४ ३३	२७ ५६	७ ३७	१७ ०	१९ ५७
८	१८ ४३	१४ ४६	११ ५	८ ४	४ ५८	१ १२	२७ २०	२५ ३४	९ २९ १०	९ ०	१८ १३	२० ५६
१२	१९ ३६	१५ ३८	११ ५८	८ ५८	५ ५२	२ ५	२८ १३	२६ ३५	१० ० २४	१० २२	१९ २५	२१ ५५
१६	२० २९	१६ ३०	१२ ५१	९ ५२	६ ४५	२ ५५	७ २९ ७	२७ ३६	१ ३९	११ ४५	२० ३७	२२ ५४
२०	२ २१ २१	३ १७ २२	४ १३ ४५	५ १० ४६	६ ७ ३७	७ ३ ४७	८ ० १	८ २८ ३८	१० २ ५५	११ १३ ७	० २१ ४८	१ २३ ५३
२४	२२ १४	१८ १४	१४ ३९	११ ४०	८ ३०	४ ३९	० ५५	८ २९ ४०	४ ११	१४ २८	२२ ५९	२४ ५१
२८	२३ ७	१९ ६	१५ ३३	१२ ३५	९ २३	५ ३१	१ ४९	९ ० ४२	५ २७	१५ ४५	२४ ९	२५ ४९
३२	२३ ५९	१९ ५८	१६ २६	१३ २९	१० १६	६ २३	२ ४३	१ ४५	६ ४४	१७ १२	२५ १९	२६ ४६
३६	२४ ५१	५० ५०	१७ २०	१४ २३	११ ९	७ १५	३ ३७	२ ४८	८ १	१८ ३३	२६ २८	२७ ४४
४०	२ २५ ४३	३ २१ ४३	४ १८ १३	५ १५ १७	६ १२ २	७ ८ ७	८ ४ २२	९ ३ ५२	१० ९ १९	११ १९ ५५	० २७ ३७	१ २८ ४१
४४	२६ ३६	२२ ३५	१९ ७	१६ ११	१२ ५५	८ ५८	५ २६	४ ५६	१० ३७	२१ १६	२८ ४५	१ २९ ३८
४८	२७ २८	२३ २७	२० १	१७ ५	१३ ४८	९ ५०	६ २१	६ १	११ ५५	२२ ३६	० २९ ५२	२ ० ३४
५२	२८ २०	२४ २०	२० ५५	१७ ५९	१४ ४०	१० ४२	७ १६	७ ६	१३ १४	२३ ५७	१ ० ५९	१ ३१
५६	२ २९ १३	२५ १२	२१ ४९	१८ ५३	१५ ३३	११ ३४	८ १२	८ ११	१४ ३३	२५ १७	२ ६	२ २७

मि० \ घं०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	३ ० ४	३ २६ ५	४ २२ ४३	५ १९ ४७	६ १६ २५	७ १२ २६	९ ७	९ ९ १७	१० १५ ५३	११ २६ ३७	१ ३ १३	२ ३ २३
४	० ५६	२६ ५७	२३ ३७	२० ४१	१७ १८	१३ १८	१० ३	१० २४	१७ १३	२७ ५७	४ १९	४ १८
८	१ ४८	२७ ५०	२४ ३१	२१ ३५	१८ १०	१४ १०	१० ५९	११ ३१	१८ ३३	११ २९ १६	५ २४	५ १४
१२	२ ४०	२८ ४२	२५ २५	२२ २९	१९ ३	१५ २	११ ५६	१२ ३८	१९ ५४	० ० ३५	६ २९	६ ९
१६	३ ३२	३ २९ ३५	२६ १९	२३ २३	१९ ५५	१५ ५४	१२ ५२	१३ ४५	२१ १४	१ ५३	७ ३४	७ ४
२०	३ ४ २३	४ ० २८	४ २७ १३	५ २४ १७	६ २० ४७	७ १६ ४७	१३ ४९	९ १४ ५३	१० २२ ३५	० ३ ११	१ ८ ३८	२ ७ ५८
२४	५ १५	१ २१	२८ ७	२५ १०	२१ ४०	१७ ३९	१४ ४६	१६ २	२३ ५७	४ २९	९ ४५	८ ५३
२८	६ ०७	२ १४	२९ १	२६ ५	२२ ३२	१८ ३१	१५ ४४	१७ ११	२५ १८	५ ४६	१० ४५	९ ४७
३२	६ ५९	३ ७	४ २९ ५५	२६ ५७	२३ २४	१९ २३	१६ ४१	१८ २१	२६ ४०	७ ३	११ ४८	१० ४१
३६	७ ५१	४ ०	५ ० ५०	२७ ५१	२४ १६	२० १६	१७ ३९	१९ ३१	२८ २	८ १९	१२ ५०	११ ३५
४०	३ ८ ४३	४ ४ ५३	५ १ ४४	५ २८ ४५	६ २५ ८	७ २१ ९	१८ ३७	९ २० ४२	१० २९ २४	० ९ ३५	१ १३ ५२	२ १२ २९
४४	९ ३५	५ ४५	२ ३८	५ २९ ३९	२६ ०	२२ १	१९ ३६	२१ ५३	११ ० ४६	१० ५१	१४ ५४	१३ २३
४८	१० २६	६ ३८	३ ३२	६ ० ३२	२६ ५२	२२ ५८	२० ३५	२३ ५	२ ८	१२ ६	१५ ५५	१४ १७
५२	११ १८	७ ३२	४ २६	१ २५	२७ ४४	२३ ४७	२१ ३४	२४ १७	३ ३०	१३ २०	१६ ५६	१५ १०
५६	३ १२ १०	४ ८ २५	५ ५ २१	६ २ १९	६ २८ ३५	७ २४ ४०	८ २२ ३३	९ २५ ३०	११ ४ ५३	० १४ ३४	१ १७ ५७	२ १६ ४

सर्वत्रोपयोगी २३°४५' निरयन दशम सारणी उपकरण: सांपातिक काल

मि० \ घं०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	११ ६ १५	० ८ २६	१ ८ २०	२ ६ १५	३ ४ १०	४ ४ ४	५ ६ १५	६ ८ २६	७ ८ २०	८ ६ १५	९ ४ १०	१० ४ ५
४	७ २०	९ २८	९ १८	७ १०	५ ७	५ ७	७ २०	९ २८	९ १८	७ १०	५ ७	५ ७
८	८ २६	१० ३१	१० १५	८ ५	६ ५	६ ९	८ २६	१० ३१	१० १२	८ ५	६ ४	६ ८
१२	९ ३१	११ २३	११ १२	८ ०	७ २	७ १२	९ ३१	११ ३३	११ १२	९ ०	७ २	७ १२
१६	१० ३७	१२ ३४	१२ ९	९ ५५	८ ०	८ १५	१० ३७	१२ ३४	१२ ९	९ ५५	८ ०	८ १५
२०	११ ११ ४२	१३ ३६	१३ ५	२ १० ५०	३ ८ ५८	४ ९ १८	५ ११ ४२	६ १३ ३६	६ १३ ५	० १० ५०	९ ८ ५८	१० ९ १८
२४	१२ ४७	१४ ३८	१४ २	११ ४५	९ ५६	१० २२	१२ ४७	१४ ३८	१४ २	११ ४५	९ ५६	१० २२
२८	१३ ५२	१५ ३९	१४ ५८	१२ ४१	१० ५४	११ २५	१३ ५२	१५ ३९	१४ ५८	१२ ४१	१० ५४	११ २५
३२	१४ ५८	१६ ४०	१५ ५५	१३ ३६	११ ५३	१२ २९	१४ ५८	१६ ४०	१५ ५५	१३ ३६	११ ५३	१२ २९
३६	१६ ३	१७ ४१	१६ ५१	१४ ३१	१२ ५२	१३ ३३	१६ ३	१७ ४१	१६ ५१	१४ ३१	१२ ५२	१३ ३३
४०	११ १७ ८	१८ ४२	१ १७ ४७	२ १५ २६	३ १३ ५०	४ १४ ३७	५ १७ ८	६ १८ ४२	७ १७ ४७	८ १५ २६	९ १३ ५०	१० १४ ३७
४४	१८ १३	१९ ४२	१८ ४३	१६ २२	१४ ४९	१५ ४१	१८ १३	१९ ४२	१८ ४३	१६ २२	१४ ४९	१५ ४१
४८	१९ १८	२० ४३	१९ ३९	१७ १७	१५ ४८	१६ ४५	१९ १८	२० ४३	१९ ३९	१७ १७	१५ ४८	१६ ४५
५२	२० २३	२१ ४३	२० ३५	१८ १३	१६ ४८	१७ ४९	२० २३	२१ ४३	२० ३५	१८ १३	१६ ४८	१७ ४९
५६	२१ २७	२२ ४३	२१ ३१	१९ ८	१७ ४७	१८ ५४	२१ २७	६ २२ ४३	२१ ३१	१९ ८	१७ ४७	१८ ५४

मि० \ घं०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	११ २२ ३२	० २३ ४३	१ २२ २६	२ २० ४	३ १८ ४७	४ १९ ५८	५ २२ ३२	६ २३ ४३	७ २२ २६	८ २० ४	९ १८ ४७	१० १९ ५८
४	२३ ३६	२४ ४३	२३ २२	२० ५९	१९ ४७	२१ ३	२३ ३६	२४ ४३	२३ २२	२० ५९	१९ ४७	२१ ३
८	२४ ४१	२५ ४२	२४ १७	२१ ५५	२० ४७	२२ ७	२४ ४१	२५ ४२	२४ १७	२१ ५५	२० ४७	२२ ७
१२	२५ ४५	२६ ४२	२५ १३	२२ ५१	२१ ४७	२३ १२	२५ ४५	२६ ४२	२५ १३	२२ ५१	२१ ४७	२३ १२
१६	२६ ४९	२७ ४१	२६ ८	२३ ४७	२२ ४८	२४ १७	२६ ४९	२७ ४१	२६ ८	२३ ४७	२२ ४८	२४ १७
२०	११ २७ ५३	० २८ ४०	२७ ४	२ २४ ४३	३ २३ ४८	४ २५ २२	५ २७ ५३	६ २८ ४०	७ २७ ४	८ २४ ४३	९ २३ ४८	१० २५ २२
२४	११ २८ ५७	० २९ ४०	२७ ५९	२५ ३९	२४ ४९	२६ २७	५ २८ ५७	६ २९ ३८	२७ ५९	२५ ३९	२४ ४९	२६ २७
२८	० ० १	१ ० ३७	२८ ५४	२६ ३५	२५ ५०	२७ ३२	६ ० १	७ ० ३७	२८ ५४	२६ ३५	२५ ५०	२७ ३२
३२	१ ५	१ ३६	१ २९ ४९	२७ ३२	२६ ५१	२८ ३८	१ ५	१ ३६	७ २९ ४९	२७ ३२	२६ ५१	२८ ३८
३६	२ ८	२ ३४	२ ० ४५	२८ २८	२७ ५२	४ २९ ४३	२ ८	२ ३४	८ ० ४५	२८ २८	२७ ५२	१० २९ ४३
४०	० ३ १२	३ ३२	२ १ ४०	२ २९ २५	३ २८ ५४	५ ० ४८	६ ३ १२	७ ३ ३२	८ १ ४०	८ २९ २५	२८ ५४	११ ० ४८
४४	४ १५	४ ३०	२ ३५	३ ० २१	३ २९ ५६	१ ५३	४ १५	४ ३०	२ ३५	९ ० २१	९ २९ ५६	१ ५३
४८	५ १८	५ २८	३ ३०	१ १८	४ ० ५७	२ ५९	५ १८	५ २८	३ ३०	१ १८	१० ० ५७	२ ५९
५२	६ २१	६ २६	४ २५	२ १५	१ ५९	४ ०४	६ २१	६ २६	४ २५	२ १५	१ ४८	४ ४
५६	० ७ २३	१ ७ २३	२ ५ २०	३ ३ १२	४ ३ २	५ ५ १०	६ ७ २३	७ ७ २३	८ ५ २०	९ ३ १२	१० ३ २	११ ५ १०

दैनिक लग्न सारिणी से लग्न ज्ञान

श्रीविश्वविजय पंचांग से भारत भर में अक्षांश ८ से ३५ तक के किसी भी नगर, ग्राम का लग्न समाप्तिकाल भा. स्टे. टा. से जानने की सरल विधि (सारणी) उदाहरण सहित मेरे परम स्नेही पंचांगकार कर्मठ विद्वान् स्व० श्री पीताम्बरदत्तजी ज्योतिषाचार्य के सुपुत्र श्री विनोद विजल्वाण ज्यो. एम. एस. सी. ने परिश्रमपूर्वक भेजी। वह पाठकों के लाभार्थ यहां प्रकाशित की जा रही है।

सम्पादक

श्रीविश्वविजय पंचांग का दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन कोष्ठक

लग्न अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

इस लग्न सारणी कोष्ठक का श्रीविश्वविजय पंचांग की दैनिक लग्न सारणी में चिन्हानुसार मिनटों का संस्कार करने से तथा अंक्षाशादि सारणी पृष्ठ से इष्ट स्थान का चिन्ह धन ऋण के विपरीत मिनटों का देशान्तर संस्कार करने से भारत के ८ से ३५ अक्षांश तक के दैनिक लग्नों का समाप्ति काल जाना जा सकता है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं :-

(१) १ अप्रैल १९९२ को कलकत्ता में मेष लग्न का समाप्ति काल जानना है ? श्रीविश्वविजय पंचांग पृष्ठ १११ में कलकत्ता के अक्षांश २२/३५ व देशान्तर मिनट + ४४/४४ है। लग्न परिवर्तन कोष्ठक में २२ अक्षांश के लिए मेष के नीचे +१२ मिनट व २३ अक्षांश के नीचे +१० मिनट है। अतः अक्षांश २२/३५ के लिए अनुमान से मिनट +११ संस्कार हुआ। पंचांग में पृष्ठ ७८ पर १/४/९२ को मेष लग्न का समाप्ति काल घं० ८ मिनट २३ दिया है। इसमें +११ मिनट चिन्हानुसार युक्त करने पर ८/३४ हुआ। इसमें देशान्तर +४४/४४ मिनट (इसे ४५ मिनट मान लेना चाहिए) को धन चिन्ह के विपरीत ऋण किया तो ७ बजकर ४९ मिनट पर कलकत्ता में १/४/९२ को मेष लग्न का समाप्ति काल आया।

(२) १/८/९२ को जयपुर में सिंह लग्न समाप्ति काल जानना है ? पृष्ठ ११२ में अक्षांश २६/५५ (इसे २७/० मानना चाहिये) व देशान्तर -५ मिनट है। लग्न परिवर्तन कोष्ठक में २७ अक्षांश के सिंह लग्न का संस्कार +१ मिनट है। इसे पृष्ठ ८० के १/८/९२ के सिंह लग्न समाप्तिकाल ९/१३ में युक्त किया ९/१४ हुआ। देशान्तर -५ मिनट को चिन्ह के विपरीत धन किया ९/१९ जयपुर में सिंह लग्न का समाप्ति काल हुआ।

नोट : इस उक्त प्रकार से प्राप्त लग्नों के समाप्ति कालों में स्थिर वार्षिक सस्कार करने से तथा अयन चलन संस्कार करने से सूक्ष्म लग्न समाप्ति काल आता है। यहां अयन चलन छोड़ दिया है वार्षिक संस्कार ज्ञात करने के लिए सन् को ४ से विभाजित करें जितना शेष बचे उतने मिनट लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। उदाहरण सन् १९८६ को ४ से विभाजित किया तो २ शेष बचा अतः २ मिनट युक्त करने से सूक्ष्म लग्न समाप्ति काल आयेगा।

जिस ईस्वी सन् में ४ से विभाजित करने पर शून्य शेष आए उस वर्ष १ जनवरी से २८ फरवरी तक के लग्न समाप्ति कालों में ४ मिनट युक्त करें। २८ फरवरी के समय को ही २९ फरवरी का मान कर अन्य लग्न परिवर्तन संस्कार करें। उदाहरणार्थ २९ फरवरी १९८० को चण्डीगढ़ में मेष लग्न का परिवर्तन संस्कार -४ मिनट देशान्तर -१ मिनट है। अतः २८ फरवरी के समय १०/३२ को ही २९ फरवरी का मान कर ४ मिनट ऋण तथा १ मिनट धन किया तो १०/२९ घण्टादि २९ फरवरी १९८० को चण्डीगढ़ में मेष लग्न समाप्ति काल आया।

इस सारणी के निर्माण में पर्याप्त सूक्ष्मता ली गई है। तथापि सेकण्डों को छोड़ देने से समान चालन के कारण १ मिनट की स्थूलता सम्भव है। इससे भारत के प्रायः सभी नगरों का पर्याप्त सूक्ष्म लग्न समाप्ति काल जाना जा सकता है। लगभग ३०० स्थलों के देशान्तर श्रीविश्वविजय पंचांग के पृष्ठ १११ व ११२ में दिये हुए हैं। उससे इतर स्थलों का देशान्तर जानने के लिए रेखांश ७७/१७ व ईष्ट स्थल के रेखांशों का अन्तर करें। ४ मिनट के एक रेखांश (१५ कला का १ मिनट) के अनुपात से देशान्तर मिनट आ जाते हैं यदि ईष्ट स्थल के रेखांश ७७/१७ से कम हों तो देशान्तर ऋण यदि ७७/१७ से अधिक हों तो + धन चिन्ह युक्त समझें। तब चिन्ह के विपरीत देशान्तर संस्कार उदाहरणों के समान करें।

कोष्ठक २ (क) सायन लग्न उत्तर अक्षांश

सा. का.	० अं. क.	५ अं. क.	१० अं. क.	१५ अं. क.	२० अं. क.	२५ अं. क.	३० अं. क.	सा. का.	० अं. क.	५ अं. क.	१० अं. क.	१५ अं. क.	२० अं. क.	२५ अं. क.	३० अं. क.
००।००	०९०।००	०९२।००	०९४।०१	०९६।०५	०९८।१५	१००।३१	१०२।५६	१२।००	२७०।००	२६८।०१	२६५।५९	२६३।५५	२६१।४६	२५९।२९	२५७।०४
००।२०	०९४।३५	०९६।३४	०९८।३४	१००।३७	१०२।४३	१०४।५६	१०७।१६	१२।२०	२७४।३५	२७२।३६	२७०।३४	२६८।२८	२६६।१८	२६३।५७	२६१।२७
००।४०	०९९।११	१०१।०९	१०३।०७	१०५।०७	१०७।१०	१०९।१८	१११।३४	१२।४०	२७९।११	२७७।१२	२७५।१०	२७३।०४	२७०।५१	२६८।२८	२६५।५५
०१।००	१०३।४७	१०५।४४	१०७।४०	१०९।३६	१११।३६	११३।२९	११५।४९	१३।००	२८३।४९	२८१।५१	२७९।५०	२७७।४२	२७५।२९	२७३।०५	२७०।२७
०१।२०	१०८।२८	११०।२१	११२।१३	११४।०६	११६।०१	११७।५९	१२०।०३	१३।२०	२८८।२८	२८६।३२	२८४।३२	२८२।२६	२८०।१२	२७७।४६	२७५।०७
०१।४०	११३।१०	११५।००	११६।४८	११८।३७	१२०।२६	१२२।१९	१२४।१६	१३।४०	२९३।१०	२९१।१६	२८९।१९	२८७।१४	२८५।००	२८२।३५	२७९।५३
०२।००	११७।५५	११९।४१	१२१।२५	१२३।०८	१२४।५२	१२६।३९	१२८।२९	१४।००	२९७।५५	२९६।०५	२९४।१०	२९२।०८	२८९।५५	२८७।३०	२८४।४९
०२।२०	१२२।४३	१२४।२४	१२६।०३	१२७।४१	१२९।२०	१३०।५९	१३२।४२	१४।२०	३०२।४३	३००।५८	२९९।०६	२९७।०७	२९४।५८	२९२।३५	२८९।५४
०२।४०	१२७।३५	१२९।११	१३०।४५	१३२।१६	१३३।४८	१३५।२१	१३६।५६	१४।४०	३०७।३५	३०५।५५	३०४।०९	३०२।१४	३००।०९	२९७।४९	२९५।१०
०३।००	१३२।३२	१३४।०२	१३५।२८	१३६।५३	१३८।१०	१३९।४३	१४१।१०	१५।००	३१२।३२	३१०।५८	३०९।१७	३०७।२८	३०५।२८	३०३।१४	३००।३९
०३।२०	१३७।३३	१३८।५६	१४०।१५	१४१।३३	१४२।५०	१४४।०७	१४५।२५	१५।२०	३१७।३३	३१६।०६	३१४।३३	३१२।५१	३१०।५८	३०८।४९	३०६।२१
०३।४०	१४२।३९	१४३।५४	१४५।०५	१४६।१५	१४७।२३	१४८।३२	१४९।४२	१५।४०	३२२।३९	३२१।२०	३१९।५५	३१८।२१	३१६।३६	३१४।३७	३१२।१७
०४।००	१४७।४९	१४८।५५	१४९।५८	१५०।५९	१५१।५८	१५२।५८	१५३।५९	१६।००	३२७।४९	३२६।३९	३२५।२३	३२३।५९	३२२।२५	३२०।३७	३१८।२९
०४।२०	१५३।०४	१५४।००	१५४।५३	१५५।४५	१५६।३६	१५७।२६	१५८।१७	१६।२०	३३३।०३	३३२।०३	३३०।५८	३२९।४५	३२८।२३	३२६।४८	३२४।५५
०४।४०	१५८।२२	१५९।०८	१५९।५१	१६०।३३	१६१।१४	१६१।५५	१६२।३६	१६।४०	३३८।२२	३३७।३२	३३६।३९	३३५।३९	३३४।३०	३३३।११	३३१।३६
०५।००	१६३।४३	१६४।१८	१६४।५१	१६५।२३	१६५।५४	१६६।२५	१६६।५७	१७।००	३४३।४३	३४३।०५	३४२।२४	३४१।३८	३४०।४५	३३९।४३	३३८।२९
०५।२०	१६९।०७	१६९।३१	१६९।५३	१७०।१५	१७०।३६	१७०।५६	१७१।१७	१७।२०	३४९।०७	३४८।४२	३४८।१४	३४७।४२	३४७।०६	३४६।२४	३४५।३३
०५।४०	१७४।३३	१७४।४५	१७४।५६	१७५।०७	१७५।१८	१७५।२८	१७५।३९	१७।४०	३५४।३३	३५४।२०	३५४।०६	३५३।५०	३५३।३२	३५३।११	३५२।४४
०६।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००
०६।२०	१८५।२७	१८५।१५	१८५।०४	१८४।५३	१८४।४२	१८४।३२	१८४।२२	१८।२०	००५।२७	००५।४०	००५।५४	००६।१०	००६।२८	००६।५०	००७।१६
०६।४०	१९०।५३	१९०।२९	१९०।०७	१८९।४५	१८९।२४	१८९।०४	१८८।४३	१८।४०	०१०।५३	०११।१८	०११।४६	०१२।१८	०१२।५४	०१३।३६	०१४।२७
०७।००	१९६।१७	१९५।४२	१९५।०९	१९४।३७	१९४।०६	१९३।३५	१९३।०४	१९।००	०१६।१७	०१६।५५	०१७।३६	०१८।२२	०१९।१५	०२०।१७	०२१।३३
०७।२०	२०१।३८	२००।५२	२००।०९	१९९।१७	१९८।४६	१९८।०५	१९७।२४	१९।२०	०२१।३८	०२२।२८	०२३।२२	०२४।२२	०२५।३०	०२६।४९	०२८।२५
०७।४०	२०६।५७	२०६।००	२०५।०७	२०४।१५	२०३।२४	२०२।३४	२०१।४३	१९।४०	०२६।५७	०२७।५७	०२९।०२	०३०।१५	०३१।३७	०३३।१२	०३५।०७
०८।००	२१२।११	२११।०५	२१०।०२	२०९।०१	२०८।०२	२०७।०२	२०६।०१	२०।००	०३२।११	०३३।११	०३४।३७	०३६।०१	०३७।३५	०३९।३३	०४१।३१
०८।२०	२१७।२१	२१६।०७	२१४।५५	२१३।४६	२१२।३७	२११।२८	२१०।१८	२०।२०	०३७।२१	०३८।४०	०४०।०६	०४१।३९	०४३।२४	०४५।२३	०४७।४३
०८।४०	२२२।२७	२२१।०४	२१९।४५	२१८।२७	२१७।११	२१५।५३	२१४।३५	२०।४०	०४२।२७	०४३।५३	०४५।२७	०४७।०९	०४९।०३	०५१।११	०५३।३९
०९।००	२२७।२८	२२५।५८	२२४।३२	२२३।०७	२२१।४२	२२०।१७	२१८।५०	२१।००	०४७।२८	०४९।०२	०५०।४३	०५२।३२	०५४।३२	०५६।४७	०५९।२१
०९।२०	२३२।२५	२३०।४९	२२९।१६	२२७।४४	२२६।१२	२२४।४०	२२३।०४	२१।२०	०५२।२५	०५४।०५	०५५।५१	०५७।४६	०५९।५१	०६२।११	०६४।५०
०९।४०	२३७।१७	२३५।३६	२३३।५७	२३२।१९	२३०।४१	२२९।०१	२२७।१८	२१।४०	०५७।१७	०५९।०३	०६०।५४	०६२।५३	०६५।०२	०६७।२५	०७०।०६
१०।००	२४२।०६	२४०।१९	२३८।३५	२३६।५२	२३५।०८	२३३।२१	२३१।३१	२२।००	०६२।०६	०६३।५५	०६५।५०	०६७।५३	०७०।०५	०७२।३०	०७५।१२
१०।२०	२४६।५०	२४५।००	२४३।१२	२४१।२३	२३९।३४	२३७।४१	२३५।४४	२२।२०	०६६।५०	०६८।४४	०७०।४१	०७२।४६	०७५।००	०७७।२६	०८०।०७
१०।४०	२५१।३२	२४९।३९	२४७।४७	२४५।५४	२४३।५९	२४२।०१	२३९।५७	२२।४०	०७१।३२	०७३।२८	०७५।२८	०७७।३४	०७९।४९	०८२।१४	०८४।५४
११।००	२५६।११	२५४।१६	२५२।२०	२५०।२४	२४८।२४	२४६।२१	२४४।१२	२३।००	०७६।११	०७८।०९	०८०।१०	०८२।१७	०८४।३१	०८६।५६	०८९।३३
११।२०	२६०।४९	२५८।५१	२५६।५३	२५४।५३	२५२।५०	२५०।४२	२४८।२७	२३।२०	०८०।४९	०८२।४८	०८४।५०	०८६।५६	०८९।१०	०९१।३२	०९४।०६
११।४०	२६५।२५	२६३।२६	२६१।२६	२५९।२४	२५७।१७	२५५।०५	२५२।४४	२३।४०	०८५।२५	०८७।२४	०८९।२६	०९१।३२	०९३।१४	०९६।०३	०९८।३३
								२४।००	०९०।००	०९२।००	०९४।०१	०९६।०५	०९८।१५	१००।३१	१०२।५६

कोष्ठक २ (ख) सायन लग्न उत्तर अक्षांश

सा. का.	३५ अं. क.	४० अं. क.	४५ अं. क.	५० अं. क.	५५ अं. क.	६० अं. क.	सा. का.	३५ अं. क.	४० अं. क.	४५ अं. क.	५० अं. क.	५५ अं. क.	६० अं. क.
००।००	१०५।३४	१०८।२८	१११।४२	११५।२२	११९।३७	१२४।३५	१२।००	२५४।२६	२५१।३२	२४८।१८	२४४।३८	२४०।२३	२३५।२५
००।२०	१०९।४८	११२।३४	११५।३८	११९।०५	१२३।०३	१२७।४०	१२।२०	२५८।४३	२५५।४२	२५२।१८	२४८।२४	२४३।५३	२३८।३३
००।४०	११३।५९	११६।३६	११९।३०	१२२।४५	१२६।२८	१३०।४५	१२।४०	२६३।०६	२५९।५७	२५६।२३	२५२।१६	२४७।२७	२४१।४३
०१।००	११८।०७	१२०।३६	१२३।२०	१२६।२३	१२९।५०	१३३।४९	१३।००	२६६।३३	२६४।१८	२६०।३४	२५६।१४	२५१।०५	२४४।५६
०१।२०	१२२।१४	१२४।३५	१२७।०८	१२९।५९	१३३।११	१३६।५२	१३।२०	२७२।०९	२६८।४६	२६४।५३	२६०।१९	२५४।५१	२४८।१३
०१।४०	१२६।१९	१२८।३२	१३०।१५	१३३।३४	१३४।३२	१३९।५५	१३।४०	२७६।५२	२७३।३४	२६९।११	२६४।३३	२५८।४४	२५१।३६
०२।००	१३०।२५	१३२।२८	१३४।४१	१३७।०८	१३९।५२	१४२।५८	१४।००	२८१।४३	२७८।१२	२७४।०१	२६८।५८	२६२।४७	२५५।०६
०२।२०	१३४।३०	१३६।२४	१३८।२७	१४०।४१	१४३।११	१४६।०१	१४।२०	२८६।४९	२८३।१३	२७८।५४	२७३।३८	२६७।०३	२५८।४५
०२।४०	१३८।३५	१४०।२०	१४२।१२	१४४।१५	१४६।३१	१४९।०५	१४।४०	२९२।०६	२८८।२८	२८४।०३	२७८।३४	२७१।३६	२६२।३६
०३।००	१४२।४१	१४४।१६	१४५।५८	१४७।४८	१४९।५१	१५२।०९	१५।००	२९७।४८	२९४।००	२८९।३२	२८३।५२	२७६।२९	२६६।४३
०३।२०	१४६।४७	१४८।१२	१४९।४३	१५१।२२	१५३।११	१५५।१३	१५।२०	३०३।२५	२९९।५१	२९५।२२	२८९।३४	२८१।४९	२७१।१२
०३।४०	१५०।५४	१५२।०९	१५३।२९	१५४।५५	१५६।३१	१५८।१८	१५।४०	३०९।३०	३०६।०३	३०१।३९	२९५।४८	२८७।४३	२७६।१२
०४।००	१५५।०१	१५६।०६	१५७।१५	१५८।३०	१५९।५१	१६१।२३	१६।००	३१५।५४	३१२।३९	३०८।२५	३०२।३८	२९४।२०	२८१।५३
०४।२०	१५९।१०	१६०।०४	१६१।०२	१६२।०४	१६३।१२	१६४।२८	१६।२०	३२२।३६	३१९।३९	३१५।४४	३१०।१२	३०१।५४	२८८।३६
०४।४०	१६३।१९	१६४।०३	१६४।४९	१६५।३९	१६६।३३	१६७।३४	१६।४०	३२९।३७	३२७।०४	३२३।३७	३१८।३६	३१०।४०	२९६।४८
०५।००	१६७।२८	१६८।०१	१६८।३६	१६९।१४	१६९।५५	१७०।४०	१७।००	३३६।५५	३३४।५३	३३२।०४	३२७।५१	३२०।५१	३०७।१६
०५।२०	१७१।३९	१७२।०१	१७२।२४	१७२।४९	१७३।१६	१७३।४७	१७।२०	३४४।२८	३४३।०३	३४१।०२	३३७।५९	३३२।३७	३२०।५८
०५।४०	१७५।४९	१७६।०३	१७६।१२	१७६।२५	१७६।३८	१७६।५३	१७।४०	३५२।११	३५१।२७	३५०।२५	३४८।४७	३४५।५०	३३८।४८
०६।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००
०६।२०	१८४।११	१८४।००	१८३।४८	१८३।३६	१८३।२२	१८३।०७	१८।२०	००७।४१	००८।३३	००९।३५	०११।१३	०१४।१०	०२१।१२
०६।४०	१८८।२१	१८७।५९	१८७।३६	१८७।११	१८६।४४	१८६।१३	१८।४०	०१५।३२	०१६।५७	०१८।५८	०२२।०२	०२७।२३	०३९।०२
०७।००	१९२।३२	१९१।५९	१९१।२४	१९०।४६	१९०।०५	१८९।२०	१९।००	०२३।०५	०२५।०७	०२७।५६	०३२।०९	०३९।१०	०५२।४४
०७।२०	१९६।४१	१९५।५८	१९५।११	१९४।२१	१९३।२७	१९२।२६	१९।२०	०३०।२३	०३२।५७	०३६।२३	०४१।२५	०४९।२१	०६३।१२
०७।४०	२००।५१	१९९।५६	१९८।५८	१९७।५६	१९६।४८	१९५।३२	१९।४०	०३७।२४	०४०।२१	०४४।१६	०४९।४८	०५८।०६	०७१।२४
०८।००	२०४।५९	२०३।५४	२०२।४५	२०१।३१	२००।०९	१९८।३७	२०।००	०४४।०६	०४७।२१	०५१।३५	०५७।२२	०६५।४०	०७८।०७
०८।२०	२०९।०७	२०७।५१	२०६।३१	२०५।०५	२०३।२९	२०१।४३	२०।२०	०५०।३०	०५३।५७	०५८।२१	०६४।१२	०७२।१७	०८३।४८
०८।४०	२१३।१३	२११।४८	२१०।१७	२०८।३८	२०६।५०	२०४।४७	२०।४०	०५६।३५	०६०।०९	०६४।३८	०७०।२६	०७८।११	०८८।४८
०९।००	२१७।२०	२१५।४४	२१४।०३	२१२।१२	२१०।०९	२०७।५१	२१।००	०६२।२२	०६६।००	०७०।२८	०७६।०९	०८३।३१	०९३।१७
०९।२०	२२१।२५	२१९।४०	२१७।४८	२१५।४५	२१३।२९	२१०।५५	२१।२०	०६७।५४	०७१।३२	०७५।५७	०८१।२६	०८८।२४	०९७।२४
०९।४०	२२५।३०	२२३।३६	२२१।३३	२१९।१९	२१६।४९	२१३।५९	२१।४०	०७३।११	०७६।४७	०८१।०६	०८६।२२	०९२।५७	१०१।१६
१०।००	२२९।३५	२२७।३२	२२५।१९	२२२।५२	२२०।०८	२१७।०२	२२।००	०७८।१५	०८१।४८	०८५।५९	०९१।०२	०९७।१३	१०४।५४
१०।२०	२३३।४१	२३१।२८	२२९।०५	२२६।२६	२२३।२८	२२०।०५	२२।२०	०८३।०८	०८६।३६	०९०।३९	०९५।२७	१०१।१६	१०८।२४
१०।४०	२३७।४६	२३५।२५	२३२।५२	२३०।०१	२२६।४९	२२३।०८	२२।४०	०८७।५२	०९१।१४	०९५।०७	०९९।४२	१०५।०९	१११।४७
११।००	२४१।५३	२३९।२४	२३६।४०	२३३।३७	२३०।१०	२२६।११	२३।००	०९२।२७	०९५।४२	०९९।२६	१०३।४७	१०८।५५	११५।०४
११।२०	२४६।०२	२४३।२४	२४०।३०	२३७।१५	२३३।३२	२२९।१५	२३।२०	०९६।५५	१००।०३	१०३।३७	१०७।४४	११२।३३	११८।२७
११।४०	२५०।१२	२४७।२६	२४४।२२	२४०।५५	२३६।५८	२३२।२०	२३।४०	१०१।१७	१०४।१८	१०७।४२	१११।३६	११६।०७	१२१।२७
							२४।००	१०५।३४	१०८।२८	१११।४२	११५।२२	११९।३३	१२४।३५

षट् वर्ग सारणी चक्र

मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि रा. चक्र	२ ३० ०	३ २० ०	४ १७ ८।।	५ ० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ ३४ १७	१० ० ०	१२ ० ०	१२ ३० ०	१२ ५१ २६	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	१७ ८ ३४	१७ ३० ०	१८ ० ०	२० ० ०	२१ २५ ४३	२२ ३० ०	२३ २० ०	२५ ० ०	२५ ४२ ५१	२६ ४० ०	२७ ३० ०	३० ० ०
० मे. हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ. हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि. हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क. हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सि. हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ क. हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
त्रि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि रा. चक्र	२ ३० ०	३ २० ०	४ १७ ८।।	५ ० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ ३४ १७	१० ० ०	१२ ० ०	१२ ३० ०	१२ ५१ २६	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	१७ ८ ३४	१७ ३० ०	१८ ० ०	२० ० ०	२१ २५ ४३	२२ ३० ०	२३ २० ०	२५ ० ०	२५ ४२ ५१	२६ ४० ०	२७ ३० ०	३० ० ०
६ तु. हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ. हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ ध. हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म. हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कु. हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी. हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा.स्टै. टाईम)

तारीख	वाराणसी		बम्बई		कलकत्ता		गोहाटी		जयपुर		नागपुर		शिमला,सोलन		मद्रास		धर्मशाला,कांगड़ा		जम्मू(काश्मीर)	
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन.१	०६।४७	१७।१५	०७।१५	१८।०९	०६।२०	१६।५९	०६।१४	१६।३९	०७।१९	१७।४१	०६।५४	१७।३९	०७।२१	१७।२८	०६।३५	१७।५०	०७।२८	१७।२८	०७।३३	१७।३४
६	०६।४९	१७।१९	०७।१७	१८।१२	०६।२२	१७।०३	०६।१४	१६।४२	०७।१९	१७।४४	०६।५४	१७।४३	०७।२२	१७।३२	०६।३७	१७।५३	०७।२८	१७।३२	०७।३४	१७।३७
११	०६।४९	१७।२२	०७।१८	१८।१५	०६।२२	१७।०६	०६।१४	१६।४६	०७।१९	१७।४८	०६।५४	१७।४६	०७।२२	१७।३६	०६।३८	१७।५६	०७।२९	१७।३७	०७।३४	१७।४१
१६	०६।४९	१७।२६	०७।१८	१८।१८	०६।२२	१७।१०	०६।१४	१६।४९	०७।१९	१७।५४	०६।५३	१७।४९	०७।२१	१७।४१	०६।३९	१७।५७	०७।२८	१७।४१	०७।३३	१७।४६
२१	०६।४९	१७।३०	०७।१८	१८।२२	०६।२२	१७।१३	०६।१३	१६।५३	०७।१९	१७।५७	०६।५३	१७।५२	०७।२०	१७।४५	०६।३९	१८।०१	०७।२६	१७।४५	०७।३२	१७।५१
२६	०६।४७	१७।३३	०७।१८	१८।२४	०६।२१	१७।१६	०६।१३	१६।५७	०७।१८	१८।०१	०६।५३	१७।५५	०७।१८	१७।४९	०६।३९	१८।०३	०७।२४	१७।४९	०७।३०	१७।५६
३१	०६।४५	१७।३७	०७।१७	१८।२८	०६।२०	१७।२०	०६।१२	१७।०१	०७।१६	१८।०५	०६।५२	१७।५९	०७।१६	१७।५४	०६।३९	१८।०६	०७।२२	१७।५४	०७।२७	१८।००
फर.५	०६।४३	१७।४१	०७।१५	१८।३०	०६।१८	१७।२३	०६।०९	१७।०५	०७।१३	१८।०९	०६।५२	१८।०२	०७।१४	१७।५८	०६।३८	१८।०८	०७।१९	१७।५९	०७।२४	१८।०५
१०	०६।४०	१७।४४	०७।१३	१८।३३	०६।१५	१७।२६	०६।०२	१७।०८	०७।१०	१८।१३	०६।५१	१८।०५	०७।११	१८।०२	०६।३७	१८।१०	०७।१५	१८।०४	०७।२०	१८।१०
१५	०६।३७	१७।४८	०७।११	१८।३५	०६।१२	१७।२९	०६।०३	१७।१२	०७।०६	१८।१६	०६।४८	१८।०८	०७।०७	१८।०६	०६।३५	१८।११	०७।११	१८।०८	०७।१६	१८।१४
२०	०६।३३	१७।५१	०७।०८	१८।३७	०६।०९	१७।३२	०५।५९	१७।१५	०७।०२	१८।१९	०६।४५	१८।१०	०७।०२	१८।१०	०६।३३	१८।१३	०७।०६	१८।१२	०७।११	१८।१८
२५	०६।२९	१७।५४	०७।०५	१८।३९	०६।०५	१७।३४	०५।५५	१७।१८	०६।५८	१८।२२	०६।४१	१८।१३	०६।५६	१८।१४	०६।३१	१८।१४	०७।००	१८।१६	०७।०६	१८।२२
मार्च२	०६।२४	१७।५६	०७।०१	१८।४१	०६।०१	१७।३७	०५।५०	१७।२१	०६।५४	१८।२५	०६।३८	१८।१५	०६।४९	१८।१८	०६।२८	१८।१४	०६।५३	१८।२०	०७।००	१८।२६
७	०६।२०	१७।५९	०६।५८	१८।४३	०५।५७	१७।३९	०५।४५	१७।२४	०६।४९	१८।२८	०६।३३	१८।१६	०६।४३	१८।२१	०६।२५	१८।१५	०६।४७	१८।२४	०६।५४	१८।२९
१२	०६।१५	१८।०१	०६।५४	१८।४४	०५।५२	१७।४१	०५।४०	१७।२६	०६।४४	१८।३१	०६।२९	१८।१८	०६।३७	१८।२५	०६।२२	१८।१६	०६।४०	१८।२९	०६।४८	१८।३१
१७	०६।१०	१८।०४	०६।५०	१८।४५	०५।४८	१७।४३	०५।३५	१७।२९	०६।३८	१८।३३	०६।२५	१८।२०	०६।३०	१८।२८	०६।१९	१८।१६	०६।३४	१८।३३	०६।४२	१८।३६
२२	०६।०४	१८।०६	०६।४५	१८।४७	०५।४३	१७।४४	०५।२९	१७।३१	०६।३२	१८।३६	०६।२०	१८।२२	०६।२४	१८।३१	०६।१६	१८।१७	०६।२८	१८।३६	०६।३६	१८।३९
२७	०५।५९	१८।०८	०६।४१	१८।४८	०५।३८	१७।४६	०५।२४	१७।३४	०६।२६	१८।३८	०६।१५	१८।२३	०६।१८	१८।३४	०६।१२	१८।१७	०६।२१	१८।३९	०६।२९	१८।४२
अप्रै १	०५।५४	१८।१०	०६।३७	१८।४९	०५।३३	१७।४८	०५।१८	१७।३६	०६।२०	१८।४१	०६।११	१८।२५	०६।१२	१८।३८	०६।०९	१८।१७	०६।१५	१८।४२	०६।२३	१८।४६
६	०५।४९	१८।१३	०६।३३	१८।५०	०५।२९	१७।५०	०५।१३	१७।३८	०६।१५	१८।४४	०६।०६	१८।२६	०६।०६	१८।४१	०६।०६	१८।१८	०६।०८	१८।४५	०६।१७	१८।५०
११	०५।४३	१८।१५	०६।२९	१८।५१	०५।२४	१७।५२	०५।०८	१७।४१	०६।११	१८।४७	०६।०२	१८।२८	०६।०१	१८।४५	०६।०२	१८।१८	०६।०२	१८।४९	०६।११	१८।५३
१६	०५।३९	१८।१७	०६।२५	१८।५३	०५।२०	१७।५३	०५।०३	१७।४३	०६।०६	१८।४९	०५।५८	१८।२९	०५।५५	१८।४८	०५।५९	१८।१८	०५।५६	१८।५२	०६।०५	१८।५६
२१	०५।३४	१८।१९	०६।२१	१८।५४	०५।१५	१७।५५	०४।५८	१७।४५	०६।०१	१८।५१	०५।५४	१८।३१	०५।४९	१८।५१	०५।५७	१८।१९	०५।५०	१८।५६	०५।५९	१८।५९
२६	०५।३०	१८।२२	०६।१८	१८।५५	०५।१२	१७।५७	०४।५४	१७।४८	०५।५६	१८।५४	०५।५०	१८।३३	०५।४४	१८।५४	०५।५४	१८।२०	०५।४५	१८।५९	०५।५३	१९।०३
मई १	०५।२६	१८।२४	०६।१५	१८।५७	०५।०८	१७।५९	०४।५०	१७।५०	०५।५२	१८।५७	०५।४७	१८।३५	०५।३९	१८।५८	०५।५२	१८।२१	०५।४०	१९।०२	०५।४८	१९।०६
६	०५।२२	१८।२७	०६।१२	१८।५९	०५।०५	१८।०२	०४।४६	१७।५३	०५।४८	१८।५९	०५।४४	१८।३७	०५।३५	१९।०१	०५।५०	१८।२२	०५।३६	१९।०६	०५।४३	१९।०९
११	०५।१९	१८।२९	०६।१०	१९।००	०५।०२	१८।०४	०४।४३	१७।५६	०५।४५	१९।०२	०५।४१	१८।३९	०५।३१	१९।०४	०५।४८	१८।२३	०५।३२	१९।०९	०५।३९	१९।१३
१६	०५।१६	१८।३२	०६।०८	१९।०२	०५।००	१८।०६	०४।४०	१७।५९	०५।४२	१९।०५	०५।३८	१८।४१	०५।२८	१९।०८	०५।४७	१८।२४	०५।२८	१९।१३	०५।३६	१९।१६
२१	०५।१४	१८।३५	०६।०६	१९।०४	०४।५८	१८।०८	०४।३८	१८।०१	०५।३९	१९।०८	०५।३७	१८।४३	०५।२५	१९।११	०५।४६	१८।२५	०५।२५	१९।१६	०५।३३	१९।१९
२६	०५।१२	१८।३७	०६।०५	१९।०६	०४।५६	१८।११	०४।३६	१८।०४	०५।३७	१९।११	०५।३६	१८।४५	०५।२२	१९।१४	०५।४५	१८।२७	०५।२२	१९।२०	०५।३०	१९।२१
३१	०५।११	१८।३९	०६।०४	१९।०८	०४।५५	१८।१३	०४।३५	१८।०६	०५।३५	१९।१३	०५।३५	१८।४७	०५।२०	१९।१७	०५।४५	१८।२८	०५।२०	१९।२३	०५।२८	१९।२६
जून ५	०५।११	१८।४२	०६।०४	१९।१०	०४।५५	१८।१५	०४।३४	१८।०८	०५।३५	१९।१५	०५।३५	१८।४८	०५।१९	१९।१९	०५।४५	१८।३०	०५।१९	१९।२५	०५।२७	१९।२९
१०	०५।११	१८।४४	०६।०४	१९।११	०४।५५	१८।१७	०४।३४	१८।११	०५।३५	१९।१८	०५।३५	१८।४९	०५।१९	१९।२१	०५।४५	१८।३१	०५।१८	१९।२७	०५।२७	१९।३२
१५	०५।११	१८।४६	०६।०५	१९।१३	०४।५५	१८।१८	०४।३४	१८।१२	०५।३५	१९।२०	०५।३५	१८।५१	०५।२०	१९।२२	०५।४६	१८।३३	०५।१९	१९।२९	०५।२७	१९।३४
२०	०५।१२	१८।४७	०६।०६	१९।१४	०४।५६	१८।२०	०४।३५	१८।१४	०५।३६	१९।२१	०५।३६	१८।५३	०५।२०	१९।२४	०५।४७	१८।३४	०५।२०	१९।३०	०५।२८	१९।३५
२५	०५।१३	१८।४८	०६।०७	१९।१५	०४।५७	१८।२१	०४।३६	१८।१५	०५।३७	१९।२२	०५।३७	१८।५५	०५।२१	१९।२६	०५।४८	१८।३५	०५।२१	१९।३२	०५।२९	१९।३६
३०	०५।१४	१८।४९	०६।०८	१९।१६	०४।५८	१८।२१	०४।३८	१८।१५	०५।३८	१९।२२	०५।३९	१८।५६	०५।२२	१९।२७	०५।४९	१८।३६	०५।२२	१९।३४	०५।३१	१९।३६

यह सूर्योदयास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है, यही धर्म कृत्योपयोगी है, किरण भवन उपयोगी संस्कार युक्त सूर्योदयास्त पाश्चात्य पंचांगों में लिखा जाता है।

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा.स्टे. टाईम)

	वाराणसी		मुम्बई		कलकत्ता		गोहाटी		जयपुर		नागपुर		शिमला, सोलन		मद्रास		धर्मशाला, कांगड़ा		जम्मू (काश्मीर)	
तारीख	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.
जुला.५	५।१६	१८।४९	६।१०	१९।१६	५।००	१८।२२	४।३९	१८।१५	५।४०	१९।२२	५।४०	१८।५६	५।२४	१९।२६	५।५१	१८।३६	५।२४	१९।३५	५।३३	१९।३६
१०	५।१८	१८।४८	६।११	१९।१६	५।०२	१८।२१	४।४१	१८।१५	५।४२	१९।२१	५।४२	१८।५६	५।२६	१९।२५	५।५२	१८।३६	५।२७	१९।३४	५।३५	१९।३५
१५	५।२०	१८।४७	६।१३	१९।१६	५।०४	१८।२१	४।४४	१८।१४	५।४५	१९।२०	५।४४	१८।५५	५।२९	१९।२३	५।५३	१८।३६	५।३०	१९।३२	५।३७	१९।३४
२०	५।२३	१८।४६	६।१५	१९।१५	५।०६	१८।१९	४।४६	१८।१२	५।४८	१९।१८	५।४६	१८।५४	५।३१	१९।२१	५।५५	१८।३६	५।३३	१९।२९	५।४०	१९।३२
२५	५।२५	१८।४४	६।१७	१९।१४	५।०८	१८।१८	४।४९	१८।१०	५।५०	१९।१६	५।४८	१८।५२	५।३४	१९।१९	५।५६	१८।३५	५।३६	१९।२६	५।४३	१९।२९
३०	५।२७	१८।४१	६।१८	१९।१२	५।१०	१८।१५	४।५१	१८।०८	५।५३	१९।१३	५।५०	१८।५०	५।३८	१९।१६	५।५७	१८।३४	५।३९	१९।२३	५।४७	१९।२६
अग.४	५।३०	१८।३८	६।२०	१९।१०	५।१२	१८।१३	४।५३	१८।०५	५।५६	१९।१०	५।५२	१८।४८	५।४१	१९।१२	५।५८	१८।३२	५।४२	१९।१९	५।५०	१९।२२
९	५।३२	१८।३५	६।२२	१९।०७	५।१४	१८।१०	४।५६	१८।०१	५।५८	१९।०६	५।५३	१८।४५	५।४४	१९।०७	५।५९	१८।३०	५।४६	१९।१५	५।५३	१९।१७
१४	५।३४	१८।३१	६।२३	१९।०४	५।१६	१८।०६	४।५८	१७।५७	६।०१	१९।०२	५।५५	१८।४२	५।४७	१९।०२	६।००	१८।२८	५।४९	१९।१०	५।५६	१९।१२
१९	५।३६	१८।२७	६।२४	१९।०१	५।१८	१८।०२	५।०१	१७।५३	६।०३	१८।५७	५।५७	१८।३८	५।५०	१८।५७	६।००	१८।२५	५।५२	१९।०४	६।००	१९।०६
२४	५।३९	१८।२२	६।२६	१८।५७	५।२०	१७।५८	५।०३	१७।४८	६।०५	१८।५३	५।५८	१८।३४	५।५३	१८।५२	६।०१	१८।२२	५।५५	१८।५८	६।०३	१९।०१
२९	५।४१	१८।१७	६।२७	१८।५३	५।२१	१७।५४	५।०५	१७।४३	६।०७	१८।४८	६।००	१८।३०	५।५६	१८।४६	६।०१	१८।१९	५।५९	१८।५१	६।०६	१८।५६
सित.३	५।४३	१८।१२	६।२७	१८।४९	५।२३	१७।४९	५।०७	१७।३८	६।०९	१८।४२	६।०१	१८।२५	५।५८	१८।४०	६।०१	१८।१५	६।०२	१८।४५	६।०९	१८।५०
८	५।४४	१८।०७	६।२८	१८।४५	५।२४	१७।४४	५।०९	१७।३३	६।१२	१८।३७	६।०२	१८।२१	६।०१	१८।३४	६।०१	१८।१३	६।०६	१८।३८	६।१२	१८।४३
१३	५।४६	१८।०२	६।२९	१८।४१	५।२६	१७।४०	५।११	१७।२७	६।१४	१८।३१	६।०३	१८।१६	६।०४	१८।२८	६।०१	१८।०९	६।०९	१८।३२	६।१५	१८।३७
१८	५।४८	१७।५६	६।३०	१८।३६	५।२७	१७।३४	५।१३	१७।२२	६।१७	१८।२६	६।०५	१८।११	६।०७	१८।२२	६।०१	१८।०५	६।१२	१८।२५	६।१८	१८।३०
२३	५।५०	१७।५१	६।३१	१८।३२	५।२९	१७।२९	५।१५	१७।१६	६।१८	१८।२०	६।०६	१८।०७	६।१०	१८।१५	६।०१	१८।०२	६।१५	१८।१८	६।२१	१८।२४
२८	५।५२	१७।४६	६।३२	१८।२७	५।३०	१७।२५	५।१७	१७।११	६।२०	१८।१४	६।०७	१८।०२	६।१४	१८।०८	६।०२	१७।५८	६।१८	१८।११	६।२४	१८।१७
अक्टू.३	५।५४	१७।४०	६।३३	१८।२३	५।३२	१७।२०	५।२०	१७।०५	६।२३	१८।०९	६।०९	१७।५७	६।१७	१८।०१	६।०२	१७।५५	६।२२	१८।०५	६।२८	१८।११
८	५।५६	१७।३५	६।३४	१८।१९	५।३४	१७।१५	५।२२	१७।००	६।२६	१८।०४	६।१०	१७।५३	६।२१	१७।५५	६।०२	१७।५२	६।२५	१७।५८	६।३१	१८।०५
१३	५।५९	१७।३०	६।३५	१८।१५	५।३५	१७।१०	५।२४	१६।५५	६।२८	१७।५८	६।१२	१७।४८	६।२४	१७।५०	६।०२	१७।४८	६।२९	१७।५२	६।३४	१७।५९
१८	६।०१	१७।२५	६।३७	१८।११	५।३७	१७।०६	५।२७	१६।५०	६।३१	१७।५३	६।१३	१७।४४	६।२८	१७।४४	६।०३	१७।४६	६।३२	१७।४६	६।३७	१७।५३
२३	६।०४	१७।२१	६।३९	१८।०८	५।४०	१७।०२	५।३०	१६।४[illegible]	६।३४	१७।४९	६।१६	१७।४१	६।३१	१७।३९	६।०४	१७।४३	६।३६	१७।४१	६।४१	१७।४८
२८	६।०७	१७।१७	६।४०	१८।०५	५।४२	१६।५९	५।३३	१६।४१	६।३७	१७।४४	६।१८	१७।३७	६।३५	१७।३४	६।०५	१७।४१	६।४०	१७।३६	६।४५	१७।४३
नवं.२	६।१०	१७।१४	६।४२	१८।०२	५।४५	१६।५६	५।३६	१६।३८	६।४०	१७।४०	६।२०	१७।३४	६।३९	१७।३०	६।०६	१७।३९	६।४४	१७।३२	६।४९	१७।३८
७	६।१३	१७।१०	६।४५	१८।००	५।४८	१६।५३	५।३९	१६।३४	६।४३	१७।३७	६।२३	१७।३२	६।४४	१७।२६	६।०८	१७।३८	६।४९	१७।२९	६।५३	१७।३४
१२	६।१६	१७।०८	६।४७	१७।५८	५।५१	१६।५१	५।४३	१६।३२	६।४७	१७।३४	६।२६	१७।३०	६।४८	१७।२३	६।१०	१७।३६	६।५३	१७।२५	६।५८	१७।३०
१७	६।२०	१७।०६	६।५०	१७।५७	५।५४	१६।४९	५।४६	१६।३०	६।५१	१७।३२	६।२९	१७।२९	६।५२	१७।२०	६।१२	१७।३६	६।५७	१७।२२	७।०३	१७।२७
२२	६।२३	१७।०५	६।५३	१७।५७	५।५७	१६।४८	५।५०	१६।२८	६।५५	१७।३१	६।३२	१७।२८	६।५६	१७।१८	६।१४	१७।३६	७।०२	१७।१९	७।०८	१७।२५
२७	६।२७	१७।०४	६।५६	१७।५७	६।०१	१६।४८	५।५४	१६।२८	६।५९	१७।३१	६।३५	१७।२७	७।००	१७।१७	६।१७	१७।३६	७।०६	१७।१७	७।१२	१७।२४
दिसं.२	६।३१	१७।०४	६।५९	१७।५७	६।०४	१६।४८	५।५७	१६।२७	७।०२	१७।३१	६।३८	१७।२८	७।०३	१७।१६	६।१९	१७।३७	७।१०	१७।१६	७।१६	१७।२४
७	६।३४	१७।०४	७।०२	१७।५८	६।०७	१६।४८	६।०१	१६।२८	७।०६	१७।३१	६।४१	१७।२८	७।०७	१७।१६	६।२२	१७।३८	७।१३	१७।१६	७।२०	१७।२४
१२	६।३७	१७।०५	७।०५	१७।५९	६।१०	१६।५०	६।०४	१६।२९	७।०९	१७।३२	६।४५	१७।३०	७।११	१७।१७	६।२५	१७।४०	७।१६	१७।१७	७।२३	१७।२५
१७	६।४१	१७।०७	७।०८	१७।०१	६।१३	१६।५१	६।०७	१६।३१	७।१२	१७।३४	६।४८	१७।३२	७।१४	१७।१८	६।२८	१७।४२	७।१९	१७।१८	७।२६	१७।२६
२२	६।४३	१७।०९	७।११	१८।०३	६।१६	१६।५४	६।१०	१६।३२	७।१५	१७।३६	६।५०	१७।३४	७।१७	१७।२०	६।३०	१७।४४	७।२२	१७।२०	७।२९	१७।२८
२७	६।४५	१७।१२	७।१३	१८।०६	६।१८	१६।५६	६।१२	१६।३५	७।१७	१७।३८	६।५२	१७।३६	७।१९	१७।२३	६।३२	१७।४७	७।२५	१७।२३	७।३१	१७।३१
३१	६।४७	१७।१४	७।१४	१८।०८	६।२०	१६।५८	६।१४	१६।३८	७।१९	१७।४०	६।५३	१७।३८	७।२२	१७।२७	६।३४	१७।५०	७।२७	१७।२६	७।३३	१७।३४

हर्शल का संक्षिप्त फल-विचार

सूर्य की एक प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को लगभग ८४ वर्ष लगते हैं, अर्थात् यह एक राशि में लगभग ७ वर्ष तक रहता है। यह ग्रह शनि से अत्यन्त खल बलिष्ठ तमोगुणी अशुभ ग्रह है। आकस्मिक घटना तथा रोगोत्पादक विलक्षण प्रकृति का वियोग और स्थान त्याग प्रिय है। वर्तमान समय इस जगत में मोटर, रेलवे, तार, बिजली, टेलीफोन आदि यन्त्रों का शोध तथा नित्य प्रयोग में और वायुप्रकोप सम्बन्धी इन्फ्लुएंजा आदि रोगों से यथा सुधार प्रिय देशों में स्त्री, पति, माता, पिता, बन्धु आदि के त्याग से सिद्ध होता है कि इस ग्रह का प्रभाव जगत के मनुष्य प्राणी पर पड़ने लगा है। इस ग्रह की कुम्भ राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि शनि कुम्भ का स्वामी नहीं, प्रत्युत जैसे वृषभ और तुला का स्वामी शुक्र होता है, फिर भी वृषभ राशि का राहु स्वगृही माना जाता है, इसी प्रकार कुम्भ में हर्शल हो तो स्वगृही माना जाता है। यह वायुवेग-प्रिय गृह है। जिस पुरुष की कुण्डली में चन्द्र हर्शल से युक्त और स्त्री की कुण्डली में रवि हर्शल से युक्त हो अथवा केन्द्र तथा प्रतियोग करता हो तो ऐसे पुरुष या स्त्री को पूर्ण दाम्पत्य सुख नहीं होता। एवम् पाँचवें सातवें स्थान में हर्शल हो तो उस पुरुष और स्त्री की चित्त-वृत्ति को चंचल करता है।

राशि विचार- हर्शल मिथुन, तुला और कुम्भ राशि में अत्यन्त बलवान समझा जाता है। मेष और वृश्चिक राशि में अत्यन्त घातक फल देता है।

भाव विचार- यह ग्रह ५-९-१०-११ वें स्थान में शुभ और अन्य स्थानों में अशुभ माना गया है। लग्न में हर्शल हो तो मनुष्य विलक्षण स्वभाव का होगा। किन्तु मिथुन, तुला, कुम्भ राशि का हो तो तीव्र बुद्धि और शोधक होगा। द्वितीय भाव में हो तो कौटुम्बिक सुख के लिए प्रतिकूल और अशुभ राशि का हो तो द्रव्य- हानि। तृतीय भाव में भ्रातृ सुख विघातक, सदा स्थानान्तर, यान्त्रिक वाहन से प्रवास योग। चतुर्थ भाव में आप्तवर्गों से शत्रुत्व, आयुष्य के अन्त समय में द्रव्य-हानि भूमि-सम्बन्धी कलह। पंचम भाव में सन्तति प्रतिबन्ध अथवा नाश, सन्तति सुख का अभाव। षष्ठ भाव में मातुल सुख का अभाव, रोग वृद्धि। सप्तम भाव में वैवाहिक जीवन दाम्पत्य सुख का नाश, परराष्ट्र-सम्बन्ध। अष्टम भाव में आकस्मिक मृत्यु। नवम भाव में धार्मिक संस्था से सम्बन्ध, शास्त्रीय शोध में रुचि। दशम भाव में अधिकारी वर्ग से सम्बन्ध। ग्यारहवें भाव में कायदे कौंसिल देशी संस्था आदि से सम्बन्ध। बारहवें भाव में द्रव्य हानि, ऋण-योग, शत्रु के कारण कष्ट।

नेपच्यून का संक्षिप्त फल-विचार

सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को लगभग १६५ वर्ष का समय लगता है, अर्थात् एक राशि में लगभग १३$\frac{३}{७}$ वर्ष तक रहता है। यह जल राशि ग्रह है। अर्थात् मीन इसकी राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि मीन राशि का स्वामी बृहस्पति नहीं है, प्रत्युत मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल होते हुए भी जैसे वृश्चिक का केतु स्वराशि का समझा जाता है वैसे ही मीन का नेपच्यून स्वगृही माना जाता है। इसका अर्थ, धर्म गुरु चन्द्रमा के समान शुभ है। जल में रंग मिलने से जिस प्रकार जल का रंग बदल जाता है- उसी प्रकार नेपच्यून से जो ग्रह युक्त होगा, वैसे ही वह फल देता है। इसका प्रभाव रुधिराभिसरण में अधिक होता है। यह ग्रह १-५-९वें स्थान में सत्वप्रधान, २-४-६-८-१२ वें में तम प्रधान, ३-७-१०-११वें स्थान में रज प्रधान समझा जाता है। किन्तु यदि अशुभ स्थान और राशि में हो तो मनुष्य का स्वभाव पापवृत्ति की ओर होता है। इस ग्रह को ११-७-३-४-१२ इस क्रम से राशि प्रियतर है। शेष राशियाँ अप्रिय हैं। यह ग्रह १-३-५-९-११वें स्थान में कर्क, वृश्चिक, मीन, मिथुन, तुला राशि में स्थित हो तो ऊँचा फल मिलना निश्चित है।

भावफल- लग्न में नेपच्यून हो तो जल प्रवासी, गौरवपूर्ण, निद्रारोगी। दूसरे भाव में हो तो साम्पत्तिक-हानि, कुटुम्ब-हानि। तीसरे भाव में १-३-५-९-११वें स्थान के स्वामी शुभ योग करता हो तो प्रवास से लाभ, मानसिक उत्कर्ष। चतुर्थ भाव में माता को कष्ट, सांपत्न मातृ योग, पापग्रह से युक्त हो तो कारावास, कृषि में हानि। पंचम भाव में पंचमेश और गुरु से युक्त हो तो पुत्र सन्तति, पंचमेश और शुक्र से युक्त हो तो कन्या सन्तति, शुक्र से अशुभ योग करता हो तो व्यभिचार वृत्ति। छठे भाव में र. चं. से युक्त या दृष्ट हो तो मूत्राशय रोग, अतिसार, संग्रहणी, विश्वासघात। ७वें भाव में सुन्दर रूप और स्वभाव की स्त्री का लाभ, स्त्री राशि या स्त्री ग्रह से युक्त हो तो स्त्री से लाभ, पापग्रह से पीड़ित हो तो स्त्री कष्ट। श. मं. रा. से युक्त और दृष्ट हो तो अत्यन्त अशुभ। अष्टम भाव में शुभ ग्रह से युक्त हो तो आकस्मिक लाभ पापग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो गुह्य भाग में विकार, राज दरबार में हानि। नवम् भाव में चर राशि का हो तो प्रवासी। दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट, व्यापार में हानि। ग्यारहवें भाव में हो तो मित्र, जामाता, बन्धु लाभ आदि विचार करें। बारहवें भाव में चन्द्र से युक्त हो तो जहाज में नौकरी का योग, मंगल से युक्त हो तो अस्पताल सम्बन्धी नौकरी, शनि से युक्त हो तो गुप्त विभाग की नौकरी। यह ग्रह हर्शल से अधिक सामर्थ्यवान है। संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। इस भाव की राशि, स्वामी, ग्रह-दृष्टि ग्रहपूर्ति आदि का शुभाशुभ विचार कर फलादेश कहना चाहिए।

मंगली योग परिहार- यदि कन्या की जन्मकुण्डली में १-४-७-८-१२वें घर में मंगल हो और केन्द्र त्रिकोण १-४-५-७-९-१०वें वृहस्पति हो तो मंगली दोष न होकर वह कन्या सुख-सौभाग्य सम्पन्न रहती है। यथा-

"वाचस्पतौ नवमपंचमकेन्द्र-संस्थे जाताऽङ्गना भवति पूर्ण-विभूतियुक्ता।
साध्वी सुपुत्रजननी सुखिनी गुणाढ्या सप्ताष्टके यदि भवेदशुभग्रहोऽपि।।"

होरा चक्र ज्ञान

सिद्ध होरा मुहूर्त्त

यस्य ग्रहस्य कर्म किंचित् प्रकीर्तितम्। तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वकर्म विधीयते॥

इष्ट कार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त सर्वश्रेष्ठ है। होरा के अनुसार काम आरम्भ करके प्रत्येक व्यक्ति किसी भी नेष्ट समय में से अभीष्ट होरा निकाल कर अपनी वांछित कार्य सिद्धि प्राप्त कर सकता है। सप्त ग्रहों की अपनी-अपनी होराएं भी कुल मिलाकर सात होती हैं। रवि की होरा शासकीय कार्य, नौकरी आदि के लिए शुभ होती हैं। निविदाओं के आदान-प्रदान तथा सरकारी कार्य के दायित्व लेने व देने के लिए भी शुभ होती हैं। चन्द्रमा की होरा सर्वकार्य सिद्धि के लिए उत्तम होती है। भौम की होरा युद्ध, मुकदमा, विवाद, जुआ, यात्रा, ऋण देने, सभा और समाज में आने-जाने के लिए शुभ होती हैं। बुध की होरा कला, काव्य, गणित आदि का शुभारम्भ 'धन संग्रह करना तथा व्यापार आरम्भ करना, पुस्तक प्रकाशन तथा आवेदन प्रस्तुत करने हेतु' शुभ होती है। बृहस्पति की होरा विवाह आदि मांगलिक कार्य, पूजन, यज्ञ आदि शुभ कार्य हेतु, वृद्ध व आदरणीय व्यक्तियों के दर्शन हेतु, कोष संचय के लिए, विद्या व ज्ञान प्राप्ति के लिए, नव काव्य सम्पादन व प्रकाशन हेतु अनेक कार्यों में सिद्धि हेतु अभीष्ट है। शुक्र की होरा नववस्त्र, आभूषण धारण करने के लिए, यात्रारम्भ तथा विवाह सम्बन्धी सौभाग्यवर्धक कार्यों के लिए, कलात्मक कार्य, नाटक, चलचित्र सम्बन्धी सभी कार्यों के लिए शुभ होती हैं। शनि की होरा धन संग्रह, नवगृह तथा भवन निर्माण आरम्भ करने के लिए, भूमि तथा भवन की नींव रखने के लिए, कल-कारखानों, यन्त्रों सम्बन्धी कार्य सिद्ध करने हेतु तथा सर्व प्रकारेण स्थिर कार्य सिद्धि हेतु शुभ होती हैं। प्रत्येक होरा का समय अढ़ाई घड़ी अर्थात् साठ मिनट यानि एक घंटे का होता है। जिस दिन जो वार होता है उस वार की प्रथम होरा सूर्योदय के समय से शुरू होकर एक घंटा तक की समयावधि की होती है। इसके पश्चात दूसरी होरा उस दिन से छठे वार की होती है। इसी क्रमानुसार दूसरी होरा के दिन से छठे दिन की तीसरी होरा होती है। इस तरह से सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक साठ घड़ी अर्थात २४ घंटों में २४ होराएं घूम जाती हैं। अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए जो होरा अनुकूल, उपरोक्त क्रम में कहीं है उसके अनुसार ही निर्दिष्ट समय में कार्यारम्भ करने से वांछित परिणाम मिलेंगे। आर्ष ग्रन्थों में इसी होरा को क्षणवार भी कहा गया है। यदि क्षणवार तथा ग्रहवार या दिनवार दोनों अनुकूल हों तो कार्य सिद्धि निर्विघ्न व निश्चित हैं। वर्जित दिन में अनुकूल होरा पर यात्रा करने से भी दिक् शूल का परिमार्जन हो जाता है।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

सपरिहार गुण मेलापक

-ओमप्रकाश पालीवाल

विवाहित जीवन का सुख या दु:ख मुख्यतया तीन तथ्यों-वर-वधू का मेलापक, कुण्डली मिलान तथा शुद्ध बली लग्न में विवाह-पर निर्भर करता है। इस लेख में प्रथम तथ्य गुणमेलापक पर विचार किया जाता है।

मेल कराने की वस्तु का नाम मेलापक है। इससे यह जाना जाता है कि स्त्री-पुरुष की मैत्री किस प्रकार की होगी। इससे स्वामी-नौकर, व्यवसाय में साझेदारों की मैत्री का भी निर्णय करते हैं।

फलित ज्योतिष में लग्न को शरीर और चंद्र को मन कहा है। मन का कारक भी चंद्र ही है। प्रेम मन से होता है शरीर से नहीं। इस कारण जन्म नक्षत्र तथा जन्म राशि-वश मेलापक देखा जाता है। इस सिद्धान्त को केशवार्क ने विवाह वृन्दावन में निम्न शब्दों में कहा है।

जन्मलग्नमिदमङ्गमङ्गिनां मेनिरे मन इतीन्दुमन्दिरम्।
सौहृदं हि मनसोर्न देहयोर्मेलकस्तदयमिन्दु गेहयोः॥ *(वि.वृ. २।१)*

मेलापक के लिये वशिष्ट संहिता में १८ कूटों का वर्णन है परन्तु आज के भारत में कहीं भी इनका प्रचलन नहीं है। उत्तर भारत में अष्टकूटों का प्रचलन है। नारायण दैवज्ञ ने अपनी कृति 'मुहूर्त मार्तण्ड' (शक संवत १४९३) में अष्टकूट में वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशीश मैत्री, गण, भकूट तथा नाड़ी लिये हैं। राम दैवज्ञ ने भी मुहूर्त चिन्तामणि में इन ८ कूटों को लिया है।

''वर्णो वश्यभ योनि खेचर गणाः कूटं च नाडी क्रमात्।
वर्णाद्याबलिनो यथोत्तरम्.....'' *(मुहूर्त मार्तण्ड ४।१)*

इन ग्रन्थों पर आधारित अष्ट-कूट मेलापक सारणी पंचांगों में उपलब्ध है। उससे वर कन्या के नक्षत्रानुसार प्राप्त: कुल गुण संख्या तथा दोषों का ज्ञान सरलता से हो जाता है। यदि मिलान में किसी कूट में दोष नहीं हो तो यह गुण संख्या वास्तविक गुण संख्या होती है। परन्तु मिलान में यदि कूट दोष हैं तो इसके परिहार देखते हैं। परिहार मिलने पर कूट दोष समाप्त हो जाता है और उस कूट के गुणों में वृद्धि हो जाती है। इन गुणों को पूर्व प्राप्त गुण संख्या में जोड़ते हैं। यह क्रम सभी कूट दोषों पर लागू होता है तथा गुणों की वृद्धि करके प्राप्त अंतिम संख्या ही वास्तविक गुण संख्या होती है। इस प्रकार से संशोधित सारणी ही शुद्ध है तथा उसका ही प्रयोग होना चाहिये। पंचांगकारों का यह दायित्व है कि अपने पंचांगों में सपरिहार मेलापक सारणी प्रकाशित करें जिससे जनता अधिक लाभान्वित हो सके।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि कूट दोष होने पर उस कूट के गुण कितने होते हैं और दोष नष्ट होने पर उसके कितने गुण लेने चाहियें। इसे निम्नतालिका में दिया है :-

अष्टकूट	पूर्ण गुण	कूट दोष में गुण	दोष परिहार में गुण	परिहारक तत्व
१. वर्ण	१	०	१	१. राशीश मैत्री २. राशीश एकता ३. वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
२. वश्य	२	०; १/२	१	१. राशीश मैत्री २. राशीश एकता ३. योनि शुद्धि
३. तारा	३	१¹/₂	३	१. राशीश मैत्री २. राशीश एकता
४. योनि	४	०; १	२	१. राशीश मैत्री २. राशीश एकता ३. भकूट शुद्धि ४. वश्य शुद्धि
५. राशीश मैत्री	५	०; १/२; १	३	१. एक नक्षत्र भिन्न राशियाँ २. भकूट शुद्धि ३. नवमांशेश मैत्र ४. नवमांशेश एकता
६. गण	६	० ; १	५	१. राशीश मैत्री २. राशीश एकता ३. भकूट शुद्धि
७. भकूट	७	०	७	१. राशीश मैत्री २. राशीश एकता
८. नाड़ी	८	०	८	१. राशीश मैत्री २. राशीश एकता ३. दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न ४. दोनों का नक्षत्र एक और राशियाँ भिन्न-भिन्न ५. दोनों की एक राशि, एक नक्षत्र और चरण भिन्न-भिन्न

परिहार

१.राशीश मैत्री का अर्थ है कि वर कन्या की राशियों के स्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों यहां केवल नैसर्गिक मैत्री देखते हैं तात्कालिक नहीं। इस संदर्भ में निम्न श्लोक प्रस्तुत है:-

न वर्ग वर्णो न गणो न योनिः द्विद्वादशे चैव षडष्टकेवा।
तारा विरोधे नव पंचमे ना मैत्री यदास्याच्छुभदो विवाहः॥ *(बृहज्जयोतिष सार)*

अर्थात यदि वर कन्या के राशीश परस्पर मित्र हैं तो वर्ण दोष, वर्गदोष तारादोष, योनि दोष, गण दोष, द्विर्द्वादश, षडाष्टक तथा नवम-पंचम दोष को नष्ट करते हैं। इनकी मैत्री विवाह में शुभ मानी गई है।

इससे मिलता जुलता ही निम्न श्लोक 'ज्योतिर्निबन्ध' में नाडी अपवाद में दिया है-

न वर्ण वर्गो न गणो न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडष्टके वा।

वरेऽपि दूरे नवपंचमे वा मैत्री यदि स्याच्छुभदो विवाहः॥

ग्रन्थकार का आशय यही है कि राशीश मैत्री से नाड़ी दोष भी दूर होता है। "**मैत्राः सर्वे गुणाः शुभाः**" भी इसी संदर्भ में कहा है।

नाडी दोष को नष्ट करने में राशीश मैत्री का वर्णन वसिष्ठ संहिता के निम्न श्लोक में भी है:

नाडी विवेद्ये यदि स्याद्विवाहः करोति वैधव्य युतां च कन्याम्।

स एव माहेन्द्र-दिनादि युक्तो राशीश-योनि सहितो न दोषः॥

कुछ विद्वान इसे इसलिये स्वीकार नहीं करते क्योंकि इसमें माहेन्द्र कूट का वर्णन है जो प्रचलित अष्ट-कूटों में नहीं है। अष्ट-कूट भी वसिष्ठ के कहे हुए १८ कूटों में से ही लिये गए हैं। इनका मिलान करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है। आधुनिक युग में स्व॰ रमन ने भी अपनी कृति "मुहूर्त" में राशीश मैत्री और एकाधिपत्य को नाडी दोष का मुख्य परिहार माना है।

२.राशीश एकता :- वर कन्या दोनों की राशियों का स्वामी एक ही ग्रह हो तो उसे राशीश एकता अथवा एकाधित्य कहते हैं। जैसे वर की राशि वृष हो और कन्या की तुला। वृष और तुला राशियों का स्वामी शुक्र है। अतः राशीश एकता है जिसे परिहारों में प्राथमिकता-क्रम में दूसरा स्थान दिया गया है। इससे भी दोष राशीश मैत्री की भांति नष्ट होते हैं। वसिष्ठ का निम्न मत है-

एकाधिपत्ये त्वथ मित्रभावे स्त्री पुंसराश्योर्न रज्जुदोषे।

षट्काष्टकादिष्वपि शर्मद स्याद्वुद्वाह कर्माचरतोस्तयोश्च॥

(वसिष्ठ संहिता ३२/१८६)

३. नवमांशेश मैत्री :- दोनों के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

४. नवमांशेश एकता:- दोनों का नवमांशेश एक ही हो। राशीश मैत्री अथवा एकाधिपत्य के अभाव में ही नवमांशेश मैत्री एकता देखी जाती है। इस संबंध में अत्रि ने कहा है-

राशीशयोः सुहृदभावे मित्रत्वे वांशनाथयोः।

गणादिदौष्ट्येऽप्युद्वाह पुत्र-पौत्र विवर्धनः॥

अर्थात राशीश परस्पर मित्र हों या एक ही हो, या नवमांशेश परस्पर मित्र हों या एक ही हो तो गणादि दुष्ट होने पर भी विवाह शुभ है और वह पुत्र-पौत्र दायक तथा वृद्धि कारक हैं। यहां पर **गणादि शब्द** पर ध्यान देने की आवश्यकता है। **गण से प्रारम्भ करके गण, भकूट तथा नाडी कूटों की गणना ही ऋषि का मन्तव्य है। इस प्रकार उपरोक्त चार परिहार सभी कूट-दोषों को समाप्त करते हैं। इसीलिये राशीश मैत्री का सर्वाधिक महत्त्व मेलापक में है।**

देवल मुनि ने भी वर कन्या के चन्द्र नवांश पतियों में मैत्री को शुभ माना है यथा-

"अभिदुरावधिपौ सृजतः शुभं शशि नवांशकयोरिति देवलः"

(विवाह वृन्दावन ३/२२)

५.सद्भकूट :- यदि भकूट दोष रहित है तो सद् भकूट कहलाता है। सद्भकूट में वर कन्या की राशियाँ परस्पर ३-११, ४-१०, ७-७ अथवा १-१, ही होती है। यह भी राशीश मैत्री की भांति वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री दोष तथा गणदोष को नष्ट करता है। गर्ग मुनि ने कहा है-

न खेट मैत्रं नो वश्यं न वर्णो न च तारकाः।

सद्भकूटे परा प्रीतिर्न सा वज्रेण भिद्यते॥

योनौ गणे चैत्त्वनुकूलता स्याच्छुभो विवाहो ह्यपि खेट वैरं॥ *(ज्योतिर्निबन्ध)*

एक ही राशि में होने वाला सद्भकूट नाडी दोष को भी नष्ट करता है। नाडी दोष के ३ परिहार इसी के अन्तर्गत आते हैं। जो निम्न हैं:

१. दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों,

२. दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों, और

३. दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न-भिन्न हों।

मुहूर्त मार्तण्ड में इसे निम्न प्रकार कहा है:-

विभैक चरणे भिन्नर्क्षे राश्यैककं भिन्नाङ्घ्र्येकभमेतयोर्गण खगौ नाडी नृदूरंचन"

(मुहूर्त मार्तण्ड ४/६)

अर्थात एक नक्षत्र में वर कन्या के एक ही चरण न हो-दोनों के चरण भिन्न हों। एक ही राशि हो और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या एक ही नक्षत्र में भिन्न-भिन्न राशि हों तो गण का विचार, ग्रह मैत्री, नाडी और नृदूरदोष देखने की आवश्यकता नहीं होती है। दूसरे शब्दों में ये दोष नष्ट होते हैं। दोनों की एक राशि और भिन्न-भिन्न नक्षत्र होने पर एक नाडी जन्य दोष निवृति का उदाहरण केशवार्क ने कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्रों का दिया है। दोनों नक्षत्रों की अन्त नाडी है और वृष राशि में पड़ते हैं। इसी नियम से स्वाति और विशाखा, उत्तराषाढ़ा और श्रवण नक्षत्र क्रमशः तुला और मकर राशि में नाड़ी दोष से मुक्त हैं। आदि नाड़ी के आर्द्रा-पुनर्वसु (मिथुन राशि), उत्तरा फाल्गुनी-हस्त (कन्या राशि) और शतभिषा-पूर्वाभाद्रपद (कुंभ राशि) नक्षत्र भी नाड़ी दोष से मुक्त हो जाते हैं।

२. दोनों का नक्षत्र एक और राशियाँ भिन्न - भिन्न

नौ नक्षत्र-कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, उत्तराषाढ़, धनिष्ठा और पूर्वा भाद्रपद- दो दो राशियों में पड़ते हैं। इन्हें भी नाडी दोष से मुक्ति मिलती है। साधारण नियमानुसार भी पुनर्वसु को छोड़कर शेष नक्षत्रों के राशियों की मित्रता एकाधिपत्य है।

३. दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न-भिन्न

एक राशि, एक नक्षत्र और एक चरण होने पर नाडी दोष पूर्ण होता है और **इसका कोई परिहार नहीं। इस परिस्थिति में ही ज्योतिषी को नाडी दोष कहना चाहिये।** भिन्न-भिन्न चरण होने से नाडी दोष नहीं होता। पराशर के मतानुसार एक राशि एक नक्षत्र होने पर चरण भेद से परस्पर प्रीति होती है। केशवार्क ने कहा है:-

''पराशरः प्राह नवांश भेदादेकर्क्ष राश्योरपि सौमनस्यम''

(विवाह वृन्दावन ३/४)

दोनों के नवांश भिन्न-भिन्न राशियों में होने से नाडी दोष नहीं होता।

वसिष्ठ के अनुसार एक राशि पृथक नक्षत्र तथा एक नक्षत्र पृथक राशि में वर कन्या के नक्षत्र होना शुभ है। एक राशि, एक नक्षत्र तथा एक चरण होना मृत्युप्रद कहा है।

''एक राशि पृथग्धिष्ण्येऽप्युत्तमं पाणिपीडनम्।
एकधिष्ण्ये पृथग्राशौ, सर्वैक्तोऽपि मृत्युदम्॥ **(वसिष्ठसहिता ३२/११४)**

इन तीनों परिहारों का विश्लेषण करने पर हम निम्न दो निष्कर्ष पर पहुंचते हैं-

१. यदि वर तथा कन्या की राशि का स्वामी एक ही ग्रह है अथवा दोनों परस्पर मित्र हैं तो नाड़ी जन्य दोष का पूर्ण परिहार होता है। यदि दोनों के स्वामी परस्पर मित्र-सम या सम-सम हैं तब भी परिहार मानते हैं।

२. वर कन्या के नक्षत्र चरण भिन्न-भिन्न- (दूसरे शब्दों में दोनों के चन्द्र की नवांश राशि भिन्न-भिन्न) यदि दोनों के नवांश भिन्न-भिन्न राशि में पड़ते हैं तभी नाड़ी दोष का परिहार है। एक ही नवांश राशि होने से परिहार नहीं।

मेलापक की न्यूनतम गुण संख्या :-

वर कन्या के मेलापक में गुण योग १८ से अधिक होने पर शुभ होता है। ''अहीन्दूर्ध्व गुणैक्यं शुभं'' (मुहूर्त मार्तण्ड ४/१) किसी ने इसे भकूट पर निधारित किया है। सदभकूट में १६ तक निकृष्ट, २० तक मध्यम, अधिक होने से उत्तम होता है। दुष्ट भकूट में २० तक निकृष्ट, २५ तक मध्यम, ३० तक श्रेष्ठ और इससे अधिक होने पर परमोत्तम होता है।

उपरोक्त तथ्यों का समावेश कर के सपरिहार वर-वधु नक्षत्र मेलापक सारणी दी जा रही है। इस में नाड़ी दोष 'न' से दर्शाया है। यह पूरे नक्षत्र के लिये है। परन्तु नाड़ी दोष का अंतिम निर्णय नवांश (चरण भेद) से होता है। यदि नवांश में नाड़ी दोष है तो सारणी में दी हुई संख्या अंतिम है। यदि नाड़ी दोष नहीं तो इस संख्या में ८ मिलाने से वास्तविक अंतिम संख्या प्राप्त होती है। जहाँ दोष (न) से दर्शाया है वहाँ परिहार नहीं।

उदाहरणः- वर का जन्म नक्षत्र मघा ३ वधू का आश्लेषा २। प्रचलित मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या १५ तथा ४ दोष-वर्ण, योनि, भकूट तथा नाड़ी हैं। गुण संख्या १८ से न्यून होने के कारण तथा नाड़ी दोष का परिहार न होने से मिलान नहीं है। परन्तु दोनों के राशीश सूर्य चन्द्र परस्पर मित्र होने से दोष नष्ट हैं। अतः वर्ण (१), योनि (२), भकूट (७) के गुण सारणी के गुण में मिलाने से प्राप्त संख्या २५ हुई। यह संख्या सपरिहार सारणी में प्राप्त है तथा 'न' से नाड़ी दोष है। मघा ३ का नवांश मिथुन है तथा आश्लेषा २ का मकर। इस प्रकार राशीश मैत्री तथा भिन्न नवांश होने से नाड़ी दोष का परिहार है अतः कुल गुण संख्या 25 + 8 = 33 है। जातक का विवाह २३ वर्ष पूर्व हो चुका है।

आशा है पाठक सपरिहार सारणी अपनाकर शुद्ध मिलान करेगें।

सारणी अगले पृष्ठ पर

सम्पर्क सूत्र- **ओमप्रकाश पालीवाल**
३२७८, सेक्टर १५ डी, चंडीगढ़-१६००१५
फोन (०१७२) २५४०९५८

पृष्ठ २५१ का शेष

इमली, सिंघाड़े में मंदी तो बासमती चावल १७७ की तेजी, ज्वार ५५ तेज, मक्का ४५ तेजी आ सकती है।

सपरिहार वर-वधू नक्षत्र मेलापक सारणी (भाग-1)

(ब = वर्ण दोष; व = वश्य दोष; त = तारा दोष; य = योनि दोष; र = राशीश दोष; ग = गणदोष; भ = भकूट दोष; न = नाड़ी दोष; (न) = नाड़ी दोष का परिहार नहीं।

वर → / ← कन्या		मेष			वृषभ			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
राशि	नक्षत्र चरण	अश्विनी १,२,३,४	भरणी १,२,३,४	कृतिका १	कृतिका २,३,४	रोहिणी १,२,३,४	मृगशिरा १,२	मृगशिरा ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुनर्वसु १,२,३	पुनर्वसु ४	पुष्य १,२,३,४	आश्लेषा १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
मेष	अश्विनी १, २, ३, ४	२८ न	३३	३४	१९॥ तगभ	२२॥ तभ	२३॥ तभ	२८॥ बत	१९॥ बतन	२१॥ बतन	२५ न	३३	३२	३३	३३	२५ न	११ बतर भन	९ बत यरभन	१३ बत रयभग
	भरणी १, २, ३, ४	३४	३८ न	३४	२० गभ	२३॥ तभ	१५॥ तभन	२०॥ बतन	२८॥ बत	२९॥ बत	३३	२५ न	३२	३३	२६ न	३४	२१॥ बरभ	२० बतरभ	४ बतर यगभन
	कृतिका १	३४	३४	२८ (न)	२७ भ	११ गभन	१७॥ तगभ	२७॥ बत	२७॥ बत	२८॥ बत	३२	३३	२५ न	२६ न	३३	३३	१५॥ बगभर	१२॥ बगरभ	१८ बत रभय
वृषभ	कृतिका २, ३, ४	१८॥ तगभ	२० गभ	२७ भ	२८ न	३३	३३	३२	३२	३३	२९॥ त	३०॥ त	२२॥ नत	२२॥ तन	३१	३० व	३३	३३	३३
	रोहिणी १, २, ३, ४	२३॥ तभ	२३॥ तभ	११ गभन	३३	२८ न	३६	३५	३३	३३	२९॥ त	२९॥ त	२०॥ तन	१९॥ वतन	२८॥ वत	३० व	३३	३३	३२
	मृगशिरा १, २	२३॥ तभ	१४॥ तभन	१८॥ तगभ	३३	३५	२८ न	३५	३२	३३	२९॥ त	२१॥ तन	२८॥ त	२७॥ वत	१९॥ वतन	२७॥ वत	३२	३३	२४ न
मिथुन	मृगशिरा ३, ४	२९॥ त	२०॥ तन	२८॥ त	३२	३४	३५	२८ न	३३	३४	१९ वत यरभ	१२ वत रभन	१४ वत यरगभ	३१	२३ न	३१	३३	३४	२५ न
	आर्द्रा १, २, ३, ४	२१॥ तन	२९॥ त	२८॥ त	३२	३३	३३	३४	२८ न	३४	१२॥ वय रभन	२० वत रभ	१३ वत यरगभ	३१	३२	२४ न	२६ न	२६ न	३३
	पुनर्वसु १, २, ३	२२॥ तन	२९॥ त	२५॥ त	३३	३२	३३	३४	३३	२८ न	२४॥ रभ	२३॥ रभ	१८ तरगभ	३१	३१	२४ न	२६ न	२७ न	३३
कर्क	पुनर्वसु ४	२५ न	३२	३३	२९॥ त	२८॥ त	२९॥ त	१८ बव तयरभ	१०॥ बव यरभन	२२॥ बरभ	२८ (न)	३५	३५	३२	३२	२५ न	२०॥ बनत	२१॥ बतन	२७ बवत
	पुष्य १, २, ३, ४	३३	२४ न	३३	३०॥ त	२८॥ त	२१॥ तन	११ बव तरभन	१८ बव तरभ	२२ बभर	३५	२८ न	३४	३३	२५ न	३३	२९ बत	३० बत	१९ बवतन
	आश्लेषा १, २, ३, ४	३२	३२	२५ न	२२॥ तन	२०॥ तन	२८॥ त	१२ बवत यरगभ	१२ बवत यरगभ	१५ बव तरगभ	३५	३४	२८ न	२५ न	३२	३३	२८॥ बत	२८॥ बत	२८ बवत
सिंह	मघा १, २, ३, ४	३३	३३	२६ न	२२॥ तन	१९॥ वतन	२७॥ वत	३१	३१	३१	३२	३३	२५ न	२८ न	३५	३४	३२	३२	३२
	पू.फा. १, २, ३, ४	३४	२६ न	३३	३१	२८॥ त	२०॥ वतन	२४ न	३२	३२	३३	२६ न	३२	३५	२८ न	३५	३३	३३	२४ न
	उ.फा. १	२६ न	३४	३३	३१	३०	२८॥ वत	३२	२४ न	२५ न	२६ न	३४	३३	३४	३५	२८ (न)	३४	२५ न	३१
कन्या	उ.फा. २, ३, ४	१३ तर भन	२२॥ रभ	१६॥ रगभ	३३	३३	३३	३४	२५ न	२७ न	२२ वतन	३०॥ त	२९॥ त	३२	३३	३४	२८ न	३५	३३
	हस्त १, २, ३, ४	१२ तर भन	२० तरभ	१७॥ रगभ	३३	३२	३३	३४	२५ न	२७ न	२२ वतन	३०॥ त	२९॥ त	३२	३२	२४ न	३४	२८ न	३३
	चित्रा १, २	१४ तर गभ	६ तरगभ	२० तरभ	३३	३२	२४ न	२५ न	३३	३३	२८ बत	२० बतन	२९ बत	३२	२३ न	३१	३३	३३	२८ न

(ब = वर्ण दोष; व = वश्य दोष; त = तारा दोष; य = योनि दोष; र = राशीश दोष;

सपरिहार वर-वधू नक्षत्र मेलापक सारणी (भाग-2)

(ब = वर्ण दोष; व = वश्य दोष; त = तारा दोष; य = योनि दोष; र = राशीश दोष; ग = गणदोष; भ = भकूट दोष; न = नाड़ी दोष; (न) = नाड़ी दोष का परिहार नहीं।

वर → / ← कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
राशि	नक्षत्र	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
	चरण	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१,२,३,४	१	२,३,४	१,२,३,४	१,२	३,४	१,२,३,४	१,२,३	४	१,२,३,४	१,२,३,४
मेष	अश्विनी १, २, ३, ४	२८॥ त	२९॥ त	२८॥ त	३२	३४	२५ न	२४ न	३२	३२	२७॥ ब त	२८॥ ब त	२७॥ ब त	२७॥ ब त	२१॥ ब त न	१९॥ ब त न	२४ न	३३	३३
	भरणी १, २, ३, ४	२०॥ त न	२९॥ ब त	२८॥ त	३२	२६ न	३३	३२	२५ न	३३	३० ब	२८॥ ब त	१९॥ ब त न	१९॥ ब त न	२७॥ ब त	२८॥ ब त	३३	२६ न	३५
	कृत्तिका १	२९॥ त	२१॥ त न	२१॥ त न	३२	३३	३४	३३	३२	२४ न	२१ ब न	२१ ब न	२८॥ ब त	२८॥ ब त	२९॥ ब त	२७॥ ब त	३२	३३	२५ न
वृषभ	कृत्तिका २, ३, ४	३३	२५ न	२५ न	२१॥ तन	२९॥ त	३०॥ त	२० त र भ	१५॥ र ग भ	७॥ र ग भ न	२४ न	२४ न	३३	३३	३४	३२	२८॥ त	२९॥ त	२१॥ त न
	रोहिणी १, २, ३, ४	३२	२५ न	२४ न	२०॥ त न	२९॥ त	२८॥ त	१४ त र ग भ	२० त र भ	१३॥ र भ न	२५ न	२५ न	३२	३२	३१	३३	२९॥ त	२९॥ त	२१॥ त न
	मृगशिरा १, २	२४ न	३३	३२	२८॥ त	२१॥ त न	२८॥ त	१५ त र ग भ	१० त य र भ न	१९ त र भ	३२	३३	२४ न	२४ न	३२	३२	२८॥ त	२०॥ त न	२९॥ त
मिथुन	मृगशिरा ३, ४	२५ न	३४	३३	१४ व र ग भ त	११ व त र भ न	१४ व त र ग भ	२९॥ त	२१॥ त न	२९॥ त	३१	३२	२३ न	१७ भ न	२५ भ	२५ भ	२८ व त	२० व त न	२९ व त
	आर्द्रा १, २, ३, ४	३३	३४	३३	१३॥ व य र ग भ	१७ व त य र भ	३ व त य र ग भ न	२३॥ त न	३०॥ त	३०॥ त	३२	३२	३१	२५ भ	१७ भ न	१८ भ न	२२॥ व न	२९ व त	२९ वत
	पुनर्वसु १, २, ३	३३	३५	३३	१२॥ व र ग भ	२२॥ र भ	८ त र ग भ न	२१॥ त न	२९॥ त	२९॥ त	३१	३२	३१	२५ भ	१८ भ न	१७ भ न	२१॥ व न	३१	२०॥ त
कर्क	पुनर्वसु ४	२८ व त	३२	२९॥ व	३१	२६ भ	१७ भ न	२३ न	३१	३१	२८॥ ब त	२९॥ ब त	२८॥ ब त	१२॥ ब व त र य ग भ	८ ब व र ग भ न	१० ब व य र भ न	१६ य भ न	२६ भ	२७ भ
	पुष्य १, २, ३, ४	२० ब त न	३०॥ त	२९ व	२४ भ	१८ भ न	२५ भ	३१	२३ न	३१	२८॥ ब त	२९॥ ब त	२०॥ ब त न	४॥ ब व त य र ग भ न	१४॥ ब व त र ग भ	१८ ब व य र भ	२५ भ	१८ भ न	२७ भ
	आश्लेषा १, २, ३, ४	२९ व त	२१॥ त न	२१ व त न	१७ भ न	२५ भ	२६ भ	३२	३१	२३ न	२०॥ ब त न	२०॥ ब त न	२९॥ ब त	१७॥ ब त त य र भ	१९॥ ब व त र भ	११॥ ब व त य र ग भ	२५ भ	२६ भ	१८ भ न
सिंह	मघा १, २, ३, ४	२८॥ व त	२१॥ त न	२०॥ व त न	२५ न	३३	३४	३३	३२	२४ न	३॥ ब र त य ग भ न	४॥ ब त र ग भ न	१८॥ ब त र भ	२७॥ ब व त	२९॥ ब त	२६॥ ब व त	३२	३३	२५ न
	पू.फा. १, २, ३, ४	१९॥ व त न	३०॥ त	२७॥ व त	३२	२६ न	३३	३२	२५ न	३२	१९ ब य र भ	१८॥ ब त र भ	४॥ ब त र ग भ न	१८॥ ब व त न	२८॥ ब त	२७॥ ब व त	३३	२६ न	३४
	उ.फा. १	२७॥ व त	३०॥ त	२७॥ व त	३२	३४	२५ न	२४ न	३३	३३	२० ब र भ	२० ब र भ	११॥ ब त य र ग भ	२६॥ ब व त	२०॥ ब त न	१९॥ ब व त न	२५ न	३५	३४
कन्या	उ.फा. २, ३, ४	३३	३५	३३	२७॥ व त	३०॥ त	२१॥ त न	२१॥ त न	३२	३२	२५ भ	२५ भ	२४ भ	३२	२५ न	२५ न	२१ व त न	३१॥ त	३०॥ त
	हस्त १, २, ३, ४	३३	३६	३३	२७॥ व त	२८॥ व त	१९॥ व त न	२१॥ त न	२९॥ त	३१	२४ भ	२५ भ	२४ भ	३२	२४ न	२४ न	२० व त न	२९॥ त	३०॥ त
	चित्रा १, २	३६	३३	३६	३०॥ व त	१९॥ व त न	२८॥ ब त	३०॥ त	२१॥ त न	२९॥ त	२४ भ	२४ भ	१७ भ न	२५ न	३३	३२	२८ व त	२० व त न	२८ व त

सपरिहार वर-वधू नक्षत्र मेलापक सारणी (भाग-3)

(ब = वर्ण दोष; व = वश्य दोष; त = तारा दोष; य = योनि दोष; र = राशीश दोष; ग = गणदोष; भ = भकूट दोष; न = नाड़ी दोष; (न) = नाड़ी दोष का परिहार नहीं।

वर → / ← कन्या		मेष			वृषभ			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
राशि	नक्षत्र चरण	अश्विनी १,२,३,४	भरणी १,२,३,४	कृतिका १	कृतिका २,३,४	रोहिणी १,२,३,४	मृगशिरा १,२	मृगशिरा ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुनर्वसु १,२,३	पुनर्वसु ४	पुष्य १,२,३,४	आश्लेषा १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
तुला	चित्रा ३, ४	२८॥ त	२०॥ त न	२९॥ त	३३	३२	२४ न	२५ न	३३	३३	२८ व त	२० व त न	२९ व त	२८॥ व त	१९॥ व त न	२७॥ त व	३३	३३	३६
	स्वाती १, २, ३, ४	२९॥ त	२९॥ त	२१॥ त न	२५ न	२४ न	३३	३४	३३	३५	३२	३०॥ त	२१॥ त न	२१॥ त न	२९॥ त	२९॥ त	३४	३६	३३
	विशाखा १, २, ३	२८॥ त	२८॥ त	२१॥ त न	२५ न	२४ न	३२	३३	३३	३३	२९॥ व	२९॥ व	२१ व त न	२०॥ व त न	२७॥ व त	२७॥ व त	३३	३३	३६
वृश्चिक	विशाखा ४	३२	३२	२५ न	२१॥ त न	२०॥ त न	२८॥ त	१३ व त र ग भ	१२॥ ब व य र ग भ	१३॥ ब व र ग भ	३१	२४ भ	१७ भ न	२५ न	३२	३१॥	२६॥ ब व त	२६॥ ब व त	३०॥ ब त
	अनुराधा १, २, ३, ४	३४	२५ न	३३	२९॥ त	२७॥ ब त	२०॥ ब त न	१० व ब त र भ न	१५ ब व त य र भ	२१॥ ब र भ	२६ भ	१८ भ न	२५ भ	३२	२४ न	३३	२८॥ ब त	२९॥ ब त	१८॥ ब व त न
	ज्येष्ठा १, २, ३, ४	२५ न	३३	३४	२९॥ ब त	२८॥ त	२८॥ त	१२ ब व त र ग भ	२ ब व त य र ग भ न	५ ब व त र ग भ न	१७ भ न	२५ भ	२६ भ	३३	३२	२५ न	२०॥ ब त न	२०॥ ब त न	२७॥ ब व त
धनु	मूल १, २, ३, ४	२४ न	३२	३३	२० त र भ	१४ त र ग भ	१४ त र ग भ	२८॥ ब त	२२॥ ब त न	२०॥ ब त न	२३ न	३१	३२	३३	३२	२४ न	२०॥ ब त न	२०॥ ब त न	२९॥ ब त
	पू.षा. १, २, ३, ४	३३	२८ न	३२	१५॥ र ग भ	२० त र भ	१२ त र भ न	२१॥ ब त न	२९॥ ब त	२९॥ ब त	३२	२४ न	३१	३२	२५ न	३३	३१ ब	२९॥ ब त	२०॥ ब त न
	उ.षा. १	३३	३३	२४ न	७॥ र ग भ न	१३॥ र भ न	२० त र भ	२९॥ ब त	२९॥ ब त	२९॥ ब त	३२	३२	२३ न	२४ न	३३	३३	३१ ब	३१ ब	२३॥ ब त
मकर	उ.षा. २, ३, ४	२९॥ त	३१	२२ न	२४ न	२५ न	३३	३२	३२	३२	३०॥ त	३०॥ त	२१॥ न त	४॥ त य र ग भ न	२० य र भ	२१ र भ	२५ भ	२५ भ	२४ भ
	श्रवण १, २, ३, ४	२९॥ त	२८॥ त	२२ न	२४ न	२४ न	३३	३२	३१	३२	३०॥ त	३०॥ त	२१॥ न त	६॥ त र ग भ न	१८॥ त र भ	२० र भ	२४ भ	२५ भ	२४ भ
	धनिष्ठा १, २	२८॥ त	२०॥ त न	२९॥ त	३३	३२	२४ न	२३ न	३१	३१	२९॥ त	२१॥ त न	३०॥ त	१९॥ त र भ	५॥ त र ग भ न	१२॥ त य र ग भ	२४ भ	२४ भ	१७ भ न
कुम्भ	धनिष्ठा ३, ४	२८॥ त	२०॥ त न	२९॥ त	३३	३२	२४ न	१७ भ न	२५ भ	२५ भ	१३॥ व त र ग भ	४॥ व त य र ग भ न	१९॥ व त र भ	२८॥ व त	१९॥ व त न	२७॥ व त	३२	३२	२५ न
	शतभिषा १, २, ३, ४	२२॥ त न	२८॥ त	३०॥ त	३४	३२	३२	२५ भ	१७ भ न	१८ भ न	८ व र ग भ न	१५ त र ग भ	२१ त र भ	३०॥ त	२९॥ त	२१॥ त न	२५ न	२४ न	३३
	पू.भा. १, २, ३	२१॥ त न	२९॥ त	२८॥ त	३२	३३	३३	२६ भ	१८ भ न	१८ भ न	१३ व भ न र	२० व य र भ	१३॥ व त र ग भ	२७॥ व त	२८॥ व त	२०॥ व त न	२५ न	२५ न	३२
मीन	पू.भा. ४	२५ न	३३	३२	२८॥ त	२९॥ त	२९॥ त	२८ ब व त	२१॥ ब व न	२१॥ ब व न	१८ भ न	२६ भ	२५ भ	३२	३३	२४ न	२० ब व त न	२० ब व त न	२७ ब व त
	उ.भा. १, २, ३, ४	३४	२६ न	३३	२९॥ त	२८॥ त	२१॥ न त	२० ब व त न	२८ ब व त	३१ ब	२७ भ	१९ भ न	२६ भ	३३	२६ न	३५	३०॥ ब त	२९॥ ब त	१९ ब व त न
	रेवती १, २, ३, ४	३३	३४	२५ न	२१॥ न त	२०॥ न त	२९॥ त	२८ ब व त	२७ ब व त	२९॥ ब त	२७ भ	२७ भ	१८ भ न	२५ न	३३	३३	२८॥ ब त	२९॥ ब त	२७ ब व त

सपरिहार वर-वधू नक्षत्र मेलापक सारणी (भाग-4)

(ब = वर्ण दोष; व = वश्य दोष; त = तारा दोष; य = योनि दोष; र = राशीश दोष; ग = गणदोष; भ = भकूट दोष; न = नाड़ी दोष; (न) = नाड़ी दोष का परिहार नहीं।)

वर → ← कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
राशि	नक्षत्र चरण	चित्रा ३,४	स्वाती १,२,३,४	विशाखा १,२,३	विशाखा ४	अनुराधा १,२,३,४	ज्येष्ठा १,२,३,४	मूल १,२,३,४	पू.षा. १,२,३,४	उ.षा. १	उ.षा. २,३,४	श्रवण १,२,३,४	धनिष्ठा १,२	धनिष्ठा ३,४	शतभिषा १,२,३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२,३,४	रेवती १,२,३,४
तुला	चित्रा ३, ४	२८ न	३३	३६	२४॥ त भ	६॥ व त य ग भ न	२०॥ व त य भ	३०॥ त	२१॥ त न	२९॥ त	३२	३२	२५ न	२६ न	३४	३३	१२॥ व त य र ग भ	३॥ व त य र ग भ न	१२॥ व त र य ग भ
	स्वाती १, २, ३, ४	३३	२८ न	३३	९ व य ग भ न	२१॥ व त भ	१६॥ व त ग भ	२४॥ त	२९॥ त	२१॥ त न	२४ न	२५ न	३२	३३	३३	३३	१९ व य र भ	२०॥ त र भ	१३॥ त र भ न
	विशाखा १, २, ३	३६	३३	२८ न	२६ भ	१६ ब य ग भ	२०॥ ब त य भ	३०॥ त	२९॥ त	२१॥ त न	२४ न	२४ न	३३	३४	३४	३३	१४ व य र ग भ	१३ व य र ग भ	४॥ व त य र ग भ न
वृश्चिक	विशाखा ४	२४॥ त भ	८ व य॰ ग भ न	२६ भ	२८ (न)	३३	३४	३३	३२	२४ न	१९॥ व त न	१९॥ ब त न	२८॥ ब त	२७॥ ब व त	२९ ब व	२८ ब त	३२	३२	२४ न
	अनुराधा १, २, ३, ४	७॥ ब त य ग भ न	२३॥ त भ	१७ य ग भ व	३३	२८ न	३५	३२	२४ न	३२	२७॥ ब त	२८॥ ब त	१९॥ ब त न	१८॥ ब व त न	२८॥ ब व त	२८ ब व	३२ २४	२५ न	३४
	ज्येष्ठा १, २, ३, ४	२०॥ त व य भ	१७॥ त ग भ	२०॥ व य त भ	३४	३५	२८ न	२५ न	३२	३२	२७॥ ब त	२७॥ ब त	२८॥ ब त	२७॥ ब व त	२१॥ ब त न	१८॥ ब व त न	न	३३	३३
धनु	मूल १, २, ३, ४	२९॥ त	२९॥ त	३०॥ त	३३	३२	२५ न	२८ न	३३	३३	१५ ब व त ग भ	१५ ब व त ग भ	२० ब व त य भ	२९॥ ब त	२१॥ ब त न	२०॥ ब त न	२४ न	३२	३२
	पू.षा. १, २, ३, ४	२१॥ त न	३२ त	२९॥ त	३२	२५ न	३२	३३	२८ न	३४	२२॥ ब व भ	२३ ब व त भ	६ ब व त य ग भ न	२०॥ ब त न	२८॥ ब त	२९॥ ब त	३३	२५ न	३३
	उ.षा. १	२९॥ त	२४ न त	२१॥ त न	२४ न	३३	३२	३३	३४	२८ (न)	२५ भ ब	१४॥ ब न भ	१५ ब व त ग भ	२८॥ ब त	२८॥ ब त	२९॥ ब त	३३	३३	२५ न
मकर	उ.षा. २, ३, ४	३२	२५ न	२४ न	२०॥ त न	२९॥ त	२८॥ त	१६ व त ग भ	२३॥ व भ	२५॥ व भ	२८ न	३४	३३	३२	३२	३३	३०॥ त	३०॥ त	२२॥ त न
	श्रवण १, २, ३, ४	३२	२५ न	२४ न	२०॥ त न	२९॥ त	२८॥ त	१७ व त ग भ	२४ त भ	१४॥ व भ न	३३	२८ न	३३	३२	३२	३२	२९॥ त	२९॥ त	२२॥ त न
	धनिष्ठा १, २	२५ न	३२	३३	२९॥ त	२०॥ त न	२९॥ त	२१ व त य भ	७ व त य ग भ न	१६ व त ग भ	३३	३३	२८ न	३५	३३	३४	३१॥ त	२१॥ त न	२९॥ त
कुम्भ	धनिष्ठा ३, ४	२६ न	३२	३४	२८॥ व त	१९॥ व त न	२८॥ व त	३०॥ त	२१॥ त न	२९॥ त	३२	३२	३५	२८ न	३४	३५	१८॥ त ग भ	७ व त य ग भ न	१४ व त य ग भ
	शतभिषा १, २, ३, ४	३४	३३	३४	३० व	२९॥ त	२२॥ त न	२२॥ न त	२९॥ त	२९॥ त	३२	३२	३३	३४	२८ न	३३	८॥ व य ग भ न	१८ त ग भ	१६ व त ग भ
	पू.भा. १, २, ३	३३	३४	३३	२९ व	३० व	१९॥ त न	२१॥ ,त न	२९॥ त य	३०॥ त	३३	३३	३४	३५	३३	२८ न	२६ भ	२२॥ व य भ	२० व त य भ
मीन	पू.भा. ४	१२॥ ब त य र ग भ	२० र व भ य	१४ व य र ग भ	३२	३३	२४ न	२४ न	३३	३३	२९॥ ब त	२८॥ ब त य	३०॥ ब त	१७॥ ब त ग भ	७॥ ब व य ग भ न	२५ भ	२८ (न)	३४	३४
	उ.भा. १, २, ३, ४	२॥ व त य र ग भ न	२१ त र भ	१३ य र ग व भ	३२	२६ न	३३	३२	२५ न	३३	२९॥ ब त	२९॥ ब त	२०॥ ब त न	६ व ब त य ग भ न	१६॥ ब त ग भ	२१॥ ब व य भ	३४	२८ न	३५
	रेवती १, २, ३, ४	१३॥ व त य र ग भ	१३ त र भ न	५॥ व त य र ग भ न	२४ न	३४	३३	३२	३२	२४ न	२०॥ ब त न	२१॥ ब त न	२८॥ ब त	१४ ब व त य ग भ	१६ ब व त ग भ	१८ ब व त य भ	३३	३४	२८ न

साम्पातिक काल और जन्मांग गणित

लेखक- भोलादत्त महातौल्य

पारम्परिक स्थूल पंचांगों को छोड़कर स्थिर राशिचक्राश्रित अधिकांश आधुनिक पंचांगों में इन दिनों दैनिक साम्पातिक काल या साम्पातिक काल की सारणियां छप रही हैं। विगत कुछ वर्षों से आपके प्रिय इस श्रीविश्वविजय पंचांग में भी साम्पातिक काल के द्वारा लग्न-दशम का गणित दिया जा रहा है। कतिपय गणित-प्रेमी पाठकों की मांग पर इस वर्ष के पंचांग में साम्पातिक काल की १९४१ से २०३६ तक के ९६ वर्षों की अतिसूक्ष्म सारणियाँ और त्रिकोणमिति के द्वारा लग्न-दशम को सिद्ध करने की अपूर्व विधि दे रहे हैं। आशा है कि हमारे पाठक अवश्य लाभान्वित होंगे। -सम्पादक

हमारे सभी पाठक साम्पातिक काल के 'नाम' से अवश्य परिचित हैं किन्तु बहुत कम पाठक इसके उद्भव और खगोलीय स्वरूप से सुपरिचित होंगे अतः सूक्ष्मता और ज्योतिर्विज्ञान की सत्यता से प्रेम करने वाले सभी पाठकों के लाभार्थ हम साम्पातिक काल की सैद्धान्तिक विवेचना प्रस्तुत कर रहे हैं।

लगति विषुवपातो ह्यूर्ध्व याम्योत्तरे खे, भवति समयशून्यस्तत्र साम्पातिकाख्यः।
गिरि शशि लव शून्यैर्नन्द बाणाग्नितुल्यैः, पुनरपि पुनरूर्ध्वं याति पातः पलैः सः॥१॥

अर्थ- जहाँ कहीं पर भी राशिचक्र का वासंतीय विषुवपात बिन्दु (γ) अर्थात् मेषादि बिन्दु किसी स्थान के ऊर्ध्वयाम्योत्तर बिन्दु पर पहुँचता है तो वहाँ पर उस स्थान की साम्पातिक काल बताने वाली घड़ी में समय शून्य हो जाता है अर्थात् शून्य बजता है। एक बार ऊर्ध्व याम्योत्तरवृत्त पर पहुंचने के बाद वह मेषादिपात बिन्दु (γ) ३५९०.१७ पलों के उपरान्त पुनःपुनः ऊर्ध्वयाम्योत्तर वृत्त पर आता रहता है।

इस कथन से यह स्पष्ट है कि साम्पातिक काल का उद्भव राशि चक्र के मेषादि विषुवपात के ऊर्ध्व याम्योत्तरवृत्त के परिलंघन के द्वारा होता है, तात्पर्य यह है कि पृथ्वी के स्वाक्षभ्रमण के कारण सूर्यादि अन्य खगोलीय पिण्डों की भाँति उक्त विषुवपात बिन्दु (γ) भी अपना अहोरात्रवृत्त बनाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो हम कह सकते हैं कि सूर्य-चन्द्र की भाँति वसंतपात बिन्दु पूर्व में उदय होकर ऊर्ध्व याम्योत्तरवृत्त पर जाता है और फिर पश्चिम की ओर नत होते-होते पश्चिमी क्षितिज में अस्त होने के बाद अधो याम्योत्तर से जाता हुआ पुनः पूर्वीय क्षितिज में उदय होता रहा है। विषुवपात की इस यात्रा में जब-जब भी जहाँ जहाँ पर वह ऊर्ध्व याम्योत्तर में पहुँचता है तो उस स्थान की साम्पातिक घड़ी में शून्य बजा हुआ माना जाता है। ऐसी घड़ी वेधशालाओं में उपलब्ध रहती है।

प्रकारान्तर से देखें तो जब भी किसी स्थान की साम्पातिक घड़ी में शून्य बजे होंगे तो वसंतपात बिन्दु (γ) उस स्थान के ऊर्ध्वयाम्योत्तर वृत्त पर संलग्न रहेगा जब वह पश्चिम की ओर १५ अंश नत होगा तो साम्पातिक घड़ी में १ बजेगा। ३० अंश नत होने पर दो और ठीक अधोयाम्योत्तर तक पहुँचने पर १२ बजे रहेंगे। इसी प्रकार प्रति १५-१५ अंश की दर से १३-१४ और २३ तक बजते रहते हैं। जब २४ बजते हैं तो विषुवपात बिन्दु (γ) पुनः ऊर्ध्व याम्योत्तर पर संलग्न हो चुका होता है।

इस प्रकार (γ) की इस यात्रा में प्रत्येक घण्टे में बनाया गया १५-१५ अंश का 'होराकोण' ही अभीष्ट साम्पातिक काल का अभिव्यंजक बन जाता है अर्थात् किसी भी स्थान में भी किसी क्षण विशेष का साम्पातिक काल हमें उस स्थान का वसंतपात का भुक्त होरात्मक मान बताता है। इससे एक अन्य रहस्य भी उद्भूत होता है कि जहाँ कहीं पर साम्पातिक घड़ी शून्य बजायेगी तो (γ) उस स्थान के ठीक ऊर्ध्व याम्योत्तर से संलग्न रहेगा। जब साम्पातिक घड़ी में एक बजेगा तो विषुववृत्त का १५वाँ अंश, २ बजे ३०वाँ अंश और २३ बजे ३४५वाँ अंश ऊर्ध्व याम्योत्तर में संलग्न होगा। इसी भाँति १ घण्टे में १५ अंश अथवा प्रति ४ मिनट में १ अंश की दर से विषुववृत्त ऊर्ध्वयाम्योत्तर पर आता रहता है। २४ साम्पातिक घण्टों में भचक्र का एक अहोरात्र व्यतीत होता रहता है।

चूंकि साम्पातिक काल की गणना विषुवृत्त में होती है अतः इसे विषुवकाल भी कहते हैं। यदि किसी स्थान के इष्ट साम्पातिक काल को १५ से गुणा करके अंशादि में बदल दें तो उन अंशादि को खमध्य विषुवांश कहा जाता है, कुछ लोग साम्पातिक काल को नाक्षत्रकाल भी कहते हैं किन्तु यह सैद्धान्तिक रूप से अनुपपन्न है। पाश्चात्य पंचांगों में इस साम्पातिक काल को साइडीरियल टाइम कहा गया है जो कि सच में नाक्षत्र काल का ही पर्याय है। पता नहीं लोगों का ध्यान इस अन्तविरोध की ओर क्यों नहीं जा सका होगा?

साम्पातिक काल की सूक्ष्म गणना

इन दिनों उपलब्ध सभी पुस्तकों, लग्न सारणियों और पंचांगों में जो साम्पातिक काल दिया जाता है वह केवल सेकेंडपर्यन्त ही होता है। कभी-कभी तो उससें २ से ३ सेकेंड तक की अशुद्धि देखी जाती है। अतः हमने बड़े ही परिश्रम से अपनी जन्मभूमि जनपद नैनीताल और कर्मभूमि रुद्रपुर के रेखांश ७९° ३०' को केन्द्र लेकर १९४१ से २०३६ ई. तक के ९६ वर्षों का साम्पातिक काल सेकेंड के सौवें भाग (दो दशमलव स्थान) तक सूक्ष्म बनाया है। इसकी तीन सारणियां अग्रिमोक्त हैं। प्रथम सारणी में वर्षारम्भ का, द्वितीय में मासारम्भ का और तीसरी सारणी में अभीष्ट दिनांक का साम्पातिक काल दिया गया है। गणना निम्नवत् करेंगे-

वर्षारम्भस्य होरादि प्रथमात्कोष्ठकाद्धरेत्।
द्वितीयादिष्टमासस्य तृतीयाद्धि दिनस्य च॥२॥
त्रयाणामत्र योगः स्यात्कालः साम्पातिको निशः।
ससंस्कार युतं ग्राह्यं तस्मिन् कालं स्व मध्यमम्॥३॥

अर्थ- प्रथम सारणी से अभीष्ट वर्ष के, दूसरी से अभीष्ट मास के और तीसरी सारणी से इष्ट दिन के घंटा-मिनट-सेकेण्ड लेने चाहिए, तीनों का योग ७९° ३०' रेखांश

पाठकों को यह जान लेना चाहिए कि एक अहोरात्रवृत्त या ३६० अंश यात्रा करने

के मध्यम मध्य रात्रि का साम्पातिक काल होता है। इष्ट कालिक बनाने के लिए अपने मध्यमकाल को संस्कारित करके शून्य बजे के समय में जोड़ देना चाहिए। यदि योग २४ घंटे से अधिक हो तो २४ कम कर देवें।

हम बता चुके हैं कि विषुवपात ३५९०.१७ पलों में अपना एक अहोरात्र बनाता है। तात्पर्य यह है कि जितनी देर में साम्पातिक अहोरात्र के ३६०० साम्पातिक पल भुक्त होते हैं उतनी देर में मात्र ३५९०.१७ सावन पल ही भुक्त हो पाते हैं करण कल्पलता में भी **'तदैव लग्नं परिवर्तते हि भूयः पलैः खांकशराग्नि ३५९० तुल्यैः'** कहा गया है। जितनी देर में ३६०० सावन पल (२४ घंटे या १४४० मिनट) बीतते हैं साम्पातिक काल ३६०९.८५६४७४ पल भुक्त हो जाता है। यथा मयोक्तम्-

सो हि साम्पातिकः कालः सावनेनाधिको भवेत्।
कृताश्वाब्ध्यंग पंचाष्ट बिन्दु गोभिः पलैः सदा।।४।।

परन्तु दोनों कालों का यह अनुपात भी कुछ स्थूल है। हम दोनों कालों के मध्य अद्यतन संशोधित सूक्ष्मतम अनुपात प्रस्तुत कर रहे हैं। यथा-

∵ १ मध्यम सौर दिन = १.००२७३७९०९३५०७९५ मध्यम साम्पातिक दिन।

अर्थात् किसी एक 'सावन इकाई' (सोलह टाइम) में उसी का .००२७३७९१वाँ भाग जोड़ दिया जाय या सावन इकाई को सीधे १.००२७३७९१ से गुणा कर दिया जाय तो सावन काल की इकाई 'साम्पातिक इकाई' में बदल जाती है।

इसके ठीक विपरीत यदि किसी साम्पातिक इकाई में उसी का .००२७३७९१वाँ भाग घटा दिया जाय तो साम्पातिक इकाई सावन इकाई (मध्यम काल) में बदल जायेगी। इस विधि का सूत्र अग्रिमोक्त है-

∵ १ मध्यम साम्पातिक दिन = ०.९९७२६९५६६३२९०८४ मध्यम सावन दिन

अर्थात यदि किसी साम्पातिक इकाई को ०.९९७२६९५६६३२९०८४ से गुणा कर दिया जाय तो वह मध्यम काल में बदल जाता है। हमने इतने लम्बे गुणा से बचने के लिए सेकेण्ड के चार दशमलव स्थान (दस हजारवें भाग) तक की सूक्ष्म सारणियाँ बनाई हैं। पाठक उनका प्रयोग कर सकते हैं:-

सारणीस्थ साम्पातिक काल को अन्यत्र के लिए बतलना

नैनीताल निशीथस्य कालः स्व स्थानिको भवेत्।
निघ्ना देशान्तरांशाश्चेद् रूपाश्वेषुरसाणु.६५७१ भिः।।५।।
फलं सेकण्ड मानेन साख्याप्ते फले न्यसेत्।
च्युताढ्यं प्राङ् परे देशे कालः साम्पातिको निशः।।६।।

अर्थ- सारणी से प्राप्त नैनीताल की मध्यम मध्यरात्रि का सा. काल अपने स्थान के लिए बदलना हो तो इष्ट स्थान के रेखांश और ७९°३०' का जो देशान्तरांश हो उसे .६५७१ से गुणा करने पर जो फल मिले उसे सेकेण्ड मानते हुए पूर्व में घटाने और पश्चिम में जोड़ने से इष्ट स्थान की मध्य रात्रि का साम्पातिक काल हो जाता है।

पाठकों को यह जान लेना चाहिए कि एक अहोरात्रवृत्त या ३६० अंश यात्रा करने में साम्पातिक काल ०.००२७३७९१ दिन या लगभग २३६.५५५३६७९२६ सेकेण्ड बढ़ जाता है। अब अनुपात करें तो हमें लिखना होगा कि- 'यदि ३६० अंश में २३६.५५५३६७९२६ सेकेण्ड का अन्तर होता है तो १ अंश में कितना अन्तर होगा?

अतः समानुपात से ३६०:१::२३६.५५५३६८: क्या अथवा २३६.५५५३६८ ÷ ३६० = .६५७०९८२४४२ सेकेण्ड यह १ देशान्तर का फल आया। इसे हमने चार अंक तक 'रूपाश्वेषुरसाणवः' या.६५७१ कहा है। ७९° ३०' रेखांश से अधिक हेतु ऋण और कम हेतु धन किया जाता है।

उदाहरण- १० अक्टूबर १९९३ ई. को दिल्ली में घं. १७-५० बजे का साम्पातिक काल और लग्न-दशम शुद्ध-सूक्ष्म मान क्या होगा?

∵ सारणी १ से १९९३ का सा. काल - घं. ६।४१।४४.५१०
∵ सराणी २ से अक्टूबर मास का फल - घं. १७।५६।१९.६२०
∵ सारणी ३ से १० तारीख का मान - (+) घं. ००।३५।२८.९९८
∴ तीनों का योग (नैनीताल शून्य बजे का सा. काल) घं. २५।१३।३३.१२८

घण्टों की संख्या २४ से अधिक है अतः सही मान- घं. १।१३।३३.१२८ होगा।

चूंकि दिल्ली का रेखांश ७७.२ और सारणी का ७९.५ है। दोनों का अन्तर २.३ या २°१८' हुआ, २.३×.६५७१ = १.५११ (तीन अंक तक) दिल्ली का साम्पातिक संस्कार आया। दिल्ली का रेखांश सारणी से कम है अतः ३३.१२८ में १.५११ जोड़ने से १०।१०।१९९३ को दिल्ली में शून्य बजे का सा. काल घं. १।१३।३४.६३९ हो गया।

१९९३ के भा. खगोल पंचांग पृष्ठ १५ में ग्रीनविच शून्य बजे का सा. काल घं. १।१४।२५.३६५ मुद्रित है। ७७.२×.६५७१ =५०.७२८ यह ग्रीनविच से दिल्ली का संस्कार ऋणात्मक हुआ। अतः ग्रीनविच के काल में ५०.७२८ सेकेण्ड घटाने से दिल्ली का शून्य बजे का साम्पातिक काल घं. १।१३।३४.६३७ होगा। देखिए कि हमारी सारणी से सेकेण्ड के दो स्थान तक शुद्ध ३४.६४ एकदम मिल गया।

दिल्ली का स्टै. अन्तर २१ मि. १२ से घटाने पर घं. १७।५०।०० बजे का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.)घं. १७।२८।४८ होगा। इसे १.००२७३७९ से गुणने पर इसका सा. मान घं. १७।३१।४०.२९१२ (चार स्थान तक) होगा। आइए! इसे सारणी ४ से मिलाते हैं :-

∵ १७ घंटे का साम्पातिक मान - घं. १७।०२।४७.५६०१
∵ २८ मिनट का साम्पातिक मान - घं. ००।२८।०४.५९९७
∵ ४८ सेकेण्ड साम्पातिक मान - (+) घं. ००।००।४८.१३१४
∴ घं. १७।२८।४८ का साम्पातिक काल - घं. १७।३१।४०.२९१२ पूर्ववत् आ गया।

अब इसे शून्य बजे के सा. काल घं. १।१३।३४.६४ में जोड़ेंगे तो हमारा इष्ट साम्पातिक

काल घं. १८।४५।१४.९३ हो गया, स्वल्पान्तर से इसे १८।४५।१५ भी माना जा सकता है। यदि इस इष्ट सा. काल को १५ से गुणा कर दें तो २८१° १८.' ४५'' यह १० अक्टूबर १९९३ को घं. १७।५० बजे का 'खमध्य विषुवांश' माना जायेगा। इसका अर्थ यह भी है कि अभीष्ट समय पर दिल्ली के ऊर्ध्व याम्योत्तर से वसंतविषुवपात γ २८१° १८'.७५वाँ अंशादि पश्चिम को नत है अथवा दिल्ली के ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त पर विषुव वृत्त २८१.३१२वाँ बिन्दु संलग्न है। लग्न-दशम साधनार्थ यही खमध्य विषुवांश एक उपकरण के रूप से प्रयुक्त होता है। इस बारे में हमारा कथन द्रष्टव्य है यथा-

इष्ट: साम्पातिक: कालस्थितिभिर्गुणितो हि स:।
खमध्यविषुवांश: स्यादुपकरणं दशमाद्ययो:।।७।।

अर्थ पहले ही स्पष्ट है परन्तु त्रिकोणमिति से सूक्ष्मतम लग्न-दशम साधनार्थ तीन उपकरणों का होना आवश्यक होता है यथा-

खमध्य विषुवांशाश्च खगोलाक्ष: परोपम:।
एभिस्त्रिभिर्भवेत्सिद्धि: सूक्ष्मयोर्दशमाद्ययो:।।८।।

अर्थ- इष्टकालिक खमध्य विषुवांश (वि), वेधोपयोगी खगोलीय अक्षांश (अ) और इष्ट दिन की स्फुट परमक्रान्ति (प) मात्र इन तीन उपकरणों के द्वारा ही सूक्ष्मतम लग्न-दशम लग्न को सिद्ध किया जा सकता है।

सूर्य सिद्धान्तादि किसी भी ग्रन्थ से लग्न-दशम की सिद्धि करनी हो तो हमें इष्ट स्थान की सूक्ष्म पलभा, तीनों चरखण्ड, सूक्ष्म सूर्योदयास्त, नतोन्नत काल और विपलपर्यन्त शुद्ध इष्टकाल की अत्यन्त आवश्यकता होती है। परन्तु जिन पुस्तकों या पंचांगों की लग्न सारणियों के साथ दी जाने वाली पलभा ही शुद्ध न होती हो तो फिर लग्न-दशम का क्या होगा? या फिर जो लग्न सारिणियां आज भी ग्रहलाघव के २७८, २९९ और ३२३ लंकोदय-पलों के द्वारा बन रही हों तो उनसे बने लग्न-दशम कैसे शुद्ध हो सकते हैं? कदापि नहीं।

प्रस्तुत सारणियों से परिगणित सा. काल भी मध्यम होता है। उसको स्पष्ट करने के लिए धूनन संस्कार की आवश्यकता होती है। किन्तु सूर्योदयास्त या मध्य लग्न की परीक्षा करने हेतु ही स्पष्ट साम्पातिक काल ग्राह्य है। अन्य समय के लिए मध्यम साम्पातिक काल नि:सन्देह प्रयोज्य होता है।

एक अन्य तथ्य भी स्मरणीय है कि पंचांगों में दिये जाने वाले ग्रह भोग और अक्षांश भौगोलिक होते हैं। अर्थात् इनकी गणना पृथ्वी को गेंद की भाँति गोल मानकर उसके केन्द्रागत दृष्टिसूत्र से की जाती है। परन्तु पृथ्वी गेंद की भाँति गोल नहीं हैं। अद्यतन हुई सूक्ष्मतम खोजों के अनुसार पृथ्वी की ध्रुवीय त्रिज्या ६३५६.७५५ कि.मी. और विषुवतीय त्रिया ६३७८.१४ किमी. निश्चित है। अत: सूक्ष्म गणित हेतु भौगोलिक अक्षांश को भूकेन्द्रीय खगोलीय रूप में परिणित करना आवश्यक होता है। इसकी सोपपत्तिक व्याख्या तो भविष्य में करेंगे, परन्तु यहाँ पर एक सूत्र दे रहे हैं ताकि सुधी पाठक भौगोलिक अक्षांश को भूकेन्द्रीय बना सकें। इसके लिए आपको सप्तांकी लघुगणक सारणी या एक साइन्टीफिक कैलकुलेटर की आवश्यकता होगी।

∵ स्पर्शज्या भूकेन्द्रीय अक्षांश = स्पर्शज्या भौगोलिक अक्षांश × .९९३३०५५२५

अर्थात् अपने भौगोलिक अक्षांश की स्पर्शज्या को .९९३३०५५२५ से गुणा कर दें तो गुणनफल भूकेन्द्रीय अक्षांश की स्पर्शज्या होगी। इसका चाप ही अभीष्ट भूकेन्द्रीय अक्षांश होता हैं। इसी का नाम खमध्य क्रान्ति भी है। गत वर्ष के विश्वविजय पंचांग पृष्ठ १३४ में दिल्ली का भौगोलिक अक्षांश २८°।३८' मुद्रित है। आइए! इसे भूकेन्द्रीय बनाते हैं।

∵ स्पज्या २८° ३८' = .५४५९७२६५६ × .९९३३०५५२५ = .५४२३१७६५५ यह भूकेन्द्रीय अक्षांश की स्पर्शज्या है। इसका चाप २८°।२८'।१८''.३३ ही २८°।३८' व भूकेन्द्रीय रूप होगा। लग्नोदय, सूर्योदयास्त और चन्द्रोदयास्तादि में इसी का अनिवार्यत: प्रयोग होता है। हम १० अक्टूबर १९९३ को दिल्ली में लग्न-दशम लाने हेतु दो उपकरण (१) घं. १७।५० बजे का खमध्य विषुवांश वि और (२) भूकेन्द्रीय अक्षांश अ ज्ञात कर चुके हैं। तीसरा उपकरण इष्ट दिन की स्पष्ट परमक्रान्ति प २३° २६' २१'' है। आइए! अब लग्न-दशम लग्न को सिद्ध करते हैं।

खमध्य विषुवांशानां स्पज्या कोटिज्ययाघ्निता:
परापमस्य तल्लब्धि: प्रथमं हि फलं भवेत्।।९।।
गर्भाक्ष स्पर्शजा निघ्ना परमाक्रान्ति ज्यया फलम्।
विषुवांश कोज्यया भक्तं सौम्ये हि प्रथमान्वितम्।।१०।।
यम्योनं वितरिभस्पज्या चापे त्रिभान्वितस्तनु:।

अर्थ- इष्ट खमध्य विषुवांश की स्पर्शज्या को परमक्रान्ति की कोटिज्या से गुणा करने से फल प्राप्त होता है। अब भूकेन्द्रीय अक्षांश की स्पर्शज्या को परमक्रान्ति ज्या से गुणा करके गुणनफल में विषुवांश-कोज्या से भाग दें। भागफल का उत्तर गोल में प्रथम फल के साथ बैजिक योग और दक्षिणी गोलार्ध में बैजिकान्तर करने से त्रिभोन लग्न की स्पज्या आती है। इसके चाप में तीन राशि या ९०° अंश जोड़ने से पूर्वी क्षितिज का लग्न स्पष्ट होता है।

भाजिता विषुवस्पज्या परमाक्रान्ति कोज्यया।।११।।
सा स्पर्शज्या भवेत्तस्या चापो लग्नं तदूर्ध्व खे।
भावारम्भाविमौ बिन्दू भवेतां दशमाद्ययो:।।१२।।

अर्थ- इष्ट खमध्य विषुवांश की स्पर्शज्या में परमक्रान्ति की कोटिज्या से भाग देने पर 'दशम लग्न' की स्पर्शज्या आती है जिसका चाप ही अभीष्ट खमध्य लग्न होता है। पूर्वीय क्षितिज से लंग्न और ऊर्ध्व याम्योत्तर बिन्दु से संलग्न क्रान्ति वृत्ति ये दोनों बिन्दु क्रमश: प्रथम भाव तथा दशमभाव के आरम्भ बिन्दु होते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए हम उक्त श्लोकों का अर्थ सूत्र रूप में दे रहे हैं।

∵ स्पज्या वित्रिभ = स्प वि × कोज्या प ± (ज्या प × स्प अ) ÷ कोज्या वि

∴ वित्रिभ + ९०° = अभीष्ट लग्न भोग (पूर्वीय क्षितिज में क्रान्तिवृत्तांश) इस दिन (१०-१०-१९९३) का दिल्ली का सेकेण्ड पर्यन्त सूक्ष्म सूर्योदय घं.

∴ वित्रिभ + ९०° = अभीष्ट लग्न भोग (पूर्वाय क्षिति में क्रान्तिवृत्तांश)

∵ स्पज्या दशम = स्प वि ÷ कोज्या प (ऊर्ध्व याम्योत्तर में क्रान्ति वृत्तांश)।

लग्न साधन

गणितीय विवृत्ति	प्राकृत संख्याओं से	लाघवांक से
∵ स्प वि २८१° १८' ४५"	४.९९८८३५१५५ (−)	ला. १०.६९८८६८८१५ (−)
∵ कोज्या प २३° २६' २१"	(×) ०.९१७४८२९२६ (+)	(+) ९.९६२५९७९९१ (+)
∴ स्प वि कोज्या प (प्रथम फल)	= ४.५८६३४५९०४ (-)	= १०.६६१४६६८०६ (−)
∵ ज्या प २३° २६'२१"	.३९७७५१६३ (+)	ला. ९.५९९६३७६६३ (+)
∵ स्प अक्षांश २८° २८' १८".३३	(×) .५४२३१७६५५ (+)	+ ९.७३४२५३७४३ (+)
∴ ज्या प स्प अ	= .२१५७२०४९४ (+)	ला ९.३३३८९१४०६ (+)
∵ कोज्या वि २८१° १८' ४५"	(÷) .१९६१६००७७ (+)	(−) ९.२९२६१०६२२ (+)
∴ (ज्या प स्प अ) ÷ कोज्या वि	= १.०९९७१६६०८ (+)	ला १०.०४१२८०७८४ (+)

अब प्रथम फल की संख्या ४.५८६३४५९०४ (-) और द्वितीय फल १.०९९७१६६०८ का उत्तरी गोलार्ध होने से बैजिक योग किया तो वह ३.४८६६२९२९६ (-) मिला। 'धनर्णयोरन्तरमेव योग:'। यह त्रिभोन (वित्रिभ) लग्न की स्पर्शज्या है। इसका चतुर्थपदीय चाप ७३° ५९' ४७.६९३३ (-) मिला। इसे भचक्र भोग ३६०° में बैजिक रीत्या जोड़ने पर २८६° ००' १२".३०६७ यह त्रिभोन लग्न आ गया। इसमें ९० अंश जोड़ने पर ३७६° या ०।१६°।००'१२".३०६७ दिल्ली के पूर्वी क्षितिज में क्रान्ति वृत्त का संलग्न बिन्दु या सूक्ष्म लग्न स्पष्ट मेष के १६वें अंश में सिद्ध हुआ यही प्रथम भाव का आदि बिन्दु भी सिद्ध होता है। इसे सायन लग्न के नाम से 'अशुद्ध' कहना शास्त्र-हत्या के तुल्य होगा।

दशम लग्न साधन

∵ स्पर्शज्या 'द' = स्प वि २८१° १८' ४५" ÷ कोज्या प २३° २६' २१"

∵ स्प वि २८१° १८' ४५" = ४.९९८८३५१५६ (-)	ला. १०.६९८८६८८१५ (-)
∵ कोज्या प २३° २६' २१" (÷) ०.९१७४८२९२६ (+)	(-) ला. ९.९६२५९७९९१ (+)
∴ स्पर्शज्या दशम लग्न = ५.४४८४२३०८६ (-)	१०.७३६२७०८२४ (-)

इस प्रकार दशम लग्न की स्पर्शज्या ५.४४८४२३०८६ का चतुर्थ पदीय चांपांश ७९° ३५'५९" (-) आया। इसका भचक्र ३६०° अंश बैजिक योग करने पर २८०° २४' ०१" यह सूक्ष्म दशम लग्न हुआ। इसे राश्यादि ९।१०°।२४'।०१" (मकर) भी लिखा जा सकता है।

हम समझते हैं कि लग्न-दशम का इतना सूक्ष्म गणित श्री विश्वविजय पंचांग के अलावा अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। श्री गणपति देव शास्त्री जी की 'सार्वदेशीय कुण्डली निर्माण पद्धति' या श्री जगजीवनदास गुप्त का ज्योतिष रहस्य पुस्तकें किसी के पास हों तो अलग बात है।

इस दिन (१०-१०-१९९३) का दिल्ली का सेकेण्ड पर्यन्त सूक्ष्म सूर्योदय घं. ६।२२।४० बजे और मध्याह्न काल घं. १२।०८।१५ बजे है। औदायिक सूर्य स्पष्ट १९६° ४४' १५" और मध्याह्न का सूर्य स्पष्ट १९६° ५८' २९".४ है। पाठकों से आग्रह है कि औदायिक खमध्य विषुवांश १०९° ००' ४५" और मध्याह्न का ख.वि. १९५° ३८' ४२" के गणित से लग्न-दशम को दोनों सूर्य भोगांशों से तुलना करके यह निर्णय करने का साहस करें कि कौन सा गणित सही है।

हो सकता है कि भारतीय पंचांगों से मध्याह्न कालिक दशम और सूर्य १९६° ५८' २९.४" के बजाय १७३° १२' ०२" आ जाय तो इसका उत्तरदायी हमें न समझियेगा। आप चाहें तो दोनों ही सूर्य स्पष्ट से दिनमान की परीक्षा करके सत्यासत्य की पुष्टि कर सकते हैं।

> निघ्ने परापमार्क ज्ये द्द्वगैंकोनित: पदम्।
> तेनाप्ताऽर्क पराक्रान्त्योर्भुजज्येऽक्ष-प्रभा-हति:।।
> व्यस्ता को ज्यास्तु तच्चापं त्र्याप्तं दिनस्य नाडिका:।
> दिनार्धोवाऽपिसूर्यास्त: होराद्य: पंचहद् भवेत्।।

अर्थ- को सूत्र रूप में दे रहे हैं। यहाँ पर द = दिनमान तथा स = सूर्य भोग समझना चाहिए।

$$\therefore \pm \text{कोज्या द} = \frac{\text{ज्या स ज्या प स्प अ}}{\sqrt{१-(\text{ज्या स ज्या प})^{२}}} = \frac{\text{ज्या १९६° ५८' २९" ज्या २३° २६' २१" स्प २८° २८' १८".३३}}{\sqrt{१-(.२९१९५ \times .३९७७७५}}$$

$$= \frac{.२९१९५ \times .३९७७७५ \times .५४२३१७७}{\sqrt{१-.०१३४८६३}} = \frac{-.०६२९८}{\sqrt{.९८६५१३७४}} = \frac{-.०६२९७९५५}{.९९३२३३९८}$$

का मान .०६३४०८६ (-) आता है। इसे धनात्मक कोज्या मानकर जाप लेने पर ८६° २१' ५२" आयेगा। इसे ३ से भाग देने पर दिनमान २८ घटी ४७.३ पल आया। यह दिनमान सूर्यभोग १९६° ५८'.५ मानने पर ही आता है। दिनमान में ५ से भाग देने पर होरात्मक दिनार्ध या सूर्य घड़ी से सूर्यास्त घं. ५-४६-२८ के निकटतर आयेगा। अत: जो ज्योतिषी दिल्ली में १०-१०-९३ को घं. १२-०८-१५ बजे जन्मे जातक का सूर्य भोग १९६° ५८' २९" नहीं मानते उन्हें नक्षत्र सूची कहना सर्वथा उचित रहेगा। ॐ शांति।

सम्पर्क- बी-८९६, आवास विकास,
रुद्रपुर-२६३१५३ (उत्तराखण्ड), फोन- ९४१२९५९५१५

सारणी-१ वर्षारम्भ का मध्यम साम्पातिक काल (प्रत्येक वर्ष १ जनवरी शून्य बजे) / सारणी-३ दैनिक गति

ई. सन्	घं.	मि.	सेकेण्ड	ई. सन्	घं.	मि.	सेकेण्ड	ई. सन्	घं.	मि.	सेकेण्ड	ता.	घं.	मि.	सेकेण्ड
१९४१	६	४०	०८-४०	१९७३	६	४१	०७-५०	२००५	६	४२	०६-६९	१	०	००	००.०००
१९४२		३९	११-१२	१९७४		४०	१०-२१	२००६		४१	०९-४०	२	०	०३	५६.५५५
१९४३		३८	१३-८३	१९७५		३९	१२-९२	२००७		४०	१२-११	३	०	०७	५३.१११
x १९४४	६	३७	१६-५४	१९७६	६	३८	१५-६३	२००८	६	३९	१४-८२	४	०	११	४९.६६६
१९४५		४०	१५-८०	१९७७		४१	१४-८९	२००९		४२	१४-०९	५	०	१५	४६.२२२
१९४६		३९	१८-५१	१९७८		४०	१७-६०	२०१०		४१	१६-७९	६	०	१९	४२.७७७
१९४७		३८	२१-२२	१९७९		३९	२०-३०	२०११		४०	१९-५०	७	०	२३	३९.३३२
x १९४८	६	३७	२३-९३	१९८०	६	३८	२३-०१	२०१२	६	३९	२२-२१	८	०	२७	३५.८८८
१९४९		४०	२३-१९	१९८१		४१	२२-२८	२०१३		४२	२१-४८	९	०	३१	३२.४४३
१९५०		३९	२५-९०	१९८२		४०	२४-९८	२०१४		४१	२४-१९	१०	०	३५	२८.९९८
१९५१		३८	२८-६०	१९८३		३९	२७-६९	२०१५		४०	२६-९०	११	०	३९	२५.५५४
x १९५२	६	३७	३१-३१	१९८४	६	३८	३०-४०	२०१६	६	३९	२९-६०	१२	०	४३	२२.१०९
१९५३		४०	३०-५७	१९८५		४१	२९-६७	२०१७		४२	२८-८७	१३	०	४७	१८.६६४
१९५४		३९	३३-२८	१९८६		४०	३२-४४	२०१८		४१	३१-५८	१४	०	५१	१५.२२०
१९५५		३८	३५-९८	१९८७		३९	३५-१५	२०१९		४०	३४-२९	१५	०	५५	११.७७५
x १९५६	६	३७	३८-६९	१९८८	६	३८	३७-८६	२०२०	६	३९	३७-००	१६	०	५९	०८.३३१
१९५७		४०	३७-९६	१९८९		४१	३७-१२	२०२१		४२	३६-२७	१७	१	०३	०४.८८६
१९५८		३९	४०-६६	१९९०		४०	३९-८३	२०२२		४१	३८-९८	१८	१	०७	०१.४४१
१९५९		३८	४३-३७	१९९१		३९	४२-५४	२०२३		४०	४१-६९	१९	१	१०	५७.९९७
x १९६०	६	३७	४६-०८	१९९२	६	३८	४५-२५	२०२४	६	३९	४४-३९	२०	१	१४	५४.५५२
१९६१		४०	४५-३४	१९९३		४१	४४-५१	२०२५		४२	४३-६६	२१	१	१८	५१.१०७
१९६२		३९	४८-०५	१९९४		४०	४७-२२	२०२६		४१	४६-३७	२२	१	२२	४७.६६३
१९६३		३८	५०-७६	१९९५		३९	४९-९३	२०२७		४०	४९-०८	२३	१	२६	४४.२१८
x १९६४	६	३७	५३-४६	१९९६	६	३८	५२-६४	२०२८	६	३९	५१-७९	२४	१	३०	४०.७७४
१९६५		४०	५२-७३	१९९७		४१	५१-९०	२०२९		४२	५१-०६	२५	१	३४	३७.३२९
१९६६		३९	५५-४४	१९९८		४०	५४-६१	२०३०		४१	५३-७७	२६	१	३८	३३.८८४
१९६७		३८	५८-१४	१९९९		३९	५७-३२	२०३१		४०	५६-४८	२७	१	४२	३०.४४०
x १९६८	६	३८	००-८५	२०००	६	३९	००-०३	२०३२	६	३९	५९-१८	२८	१	४६	२६.९९५
१९६९		४१	००-११	२००१		४१	५९-३०	२०३३		४२	५८-४५	२९	१	५०	२३.५५०
१९७०		४०	०२-८२	२००२		४१	०२-०१	२०३४		४२	०१-१६	३०	१	५४	२०.१०६
१९७१		३९	०५-५३	२००३		४०	०४-७२	२०३५		४१	०३-८७	३१	१	५८	१६.६६१
x १९७२	६	३८	०८-२४	२००४	६	३९	०७-४२	२०३६	६	४०	०६-५८	३२	२	०२	१३.२१६

सारणी-२ (प्रत्येक मासारम्भ को शून्य बजे का साम्पातिक काल)

जनवरी	००	००	००-००	फरवरी	०२	०२	१३-२२	मार्च	०३	५२	३६-७७	अप्रै	०५	५४	४९.९८
मई	०७	५३	०६-६४	जून	०९	५५	१९-८६	जुलाई	११	५३	३६-५२	अग	१३	५५	४९.७४
सितम्बर	१५	५८	०२-९५	अक्टूबर	१७	५६	१९-६२	नवम्बर	१९	५८	३२-८३	दिस	२१	५६	४९.४९

मध्यम काल को साम्पातिक बनाने की सारिणी (क)

(मध्यम काल × १.००२७३७९०९३५ = साम्पातिक काल)

मध्य घंटा	साम्पातिक काल घं.	मि.	से.	मध्य मि/से	मि.	साम्पातिक से.	काल से.	मध्य मि/से	मि.	साम्पातिक से.	काल से.
०१	१	०	९.८५६५	१	१	०.१६४३	१.००२७	३१	३१	५.०९२५	३१.०८४९
०२	२	०	१९.७१३०	२	२	०.३२८५	२.००५५	३२	३२	५.२५६८	३२.०८७६
०३	३	०	२९.५६९४	३	३	०.४९२८	३.००८२	३३	३३	५.४२११	३३.०९०४
०४	४	०	३९.४२५९	४	४	०.६५७१	४.०११०	३४	३४	५.५८५३	३४.०९३१
०५	५	०	४९.२८२४	५	५	०८२१४	५.०१३७	३५	३५	५.७४९६	३५.०९५८
०६	६	०	५९.१३८९	६	६	०.९८५६	६.०१६४	३६	३६	५.९१३९	३६.०९८६
०७	७	१	०८.९९५३	७	७	१.१४९९	७.०१९२	३७	३७	६.०७८२	३७.१०१३
०८	८	१	१८.८५१८	८	८	१.३१४२	८.०२१९	३८	३८	६.२४२४	३८.१०४०
०९	९	१	२८.७०८३	९	९	१.४७८५	९.०२४६	३९	३९	६.४०६७	३९.१०६८
१०	१०	१	३८.५६४८	१०	१०	१.६४२७	१०.०२७४	४०	४०	६.५७१०	४०.१०९५
११	११	१	४८.४२१२	११	११	१.८०७०	११.०३०१	४१	४१	६.७३५३	४१.११२३
१२	१२	१	५८.२७७७	१२	१२	१.९७१३	१२.०३२९	४२	४२	६.८९९५	४२.११५०
१३	१३	२	०८.१३४२	१३	१३	२.१३५६	१३.०३५६	४३	४३	७.०६३८	४३.११७७
१४	१४	२	१७.९९०७	१४	१४	२.२९९८	१४.०३८३	४४	४४	७.२२८१	४४.१२०५
१५	१५	२	२७.८४७१	१५	१५	२.४६४१	१५.०४११	४५	४५	७.३९२४	४५.१२३२
१६	१६	२	३७.७०३६	१६	१६	२.६२८४	१६.०४३८	४६	४६	७.५५६६	४६.१२५९
१७	१७	२	४७.५६०१	१७	१७	२.७९२७	१७.०४६५	४७	४७	७.७२०९	४७.१२८७
१८	१८	२	५७.४१६६	१८	१८	२.९५६९	१८.०४९३	४८	४८	७.८८५२	४८.१३१४
१९	१९	३	०७.२७३०	१९	१९	३.१२१२	१९.०५२०	४९	४९	८.०४९५	४९.१३४२
२०	२०	३	१७.१२९५	२०	२०	३.२८५५	२०.०५४८	५०	५०	८.२१३७	५०.१३६९
२१	२१	३	२६.९८६०	२१	२१	३.४४९८	२१.०५७५	५१	५१	८.३७८०	५१.१३९६
२२	२२	३	३६.८४२५	२२	२२	३.६१४०	२२.०६०२	५२	५२	८.५४२३	५२.१४२४
२३	२३	३	४६.६९८९	२३	२३	३.७७८३	२३.०६३०	५३	५३	८.७०६६	५३.१४५१
२४	२४	३	५६.५५५४	२४	२४	३.९४२६	२४.०६५७	५४	५४	८.८७०८	५४.१४७८
२५	२५	४	०६.४११९	२५	२५	४.१०६९	२५.०६८४	५५	५५	९.०३५१	५५.१५०६
२६	२६	४	१६.२६८४	२६	२६	४.२७११	२६.०७१२	५६	५६	९.१९९४	५६.१५३३
२७	२७	४	२६.१२४९	२७	२७	४.४३५४	२७.०७३९	५७	५७	९.३६३७	५७.१५६१
२८	२८	४	३५.९८१३	२८	२८	४.५९९७	२८.०७६७	५८	५८	९.५२७९	५८.१५८८
२९	२९	४	४५.८३७८	२९	२९	४.७६४०	२९.०७९४	५९	५९	९.६९२२	५९.१६१५
३०	३०	४	५५.६९४३	३०	३०	४.९२८२	३०.०८२१	६०	६०	९.८५६५	६०.१६४३

साम्पातिक काल को मध्यम काल बनाने की सारिणी (ख)

बहुत काम की छोटी बातें जब आप व्रत करें...

साम्पातिक काल को मध्यम काल बनाने की सारिणी (ख)

(साम्पातिक काल × .९९७२६९५६६३३ = मध्यम काल)

सा.	मध्यम काल			सा.	मध्यम काल			सा.	मध्यम काल		
घंटा	घं.	मि.	से.	मि/से	मि.	से.	से.	मि/से	मि.	से.	से.
०१	०	५९	५०.१७०४	१	०	५९.८३६२	०.९९७३	३१	३०	५४.९२१४	३०.९१५४
०२	१	५९	४०.३४०९	२	१	५९.६७२३	१.९९४५	३२	३१	५४.७५७६	३१.९१२६
०३	२	५९	३०.५११३	३	२	५९.५०८५	२.९९१८	३३	३२	५४.५९३७	३२.९०९९
०४	३	५९	२०.६८१८	४	३	५९.३४४७	३.९८९१	३४	३३	५४.४२९९	३३.९०७२
०५	४	५८	१०.८५२२	५	४	५९.१८०९	४.९८६३	३५	३४	५४.२६६१	३४.९०४५
०६	५	५८	०१.०२२६	६	५	५९.०१७०	५.९८३६	३६	३५	५४.१०२३	३५.९०१७
०७	६	५८	५१.१९३१	७	६	५८.८५३२	६.९८०९	३७	३६	५३.९३८४	३६.८९९०
०८	७	५८	४१.३६३५	८	७	५८.६८९४	७.९७८२	३८	३७	५३.७७४६	३७.८९६२
०९	८	५८	३१.५३३९	९	८	५८.५२५६	८.९७५४	३९	३८	५३.६१०८	३८.८९३५
१०	९	५८	२१.७०४४	१०	९	५८.३६१७	९.९७२७	४०	३९	५३.४४७०	३९.८९०८
११	१०	५८	११.८७४८	११	१०	५८.१९७९	१०.९७००	४१	४०	५३.२८३१	४०.८८८१
१२	११	५७	०२.०४५३	१२	११	५८.०३४१	११.९६७२	४२	४१	५३.११९३	४१.८८५३
१३	१२	५७	५२.२१५७	१३	१२	५७.८७०३	१२.९६४५	४३	४२	५२.९५५५	४२.८८२६
१४	१३	५७	४२.३८६१	१४	१३	५७.७०६४	१३.९६१८	४४	४३	५२.७९१७	४३.८७९९
१५	१४	५७	३२.५५६६	१५	१४	५७.५४२६	१४.९५९०	४५	४४	५२.६२७८	४४.८७७१
१६	१५	५७	२२.७२७०	१६	१५	५७.३७८८	१५.९५६३	४६	४५	५२.४६४०	४५.८७४४
१७	१६	५७	१२.८९७५	१७	१६	५७.२१५०	१६.९५३६	४७	४६	५२.३००२	४६.८७१७
१८	१७	५६	०३.०६७९	१८	१७	५७.०५११	१७.९५०९	४८	४७	५२.१३६४	४७.८६८९
१९	१८	५६	५३.२३८३	१९	१८	५६.८८७३	१८.९४८१	४९	४८	५१.९७२५	४८.८६६२
२०	१९	५६	४३.४०८८	२०	१९	५६.७२३५	१९.९४५४	५०	४९	५१.८०८७	४९.८६३५
२१	२०	५६	३३.५७९२	२१	२०	५६.५५९७	२०.९४२७	५१	५०	५१.६४४९	५०.८६०७
२२	२१	५६	२३.७४९७	२२	२१	५६.३९५८	२१.९३९९	५२	५१	५१.४८१०	५१.८५८०
२३	२२	५६	१३.९२०१	२३	२२	५६.२३२०	२२.९३७२	५३	५२	५१.३१७२	५२.८५५३
२४	२३	५५	०४.०९०५	२४	२३	५६.०६८२	२३.९३४५	५४	५३	५१.१५३४	५३.८५२६
२५	२४	५५	५४.२६१०	२५	२४	५५.९०४३	२४.९३१७	५५	५४	५०.९८९६	५४.८४९८
२६	२५	५५	४४.४३१४	२६	२५	५५.७४०५	२५.९२९०	५६	५५	५०.८२५७	५५.८४७१
२७	२६	५५	३४.६०१८	२७	२६	५५.५७६७	२६.९२६३	५७	५६	५०.६६१९	५६.८४४४
२८	२७	५५	२४.७७२३	२८	२७	५५.४१२९	२७.९२३५	५८	५७	५०.४९८१	५७.८४१६
२९	२८	५५	१४.९४२७	२९	२८	५५.२४९०	२८.९२०८	५९	५८	५०.३३४३	५८.८३८९
३०	२९	५५	०५.११३२	३०	२९	५५.०८५२	२९.९१८१	६०	५९	५०.१७०४	५९.८३६२

सारिणी १ से वर्षारम्भ २ से मासारम्भ और ३ से दैनिक गति का योग करके अभीष्ट साम्पातिक काल ला सकते हैं। X चिह्नित पंक्ति वाले वर्षों (Leap Years) में २८ फरवरी के बाद एक दिन आगे की गति लेनी होगी। इसके बाद सारणी (क) से मध्यम काल को साम्पातिक काल में बदल लें तो अभीष्ट समय का साम्पातिक काल बन जायेगा।

बहुत काम की छोटी बातें जब आप व्रत करें...

- पं. श्रीकृष्ण शर्मा, भगवत् कृपा ज्योतिष शोध संस्थान, ३८, जे.पी. कालोनी, टोंक फाटक, जयपुर (राजस्थान) फोन- ०१४१-२५९११६३, ५१४५९८७, मो. ९४६०११०११०

ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की शान्ति के लिये अनेक उपाय बताये जाते हैं। यथा- रत्नों से, मन्त्रों से, यन्त्रों से, टोटकों से, दान पुण्य से या अन्य उपायों से, ग्रहों को शान्त करने के अनेक विधान ज्योतिष महर्षियों ने सुझाये हैं। इन सबमें सबसे सरल एवं सहज उपाय व्रत है जिसमें कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता। भारत में सनातन धर्मी ९० प्रतिशत महिलाएं व्रत रखती हैं, लेकिन उन्हें व्रत विधान की जानकारी नहीं होती फलस्वरूप गलत समय पर शुरू और समाप्त किया गया व्रत निष्फल हो जाता है। व्रत की शास्त्रगत जानकारी होना उतना ही आवश्यक है जितना व्रत को रखना। व्रतों से न केवल प्रतिकूल ग्रहों को अनुकूल किया जा सकता है वरन् उससे आत्म विश्वास और आध्यात्मिक शक्ति की वृद्धि भी होती है। विचारों में संकल्प शक्ति बढ़ती है। व्रत वैज्ञानिक दृष्टि से भी इसलिए लाभकारी है कि इससे पेट की बीमारियां नहीं होती। शरीर के अंगों को स्फूर्ति मिलती है। जिस प्रकार राजकर्मी सात दिन में एक दिन का अवकाश प्राप्त कर अगले दिन उत्साहित मन से काम में लग जाता है, उसी प्रकार शरीर के अंग भी व्रत के पश्चात तेजी से अपना काम उत्साहित होकर करने लगते हैं। ''भविष्य पुराण'' ने तो यहाँ तक घोषणा की है-

''व्रतोपवासनियमैर्नानादानैस्तथा नृप। देवादयो भवन्तयेय तेषां प्रीता न संशय।।

अर्थात- व्रताचारण उपवास नियमों के परिपालन तथा विविध दानों से व्रतियों पर सभी देवता, ऋषि-मुनि तथा संसार के प्राणी निश्चित रूप से प्रसन्न हो जाते हैं इसमें संशय नहीं।

''व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। (यजु १९/१३)

अर्थात- व्रत धारण करने से मनुष्य दीक्षित होता है। दीक्षा से उसे दक्षिण्य (दक्षता-निपुणता) प्राप्त होती है। दक्षता की प्राप्ति से श्रद्धा का भाव जाग्रत होता है और श्रद्धा से ही सत्य स्वरूप ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

व्रतों का विधान शास्त्रों में वर्णित है। जिस प्रकार संविधान का उल्लंघन होने पर सजा का प्रावधान है उसी प्रकार धर्म शास्त्र में बताये गये विधान का उल्लंघन करने पर जहाँ व्रत अपना प्रतिकूल प्रभाव प्रदर्शित करेंगे, वहीं किये गये व्रत का प्रभाव भी निष्फल हो जायेगा। व्रत आरम्भ करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना नितान्त आवश्यक है-

''अस्तगे च गुरौ शुक्रे बाले वृद्धे मलिम्लुये।
उद्यापनमुपारम्भ् व्रतानां नैव कारयेत।। -हेमादि में गार्ग्य

अर्थात- बृहस्पति और शुक्र का अस्त तथा अस्त होने से पहले के तीन दिन वृद्धत्व में और में उदय होने के बाद तीन दिन बालत्व के समय व्रत आरम्भ करना वर्जित है।

मांगलयमभिषेकं च मलमासे विवर्जयेत।। -हेमाद्रि

हेमाद्रि का यह भी कथन है कि मलमास में न तो व्रत का आरम्भ ही करना चाहिए न ही उद्यापन करना चाहिए।

बृहस्पति ग्रह जब अपनी नीच राशि मकर पर हो अथवा टेढ़े बैठे हो या अस्त हो अथवा

शेष पृष्ठ १६३ पर

मंत्रानुष्ठान एवं दिव्य औषधि प्रयोग

लेखक- *पराक्रम जैमिनि, अध्येता- एम.ए. संस्कृत*

समस्त साधकों व पाठकों तंत्र प्रेमियों के समक्ष यह प्रयोग पुष्पावलि प्रस्तुत कर रहा हूँ इन सभी प्रयोगों को सविधि पूर्व नियमों का पालन करते हुए प्रयोग करने पर व गुरु आज्ञा से प्रयोग करने से यथा लिखित फल प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं सर्वदा कमी हमारी होती है प्रयोगों में नहीं। मंत्र सत्ता हो सर्वस्व उपलब्ध कराने में सर्वदा समर्थ है।

यथा- मंत्र परम लघु जासु वश विधि हरि हर सुस्सर्व *(श्री रा.च.मा.)*

वाद् विवाद विजय प्राप्ति व वशीकरण हेतु प्रयोग

सन्दर्भ- यह प्रयोग भगवान श्री हरि ने भगवान शिव जी से कहा। यह मन्त्र धन व विद्या, विजय, सर्व कामना पूर्ति करने वाला है। यह मन्त्र भगवान श्री गणेश जी को प्रसन्न करने वाला है।

मन्त्र- ॐ गं गणपतये नमः

विधि- प्रथम प्रयोग- इस मन्त्र का एक हजार आठ (१००८) बार जप करने के बाद अपनी शिखा (चोटी) को बांधने वाला व्यक्ति वाद विवाद के व्यवहार में विजय प्राप्त करता है।

द्वितीय प्रयोग- इस मन्त्र का मात्र सौ (१००) बार जप करने मात्र से जापक व्यक्ति सभी लोगों का प्रिय बन जाता है।

तृतीय प्रयोग- काले तिलों को घृत में मिलाकर इस मन्त्र से एक हजार आठ (१००८) आहुतियां देने मात्र से मात्र तीन दिन में राजा वश में हो जाता है।

चतुर्थ प्रयोग- अष्टमी और चतुर्दशी तिथि को व्रत (उपवास) रखकर मनुष्य यदि विधिवत् विघ्नराज भगवान श्री गणेश जी का पूजन करे तथा तिल तथा अक्षत (चावल) को मिलाकर उन्हें एक हजार आठ (१००८) आहुति प्रदान करें तो वह युद्ध में अपराजित होता है। (विजय प्राप्त करता है) सभी लोग उसकी सेवा करते हैं।

पंचम प्रयोग- इस मन्त्र से (१००८) एक हजार आठ बार निम्न लिखित औषधियों को अभिमंत्रित कर तिलक करता है तो तीनों लोकों (त्रिलोक) वश में कर लेता है-

१. भृंगराज २. सहदेवी ३. वचा (वच) ४. श्वेत-अपराजिता इन चारों औषधियों के रस से मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर तिलक करें- *(श्री ग.पु.आ. १८३ अ.)*

भगवान श्रीश्री रामषड्क्षर मन्त्रानुष्ठान पुरश्चरण प्रयोग

मन्त्र- रां रामाय नमः

विनियोग- इस मंत्र के ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्द, श्रीराम देवता, रां बीज और नमः शक्ति है। सम्पूर्ण मनोरथों की प्राप्ति के लिये इसका विनियोग किया जाता है।

न्यास- छः दीर्घ स्वरों से युक्त बीज मंत्र (रां. रीं इत्यादि) द्वारा अथवा मूल मंत्र के छः वर्णों से षडङ्गन्यास करें। फिर पीठान्यास आदि करके हृदय में श्री भगवान श्री रघुनाथ जी का इस प्रकार ध्यान करें-

ध्यान-

कालाभ्भोधर कान्तं च वीरासन समास्थितम्। ज्ञानमुद्रां दक्षहस्ते दधतं जानुनी तरम्।।
सरोरुह करां सीतां विद्युदाभां च पार्श्वगाम्। पश्यन्तीं रामवक्त्राब्जं विविधा कल्प भूषिताम्।।

- (ना. पूर्व ७३)

विधि- इस प्रकार ध्यान करके मन्त्रोपासक छः लाख (षड्लक्ष) जप करें और कमलों द्वारा प्रज्वलित अग्नि में दशांश होम करे। तत्पश्चात् ब्राह्मण भोजन कराये। मूल मंत्र से इष्टदेव की मूर्ति बनाकर उसे वैष्णव पीठ पर स्थापित कर उसमें भगवान का आवाहन और प्रतिष्ठा करके, साधक विमलादि शक्तियों से संयुक्त उनकी पूजा करे। भगवान श्री श्रीराम जी के वाम भाग में बैठी हुई भगवती श्री श्रीसीता देवी जी की उन्हीं के मन्त्र से पूजा करनी चाहिये **(श्रीं सीतायै स्वाहा)** यह श्री जानकी मन्त्र है भगवान श्री श्रीराम जी के वाम भाग में **शं शार्ङ्गाय नमः** से शार्ङ्ग धनुष की तथा दक्षिण भाग में **शं शरेभ्यो नमः** से बाणों की अर्चना करें। केशरों में मूल मन्त्र के छः वर्णों की पूजा करके दलों में श्री हनुमान आदि की अर्चना करें। श्री हनुमान जी, सुग्रीव, भरत, विभीषण, लक्ष्मण, अंगद, शत्रुघ्न तथा जाम्बवान इनका क्रमशः बायें चलते हुए पूजन करना चाहिए। हनुमान जी भगवान के आगे पुस्तक लेकर बांच रहे हैं। श्रीराम के दक्षिण पार्श्व में भरत और वाम पार्श्व में शत्रुघ्न चंवर लेकर खड़े हैं। लक्ष्मण जी पीछे खड़े होकर दोनों हाथों से भगवान के ऊपर छत्र लगाये हुए हैं। इस प्रकार ध्यानपूर्वक उन सबकी पूजा करनी चाहिये। तदन्तर अष्ट दलों के अग्रभाग में धृष्टि, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रपाल, अकोप, धर्मपाल तथा सुमन्त्र की पूजा करके उनके बाह्य भाग में इन्द्रादि देवताओं का आयुधों सहित पूजन करें। इस प्रकार भगवान श्री श्रीराम जी की आराधना करके मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है।

इस प्रकार से विधिवत् (संपूर्ण विधि से) पूजन व जाप छः लाख करके पुरश्चरण पूर्ण करके फिर प्रयोग करें। प्रयोग निम्न लिखित है-

प्रथम प्रयोग - घृताक्त दूर्वाओं की आहुति देने वाला पुरुष दीर्घायु व निरोग होता है।

द्वितीय प्रयोग- लाल कमलों के होम से मनोवांछित धन प्राप्त होता है।

तृतीय प्रयोग- पलास के पुष्पों (फूलों) से हवन (होम) करके मनुष्य मेधावी होता है।

चतुर्थ प्रयोग- जो प्रतिदिन प्रातः काल इस षड्क्षर दिव्य मंत्र राज से अभिमंत्रित जप पीता है वह एक वर्ष में कवि सम्राट हो जाता है।

पंचम प्रयोग- इसी षड्क्षर महामन्त्र से अभिमन्त्रि अन्न का भोजन करें तो बड़े-बड़े रोग शान्त हो जाता हैं।

षष्टम् प्रयोग- रोग के लिए बताई हुई औषधि का उक्त मंत्र द्वारा हवन करने से मनुष्य क्षण भर में रोग मुक्त हो जाता है।

न्यास- छः दीर्घ स्वरों से युक्त बीज मंत्र (रां रीं

सप्तम प्रयोग- प्रतिदिन दूध पीकर नदी के तट पर या गौशाला में एक लाख जाप करें और घृत युक्त खीर से आहुति दें तो मनुष्य विद्या निधि होता है।

अष्टम प्रयोग- जिसका आधिपत्य नष्ट हो गया हो ऐसा मनुष्य यदि शाकाहारी होकर जल के भीतर एक लाख जप करे और बेल के फूलों की दशांश आहुति दे तो उसी समय वह अपनी खोई हुई प्रभुता (आधिपत्य) पुनः प्राप्त कर लेता है।

नवम् प्रयोग- श्री गंगाजी के तट के समीप उपवास पूर्वक रहकर मनुष्य यदि एक लाख जाप करे और त्रिमधु (शर्करा, घी, मधु) युक्त कमलों अथवा बेल के फूलों से दशांश आहुति दे तो राज्य लक्ष्मी प्राप्त कर लेता है।

दशम प्रयोग- मार्गशीर्ष मास में कंदमूल फल के आहार पर रहकर जल में खड़ा हो एक लाख जप करे और प्रज्वलित अग्नि में खीर से दशांश होम करे तो उस मनुष्य को भगवान श्री श्रीरामचन्द्रजी के समान पुत्र एवं पौत्र प्राप्त होता है। *(ना. पूर्व. ७३)*

पञ्चत्रिंशाक्षर मन्त्र प्रयोगानुष्ठान

विनियोग- इसके विश्वामित्र ऋषि, अनुष्टुप छन्दः रामभद्र देवता रां बीज और श्रीं शक्ति है।

मन्त्र के चार पादों के आदि में तीनों बीज लगाकर उन पादों तथा सम्पूर्ण मन्त्रों के द्वारा मन्त्रराज पुरुष पञ्चाङ्गन्यास करके मन्त्र के एक-एक अक्षर का क्रमशः समस्त अङ्गों में न्यास करे। इस मन्त्र का ध्यान व पूजन सब पूर्ववत् करे।

विधि- इस मन्त्र का पुरश्चरण तीन लाख का है इसमें खीर से हवन करने का विधान है। पीत वर्ण वाले भगवान श्री श्रीरामजी का ध्यान करके एकाग्रचित्त हो एक लाख जप करे। फिर कमल के फूलों से दशांश हवन करके मनुष्य धन पाकर अत्यंत धनवान हो जाता है।

मंत्र- **ॐ रां श्रीं रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।**
दशास्यान्तक मां रक्ष देहि मे परमां श्रियम्।। *- (ना. पु.)*

दिव्योषधि सहदेवि प्रयोग

	नाम
संस्कृत	सहदेवि, सहदेवा, दंडोत्पला, गोवन्दनी, विषम् ज्वर नाशिनी, विश्वदेवा
हिन्दी	सहदेवि, सहदेइया, सदोई, सदोड़ी
बंगला	छोटा कुकसिमा
गुजराती	सदोंड़ी, शेदरड़ी, सहदेवी, कालीसदेड़ी
मुम्बई महाराष्ट्र	सादोड़ी, सहदेवी
राजस्थान	सहदेवि
तेलगू	छेरिट्टी कारनिना
मलयालम्	पिरिना, पुषन्कुरुतला
कन्नड़	सहदेवी
अंग्रेजी	एश कलर्ड फली बेन
लेटिन	वर्नोनिया, सिनेरिया
उत्पत्ति	चातुर्मास में सर्वत्र उपलब्ध होती है।

विशेष कर ज्वार, मकाई, ईख के खेतों में बहुतायत से पाई जाती है। हिमालय में ८००० (आठ हजार) फुट की ऊंचाई पर खासिया पहाड़, बंगाल की पड़त जमीन में और रास्तों के किनारे सर्वत्र देखी जाती है।

पहचान- सहदेवी के पौधे १ से ३ फीट तक ऊँचे काण्ड कोमल रोमावलियुक्त शाके बहुत थोड़ी होती है। इसके पत्ते एकान्तर बड़े-बड़े रोयदार होते हैं एवं दूर-दूर लगते हैं पत्ते छोटे आधे से डेढ़ इंच लम्बे पत्र दण्ड छोटा।

पुष्प- इसके पुष्प २० से २५ एक साथ बैंगनी रंग (वर्ण) के लाल आभा युक्त होते हैं।

प्रयोग- दाहिने हाथ पर सहदेवी की कोमल मूल (जड़) जिस पर बालिका ने सफेद धागा बांधा हो बांधने से ज्वर, भूत, ग्रहादि व्याधियां मिटती हैं।

मन्त्र- ॐ नमो भगवति मातङ्गी सर्वन्त्रेतेश्वरी सर्वमनहरणी सर्वलोक वशीकरणी सर्व सुख रंजनी महामाये लघु-लघु वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा।।

विधि- कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन व्रत रखकर सहदेवी को निमंत्रित कर आवें फिर नवमी दूसरे दिन प्रातः काल उसे उखाड़ कर घर ले आयें। सहदेवी उखाड़ते समय व न्योता देने वाले समय विधिवत् पूजन करें व खोदने के मन्त्र से खनन करें। खैर की लकड़ी से खोदें पूर्व दिशा की ओर मुख करके खोदें फिर घर लाकर विधिवत् पट्टे पर स्थापन करें। श्वेत वस्त्र पर रखें व विधिवत् षोड्शोपचार पूजन करें व ९ रात्रि तक उक्त मंत्र का अनिश्चित संख्या में जप करें सिद्ध कर लें। जाप नियमित चलता रहे इस प्रकार से लाई हुई सहदेवी दिव्योषधि को प्रयोग में लावें।

द्वितीय प्रयोग- सहदेवी शुष्क करके चूर्ण करके जिस व्यक्ति के मस्तक पर डाला जायेगा वह वश में हो जायेगा।

तृतीय प्रयोग- अभिमंत्रित सहदेवी को मुंह में रखकर जिससे भी वार्तालाप करेंगे वह वशीभूत हो जायेगा।

चतुर्थ प्रयोग- अभिमंत्रित सहदेवी को अपने पल्ले में बांध लें या ताबीज में भरकर त्रिलोह ताबीज में धारण करने से समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

पञ्चम प्रयोग- उक्त चूर्ण को सिर पर डालकर युद्ध भूमि में जाये तो विजय प्राप्त होती है

षष्टम प्रयोग- बाँझ स्त्री को रजोधर्म के समय उक्त चूर्ण खिलाने से वह गर्भवती होती है।

सप्तम प्रयोग- अभिमंत्रित सहदेवी को ताबीज में भरकर बालक के गले में बाँधे तो ग्रह पीड़ा नहीं होती व अतिसार नष्ट होते हैं।

अष्टम प्रयोग- उक्त चूर्ण को काजल में मिलाकर आँख में लगाकर जिसे देखें वह वशीभूत हो जाता है।

नवम प्रयोग- उक्त चूर्ण को गोरोचन मिलाकर अपने ललाट पर तिलक लगायें फिर जिसे देखें वह वशीभूत हो जाता है।

दशम प्रयोग- उक्त चूर्ण को पान में रखकर खिला दिया जाये तो वह वशीभूत होगा।

एकादश प्रयोग- अभिमंत्रित सहदेवी को ज्वर में दाहिने भुजा में बांधने से ज्वर नाश होता है। *(ब.वि.शा. म. अदि)*

भगवान श्री हनुमान जी सर्वार्थ सिद्धिदायक गुप्त प्रयोग

दिव्य मन्त्र- **ॐ नमो हनुमते रुद्रवताराय भक्त जनमन: कल्पनाकल्पद्रुमानाय दुष्टमनोरथ स्तम्भनाय प्रभञ्जन प्राणप्रियाम महाबल पराक्रमाय महाविपत्ति निवारणाय पुत्रपौत्रधनधान्यादिविविध सम्पत्प्रदाय रामदूताय स्वाहा।** *- (श्री हनु. क. अ.)*

विधि- मन्त्र का ग्यारह हजार (११०००) शुभ मुहूर्त में पूर्ण पुरुश्चर विधि से संगोपांग विधिवत् जाप करके दशांश ११०० हवन करना चाहिए फिर दशांश तर्पण फिर दशांश मार्जन दशांश ब्राह्मण ब्रह्मचारी बालक भोजन करावे इससे जिस कार्य की कामना से प्रयोग करेंगे सफल होगा व उस कार्य का संकल्प अवश्य लगाकर जाप हवन करें यह असाधारण प्रयोग है यह प्रयोग महान से महान विपत्ति का निवारक है। शत्रु पक्ष के मनोरथों को मिटाने वाला, पुत्र पौत्र व धन धान्य इत्यादि समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। प्रयोग किसी प्राचीन मन्दिर में एकांत में करें व पूर्ण सावधानी पूर्वक करें।

विशेष- यह प्रयोग बहुत शीघ्र प्रभावशाली है इसलिये शुद्ध स्पष्ट उच्चारण व पूर्ण विधि से सम्पूर्ण नियमों सहित सावधानी पूर्वक साधना करें। भगवान प्रसन्न होकर सफलता प्रदान करते हैं।

भगवती देवी श्री अन्नपूर्णा जी का अक्षय भण्डार कारक मन्त्र प्रयोग

मन्त्र- अन्नपूर्णा अन्नपूरै इन्द्र पूरै पानी, ऋद्धि सिद्धि तो गणेश पूरवै त्रिपुरा भवानी। ईश्वरी भंडार भर महेश्वरी शील संतोष की डिब्बी, तीन लोक लोई आवो सिद्धो जीमो सब कोई। सीता माता की रसोई जन्म न खाली होई चला मंत्र महायंत्र ॐ सुमरे फटकंत स्वहा। ॐ अजीया जीता आय स्वाहा। ॐ श्रीं सरस्वत्यै स्वाहा। *- (म.य.सा. ७९)*

विधि- सात मंगलवार को सात ग्राम (गांव) की भिक्षा एक-एक घर से ले पीछे उसे उल्टी चक्की से पीस एक रोट कर श्री श्रीहनुमाजी की पूजा करें। यह मंत्र पाठ करें। इस प्रकार छ: मंगल को पूजा कर सातवें मंगल को सवा दस अंगुल की आटे की मूर्ति बनाये, भण्डार में स्थापन करे तो भण्डार अक्षय हो जाता है। कभी भी उस भंडार में कमी नहीं आ सकती चाहे जितने खाते जाय। भगवानजी की कृपा से कमी कभी भी नहीं पड़ेगी। जब तक मूर्ति स्थापित रहेगी आटा पीसते समय भी इसी मंत्र का उच्चारण करते रहना है।

बुद्धि स्मृति प्राप्ति हेतु प्रयोग

मन्त्र- ॐ ऐं नम:

विधि- इस मन्त्र को विधिपूर्वक जपे। धूप दीप नैवेद्य से श्वेत पुष्पों द्वारा पूजन करें। श्वेत गंध का ही अनुलेपन करें तथा हविष्य अन्न का भोजन कर मंत्र जपे तो एक सप्ताह में बुद्धि और स्मृति की प्राप्ति होती है। *- (म.य.सा.)*

शांति, धन, स्त्री, लाभ प्राप्ति हेतु मंत्र प्रयोग

मन्त्र- ॐ गं गणपतये नम:

विधि- इस मंत्र से कुम्हार के यहां से मृतिका लाकर लम्बोदर भगवान श्री गणेश जी की मूर्ति बनावे।

१. पंचोपचार से विधिवत् पूजन करें प्रतिदिन सहस्र जपें तो सात दिन में शांति होती है।
२. सात सहस्र से अधिक जपे तो परम बुद्धि की प्राप्ति होती है।
३. एक महीने जपने से स्त्री लाभ होता है।
४. छ: महीने जपने से मनुष्य धनपति होता है। (म.य.सा.)

विनियोग- श्री गणेशाय नम:

ॐ अस्य श्री अपराजिता मन्त्रस्थ वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप छन्द: क्लीं बीजं हूँ शक्ति सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे पादे विनियोग:।

अथ अपराजिता स्तोत्रम्

पाठारम्भ

मार्कण्डेय उवाच- श्रृणुध्वं मुनय: सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिदां। असिद्धसाधनी देवीं वैष्णवीमपराजिताम्।।

ध्यानम्-

नीलोत्पल-दल-श्यामां भुजङ्गाभरणोज्वलाम्, बालेन्दु-मौलिसदृशीं नयनत्रितयान्विताम्। शंखचक्रधरां - देवीं वरदां भयशालिनीम्, पीनोत्तुङ्गस्तनीं साध्वीं बद्ध-पद्मासनां शिवाम्। अजितां चिन्तयेद्देवीं वैष्णवीमपराजिताम्।।

शुद्धस्फटिक-संकाशां चन्द्रकोटि-सुशीतलाम्, अभयां वर-हस्तां च श्वेतवस्त्रैरलंकृताम्। नानाभरण-संयुक्तां जयन्तीमपराजिताम्, त्रिसन्ध्यं य: स्मरेद्देवीं तत: स्तोत्रं पठेत्सुधी:।।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रशीर्षाय क्षीरार्णवशायिने, शेषभोग-पर्यङ्काय गरुड़-वाहनाय अमोघाय अजाय अजिताय अपराजिताय पीतवाससे। वासुदेव-संकर्षण-प्रद्युम्नानिरुद्ध-हयशीर्ष-मत्स्यकूर्मवराह नृसिंह वामन राम राम वर-प्रद! नमोस्तुते। असुर दैत्य-दानव-यक्षराक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच किन्नर-कूष्माण्ड सिद्ध-योगिनी डाकिनी स्कन्दपुरोगान् ग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चान्यान् हन हन, पच, पच, मथ, मथ विध्वंसय, विध्वंसय, विद्रावय, विद्रावय, चूर्णय चूर्णय शंखेन चक्रेण वज्रेण शूलेन गदया मुशलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु, स्वाहा।। ॐ सहस्रबाहो सहस्रप्रहरणायुध जय, जय, विजय, विजय, अजित अमित अपराजित अप्रतिहत सहस्रनेत्र ज्वल, ज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल, विश्वरूप,

विधि- इस मन्त्र का विधिपूर्वक जप। धूप दीप नैवद्य से अक्षत पुष्पों द्वारा पूजन करें। अक्षत

अजित अमित अपराजित अप्रतिहत सहस्रनेत्र ज्वल, ज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल, विश्वरूप,

बहुरूप मधुसूदन महावराहच्युत महापुरुष पुरुषोत्तम पद्मनाभ वैकुण्ठानिरुद्ध-नारायण गोविन्द दामोदर हृषीकेश केशव सर्वासुरोत्सादन सर्वमन्त्रप्रभञ्जन, सर्वदेवनमस्कृत सर्वबन्धनविमोचन, सर्वशत्रु वशंकर सर्वाहितप्रमर्दन, सर्वग्रहनिवारण, सर्वरोगप्रशमन, सर्व-पाप-विनाशन, जनार्द्दन नमोस्तु ते स्वाहा। य इमां अपराजितां परमवैष्णवीं पठति, सिद्धां जपति, सिद्धां स्मरति, सिद्धां महाविद्यां पठति; जपति, स्मरति, श्रृणोति, धारयति, कीर्तयति वा न तस्याग्निवायुर्वज्रोपलाशनिभयं नववर्षणि भयं, न समुद्रभयं, न ग्रह-भयं न चौर-भयं वा भवेत्। क्वचिद्रात्र्यन्धकारस्त्रीराजकुलविषोपविषगर-वशीकरणविद्वेषोच्चाटनवधबन्धनभयं वा न भवेत्। एतैर्मन्त्रैः सदाहतैः सिद्धैः संसिद्ध पूजितैः, तद्यथा ॐ नमस्तेस्त्वनघेऽजितेऽपराजिते पठति सिद्धे, पठति सिद्धे, जपति सिद्धे जपति सिद्धे, स्मरति सिद्धे, महाविद्ये एकादशे उमे ध्रुवे अरुन्धति सावित्रि, गायत्रि, जातवेदसि मानस्तोके सरस्वति धरणि धारिणि सौदामिनी अदिति दिति गौरि गांधारी मातंगी कृष्णे यशोदे सत्यवादिनि ब्रह्मवादिनि कालि कपालि करालनेत्रे सद्योपयाचितकरि-जलगतस्थलगतमंतरिक्षगं वा मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा।

यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि।
म्रियन्ते बालका यस्याः काकवन्ध्या च या भवेत्।।
भूर्जपत्रेत्विमां विद्यां लिखित्वा धारयेद्यदि। एतैर्दोषैर्न लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत्।।
शस्त्र वार्यते ह्येषा समरे काण्डवारिणी। गुल्मशूलाक्षि-रोगाणां क्षिप्रं नाशयते व्यथाम्।।

शिरोरोगज्वराणां च नाशिनी सर्वदेहिनाम् तद्यथा-एकाहिक-द्व्याहिक-त्र्याहिक-चातुर्थिकार्धमासिक-द्वैमासिक-त्रैमासिक-चातुर्मासिकपञ्च-मासिकषाण्मासिक वातिक-पैत्तिक, श्लैष्मिक, सान्निपातिक, - सततज्वर-विषमज्वराणां नाशिनी सर्वदेहिनां ॐ हर हर कालि सर सर गौरि धम धम विद्ये आले ताले माले गन्धे पच पच विद्ये मथ मथ विद्ये, नाशय पापं, हर दुःस्वप्नं, विनाशय मातः, रजनि सन्ध्ये दुन्दुभि-नादे मानसवेगे शंखिनी चक्रिणी वज्रिणी शूलिनी अपमृत्युविनाशिनी विश्वेश्वरी द्राविडि द्राविडि केशवदयिते, पशुपतिसहिते, दुन्दुभिनादे मानसवेगे दुन्दुभि-दमनी शवरि किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ओं ओं श्रां श्रीं श्रुं श्रैं श्रौं श्रः ॐ क्ष्वौं तुरु तुरु स्वाहा। ओं ये क्ष्मां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा तान् दम दम मर्दय मर्दय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय ब्रह्माणि माहेश्वरि।

वैष्णवी वैनायकी कौमारी नारसिंही ऐन्द्री चान्द्री आग्नेयी चामुंडे वारुणि वायव्ये रक्ष रक्ष प्रचण्डविद्ये ॐ इन्द्रोपेन्द्र-भगिनी जये विजये शान्तिपुष्टितुष्टि-विवर्द्धिनी।। कामांकुशे कामदुघे सर्वकामफलप्रदे सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा। ओं आकर्षिणी आवेशिनी तापिनी, धरणि धारिणी मदोन्मादिनी-शोषिणी सम्मोहिनी महानीले नीलपताके महागौरि महाप्रिये महामान्द्रिका महासौरि महामायूरि आदित्यरश्मिनी जाह्नवी यमघण्टे किलि किलि चिन्तामणि सुरभि-सुरोत्पन्ने सर्व-काम-दुघे यथाभिलषितं कार्य तन्मे सिध्यतु स्वाहा। ओं भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ओं स्वः स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। ओं यत एवागत पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा। ओं बले बले महाबले असिद्धि-साधिनी स्वाहा।

इति श्रीत्रैलोक्य विजया अपराजिता सम्पूर्णम्।

विधि- विनियोग कर ध्यान कर पाठ करें यह स्तोत्र सर्वार्थ सिद्धिदायक है इसके एक अयुत १०,००० पाठ करने से विशेष फलप्रद हो जाता है व नित्य १ या ११ या अधिक पाठ करने से भी फल प्राप्त होता है। असाध्य ज्वरों में इसके १०,००० पाठ कराकर अभिमंत्रित जल से ज्वर पीड़ित व्यक्ति को पान कराया जाय तो ज्वर शान्त हो जाता है व रोग नष्ट हो जाता है। कार्य सिद्धि में भी यह महत्वपूर्ण स्तोत्र है। साधारण ज्वर में ११ पाठ से अभिमंत्रित जल नित्य तीनों कालों में पिलाने से साधारण ज्वर शांत हो जाता है। यह स्तोत्र विशेष चमत्कारी है व सर्वार्थ सिद्धिदायक है। असाध्य कार्य साधना हेतु पूर्ववत् संख्या से पाठ करें अपने कार्य का संकल्प करके सफलता मिलती है।

समस्त पाठक साधक तंत्र प्रेमियों से निवेदन है कि प्रयोगों में यदि कोई त्रुटि हो तो अवगत् कराने का कष्ट करें व अल्पज्ञ को क्षमा करें।

सम्पर्क सूत्र- महल कॉलोनी, राजेश्वरी रोड, शिवपुरी (म.प्र.)
फोन ०७४९२-२३२५६४ मोबाइल ९४२५४२९५८, ९४२५४२९४४६

पृष्ठ १५९ का शेष

नियत राशि को लाँघ कर दूसरी अनियत राशि पर चले गये हों उस समय व्रत आरम्भ नहीं करने चाहिए। -महर्षि लल्ल

हेमाद्रि में सत्य व्रत ने व्रत के आरम्भ करने और समाप्ति करने की तिथि को बताया है कि- सूर्य नारायण के उदय के समय में जो तिथि हो पर मध्यान्ह के समय में वह न रहे उस खण्डा तिथि में न तो व्रत का आरम्भ करना चाहिए न ही व्रत की समाप्ति करना चाहिए।

''असकृज्जलपानाच्च सकृत्तांबूल चर्वणात्।
उपवास प्रणश्येत दिवास्वापाच्च-मैथुनात्।। -देवल स्मृति

अर्थात- व्रत के समय बार-बार जल पीने, दिन में सोने, ताम्बूल (पान) चबाने तथा स्त्री सहवास करने से व्रत बिगड़ जाता है।

उसवासे तथा श्राद्धे न खादेन दन्त धावनम्। -स्मत्यन्तर

उपास में और श्राद्ध में दातौन नहीं करना चाहिए आवश्यक हो तो जल के बारह कुल्ले कर लें।

अग्नि पुराण एवं मनुस्मृति में मांस वर्जित-

अग्नि पुराण एवं मनु स्मृति का कथन है कि किसी भी व्रती मनुष्य को मांस का कभी भी व्रत में सेवन नहीं करना चाहिए। अतः व्रती को चाहिए कि व्रत का आरम्भ एवं इति करते समय उक्त समयावधि का पूर्ण ध्यान रखें जिससे व्रत निष्फल न हो तथा व्रत का पूर्ण फल प्राप्त हो सके।

श्रीदुर्गा उपासना का विधी विधान

(श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र लेखन का पर्वकाल)

दुर्गा उपासना योगदानः दुर्गा सप्तशती (गीता प्रेस, गोरखपूर की पोथी) के अनुसार 'भौमावास्या' मुहूर्त मंगलवार २४ फरवरी २००९ की रातको है। प्रत्येक भक्त साधक को यह ध्यान रखना चाहिए कि हमें मुहूर्त को रात को(मंगलवार की रात) अर्थात बुधवार सुबह ६.५० तक का सदुपयोग करना है। विधि विधानके चक्कर में न पड़कर मुहूर्त के समय में ज्यादा से ज्यादा श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र का लेखन हो। सिर्फ इतना ही उद्देश्य रखें।

प्रत्येक भक्त आवश्यक सामग्री, एक लोटा जल, पंचपात्र, आचमनी, आसन, दक्षिणा (यथा शक्ति) लेखन, स्याही, स्तोत्र का छपा कागज आदि ठीक करके मंगलवार रात को ७.३० बजे पवित्र स्थान पर अपना आसन ग्रहण करें और घी का दीपक तथा अगरबत्ती और धूप जलायें। सर्वप्रथम यदि भक्त लोग लेखन का ओयाजन सामूहिक रूप में कर रहें हैं, तो एक स्थान में एक सुवर्णा सुलक्षणा, स्वरूपा और सबला कुमारी २ वर्ष से १० वर्ष तक उम्रवाली कन्या को सुयोग्य स्थान पर अपने से ऊँचा आसन देकर पीले रंग का सच्चा गोटा लगा, शुद्ध रेशम का दुपट्टा (चुन्नी) ओढ़ावे। प्रत्येक भक्त कुमारी को अष्टगंध का तिलक लगाकर पूजा करें और सुरेश्वरि का ध्यान कर पुष्प चढ़ा दें। सुरेश्वरि के रूप में यह कन्या मुहूर्त भर अर्थात मंगलवार रात में ७.४६ से बुधवार सुबह ६.५० तक एक स्थान में अपने आसन पर ही विराजमान रहे। यदि वे कुमारी भी स्तोत्र लिखना चाहें तो लिख सकती है। इसके बाद कोई भी विद्वान 'दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र' स्तोत्र के दूसरे श्लोक 'ॐ सती' से पंद्रहवें श्लोक के 'ब्रह्मवादिनी' तक का उच्चारण सब भक्तों को करा दें। (घरों पर करने वाले स्वयं उच्चारण कर लें) दुर्गा उपासना योगदान लेखन के लिए, श्री.गुरू महाराजजी की आज्ञा से मंत्र व स्तोत्र उच्चारण करने और कराने का अधिकार सर्वसाधारण प्रत्येक विद्वान स्त्री तथा पुरूष को है। फिर ७.४६ से ६.५० श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र' का लेखन करें। फिर लिखने के लिए तैयार होकर स्तोत्र छपे कागज पर लिखे 'श्री गुरुवे नमः।' सबको नमस्कार करे और ठीक ७.४६ पर 'प्रथमं शैल पुत्री च' आदि मंत्र के ऊपर छपे दोनों यंत्रों के अंकों को भरें। जो थाली उलटकर कागज रखने का काम करे और स्तोत्र लिखना आरंभ कर दें। दुर्गा के १०८ नाम १५वें श्लोक तक छपे है, केवल उन्हीं पर लाल पैनसे लिखना है।

कागज :- स्तोत्र का मुद्रित कागज जिन भक्तों को चाहिए उन्हें हम भेज रहें है या आप सादे कागज पर स्तोत्र से 'ॐ सती.......से.........ब्रह्मवादिनी' तक कुल १५वें श्लोक तक लाल पेन अथवा लाल बॉलपेन से लिखें। उसके बाद १० ग्राम गुड तथा १० ग्राम भिगे हुऐ चने का नैवेद्य तथा यथाशक्ति दक्षिणा रखें।

लिखने से १५-२० मिनिट पहले स्तोत्र का पाठ आरंभ करे और साधक भक्तों से करावें। ११ घंटे ०४ मिनिट इसका लेखन करे। जो शरीर से असमर्थ हो वह कम से कम १ घंटा लिखे। ऐसा समय बार-बार नहीं आता।

योग का महत्व : जिस समय मंगलवार, शततारका (शतभिषा) नक्षत्र और अमावस्या से तीनों एक साथ आते हैं उसी समय ही इस योग में लेखन का महत्त्व है। ऐसा प्रसंग ८-१० वर्षो में एक बार आता है। इस 'भौमावास्या' मुहूर्त पर पूर्ण श्रद्धा रखकर विश्वास, निष्ठा और समाधान से तथा विधि से लेखन करने से उस व्यक्ति को फलश्रुति में लिखे अनुसार लाभ होगा और वह व्यक्ति संपत्तिशाली बन जाएगा। आज प्रत्येक व्यक्ति संपत्तिशाली बनने की महत्त इच्छा रखती ही है। इसलिए इस मुहूर्त पर इस स्तोत्र का पूर्ण श्रद्धा से लेखन, पठन करके भगवती का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त कर लेवें। १७ वे श्लोक में फलश्रुति के अनुसार धन, धान्य, पत्नी तथा संतति, संपत्ति सर्व राजऐश्वर्य प्राप्त होता है। संपत्ति का अर्थ केवल आर्थिक द्रव्यवान होना ऐसा नहीं अपितु शारीरिक, बौद्धिक, आरोग्यवान होना ऐसा है। भगवती उपासना से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थ प्राप्त होकर सनातन मुक्ति प्राप्त होती है। मुहूर्त पर लिखकर सिद्ध होने के बाद इस स्तोत्र का नित्य पाठ करना आवश्यक है। हर दिन स्नान के बाद आजीवन जो पाठ करेगा उस व्यक्ति पर माँ भगवती कृपा की वर्षा करती है। भगवती उस भक्त की सभी आवश्यकताएँ पूर्ण करती है। लेकिन सिर्फ एक दिन मुहूर्त पर लिखकर कार्य सिद्ध नहीं हो सकता।

सूचना:-

(अ) लिखे हुए स्तोत्र के कागज का नित्य दर्शन हो ऐसी जगह फ्रेम करके वह कागज रखे। लिखने के लिये सादे कागज या नोटबुक में भी लिख सकते है।

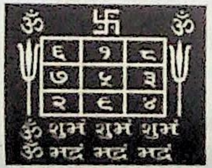
(ब) बिजली के अभाव में मोमबत्ती, कंदील, दियासलाई (माचिस) बैटरी आदि पहले से ही नजदीक रख ले। उससे लिखने के कार्य में बाधा ना आये।

(क) उपरोक्त अनुसार लेखन व पूजन (कुमारिका) आदि संभव न हो तो अपने घर की कुमारिका का पूजन करें या देवी के फोटो का पूजन करे। इसके बाद प्रतिदिन अपने कुलदेवता के फोटो या प्रतिमा पर 'दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र' से नित्य कुंकुम अर्चना करें।

(ड) यदि कुमारिका भी न मिले तो देवी की प्रतिमा का पूजन करके मुहूर्त पर लेखन का ही महत्त्व है। दूसरे दिन यथाशक्ति श्रद्धा के साथ कुमारी तथा ब्राह्मण भोजन करायें तो भी चल सकता है।

विशेष सूचना:-

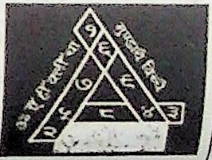
मेरी सभी भक्तों यह विनम्र प्रार्थना है कि इस स्तोत्र के १६वें श्लोक में लिखे स्तोत्र के अनुसार 'य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्। नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वती॥' इसका नित्य पाठ और कुलदेवता पर कुंकुम से अर्चना होना अति आवश्यक है। ऐसा नित्य पाठ जो भक्त करेगा उसकी सारी मनोकामनाएँ माँ भगवती अवश्य पूरी करेंगी। इस का नित्य पाठ करना आवश्यक है, जो भक्त ऐसा करेगा उसके लिए तीनों लोको में दुर्लभ या असंभव कुछ भी नहीं। इस स्तोत्र का माहात्म्य साक्षात् भगवान शिवजी ने कहा है। इसलिए इसका असाधारण महत्त्व है। कृपया सभी भक्तजन इस बात का विशेष ध्यान रखें।



जो भक्त इस श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र लिखेंगे वे कृपया नीचे लिखे पतेपर नाम, पता तथा कितनी बार यह स्तोत्र लिखा यह लिखकर भेजे जिससे भविष्य में उनसे संपर्क रहेगा।

नवार्ण मन्त्र :-

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे



श्री दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्व कमलानने। यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥१॥
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी। आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः। मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी। अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः ॥४॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा। सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती। पट्टाम्बरपरिधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥६॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी। वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा। चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा। बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥९॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी। मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥१०॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी। सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी। कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा। महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥१३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी। नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥१४॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी। कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्। नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वती ॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च। चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥१७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्। पूजयेत् परमा भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुखरैरपि। राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥१९॥
गोरोचनालक्तकुंकुमेन, सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण। विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो, भवेत् सदा धारयते पुरारिः ॥२०॥
भौमावस्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते। विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत सम्पदां पदम् ॥२१॥

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य॥
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥
सर्व मंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यमस्मदवैरि विनाशनम॥

लिखने का मुहूर्त मंगलवार दिनांक २४ फरवरी २००१ की रातको ७:४६ से बुधवार की सुबह ६:५० तक लाल पेनसे 'ॐ सतीसे ब्रह्मवादिनी' तक लिखे।

संपर्क के लिए पता- श्री. सुरेश (कांतीलाल) नावरिया एडवोकेट
८२९, प. मंगलवार पेठ, टिलक चौक, सोलापूर ४१३००२
फोन नं. (०२१७) - २३२४०१३ (कार्या.), मो. ९३७०४०८४३७

मांगलिक दोष और विवाह योग्य वर-वधू

मांगलिक दोष के बारे में प्रायः सभी ज्योतिषीजन परिचित हैं फिर भी कुछ योग हैं जो कि मांगलिक दोष को भंग करते हैं। यदि दोष भंग योग बन रहा हो तो फिर अशुभ एवं वैधव्यादि दुःख नहीं होते, इसी विषय को लेकर पाठकों की सुविधार्थ मांगलिक क्या है? और उस दोष की मान्यता कहां तक रहेगी और दोष भंग कैसे होता है? यही वर्णन हम इस लेख में कर रहे हैं।

१. मांगलिक किसे कहते हैं?

जिस जातक की जन्म कुण्डली, लग्न/चन्द्र कुण्डल्यादि में मंगल ग्रह लग्न से लग्न में १, चतुर्थ ४, सप्तम ७, अष्टम ८ तथा द्वादश १२ भावों में कहीं भी स्थित हो तो उसे मांगलिक कहते हैं यहां लग्न कुण्डली के माध्यम से तो आपको प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है।

२. गोलीया मंगल 'पगड़ी मंगल' तथा चूनड़ी मंगल किसे कहते हैं?

जिस जातक की जन्म कुण्डली के १, ४, ७, ८, १२वें भाव में कहीं पर मंगल स्थित हो उसी मंगल के साथ शनि सूर्य राहु पाप ग्रह भी बैठे हों तो वह पुरुष गोलीया मंगल, स्त्री जातक चूनड़ी मंगल हो जाती है अर्थात् द्विगुण मंगली इसी को माना जाता है।

३. मांगलिक कुण्डली हो तो क्या दोष होता है?

वर की कुण्डली मांगलिक हो तो कन्या की मृत्यु वधु के लिए घातक होता है और कन्या मांगलिक हो तो वर पति के लिए अशुभ विनाश की सूचक है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्ता कन्या विनाशदः॥

४. मांगलिक जातकों की कुण्डली कैसे मिलायी जाये अर्थात उनके किस स्थिति में सुखद दाम्पत्य जीवन आनन्दित होते हैं?

वर कन्या दोनों की कुण्डली ही मांगलिक हो तो विवाह शुभ और दाम्पत्य जीवन आनन्यमय रहता है। एक सादी एक मंगली ऐसे विपरीत गुणों वाली कुण्डलियां नहीं होनी चाहिए। दोनों ही मांगलिक होते हैं तो मंगल की अशुभता दूर हो जाती है।

५. ऐसा भी कोई उपाय हो जिससे कन्या मांगलिक हो और वर की कुण्डली सादी ''अमंगली'' हो परन्तु विवाह शुभ हो जाये?

मांगलिक कुण्डली के सामने यदि मंगल वाले स्थान को छोड़कर दूसरे स्थानों में पाप ग्रह हों तो दोष भंग हो जाता है। उसे फिर मंगली दोष रहित मानी जाती है तथा केन्द्र में चन्द्रमा १, ४, ७, १०वें घर में हो तो मंगली दोष दूर हो जाता है। शुभ ग्रह एक भी यदि केन्द्र में हो तो सर्वारिष्ट भंग योग बना देता है। इसके फलस्वरूप मंगल का निराकरण हो जाता है। वैसे यह विषय आम पाठकों के समझ में कुछ कठिनता से आयेगा कारण कि इसे जानने के लिए पाठक को प्रायोगिक तौर पर ज्योतिषी के पास बैठकर समझने की जरूरत पड़ती है

फिर भी मूल बात यहां समझा देते हैं।

शास्त्रकारों का मत ही इसका निर्णय करता है कि जहां तक हो मांगलिक से मांगलिक का सम्बन्ध करें, फिर भी यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाये कि कोई वर कन्या सभी तरह से विवाह योग्य है तथा दोनों पक्ष के अभिभावक वर कन्या सभी एक दूसरे से पूर्ण संतुष्ट है जैसा आजकल प्राय: सह शिक्षा सह व्यवसायिकों में हो जाता है, फिर यदि कुण्डलीस्थ मंगली अमंगली का विचार उत्पन्न हो जाये तो वहां १, ४, ७, ८, १२ भावों में कहीं मंगल होने से मांगलिक है यह सम्बन्ध श्रेष्ठ नहीं ऐसा नहीं कहना चाहिए इसके लिए लिखा है- मांगलिक से मांगलिक मिलान कर लें, तथा अन्य भी कई कुयोग हैं जैसे वैधव्य, विषांगना आदि दोषों को दूर रखें, यदि ऐसी भी स्थिति हो तो अश्वस्थ "पीपल" विवाह, कुम्भ विवाह, सालिगराम विवाह तथा मंगल यन्त्र का पूजन और मंगला गौरी का व्रत, पूजन आदि कराके कन्या का सम्बन्ध अच्छे सुयोग्य ग्रह योग वाले वर के साथ करें। मांगलिक दोष तो प्राय: देख लेते हैं, पर मंगलिक होते हुए भी वह अशुभ नहीं है अर्थात् शुभ है यह कम ही जानते हैं। इसकी जानकारी अत्यावश्यक है। मंगलिक/डबल मंगलिक जातक हो तो परस्पर कुण्डलियों के ग्रहों का अध्ययन करके ही निर्णय करना चाहिए, हमारे शास्त्रों में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं कि मंगलिक वर के साथ अथवा मंगल कन्या के साथ सादे वर का सम्बन्ध भी श्रेष्ठ रहता है, यदि वर या कन्या की कुण्डली के अन्य ग्रहों की स्थिति निम्नवत् हो तो

मंगली दोष परिहार वाक्य.....

भोमेन सदृशो भोम: पापो वा तादृशो भवेत्।
विवाह शुभद: प्रोक्तश्चिरायु: पुत्रपौत्रद:।।१।।
शनि भौमोऽथवा कश्चित पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौम दोष विनाश कृत्।।२।।
अजे लग्ने व्ययेचापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विघते।।३।।
जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौम दोष विनाशकृत।।४।।
सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने धनेऽपिवाऽथवा भौमे।
वक्रिणी नीचारिगृहे वार्कस्थेपि वा न कुजदोष:।।५।।
केन्द्र कोणे शुभाद्ये च त्रिषडायेऽप्यसदग्रहा:।
तदा भोमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा।।६।।

विशेष दृष्टव्य:

कुजो जीव समायुक्तो-युक्तो वा शशिनापि च।
चन्द्रकेन्द्रगतौ वापि तस्य दोषो न मंगली।।७।।
न मंगली मंगलराहु योगे न मंगली चन्द्र गतश्च केन्द्रे।।८।।
गुरु मंगल संयोगे भौम दोषो न विद्यते।
चन्द्र मंगल संयोगे भौम दोषो न विद्यते।।९।।
गुरु भौम समायुक्तश्चेद भौमश्च निशाकर:।
केन्द्रे व वर्तते चन्द्र एतद् योगे न मंगली।।१०।।

उपरोक्त शास्त्र वाक्यों का समावेश जहाँ हो रहा हो वहाँ मंगली दोष का कोई डर नहीं, बगैर रोकटोक मंगली से बेफिक्र होकर सम्बन्ध करें। यदि अन्य कोई और कुयोग हो तो उसके शमनार्थ महामृत्युंजय, वट सावित्री, अश्वथ विवाह, कुम्भ विवाह, सालिगराम विवाह के साथ मंगल यन्त्र की पूजा करें, उसको गले में हृदय पर ताबीज में धारण करें या उसको अपने इष्ट स्थान पर रखकर पूजन आदि करें तो मंगल दोष निवारण करता है। मंगल यन्त्र विवाह में विलम्ब हो रहा हो तो, दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं हो, तालाक की स्थिति उत्पन्न हो गई हो, जमीन जायदाद ऋण तथा कोर्ट केश मुकदमा आदि में भी इच्छित वरदायक होता है। सन्तानहीनता में मंगलजनित प्रकोप हो तो इसके पूजन से सन्तान प्राप्ति भी होती है। यह यन्त्र साधारण स्थिति में छोटे-मोटे मुकदमें वैमनस्य तथा विवाद में प्रयोग में नहीं लेना चाहिए। संकटकालीन समय में ही इसका प्रयोग करना चाहिए। साधारण बात में बड़ी शक्ति को नष्ट करना उसका दुरुपयोग करना पाप है। इसलिए इसको अयोग्य व्यक्ति को न देने का निर्देश किया है। कन्याएं जिनका विवाह होने में सगाई नेग दस्तूर होने में विलम्ब होता हो अड़चन आती हो जो युवक कारोबार के लिए परेशान हो वे सच्चे मन एवम् विधिवत् इसकी आराधना करे तो सम्बन्धित कार्य अवश्यक पूर्ण होंगे।

विशेषकर जो मंगलिक हैं उन्हें इसकी पूजा अवश्य करनी चाहिए चाहे मांगलिक दोष भंग आपकी कुण्डली में क्यों न हो गया हो फिर भी मंगल यन्त्र मांगलिकों को सर्वत्र जय सौख्य विजय अभ्युदय और आनन्ददायक है-

२१ नामों से मंगल की पूजा करें-

१. ॐ मंगलाय नम:।
२. ॐ भुमिपुत्राय नम:।
३. ॐ ऋण हर्त्रे नम:।
४. ॐ धनदाय नम:।
५. ॐ सिद्ध मंगलाय नम:।
६. ॐ महाकायाय नम:।
७. ॐ सर्वकर्म विरोधकाय नम:।
८. ॐ लोहिताय नम:।
९. ॐ लोहितगाय नम:।
१०. ॐ सुहागानां कृपा कराय नम:।
११. ॐ धरात्मजाय नम:।
१२. ॐ कुजाय नम:।
१३. ॐ रक्ताय नम:।
१४. ॐ भुमि पुत्राय नम:
१५. ॐ भुमिदाय नम:।
१६. ॐ अंगारकाय नम:
१७. ॐ यमाय नम:।
१८. ॐ सर्वरोग प्रहारिण नम:।
१९. ॐ सृष्टिकर्त्रे नम:।
२०. ॐ प्रहर्त्रे नम:।
२१. ॐ सर्वकाम फलप्रदाय नम:।

-किशनलाल उपाध्याय

विक्रम संवत् २०६५ में तेजी-मन्दी का संक्षिप्त विवरण

तेजी

७ अप्रैल- कपास, गुड़, खांड़, नमक, तिल, तेल, सरसों व चांदी।

८ - १० अप्रैल- गुड़, खांड, घी, तेल, तिल, सरसों, व चांदी।

२५ - २६ अप्रैल- सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, घी, गुड़, खांड, शक्कर।

१४ मई- रुई, कपास, सूत, सोना, अनाज।

२९ मई से १६ जून- गेहूं, चना, मटर, रुई, कपास, सोना, चांदी, जिंक, कॉपर, क्रूड, मैंथा, लेड, निकिल, गुड़, शक्कर, जूट, पाट, बारदाना, ग्वार, खल, बिनौला, कालीमिर्च, जीरा।

१४ जून- सरसों, लोहा, तिल, तैल, गुड़, खांड, उड़द, मूंग, मोंठ, चावल, गेहूँ, चना, अरहर।

२४ मई- चांदी, रुई, कपास, गेहूं, गुड़, शक्कर, घी,।

२९ मई से १६ जून- गेहूँ, सोना, चांदी, चना, मटर, जिंक, क्रूड, मैंथा, लेड, निकिल, गुड़, शक्कर, काली मिर्च, जीरा, जूटपाट, बारदाना, ग्वार, खल, बिनौला।

२१ जून- गुड़, खांड, शक्कर, रुई, लाल मिर्च, अलसी व लौह पदार्थ, सरसों, मूंगफली, तांबा, चावल।

१६ जुलाई- चांदी, सोना, गुड़, खांड़, शक्कर, तिल, सरसों।

२३ से २५ जुलाई- पीपरमेंट, तेल, अरहर, काजू, किशमिश, काले हरे रंग के पदार्थ वनस्पतियाँ, घी, खांड, शक्कर, तेल, मूंगफली।

२४ अगस्त- सोना, चांदी आदि धातु, गुड़, चीनी, हल्दी, जौ, गेहूं, चना, रेशम, उड़द, मूंग।

२५ अगस्त- गुड़, खांड व ऊनी वस्त्र, चांदी, रेशम, घी, नमक, चावल

१६ अक्टूबर- नारियल, सुपारी, चन्दन, सोना, गेहूं, जौ, चना, मजीठ, तांबा।

७ नवम्बर- रुई, सूत, कपास, वस्त्र, गेहूँ, सोना, चांदी, तांबा, जिंक।

१५ नवम्बर- सोना, चांदी, तांबा, रुई, कपास, लेड, जिंक, ऊन, सरसों, अलसी, अरण्डी, मूंगफली।

२० नवम्बर- निफ्टी शेयर सूचकांक में लम्बी तेजी।

२३ नवम्बर- गेहूं, जौ, चना, अचानक तेजी।

१५ दिसम्बर से ६ जनवरी २००९- सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, कपास, खल, बिनौला।

१९ दिसम्बर- धान्य, घी, मूल पदार्थ, कपास, रुई, सूत, सोना, चांदी, बिनौला, सरसों, अनाज, लेड, कॉपर, निकिल, जिंक, क्रूड ऑयल।

२८ दिसम्बर- तिल, तेल, चांदी, गुड़, खांड, सरसों, ऊनी वस्त्र, हल्दी, कपूर।

११ जनवरी २००९- सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, क्रूड ऑयल, गुड़, रुई, कपास, जूट, पाट, ग्वार, चना, सोया, तेल।

१५ से २७ जनवरी- रुई, कपास, चांदी, सोना, गेहूं, चना, गुड़, चीनी, जिंक, कॉपर, क्रूड ऑयल, लाल वस्तुएं।

१० फरवरी- पीले रंग की वस्तुएं, कॉपर, सोना, सरसों, धातु, हल्दी, सोया तेल।

२६ फरवरी- गुड़, शक्कर, गेहूं, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, कॉपर, जिंक।

९ मार्च- अनाज, सोना, चांदी, गुड़, खांड।

मंदी

२५ अप्रैल से ५ मई- सरसों, तिल, अलसी, अरण्डी, तेल।

८ मई- सप्त धान्य, तिल, तेल, घी।

१४ मई- गेहूँ, जौ, चना, मटर, अरहर, मूंग, चावल।

१६ से १७ मई- गेहूं, तिल, सरसों, जौ, हींग, रुई, सोना, चांदी, हीरा, मोती।

१३ जून- रुई, कपास, जूट, पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ज्वार।

२१ जून से ८ अगस्त- राजनैतिक हत्याकांड, प्राकृतिक प्रकोप से बाजार पर विपरीत प्रभाव।

१८ जुलाई- रुई, पाट, हैसियन, गुड़, गेहूँ, चना, कपास।

७ अगस्त- कपूर, गुड़, खांड, चीनी, शक्कर।

१६ अगस्त- सरसों, तिल, तेल, रत्न, गेहूँ, चना, मटर, बाजरा, मक्का, गुड़, खांड, लाल मिर्च, लाल वस्तुएं।

१ सितम्बर- शेयर, रुई, जूट, कपास।

१६ सितम्बर- रुई, सूत, कपास, खल बिनौला, नारियल, सुपारी, काजू, बादाम, अरण्डी, लाल मिर्च, तिल, सरसों, सोयाबीन तेल, सोना, चांदी, शेयर बाजार, लोहा, पीतल, तांबा, जिंक, लेड।

२२ सितम्बर- लोहा, लौंग, कालीमिर्च, जावित्री, जायफल, जीरा, शेयर बाजार।

१६ अक्टूबर- रुई, कपास, चांदी,

१५ नवम्बर- लाल रंग की समस्त वस्तुएं, लाल मिर्च, चन्दन, नमक, नारियल, सुपारी, चीनी, गेहूं, जौ, चना, जूट, पाट, बारदाना, ग्वार, चना।

२० नवम्बर- अनाज, घी, तेल, सरसों, सोना, चांदी, रुई।

१५ दिसम्बर- अनाज, रुई, कपास, तिल, तेल, सोना, चांदी।

२८ दिसम्बर से १० जनवरी २००९- गेहूँ, जौ, चना, उड़द, मूंग, ज्वार, बाजरा, सफेद रंग की वस्तुएं।

१४ जनवरी- सोना, हल्दी, मूंग, चना।

१३ फरवरी- गुड़, खांड, शक्कर, अनाज, रुई, पाट।

५ फरवरी से २० फरवरी- सोना, चांदी, रुई, खांड, घी, तेल, सोयाबीन, सरसों।

१६ मार्च- गुड़, खांड, गेहूं, जौ, चना, मटर, रुई, पाट।

॥ ॐ श्री शरभ-शालुव-पक्षिराजाय नमः ॥

दुर्लभ-स्तोत्र, मन्त्र-विधान

"भूपेन्द्र दत्त शर्मा"

।।सम्पादकीय।।

महादेव महारूद्र पक्षिराज श्री शरभेश्वर के कृपा पात्र सुप्रसिद्ध साधक एवं विद्वान श्री भूपेन्द्र दत्त जी शर्मा के द्वारा विगत कई वर्षो से जो भी साधना–विषय सम्बन्धी प्रस्तुति प्रकाशित हो रही है, उसकी प्राप्ति सत्य में ही दुर्लभ व दुष्प्राप्य है। प्रस्तुत विषय के विद्वान साधक के पास प्राचीन गुह्य–विद्याओं का अपार भण्डार है –– इसमें कदापि भी संशय नहीं! 'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग' में इस स्तम्भ के अन्तर्गत ऐसे विषय भविष्य में निरन्तर इसी–प्रकार से प्रकाशित होते रहें, यही हमारी कामना है और सुधी पाठक–जनों की भी।

इस बार के सम्वत् के पञ्चाङ्ग में पुनः की भाँति दुर्लभ साधनात्मक–विषयों के साथ–साथ भगवान् श्री शरभेश्वर का एक दुर्लभ व दर्शनीय चित्र–(**'श्री शरभेश्वर साधना–प्रदीप'** से उद्धृत) भी प्रकाशित किया जा रहा है।

–पं० सुधाकर शर्मा त्रिवेदी

सम्पादक –'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग'

।।साधना और एकाग्रता।।

माया–मय अन्तःकरण की चार वृत्तियाँ हैं। 'मन' से हम 'मनन' करते हैं। 'बुद्धि' से 'विवेक' जाग्रत् होता है। जब 'बुद्धि' स्थिर हो जाए तो 'चित्त' 'चिन्तन' में रत होता है और 'मन' चञ्चलता छोड़कर साधना में 'अहमता' को उत्पन्न करता है। इसी आधार पर साधक लक्ष्य को प्राप्त करता है।

'माला' से जप चल रहा है, 'मुख' में मन्त्र चल रहा है। 'ध्यान'–ज्योति या मूर्ति में है। हमें ज्ञात है कि आसन ठीक है, मेरु–दण्ड सीधा है! अथवा साधक–(या योगी) देख रहा है कि कहीं **'मणि–बन्ध'**, **'उड्डियान–बन्ध'** या **'जालन्धर–बन्ध'** टूट न जाए। एक अन्य शक्ति इन सबका नियन्त्रण कर रही है कि मन्त्र समाप्त होने से पूर्व 'मनका' आगे न निकल जाए। मन्त्र का उच्चारण अशुद्ध होते ही चेतावनी मिलती है। यही साक्षी 'नियन्त्रक' 'बुद्धि' है, परन्तु जप करते–करते 'मन' किसी अन्य विषय– विदेश–परदेश में पहुँच जाता है! 'मन' को साधना में क्यों नहीं लगाया?

ये 'कर–मुख–कर्ण–नेत्र' तो, जो साधना में रत हैं, 'इन्द्रियाँ' हैं, हमारी सेविकाएँ हैं। यह साधना तो इन सेविकाओं ने की है। यदि 'मन' से साधना करते, तो भागता कौन? योगी तीन–बन्ध लगाकर तीन–वृत्तियों को उनमें लगा देता है और 'मन' से अभ्यास करके 'समाधि' की अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

पूज्य श्री गुरुदेव का –– 'अपने मन्त्र को कल्पना में लिखा हुआ पढ़ो' –– यह बहुत गम्भीर आदेश था। बार–बार ऐसा करने से जब कल्पना में लिखा हुआ मन्त्र स्थिर हो जाए, तो सफलता कितनी दूर रह सकेगी? यही एकाग्रता का लक्षण है। एकाग्रता–प्राप्ति के लिए एक अन्य प्रयोग भी बताया गया है कि जिस–प्रकार कल्पना में लिखे हुए मन्त्र को पढ़ने का विधान है, उसी–प्रकार 'मन में हो रहे जप को सुनने का अभ्यास' भी 'मन' को एकाग्र

करता है। 'मन' वायु के वेग से भी अधिक चञ्चल है। योग की भाषा में, यदि 'शवासन' की तरह साधना के समय साँस को अति–मन्द गति दे दी जाए, तो 'प्राण–वायु' नियन्त्रण में रहता है और इससे 'मन' चञ्चल नहीं होता।

उक्त अभ्यास–प्रयोग विचारणीय एवं ग्रहण करने योग्य विषय हैं। यदि हम साधना करते हैं, तो 'मन' को एकाग्र व शान्त–चित्त रखना अति आवश्यक है। पूर्व में स्पष्ट हो चुका है कि साधना में अनेक–प्रकार की बातें 'मन' में अपना–अपना स्थान बनाने के लिए व्याकुल रहती हैं। इसी दुविधा के कारण 'गीता' में अर्जुन ने भगवान् श्रीकृष्ण से इसी बात को पूछा था —

चञ्चलं हि मनः कृष्ण! प्रमाथि बल–वद् दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये, वायोरिव सु–दुष्करम्।।६/३४–३५

क्योंकि हे कृष्ण! यह मन बड़ा चञ्चल और प्रमथन–स्वभाव है तथा बड़ा दृढ़ और बलवान् है, इसलिए इसको वश में करना मैं वायु की भाँति अति दुष्कर मानता हूँ।

असंशयं महा–बाहो! मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।

श्रीकृष्ण भगवान् बोले— हे महा–बाहो! निस्सन्देह 'मन' चञ्चल और कठिनता से वश में होने वाला हे, परन्तु हे कुन्ती–पुत्र अर्जुन! अभ्यास अर्थात् स्थिति के लिए बारम्बार यत्न करने से और 'वैराग्य' से वश में होता है, इसलिए इसको अवश्य वश में करना चाहिए।

इसी अभ्यास–प्रयोग के विषय में पुनः भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—

अथ चित्तं समाधातुं, न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यास–योगेन ततो, मामिच्छाप्तुं धनञ्जय!।।१२/६

यदि तू मन को मुझमें अचल स्थापन करने के लिए सामर्थ नहीं है, तो हे अर्जुन! अभ्यास–रूप योग के द्वारा मेरे को प्राप्त होने के लिए इच्छा कर।

पुनः 'मन' की एकाग्रता के विषय में बात करते हैं। एकाग्रता के सम्बन्ध में **'छान्दोग्योपनिषद्'** में एक बहुत सुन्दर उदाहरण प्राप्त होता है। देवों और असुरों में युद्ध और विरोध तो चलता ही रहता था। देवता जो भी साधन ग्रहण करते, असुर उन्हें दूषित कर देते थे। देवताओं ने 'वाग्' से मन्त्र–साधना आरम्भ की, तो वाणी को असुरों ने दूषित कर दिया। 'जिह्वा' मिथ्या–भाषण करने लगी। इसी–प्रकार 'कानों' से तथा 'आँखों' के द्वारा साधना आरम्भ की, तो 'आँख' व 'कान' भी दूषित कर दिये गये। इस–प्रकार इन्द्रियों का पञ्च–प्राणों से सम्बन्ध होने के कारण उनकी साधना असुर भङ्ग कर देते थे। (यही हमारी असफलता का कारण है।)

अब देवताओं ने 'महा–प्राण' से साधना आरम्भ की। असुरों ने बहुत जोर लगाया कि किसी भी प्रकार से देवों की साधना भङ्ग हो जाए, परन्तु किसी इन्द्रिय से 'महा–प्राण' का सम्बन्ध न होने के कारण असुर देवताओं की साधना भङ्ग न कर सके और जिस–प्रकार मिट्टी का ढेला पर्वत से टकरा कर चूर–चूर हो जाता है, यही असुरों के साथ भी हुआ।

साधक स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा है। ये 'देव–असुर' उसकी अपनी 'चित्त–वृत्तियाँ' हैं। 'महा–प्राण' से साधन का अर्थ कुछ जटिल साधना से अवश्य है, किन्तु अभ्यास–पर–अभ्यास करते रहने से यह साधन सरल–सुलभ बन जाता है। मन्त्रोच्चारण में बिखरी वाणी का प्रयोग होता है, किन्तु जब साधक स्वयं जप नहीं करता, 'मन' में चल रहे जप को सुनता है, तो एकाग्रता को प्राप्त कर लेता है। अस्तु...

गत सम्वत् **'श्रीविश्वविजय–पञ्चाङ्ग'** में जो साधनात्मक विषय–विधान प्रकाशित हुए थे, उनसे असंख्य–साधक व पाठक लाभान्वित हुए —— ऐसा मुझे ज्ञात हुआ है। विषय 'साधना–कर्म' एवं 'साधना–संरक्षण' दोनों ही प्रकार से सफलीभूत हुए —— इस बात का मुझे हर्ष भी है और भविष्य में इस कर्म हेतु प्रेरणा भी! इस सम्वत् स्नेही–पाठकों व जिज्ञासु–साधकों हेतु जो साधना–विषय विधान–कर्म प्रकाशित हो रहे हैं, उनमें से कुछ अत्यन्त दुर्लभ व अभी तक सर्वथा अप्रकाशित हैं, जैसे कि **'गायत्री–सहस्रनाम'**,

'सुमुखि मातङ्गी–हृदय' अथवा 'इन्द्राक्षी–कवच'! साथ ही साथ 'श्रीलक्ष्मी–नारायण हृदय' की विशिष्ट प्रस्तुति। जिस–प्रकार गत सम्वत् में **पञ्चमुखी श्री हनुमन्त–कवच** का पूर्ण–रूप प्रकाशित हुआ था, उसी–प्रकार इस बार यहाँ अति–प्रसिद्ध व जन–जन में पाठ–रूप में प्रचलित **'बजरङ्ग–बाण'** का भी पूर्ण–रूप प्रकाशित किया जा रहा है। तथा अन्य **'महामारी स्तोत्र–विधान'** व **'इन्द्राक्षी–मन्त्र–साधन'** भी दिया जा रहा है। प्रस्तुत–प्रकाशित विषयों में सर्व–प्रथम प्रस्तुति अथर्वण–रहस्यान्तर्गत **'श्री लक्ष्मी–नारायण हृदय'** की है, जो अत्यन्त ही प्रभावशाली है। यद्यपि यह विषय कई ग्रन्थकारों ने अपने–अपने स्तोत्र–विधान–विषयक सङ्कलित ग्रन्थों में दिया है, किन्तु मात्र मूलवत् ही! यहाँ प्रकाशित यह हृदय–स्तोत्र–विधान का रूप कुछ विशिष्ट व दुर्लभ है। जैसे कि ऋष्यादि–न्यास, कर व हृदयादि–न्यास को किन–किन मुद्राओं के द्वारा सम्पन्न करें, जो कि साधना–कर्म का एक सैद्धान्तिक नियम विशेष है। साथ ही साथ भगवान् श्रीविष्णु व लक्ष्मी की साधना में प्रयोग होने आवश्यक मुद्राओं का प्रयोगात्मक वर्णन व स्पष्टीकरण भी। इस विधि से जहाँ साधनानुष्ठान में प्रचुर सफलता अग्रसर होगी! वहीं, साधक को साधनात्मक–ज्ञान की वृद्धि भी होगी। एक और दुर्लभ बात—– कि **'श्रीलक्ष्मी–हृदय'** में कर व हृदयादि–न्यास के पुनः–पुनः क्रम, जो पाठक व साधक अध्ययनोपरान्त समझेंगे और यह भी देखेंगे कि इस **'हृदय–स्तोत्र'** के प्रत्येक श्लोकों का भिन्न–भिन्न प्रकार के **'बीज–मन्त्रों'** से सम्पुटिकरण! सम्भवतः इस **'हृदय–स्तोत्र'** का ऐसा क्रम प्रथम बार ही देखने में आया है।

सविधि पूर्वक इस **'श्रीलक्ष्मी–नारायण हृदय'** के अनुष्ठान से अक्षय धन–सम्पत्ति की प्राप्ति तथा रुष्ट व्यापार–धन की अनुकूलता प्राप्त होती है —– जिसका प्रत्यक्ष अनुभव इस अल्पज्ञ ने अनेकों बार उद्योग व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों हेतु किया, जिसका फल पूर्ण–रूपेण प्राप्त हुआ है। **'श्री लक्ष्मी –कृपा'** प्राप्ति हेतु यह विधान अन्य किसी भी विधान की अपेक्षा अथवा तुलना में अति–शीघ्र व अचूक प्रभाव देने वाला एक दिव्य सिद्ध–साधन है—- ऐसा मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय के 'प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ– सङ्ग्रह' में इस विषय–विधान की पाण्डुलिपि सङ्गिहत–सुरक्षित है, जिसको संशोधित सम्पादित कर साधकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किया गया है। ध्यान रहे कि अन्य ग्रन्थों में प्रकाशित पाठ–(मूल) व प्रस्तुत पाठ के मिलान से अनेकों पाठ–भेद भी दृष्टि–गोचर होंगे! जो कि स्वाभाविक है!

।।श्रीनारायण-हृदय।।

विनियोग :-

ॐ अस्य श्रीनारायण–हृदय–स्तोत्र–मन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीलक्ष्मी–नारायणो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, नारायणायेति कीलकं, श्रीलक्ष्मी–नारायण प्रीत्यर्थे जपादि पाठे विनियोगः।

अपने दाएँ हाथ की हथेली अथवा आचमनी में जल लेकर उपरोक्त विनियोग का उच्चारण करें, पश्चात् जल को किसी पात्र में छोड़ दें। तत्पश्चात् कराङ्गुलियों से निर्मित विभिन्न मुद्राओं के द्वारा निर्देशिष्ट अङ्गों का स्पर्श करते हुए ऋष्यादि–न्यास तथा कर व हृदयादि षडङ्ग –न्यास करें।

स्पष्टीकरण :-

विनियोग में जो 'श्रीलक्ष्मी–नारायण–प्रीत्यर्थे' का उल्लेख है, वहाँ साधक अपनी अन्य कामना भी व्यक्त कर सकते हैं, जैसे 'श्रीलक्ष्मी–नारायण कृपा-प्रसाद-प्राप्त्यर्थे, नष्ट-धन-प्राप्त्यर्थे, आकास्मिक-धन प्राप्त्यर्थे.....आदि.......।

ऋष्यादि–न्यास :-

ॐ भार्गव ऋषये नमः —– शिरसि –(अङ्गूठे रहित चारों अङ्गुलियों से शिर का स्पर्श करें)।

अनुष्टप् छन्दसे नमः —– मुखे –(अङ्गूठे रहित चारों अङ्गुलियों से मुख का स्पर्श करें)।

श्री लक्ष्मी–नारायणो देवतायै नमः — हृदये –(अङ्ठे से हृदय का स्पर्श करें)।

ॐ बीजाय नमः — गुह्ये – (अङ्ठे रहित चारों अङ्लियों से गुह्य स्थान का स्पर्श करें)।

नमः शक्तै नमः — पादयोः – (अङ्ठे रहित चारों अङ्लियों से दोनों चरणों का स्पर्श करें)।

नारायणायेति कीलकाय नमः — नाभयोः– (अङ्ठे रहित चारों अङ्लियों से नाभि का स्पर्श करें)।

श्रीलक्ष्मी–नारायण प्रीत्यर्थे जपादि पाठे विनियोगाय नमः — सर्वाङ्गे – (अङ्ठे सहित सभी अङ्लियों को शिर से पैर एवं पैरों से शिर तक ले जाएँ)।

इस–प्रकार ऋष्यादि–न्यास सम्पन्न करने के पश्चात्, इष्ट–देवता का स्मरण करते हुए अपने हाथों को जल से धो लें, तत्पश्चात्, कर व हृदयादि षडाङ्–न्यास विधि सम्पन्न करें।

कर–न्यास :-

ॐ नारायणः परं ज्योतिः — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः –
(दोनों हाथों में अङ्गुठों के अग्रभागों को परस्पर मिलाएँ)

ॐ नारायणः परब्रह्मः — तर्जनीभ्यां नमः –
(दोनों हाथों की तर्जनीयों के अग्र–भागों को परस्पर मिलाएँ)।

ॐ नारायणः परो देवः — मध्यमाभ्यां नमः –
(दोनों हाथों की मध्यमाओं के अग्र–भागों को परस्पर मिलाएँ)।

ॐ नारायणः परं ध्याता — अनामिकाभ्यां नमः –
(दोनों हाथों की अनामकाओं के अग्र–भागों को परस्पर मिलाएँ)।

ॐ नारायणः परंधामः — कनिष्ठिकाभ्यां नमः –
(दोनों हाथों की कनिष्ठिकाओं के अग्र–भागों को परस्पर मिलाएँ)।

ॐ नारायणः परो धर्मः — करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः–
(दोनों हाथों की हथेलियों को परस्पर मिलाएँ पश्चात् हथेलियों को उलट–पुलट करते हुए)।

हृदयादि षडङ्ग -न्यास :-

ॐ नारायणः परं ज्योतिः — हृदयाय नमः –
(तर्जनी, मध्यमा और अनामिका से हृदय का स्पर्श करते हुए)।

ॐ नारायणः परं ब्रह्मः — शिरसे स्वाहा –
(मध्यमा और तर्जनी से शिर भाग स्पर्श करते हुए)।

ॐ नारायणः परो देवः — शिखायै वषट्–
(अङ्ठे से शिखा–स्थान का स्पर्श करते हुए)।

ॐ नारायणः परंध्याता — कवचाय हुम् –
(दाएँ हाथ की पाँचों अङ्गुलियों से बाएँ हाथ की भुजा और बाएँ हाथ की पाँचों अंङ्गुलियों से दाएँ हाथ की भुजा का स्पर्श करते हुए)।

ॐ नारायणः परंधामः — नेत्रत्रयाय वौषट्–
(तर्जनी, मध्यमा और अनामिका से नेत्रों का स्पर्श करते हुए)।

ॐ नारायणः परोधर्मः — अस्त्राय फट्–
(दाएँ हाथ की तर्जनी व मध्यमा से, बाएँ हाथ की हथेली पर तीन–बार आघात करते हुए)।

स्पष्टीकरण :-

उपरोक्त प्रस्तुत ऋष्यादि एवं कर व हृदयादि–न्यास या अन्य और भी विस्तृत 'मातृका–न्यास' आदि में कुछ साधकजन निर्दशिष्ट अङ्गों का स्पर्श, बिना 'मुद्रा' बनाये ही सम्पन्न कर लेते हैं अर्थात् अपनी सर्वाङ्गलियों से ही अङ्गों का स्पर्श कर न्यास, विधि पूर्ण कर लेते हैं। इनमें या तो विषय का ज्ञान नहीं होता अथवा/या फिर उनसे 'मुद्राओं' का अभ्यास नहीं बन पाता। कुछ साधक ऐसे भी हैं, जो न्यासान्तर्गत 'मुद्रा' का ही प्रदर्शन करते हैं, किन्तु वे अङ्गों का स्पर्श नहीं करते। 'मुद्रा' निर्माण व उनका प्रदर्शन देवताओं को अत्यन्त ही प्रिय है, इष्ट–देव की कृपा व प्रसन्नता प्राप्ति हेतु इनका प्रदर्शन अति–आवश्यक है। कुलार्णव–तन्त्र–(१७/५६)

योगिनी–हृदय–(१/५७), शारदातिलक–(२३/१०६), ज्ञानार्णव–तन्त्र–(४–३६), फेत्कारिणी–(३–१८३), कालिका–पुराण–(–७०–३३) आदि विभिन्न तन्त्र–ग्रन्थों में 'मुद्राओं' की महत्ता व अनिवार्यता पर प्रकाश डाला गया है।

स्पष्ट रूप से तो **'तन्त्र–शास्त्रों'** का यह वचन है कि मुद्रा–निर्माण व प्रदर्शन किये बिना पूजा–जप–कर्म निष्फल ही माना जाता है। मुद्रा–निर्माण–प्रदर्शन से जहाँ इस गूढ–गम्भीर विषय का ज्ञान प्राप्त होता है, साथ ही साथ वहीं साधक की शारीरिक–क्रियाओं में स्फूर्ति का उन्नत–सञ्चार भी उत्पन्न होता है, जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। यहाँ यह बात और स्पष्ट कर दें कि उपरोक्त प्रायः किन्हीं 'मुद्रा–प्रदर्शन' व निर्माण में कहीं–कहीं मत–भेद भी प्रकट होता है, जो परम्परागत भी है और शास्त्रोक्त भी! साधक को चाहिए कि इस विषय का प्रयोगात्मक अध्ययन करने हेतु कल्याण–मन्दिर प्रकाशन–(प्रयाग राज) से प्रकाशित **'मुद्राएँ एवं उपचार'** आदि कुछ और भी उक्त विषय सम्बन्धी ग्रन्थों का अनुसरण कर अपने ज्ञान को विस्तृत कर लेना चाहिए, जो साधना–दृष्टि से अनिवार्य है।

इस–प्रकार न्यासादि करने के पश्चात् 'दिग्बन्धन' करें––

दिग्बन्धन :–

ऐन्द्रादि दश–दिशं –– 'ॐ नमः सुदर्शनाय सहस्राय हुं फट् बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा' –– **इति प्रति दिशं योज्यम्।।**

● पूर्वादि प्रत्येक दिशा की ओर दृष्टिपात करते हुए, उक्त मन्त्र का उच्चारण करें, यथा प्रथम दिशा पूर्व तत्पश्चात् आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान तथा ऊर्ध्व–(ऊपर) एवं अधो–(नीचे)। इस–प्रकार क्रम से दृष्टिपात करने के पश्चात् अपने चारों ओर चुटकियाँ बजाकर 'अस्त्र–मुद्रा' द्वारा बाएँ हाथ की हथेली पर तीन–ताली बजाएँ।

● दाएँ हाथ की– तर्जनी व मध्यमाङ्गुली को फैलाकर, अङ्गुष्ठ से अनामिका की कनिष्ठिकाङ्गुली को दबाएँ तो 'अस्त्र–मुद्रा' का निर्माण होता है, जिसका प्रदर्शन। प्रयोग उपरोक्त 'हृदयादि षडङ्ग –न्यास' के अन्तिम क्रम तथा उक्त 'दिग्बन्धन' के लिए किया जाता है।

'दिग्बन्धन' के पश्चात् भगवान् श्री नारायण का ध्यान करें––

ध्यान :

उद्यदादित्य सङ्काशं पीतवास समच्चयुतम्।
शङ्ख –चक्र–गदा–पाणिं ध्यायेल्लक्ष्मी पतिं हरिम्।।

ध्यान के पश्चात् 'मानस–पूजन' करें ––

मानस–पूजन :–

१. अधोमुख कनिष्ठाङ्गुष्ठ से **'गन्ध–मुद्रा'** दिखाते हुए––
ॐ लं पृथ्वी–तत्वात्मकं गन्धं भगवन् श्रीनारायण प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।

२. अधोमुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए–
ॐ हं आकाश–तत्वात्मकं पुष्पं भगवन् श्रीनारायण प्रीतये समर्पयामि नमः।

३. ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए–
ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं भगवन् श्रीनारायण प्रीतये घ्रापयामि नमः।

४. ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से **'दीप–मुद्रा'** दिखाते हुए–
ॐ रं अग्नि–तत्वात्मकं दीपं भगवन् श्रीनारायण प्रीतये दर्शयामि नमः।

५. ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से **'नैवेद्य–मुद्रा'** दिखाते हुए–
ॐ वं जल–तत्वात्मकं नैवेद्यं भगवन् श्रीनारायण प्रीतये निवेदयामि नमः।

६. ऊर्ध्व–मुख सर्वाङ्गुलियों से **'ताम्बूल–मुद्रा'** दिखाते हुए –
ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं भगवन् श्रीनारायण प्रीतये कल्पयामि नमः।

मुद्रा–प्रदर्शन :–

'मानस–पूजन' करने के पश्चात् भगवान् श्रीनारायण को प्रसन्न करने वाली कुछ 'मुद्राओं' का प्रदर्शन करें, यथा ––

शङ्ख :–

बाएँ हाथ के अङ्गूठे को दाएँ हाथ की मुठ्ठी में लेकर, बाएँ हाथ की

चारों अङ्गुलियों को सीधी करके, दाएँ हाथ की मुट्ठी को दबाएँ और दाएँ हाथ के अङ्गूठे का अग्र–भाग तर्जनी–अङ्गुली के अग्र–भाग में लगाए, तो **'शङ्ख –मुद्रा'** निर्मित होती है।

चक्र :-

दोनों हाथों को परस्पर देखते हुए सभी अङ्गुलियों को भली–भाँति फैला दें तथा कनिष्ठाओं को अङ्गूठों से स्पर्श करा दें, तो **'चक्र–मुद्रा'** निर्मित होती है।

गदा :-

दोनों हाथ आपस में सम्मुख करके परस्पर अङ्गुलियाँ गूँथ दें और बीच में फैले हुए अङ्गूठे उनमें लगा दें, तो **'गदा–मुद्रा'** निर्मित होती है।

पद्म :-

दोनों हाथों को परस्पर मिलाकर पुष्प की कली के समान खड़ी कर दें और दोनों अङ्गूठे उनके भीतर तलभाग में लगा दे, तो **'पद्म–मुद्रा'** निर्मित होती है।

स्पष्टीकरण -

यद्यपि भगवान् श्रीनारायण–(विष्णु) की साधना–उपासनाकर्म में 'उन्नीस–मुद्राओं' का उल्लेख 'ग्रन्थों' में मिलता है, जिनमें 'चार–मुद्राएँ' उपरोक्त हैं, शेष मुद्राएँ ––– वेणु, श्रीवत्स, कौस्तुभ, वनमाला, ज्ञान, बिल्याख्य, गरूड, नारसिंही, वराह, हयग्रीव, परशु, धनुष, बाण, काम तथा त्रैलोक्य–मोहिनी है। इनमें उक्त 'चार–मुद्राएँ' विशेष हैं, इसी–कारण इन विशेष–मुद्राओं की निर्माण–विधि भी वर्णित कर दी गयी है। साधक यदि चाहे तो उक्त उल्लेखित सभी मुद्राओं का प्रदर्शन भी कर सकते हैं। सचित्र–रूप से इन मुद्राओं के निर्माण की विधि मुद्रा–सम्बन्धी कई प्रकाशित में आई हैं। वैसे उक्त 'मुद्राओं' में से कुछ का प्रदर्शन 'गायत्री–उपासना'–(संध्या–कर्म) में भी किया जाता है।

'मुद्राओं' के प्रदर्शन के पश्चात् भगवान् श्री नारायण के मूल–मन्त्र का १०८ बार जप 'श्वेत–चन्दन' की माला पर करें –

मन्त्र :-

ॐ नमो नारायणाय।

जप के पश्चात् 'मूलाष्टक', तत्पश्चात् 'प्रार्थना–दशक' का पाठ करें –

।। मूलाष्टक ।।

ॐ नारायणः परं ज्योतिरात्मा नारायणः परः।
नारायणः परब्रह्मः नारायण नमोऽस्तु ते।।
नारायणः परो देवो दाता नारायणः परः।
नारायणः परो ध्याता नारायण नमोऽस्तु ते।।
नारायणः परंधामः ध्यानं नारायणः परः।
नारायणः परोधर्मो नारायण नमोऽस्तु ते।।
नारायणः परा–विद्या वैद्यो नारायणः परः।
विश्वं नारायणः साक्षात् नारायण नमोऽस्तु ते।।
नारायणाद्विधिर्जातो जातो नारायणच्छिवः।
जातो नारायणादिन्द्रो नारायण नमोऽस्तु ते।।
रविर्नारायणस्तेजश्चन्द्रो नारायणो महः।
वह्निर्नारायणः साक्षात् नारायण नमोऽस्तु ते।।
नारायणः उपास्यः स्याद् गुरुर्नारायणः परः।
नारायणः परोबोधो नारायण नमोऽस्तु ते।।
नारायणः फलं मुख्यं सिद्धिर्नारायणः सुखम्–(शुभम्)।
सेव्यो नारायणः शुद्धो नारायण नमोऽस्तु ते।।

।। इति मूलाष्टकम् ।।

।। प्रार्थना-दशक पाठ ।।

नारायणस्त्वमेवासि दहराख्ये हृदि स्थितः।
प्रेरकः प्रेर्यमाणानां त्वया प्रेरित मानसः।।
त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा जपामि जन–पावनम्।

नानोपासन मार्गाणां भावहृद् भाव बोधकः।।
भावार्थ कृद्भाव भूतो भाव सौख्यप्रदो भव।
त्वन्माया मोहितं विश्वं त्वयैव परिकल्पितम्।।
त्वदिष्ठान मात्रेण सैषा सर्वार्थ–कारिणी।
त्वमेव तां पुरस्कृत्य मम कामान् समर्पय।।
न मे त्वदन्यस्त्राताऽस्ति त्वदन्यं नहि दैवतम्।
त्वदन्यं नहि जानामि पालकं पुण्य–रूपकम्–(वर्धनम्)।।
यावत् सांसारिको भावो मनःस्थो भावनात्मकः।
तावत्सिद्धिर्भवेत्साध्या सर्वथा सर्वदा विभो।।
पापिनामहमेवाग्रे दयालुनां त्वमग्रणीः।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये।।
त्वयाप्याहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता।
आमयो नैव सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः।।
पाप संघ परिक्रान्तः पापात्मा पाप रूपधृक्।
त्वदन्यः कोऽत्र पापेभ्य स्त्राता मे जगती तले।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुःश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देव।।

॥ फलश्रुति ॥

प्रार्थना दशकं चैव मूलाष्टक मुदाहृतम्।
यः पठेत् श्रृणुयान्नित्यं तस्य लक्ष्मी स्थिरा भवेत्।।
नारायणस्य हृदयं सर्वाभिष्ट फलप्रदम्।
लक्ष्मी हृदयकं स्तोत्रं यदि चेत्तद्विना कृतम्।।
तत्सर्वनिष्फलं प्रोक्तं लक्ष्मीः क्रुध्यति सर्वदा।
एतत् सङ्कलितं स्तोत्रं सर्वकर्म फलप्रदम्।।
लक्ष्मी हृदयकं चैव तथा नारायणात्मकम्।
जपेद्यः सङ्कलीकृत्य सर्वाभिष्टमवाप्नुयात्।।
नारायणस्य हृदयमादौ जप्त्वा ततः परम्।
लक्ष्मी–हृदयकं स्तोत्रं जपे नारायणं पुनः।।
पुनर्नारायणं जप्त्वा पुनर्लक्ष्मीकृतं जपेत्।
पुनर्नारायण जाप्यं सङ्कलीकरणं भवेत्।।
एवं मध्ये द्विवारेण जपत्सङ्कलितं हि तत्।
लक्ष्मी–हृदयकं स्तोत्रं सर्वकर्म प्रकाशितम्।।
तद्वज्जपादिकं कुर्यादेतत्सङ्कलितं शुभम्।
सर्वान्कामान् वाप्नोति, आधि–व्याधि–भयं हरेत्।।
गोप्यमेतत्सदा कुर्यान्न सर्वत्र प्रकाशयेत।
इति गुह्यतमं शास्त्रं प्राप्तं ब्रह्मादिकैः पुराः।।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन गोपयेत्साधयेत्सुधीः।
यत्रैतत्पुस्तकं तिष्ठेत् लक्ष्मी–नारायणायत्मकम्।।
भूतप्रेतश्च वेतालाः न स्थिरास्तत्र सर्वदा।
लक्ष्मी–हृदयकं प्रोक्तं विधिना साधयेत्सुधीः।।
भृगुवारे च रात्रौ च पूजयेत्पुस्तकद्वयम्।।
सर्वथा सर्वदा सत्यं गोपयेत्साधये सुधीः गोपनात्या।
धवन्याल्लोके धन्यो भवति तत्वतः।।
।।इत्यथर्वण–रहस्ये उत्तर–भागे श्रीनारायण–हृदय शुभम्।।

।। श्रीलक्ष्मी-हृदय ।।

विनियोग :-

ॐ अस्य श्रीमहालक्ष्मी–हृदय–माला–मन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, अनुष्टुपादि नाना–छन्दासि, ॐ श्रीं बीजं, ॐ ह्रीं शक्तिः, ॐ ऐं कीलकम् आद्यादि श्री महालक्ष्मी वर–प्रसाद सिद्धयथें जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :-

ॐ भार्गव ऋषये नमः–––––शिरसि। ॐ अनुष्टुपादि नाना छन्दोभ्यो नमः।––––– मुखे ॐ अद्यादि श्रीमहालक्ष्मी देवतायै नमः ––––– हृदये। ॐ

श्रीं बीजाय नमः ----- गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः ----- पादयो। ॐ ऐं कीलकाय नमः ----- नाभयोः। आद्यादि श्रीमहालक्ष्मी वर-प्रसाद विद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः -- सर्वाङ्गे।

कर-न्यास :-

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः-----अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं विष्णु वामाङ्ग-संस्थितायै नमः ----- तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं श्रीमत्सौभाग्य-जनन्यै नमः ----- मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं विज्ञान-सम्पत्सुखदायै नमः ----- अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं समस्त सौभाग्य-कर्त्र्यै नमः ----- कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं समस्त भूतान्तर संस्थितायैनमः ----- करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-न्यास :-

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ----- हृदयाय नमः। ॐ श्रीं विष्णु वामाङ्ग-संस्थितायै नमः ----- शिरसे स्वाहाः। ॐ श्रीं श्रीमत्सौभाग्य-जनन्यै नमः ----- शिखायै वषट्। ॐ श्रीं विज्ञान-सम्पत्सुखदायै नमः ----- कवचाय हुम्। ॐ श्रीं समस्त सौभाग्य-कर्त्र्यै नमः ----- नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रीं समस्त भूतान्तर संस्थितायै नमः ----- अस्त्राय फट्।

कर-न्यास :-

ॐ श्रां ----- अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ----- तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रूं ----- मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रैं ----- अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रौं----- कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रः ----- करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्ग-न्यास :-

ॐ श्रां ----- हृदयाय नमः। ॐ श्रीं ----- शिरसे स्वाहा। ॐ श्रूं ----- शिखायै वषट्। ॐ श्रैं ----- कवचाय हुम्। ॐ श्रौं ----- नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ श्रः ----- अस्त्राय फट्।

कर-न्यास :-

ॐ श्रीं ॐ ----- अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं ॐ ----- तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं ॐ ----- मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ॐ ----- अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं ॐ ----- कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ॐ ----- करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-न्यास :-

ॐ श्रीं ॐ ----- हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं ॐ ----- शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं ॐ ----- शिखायै वषट्। ॐ श्रीं ॐ ----- कवचाय हुम्। ॐ ह्रीं ॐ ----- नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ॐ ----- अस्त्राय फट्।

● उक्त सभी न्यास पूर्व में **'विष्णु-हृदय'** में बताई गई 'मुद्राओं' के अनुसार सम्पन्न करें।

दिग्बन्धन :-

पूर्व की भाँति करें।

।। ध्यान ।।

पीतवासां सुवर्णाङ्गी पद्म हस्तां गजान्विताम्।
लक्ष्मी ध्यानेन मन्त्रेण स भवेत पृथ्वी पतिः।।
हस्तद्वयेन कमले धारयन्ति स्वलीलया।।
हार नूपुर संयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तयेत्।।
या स पद्मासनस्था विपुलकटि तटी पद्म पत्रायतादक्षीम्।
गम्भीरावर्त नाभिं स्तन-भर नमिता शुभ्रवस्त्रोतरीया।।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रै मणिगणखचितैस्नापिताहेमकुम्भैः।
नित्यं सा पद्महस्ता वसतु मम गृहे सर्वमाङ्गल्य युक्ता ।।
वन्देलक्ष्मीं पर शिवमयीं शुद्ध जाम्बूनदाभाम्।
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम्।।
बीजापूरं कनक-कलशं हेम पद्मदधानाम्।
आद्या शक्तिं सकल जननीं विष्णु वामाङ्ग-संस्थाम्।।

ध्यान के पश्चात् 'मानस-पूजन' करें।

मानस-पूजन :-

१. अधोमुख कनिष्ठाङ्गुष्ठ से **'गन्ध-मुद्रा'** दिखाते हुए-

ॐ लं पृथ्वी–तत्वात्मकं गन्धं देवी श्रीमहालक्ष्मी प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।

२. अधोमुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए–

ॐ हं आकाश–तत्वात्मकं पुष्पं देवी श्रीमहालक्ष्मी प्रीतये समर्पयामि नमः।

३. ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए–

ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं देवी श्रीमहालक्ष्मी प्रीतये घ्रापयामि नमः।

४. ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से **'दीप–मुद्रा'** दिखाते हुए–

ॐ रं अग्नि–तत्वात्मकं दीपं देवी श्रीमहालक्ष्मी प्रीतये दर्शयामि नमः।

५. ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से **'नैवेद्य–मुद्रा'** दिखाते हुए–

ॐ वं जल–तत्वात्मकं नैवेद्यं देवी श्रीमहालक्ष्मी प्रीतये निवेदयामि नमः।

६. ऊर्ध्व–मुख सर्वाङ्गुलियों से **'ताम्बूल–मुद्रा'** दिखाते हुए –

ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं देवी श्रीमहालक्ष्मी प्रीतये कल्पयामि नमः।

प्रार्थना :-

ॐ शङ्ख–चक्र–गदा हस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनी।
मां देही वरं लक्ष्मी सर्व–सिद्धि प्रदायिनी।।

मन्त्र जपने के पश्चात् **'श्रीलक्ष्मी–हृदय स्तोत्र'** का पाठ करें। प्रार्थना के पश्चात् नीचे लिखे, भगवती महालक्ष्मी के मूल मन्त्र का १०८ बार जप 'कमल–गट्टे' की माला पर करें तथा मन्त्र जपने के पश्चात् पुनः कर व हृदयादि–न्यास सम्पन्न करें।

मन्त्र :-

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमल–धारण्यै सिंह–वाहिन्यै स्वाहा।

।। हृदय-पाठ ।।

श्रीं श्रीं श्रीं।। वन्दे लक्ष्मी पर शिवमयीं शुद्ध जाम्बूनदाभां,
तेजो रूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्जवलाङ्गीम्।
बीजापूरं कनक–कलशं हेमपद्मं दधानां,
आद्या शक्तिं सकल जननीं विष्णु वामाङ्ग संस्थाम्।। श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।। श्रीमत्सौभाग्य जननीं स्तोमि सनातनीम्।
सर्व काम फलावाप्तिं साधनैक सुखावहाम्।। श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।। स्मरामि नित्यं देवेशि! त्वया प्रेरित मानसः।
त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीम्।। श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।। समस्त सम्पत्सुखदां महाश्रियं, समस्त सौभाग्यकरीं महाश्रियम्।
समस्त कल्याणकरीं महाश्रियं, भजाम्यहं ज्ञान करीं महाश्रियम्।। श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।।
विज्ञान सम्पत्सुखदां सनातनीं, विचित्र वग्विभूति करीं मनोहराम्।
अनन्त समोद सुख प्रदायिनीं, नमाम्यहं भूति करीं हरि–प्रियाम्।।
श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।। समस्त भूतान्तर संस्थिता त्वं, समस्त भोक्त्रीश्वरि! विश्वरूपे।
तन्नास्ति यत्वद् व्यतिरिक्ति वस्तु, त्वत्पाद पद्म प्रणमाम्यहं श्रीः।। श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।। दारिद्रय दुःखौघ तमोऽपहन्त्रि, त्वत्पादपद्म मयि सन्निधत्वम्।
दीनार्ति विच्छेदन हेतुभूतैः, कृपा कटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः।। श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।।
अम्ब प्रसीद करूणा सुधयार्द्र दष्ट्या, मां त्वत्कृपा द्रविणं गेह मिमं कुरूष्व।
आलोकय प्रणत हृदगत शोक हन्त्री, त्वत्पादपद्म युगलं प्रणमाम्यहं श्रीः।।
श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।।
शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागत रक्षणायै, कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीय गुणा श्रयायै।
क्षान्त्यै नमोऽस्तु दुरित क्षय कारणायै, धात्र्यै नमोऽस्तु धन–धान्य समृद्धिदायै।।
श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।।
शक्त्यै नमोऽस्तु शशि–शेखर संस्तुतायै, रत्यै नमोऽस्तु रजनीकर सोदरायै।
भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागर तारकायै, मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदन वल्लभायै।।
श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।।

लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभ लक्षण लक्षितायै, सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिव–सिद्धि सुपूजितायै।
धृत्यै नमोऽस्तु अमित दुर्गति भञ्जनायै, गत्यै नमोऽस्तु वर सद्गति दायिकायै।।
श्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं श्रीं।।
देव्यै नमोऽस्तु दिवि देव गणार्चितायै, भूत्यै नमोऽस्तु भुवनार्ति विनाशनायै।
दात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधर वल्लभायै, पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै।।
श्रीं श्रीं श्रीं।।

ह्रीं ऐं।। सुतीव्र दारिद्रय विदुःख हन्त्र्यै, नमोऽस्तुते सर्वभयापहन्त्र्यै।
श्रीविष्णु वक्षस्थल संस्थितायै, नमो नमः सर्व विभूतिदायै।। ऐं ह्रीं।।

ऐं ज्रीं।।
जयतु जयतु लक्ष्मीर्लक्षणालं कृताङ्गी, जयतु जयतु पद्मा पद्म सद्माभिवन्द्या।
जयतु जयतु विद्या विष्णु वामाङ्क संस्था, जयतु जयतु सम्यक् सर्वसम्पतकरी श्रीः।।
ज्रीं ऐं।।

ऐं ज्रीं।।
जयतु जयतु देवी देव सङ्घामि पूज्या, जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्य रूपा।
जयतु जयतु नित्या निर्मलज्ञान वेद्या, जयतु जयतु सत्या सर्व भूतान्तरस्था।।
ज्रीं ऐं।।

ऐं ज्रीं।।
जयतु जयतु रम्या रत्न गर्भान्तरस्था, जयतु जयतु शुद्धा शुद्ध जाम्बूनदाभा।
जयतु जयतु कान्ता कान्तिमद् भासिताङ्गी, जयतु जयतु शान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये।।
ज्रीं ऐं।।

ज्रीं श्रीं क्लीं।। यस्याः कलाद्याः कमलोद्भवाद्याः, रूद्राश्च शक्र प्रमुखाश्चदेवाः।
जीवन्ति सर्वा अपि शक्तयस्ताः, प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषस्ते।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

पाद-स्थाने :-

ॐ अं आं ईं ऐं यं रं पं कं लं नं यं ङं हं

ज्रीं श्रीं क्लीं।। लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यापरं,
त्वया विलिखितव्य मेतदिति तत्फल प्राप्तये।
तदन्तर फले स्फुटं कमल–वासिनी श्रीरिमां,
समर्पय स्वमुद्रिकां सकल भाग्य संसूचिकाम्।।क्लीं श्रीं ज्रीं।।

मुख-स्थाने :-

ॐ ह्रां ह्रीं ऐं श्रीं श्रीं यं ह्रीं रौं आं मृं यं वं सं

ज्रीं श्रीं क्लीं।। कलया ते यथा देवि! जीवन्ति सचरा चराः।
तथा सम्पत्करे लक्ष्मीःसर्वदा संप्रसीद मे।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

ज्रीं श्रीं क्लीं।। यथा विष्णुर्ध्रुवे नित्यं स्व कलां संन्यवेशयेत्।
तथैव स्व कलां लक्ष्मी मयि सम्यक् समर्पय।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

ज्रीं श्रीं क्लीं।। सर्व सौख्यप्रदे देवि! भक्तानामभयप्रदे।
अचलां कुरू यत्नेन कलां मयि निवेशिताम्।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

ज्रीं श्रीं क्लीं।। मुदारतां मद्भाले परमपद लक्ष्मी स्फुट कला,
सदा वैकुण्ठ श्रीर्निवसतु कला मे नयनयोः।
वसेत्सत्ये लोके मम वचसि लक्ष्मीर्वरकला (करा),
श्रियः श्वेत–द्वीपे निवसतु कला मेऽस्तु–(स्व) करयोः।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

ज्रीं श्रीं क्लीं।। तावन्नित्यं ममाङ्गेषु क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत्।
सूर्याश्चन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मी पतिः श्रियाः।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

ज्रीं श्रीं क्लीं।। सर्व–मङ्गल सम्पूर्णा सर्वैश्वर्य समन्विता।
आद्यादि श्रीर्महालक्ष्मीस्त्वत्कला मयि तिष्ठतु।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

नेत्र-बीजम् :-

घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रैं घ्रौं श्रीं घ्रं घ्रः

ज्रीं श्रीं क्लीं।। अज्ञान तिमिरं हन्तुं शुद्ध ज्ञान प्रकाशिका।
सर्वैश्वर्य प्रदा मेऽस्तु त्वकलामयि संस्थिता।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

ज्रीं श्रीं क्लीं।। अलक्ष्मीःहरतु क्षिप्रं तमः सूर्य प्रभा यथा।
वितनोतु मम श्रेयः त्वत्कला मयि संस्थिता।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

ज्रीं श्रीं क्लीं।। ऐश्वर्य मङ्गलोत्पत्तिस्त्वत्कलायाः निधीयते।

मयि तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमस्मि स्थिते तव।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।
ज्रीं श्रीं क्लीं।। भवदावेश भाग्योऽहं भाग्यवानस्मि भार्गवि!।
त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोस्तु ते।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।

जिह्वा-बीजम् :-

ॐ हं ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं हः

ज्रीं श्रीं क्लीं।। पुनासि मां त्वं कलयैव यस्मादतः समागच्छ ममाग्रतस्त्वम्।
परं पदं श्रीर्भव सुप्रसन्ना मय्यच्युतेन प्रविशादि लक्ष्मीः।। क्लीं श्रीं ज्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। श्रीवैकुण्ठ स्थिते लक्ष्मीः समागच्छ ममाग्रतः।
नारायणेन सह मां कृपा दृष्ट्याऽवलोकय।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। सत्य-लोक स्थिते लक्ष्मीस्त्वं ममागच्छ सान्निधिम्।
वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। श्वेत-द्वीप स्थिते लक्ष्मीःशीघ्रमागच्छ सुव्रते।
विष्णुना सहिते देवि! जगन्मातः प्रसीद मे।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। क्षीराम्बुधि स्थिते लक्ष्मीः समागच्छ समाधवे।
त्वत्कृपादृष्टि सुधया सततं मां विलोकय।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। रत्न-गर्भ स्थिते लक्ष्मी परिपूर्ण हिरण्मयी।
समागच्छ समागच्छ स्थित्वाशु पुरतो मम।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। स्थिरा भव महालक्ष्मीः निश्चला भव निर्मले।
प्रसन्नैकमले देवि! प्रसन्न वरदा भव।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। श्रीधरे श्रीमहाभूते त्वदन्तरस्थं महानिधिम्।
शीघ्रमुद्धृत्य पुरतः प्रदर्शय समर्पय।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। वसुन्धरे श्री वसुधे वसुदोग्घ्रि कृपां मयि।
त्वत्कुक्षिगत सर्वस्वं शीघ्रं मे सम्प्रदर्शय।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। विष्णु-प्रिये! रत्न-गर्भे! समस्त फलदे शिवे!।
त्वद्गर्भगत हेमादीन् संप्रदर्शय दर्शय।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। रसातल गते लक्ष्मीः शीघ्रमागच्छ मे पुरः।
न जाने परमं रूपं मातर्मे संप्रदर्शय।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः।
मा वत्सभैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम्।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। देवि! शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भ संस्थिते।
मातस्त्वद्भृत्य भृत्योऽहं मृगये त्वां कुतूहलात्।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। उतिष्ठ जागृहि त्वं मे समुत्तिष्ठ सुजागृहि।
अक्षयान् हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान्।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। निक्षेपान्मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाग्रतः।
समुन्नताननना भूत्वा समाधेहि धरान्तरात्।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृणरसात्।
प्रसीद श्रेयशां दोग्घ्रि लक्ष्मीर्मे नयनाग्रतः।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। अत्रोपविश लक्ष्मीस्तवं स्थिराभव हिरण्मयी।
सुस्थिरा भव सम्प्रीत्या प्रसीद वरदा भव।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। आनीय त्वं तथा देवि! निधिन्मे सम्प्रदर्शय।
अद्य क्षणेन सहसा दत्वा संरक्ष मां सदा।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि।
अभयं कुरू मे देवि! महालक्ष्मीर्नमोऽस्तु ते।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। समागच्छ महालक्ष्मीः शुद्धजाम्बूनद प्रभे।
प्रसीद पुरतःस्थित्वा प्रणतं मां विलोकय।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। लक्ष्मीर्भुवं गता भासि यत्र यत्र हिरण्मयी।
तत्र तत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। क्रीडसे बहुधा भूमौ परिपूर्णा कृपामयि।
मम मूर्ध्नि स्थिते हस्तमविलम्बितमर्पयः।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। फलदभाग्योदये लक्ष्मीः समस्तपुरवासिनी।
प्रसीद मे महालक्ष्मीः परिपूर्ण मनोरथे।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते।

देभवैर्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। समागच्छ समागच्छ ममाग्रे भव सुस्थिरा।
करूणारस निस्पन्द नेत्रद्वय विलासिनी।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्री क्लीं श्रीं ह्रीं।। सन्निधत्स्व महालक्ष्मीस्त्वन्त्पाणि मस्तके।
करूणासुधया मां त्वं अभिषिञ्च स्थिरं कुरु।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। सर्वराज गृहे लक्ष्मीः समागच्छ मुदान्विते।
स्थित्वाशु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाभयङ्कुरु।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। सादरं मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयाऽर्पय।
सर्वराज गृहे लक्ष्मीस्त्वत्कलामयि तिष्ठतु।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। आद्यादि श्रीर्महालक्ष्मीर्विष्णुवाङ्क संस्थिते।
प्रत्यक्षं कुरू मे रूपं रक्ष मां शरणागतम्।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। प्रसीद मे महालक्ष्मीः सुप्रसीद महाशिवे!।
अचला भव सम्प्रीत्या सुस्थिरा भव मद्गृहे।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। यावत्तिष्ठन्ति वेदाश्च यावत्त्वन्नाम तिष्ठति।
यावद्विष्णुश्च यावत्वं तावत्कुरु कपां मयि।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। चान्द्री कला यथा शुक्ले वर्धते सा दिने दिने।
तथा दया ते मय्येव वर्धतामभिवर्धताम्।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।। यथा वैकुण्ठ–नगरे यथा वै क्षीर–सागरे।
तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरं श्रीविष्णुना सह।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं।।
योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना।
तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा त्वम् श्रीविष्णुना सह ।। ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।
श्रीं क्लीं श्रीं ह्री।।
नारायणस्य हृदये भवती यथाऽऽस्ते, नारायणोऽपि तव हृत्कमले यथाऽऽस्ते।
नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव, तौ तिष्ठतां हृदि ममापि दयावती श्रीः।।
ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं क्लीं।।
विज्ञान–वृद्धिं हृदये कुरू श्रीः, सौभाग्य–वृद्धिं कुरू मे गृहे श्रीः।
दया–सुवृद्धिं कुरुतां मयि श्रीः, सुवर्ण–वृष्टिं कुरू मे करे श्रीः।।
क्लीं ऐं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं।।

श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं क्लीं।।
न मां त्यजेथाःश्रितकल्पवल्लि, सद्भक्ति चिन्तामणि कामधेनो।
विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना, गृहे कलत्रेषु च पुत्र वर्गे।।
क्लीं ऐं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं।।

कुक्षि-बीजम् :-

ॐ प्रं ईं यं ऐं वों

ॐ आं ईं हं ॐ।।
आद्यादि माये त्वमजाण्ड बीजं, त्वमेव साकार निराकृतिस्त्वम्।
त्वया धृताश्चाब्ज भवाण्ड सङ्घाः, चित्र चरित्रं तव देवि! विष्णोः।।
ॐ आं हं ईं आं ॐ।।

ॐ आं ईं हं ॐ।। ब्रह्म–रुद्रादयो देवाः वेदाश्चापि न शुक्नुयुः।
महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शक्नुयां कथम्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। अम्बत्वद्वत्स वाक्यानि सूक्तासूक्तानि यानि च।
तानि स्वीकुरू सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातना।
इति सञ्चित्य मनसा त्वामहं शरण व्रजे।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। अनन्ताः नित्य–सुखिनः त्वद्भक्ताः त्वत्परायणाः।
इति वेद प्रमाणाद्धि देवि! त्वां शरणं व्रजे।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्तीत्यपि क्वचित्।
इति सञ्चित्य सञ्चित्य प्राणान सन्धारयाम्यहम्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपामयि विद्यते।
यावत्सम्पूर्णकामस्यात् तावद्देहि दयानिधे।। ॐ हं ईं आं ॐ।।

ॐ आं ईं हं ॐ।। क्षणमात्रं न शक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपा विना।
न जीवन्तीह जलजाः जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। यथा हि पुत्र वात्सल्याज्जननी प्रस्नुतस्तनी।
वत्सं त्वरितमागत्य सम्प्रीणयति वत्सला।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। यदि स्यात्तव पुत्रोऽहं माता त्वं यदि मामकी।
दयापयोधरस्तन्य सुधाभिरभिषिञ्च माम्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दोषैक मन्दिरे।
पांसूनां वृष्टि विन्दूनां दोषाणां च न मे मितिः।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। पापीनामह मेवाग्रयो दयालूनां त्वमग्रणीः।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। विधिनाहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता।
आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। कृपा मदग्रजा किं ते अहं किं वा तदग्रजः।
विचार्य देहि मे वित्तं तव देवि! दयानिधे।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। माता पिता त्वं गुरुः सद्गतिश्रीः, त्वमेव सञ्जीवन हेतु भूता।
अन्यन्न मन्ये जगदेक नाथे, त्वमेव सर्वं मम देवि! सत्ये।। ॐ हं ईं आं ॐ।।

हृदय-बीजम् :-

ॐ श्रीं क्रां क्रीं क्रौं फट् कुरु कुरु स्वाहा

ॐ आं ईं हं ॐ।। आद्यादि लक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना, विशुद्ध विज्ञान सुखैक दोग्ध्री।
अज्ञान हन्त्री त्रिगुणातिरिक्ता, प्रज्ञान नेत्री भव सुप्रसन्ना।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।।
अशेष वाग्जाड्य मलापहन्त्री, नवं नवं स्पष्ट सुवाक्य प्रदायिनी।
ममेह जिह्वाग्र सुरङ्ग नर्तकी, भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः।।
ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। समस्त सम्पत्सु विराजमाना, समस्त तेजश्च या भाषमाना।
विष्णु-प्रिये! त्वं भवदीप्यमाना, वाग्देवता मे वदने (नयने) प्रसन्ना।। ॐ हं ईं आं ॐ।।

ॐ आं ईं हं ॐ।। सर्व प्रदेशे सकलार्थदे त्वं, प्रभासुलावण्य दया प्रदोग्ध्री।
सुवर्ण देत्वं सुमुखी भवश्रीः, हिरण्यमयी मे नयने प्रसन्ना।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। सर्वार्थदा सर्व जगत्प्रसूतिः, सर्वेश्वरी सर्व भयापहन्त्री।
सर्वोन्नता त्वं सुमुखी भवश्रीः, हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। समस्त विघ्नौघ विनाशकारिणी, समस्त भक्तोद्धरणे विचक्षणा।
अनन्त सौभाग्य सुख प्रदायिनी, हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।।
देवि! प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं, देवाधिनाथ भव देव गणाभिवन्द्ये।
मातस्तथैव भव सन्निहिता दृशोर्मे, प्रीत्या समं मम मुखे भव सुप्रसन्ना।।
ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।।
मा वत्स भैरभयदान करोऽर्पितस्तै, मौलौ ममेति मयि दीन दयानुकम्पे।
मातः समर्पय मुदा करूणा कटाक्षं, माङ्गल्य बीजमिह नः सृज जन्म मातः।।
ॐ हं ईं आं ॐ।।

कण्ठ-बीजम् :-

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः

ॐ आं ईं हं ॐ।। कटाक्ष इह कामधुक् तव मनस्तु चिन्तामणिःकरः,
सुर तरूः सदा नवनिधिस्त्वमेवेन्दिरे।
भवेत्तव दया रसो रस रसायनं चान्वहं,
मुखं तव कलानिधिर्विविध वाञ्छितार्थ प्रदम्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। यथा रसस्पर्शनतोऽयसोऽपि, सुवर्णता स्यात्कमले तथा ते।
कटाक्ष संस्पर्शनतो जनानां, अमङ्गलानामपि मङ्गलत्वम्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। देहीति नास्तीति वचः प्रवेशात्, भीतो रमे त्वां शरणं

प्रपद्ये।
अतः सदाऽस्मिन् अभयप्रदा त्वं, सहैव पत्या मयि सन्निधेहि।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।।
कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या, श्रीरस्ते कला मयि रसेन रसायणेन।
आस्तां यतो मम च दृक् शिरपाणि पादस्पृष्टाः सुवर्ण वपुषः स्थिर जङ्गमास्युः।।
ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। अद्यादि विष्णोः स्थिरधर्मपत्नि, त्वमेव पत्या मयि सन्निधेहि।
अद्यादि लक्ष्मि! त्वदनुग्रहेण, पदे पदे मे निधि–दर्शनं स्यात्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। आद्यादि लक्ष्मी!हृदयं पठेद्यः, स राज–लक्ष्मीमचलां तनोति।
महादरिद्रोऽपि भवेद्धनाढ्यः, तदन्वये श्रीः स्थिरतां प्रयाति।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। यस्य स्मरण मात्रेण तुष्टा स्याद्विष्णु वल्लभा।
तस्याभीष्टं ददात्याशु तं पालयति पुत्रवत्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। इदं रहस्यं हृदयं सर्वकाम फलप्रदम्।
जपः पञ्च–सहस्त्रं तु पुरश्चरणमुच्यते।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। त्रिकालमेक कालं वा नरो भक्ति समन्वितः।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गव–वासिरे।
इदं श्रीहृदये जप्त्वा पञ्चवारं धनी भवेत्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। अनेन हृदयेनान्नं गर्भिण्या अभिमन्त्रितम्।
ददाति तत् कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। नरेण वाऽथवा नार्या लक्ष्मी–हृदय–मन्त्रिते।
जले पीते च तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। यः आश्विने–मासि शुक्ल–पक्षे, रमोत्सवे सन्निहितैक भक्त्या।
पठेत्तथैकोत्तर वार वृद्धया, लभेत् स सौवर्णमयीं सुवृष्टिम्।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।।
यः एक भक्तोऽन्वहमेक वर्षं, विशुद्धधीः सप्तति वार जापी।
स मन्दभाग्योऽपि रमाकटाक्षात्, भवेत् सहसाक्ष शताधिकश्रीः।।
ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।।
श्री शांघ्रि भक्तिं हरिदास दास्यं, प्रसन्न मन्त्रार्थ दृढैक निष्ठाम्।
गुरोःस्मृतिं निर्मलबोध बुद्धिं, प्रदेहि मातः परमं पदं श्रीः।।
ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।।
पृथ्वीपतित्वं पुरूषोत्तमत्वं, विभूति वासं विविधार्थ–सिद्धिम्।
सम्पूर्ण कीर्तिं बहुवर्ष भोगं, प्रदेहि मे देवि! पुनः पुनस्त्वम्।।
ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।।
वादार्थ सिद्धिं बहुलोकवश्यं, वयः स्थिरत्वं ललनासु भोगम्।
पौत्रादि लब्धिं सकलार्थ सिद्धिं, प्रदेहि मे भार्गवि! जन्म जन्मनि।।
ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।।
सुवर्ण–वृद्धिं कुरू मे गृहे श्रीः, सुधान्य वृद्धिं कुरू मे गृहे श्रीः।
कल्याण वृद्धिं कुरू मे गृहे श्रीः, विभूति वृद्धिं कुरू मे गृहे श्रीः।।
ॐ हं ईं आं ॐ।।

शिरो–बीजम् :-

ॐ यं हं कं लं पं श्रीः
ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ।। गुह्याति गुह्य गोप्त्रीत्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्प्रसादान्मयि स्थिता।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
ॐ आं ईं हं ॐ त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्याश्च गुरूत्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।। ॐ हं ईं आं ॐ।।
।।जय जय श्री अथर्वण–रहस्ये उत्तर–भागे

श्री आद्यादि महालक्ष्मी–हृदय–स्तोत्रं शुभम्।।

● अब पुनः न्यासादि सहित 'श्रीनारायण–हृदय' का पाठ करें।

।। श्रीगायत्री-सहस्रनाम।।

भगवती गायत्री के नाम से प्रायः द्विज परिचित हैं। इसका जप भी करते हैं, परन्तु बहुत कम लोगों को यह ज्ञात है कि गायत्री–मन्त्र सभी मन्त्रों का **'आधार'** है और अन्य सभी मन्त्र **'आधेय'** हैं। जिस–प्रकार बिना आधार के कोई भी वस्तु स्थिर नहीं रह सकती, विकसित नहीं हो सकती, उसी–प्रकार 'गायत्री' मन्त्र की समुचित धारणा के बिना किसी भी अन्य 'मन्त्र' की साधना सफलीभूत नहीं होती। इसीलिए शैव, वैष्णव, गाणपत्य, सौर्य और **'शाक्त–सम्प्रदाय'** आदि सभी साधकों के लिए गायत्री–मन्त्र का जप और संध्या–वन्दन करना अनिवार्य है। जिन साधकों को अनुपवीत (अर्थात् जिनका 'यज्ञोपवीत–संस्कार' न हुआ हो) होने के कारण **'वैदिक–संध्या'** और 'गायत्री–मन्त्र' के जप करने का अधिकार नहीं है, उनके लिए **'तान्त्रिक–सन्ध्या'** तथा अपने इष्ट–देवता की 'गायत्री' का जप करना अति–अनिवार्य है।

'गायत्री' का अर्थ है– जो गान करने अर्थात् जप करने से जप–कर्ता की सर्व–विधि रक्षा करती है। यह उनकी लोकोत्तर महिमा का द्योतक है। 'गायत्री–उपासना' से लोक तथा परलोक दोनों सुधरते हैं। ऐसी महिमा वाली भगवती गायत्री 'पञ्चानना' और 'तत्त्वात्म–वर्णात्मिका' है। इसका अर्थ यह हुआ कि उनका वर्ण–विग्रह चौबीस अक्षरों का है– गायत्री–मन्त्र में चौबीस अक्षर हैं। 'गायत्री' एक छन्द भी है, जिसमें चौबीस अक्षर होते हैं। मूल–गायत्री मन्त्र–**'तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्'** में यदि अक्षरों की गणना करें, तो कुल तेइस अक्षर ही मिलेंगे। अतः कुछ लोग इसे **'चतुर्विंशदक्षरी'** बनाने के लिए **'वरेण्यं'** का उच्चारण **'वरेणियं'** कह कर करते हैं, जो कि वैदिक–परिपाटी के सर्वथा प्रतिकूल है, अशुद्ध है। वेद–मन्त्रों के पाठ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके पद, शब्द, अक्षर या मात्रा में रञ्च–मात्र भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता। इतना ही नहीं उदात्त आदि स्वरों को 'अनुदत्त' आदि करना भी गर्हित है। जिन वेद–मन्त्रों के शुद्धत्तम पाठ की परिरक्षा के लिए 'पाठ' की 'आठ–शैलियाँ' अथवा विधियाँ विहित हैं, उसमें से एक मन्त्र के पद–(शब्द) विशेष के पाठ में परिवर्तन करने का अधिकार ऐसे लोगों को कहाँ से, अथवा किस 'परम्परा' से मिला है, ये वे ही लोग जानें। मूल गायत्री–मन्त्र में चौबीस वर्ण–रश्मियाँ हैं, यह सत्य है! और इस तथ्य से **'मन्त्र–वेत्ता'** भली–भाँति परिचित हैं, यथा––

मूल गायत्री–मन्त्र के अध्ययन–मनन से, मन्त्र में आये स्वर व व्यञ्जनों को यदि पृथक–पृथक कर उनकी गणना करें, तो उसमें चौबीस–अक्षर मिलते हैं। ध्यान यह रहे कि जिस भी स्वर व व्यञ्जन की एक से अधिक पुनरावृत्ति होगी, उसकी गणना एक ही संख्या में होगी, जैसे–

१–त, २–अ, ३–स, ४–व, ५–इ, ६–उ, ७–र, ८–ए, ९–ण, १०–य, ११–अं, १२–भ, १३–ग, १४–ओ, १५–द, १६–ध, १७–ई, १८–म, १९–ह, २०–न, २१–अः, २२–प, २३–च, २४–आ

आजकल बाजार में 'गायत्री–उपासना' पर सैंकड़ों पुस्तकें उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों में 'गायत्री' को एक देवी विशेष के रूप में चित्रित किया गया है। इनमें यह बताया ही नहीं गया है कि भगवती गायत्री उस 'मूल–शक्ति' की द्योतक हैं, जिनकी उपासना–साधना 'कौशिकी' या 'दुर्गा' रूप में की जाती है। यह वही हैं, जिनकी उपासना–साधना **'तान्त्रिक–विधि'** से 'काली–तारा और महात्रिपुर–सुन्दरी' आदि रूपों में की जाती है। यह एक ऐसा तथ्य है, जिससे **'शक्ति–तत्त्व'** का सामान्य अध्येता भी अवगत है।

इस–प्रकार 'गायत्री–उपासना' विषयक उपलब्ध पुस्तकों में यह आभास भी दिया गया है कि भगवती गायत्री की उपासना–साधना के लिए केवल **'वैष्णवाचार'** या **'दक्षिणाचार'** ही विहित 'आचार' हैं। इनकी उपासना–साधना केवल **'दक्षिणाचार'** से ही सम्भव है और तदनुसार ही की जानी चाहिए।

इस तथ्य को प्रयास–पूर्वक गुप्त रखा गया है कि भगवती काली या षोडशी आदि में समान भगवती गायत्री की उपासना **'कौलाचार'**– विधि से की जाती है, की जा सकती है।

'रुद्रयामल' तन्त्रोक्त **'श्रीगायत्री–सहस्रनाम'** स्तव का प्रस्तुत पाठ **'डिण्डिम–घोष'** है। इस तथ्य का कि भगवती गायत्री की अर्चना और उपासना **'कुलाचार'**–विधि से की जाती है और यह विधि अधिक प्रशस्त है। इस 'सहस्रनाम' स्तव में 'यजुवेदार्थ–सूचिता' भगवती गायत्री को 'हारिणी–तारिणी–तारा', 'त्रिपुर–भैरवी', 'महात्रिपुर–सुन्दरी', 'एकविंशदक्षरी–विद्या' –(काली) कहा गया है। वे नीला हैं, 'नील–पताकिनी' हैं, 'कुल–चक्रस्था–कौलिकी' हैं, 'मीन–मांसाशना गौड़ी, सुरा सर्व–विनोदिनी' हैं, 'वीर–चक्रेश्वरी' और 'महाचीन–क्रमेश्वरी' तथा 'श्मशान–निलया' हैं। साथ ही में बताया गया है कि 'काल–भैरव पूजिता'! भगवती गायत्री के इस 'सहस्रनाम' का पाठ 'महाचीन–क्रमोद्योगी', 'क्षीर–पात्र घृत्' वीर–साधक को **'चक्र–पूजा'** में करना चाहिए।

'रुद्रयामलोक्त' इस 'सहस्रनाम' स्तव की यह प्रस्तुति अति–प्राचीन एवं कुछ जीर्ण–क्षीर्ण, हस्तलिखित **'गायत्री–पञ्चाङ्ग'** से उद्धृत की जा रही है, जो मेरे निजी–पुस्तकालय के 'प्राचीन हस्तलिखित–ग्रन्थ सहङ्' में सुरक्षित है। इस 'पाण्डुलिपि' में कई शब्द कट गए हैं, तो अनेक शब्द धूमिल और अपठनीय से हैं, जिसको अपनी 'क्षीण–बुद्धि–बल' के आधार पर संशोधित करने का प्रयास किया गया है (गत सम्वत् के पञ्चाङ्ग में **'मुक्ति–चिन्तामणि श्री गायत्री–कवच'** भी इसी पाण्डुलिपि से उद्धृत कर प्रकाशित किया गया था)। यहाँ यह भी स्पष्ट कर दें कि **'रुद्रयामल'** तन्त्रोक्त यह सहस्रनाम अन्य गायत्री–सहस्रनामों से पूर्णतः भिन्न और सभी से महत्वपूर्ण है। यद्यपि 'गायत्री–विषयक' सङ्कलित ग्रन्थों में **'रुद्रयामल'** तन्त्रोक्त ही एक अन्य और भी सहस्रनाम देखने को मिलता है। जैसे गायत्री–पुरश्चरण–पद्धति–(पृष्ठ ३२६–३६) में प्रकाशित सहस्रनाम, जो रुद्रयामलोक्त होते हुए भी प्रस्तुत पाठ से एकदम पृथक है। **देवी भागवत**–(स्कन्ध–१२, अध्याय–६) में भी एक 'गायत्री–सहस्रनाम' आया है।

अन्त में प्रार्थना है कि किन्हीं पाठकों के पास यदि इस प्रस्तुत 'सहस्रनाम' स्तव की 'पाण्डुलिपि' हो, तो सूचित करने की कृपा करें। यथा, उपलब्ध 'पाण्डुलिपि' के आधार पर 'पाठ–शोध' करके, भविष्य में इसका संशोधित–रूप प्रकाशित करने में हमें प्रसन्नता होगी।

पाठकों एवं साधकों को इस 'सहस्रनाम' की महत्ता–विशेषता का ज्ञान हो, इस हेतु इसकी **'पूर्व–पीठिका'** एवं **'फलश्रुति'** का भावार्थ करके भी प्रस्तुत किया गया है।

सहस्रनाम

।। पूर्व-पीठिका ।।

॥श्री भैरव-उवाच॥

अधुना कथयिष्यामि विद्यां मन्त्रमयी शिवे!।
सहस्राख्याभिधां दिव्यां गायत्रीं सार–रुपिणीम्।।
या विद्या परमालोके विश्व–मङ्गल–दायिनी।
चतुर्विंशाक्षरी विद्या परमार्थाधि देवता–
गायत्री त्रिपदा–नाम्नीर्वेदमाता जगत्प्रसूः।।
तस्या नाम सहस्रं ते सद्शब्द ब्रह्म–साधनम्।
पुण्यं पवित्रमायुष्यं सर्व–देव नमस्कृतम्।
ब्रह्मादि पूजितं नित्यं मन्त्रं नाम–सहस्रकम्।।

भावार्थ :-

श्री भैरव ने कहा –– हे शिवे! अब मैं सहस्रनाम स्तव का निरुपण कर रहा हूँ, जो गायत्री–विद्या का सार–स्वरूप है। गायत्री–विद्या लोक–परलोक में मङ्गलदायिनी हैं, परमार्थ की अधिष्ठात्री हैं, चौबीस–अक्षरों वाली हैं, त्रिपदा हैं, वेद–माता और जगत्माता हैं। उनके इस सहस्रनाम का पाठ 'शब्द–ब्रह्म'

की साधना का एक अत्युत्तम–विधान है, सद्य पुण्यप्रद एवं आशु–फलप्रद है। ब्रह्मा आदि देवताओं ने इस सहस्रनाम–स्तव से भगवती गायत्री का अर्चन किया है।

विनियोग :-

ॐ अस्य श्री गायत्री–मन्त्र नाम–सहस्रस्य सदा–शिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री परमार्थ गायत्री–देवता, ॐ बीजं, श्रीं शक्तिः, भैं कीलकं, आत्मनः सर्व–पापक्षयार्थ, धर्मार्थ–काम–मोक्षार्थ श्री गायत्री–देवी प्रीत्यर्थ सहस्रनाम–पाठे विनियोगः।।

ऋष्यादि-नयास :-

ॐ सदा–शिव ऋषये नमः ––––– शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः ––––– मुखे। श्री परमार्थ गायत्री–देवतायै नमः ––––– हृदये। ॐ बीजाय नमः ––––– गुह्ये। श्रीं शक्तये नमः पादयोः। भैं कीलकाय नमः ––––– नाभयोः। आत्मनः सर्व–पापक्षयार्थ, धमार्थ–काम–मोक्षार्थ श्री गायत्री–देवी प्रीत्यर्थ सहस्रनाम–पाठे विनियोगाय नमः ––––– सर्वाङ्गे।।

कर–न्यास :-

ॐ सौः हसौः ऐं ––––– अङ्ष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं भैं ––––– तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ग्लां गायत्री ––––– मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ––––– अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं यं ––––– कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रां ह्रां स्वाहा ––––– करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।।

हृदयादि - न्यास :-

ॐ सौः हसौः ऐं ––––– हृदयाय नमः। ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं भैं ––––– शिरसे स्वाहा। ॐ ग्लां गायत्री ––––– शिखायै वषट्। ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ––––– कवचाय हुम्। ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं यं ––––– नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रां ह्रां ––––– अस्त्राय फट्।।

● उक्त सभी न्यास पूर्व में 'श्रीनारायण–हृदय' में बताई गई 'मुद्राओं' के अनुसार सम्पन्न करें।

ध्यान :-

ॐ मुक्ता–विद्रुम–हेम–नील–धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैः,
युक्तामिन्दु–निबद्ध–रत्न–मुकटां तत्वात्म–वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुश–कुशां शूभ्रं कपालं गुणैः,
शङ्ख चक्रमथारविन्द–युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।

अथवा

अर्धेन्दु शशाङ्क कोटि सदृशीमापीन तुङ्ग –स्तनीम्।
चन्द्रार्धाङ्कित मस्तकां मधु–मदादालोल नेत्रत्रयीम्।।
विभ्राणामनिशं वरं जपवटीं शूलं कपालं करै।
आद्यां यौवन गर्वितां लिपि–तनुं वागीश्वरीमाश्रये।।

एवं/अथवा

ॐ चतुर्भुजां अर्क–सहस्र–कोटिभां त्रिलोचनां, हार किरीट शोभिताम्।
चतुर्मुखां कोपगतां महोज्ज्वलां वेदेश्वरीं पञ्च–मुखीं भजाम्यऽहम्।।

मानस-पूजन :-

१. अधोमुख कनिष्ठिकाङ्ष्ठ से–'गन्ध–मुद्रा' दिखाते हुए –
ॐ लं पृथ्वी–तत्वात्मकं गन्धं देवी श्रीगायत्री प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।
२. अधो–मुख तर्जनी–अङ्ष्ठ से–'पुष्प–मुद्रा' दिखाते हुए –
ॐ हं आकाश–तत्वात्मकं पुष्पं देवी श्रीगायत्री प्रीतये समर्पयामि नमः।
३. ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्ष्ठ से–'धूप–मुद्रा' दिखाते हुए –
ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं देवी श्रीगायत्री प्रीतये घ्रापयामि नमः।
४. ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्ष्ठ से–'दीप–मुद्रा' दिखाते हुए –
ॐ रं अग्नि–तत्वात्मकं दीपं देवी श्रीगायत्री प्रीतये दर्शयामि नमः।
५. ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्ष्ठ से–'नैवेद्य–मुद्रा' दिखाते हुए –
ॐ वं जल–तत्वात्मकं नैवेद्यं देवी श्रीगायत्री प्रीतये निवेदयामि नमः
६. ऊर्ध्व–मुख सर्वाङ्गलियों से–'ताम्बूल–मुद्रा' दिखाते हुए –
ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं देवी श्रीगायत्री प्रीतये कल्पयामि नमः।

मूल गायत्री-मन्त्र :-

ॐ गायत्री विद्महे चतुर्विंशाक्षरी धीमहि तन्नो त्रिपदा प्रचोदयात्।

– उक्त गायत्री–मन्त्र का १०८ बार जप करें।

मूल गायत्री मन्त्र-भेद :-

- ॐ गायत्री देवि विद्महे चतुर्विंशाक्षरी धीमहि तन्नो त्रिपदा प्रचोदयात्।
- ॐ गायत्री देव्यै विद्महे चतुर्विंशाक्षर्यै च धीमहि तन्नोस्त्रिपदी प्रचोदयात्।

मन्त्र :-

ॐ सौः ह्सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भैं ग्लां गायत्री श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं यं श्रां ह्रां स्वाहा।।

– उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करें।

सहस्रनाम-पाठ :-

ॐ त्रिपदी त्र्यक्षरी त्र्यक्षी वेदमाता श्रुति–प्रिया।
वेद–गम्या मन्त्रमयी वेद–गर्भा सनातनी।।
सरस्वती सती–माता भूर्भुवः स्वः स्वरूपिणी।
सत्या सत्यवती साध्वी सुधा–कलश–धारिणी।।
गोमती ब्रह्मणी ब्राह्मी ब्रह्म–रुपा परापरा।
पुण्यदा मन्त्र–विद्या च महा–विद्या महेश्वरी।।
व्याहृतिः सत्य–लोकस्था ज्ञानदा ब्रह्म–वल्लभा।
वटुके विष्णु–हस्ता च महती महती तरा।।
मनोन्मना मधुराक्षी, मधुरा मधुराकृतिः।
मनु–प्रिया विष्णु–माया, वसुधा वसु–पूजिता।।
वासवी वीरसूः क्षौणी – क्षौणी भृद्वल्लभा।
वचा वाराही वनजाक्षी च पद्म–हस्ता सुरार्चिता।।
पद्मा पीन–स्तन स्तुत्याकृतिः केनाश–नाशिनी।
सुन्दरी सुन्द–दैत्यघ्नी, मुशलाङ्कुश–धारिणी।।
कुलेश्वरी क्रियाकारा वागीशी वाग–वल्लभा।
सुरासुरनुता नीति भीतिहा भद्र–दायिनी।।
भद्र–काली भोगवती भासुरी भासुरानना।
पञ्चानना पात्र–हस्ता केयूर मणि–मण्डिता।।
मनस्विनी मराली च मराल–गतिरीश्वरी।
सर्वेश्वरी सर्व–मान्या, सर्व–पातक–नाशिनी।।
सर्व–भूतात्म भावाग्र्या जगदानन्द–लोचना।
विश्व–रुपा विधात्री च पूज्या मान्या महाशया।।
कुलत्रयधरा–धन्या महा–समय मन्त्रधृक्।
रत्नत्रयधरा श्रेष्ठा त्रियानोत्तम–दैशिका।।
अमोघ–पाशा विजया वज्र–पाशा महा–ग्रहा।
वज्राङ्कुश वज्र–पाणी वज्र–भैरव भीमका।।
सुविशुद्धि धर्म–धात्री ज्ञान–नाथा गदापहा।
क्रोधना षण्मुखी भीमा, षण्नेत्र षड्भुजा।।
बला–दंष्ट्रा कराल–कङ्काला हालाहल शतानमा।
हसन्ती विघ्न–शमनी वज्र–वेगा भयङ्करी।।
विधृष्ट–वज्रा ह्रद्वज्रा माया–वज्रा महोदरी।
कुलिशेशी वज्र–योनिर्वज्र–मुण्डानल–द्युतिः।।
अचलैक जटाजूटा, गज–चर्म पटांशु–धृक्।
हाहाकारा महा–घोरा, हीहीकारा भयानका।।
अट्टहासा महा–हासा वज्र–हासा महोदरी।
वज्र–सत्वा, महा–सत्वा, वज्र–बुद्धिर्महालसा।।
वज्र–चण्डा महा–मोदा वज्र–हुङ्कार हुंकृतिः।
वज्र–बाणायुध–धरा वज्र–खण्डा निकृंतना।।
विश्व–वज्र–धरा–धीरा एक–वज्रा रणञ्जया।
वज्र–ज्वाला–करालाक्षी वज्र–वाणी–शिलीभवा।।
वज्र–वेगा महा–वेगा शताक्षी वज्र–लोचना।

वज्र–रोमाङ्कुश–तन्वी वज्र–नासोग्र–विग्रहा।।
वज्र–कोटि–नखा रम्भा, वज्र–साराधन–द्युतिः।
वज्र–माला धराधीरा, वज्राभरण–भूषिता।।
हाहाट्टहासा निर्हासा निर्घोषा वज्र–घोषणा।
षड्क्षरी षोडशी च चतुर्विंशाक्षरात्मिका।।
मञ्जु–घोषा महा–नादा त्रैलोक्यैक वर–प्रदा।
आकाश–धातु–पर्यन्ता–घोषा वेदाङ्ग –धारिणी।।
भूतेश्वरी भूत–माता, भूत–हन्त्री निरक्षरा।
शून्यता वृषभानूष, वृक्ष–ध्वज–कुटुम्बिनी।।
गम्भीरा गण–माता च गण–पूज्याति गर्तना।
धर्म–सकामह्यशब्दा धर्म–गुण्या महा–मतिः।।
अप्रतिष्ठितनिर्घाणा दश–दिग्धर्म–दुन्दभा।
अरुपा रुपवत्युग्रा नाना–रुपा मनोमयी।।
सर्व–रुपावभास श्रीः अशेष प्रतिबिम्ब–धृक्।
अप्रधृष्या महा–वृष्या महा–शङ्का–(शङ्खा) च शङ्खिनी।।
डाकिनी लाकिनी लम्पा चम्पा चम्पक–सन्निभा।
समुश्चित्तार्क–विम्बस्था धर्म–केतु महोदया।।
त्रिवर्गा सुकुमाराङ्गी स्थविरास्थाणु–सुन्दरी।
वृद्ध–प्रजावतो पूज्या द्वात्रिंशल्लक्षणाश्रया।।
कान्तानना कीर्तिधरा, क्रूरा त्रैलोक्य–सुन्दरी।
लोकज्ञाना गुणाचार्या, सुराचार्या गुणेश्वरी।।
वामाचार–प्रियाहूतिर्लोकाचार विशारदा।
शारदा शूल–हस्ता च शरण्या रण–दुर्जया।।
गगना–भोग सम्भोगा त्रिलोक–जननी जया।
सर्वज्ञा सर्व–लोकस्था सर्व–ज्ञान–दायिनी।।
अविद्या तुण्ड–कोशस्था भव–पञ्जर–धारिणी।
शशिताशेष संक्लेशा संसारार्णव पारगा।।
ज्ञानाभिषेक–मुकुटा सम्यक् सम्बुद्ध–भूषणा।
त्रिदुःख दुःख–शमनी त्र्यंतानन्ता त्रिमार्गगा।।
सर्वाभरण–निर्मुक्ता आकाश–संमताङ्ती।
सर्व–क्लेश महातीता त्रिनिर्ध्वाताध्वांत नाशिनी।।
सर्व–सत्व समाधिस्था गुण–शेखर–शेखरा।
सर्वोपाधि–विनिर्मुक्ता व्योमवर्त्मनि सुस्थिता।।
महा–चिन्तामणि–धरा सर्व–रत्नोत्तमोत्तमा।
महा–कल्पतरु–स्फीता महा–भद्र घटोत्तमा।।
महा–सत्वार्थ–वृतुस्थाहित श्री सर्व–वत्सला।
शुभाशुभज्ञा कालज्ञा समज्ञा समय–स्थितिः।।
सत्वेन्द्रियज्ञा वेलज्ञा, विमुक्ति–त्रय कोविदा।
गुण–त्रयी वेद–भाषा, धर्मदा शर्म–दायिनी।।
प्रशस्ना मङ्ला–मुद्रा, सर्व–मङ्ल–कारिणी।
मङ्ल्या कीर्तिदा कीर्ति, यशो–धात्री यशस्विनी।।
महोत्सवा महा–श्वासा, महा–नन्दा महा–रति।
सत्कारा सत्कृतिर्भूतिः, प्रमोद श्रीर्यशोधरा।।
वरेण्या वरदा प्रेष्या शरण्या शरणोत्तमा।
महा–मायार्ति शमनी दमनी देव–वत्सला।।
चपलाक्षी कोटराक्षी पद्माक्षी पद्म–भूषणा।
शिखण्डिनी शिखि–ज्योतिः शिखि–वाहन नन्दिता।।
नन्दिनी नन्दिनुत्या च जटिला कुटिलाभिकाः।
किरीटिनी वज्रिणी चैव गदिनी पत्रिनी–पुरी।।
काञ्ची काञ्चन–वर्णाभा, काञ्ची–ध्वनि–निनादिता।
हारिणी तारिणी तारा, नीला नील–पताकिनी।।
नील–वर्णा नीला–काली नलिनी नलिनालया।

महा–व्रत–धरा मौञ्जी–व्रतस्था ब्रह्म–चारिणी।।
महा–तपा तपो–निष्ठा स्नातकी ब्रह्म–वर्धनी।
निर्वाण–पदवी–मुक्तिः सौख्यदा दुःख–हारिणी।।
कारिका शारिका गीता, शान्तिदा भ्रान्ति–हारिणी।
सुख–दुःख–प्रदा शान्तिर्निरालोका निरालया।।
निशेष–पापहा पीता कपोती पूतना–प्रजा।
सूक्ष्मा स्थूला सूक्ष्म–रुपा स्थितिः स्थूलाकृतिः सिता।।
विभामर्तिर्महा–लक्ष्मी राज्य–लक्ष्मी वशङ्करी।
किङ्करी हुंकृतिः चञ्चा ब्रह्माणी ब्रह्म–पूजिता।।
नारायणी च चामुण्डा मुण्ड–हस्ता कपालिनी।
शाम्भवी कम्बु–कण्ठी च नील–कण्ठी तपोत्तमा।।
वाराही च वरारोहा नारासिंह्यऽपराजिता।
कौमारी कुल–चक्रस्था कौलिकी कुल – देवता।।
कुल–वागीश्वरी वाणी कुर्परी कुहकेश्वरी।
विज्ञान–धर्मतातीता ज्ञाना द्वय पद–स्थिता।।
निर्विकल्पा निराभोगा तथागत वर–प्रदा।
अनादि–बोधना प्रीतिरादि बुद्धिर्निरन्चया।।
ज्ञानैक–चक्षु–रमला ज्ञान–मूर्तिस्तथेश्वरी।
योगेश्वरी महा–भोग्यावादि सिंही मृगेक्षणा।।
समन्ता सर्वता साध्या तेजो–माला–सुदर्शना।
दुर्दशा देवकी–दान्ता दुर्दर्शापि दुरानतिः।।
श्रीवत्सा सुप्रभा दीप्ति हरि–केयूर–भास्वरा।
भास्वद्विलोचना भागी भर्ग–पत्नी भृगु–प्रिया।।
महाभिषक्चिकित्सा च वेद–शाखा प्रमाथिनी।
प्रथा प्रमथ–माला च प्रमथाधिप–वल्लभा।।
रोगहृत–कल्पवल्ली च वराभयकरा सभा।
विभा विभावरी वर्त्तिर्कृत्त–त्रय समुज्जला।।
अशेष–भैषज्य लता–क्लेश व्याधि हरा – क्रिया।
क्रियावती तु निश्चर्चा दानवेशी दयावती।।
त्रैलोक्य–वासिनी दुर्गा दुर्गमा निर्गमाश्रया।
नक्षत्र–मण्डल–द्योतिस्त्रैलोक्य–तिलकोज्ज्वला।।
दशदिग्व्योम–पर्यन्ता धर्म–ध्वज–महोदया–(महोश्वया)।
जगश्छत्रैक विपुला मैत्री करुण–मण्डला।।
पद्मी नन्दीश्वरी नंद्या नद्यावर्त पदोज्ज्वला।
रत्न–छत्रा रत्न–काञ्ची रत्न–पीठ निषेदुषी।।
सर्व–सिद्धिप्रदा साध्वी सर्व–दैत्येन्द्र–शासना।
रत्न–सिंहासनास्था च रत्न–कुण्डल–मण्डिता।।
मायाजाल–हरा माया–जालन्धर निवासिनी।
उड्डीयान–पीठस्था च सर्व–पीठ–कृतालया।।
मूलाधार–स्थिता–साध्वी साध्वी–रस–विघूर्णिता।
स्वाधिष्ठानेश्वरी देवी मणिपूर–निवासिनी।।
अनाहताश्रिता हेतिर्विशुद्धि पद–नायकी।
आज्ञा–चक्र–स्थिता देवी नव–चक्रेश्वरीश्वरी।।
चञ्चरीकम्बनालापा चक्र–नायक–पूजिता।
ब्रह्मरन्ध्र–स्थिता–श्यामा परंब्रह्ममयीर्वियत्।।
आनन्दनिलयानन्ता सुधा–देवी च भैरवी।
भ्रुकुटी भूर्महोजस्का साधकेश्वर पूजिता।।
आनन्द–भैरवी काली महा–काली कुलाम्बिका।
विशुद्ध–धर्म–नरात्म्या सम्यग् ज्ञानेन्द्र–विग्रहा।।
अशेष वज्र–पर्यन्का निश्शेष मणि–भूषणा।
सामन्त–भद्र–वंशेशी–विद्या त्रिपुर–भैरवी।।
बैन्दवी बिन्दु बिम्बस्था महात्रिपुर–सुन्दरी।

जगन्माता जगद्रक्ष्या जगद्गर्भा जगधृतिः।।
विश्व–दृग् विश्व–धृग् विश्वा विश्वम्भर समर्चिता।
विश्वार्था विश्व–धर्मेशी विश्वनाथैक – वल्लभा।।
वाराणसी मधुपुरी द्वारिकाऽऽवन्तिका गया।
गङ्गावियन्नदी नादा–विद्या नादाम्बिका–रसा।।
त्रि–नादा त्रि–स्वरा त्र्य्यानादजानाद बैन्दवी।
एक–विंशाक्षरी–विद्या शिव–वामङ्ग –वर्तिनी।।
सप्त–पाताल–निलया सप्त–लोकेश्वरी – सरित्।
महा–प्रज्ञा पारमिता मीमांसा पञ्चम–प्रिया।।
मीन मांसाशना गौडी सुरा सुर्व–विनोदिनी।
वैष्णवी–तर्कसारज्ञा सर्व–धर्मावबोधिनी।।
मेनात्मजा मीन–मूर्ति मैनाक शरणप्रदा–
स्मिता सुप्रसन्नात्मा सुप्रकाशावबोधिनी।।
ज्ञानार्चि वीर–पूज्या च वीरनुति संतोषिता।
वीर–चक्रेश्वरी वंद्या महाचीन–क्रमेश्वरी।।
इष्टार्थ–साधनीं सम्पत् सर्व–पाप–विशोधिनी।
सर्व–सत्वोत्तमा–नारी नर नारायणेश्वरी।।
सर्व–सत्व–प्रमोदा च शौर्यदैश्वर्यदा शिला।
श्मशान–निलया नित्या काल–भैरव पूजिता।।
क्षेत्रेश्वरी ज्वलत्तेजा ज्वलत्पावक सन्निभा।
मुक्ताभरण भूषाद्या विद्रुमालङ्कृता तडित्।।
तडित्कोटि समानाद्या तारा पञ्चदशेक्षणा।
जाम्बूनदासनस्था च स्वर्ण–कङ्कणराजिता।।
अनर्घ–मणि–सम्पूर्णा किङ्कणी–जाल कूजिता।
पिकस्वना घोरनादा हंसी हंस–स्वरुपिणी।।
अज्ञान–भञ्जनी शक्तिर्न्निशेष रिपु–दर्पहा।

धीः शृङ्गारधरा श्रद्धा सर्व–शृङ्गार शोभिता।।
बीभ्रसा साधक–प्रीता साधकारि विनाशिनी।
साध्य सिद्धिस्मृद्धि सिद्धिररिभाव निकृंतना।।
बहु–दण्ड शतक्षेपा पद–निक्षेप नर्तनी।
नटिनी नाट्य कुशला रमणी वामेनार्चिता।।
बलिदर्पहरा बाला नव–नर्तक वन्दिता।
श्रीमश्छत भुजा भोग–गगना भोग–नर्तना।।
एकपाद तलाक्रान्त मही–मण्डल मध्यगा।
ब्रह्माण्ड शिविराक्रान्त पादाङ्गुष्ठ नखस्थिता।।
एकार्था द्वय धर्मार्थावादि निर्णय–कारिणी।
विशिष्ट धर्म–कर्म श्रीः कर्म–बन्ध निकृंतना।।
नाना–विज्ञप्ति–रुपार्था परमार्थावबोधिनी।
चितु सन्तोष–रुपा चचितु–विज्ञान संततिः।।
अशेष–भावार्थ रतिः शूरा शून्य शयार्चिता।
चिन्तानलोग्र–ज्वालास्या ज्वाल्य ज्वालामुखी जरा।।
तरुणी करुणाक्रान्ता संक्रान्तिः सूर्य–बिम्बगा।
सूर्य–कोटि समानाभा परा–कुण्डलिनी कुहूः।।
भावरागाछंतिता च भवत्रय सदागतिः।
शुद्ध शुभ्राभ्र–धवला शरश्चन्द्रांशु सुप्रभा।।
बालार्क–मण्डलश्छाया वह्नि–कोटि समानना।
वैदूर्य–मणि सुछाया पद्मराग–नखप्रभा।।
इन्द्र–नीलाग्र सुछाया महा–नीलक च छविः।
महा–मणि मयूखश्रीश्चीनाम्बर विभूषणा।।
लोक–धातु शताकम्पा ऋद्धि–पाद महाक्रमा।
महा–स्मृति धरा–ध्येया स्मार्त–मार्ग–प्रवर्तिनी।।
मुनिभिः पूजिता मुद्रा मुनीश्वर वरप्रदा।

मार मोह मदाक्रान्ता मारसूर्मार–घातिनी।।
ऋतुः स्मृतिः समाधिस्था नाना–कुसुम–शोभिता।
बसन्त–कुसुमच्छाया ग्रीष्मा तप–विनोदिनी।।
वर्षा वसीयन्सी ज्येष्ठा कनिष्ठा शरदाश्रया।
हेमन्त शीतला हेमज्योतिर्ज्योतिर्विदीश्वरी।।
वैद्य–विद्या ज्वलन्ती च रुदन्ती सन्मुखौषधिः।
उषधीश–करीता च दधिचि वर–दायिनी।।
अरुंधत्यऽरुणाभासा वरुणेश्वर–पूजिता।
वायुसूर्वायु–रुपा च पञ्च–भूतेश्वरी श्रुतिः।।
पञ्च–प्राणा पञ्च–हविः पञ्च–बाणायुधारुचिः।
अष्टाङ्ग मार्गनयधीः पार्वती पर्वताश्रया।।
सर्व–सत्वा महा–सङ्गनिः सङ्गा गगनोपमा।
सर्व–सत्व मनोज्ञात्वा सर्व–तन्त्रेषु गोपिताः।।
सर्व–सत्वेन्द्रियार्थज्ञा सर्व–सत्व मनोहरा।
पञ्च–स्कन्धार्थ–तत्वज्ञा पञ्च–स्कन्ध विशुद्ध–धृक्।।
सर्व–निर्याण कोटिस्था सर्व–निर्याण कोविदा।
सर्व–शास्त्र–प्रतीतिस्था सर्व–शास्त्रार्थ गोपिता।।
द्वादश्येकादशी पूर्णा नवमी नव–योनिजा।
अष्ट–ज्ञानावबोधा च चतुः साधनयाछतिः।।
अष्टमी पञ्चमी–पीठा चतुर्दश्यष्ट–मूर्ति–धृक्।
द्वादशाकरत्यार्था षोडशाकारत्व–धृक्।।
विंशत्याकार सम्बोधिः समुद्र–क्षोभ–कारिणी।
समुद्र–तनया–स्वाङ्गा समयाचार–बल्लभा।।
नाना–नयनयोपाया जगदर्थ विभाविका।
क्लेशहा शेष शीर्षस्था शेषशाय समुधृता।।
योग–माया पारगतिर्योगकान्तानिरमृता।

सर्वभात्माश्विनी याम्या कृत्तिकाम्बर–भूषणा।।
रोहिणाऽचलवासा च रोहिणाशकलान्विता।
मृग–मूर्धा पञ्चम–मूर्धा पूता सार्द्रा वियोगिनी।।
पुनर्वसु–प्रदा–लोके पुष्यार्थ विभव–प्रदा।
सर्पजा सर्पहाश्लेषा मघा मेघ फल–प्रदा।।
पूर्वा–फाल्गुण्य सद्रूपा सोत्तरा हस्त–विस्तृता।
चित्राम्बरधरा स्वातिर्विशाखाति प्रिया प्रसूः।।
मैत्र–देवी मित्र मैत्री ज्येष्ठान्वय कृत स्थितः।
मूलाङ्कुश मूलमयी सर्वोत्तर गतिः सतीः।।
श्रविष्ठाभिजिज्जैत्री धनिष्ठा धनदेश्वरी।
शतबाहुः शताकारा शतशीर्षा शतभिषक।।
पूर्वोत्तरा भाद्रपदा रेवती रमण–प्रिया।
अनन्त–वसतिंर्नगा आद्या चाकाश–गोचरा।।
आदित्य–जननी दैत्य–विध्वंसिन्यादि देवता।
इला ईश्वर–वक्षःस्था ईशानी कामनार्थदा।।
उर्वी–ऊमा तपोष्मा च शोषणेहा च पोषणा।
ऋ ॠ ऌ ॡ चीनपदा सव्यचैन कुलेश्वरी।।
एणाङ्कबिम्ब – वदना ऐङ्काराक्षर बीजिनी।
ॐकार वेद–तत्वाद्या औत्सवी शशि–पूजिता।।
अम्बा शुम्भ–निशुम्भघ्नी अःकार वपुषा तथा।
कामदेव कलाक्रान्ता कनकाङ्गद–माण्डिता।।
कुब्जिका कोमलाङ्गी च कोशदा कोप–नाशिनी।
कुशेश्याक शताकारा शृङ्खली कनक–प्रभा।।
खेचरी खड्गधारा खञ्जनाक्षी खलान्तका।
खेटेश्वरी खेटका च खट्वाङ्ग मुसलायुधा।।
गजास्य–जननी गीति गन्धर्व कुल–नन्दिनी।

गूर्जरी गारुड़ी–विद्या गोडजा गरुड–प्रसूः।।
घन–वाहन–पूज्या च घनसाराति–वासिता।
घनेश्वरी घनश्छाया घुर्घराराव–भीषणा।।
चन्द्रकला चाता चान्द्री च चम्पक–भूषणा।
चकोर – नयना चीरा चन्द्रिका चामराञ्चिता।।
छत्र–शोभा राजमात्या छिन्न–मस्ता छलापहा।
जगद्धात्री जगत्सिद्धि जगदेकरुप छविः।।
जाग्रतिश्च जगद्योनिर्जगद्विजय–दायिनी।
ॐ कारणी कर्करिणी अनुरुपा पराम्बिका।।
टङ्कायुधा च टीकारा ठक्कुरीठ त्रयोज्जवला।
डिल्ली डल्ली च वर्णेशी श्रोणी माया च योनिजा।।
तापी ताप–त्रय–हरा तपनी तपन–द्युतिः।
तालायुधा तमोहन्त्री तमी तामरस–प्रभा।।
स्थूलाकृतिः षली फल्ली दक्षजा वेद–नायकै।
देवेन्द्र तनया दक्षा दक्ष–यज्ञ–विनाशिनी।।
धर्मदा धर्मजा धर्म्या धर्म–कर्म फलप्रदा।
धात्री (छात्री) धनेश्वरी धारा–धर्म – कर्म फलप्रदा।।
नवपात्र–धरा नगजा नग–वासिनी।
नाग–यज्ञोपवीता च धर्म–धात्री–नरेश्वरी।।
नन्दजा नन्दि–सेव्या च नारदर्षि समर्चिता।
पामरे पीवाप्ता च पेशलाङ्गेपिलं पिला।।
पाटीर–नाम–वल्ली च पाटली कुसुम–प्रभा।
पटाम्बर–धरा पुष्या पूः पूर्वापौर पूजिता।।
फलप्रदा फलहस्ता बल्ल–हस्ता बलि–प्रिया।
बालकेहा च बिम्बोष्ठी बलाराति वर–प्रदा।।
भद्रिका भीम–वपुषी भगावासा भगालया।
भर्ग–प्रिया भाग्य–धात्री भर्ग–बिम्ब–निवासिनी।।
भाषाभेश–प्रभाभा च भग–रुपा भगार्चना।
माधवी मथुरा माया मानदा मधुरस्वना।।
मर्त्य–लोकेश्वरी मेध्या मधुमत्त मधु–प्रिया।
मासिकी–मदना श्रीदा यशोदा यक्षिणी यतिः।।
यक्षेश्वरी यक्ष–धात्री यजुर्वेदार्थ सूचिता।
याज्ञिकी यजमानश्री, रत्नाकर सुताचरी।।
रम्भोथमोरु रत्नेशी पञ्च–रत्नेश्वरी चरुक।
रुरु–भैरव–सेव्या च रतिदा रति–सेविता।।
रेतोभवा रजोभूता राजसी च रजस्वला।
लम्बोदरी लतालूता लूता तन्तु–वितान्विता।।
लङ्का–लाजा च ललना–बीज–भूषिता।
वरारोहा वरधरा वीरेशानी वराङ्गगा।।
वस्तु–प्रिया वस्तु–हीना वस्त्रालङ्कार–भूषणा।
वाणी बीजमयी विद्या, शाङ्गरी शिव – लोचना।।
शान्तच्चन्द्रकलोत्तंसा शत–चन्द्र समानना।
शत–लोमा शमी–शाखा वेद–शाखा शची शुभा।।
षट्कूटा षडशीत्वर्णा षट्भुजा षोडशाक्षरी।
सत्या सत्य–प्रिया सीता, सात्विकी–भाव–बल्लभा।।
सरस्वती सुरम्या च सारसी सुर–वन्दिता।
समस्त–शुभदा नित्या समस्त–लोक–पूजिता।।
समस्त–बीज–निलया हरीशानी हरार्चिता।
हाटकेश्वर–सेव्या च हाला–घूर्णित–लोचना।।
हेलहेषा हरिर्होत्रा हविर्भुग्वल्लभा हरित्।
हरस्मिणी मयूश्री हकाराक्षर मातृका।।
क्षुक्षुपा क्षुरिका क्षीवा क्षणदा क्षण–तोषिता।

मोद्रिका नाम–वपुषा मगोवासी मगालया। क्षुक्षुपा क्षुरिका क्षावा क्षणदा क्षण–तापिता।

लं क्षः स्वरुपिणी देवी हंस–शक्ति–स्वरुपिणी।।
अकारादि क्षकारान्ता शिव–शक्ति–स्वरुपिणी।
अनाक्षरा मन्त्रमयी मन्त्र–योनिर्योनिजा।।
कुल–मन्त्रेश्वरी कुल्या महा–मन्त्र कुलत्रयी।
सर्व–मन्त्रार्थ–जननी महा–चक्रेश्वरी व्युतिः।।
पञ्चाक्षरी महा–शून्या बिन्दु – शून्या षडक्षरी।
द्विविंशत्यक्षरी–विद्याश्री चतुर्विंशदक्षरा।।
सर्वाकारा निराकारा षोडशार्द्धार्ध – बाहु – धृक्।
अकलाकलनातीता ध्यानातिता परा–प्रसूः।।
सर्व–ध्यान कलाभिज्ञा समाधि – कुल – नायिका।
समाधि – कार्य कायाग्र्या सर्व–सम्भोग – कार्यधृक्।।
निर्वाणकाय कार्याग्र्या नित्याक्लिन्ना श्रमेश्वरी।
दश–दिग् विश्व–निर्माणा जगज्जन्म – क्षयङ्करी।।
देवाधिदेव देवेशी दानवेन्द्र समर्चिता।
महिषासुर–दर्पघ्नी रक्तबीज विमर्दनी।।
अशरीरा तनुत्रेवात्रयी–तनु समानना।
उत्तीर्णा भवकान्ताकान्तार निलया कृशा।।
प्रख्यात दश–दिग्वर्णा वर्णेश्य वर–वर्णजा।
शूद्री च नटिनी वेश्या मन्त्र–पूजा फल–प्रदा।।
रजकी राज–पत्नी च मालिनीनाऽपिताङ्गना।
धर्मिणी धर्मसेमा च निस्त्रंशोज्ज्वल–मस्तका।।
सदानन्दमयी–मूर्तिः स्वयम्भू कुसुमार्चिता।
शुक्रार्चिता लिङ्ग –मूर्तिर्भग–मूर्ति निराकृतिः।।
भगलिङ्गामृतमयी मूल–विद्या च तन्मयी।
सावित्री च वरेण्याद्या देवी भर्गामयी भगा।।
देवस्य वल्लभा वाक् च धीर्मही धीमहि–प्रिया।
धियो योनिरीक्षतेनास्त विद्या प्रचोदयात्।।
ॐ सौः ह्सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भैं ग्लां वेद–वल्लभा श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं प्रीं परमार्थाधि देवता ॐ सौः ह्सौः सौः स्त्रीं स्वाहा गायत्री मोक्ष–दायिनी।।

॥ फल-श्रुति ॥

इतिदं देवि! गायत्र्या मन्त्र–नाम सहस्रकम्।
चतुर्वेदागमोद्भूतं सर्व–तन्त्रेषु गोपितम्।।
सारं सर्व–सम्भूतं मे रहस्यात्रिदिवौकसाम्।
पुण्यं यशस्करं दिव्यं सर्व–सारस्वत–प्रदम्।।
ब्रह्मोत्पत्तिकरं ब्रह्म–साधनैक रसायनम्।
कारणं सर्व–सिद्धिनां त्रिपदी तत्वमुत्तमम्।।
सर्व–पाप प्रशमनं महा–पातक नाशनम्।
यः पठेत् पाठयेद्वापि श्रृणोति श्रावयेदपि।।
स गायत्र्या परः पुत्रो लक्ष्मीवानभिजायते।
यः पठेत्सततं रात्रौ शुचिर्वाथवा शुचिः।।
श्रद्धयाऽश्रद्धयावापि स भवेद् भैरवोपमः।
योऽर्थकामी पठेज्जप्त्वा श्मशाने वा चिताग्रतः।
तस्य गेहे निधिनानि भविष्यन्ति पदे पदे।।
यः पठेत् भौमवारे तु प्रयतः शक्ति–सान्निधौ।
श्री चक्रं पूजयित्वादौ वामाचार परायणः।।
तस्याशु रत्नपीठस्था चतुर्मुखा समन्विता।
देवि! पञ्च–मुखी स्वप्ने साङ्गाप्रादुर्भविष्यति।।
यः पठेद् वट–मूले तु दशावर्त्त महेश्वरि!।
बधिरो वापि पङ्गर्वा काणाक्षोवांध एव वा।।
कुष्ठीर्वाश्चित्रीमान्देवि! स रोगान्मुच्यते क्षणात्।
शूद्रो ब्राह्म–जातीयः क्षत्रियो वा वरानने।।

यः पठेत् अष्टवारन्तु स भवेद् दीक्षितोत्तमः।
यः पठेच्चक्र–पूजायां साधकः क्षीर–पात्रधृत्।
महा–चीन क्रमोद्योगी स भवेत् ब्रह्म–वल्लभः।।
यः पठेत् शतावर्त शालग्राम–शिलाग्रतः।
विष्णुं सम्पूज्य कुसुमैर्नैवेद्यै च महतरैः।।
क्षीरानन्दमयी मन्त्री वीवरभक्षण–तत्परः।
स भवेदरिकान्तारं दावाग्नि वैष्णवोत्तमः।।
यः पठेत् देवि! सप्ताहमेक भुक्तो जितेन्द्रियः।
कुशास्तरण निर्विष्ठश्चैनाचारपरो निशि।।
प्रत्यक्षं तस्य गायत्री वरदा दर्शन–प्रदा।
रवौ शुभर्क्ष संयुक्ते लिखेद् भूर्जे महेश्वरि!।।
अष्ट–गन्धेन् सत् यन्त्रं मूल–विद्यां लिखेत्ततः।
ततो देव्याश्च गायत्र्या मन्त्र–नाम सहस्रकम्।।
विलिख्य विधिवज्जप्त्वा श्वेत–सूत्रेण–वेष्टयेत्।
रक्षांभू (सु) मयीं देवि! पूजयेन् मन्त्रराजवत्।।
धारयेद् दक्षिणे बाहौ योषित् वाम–करे।
तया किं किं न लभते कामं यद्यन्मनसि वाञ्छितम्।।
बन्ध्या–लभेशुभान्वान् साक्षात् वैश्रवणोपमान्।
मार्कण्डेयायुषः पुत्रान्मृत–वत्सा चिराश्छिवे।।
काक–बंध्या लभेत् पुत्रं कामदेवा समोपमम।
मूको गिरं लभेद् गुञ्चि निर्धनो धनमाप्नुयात्।।
मन्त्रनाम सहस्त्रस्य पठनादष्ट सिद्धयः।
अम्बकस्य सुरेशानि वश्या हस्ते च मन्त्रिणा।।
नृपो–दासत्वमायाति वश्यास्तस्य नृपाङ्नाः।
देवाऽपि वशमायान्ति नागा–यक्षाश्च किन्नराः।।
अर्ध–रात्रि पठेत् नित्यं सकृद्रेतः क्षयान्तरे।
जपेन्मूलं यथा शक्तया वेद–धर्म समाहितः।।
स्तम्भयेश्च चक्रवर्तीन् मोहयेद् भुवन–त्रयम्।
वशयेत्केशवं देवि! मारयेन्मृत्यु मेव वा।।
आकर्षयेद् देव–कन्या गन्धर्व तनयांऽपि।
उच्चाटयति शत्रुणां कुलं दूरेपि संस्थितम्।।
विद्वेषयति सद्योरीं शमयेद्वाप्युपद्रवान्।
यः पठेत् देवि! सप्ताहमेकवा श्रृणोतिवा।।
ब्रह्म–हत्या भ्रूण–हत्या माता–पितृ वधस्तथा।
गुरु–हत्या सुरा–पानं गुरुतल्प–गतोद्भवम्।।
पातकं तत्क्षणात् नश्येद्धिमवाद्भास्करोदये।
न गायत्र्याः परोमन्त्रो मुक्ति दानक्षमः शिवे!।।
तस्माज्जपेन्मनुं देव्या गायत्र्याः परमार्थदम्।
स ब्राह्मणः जपेन्नित्यं त्र्यक्षरीं त्रिपदां पराम्।।
स शक्रो यो जपेन्मन्त्री गुरु – वक्त्रोधृतं मनुम्।
गुरुं ध्यात्वा जपेत् विद्यां पठेन्नाम–सहस्रकम्।।
इह लोके श्रियं प्राप्यऽमृतो मोक्षमवाप्नुयात्।
इति नाम सहस्रं ते सर्वागम रहस्यकम्।
चतुर्वेदैक सर्वस्वं गायत्री–तत्वमुत्तमम्।
तवस्नेहान्मयाख्यात् दुर्लभं त्रिदिवौक साम्।
अप्रकाश्य मदात्तव्यं गोपनीयं स्व–योनिवत्।।

।। इतिश्री रुद्रयामले महा–तन्त्रे देवी श्रीगायत्री–रहस्ये श्रीगायत्री नाम–सहस्रं सम्पूर्णम्।।

।।फल-श्रुति।।

॥ भावार्थ ॥

हे देवि! गायत्री का यह सहस्रनाम मन्त्र चारों वेदों और सभी आगमों से उदभूत–(उत्पन्न) है। यह मन्त्र–नाम सभी तन्त्रों में गोपित है अर्थात् सभी

तन्त्रों में गुप्त–रूप से विद्यमान है।

यह सभी वेदों और आगमों का सार–सर्वस्व है। इसमें सभी देवताओं सहित मेरा रहस्य छिपा हुआ है। यह पुण्य–प्रद, यशस्कर, दिव्य और सर्व–सारस्वत प्रद है अर्थात् इसके पाठ से सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होती है।

यह ब्रह्मोत्पत्तिकर है – अर्थात् ब्रह्म की उत्पत्ति इससे हुई है। तात्पर्य यह है कि इसका रहस्य समझ लेने से ब्रह्म–ज्ञान हो जाता है। यह **'ब्रह्म–साधना'** के लिए रसायन स्वरूप है।

इसका पाठ करने से सभी पापों और महापातकों का शमन हो जाता है। जो इसका पाठ नहीं कर सकता, वह इसका श्रवण करके अथवा दूसरों को इसका पाठ पढ़कर सुनाता है, उनके भी पाप और पातक समाप्त हो जाते हैं।

इसका नियमित रूप से पाठ करने वाला साधक भगवती गायत्री का पुत्रवत् हो जाता है। वह लक्ष्मीवान् हो जाता है। इसका पाठ रात्रि में करना चाहिए। सर्वविध शुद्ध होकर पाठ करना श्रेयस्कर है – परन्तु वाह्य–शुद्धि सर्वथा आवश्यक नहीं है। शुद्धता और अशुद्धता का विचार न करते हुए रात के समय नियमित रूप से इसका पाठ करना चाहिए।

श्रद्धा से अथवा अश्रद्धा से भी जो इसका पाठ करता है, वह भैरव के समान हो जाता है। धन–प्राप्ति की इच्छा रखने वाला जो व्यक्ति **'श्मशान'** में अथवा **'चिता'** के सम्मुख बैठकर इसका पाठ करता है, उसके गृह में कदम–कदम पर लक्ष्मी का निवास हो जाता है।

जो **'वामाचार–परायण'** साधक मङ्गलवार को पहिले **'श्रीचक्र'** का पूजन करके शक्ति–(नारी) के सानिध्य में इसका पाठ करता है, उसे शीघ्र ही भगवती पञ्चमुखी–गायत्री चतुर्मुख–ब्रह्मा और अपने समस्त आवरण देवताओं सहित स्वप्न में दर्शन देती हैं।

जो व्यक्ति **'वट–मूल'** में अर्थात् **'वट–वृक्ष'** की जड़ के समीप बैठकर इस दिव्य–स्तोत्र का दस–बार पाठ करता है, वह चाहे बधिर–(बहरा) हो, लङ्डा हो, काणा हो, अन्धा हो, कुष्ट–रोगी हो, अपने रोग से अपनी शारीरिक अक्षमता से मुक्त हो जाता है।

हे वरानने! इसका आठ–बार पाठ करने से कोई भी व्यक्ति चाहे वह शूद्र हो अथवा ब्राह्मण, विधिवत् दीक्षा प्राप्त दीक्षित हो जाता है।

'महा चीनाचार–क्रम' का साधक **'चक्र–पूजा'** में **'क्षीर'** पात्र लेकर–(अर्थात् **'क्षीर'** पान करता हुआ) इस दिव्य–स्तव का पाठ करता है, वह **'ब्रह्म'** का वल्लभ हो जाता है।

'शालिग्राम–शिला' में श्रेष्ठ पुष्पों और नैवेद्यों से भगवान् विष्णु का अर्चन करके क्षीरानन्दमय जो मन्त्र–साधक इस स्तव का सौ बार पाठ करता है, वह अपने शत्रु–समूह को उसी–प्रकार जला देता है, जैसे घने से घने जङ्गल को **'दावाग्नि'** जला देती है।

हे देवि! जो जितेन्द्रिय साधक एक सप्ताह तक एकभुक्त रहकर **'चीनाचार'** का पालन करते हुए रात के समय कुशासन पर बैठकर इसका पाठ करता है, उसे वरदा गायत्री प्रत्यक्ष दर्शन देती हैं।

शुभ नक्षत्र युक्त रविवार को भोज–पत्र पर अष्ट–गन्ध से सुन्दर यन्त्र बनायें और मूल–मन्त्र लिखें। भगवती गायत्री का सहस्रनाम लिखने के पश्चात् इसका पाठ करें। उस भोज–पत्र को सफेद–रङ्ग के धागे से वेष्टित कर दें। हे देवि! तत्पश्चात् भूमयी देवी की पूजा करें। पुरुष दाहिने हाथ में और स्त्री बायें हाथ में धारण करें। ऐसा साधक मन में जो भी इच्छा करता है, वह भगवती गायत्री की कृपा से उसकी वे–वे इच्छायें पूरी होती हैं।

इसका पाठ करने से बंध्या स्त्री को कुबेर के समान सम्पन्न और सदाचरण वाले पुत्रों की प्राप्ति होती है। मृत्वत्सा नारी को शीघ्र ही मार्कण्डेय के समान दीर्घायु पुत्र प्राप्त होता है। गूङ्गा बोलने लगता है और निर्धन धनवान हो जाता है।

इस सहस्रनाम मन्त्र का पाठ करने से **'अणिमा'** आदि **'अष्ट–सिद्धियाँ'** प्राप्त होती हैं। **'अणिमा'** आदि सिद्धियाँ मन्त्र–साधक के हाथ में स्थित हो

जाती हैं। राजे–महाराजे और राज–कन्यायें, देवता, यक्ष, नाग तथा किन्नर आदि उसके वशवर्ती हो जाते हैं।

वेद विहित धर्म का पालन करते हुए जो **'मन्त्र–साधक'** अर्धरात्रि के समय एक बार **'रेत–क्षयान्तर'** के पश्चात् मूल–मन्त्र का यथा शक्ति जप करता है, वह चक्रवर्ती सम्राटों को स्तम्भित कर सकता है। तीनों लोक उससे मोहित हो जाते हैं और देवताओं की बात ही क्या, स्वयं **'भगवान् कृष्ण'** उसके वशवर्ती हो जाते हैं। प्रचण्ड–शक्ति और अतुल–पराक्रम सम्पन्न वह साधक मृत्यु को भी मौत के घाट उतार सकता है।

हे देवि! मात्र एक सप्ताह तक इसका पाठ करने अथवा श्रवण करने से देव–कन्यायें, गन्धर्व–कन्यायें आकर्षित हो जाती हैं। दूर–दूर तक रहने वाले शत्रुओं का नाश हो जाता है। उसके शत्रुओं में फूट पड़ जाती है, सभी उपद्रवों का वह चुटकी बजाते शमन कर देता है।

भगवान् भुवन–भास्कर का उदय होते ही जिस तरह कोहरा छट जाता है, उसी तरह इसका पाठ करने से ब्रह्म –हत्या, भ्रूण–हत्या, माता–पिता और गुरू–हत्या, सुरा–पान तथा गुरू–तल्प गमन से उत्पन्न सभी पाप समाप्त हो जाते हैं। हे प्रिये! मुक्ति प्रदान करने में इस गायत्री–मन्त्र से बढ़कर कोई अन्य मन्त्र नहीं है। इसलिए परमार्थ प्रदान करने वाले इस मन्त्र का सदैव जप करना चाहिए।

जो ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण इस सर्वश्रेष्ठ त्रिपदा त्र्यक्षरी गायत्री–मन्त्र का जप करता है, वह इन्द्र के समान पराक्रमी और सर्व–वैभव सम्पन्न हो जाता है।

गुरू–मुख से यह मन्त्र प्राप्त करके जो **'मन्त्र–साधक'** गुरूदेव का ध्यान करते हुए नित्य–प्रति इस विद्या–(मन्त्र) का जप करता है और सहस्रनाम–स्तव का पाठ करता है, वह इस संसार में महतीश्री प्राप्त करके अन्त–काल में मोक्ष–रूप अमृत प्राप्त करता है।

हे देवि! इस सहस्रनाम–मन्त्र में सभी **'आगमों'** और **'चारों–वेदों'** का रहस्य निहित है। यह सर्वोत्कृष्ट गायत्री–तत्व देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।

हे प्रिये! तुम्हारे स्नेह के कारण मैंने इसे प्रकाशित किया। यह सर्वथा अप्रकाश्य है। इसे न तो प्रकाशित करना चाहिए और न किसी को यह मन्त्र देना चाहिए। इसे अपनी **'योनि'** के समान सदैव गुप्त रखना चाहिए।

।।श्री रुद्रयामल महा–तन्त्र के देवी श्री गायत्री रहस्य–प्रकरण में श्री गायत्री–सहस्रनाम स्तव सम्पूर्ण हुआ।।

।। इन्द्राक्षी-कवच ।।

प्रस्तुत 'कवच' रुद्रयामलोक्त ही है। प्रायः क्रम शैली उसी भाँति की है जैसे कि **'मुक्ति–चिन्तामणि श्रीगायत्री–कवच'** की। देवी इन्द्राक्षी देवराज इन्द्र की शक्ति हैं, जिनको ऐन्द्रीं भी कहा जाता है। **'अष्ट–मातृकाओं'** में भी इनका अपना स्थान है। यद्यपि इनकी उपासना साधक–समुदाय में प्रचलित है, किन्तु अधिकांश प्रयोगार्थ–रूप में! **'पूर्व–पीठिका'** व **'फलश्रुति'** में इनके इस कवच की महत्ता प्रकट की गयी है। विषय दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण है। इस हेतु इसको यहाँ प्राचीन हस्तलिखित **'इन्द्राक्षी–पञ्चाङ्ग'** से उद्धृत व संशोधित– सम्पादित कर प्रकाशित करने का अभिप्राय भी है। साधक–जन अवश्य ही इससे लाभान्वित होंगे –– ऐसी आशा है।

॥पूर्व-पीठिका॥

श्री देव्युवाच :-

भगवन्देव–देवेश! लोकेश्वर!जगत्पते!
इन्द्राक्ष्याः कवचं ब्रूहि सर्व–तत्व निरुपणम्।।

श्री भैरव-उवाच :-

इन्द्राक्ष्याः कवचं दिव्यं सर्व–तन्त्र निरूपणम्।
जगच्चिन्तामणिं नाम सर्व–मन्त्रैक साधनम्।।

यः धृत्वा कवचं ब्रह्मा–विष्णुः भीमः शची–पतिः।
यमोऽपि वरूणश्चैव कुबेरश्च दिगीश्वराः।।
ब्रह्मा सृजित विश्वं च विष्णुर्दैत्य निसूदनः।

शिवः संहारते विश्वं जिष्णुः समनुसां पतिः।।
दिगीश्वराश्च दिग्पालः यथा वदंनुभूपत्ते।
जगच्चिन्तामणिं वक्ष्ये भोग–मोक्षैक साधनम्।।
सर्व–विद्यामयं ब्रह्म–विद्या–निधि मनुत्तमम्।
जगच्चिन्तामणेर्देवि! कवचस्यास्य कीर्तितः।।
देवेन्द्राक्षी मया प्रोक्ता बीजं ह्रीं शक्तिरी स्मृता।
कीलकं प्रणवः प्रोक्तः त्रिवर्ग फल–साधने।।

विनियोग :-

ॐ अस्य जगच्चिन्तामणिर्नाम श्री इन्द्राक्षी कवचस्य पुरन्दर–ऋषिः, बृहती–छन्दः, श्री इन्द्राक्षी–देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, प्रणवः कीलकं त्रिवर्ग फल–साधने कवच–पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास :-

ॐ पुरन्दर ऋषये नमः — शिरसि। बृहती–छन्दसे नमः —मुखे। श्री इन्द्राक्षी देवतायै नमः — हृदये। ह्रीं बीजाय नमः — गुह्ये। श्रीं शक्तये नमः — पादयोः। प्रणवः कीलकाय नमः — नाभयोः। त्रिवर्ग फल–साधने कवच–पाठे विनियोगाय नमः — सर्वाङ्गे।

कर–न्यास :-

ह्रां श्रां — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं — तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं श्रूं — मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं श्रैं — अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं श्रौं — कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ह्रः श्रः — करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि–न्यास :-

ह्रां श्रां — हृदयाय नमः। ह्रीं श्रीं — शिरसे स्वाहा। ह्रूं श्रूं — शिखायै वषट्। ह्रैं श्रैं — कवचाय हुं। ह्रौं श्रौं — नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः श्रः — अस्त्राय फट्।

● उक्त सभी न्यास पूर्व में **'श्रीनारायण–हृदय'** में बताई गयी मुद्राओं के अनुसार सम्पन्न करें।

ध्यान :-

शङ्ख धनुश्चर्म ऋजूग्र तर्जनीं, दोर्भिर्दधतीं नयनत्रयाङ्कितम्।
सूर्याऽयुताभां कमलासन स्थितां, इन्द्राक्षिणीं तुङ्ग कुचं हृदि स्मरे।।

मानस–पूजन :-

१. अधोमुख कनिष्ठिकाङ्गुष्ठ से–**'गन्ध–मुद्रा'** दिखाते हुए –
ॐ लं पृथ्वी–तत्वात्मकं गन्धं देवी श्रीइन्द्राक्षी प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।
२. अधो–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से–**'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए –
ॐ हं आकाश–तत्वात्मकं पुष्पं देवी श्रीइन्द्राक्षी प्रीतये समर्पयामि नमः।
३. ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से–**'धूप–मुद्रा'** दिखाते हुए –
ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं देवी श्रीइन्द्राक्षी प्रीतये घ्रापयामि नमः।
४. ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से–**'दीप–मुद्रा'** दिखाते हुए –
ॐ रं अग्नि–तत्वात्मकं दीपं देवी श्रीइन्द्राक्षी प्रीतये दर्शयामि नमः।
५. ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से–**'नैवेद्य–मुद्रा'** दिखाते हुए –
ॐ वं जल–तत्वात्मकं नैवेद्यं देवी श्रीइन्द्राक्षी प्रीतये निवेदयामि नमः
६. ऊर्ध्व–मुख सर्वाङ्गुलियों से–**'ताम्बूल–मुद्रा'** दिखाते हुए –
ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं देवी श्रीइन्द्राक्षी प्रीतये कल्पयामि नमः।

कवच–पाठ :-

ॐ ह्रीं श्रीं वज्र–हस्ता मे शिरो रक्षतु सर्वदा।
ऐं सौः क्लीं पातु मे भालं वज्रिणी वज्र–सेविता।।
इन्द्राक्षी पातु मे नित्यं भ्रुवौ बिन्दु निषेविता।
फट् स्वाहा वज्र–हस्ता च पातु नेत्रे ममानिशम्।।
ॐ ह्रां कर्णौ सदा पातु, ॐ श्रां गण्डौ ममावतु।
ॐ ॐ नासां च पातु परमां परमेश्वरी।।
ॐ ऐं मुखं तथा पातु वीर–धीरैक सुन्दरी।
ॐ सौः औष्ठौ सदा पातु देवी श्री देव सुन्दरी।।
ॐ क्लीं जिह्वां सदा रक्षेद् देवता शशि–सुन्दरी।

ॐ क्लीं कण्ठं ममाव्यात् वै देवता सूर्य–सुन्दरी।।
ॐ सः स्कन्धौसदा पातु देवी श्री वाह्निन–सुन्दरी।
ॐ ऐं छूं मे उरः पातु देवी श्री ऋक्ष–सुन्दरी।।
ॐ श्रीं मे स्तनौ पातु देवी श्री कुलिश–सुन्दरी।
ॐ श्री ह्रीं मे वतत्पार्श्वो देवी श्री तिथि–सुन्दरी।।
ॐ ऐं ह्रां मे वतात्कुक्षिं देवी श्री योग–सुन्दरी।
ॐ श्रीं ह्रौं पातु मे नाभिं देवी श्री पाश–सुन्दरी।।
ॐ श्रीं मे पातु जठरे देवी श्री कमल–सुन्दरी।
ॐ हूं क्रीं पातु मे बाहू देवी श्री खट्वाङ्– सुन्दरी।।
ॐ ह्रीं श्रां पातु मे हस्तौ देवी श्री मार्गण–सुन्दरी।
ॐ क्रां ह्रैं पातु मे पृष्ठं देवी श्री भद्राङ्गसुन्दरी।।
ॐ ह्रीं सौं पातु मे वस्तिं देवी श्री पञ्चास्य–सुन्दरी।
ॐ श्रीं हूं क्रां कटिं पातु देवी ताटङ्क – सुन्दरी।।
ॐ श्रीं स्त्रीं पातु मे शिखं देवी श्री पीतन–सुन्दरी।
ॐ ह्रीं हूं पातु मे वसाद्गुह्यं देवी श्री पाताल–सुन्दरी।।
ॐ श्रीं क्लौं पातु मे ऊरू देवी श्री ब्राह्मण–सुन्दरी।
ॐ ऐं ह्सौः रक्षेज्जानू देवी श्री बाह्य–सुन्दरी।।
ॐ श्री वैं पातु मे जङ्घे–देवी श्री विष्णु–सुन्दरी।
ॐ स्त्रां ह्सौः सदा व्यान्मे गुल्फो श्री गीर्वाण–सुन्दरी।।
ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे पादौ देवी श्री शिव–सुन्दरी।
ॐ स्त्रीं हूं पातु मां पूर्वे देवी श्री यक्ष–सुन्दरी।।
ॐ जूं सः पातु मे वह्नौ देवी श्री दैत्य–सुन्दरी।
ॐ ऐं क्लीं पातु मां दक्षे देवी श्री प्रेत–सुन्दरी।।
ॐ श्रां मां पातु नैऋत्यां देवी श्री राक्षस–सुन्दरी।
ॐ श्रीं मां पातु वारुण्यां देवी श्री वरुण–सुन्दरी।।
ॐ क्रौं हूं पातु मां वायव्यां देवी श्री वायु–सुन्दरी।
ॐ हूं मां पातु कौबीर्यां देवी श्री पिशाच–सुन्दरी।।
ॐ श्रीं ह्रीं पातु मामैशे देवी श्री ईशान–सुन्दरी।
ॐ ऐं ह्रूं पातु मामूर्ध्वे देवी श्री गगन–सुन्दरी।।
ॐ ह्रीं अद्यस्तान्मां पायाद्देवी श्री पन्नग–सुन्दरी।
ॐ ह्रीं मां प्रभाते व्याद्देवी श्री ब्रह्माण्ड–सुन्दरी।।
ॐ ह्रीं मां पातु मध्याह्ने देवी श्री भुवन–सुन्दरी।
ॐ ह्रीं श्रीं पातु मां सायं देवी श्री त्रिपुर–सुन्दरी।।
ॐ क्रां क्लीं पातु मां देवी श्री त्रैलोक्य–सुन्दरी।
ॐ क्रां पातु निशीथे मां देवी श्री काम–सुन्दरी।।
ॐ ह्रां क्रां मां निशान्तेव्याद् देवी श्री लोक–सुन्दरी।
सर्वत्र–सर्वदा पातु देवी मां श्री भूत–सुन्दरी।।
रणे राज–कुले द्युते–विवादे रिपु–सप्ननि।
दावाग्नौ रण्य–भीतौ च पाते वा ज्वर–रोगत।
महा–व्याधिषु मां पातु इन्द्राक्षी च श्री इन्द्र–सुन्दरी।।
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं सौः क्लीं पायादिन्द्राक्षी मां भवां बुधे।
शिरसः पाद पर्यन्तः पादादि मस्तकान्तकम्।
ॐ ह्रीं श्रीं सर्वभीतिभ्यः इन्द्राक्षी पातु मे वपुः।।

॥ फल–श्रुतिः ॥

इतिदं कवचं गुह्यं सर्व–विद्या निरूपिणम्।
जगच्चिन्तामणिं नाम त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।।
सर्वतत्वमयं तत्वं दिव्यं सर्व–तन्त्रेषु रूपिणम्।
सर्वागम मयं तत्वं गोप्तव्यं पशु–सङ्कटे।।
अर्ध–रात्रेषु मध्याह्ने रवौ कुङ्कमकेन च।
भूर्जत्व विलेखद्वर्म धारयेन्मूर्ध्नि वा भुजे।।
रणे सर्वान् रिपूञ्जित्वा कल्याणी गृहमा विशेत्।
बंध्या वाम–भुजे धृत्वा ऋतुःस्नाताह्नि पञ्चमे।।

धृत्वा चिरेण–कालेन लभते तनयान्बहून्।
ज्वरादयोपि रोगाश्च सन्निपातितादि कुष्टकाः।।
विद्रावन्ति भयद्रस्ताः कवचास्यास्य धारणात्।
सप्त–जन्मार्जितं पापं दहत्याग्नि रिवेन्धनम्।।
इन्द्र प्रभृत्यो देवाः काम–क्रोधादयोरयः।
जीवादयश्व गुरूवः शुक्राद्याः कवयस्तथा।।
भूपा पृभृत्यो मर्त्या वशमेष्यन्ति वर्मणः।
धारणात्पठनात्सत्यं सर्वाविद्येश्वरो भवेत्।।
धनवान् पुत्रवान् श्रीमान्पठनात्साधको भवेत्।
इतिदं कवचं गुप्तं गुह्याद्गुह्यतमं परम्।।
गुप्तं त्रैलोक्य–गुप्तं च गोप्तव्यं च दुरात्मनः।
इन्द्राक्ष्याः सर्व सर्वस्वं सारात् सारोत्तमोत्तमम्।
अदातव्यम व्यक्तव्यामित्याज्ञा परमेश्वरी।।

।।इति श्री रुद्र–यामले महा–तन्त्रे श्री इन्द्राक्षी जगाच्चिन्तामणिर्नाम कवचं सम्पूर्णम्।।

।।इन्द्राक्षी मन्त्र-साधना।।

प्राचीन हस्त–लिखित ग्रन्थ से उदृधृत व प्रस्तुत 'मन्त्र–विधान' देवी इन्द्राक्षी का ही है, जो दुर्लभ एवं अत्यन्त प्रभावशाली है। 'वाराही–वार्ताली, कर्ण–मातङ्गी, स्वप्नेश्वरी' आदि की भाँति ही यह 'मन्त्र' साधक को अतीतानगत के विषय का ज्ञान कराकर, सम्मुख–जनों को 'चमत्कृत' कर देने का फल–प्रदान करता है। एक जिज्ञासु–जन को मैंने इस विधान के विषय का ज्ञान करा कर 'मन्त्र–साधना' आरम्भ कराई थी, साधना–काल में यह प्रसङ्ग वश अगले दिन की व्यक्ति–विशेष दिनचर्या के विषय में पूर्व दिन ही बता देता था और वही होता था। किन्तु साधना–पूर्ण होने से पूर्व ही इस–प्रकार के सफल 'वाक्य–मनोरञ्जन' से उसकी साधना 'दैवीय–कारणों' से पूर्ण नहीं हो पायी तथा अनेकों प्रयासों के पश्चात् आगे भी सफलता प्राप्त हो नहीं सकी। साधक को चाहिए कि उक्त साधना गुप्त रखकर, निष्ठा व उचित आचरण–सिद्धान्त के अनुसार सम्पन्न करें तथा किसी विषय–वाक्य लोभ में न पड़कर अपने साधन–लक्ष्य को पूर्ण करे— निश्चित सफलता प्राप्त होगी।

विनियोग :-

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी–अङ्ग मन्त्रस्य पुरन्दर–ऋषिः, जगती–छन्दः, श्री इन्द्राक्षी–देवता, ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौं कीलकं भूत–भविष्यद्–वर्तमान काल–ज्ञान प्राप्त्यर्थे इन्द्राक्षी मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-नयासः-

ॐ पुरन्दर–ऋषये नमः—शिरसि। जगती–छन्दसे नमः — मुखे। श्री इन्द्राक्षी–देवतायै नमः — हृदि। ऐं बीजाय नमः —गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः — पादयोः। सौं कीलकाय नमः — नाभयोः। इन्द्राक्षी भूत–भविष्यद्–वर्तमान काल–ज्ञान प्राप्त्यर्थे इन्द्राक्षी मन्त्र जपे विनियोगाय नमः — सर्वाङ्गे।

कर-न्यास :-

ॐ ऐं क्लीं सौं ॐ नमो भगवती इन्द्राक्षी मां रक्ष–रक्ष — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ भूत–भविष्यद् वर्तमान काल–वादिनी — तर्जनीभ्यां नमः। ॐ प्रपञ्च–जन मोहिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं— मध्यमाभ्यां नमः। ॐ नन्द–नन्दन–वनेक — अनामिकाभ्यां नमः। ॐ अमुकं मे कार्य मम स्वप्ने कर्णे कथय–कथय — कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ सौं क्लीं ऐं स्वाहा — करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-न्यास :-

ॐ ऐं क्लीं सौं ॐ नमो भगवती इन्द्राक्षी मां रक्ष रक्ष — हृदयाय नमः। ॐ भूत–भविष्यद्–वर्तमान काल–वादिनी—शिरसे स्वाहा। ॐ प्रपञ्च–जन मोहिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं — शिखायै वषट्। ॐ नन्द–नन्दन–वनेक — कवचाय हुम्। ॐ अमुकं मे कार्य मम स्वप्ने कर्णे कथय–कथय — नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सौं क्लीं ऐं स्वाहा — अस्त्राय फट्।

● उक्त सभी न्यास पूर्व में **'श्रीनारायण–हृदय'** में बताई गयी मुद्राओं के

अनुसार सम्पन्न करें।

ध्यान :-

बालार्क–कोटि रूचिरां स्फटिकाक्षं माला कोदण्डमिक्षा जनीतां स्मरम्। पञ्च–बाण विद्यां न नीलवपुषीं दधति त्रिनेत्राम् ध्यायेत् समस्त जननी नवचन्द्र चूडाम्।।

मानस-पूजन :-

पूर्वोक्त।

मन्त्र :-

ॐ ऐं क्लीं सौं ॐ नमो भगवती इन्द्राक्षी मां रक्ष–रक्ष भूत–भविष्यद्–वर्तमान काल–वादिनी प्रपञ्च–जन–मोहिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं नन्द–नन्दन–वनेक अमुकं मे कार्य मम स्वप्ने–कर्णे कथय–कथय सौं क्लीं ऐं स्वाहा।

विधान :-

किसी शुभ–पर्व की रात्रि से उक्त 'मन्त्र–साधन' उत्तराभिमुख होकर आरम्भ करें। २१ दिन में सवा–लक्ष मन्त्र का जप पूर्ण करें। नियमानुसार जप का दशांश हवन, तर्पण, मार्जन व ब्राह्मणादि भोजन करा, साधना–सम्पन्न करें।

'गोपनीय तथा अति-दुर्लभ'

।।श्री सुमुखी हृदय-स्तोत्र।।

दस–महाविद्याओं के परिचय से सभी पाठक व साधक–बन्धु परिचित हैं। इन महाविद्याओं के नवे क्रम पर महाविद्या भगवती मातङ्गी का स्थान है, इनको सुमुखी, लघु–श्यामा या श्यामला, उच्छिष्ठ–चाण्डालिनी, उच्छिष्ठ–मातङ्गी, राज–मातङ्गी, कर्ण–मातङ्गी, चण्ड–मातङ्गी, वश्य–मातङ्गी, मातङ्गेश्वरी, जयेष्ठा– मातङ्गी तथा सारिकाम्बा आदि नामों से साधक–समुदाय में जाना जाता है। ये वागेश्वरी है, जिह्वा के अग्रभाग पर इनका निवास माना गया है। सङ्गीत, कवित्व, वाक्शक्ति आदि का अद्भुत वर–ज्ञान इन्हीं देवी की कृपा से प्राप्त होता है, किन्तु इनकी साधना है पूर्णतः **'कुलाचार'** माध्यम से! यद्यपि विभिन्न **'तन्त्र–शास्त्रों'** में भगवती मातङ्गी की साधना पर प्रकाश डाला गया है, किन्तु स्वतन्त्र–रूप से इनके साधनात्मक–ग्रन्थ प्रायः गुप्त ही हैं। परम्परागत ही इनकी साधना का विस्तारमय–क्रम प्राप्त हो पाता है। यहाँ **'सुमुखी–हृदय'** एक दुर्लभ प्रस्तुति है, जो केवल दीक्षित साधक–समुदाय हेतु ही प्रथम–बार प्रकट की जा रही है। देवी मातङ्गी विषयक अन्य किसी भी ग्रन्थ में ये **'सुमुखी–हृदय'** प्राप्य नहीं हो सका। मेरी परम्परा से सम्बद्ध ये प्रस्तुति **'शाक्त–जनों'** को अवश्य ही **'प्रफ्फुलित–हर्षित'** करेगी –– इसमें कदापि भी संशय नहीं है। फलश्रुति में बताये गये विधानुसार इसके पाठानुष्ठान से क्या–क्या सम्भव नहीं है? यद्यपि इस **'हृदय–स्तोत्र'** का मुख्य फल–प्रयोजन **'दारिद्रय–नाश'** हेतु है, किन्तु भगवती मातङ्गी के गुण–स्वभावानुसार वह सभी फल–साधक को मिलता है, जो साधक की अभिलाषान्तर्गत है।

प्रस्तुत **'हृदय–स्तोत्र'** की शब्द–शैली विचित्र–रूप में है, क्रम **'माला–मन्त्र'** की भाँति प्रतीत होता है। परन्तु पाठ करने में जो आनन्द प्राप्त होता है, वह विलक्षण है तथा साधक के स्वानुभव पर भी।

।।पूर्व-पीठिका।।

श्री सुन्दर्युवाच

देवादि देव देवेश! सर्वज्ञ करुणा निधे।
द्रुतं दारिद्रय नाशस्य वदोपायं सदाशिवः।।

श्री शिव उवाच

शृणु देवि! महागुह्यं सुन्दरी प्राण–वल्लभे।
महा–दारिद्रय नाशाय सुमुखि–हृदयं पठेत्।
षण्मासावर्त योगेन निर्धनो धनदो भवेत्।
इयं गुप्ता महाविद्या त्वदर्थे प्रकटी कृता।।
न प्रकाश्या तदा देवी पठनीय प्रयत्नतः।
अस्या संपठनाद् देवी जायन्ते चाष्ट सिद्धयः।।

सन्तोष्य चोपदेष्टारं प्राणैरपि धनैरपि।
दुर्लभा दीयते येन विद्या दारिद्रय नाशिनी।।

विनियोग :-

ॐ अस्य श्री सुमुखि–हृदयस्य श्री महा–मातङ्ग भैरव ऋषिः, अनुष्टुपादि छन्दः, श्री वर–सुमुखि देवता दारिद्रय–नाशार्थे हृदय–पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :-

ॐ श्री महा–मातङ्गभैरव ऋषये नमः –––शिरसि। अनुष्टुपादि छन्दसे नमः ––– मुखे। श्री वर–सुमुखि देवतायै नमः ––– हृदये। दारिद्रय-नाशार्थे हृदय–पाठे विनियोगाय नमः ––– सर्वाङ्गे।

● उक्त न्यास पूर्व में **'श्रीनारायण–हृदय'** में बताई गई मुद्राओं के अनुसार सम्पन्न करें।

ध्यान :-

वन्दे श्री सुमुखीं प्रसन्न मनसा पूर्णेन्दु विम्वाननाम्।
सिन्दूराङ्कित यस्य कामधुमदां लोलां च मुक्तावलीम्।
श्यामा कञ्जलिता कराम्बुज गतां चाध्यापयन्तीं शुकाम्।
गुञ्जा–पुञ्ज विभूषणां च करुणां मामुक्तवेणी लताम्।।

मानस-पूजन :-

अधो–मुख कनिष्ठिकाङ्गुष्ठ से **'गन्ध–मुद्रा'** दिखाते हुए –
ॐ लं पृथ्वी–तत्वात्मकं गन्धं देवी सुमुखि प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।
अधो–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए –––
ॐ हं आकाश–तत्वात्मक पुष्पं देवी सुमुखि प्रीतये समर्पयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'धूप–मुद्रा'** दिखाते हुए –––
ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं देवी सुमुखि प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से **'दीप–मुद्रा'** दिखाते हुए –––
ॐ रं अग्नि–तत्वात्मकं दीपं देवी सुमुखि प्रीतये दर्शयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से **'नैवेद्य–मुद्रा'** दिखाते हुए –––
ॐ वं जल तत्वात्मकं नैवेद्यं देवी सुमुखि प्रीतये दर्शयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख सर्वाङ्गुलियों से **'ताम्बूल–मुद्रा'** दिखाते हुए –––
ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं देवी सुमुखि प्रीतये कल्पयामि नमः।

।। हृदय-पाठ ।।

ॐ नमो रत्नत्रयेश्वरि, ॐ श्री सुमुखि श्री सुरूप–वदने, ॐ भद्रे सुभद्रे भद्रवति, मङ्गले सुमङ्गले मङ्गलवति, अग्रले अग्रलवति, चन्द्रे चन्द्रवति, धनवति धान्यवति, ॐ उद्योतवति, श्रीमति, प्रभवति, अमले, विमले, निर्मले, अनुनस्ते अवजत हस्ते, विश्वकेशि, विश्वनिशि, विश्वनशि, विश्वनन्दि, विश्वरुपिणि, विश्वनखि, विश्वशिरे, विशुद्धशीले, विगुहनीये, विशुद्धनीये, उत्तरे, अनुत्तरे, सङ्कुरे, नङ्कुरे, प्रभङ्कुरे र र मे, र र मे, रि रि मे, रि रि मे, रु रु मे, रु रु मे, ख ख मे, ख ख मे, खि खि मे, खि खि मे, खु खु मे, खु खु मे, ध ध मे, ध ध मे, धु धु मे, धु धु मे, त त रे, त त रे, तुरे–तुरे, तर–तर, तारय–तारय मां सर्व सत्वांश्च वज्रे–वज्रे वज्रगर्भे, वज्रोपमे, वज्रणि, वज्रवति ॐ उक्वे, बुक्वे, तुक्वे, हुक्वे, ढुक्वे, धक्वे, टक्वे, रक्वे, आवर्तिनी, प्रवर्तिनी, निवर्तिनी, निर्वेषणि, प्रवर्षिणी, वर्द्धिनी, प्रवर्द्धिनी, निष्पादिनि, वज्रधर, सागर–निर्घोष तथा विधं अनुष्मर–अनुष्मर, सर्वतथागत सत्य मनुष्मर, अनिहारी, अनिहारी तय–तय, रूढ़–रूढ़, पूर–पूर, पूरय–पूरय भगवति! सुमखि! वसुधरि! मम सपरिवारस्य सर्वेषां सत्वानां भर–भर, भरिणी–भारिणी, शान्तिमति, जयमति, महामति, सुमङ्गलमति, पिङ्गलमति, सुभद्रे, सुभद्रमति, शुभमति, चन्द्रमति, आगच्छ–आगच्छ समय मनुष्मर स्वाहा, सर्व तथागतानां विनय मनुष्मर स्वाहा, आधार मनुष्मर स्वाहा, आकार मनुष्मर स्वाहा, आवरण मनुष्मर स्वाहा, प्रभाव मनुष्मर स्वाहा, धृति मनुष्मर स्वाहा, हृदय मनुष्मर स्वाहा, उपहृदय मनुष्मर स्वाहा, जय मनुष्मर स्वाहा, विजय मनुष्मर स्वाहा, सर्व सत्य विजय मनुष्मर स्वाहा, ॐ श्री सुमुख्यै स्वाहा, ॐ वसुमुख्यै स्वाहा, ॐ वसुमति श्रिये स्वाहा, ॐ वसुवे स्वाहा, ॐ वसुदे स्वाहा, ॐ वसुन्धरि स्वाहा, ॐ धरिणि–धारिणी स्वाहा, ॐ समय सोम्ये समयङ्करि

महामाये स्वाहा, ॐ श्रियै स्वाहा, ॐ श्री करि स्वाहा, ॐ धनकरि स्वाहा, ॐ धान्यकरि स्वाहा, ॐ श्री सुमुखि श्री करि धनकरि, धान्यकरि, रत्न–वर्षिणी स्वाहा, ॐ वसुधारे स्वाहा, ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा, ॐ लक्ष्म्यै भूतल–वासिन्यै स्वाहा, ॐ यान–यात्रावहे स्वाहा, ॐ कपाल कृत करे स्वाहा, ॐ महाघूर्णित–लोचने महा–मातङ्गिनी अनुपन्नानां द्रव्याणां उत्पादनि उत्पन्नानां द्रव्याणां वृद्धिं करि, ॐ सुमुखि टिली–टिली, टेलि–टेलि, इत इत आगच्छ–आगच्छ, भगवति मां विलम्बय मनोरथं मे पूरय पूरय दशभ्योदिग्भ्यो यथोदक धारा परि पूरयति। महीन्द्रो वैवश्वतश्चैव वरूणो धनदस्तथा।। मनोनुगामिनी सिद्धिं लब्धवन्तो यथानया। तथैमानि यथाकामं चिन्तितं सततं ममः। प्रयच्छन्ति प्रसिद्धयन्तु सर्व–मन्त्र पदानिह।

सुट–सुट, खट–खट, खिटि–खिटि, खुट–खुट, सरू–सरू, मुञ्च–मुञ्च, मरूञ्च–मरूञ्च, तर्पिणि–तर्पिणि, तर्ज्जिनि–तर्ज्जिनि, देहि–देहि, दापय–दापय, सुमुखि उतिष्ठ–उतिष्ठ, हिरण्यं सुवर्ण प्रदापय–प्रदापय स्वाहा, अन्नपानय स्वाहा, वसुनिपानाय स्वाहा, गौ स्वाहा, सुरभे स्वाहा, वसु स्वाहा, वसुपतये स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, वरूणाय स्वाहा, वैश्रवणाय स्वाहा, दिग्भ्यो विदिग्भ्यः स्वाहा, पूर्णयन्तुमेकांक्षां अनुमोदयन्तु इमे मन्त्र पदाः।

ॐ हूं ह्रीं सुमुखि एह्येहि भगवति देहि–देहि स्वाहा, ॐ नमो रत्नत्रय पादयै नमो देवि सुमुखि वसुधारे, धनाधारे, वसुधारां पातय–पातय कुरू–कुरू धनेश्वरि धनदे रत्नदेहें, रत्न धन–सागर, धानकोटि शत–सहस्र परिवृत्ते एहि–एहि भगवति प्रविश्य मत्पुरं मद्भवने महा–धन धान्य–धारां पातय–पातय तुर–तुर ॐ हूं तृट् कैलाश–वासिन्यै स्वाहा, ॐ वसुधारे सर्वार्थ–साधिनि सुमुखि साधय–साधय, उद्धर–उद्धर, रक्ष–रक्ष, वं वं टं टं टं टं दं डं स्वाहा, ॐ नमो सुमुख्यै आर्य लेवड़िके भक्तजन जीव–रक्षिणी कपाल–हस्ते दिव्य–रूपे धनदे, वरदे, शुद्धे–विशुद्धे, शिवेकरि, शान्तिकरि भय–नाशिनी सर्व–दुष्टान् भञ्जय–भञ्जय, मोहय–मोहय, जृम्भय–जृम्भय, स्तम्भय–स्तम्भय मम शान्ति पुष्टिं वश्यं रक्षां कुरू–कुरू स्वाहा।।

॥ फल–श्रुति ॥

इयं सुमुखि सर्वस्व हृदय विद्या सम्यक् श्री सुमुखि चक्रम्यर्चनानुष्ठान परान्नाचार्यान् सम्पूज्य षणमासानावर्तयेत् ततः सिद्धा भवति। यास्मिन् स्थाने इयं विद्या वाच्यते सा दिग्पूज्या भवति। शुभ स्थाने, कोष्ठागरे रक्त–चन्दनेन त्रिकोणं पञ्चकोणं चतुरस्रं मण्डलं विलिख्य त्रिवासन् आवर्तयेत् सुमुखीमावाह्य कोशस्य कोष्ठस्य वृद्धिर्भवति। वसुधारायां कृष्णाष्टम्याम् मावस्यं होमं प्रकुर्वतः पुंसो निखिलार्थ सिद्धिर्भवति। दीपमालिकायामवश्यं रात्रो जागरणं विधाय दिवो पासपरो भूत्वा, निशि पूजां विधाय क्षीर–खाण्डाज्य शुद्धि कारणादिभिः हवनं कृत्वा सकलां रात्रिमार्वतयेत्। स्वशक्ति, पराशक्ति शरीरे सुमुखीमावाह्य तदग्रे होम पाठादिकं कुर्यात्। अकस्मात्लक्ष्म्यां पूर्णो भवति।

।। महामारी स्तोत्र-विधान ।।

श्रीविक्रम–सम्वत्–२००३ में पण्डित–पुस्तकालय–(काशी) द्वारा **'बृहत्स्तोत्र–रत्नाकर'**–(द्वितीय–संस्करण) प्रकाशित हुआ था, जिसमें अद्भुत और दुर्लभ–स्तोत्रों का विशेष सङ्ग्रह था। ग्रन्थ में सभी स्तोत्र अथवा उनके विधान मूलवत् ही प्रकाशित हुए थे। पृष्ठ–२८६–६१ पर **'महामारी–स्तोत्र'** नाम से एक स्तोत्र एवं उसका विधान प्रकाशित था, जो कि **'देवी–पुराणोक्त'** कहा गया। इस अल्पज्ञ का ध्यान विशेष–रूप से इसी 'स्तोत्र–विधान' पर आकर्षित हुआ। इस 'स्तोत्र–विधान' की विशिष्टता तथा इसके **'सामाजिक सम्बन्ध–लाभ'** को देखते हुए, इसके विधान का अनुवाद कर प्रस्तुत करने का विचार आया, जिससे किन्हीं न किन्हीं जनों को इस प्रस्तुत विधान से लाभ अवश्य ही प्राप्त होगा। स्वयं 'मृत्यु–देवी' अर्थात् 'महामारी' के सम्वाद में यह 'स्तोत्र–विधान' इस–प्रकार है—

श्रीदेवी ने कहा—प्राचीन काल में प्रजापिता ब्रह्माजी ने मुझे बुलाकर कहा — हे पुत्रि! मेरे वचनों को सुनो और तदनुसार कार्य करो। कलि–काल में राजा–प्रजा सभी दुराचारी हो गये हैं। अतएव पृथ्वी–लोक में मृत्यु के रूप में प्रतिष्ठित होकर परायी स्त्रियों के प्रति अनुरक्त, देव–सम्पत्ति,

ब्राह्मणों की सम्पत्ति तथा दूसरों के स्तव का अपहरण करने वाले राजाओं और पापीजनों का नित्य–प्रति संहार करो। प्रजापिता ब्रह्माजी और इन्द्र आदि देवताओं के द्वारा इस प्रकार समुदिष्ट होकर मैं पृथ्वी लोक में आती हूँ। गाँव–गाँव में घूम—धूम कर पापियों का नाश करके मैं पुनः ब्रह्मलोक चली जाती हूँ।

लक्षण :-

जब घरों में चूहें नाच–नाच कर मरने लगते हैं, बद्धिमान् और पुण्यशील व्यक्ति शास्त्रों से विचार कर यह जान जाते हैं कि गाँव में मेरा–(महामारी का) प्रवेश हो चुका है। अतः वे लोग घरों को छोड़कर अपने परिवार–जनों को साथ लेकर वनों में निवास करने लगते हैं। वहाँ वे लोग देवी को शान्त करने के लिए उसके महा–मन्त्र का जप, हवन और उत्तम स्तोत्र आदि का पाठ करते हैं। उनकी कोप शान्ति का मन्त्र है—

ॐ नमो भगवति महामारिके मृत्यु–रूपिणि मामवतु स्वाहा।।

शांति-विधान :-

'महामारी' की शांति के लिए वन में शुद्ध और स्वच्छ जलाशय के तट पर देवी की प्रतिमा स्थापित करें। धूप–दीप आदि विविध–उपचारों से उनका भक्ति पूर्वक पूजन करके बुद्धिमान् साधक वीरासन पर बैठकर दोनों हाथ ऊपर उठाकर और अधोमुख होकर उक्त मन्त्र का प्रतिदिन एक हजार जप करें। तत्पश्चात् खदिर (कत्या, खैर) की लकड़ी में अग्नि–प्रज्ज्वलित कर हल्दी मिश्रित चित्राभ (खिचड़ी) से यथा–विधि हवन करें। यह हवन ब्राह्मणों और परिवार–जनों को साथ लेकर करना चाहिए। हवन के बाद 'स्तोत्र' का सब लोग पाठ करें —

॥ स्तोत्र ॥

नमो देवि! महादेवि! सर्वशोक वशङ्करि।
सर्वदा सर्वत्रो मह्यं कृपां कुरू कृपामयि।।
मेरौ कैलाश–शिखरे हेमादौ गन्धमादने।
नित्य प्रिय कृतावासे, मद्य–मांस बलिप्रिये।।
महासैन्य समायुक्ते सर्वप्राणि विहिंसके।
सर्वाभिचारिके देवि! सर्व त्वं रक्ष सर्वदा।
यथ कुत्र स्थले वापि यस्मिन् कस्मिन् यदा तदा।
रक्ष मां, रक्ष मां, देवि! सुपुत्र पशुभृत्यकम्।।
माङ्ग्यलं मङ्गलं देहि, महा–मङ्गल दायिनि!।
लोकानाम भये! सर्वमङ्गले! मङ्गलप्रिये।।

भक्ति भाव से इस प्रकार महादेवी की स्तुति करके उनकी आरती उतारें, पुष्पाञ्जलि दें। देवी की पूजा करने के बाद उनका स्मरण करते हुए परिवार–सहित भोजन करें।

गृह-प्रवेश :-

जब गाँव में और घरों में शान्ति प्रतीत होने लगे तो **'काक–शान्ति'** कराकर शुभ–मुहूर्त में अपने–अपने घरों की साफ–सफाई करायें। **'स्वस्ति–वाचन'** और **'शान्ति–सूक्त'** पाठ के बाद ब्राह्मणों और परिवार–जनों के साथ गृह में प्रवेश करें। ब्राह्मण–भोजन कराकर देवी से प्रार्थना करें —

गच्छ गच्छ महादेवि! स्व–स्थानं मङ्गलं कुरू।

इस विधान से 'महामारी' शान्त होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

फल-श्रुति :-

देवी ने इस प्रकार देवताओं को पृथ्वी पर इस रूप में अपने आविर्भाव की कथा सुनाई। जिस घर में इस विधान की पुस्तक होती है, वहाँ महामारी का भय नहीं होता, जो व्यक्ति इसका पाठ करता है अथवा भक्ति पूर्वक इसकी पूजा करता है, उसका सर्व–विध कल्याण होता है। सभी मनोरथों की सिद्धि के लिए यथा–वैभव भगवती का अर्चन एवं स्तवन करना चाहिए। जब बिल्ली और चूहे तड़फ–तड़फ कर मरने लगें, तुरन्त ही

वह स्थान छोड़कर चला जाना चाहिए।

विमर्श :-

'महामारी' से अभिप्राय है जैसा कि **'प्लेग'**। इस **'महामारी'** से गाँव के गाँव समाप्त हो जाते थे। आधुनिक चिकित्सा–विज्ञान की धारणा है कि यह **'महामारी'** अब पूर्णतः समाप्त हो चुकी है। अभी कुछ वर्ष पूर्व तक **'डेङ्'** के बारे में भी यही अवधारणा थी, जो अब असत्य सिद्ध हुई है। अतः **'प्लेग'** के सम्बन्ध में आज की अवधारणा कब समाप्त हो जाये, कुछ नहीं कहा जा सकता। अभी कुछ वर्षों पूर्व ही **'गुजरात'** प्रान्त से **'प्लेग'** फैलने की बड़ी घटनायें हो चुकी हैं। प्रस्तुत **'स्तोत्र'** में कहा गया है कि **'प्लेग'** (अर्थात् **'महामारी'**) के लक्षण नजर आते ही गाँव–घर छोड़कर स्वच्छ वातावरण वाले 'वन' में रहना चाहिए, परन्तु अब 'वन' ही कहाँ रह गये हैं! भगवती का ही सहारा है। **'श्रीदुर्गा–सप्तशती'** के 'अर्गला–स्तोत्र' का प्रथम मन्त्र है –– **जयन्ती मङ्ला काली भद्र–काली.......** इस मन्त्र से सम्पुटित करके **'सप्तशती'** का सविधान पाठ करने से **'महामारी'** शान्त होती हे। उपर्युक्त स्तोत्र और विधान **'देवी–पुराण'** से प्रस्तुत है।

।।पद्मावती मन्त्र-विधान।।

प्रस्तुत मन्त्र विधान 'जैन–धर्म' के अन्तर्गत देवी पद्मावती का है, किन्तु मन्त्र का विनियोग एवं ध्यान प्राप्य नहीं! प्राचीन पत्र में जितना स्पष्ट किया गया, उसको उसी भाँति यहाँ विधान प्रस्तुत किया गया।

मन्त्र :-

ॐ पद्मावती पद्मकुशी वज्र वज्राङ्कुशी प्रत्यक्षं भवति।

विधान :-

अर्द्ध–रात्रि के समय मृतिका दीपक प्रज्ज्वलित कर, रक्त–कम्बलासन पर बैठे, उत्तराभिमुख होकर सूतिका की माला से उक्त मन्त्र का १००० जप करें–– २१ दिन तक। आठवें दिन प्रत्यक्ष चमत्कार प्रदर्शित होने लगेंगे। साधनाकाल में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें।

।।बजरङ्ग - बाण।।

'श्रीहनुमान–चालीसा' एवं **'बजरङ्ग–बाण'** से सभी जन परिचित हैं। गृह–गृह में इनका मुद्रित स्वरूप देखने तथा नित्य–पाठ करने में मिलता है, किन्तु आश्चर्य की बात है कि जिस **'बजरङ्ग–बाण'** का पाठ किया जाता है, उसका स्वरूप पूर्ण–रूपेण नहीं है। **'शाक्त–धर्म'** की प्रख्यात पत्रिका **'चण्डी'**–(वर्ष–५४, अङ्क–२) में **'साधन–माला'** के अन्तर्गत **'बजरङ्ग–बाण'** का पूर्ण स्वरूप सर्व–प्रथम प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् कुछ विद्वानों ने भी अपनी उपासनात्मक कृतियों में उक्त **'बजरङ्ग–बाण'** को प्रकाशित कराया। साधक–जनों के नित्य–पाठ हेतु यहाँ उसी पूर्ण **'बजरङ्ग–बाण'** की प्रस्तुति दी जा रही है। आशा है– कि **'हनुमदोपासक'** तो इस प्रस्तुति से अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

सर्वप्रथम भगवान् श्री राम का स्मरण करते हुए श्री हनुमान जी का भक्ति–पूर्वक ध्यान करें––

ध्यान :-

अतुलित–बलधामं, स्वर्ण–शैलाभ–देहम्।
दनुज–वन–कृशानुं, ज्ञानिनामग्र–गण्यम्।।
सकल–गुण–निधानं, वानराणामधीशम्।
रघुपति–प्रिय–भक्तं, वात–जातं नमामि।।

ध्यान के पश्चात् 'श्रीहनुमान जी' का श्रद्धा–पूर्वक यथोपचार रीति से अथवा मानसिक–भाव से पूजन करें, तत्पश्चात् 'बजरङ्ग–बाण' का पाठ आरम्भ करें, यथा––

।। दोहा ।।

निश्चय प्रेम–प्रतीति ते, विनय करै सह मान।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान।।

॥ चौपाई ॥

जय हनुमन्त! सन्त-हितकारी। सुन लीजे प्रभु! विनय हमारी।।
जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महा-सुख दीजै।।
जैसे कूदि सिन्धु के पारा। सुरसा-वदन पैठि विस्तारा।।
आगे जाय लङ्किनी रोका। मारेहु लात गई सुर-लोका।
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा।।
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा। अति आतुर यम कातर तोरा।।
अखय-कुमार मारि संहारा। लूम पेट लङ्क को जारा।।
लाह समान लङ्क जरि गई। जै-जै ध्वनि सुर-पुर नभ भई।।
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी? कृपा करहु प्रभु! अन्तर्यामी।।
जय-जय लखन-प्राण के दाता। आतुर ह्वै दुःख करहु निपाता।।
जै गिर-धर! जै-जै सुख-सागर। सुर-समूह समरथ भट-नागर।
ॐ हनु-हनु-हनु हनुमन्त हठीले! बैरिही मारू वज्र सम मीले।।
गदा-वज्र लै बैरिहि मारौ। महा-राज! निज दास उबारौ।।
ॐकार हुङ्कार करि धावौ। वज्र-गदा हनु!विलम्ब न लावौ।।
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा! ॐ हुं हुं हुं हनु! अरि-उर सीसा।।
सत्य होहु हरि सपथ पाय कै। राम-दूत! धरू मारू धाय कै।।
जै हनुमन्त! अनन्त अगाधा! दुःख पावत जन केहि अपराधा।।
पूजा-जप-तप-नेम-अचारा। नहिं जानत कछु दास तुम्हारा।।
वन-उपवन-जल-थल-गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं।।
पाँव परौं कर जोरि मनावौं। अपने काज लागि गुण गावौं।।
जै अञ्जनी-कुमार! बल-वन्ता! शङ्कर-सुवन वीर हनुमन्ता!।।
वदन कराल! काल-कुल-घालक! राम-सहाय! सदा प्रति-पालक! ।
भूत-प्रेत-पिशाच-निशाचर। अगिन-बेताल-काल-मारी-मर।।
इन्हें मारू, तोहिं शपथ राम की। राख नाथ! मर्याद नाम की।।
जनक-सुता-हरि-दास कहावौ। ताकी सपथ विलम्बन न लावौ।।
जै-जै-जै ध्वनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुख नाशा।।
चरण-शरण कर जोरि मनावौं। एहि अवसर अब केहि गोहरावौं?।।
उठ-उठ चल तोहि राम-दुहाई। पाँय परौं कर जोरि मनाई।।
ॐ चं-चं-चं-चं चपल चलन्ता। ॐ हनु-हनु-हनु-हनु-हनु हनुमन्ता।।
ॐ हं-हं हाँक देत कपि चञ्चल। ॐ सं-सं सहमि पराने खल-दल।।
अपने जन कौं तुरत उबारौ। सुमिरत होय आनन्द हमारौ।
ताते विनती करौं पुकारी। हरहु सकल दुःख विपति हमारी।।
ऐसौ बल - प्रभाव प्रभु! तोरा। कस न हरहु दुःख सङ्कट मोरा?।।
हे बजरङ्ग! बाण-सम धावौ। मेटि सकल दुःख दरस दिखावौ।।
हे कपि-राज! काज कब ऐहौ? अवसर चूकि अन्त पछतैहो।।
जन की लाज जात एहि बारा। धावहु हे कपि! पवन-कुमारा!।।
जयति-जयति जै-जै हनुमाना!। जयति-जयति गुण-ज्ञान-निधाना!।
जयति-जयति जै-जै कपि-राई!। जयति-जयति जै-जै सुख-दाई।।
जयति-जयति, जै राम-पियारे। जयति-जयति जै, सिया-दुलारे।
जयति-जयति मुद-मङ्गल-दाता!। जयति-जयति त्रिभुवन-विख्याता!।।
एहि प्रकार गावत गुण शेषा। पावत पार नहीं लव-लेसा।।
राम-रूप सर्वत्र समाना। देखत रहत सदा हर्षाना।।
विधि-सारदा-सहित दिन-राती। गावत कपि के गुन बहु भाँति।।
तुम सम नहीं जगत बलवाना। कर विचार देखउँ विधि नाना।।
यह जिय जानि शरण तव आई। ताते विनय करौं चित लाई।।
सुनि कपि! आरत-वचन हमारे। मेटहु सकल दुःख-भ्रम भारे।।
एहि प्रकार विनती कपि केरी। जो जन करै, लहै सुख-ढेरी।।
याकै पढ़त वीर हनुमाना। धावत बाण-तुल्य बलवाना।।
मेटत आय दुःख छिन माहीं। दै दर्शन रघुपति ढिङ्‌ जाहीं।।
पाठ करे 'बजरङ्ग-बाण' की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की।।

डीठ–मूठ–टोनादिक नासै। पर–कृत यन्त्र–मन्त्र नहिं त्रासै।।
भैरवादि सुर करैं मिताई। आयसु मानि करैं सेवकाई।।
प्रण करि पाठ करै मन लाई। अल्प–मृत्यु ग्रह – दोष नशाई।।
आवृत ग्यारह प्रति–दिन जापै। ताकि छाँह काल नहिं व्यापै।।
दै गूगुल की धूप हमेशा। करै पाठ तन मिटै कलेशा।।
यह 'बजरङ्–बाण' जेहि मारै। ताहि कहौ, फिर कौन उबारै?।।
शत्रु–समूह मिटै सब आपै। देखत ताहि सुरासुर काँपै।।
तेज–प्रताप–बुद्धि अधिकाई। रहै सदा कपि–राज सहाई।।

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज तुरत ही, सिद्ध करैं हनुमान।।

भूल-सूधार

कोई भी विषय जब प्रकाशित होता है, तो उसमें स्वभाव–वश शब्दाक्षर की त्रुटियाँ सम्भव हो ही जाती हैं। प्रस्तुत विषय में भी ऐसा सम्भव हो सकता है। यदि विषय–अध्ययन करने पर ऐसी कहीं शब्दाक्षर त्रुटि–दोष दृष्टि–गोचर हो, तो अवश्य ही मुझे सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्र या दूरभाष–वार्ता द्वारा 'पाठ' में कहीं शङ्का प्रतीत हो, तो उसका निवारण अवश्य ही कर लें। गत सम्वत् के पञ्चाङ्ग में प्रकाशित विषय में जो त्रुटियाँ हुई, कृपया उनको निम्न–प्रकार से शुद्ध करने का कष्ट करें —

पृष्ठ	पंक्तियाँ, क्रम	अशुद्ध	शुद्ध
१६२, 'मानस–पूजन' के अन्तर्गत	तीसरा क्रम	पुष्प–मुद्रा	धूप–मुद्रा
१७४, शत्रु–संहाराष्टक के अन्तर्गत	पंक्ति सातवी व नवी	शत्रु–संहाष्टक	शत्रु–संहाराष्टक
१७६, माला–मन्त्र के अन्तर्गत	पंक्ति सातवी	विश्वासु	विश्वावसु
१८४, मुक्ति चिन्तामणि श्रीगायत्री कवच के अन्तर्गत	पंक्ति दूसरी	।।श्रीदेव्युवाच पूर्व–पीठिका।।	पूर्व–पीठिका ।।श्री देव्युवाच।।
१८६, पञ्चमुख श्री वीर हनुमन्त कवच के अन्तर्गत		अनावश्य–रूप से विनियोग में शब्द–मध्य अधिक स्पेस' आया है।	
१६०, आयुद्यादि ध्यान के अन्तर्गत		खेटांसीनिपुस्तं कलं	खेटांसीनि पुस्तकं हलं
१६१, गायत्री मन्त्र के अन्तर्गत	पंक्ति सत्रहवीं पंक्ति छब्बीसवीं	वज्र–नखाय पञ्च वन्दनाय	वज्र नखाय विद्मेह पञ्च–वदनाय
१६१ दिशान्तर्गत पृथक–पृथक मुख के मन्त्र का पाठ	पंक्ति १८वीं	श्री	ये अधिक पाठ है
१६१, कवच माला मन्त्र पाठ के अन्तर्गत	पंक्ति २४ पंक्ति २५	उदधिलङ्घनाय बह्माण्ड	उदधिलङ्घनाय ब्रह्माण्ड
१६३, हनुमन्त कृपा प्राप्ति प्रयोग के अन्तर्गत		हाथ में पात्र में	हाथ में

॥ आत्म-कथन ॥

इष्ट–देव महारुद्र श्री शरभेश्वर की कृपाशीर्वाद पूर्वक प्रस्तुत विषय को पाठकों व साधकों के लाभार्थ प्रकाशित करने में मुझे जो प्रसन्नता हो

ही है, वह शब्दोबद्ध कदापि भी नहीं की जा सकती। इन गुह्य–प्त लुप्त– दुर्लभ–दुष्प्राप्य अथवा परम्परा से सम्बन्ध विद्या को कट कर, मेरा अहम– सङ्कल्प पूर्ण कराने में **'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग'** का गदान तो सदैव ही स्मरणीय रहेगा और भविष्य में अग्रणीय भी! पि जो विषय इस सम्वत् में प्रकाशित हुए, उनको प्रकाशित करने का पूर्व कोई विचार नहीं था। **'आसुरी–महाकल्प, घण्टाकर्ण–कल्प'** **'श्री कार्त्तवीर्यार्जुनोपासना–पद्धति'** प्रकाशित करने की इच्छा , किन्तु किन्हीं कारणवश उक्त विषय प्रकाशित नहीं किये जा सके। आगामी सम्वत्–२०६६ में उक्त विषयों के साथ–साथ ज्योतिष के दुर्लभ विषयों को भी देने का विचार है, जिसमें **'प्रश्न–विनोद'** एवं **विभिन्न वल्लभ–योग'** जैसे लुप्त प्रायः ग्रन्थ होंगे। **'तान्त्रिक–पञ्चाङ्ग निर्माण–पद्धति'** का विषय भी स्वतन्त्र–रूप से संयुक्त किया जाएगा – ऐसा भी विचार है। आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण–विश्वास है कि पञ्चाङ्ग के स्नेही पाठक–बन्धु इस विषय–कार्य के प्रति समय–समय पर अवश्य ही मुझे प्रेरित करने की कृपा भी करते रहेंगे।

इस बार यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना उचित समझते हैं कि जो जिज्ञासु साधक साधना–विषय सम्बन्धी अपनी जिज्ञासा–शान्ति अथवा शङ्काओं का समाधान या फिर साधना–कर्म में मार्ग–दर्शन के इच्छुक हों, वे साधक निःसङ्कोच मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं। कुल–परम्परागत सैद्धान्तिक–रूप से ऐसे जिज्ञासु–साधक सविधि संस्कारित हो तथा साधना–मार्ग के ज्ञानात्मक व क्रियात्मक–पक्ष में प्रगति करें –– ऐसा भी सङ्कल्प है।

आपका स्नेहाकांक्षी

भूपेन्द्र दत्त शर्मा

सम्पर्क सूत्र :१४५–नया–बाँस, नदी–मार्ग, मुजफ्फरनगर–(उ०प्र०)–२५१ ००२
दूरभाष : १३१–२४५१८२७, ३०६६६६०, सचल – ०६८६७१८५३४२, ०६६६७०७६६६७

ग्रहों के परस्पर अंशात्मक योग

संकेत चिन्ह :- सू. = सूर्य, चं. = चन्द्र, मं. = मंगल, बु. = बुध, गु. = गुरु, शु. = शुक्र, श. = शनि, ०° = युति या योग, ३०° = द्विर्द्वादश, दूसरा - बारहवाँ, ४५° = अर्द्धकेन्द्र, अष्टमांश, ६०° = त्रैकादश, तीसरा - ग्यारहवाँ, षष्टांश, षडष्टक, ९०° = केन्द्र, चौथा - दसवाँ, १२०° = नवम - पंचम, तृतीयांश, १३५° = अष्टमांश रहित प्रतियोग, १५०° = द्वादशांश रहित प्रतियोग, १८०° = प्रतियोग या समसप्तक, योग = अंशात्मक योग। ग्रहों के परस्पर विभिन्न योगों का समय भा. स्टे. टा. में घं. मि. में दिया गया है।

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
अप्रैल-२००८					
७	चं.	३०	शु.	८	३७
,,	चं.	१२०	श.	१०	२८
,,	चं.	३०	ब.	२१	३७
८	चं.	६०	म.	०५	०८
,,	श.	१५०	श.	०६	२१
,,	बु.	४५	रा.	०९	०५
,,	चं.	४५	शु.	१०	४८
,,	चं.	३०	सू.	१३	०२
,,	चं.	१२०	गु.	१६	१९
,,	चं.	९०	रा.	२२	०१
९	चं.	४५	बु.	०१	१५
,,	चं.	४५	मं.	५	५९
,,	चं.	९०	श.	१०	२९
,,	चं.	६०	शु.	१३	०७
,,	चं.	४५	सू.	१४	५४
,,	चं.	१३५	गु.	१६	३९
१०	चं.	६०	बु.	५	१९
,,	चं.	३०	मं.	०७	११
,,	चं.	६०	सू.	१७	१२
,,	चं.	१५०	गु.	१७	२२
,,	सू.	९०	गु.	१९	४२
,,	बु.	९०	मं.	२२	४४
,,	चं.	१२०	रा.	२३	५६
११	चं.	६०	श.	११	४६
,,	चं.	९०	शु.	१९	२३
११	बु.	१३५	श.	२१	१२
१२	चं.	१३५	रा.	०१	०८
,,	चं.	०	मं.	११	२२
,,	चं.	४५	श.	१३	१९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१२	चं.	९०	बु.	१६	०७
,,	चं.	१८०	गु.	२०	३६
१३	चं.	९०	सू.	००	०३
,,	चं.	१५०	रा.	०३	००
,,	चं.	३०	श.	१५	३५
,,	बु.	९०	गु.	२३	२०
१४	चं.	१२०	शु.	०५	०७
,,	शु.	४५	रा.	१०	१०
,,	सू.	६०	रा.	१५	०३
,,	मं.	४५	श.	१५	५०
,,	चं.	३०	मं.	१८	४२
१५	चं.	१५०	गु.	०२	४५
,,	चं.	१२०	बु.	०७	४५
,,	चं.	१८०	रा.	०८	५७
,,	चं.	१२०	सू.	१०	२७
,,	चं.	१३५	शु.	११	२५
,,	बु.	६०	रा.	१४	५२
,,	चं.	०	श.	२२	१३
,,	चं.	४५	मं.	२३	३२
१६	चं.	१३५	गु.	०६	५०
,,	बु.	०	सू.	१२	५५
,,	चं.	१३५	सू.	१६	५४
,,	चं.	१३५	बु.	१७	२०
१६	चं.	१५०	शु.	१८	३४
१७	चं.	६०	मं.	०५	०३
,,	चं.	१२०	गु.	११	३०
,,	चं.	१५०	रा.	१७	२४
१८	चं.	१५०	सू.	००	०३
,,	चं.	१५०	बु.	०३	५४
,,	चं.	३०	श.	०७	१९
,,	चं.	१३५	रा.	२२	२१

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१८	बु.	१२०	श.	२३	४२
१९	चं.	१८०	शु.	१०	५६
,,	चं.	४५	श.	१२	३३
,,	चं.	९०	मं.	१७	४३
,,	चं.	९०	गु.	२२	१२
२०	शु.	१३५	श.	०२	३७
,,	चं.	१२०	रा.	०३	४१
,,	चं.	१८०	सू.	१५	५६
,,	चं.	६०	श.	१८	०८
२१	चं.	१८०	बु.	०३	१९
,,	सू.	१२०	श.	१८	३६
२२	चं.	१५०	शु.	०५	२२
,,	चं.	१२०	मं.	०८	०३
,,	चं.	६०	गु.	१०	१९
,,	चं.	९०	रा.	१५	२०
२३	चं.	९०	श.	०६	१३
,,	चं.	१५०	सू.	०९	२७
,,	चं.	१३५	शु.	१५	०७
२३	चं.	१३५	मं.	१५	३९
,,	चं.	४५	गु.	१६	४३
,,	शु.	९०	मं.	२३	३८
२४	चं.	१५०	बु.	०४	४०
,,	शु.	९०	गु.	०७	०७
२४	चं.	१३५	सू.	१८	३१
,,	मं.	१८०	गु.	१८	५४
,,	चं.	३०	गु.	२३	११
,,	चं.	१५०	मं.	२३	२२
२५	चं.	१२०	शु.	००	५९
,,	चं.	६०	रा.	०३	४२
,,	चं.	१३५	बु.	१७	२३
,,	चं.	१२०	श.	१८	४७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२६	शु.	६०	रा.	०२	१२
,,	चं.	१२०	सू.	०३	२९
,,	चं.	४५	रा.	०९	४५
२७	चं.	१३५	श.	००	४८
,,	चं.	१२०	बु.	०५	३०
,,	चं.	०	गु.	११	३२
,,	चं.	१८०	मं.	१४	०७
,,	चं.	३०	रा.	१५	२४
,,	चं.	९०	शु.	१९	४९
२८	चं.	१५०	श.	०६	१७
,,	मं.	१५०	रा.	१८	५२
,,	बु.	१२०	गु.	१९	१२
,,	चं.	९०	सू.	१९	४३
२९	बु.	९०	रा.	१८	१३
,,	चं.	३०	गु.	२१	२१
३०	चं.	०	रा.	००	३६
,,	चं.	९०	बु.	०१	४८
,,	चं.	१५	मं.	०२	०१
,,	बु.	६०	मं.	०३	५०
,,	चं.	६०	शु.	१०	५६
,,	चं.	१८०	श.	१४	४६
मई-२००८					
१	चं.	४५	गु.	००	४८
,,	चं.	१३५	मं.	०६	२०
,,	चं.	६०	सू.	०७	३८
,,	चं.	४५	शु.	१६	२८
२	चं.	६०	गु.	०३	१२
,,	शु.	१२०	श.	०३	५१
,,	चं.	३०	रा.	०५	५७
,,	चं.	१२०	मं.	०९	२८
,,	चं.	४५	सू.	११	३९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२	चं.	६०	बु.	१५	०५
,,	चं.	१५०	श.	१९	१२
,,	चं.	३०	शु.	२०	३९
३	चं.	४५	रा.	०७	०६
,,	चं.	३०	सू.	१४	३०
,,	चं.	४५	बु.	१९	२०
,,	चं.	१३५	श.	२०	०१
४	बु.	९०	श.	०१	२१
,,	चं.	९०	गु.	०५	१०
,,	चं.	६०	रा.	०७	२९
,,	चं.	९०	मं.	१२	४७
,,	चं.	१२०	श.	२०	१०
,,	चं.	३०	बु.	२२	२७
५	चं.	०	शु.	०१	५२
,,	चं.	०	सू.	१७	४९
६	चं.	१२०	गु.	०४	४७
,,	चं.	९०	रा.	०६	५१
६	चं.	६०	मं.	१३	५३
,,	चं.	९०	श.	१९	२८
७	चं.	०	बु.	०३	०२
,,	चं.	१३५	गु.	०४	२४
,,	चं.	३०	शु.	०५	१६
,,	चं.	४५	मं.	१४	२४
,,	बु.	१३५	गु.	१७	२१
,,	चं.	३०	सू.	२०	२०
८	चं.	१५०	गु.	०४	१४
,,	चं.	१२०	रा.	०६	१०
,,	चं.	४५	शु.	०७	१५
,,	चं.	३०	मं.	१५	१८
,,	चं.	६०	श.	१९	१९
,,	चं.	४५	सू.	२२	१०

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
९	चं.	१३५	रा.	०६	२८
"	चं.	३०	बु.	०८	१५
"	चं.	६०	शु.	०९	५५
"	चं.	४५	श.	२०	०६
१०	चं.	६०	सू.	००	४९
"	चं.	१८०	गु.	०५	३७
"	चं.	१५०	रा.	०७	३०
"	चं.	४५	बु.	११	५७
"	चं.	०	मं.	१९	२२
"	चं.	३०	श.	२१	४१
११	चं.	६०	बु.	१६	३७
"	चं.	९०	शु.	१८	२३
१२	चं.	९०	सू.	०९	१८
"	चं.	१५०	गु.	१०	१९
"	चं.	१८०	रा.	१२	१०
"	सू.	१२०	गु.	२३	००
१३	चं.	३०	मं.	०३	२२
"	चं.	०	श.	०३	३५
"	मं.	३०	श.	०८	४८
१३	चं.	१३५	गु.	१४	००
"	सू.	९०	रा.	२१	३९
१४	चं.	९०	बु.	०४	५१
"	चं.	१२०	शु.	०७	३४
"	चं.	४५	मं.	०८	५१
"	चं.	१२०	गु.	१८	२७
"	चं.	१५०	रा.	२०	१३
"	चं.	१२०	सू.	२२	०९
१५	चं.	३०	श.	१२	४९
"	चं.	६०	मं.	१५	०७
"	चं.	१३५	शु.	१५	४१
१६	चं.	१३५	रा.	०१	१४
"	चं.	१३५	सू.	०५	५२
"	चं.	४५	श.	१८	२०
"	चं.	१२०	बु.	१९	४३
१७	चं.	१५०	शु.	००	३२
"	चं.	९०	गु.	०५	०७
"	चं.	१२०	रा.	०६	४३
"	चं.	१५०	सू.	१४	०९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१८	चं.	६०	श.	००	१४
"	चं.	१३५	बु.	०३	३३
"	चं.	९०	मं.	०५	१९
"	शु.	१२०	गु.	२०	४९
१९	शु.	९०	रा.	११	०५
"	चं.	१५०	बु.	११	२३
"	चं.	६०	गु.	१७	०३
"	चं.	९०	रा.	१८	३७
"	चं.	१८०	शु.	१९	३०
२०	चं.	१८०	सू.	०७	४२
"	चं.	९०	श.	१२	४५
"	चं.	१२०	मं.	२०	४०
"	चं.	४५	गु.	२३	१९
२२	चं.	१८०	बु.	०२	३३
२२	चं.	१३५	मं.	०४	२८
"	चं.	३०	गु.	०५	३३
"	चं.	६०	रा.	०६	५७
"	चं.	१५०	शु.	१५	०७
"	सू.	९०	श.	२३	५६
२३	चं.	१२०	श.	०१	३१
"	चं.	१५०	सू.	०१	३९
"	चं.	१५०	मं.	१२	१०
"	चं.	४५	रा.	१३	०२
२४	चं.	१३५	शु.	००	४५
"	चं.	१३५	श.	०७	४२
"	चं.	१३५	सू.	१०	२२
"	चं.	१५०	बु.	१६	१४
"	चं.	०	गु.	१७	३४
"	चं.	६०	रा.	१८	५२
२५	चं.	१२०	शु.	०९	५६
"	चं.	१५०	श.	१३	३२
"	चं.	१२०	सू.	१८	३५
"	चं.	१३५	बु.	२२	०९
२६	चं.	१८०	मं.	०२	३३
"	शु.	९०	श.	२२	४१
२७	चं.	१२०	बु.	०३	१०
"	चं.	३०	गु.	०३	५१
"	चं.	०	रा.	०५	०७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२७	चं.	१८०	श.	२३	१७
२८	सू.	१३५	गु.	००	३७
"	चं.	९०	शु.	०१	४७
"	चं.	४५	गु.	०७	५१
"	चं.	९०	सू.	०८	२८
"	चं.	१५०	मं.	१३	५६
२९	चं.	९०	बु.	१०	०४
"	चं.	६०	गु.	१०	५४
"	चं.	३०	रा.	१२	०१
"	चं.	१३५	मं.	१८	०२
३०	चं.	१५०	श.	०५	२४
"	चं.	६०	शु.	१२	४५
"	चं.	४५	रा.	१४	०२
"	शु.	१३५	गु.	१५	०४
"	चं.	६०	सू.	१७	३१
"	चं.	१२०	मं.	२१	०१
३१	चं.	१३५	श.	०६	५९
"	चं.	६०	बु.	१२	३९
"	चं.	९०	गु.	१४	०५
"	चं.	६०	रा.	१५	०९
"	चं.	४५	शु.	१६	२०
"	चं.	४५	सू.	२०	३०

जून-२००८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	१२०	श.	०७	४४
"	चं.	४५	बु.	१२	३५
"	चं.	३०	शु.	१८	५५
"	चं.	३०	सू.	२२	२७
२	चं.	९०	मं.	००	१०
"	चं.	३०	बु.	११	५३
"	चं.	१२०	गु.	१४	१३
"	चं.	९०	रा.	१५	२०
३	चं.	९०	श.	०७	३३
"	चं.	१३५	गु.	१३	४१
"	चं.	०	शु.	२२	२४
४	चं.	०	सू.	००	५४
"	चं.	६०	मं.	०१	१५
"	चं.	०	बु.	०९	३७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
४	चं.	१५०	गु.	१३	०६
"	मं.	६०	सू.	१४	०६
"	चं.	१२०	रा.	१४	२१
५	चं.	४५	मं.	०	४७
"	चं.	६०	श.	०६	५६
५	चं.	१३५	रा.	१४	०६
६	चं.	३०	शु.	०२	१५
"	चं.	३०	मं.	०२	४७
"	चं.	३०	सू.	०३	४८
"	चं.	४५	श.	०७	१०
"	चं.	३०	बु.	०७	५३
"	श.	१८०	रा.	९	४६
"	चं.	१८०	गु.	१२	५५
"	शु.	६०	मं.	१३	४७
"	चं.	१५०	रा.	१४	२१
७	चं.	४५	शु.	०५	१३
"	चं.	४५	सू.	०६	१८
"	चं.	४५	बु.	०७	४८
"	चं.	३०	श.	०८	०६
"	सू.	०	बु.	२०	५८
८	बु.	०	शु.	०२	३४
"	चं.	०	मं.	०७	०९
"	चं.	६०	बु.	०८	२९
"	चं.	६०	शु.	०९	१९
"	चं.	६०	सू.	०९	५०
"	चं.	१५०	गु.	१५	३२
"	चं.	१८०	रा.	१७	१२
"	बु.	६०	मं.	२३	५९
९	शु.	०	सू.	०९	५२
"	चं.	०	श.	१२	४२
"	चं.	१३५	गु.	१८	१५
१०	चं.	९०	बु.	१२	३०
"	चं.	३०	मं.	१५	४९
"	चं.	९०	सू.	२०	३५
"	चं.	९०	शु.	२१	२४
"	चं.	१२०	गु.	२१	५४
"	चं.	१५०	रा.	२३	४८
११	शु.	१५०	गु.	०२	१८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
११	सू.	१५०	गु.	१२	४८
"	शु.	१२०	रा.	२०	४६
"	चं.	३०	श.	२१	१४
"	चं.	४५	मं.	२१	४६
१२	चं.	१३५	रा.	०४	२५
"	सू.	१२०	रा.	१२	४१
"	चं.	१२०	बु.	१९	५८
१३	चं.	४५	श.	०२	४३
"	चं.	६०	मं.	०४	३४
"	चं.	९०	गु.	०७	३८
"	चं.	१२०	रा.	०९	४७
"	चं.	१२०	सू.	११	४०
"	चं.	१२०	शु.	१४	०८
१४	चं.	१३५	बु.	००	४४
"	चं.	६०	श.	०८	४५
"	चं.	१३५	सू.	२०	१६
"	चं.	१३५	शु.	२३	३५
१५	चं.	१५०	बु.	०५	५९
"	मं.	१५०	गु.	११	३८
"	चं.	६०	गु.	१९	१६
"	चं.	९०	मं.	१९	४४
"	चं.	९०	रा.	२१	४२
१६.	चं.	१५०	सू.	०५	१०
"	चं.	१५०	शु.	०९	२२
"	चं.	९०	श.	२१	३८
१७	चं.	४५	गु.	०१	२०
"	मं.	१८०	रा.	०८	२८
"	चं.	१८०	बु.	१७	२५
१८	चं.	३०	गु.	०७	२२
"	चं.	६०	रा.	१०	०२
"	चं.	१२०	मं.	११	२८
"	चं.	१८०	सू.	२३	०२
१९	चं.	१८०	शु.	०४	५२
"	चं.	१२०	श.	१०	२९
"	चं.	४५	रा.	१६	०१
"	चं.	१३५	मं.	१९	०८
२०	चं.	१५०	बु.	०५	२२
"	चं.	१३५	श.	१६	३७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२०	चं.	०	गु.	१८	५३
,,	चं.	३०	रा.	२१	४७
२१	चं.	१५०	मं.	०२	३०
,,	चं.	१३५	बु.	११	१८
,,	शु.	६०	श.	१४	४५
,,	चं.	१५०	सू.	१५	५३
,,	चं.	१५०	श.	२२	२४
,,	चं.	१५०	शु.	२३	१२
२२	चं.	१२०	बु.	१७	०३
,,	चं.	१३५	सू.	२३	३४
२३	चं.	३०	गु.	०५	०२
,,	चं.	१३५	शु.	०७	३०
,,	चं.	०	रा.	०८	०७
,,	शु.	१३५	रा.	१३	४१
,,	चं.	१८०	मं.	१५	४७
२४	चं.	१२०	सू.	०६	३२
,,	चं.	१८०	श.	०८	२८
,,	चं.	४५	गु.	०९	१८
,,	चं.	१२०	शु.	१४	५९
२५	चं.	९०	बु.	०३	२३
,,	चं.	३०	रा.	१६	००
,,	सू.	६०	श.	१०	३२
,,	चं.	६०	गु.	१२	५१
२६	चं.	१५०	मं.	०२	०९
,,	गु.	१३५	श.	१३	२८
,,	चं.	१५०	श.	१५	४०
,,	चं.	९०	सू.	१७	४१
,,	चं.	४५	रा.	१८	४१
२७	चं.	९०	शु.	०२	५२
,,	चं.	१३५	मं.	०५	५७
,,	सू.	१३५	रा.	१०	०८
,,	चं.	६०	बु.	११	१०
,,	चं.	९०	गु.	१७	३६
,,	चं.	१३५	श.	१८	०१
,,	चं.	६०	रा.	२०	४८
२८	चं.	१२०	मं.	०८	४९
,,	चं.	४५	बु.	१३	५८
,,	चं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२९	चं.	६०	सू.	००	४७
,,	चं.	६०	शु.	१०	२९
,,	चं.	३०	बु.	१६	०५
,,	शु.	४५	मं.	१८	२८
,,	चं.	१२०	गु.	१९	१८
,,	चं.	९०	रा.	२२	३७
३०	चं.	४५	सू.	०३	०४
,,	चं.	९०	मं.	१२	१४
,,	चं.	४५	शु.	१३	०३
,,	चं.	१३५	गु.	१९	१९
,,	चं.	९०	श.	२०	४५

जुलाई-२००८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	३०	सू.	०४	४८
,,	चं.	३०	शु.	१५	१०
,,	बु.	१५०	गु.	१७	४६
,,	चं.	१५०	गु.	१९	०३
,,	चं.	०	बु.	१९	०९
,,	चं.	१२०	रा.	२२	३३
२	चं.	६०	मं.	१४	०२
,,	चं.	६०	श.	२०	५०
,,	चं.	१३५	रा.	२२	२२
३	चं.	०	सू.	०७	५०
,,	शु.	१८०	गु.	१०	४९
,,	चं.	४५	मं.	१५	०२
,,	चं.	१८०	गु.	१८	३४
,,	चं.	०	शु.	१९	२१
,,	बु.	१२०	रा.	२०	३०
,,	चं.	४५	श.	२१	०४
,,	चं.	१५०	रा.	२२	२५
,,	चं.	३०	बु.	२२	३१
४	चं.	३०	मं.	१६	३०
,,	शु.	४५	श.	१७	४१
,,	चं.	३०	श.	२१	४७
५	चं.	४५	बु.	०१	०९
,,	शु.	१५०	रा.	०६	३२
,,	चं.	३०	सू.	१२	२७
,,	चं.	१५०	गु.	१९	४७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
५	चं.	१८०	रा.	२३	४३
६	चं.	३०	शु.	०१	४९
,,	चं.	६०	बु.	०४	५१
,,	मं.	१३५	गु.	१६	०५
,,	चं.	४५	सू.	१६	०६
,,	चं.	१३५	गु.	२१	३१
,,	चं.	०	मं.	२१	५०
७	चं.	०	श.	०१	२९
,,	चं.	४५	शु.	०६	३८
,,	चं.	६०	सू.	२०	५४
८	चं.	१२०	गु.	००	११
,,	चं.	१५०	रा.	०५	०४
,,	चं.	६०	शु.	१२	४६
,,	चं.	९०	बु.	१६	२८
९	चं.	३०	मं.	०७	२४
,,	चं.	३०	श.	०९	०१
,,	चं.	१३५	रा.	०९	०३
,,	सू.	१८०	गु	१३	१०
१०	चं.	९०	गु.	०८	१७
,,	चं.	९०	सू.	१०	०६
,,	चं.	४५	मं.	१३	४७
,,	चं.	१२०	रा.	१३	५२
,,	चं.	४५	श.	१४	११
,,	मं.	०	श.	२३	४३
११	चं.	९०	शु.	०४	४१
,,	चं.	१२०	बु.	१०	११
,,	चं.	६०	श.	२०	०५
,,	चं.	६०	मं.	२०	५९
१२	सू.	१५०	रा.	०७	४५
,,	चं.	६०	गु.	१९	१२
,,	सू.	४५	श.	२०	३१
,,	चं.	१३५	बु.	२०	५१
१३	चं.	९०	रा.	०१	१९
,,	चं.	१२०	सू.	०२	५५
,,	चं.	१२०	शु.	२३	४८
१४	चं.	४५	गु.	०१	११
,,	बु.	१३५	रा.	०३	२०
,,	चं.	१५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१४	चं.	९०	श.	०९	०२
,,	चं.	१३५	सू.	११	५३
,,	चं.	९०	मं.	१२	४०
,,	बु.	६०	श.	१४	०७
१५	चं.	३०	गु.	०७	१०
,,	चं.	१३५	शु.	०९	३७
,,	मं.	४५	सू.	१३	१९
,,	चं.	६०	रा.	१३	३८
,,	चं.	१५०	सू.	२०	४८
१६	बु.	६०	मं.	०२	४२
,,	चं.	१५०	शु.	१९	१०
,,	चं.	४५	रा.	१९	३५
,,	चं.	१२०	श.	२१	५६
१७	चं.	१२०	मं.	०४	११
१७	चं.	१८०	बु.	०७	१९
,,	चं.	०	गु.	१८	३२
१८	शु.	३०	श.	००	२५
,,	चं.	३०	रा.	०१	१२
,,	चं.	१३५	श.	०३	५४
,,	चं.	१३५	मं.	११	२२
,,	चं.	१८०	सू.	१३	३०
१९	चं.	१५०	श.	०९	२६
,,	चं.	१८०	शु.	१२	४५
,,	चं.	१५०	मं.	१८	०१
२०	बु.	१८०	गु.	०१	२५
,,	चं.	३०	गु.	०४	१९
,,	चं.	१५०	बु.	०४	५५
,,	चं.	०	रा.	११	०६
२१	चं.	१५०	सू.	०३	५५
,,	चं.	४५	गु.	०८	२९
,,	चं.	१३५	बु.	१४	४१
,,	बु.	१५०	रा.	१८	२९
,,	चं.	१८०	श.	१८	५६
२२	चं.	१५०	शु.	०३	३७
,,	चं.	१८०	मं.	०५	३१
,,	चं.	१३५	सू.	१०	०६
,,	चं.	६०	गु.	१२	०६
,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२२	चं.	३०	रा.	१८	५३
,,	चं.	१२०	बु.	२३	३७
२३	चं.	१३५	शु.	०९	५४
,,	चं.	१२०	सू.	१५	३३
,,	शु.	३०	मं.	१७	४०
,,	चं.	४५	रा.	२१	५६
२४	चं.	१५०	श.	०२	०७
,,	चं.	१५०	मं.	१४	२१
,,	चं.	१२०	शु.	१५	२३
२४	चं.	९०	गु.	१७	३७
२५	चं.	६०	रा.	००	२३
,,	चं.	१३५	श.	०४	४७
,,	शु.	१५०	गु.	१४	१०
,,	चं.	९०	बु.	१४	४२
,,	चं.	१३५	मं.	१७	४५
२६	चं.	९०	सू.	००	१३
,,	चं.	१२०	श.	०६	५१
,,	बु.	४५	मं.	१७	४२
,,	चं.	१२०	मं.	२०	३१
,,	चं.	१२०	गु.	२०	५२
२७	चं.	९०	शु.	००	०३
,,	मं.	१२०	गु.	०३	३५
,,	चं.	९०	रा.	०३	३७
,,	चं.	१३५	गु.	२१	४६
२८	चं.	६०	बु.	०२	१५
,,	चं.	६०	सू.	०६	१५
,,	चं.	९०	श.	०९	३१
,,	शु.	१८०	रा.	१६	०२
,,	चं.	१५०	गु.	२२	१९
२९	चं.	९०	मं.	००	३३
,,	चं.	१२०	रा.	०५	०६
,,	चं.	६०	शु.	०६	२१
,,	चं.	४५	बु.	०७	०५
,,	चं.	४५	सू.	०८	३७
३०	बु.	०	सू.	०१	३६
,,	चं.	१३५	रा.	०५	३१
,,	बु.	३०	श.	०६	५३
,,	चं.	[illegible]	श.	[illegible]	[illegible]

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
३०	चं.	३०	सू.	१०	४९
"	चं.	६०	श.	११	००
"	चं.	३०	बु.	११	३९
"	सू.	३०	श.	१४	०१
"	चं.	१८०	गु.	२२	५९
३१	चं.	६०	मं.	०३	४४
"	चं.	१५०	रा.	०५	५७
"	चं.	४५	श.	११	४६
"	चं.	३०	गु.	११	५३

अगस्त-२००८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	४५	मं.	०५	३४
"	चं.	३०	श.	१२	४८
"	चं.	०	सू.	१५	४४
"	चं.	०	बु.	२१	२३
२	चं.	१५०	गु.	००	१८
"	मं.	१५०	रा.	०४	०५
"	चं.	१८०	रा.	०७	४२
"	चं.	३०	मं.	०७	५२
"	बु.	१५०	गु.	१६	५९
"	चं.	०	शु.	१८	५०
३	चं.	१३५	गु.	०१	४१
"	चं.	०	श.	१६	२९
"	चं.	३०	सू.	२३	०२
४	चं.	१२०	गु.	०३	४७
"	चं.	३०	बु.	१०	१३
"	चं.	१५०	रा.	११	५१
"	चं.	०	मं.	१४	४४
"	बु.	१८०	रा.	२०	३०
५	चं.	४५	सू.	०४	०७
"	चं.	३०	शु.	०५	१८
"	चं.	१३५	रा.	१५	०९
"	चं.	४५	बु.	१८	३०
"	शु.	१३५	गु.	१९	२०
"	चं.	३०	श.	२३	२३
६	बु.	३०	मं.	०४	५४
"	चं.	६०	सू.	१०	२०
"	चं.	९०	गु.	१०	३१

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
६	चं.	४५	शु.	१२	१७
"	सू.	१५०	गु.	१२	२८
"	चं.	१२०	रा.	१९	१८
७	चं.	३०	मं.	०१	३४
"	चं.	६०	बु.	०४	०८
"	चं.	४५	श.	०४	१२
"	चं.	६०	शु.	२०	२५
८	चं.	४५	मं.	०८	२५
"	चं.	६०	श.	०९	५०
"	चं.	६०	गु.	२०	३२
९	चं.	९०	सू.	०१	५१
"	चं.	९०	रा.	०५	५१
"	चं.	६०	मं.	१३	००
१०	बु.	१३५	गु.	०१	३५
"	चं.	४५	गु.	०२	२४
"	चं.	९०	बु.	०२	३३
"	चं.	९०	शु.	१५	१०
"	चं.	९०	श.	२२	३९
११	सू.	१८०	रा.	०१	२७
"	चं.	३०	गु.	०८	२९
"	चं.	६०	रा.	१८	०४
"	चं.	१२०	सू.	१९	३७
१२	चं.	९०	मं.	०७	५५
१३	चं.	४५	रा.	००	०५
"	चं.	१२०	बु.	०१	५३
"	चं.	१३५	सू.	०४	२३
"	चं.	१२०	शु.	१०	२८
"	चं.	१२०	श.	११	३५
"	चं.	०	गु.	२०	१४
"	शु.	०	श.	२२	३४
१४	चं.	३०	रा.	०५	४५
"	चं.	१५०	सू.	१२	३६
"	चं.	१३५	बु.	१२	३७
१४	चं.	१३५	श.	१७	२८
"	चं.	१३५	शु.	१९	२१
"	चं.	१२०	मं.	२२	४०
१५	चं.	१५०	बु.	२२	१९
"	चं.	१५०	श.	२२	४४

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१६	बु.	०	श.	०१	३१
"	चं.	१५०	शु.	०३	२५
"	चं.	१३५	मं.	०५	०३
"	चं.	३०	गु.	०६	०७
"	चं.	०	रा.	१५	१६
१७	चं.	१८०	सू.	०२	४८
"	शु.	१२०	गु.	०५	४७
"	चं.	४५	गु.	१०	०८
"	चं.	१५०	मं.	१०	४२
१८	बु.	१२०	गु.	०६	५४
"	चं.	१८०	श.	०७	१७
"	चं.	६०	गु.	१३	३२
"	चं.	१८०	बु.	१४	३१
"	चं.	१८०	शु.	१६	५८
"	चं.	३०	रा.	२२	२२
१९	चं.	१५०	सू.	१३	५१
"	चं.	१८०	मं.	१९	५३
२०	चं.	४५	रा.	०१	०६
"	चं.	१५०	श.	१३	२८
"	चं.	१३५	सू.	१८	२३
"	चं.	९०	गु.	१८	४६
"	सू.	१३५	गु.	२३	३१
२१	शु.	१५०	रा.	०१	४५
"	चं.	१५०	बु.	०३	०२
"	चं.	६०	रा.	०३	२१
"	चं.	१५०	शु.	०३	३२
"	बु.	१५०	रा.	०५	५१
"	चं.	१३५	श.	१५	५२
२१	बु.	०	शु.	२१	१६
"	चं.	१२०	सू.	२२	२४
२२	चं.	१५०	मं.	०२	५१
"	चं.	१३५	शु.	०८	००
"	चं.	१३५	बु.	०८	१७
"	चं.	१२०	श.	१७	५४
"	चं.	१२०	गु.	२२	२३
२३	चं.	१३५	मं.	०५	४५
"	चं.	९०	रा.	०६	४७
"	चं.	१२०	शु.	१२	०३

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२३	चं.	१२०	बु.	१३	०२
"	चं.	१३५	गु.	२३	४७
२४	मं.	१३५	रा.	०२	५४
"	चं.	९०	सू.	०५	२१
"	चं.	१२०	मं.	०८	२३
"	चं.	९०	श.	२१	१३
२५	चं.	१५०	गु.	०१	०१
"	चं.	१२०	रा.	०९	१८
"	चं.	९०	शु.	१९	२७
"	चं.	९०	बु.	२१	३४
२६	चं.	१३५	रा.	१०	२५
"	चं.	६०	सू.	११	३०
"	चं.	९०	मं.	१३	१४
२७	चं.	६०	श.	००	०६
"	चं.	१८०	गु.	०३	१८
"	चं.	१५०	रा.	११	३३
"	चं.	४५	सू.	१४	३३
२८	चं.	४५	श.	०१	३६
"	चं.	६०	शु.	०२	४२
"	चं.	६०	बु.	०५	४५
"	चं.	३०	सू.	१७	४८
"	चं.	६०	मं.	१८	१५
२९	चं.	३०	श.	०३	१९
"	चं.	१५०	गु.	०५	५८
"	चं.	४५	शु.	०६	३७
"	चं.	४५	बु.	१०	०५
"	मं.	३०	सू.	१२	५५
"	चं.	१८०	रा.	१४	२१
"	चं.	४५	मं.	२१	१०
३०	चं.	१३५	गु.	०७	४६
"	चं.	३०	शु.	११	००
"	चं.	३०	बु.	१४	५१
३१	चं.	३०	मं.	००	३५
"	चं.	०	सू.	०१	२९
"	बु.	१३५	रा.	०४	०८
"	चं.	०	श.	०७	५२
"	चं.	१२०	गु.	१०	०२
"	चं.	१५०	रा.	१८	३९

सितम्बर-२००८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	शु.	१३५	रा.	१९	००
"	चं.	१३५	रा.	२१	४१
"	चं.	०	शु.	२१	५४
२	चं.	०	बु.	०२	२६
"	चं.	०	मं.	०९	२९
"	चं.	३०	सू.	११	५९
"	चं.	३०	श.	१४	५१
"	चं.	९०	गु.	१६	३०
३	चं.	१२०	रा.	०१	२६
"	चं.	४५	सू.	१८	३८
"	चं.	४५	श.	१९	३०
४	सू.	०	श.	०७	३१
"	चं.	३०	शु.	१२	४१
"	चं.	३०	बु.	१७	३८
"	चं.	३०	मं.	२१	५२
"	सू.	१२०	गु.	२३	१२
५	चं.	६०	श.	००	५६
"	चं.	६०	गु.	०२	००
"	चं.	६०	सू.	०२	१४
५	चं.	९०	रा.	११	१२
"	चं.	४५	शु.	२१	३३
६	चं.	४५	बु.	०२	३०
"	चं.	४५	मं.	०५	१७
"	चं.	४५	गु.	०७	४६
७	चं.	६०	शु.	०७	०६
"	चं.	६०	बु.	११	५१
"	चं.	६०	मं.	१३	१३
"	चं.	९०	श.	१३	३३
"	चं.	३०	गु.	१३	५८
"	चं.	९०	सू.	१९	३५
"	मं.	३०	श.	२०	२३
"	चं.	६०	रा.	२३	०७
८	मं.	९०	गु.	०२	३७
"	बु.	३०	श.	०८	१८
"	बु.	९०	गु.	१०	४०
"	बु.	०	मं.	२३	१६

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
९	गु.	१२०	श.	०४	४८
"	चं.	४५	रा.	०५	१७
"	सू.	१५०	रा.	१२	४५
१०	शु.	९०	गु.	०१	४३
"	चं.	०	गु.	०२	२५
"	चं.	९०	शु.	०२	३०
"	चं.	१२०	श.	०२	३९
"	शु.	३०	श.	०४	०३
"	चं.	९०	मं.	०५	०९
"	चं.	९०	बु.	०६	११
"	चं.	३०	रा.	११	०८
"	चं.	१२०	सू.	१३	१४
११	चं.	१३५	श.	०८	३४
"	चं.	१३५	सू.	२१	०७
१२	शु.	०	मं.	०७	३७
"	चं.	३०	गु.	१३	००
"	चं.	१५०	श.	१३	४६
१२	बु.	१२०	रा.	१८	०९
"	चं.	१२०	मं.	१८	४५
"	चं.	१२०	शु.	१९	१८
"	चं.	०	रा.	२०	५८
"	चं.	१२०	बु.	२१	१७
१३	चं.	१५०	सू.	०४	०१
"	शु.	१२०	रा.	१२	४२
"	चं.	४५	गु.	१७	०८
१४	चं.	१३५	मं.	००	०९
"	चं.	१३५	शु.	०२	०५
"	चं.	१३५	बु.	०३	०५
"	मं.	१२०	रा.	११	५८
"	चं.	६०	गु.	२०	२७
"	चं.	१८०	श.	२१	३७
१५	चं.	३०	रा.	०२	११
"	चं.	१५०	मं.	०४	३७
"	बु.	०	शु.	०७	०८
"	चं.	१५०	बु.	०७	४६
"	चं.	१५०	शु.	०७	४८
"	चं.	१८०	सू.	१४	४४
१६	चं.	४५	रा.	०५	५९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१७	चं.	९०	गु.	०१	००
"	चं.	१५०	श.	०२	३०
"	चं.	६०	रा.	०७	४१
"	चं.	१८०	मं.	११	१७
"	चं.	१८०	बु.	१४	२६
"	चं.	१८०	शु.	१६	४२
"	चं.	१५०	सू.	२२	१७
१८	चं.	१३५	श.	०४	१२
१९	चं.	१३५	सू.	०१	२४
"	चं.	१२०	गु.	०३	५०
"	चं.	१२०	श.	०५	३८
"	चं.	९०	रा.	१०	०७
"	चं.	१५०	मं.	१६	१७
१९	चं.	१५०	बु.	१८	५४
"	चं.	१५०	शु.	२३	५३
२०	चं.	१२०	सू.	०४	२२
"	चं.	१३५	गु.	०५	०२
"	चं.	१३५	मं.	१८	३८
"	चं.	१३५	बु.	२०	४७
२१	चं.	१३५	शु.	०३	२३
"	चं.	१५०	गु.	०६	१७
"	चं.	९०	श.	०८	२३
"	चं.	१२०	रा.	१२	१६
"	चं.	१२०	मं.	२१	०७
"	चं.	१२०	बु.	२२	३६
२२	चं.	१२०	शु.	०७	०४
"	चं.	९०	सू.	१०	३५
"	चं.	१३५	रा.	१३	३३
२३	चं.	१८०	गु.	०९	१७
"	चं.	६०	श.	११	४४
"	चं.	१५०	रा.	१५	०३
"	बु.	०	मं.	१६	२२
"	शु.	४५	श.	१९	५१
२४	चं.	९०	बु.	०२	२१
"	चं.	९०	मं.	०२	४८
"	सू.	१३५	रा.	०२	५४
"	चं.	४५	श.	१३	४७
"	चं.	९०	शु.	१५	२१

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२४	चं.	६०	सू.	१७	५४
२५	चं.	१५०	गु.	१३	२३
"	चं.	३०	श.	१६	१०
"	चं.	१८०	रा.	१८	५४
"	चं.	४५	सू.	२२	०७
२६	चं.	६०	बु.	०६	२३
"	चं.	६०	मं.	०९	५०
"	चं.	१३५	गु.	१५	५६
२७	चं.	६०	शु.	०१	१५
२७	चं.	३०	सू.	०२	४६
"	चं.	४५	बु.	०८	३३
"	चं.	४५	मं.	१३	५९
"	चं.	१२०	गु.	१८	५३
"	चं.	०	श.	२२	००
२८	चं.	१५०	रा.	००	०७
"	चं.	४५	शु.	०६	५८
"	चं.	३०	बु.	१०	५१
"	चं.	३०	मं.	१८	३८
२९	चं.	१३५	रा.	०३	२२
"	चं.	३०	शु.	१२	१०
"	चं.	०	सू.	१३	४३
३०	चं.	९०	गु.	०२	१५
"	चं.	३०	श.	०५	४५
"	शु.	३०	सू.	०८	५६
"	चं.	०	बु.	१३	०१

अक्टूबर-२००८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	०	मं.	०५	५१
"	चं.	४५	श.	१०	२९
२	चं.	३०	सू.	०३	३१
"	चं.	०	शु.	०४	२५
"	चं.	६०	गु.	१२	०१
"	चं.	६०	श.	१५	५३
"	चं.	९०	रा.	१६	३५
"	चं.	३०	बु.	२२	११
३	चं.	४५	सू.	११	३६
"	चं.	४५	गु.	१७	५१
"	चं.	३०	मं.	१९	५८
४	चं.	४५	बु.	०१	३८
"	श.	१५०	रा.	१४	२६
"	चं.	६०	सू.	२०	२१
"	चं.	३०	शु.	२२	४३
५	चं.	३०	गु.	००	११
"	चं.	४५	मं.	०३	५६
५	चं.	६०	रा.	०४	११
"	चं.	९०	श.	०४	२३
"	चं.	६०	बु.	०५	१६
"	मं.	४५	श.	१३	१५
"	बु.	३०	श.	१३	२७
"	शु.	६०	गु.	१३	५३
६	चं.	४५	शु.	०८	३५
"	चं.	४५	रा.	१०	२७
"	बु.	३०	शु.	१०	३६
"	चं.	६०	मं.	१२	११
"	सू.	९०	गु.	२२	२३
७	शु.	९०	रा.	०२	०२
"	बु.	०	सू.	०२	२४
"	बु.	९०	गु.	०५	१७
"	शु.	६०	श.	११	१३
"	चं.	९०	बु.	१२	३५
"	चं.	०	गु.	१३	२१
"	चं.	९०	सू.	१४	३५
"	चं.	३०	रा.	१६	३६
"	चं.	१२०	श.	१७	४२
"	चं.	६०	शु.	१८	२२
८	सू.	१२०	रा.	१४	१३
"	चं.	१३५	श.	२३	५२
९	चं.	९०	मं.	०३	५३
"	सू.	३०	श.	०८	५०
"	चं.	१२०	बु.	१९	०३
१०	चं.	३०	गु.	०१	०१
"	चं.	०	रा.	०३	२६
"	चं.	१५०	श.	०५	१६
"	चं.	१२०	सू.	०६	४८
"	चं.	९०	शु.	११	३९
"	चं.	१३५	बु.	२१	३७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
११	चं.	४५	गु.	०५	३४
"	चं.	१३५	सू.	१३	१५
११	चं.	१२०	मं.	१६	०६
"	चं.	१५०	बु.	२३	४०
१२	चं.	६०	गु.	०९	०६
"	चं.	३०	रा.	१०	४०
"	चं.	१८०	श.	१३	०७
"	चं.	१५०	सू.	१८	२५
"	चं.	१३५	मं.	२०	२८
"	चं.	१२०	शु.	२३	५८
१३	बु.	४५	शु.	०९	५१
"	चं.	४५	रा.	१२	५२
"	चं.	१५०	मं.	२३	४७
१४	चं.	१८०	बु.	०२	१२
"	चं.	१३५	शु.	०४	१६
"	चं.	९०	गु.	१३	२३
"	चं.	६०	रा.	१४	१७
"	चं.	१५०	श.	१७	१०
१५	चं.	१८०	सू.	०१	३४
"	चं.	१५०	शु.	०७	४०
"	बु.	३०	मं.	१३	४२
"	चं.	१३५	श.	१८	१२
१६	चं.	१५०	बु.	०३	२६
"	चं.	१८०	मं.	०४	०९
"	चं.	१२०	गु.	१५	१२
"	चं.	९०	रा.	१५	३४
"	चं.	१२०	श.	१८	५३
१७	चं.	१३५	बु.	०४	०२
"	चं.	१५०	सू.	०६	१३
"	चं.	१८०	शु.	१३	०४
"	चं.	१३५	गु.	१५	४६
१८	गु.	३०	रा.	०१	०२
"	चं.	१२०	बु.	०४	५६
"	चं.	१५०	मं.	०७	२२
"	चं.	१३५	सू.	०८	२४
"	चं.	१२०	रा.	१६	१८
"	चं.	१५०	गु.	१६	२७
"	चं.	९०	श.	२०	०८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१९	शु.	४५	गु.	०१	१४
"	चं.	१३५	मं.	०९	१४
"	चं.	१२०	सू.	१०	५२
"	चं.	१३५	रा.	१७	००
"	चं.	१५०	शु.	१८	४६
२०	चं.	९०	बु.	०८	३२
"	चं.	१२०	मं.	११	३४
"	चं.	१५०	रा.	१८	०६
"	चं.	१८०	गु.	१८	५१
"	चं.	१३५	शु.	२२	२२
"	चं.	६०	श.	२२	३७
२१	चं.	९०	सू.	१७	२६
२२	चं.	४५	श.	००	३७
"	चं.	१२०	शु.	०२	३९
"	चं.	६०	बु.	१५	३५
"	चं.	९०	मं.	१८	०१
"	चं.	१८०	रा.	२१	५२
"	चं.	१५०	गु.	२३	२०
२३	चं.	३०	श.	०३	१२
"	चं.	४५	बु.	२०	३५
२४	चं.	१३५	गु.	०२	२६
"	चं.	६०	सू.	०२	४१
"	चं.	९०	शु.	१३	२३
२५	चं.	३०	बु.	०२	३२
"	चं.	६०	मं.	०३	००
"	चं.	१५०	रा.	०३	४३
"	चं.	१२०	गु.	०६	०४
"	चं.	४५	सू.	०८	१८
"	चं.	०	श.	०९	५७
"	बु.	३०	मं.	१२	४२
"	मं.	९०	रा.	१५	२७
२६	चं.	१३५	रा.	०७	२४
"	सू.	४५	श.	०८	०५
"	चं.	४५	मं.	०८	२२
"	चं.	३०	सू.	१४	३१
"	बु.	९०	गु.	१७	४५
२७	चं.	६०	शु.	०२	४६
"	चं.	१२०	रा.	११	३३

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२७	चं.	३०	मं.	१४	१७
"	चं.	९०	गु.	१४	४८
"	चं.	०	बु.	१७	०८
"	चं.	३०	श.	१८	३९
२८	मं.	६०	गु.	०२	००
"	बु.	३०	श.	०७	३०
"	चं.	४५	शु.	१०	२४
"	चं.	४५	श.	२३	४३
२९	चं.	०	सू.	०४	४५
"	चं.	३०	शु.	१८	४१
"	चं.	९०	रा.	२१	१२
३०	चं.	६०	गु.	०१	३०
"	चं.	०	मं.	०३	४८
"	चं.	६०	श.	०५	१६
"	चं.	३०	बु.	११	१२
"	शु.	६०	रा.	१९	०१
३१	चं.	४५	गु.	०७	३६
"	मं.	६०	श.	०९	२३
"	चं.	३०	सू.	२१	२५
"	चं.	४५	बु.	२१	३०

नवम्बर-२००८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	६०	रा.	०८	४१
"	चं.	०	शु.	१३	०७
"	चं.	३०	गु.	१४	०९
"	चं.	९०	श.	१७	४५
"	चं.	३०	मं.	१९	३१
२	शु.	३०	गु.	००	३६
"	चं.	४५	सू.	०६	३२
२	चं.	६०	बु.	०८	२८
"	चं.	४५	रा.	१४	५७
३	चं.	४५	मं.	०३	५५
"	शु.	९०	श.	१४	१३
"	चं.	६०	सू.	१५	५३
"	चं.	३०	रा.	२१	१८
४	चं.	०	गु.	०३	५३
"	चं.	१२०	श.	०७	११
"	चं.	३०	शु.	०८	५८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
४	चं.	६०	मं.	१२	१८
५	चं.	९०	बु.	०६	४८
"	चं.	१३५	श.	१३	३६
"	चं.	४५	शु.	१८	२८
६	सू.	९०	रा.	०५	०२
"	चं.	०	रा.	०९	०९
"	चं.	९०	सू.	०९	३४
"	चं.	३०	गु.	१६	३४
"	चं.	१५०	श.	१९	२३
७	चं.	६०	शु.	०३	०४
"	चं.	९०	मं.	०३	२६
"	शु.	३०	मं.	११	४४
"	बु.	४५	श.	११	४५
"	चं.	४५	गु.	२१	४२
८	चं.	१२०	बु.	०१	५८
"	चं.	३०	रा.	१७	५०
"	चं.	१२०	सू.	२३	१४
९	चं.	६०	गु.	०१	४४
"	चं.	१८०	श.	०४	०२
"	चं.	१३५	बु.	०९	१८
"	चं.	१२०	मं.	१४	११
"	चं.	९०	शु.	१६	१२
"	चं.	४५	रा.	२०	३८
१०	चं.	१३५	सू.	०४	०१
"	सू.	६०	गु.	१४	२६
१०	चं.	१५०	बु.	१५	०३
"	चं.	१३५	मं.	१७	४०
"	चं.	६०	रा.	२२	२४
११	चं.	९०	गु.	०६	३१
"	चं.	१५०	सू.	०७	३१
"	चं.	१५०	श.	०८	१९
"	शु.	४५	रा.	१७	३५
"	सू.	६०	श.	१९	५६
"	चं.	१५०	मं.	२०	०४
"	चं.	१२०	शु.	२३	५३
१२	चं.	१३५	श.	०९	०७
"	चं.	१८०	बु.	२२	४५
"	चं.	९०	रा.	२३	३१

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१३	चं.	१३५	शु.	०२	१६
"	बु.	९०	रा.	०५	५९
"	चं.	१२०	गु.	०७	५५
"	चं.	१२०	श.	०९	२१
"	चं.	१८०	सू.	११	४८
"	चं.	१८०	मं.	२२	४४
१४	चं.	१५०	शु.	०४	१०
"	चं.	१३५	गु.	०८	००
"	चं.	१२०	रा.	२३	०२
१५	चं.	१५०	बु.	०४	०६
"	चं.	१५०	गु.	०८	०४
"	चं.	९०	श.	०९	११
"	चं.	१५०	सू.	१४	४८
"	चं.	१३५	रा.	२२	५२
१६	चं.	१५०	मं.	००	४६
"	चं.	१३५	बु.	०६	५७
"	चं.	१८०	शु.	०८	०४
"	चं.	१३५	सू.	१६	४१
"	बु.	६०	गु.	२१	३१
"	चं.	१५०	रा.	२३	०५
१७	चं.	१३५	मं.	०२	१९
१७	बु.	६०	श.	०५	५९
"	चं.	१८०	गु.	०९	१०
"	चं.	६०	श.	०९	५८
"	चं.	१२०	बु.	१०	२७
"	चं.	१२०	सू.	१९	१४
"	बु.	४५	शु.	१९	४३
१८	चं.	१२०	मं.	०४	३५
"	चं.	४५	श.	११	१६
"	चं.	१५०	शु.	१४	१४
१९	चं.	१८०	रा.	०१	१८
"	चं.	१५०	गु.	१२	५२
"	चं.	३०	श.	१३	१९
"	चं.	१३५	शु.	१८	४४
"	चं.	९०	बु.	२०	२०
२०	चं.	९०	सू.	०३	०२
"	चं.	९०	मं.	११	४५
"	चं.	१३५	गु.	१५	५६

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२१	चं.	१२०	शु.	००	१६
"	चं.	१५०	रा.	०६	३१
"	गु.	१२०	श.	१७	४५
"	चं.	०	श.	१९	४७
"	चं.	१२०	गु.	१९	४८
२२	चं.	१३५	रा.	१०	१५
"	चं.	६०	बु.	१०	३७
"	चं.	६०	सू.	१४	४०
"	चं.	६०	मं.	२२	२७
२३	चं.	९०	शु.	१४	०७
"	चं.	१२०	रा.	१४	३६
"	शु.	३०	रा.	१८	३०
"	चं.	४५	बु.	१९	१२
"	चं.	४५	सू.	२१	४४
२४	चं.	४५	मं.	०४	५५
"	चं.	३०	श.	०४	५७
"	चं.	९०	गु.	०५	३३
"	मं.	४५	गु.	१९	१८
२५	चं.	३०	बु.	०४	३३
"	चं.	३०	सू.	०५	२७
"	चं.	४५	श.	१०	१९
"	चं.	३०	मं.	११	५८
"	बु.	०	सू.	२२	२३
२६	चं.	९०	रा.	००	४३
"	चं.	६०	शु.	०६	५०
"	चं.	६०	श.	१६	०६
"	चं.	६०	गु.	१७	२१
२७	बु.	४५	गु.	१४	५४
"	चं.	४५	शु.	१५	५९
"	चं.	०	सू.	२२	२६
"	चं.	४५	गु.	२३	५१
२८	चं.	०	बु.	०१	०२
"	चं.	०	मं.	०३	२७
"	चं.	६०	रा.	१२	२३
"	सू.	४५	गु.	१८	४८
२९	चं.	३०	शु.	०१	३२
"	चं.	९०	श.	०४	३८
"	चं.	३०	गु.	०६	३८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२९	बु.	०	मं.	०९	१०
"	चं.	४५	रा.	१८	३७
३०	शु.	१२०	श.	१०	०८
"	चं.	३०	सू.	१६	५२
"	चं.	३०	मं.	२०	१४
"	चं.	३०	बु.	२३	०७

दिसम्बर-२००८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	३०	रा.	००	५८
"	सू.	६०	रा.	०८	०९
"	बु.	६०	रा.	१२	४१
"	शु.	०	गु.	१४	१६
"	चं.	१२०	श.	१७	५४
"	चं.	०	गु.	२०	४०
१	चं.	०	शु.	२१	१५
२	चं.	४५	सू.	०२	१३
"	चं.	४५	मं.	०४	४३
"	चं.	४५	बु.	१०	१४
३	चं.	१३५	श.	००	२२
"	चं.	६०	सू.	११	१६
"	चं.	६०	मं.	१२	५३
"	चं.	०	रा.	१३	१९
"	मं.	६०	रा.	२०	०३
"	चं.	६०	बु.	२०	५२
४	चं.	१५०	श.	०६	२५
"	चं.	३०	गु.	०९	५२
"	चं.	३०	शु.	१५	४८
"	सू.	४५	रा.	१६	४९
५	चं.	४५	गु.	१५	२८
"	चं.	३०	रा.	२३	३२
"	चं.	४५	शु.	२३	४१
६	चं.	९०	सू.	०२	५७
"	चं.	९०	मं.	०२	५८
"	मं.	०	सू.	०३	३५
"	चं.	९०	बु.	१४	५८
"	चं.	१८०	श.	१६	०७
"	चं.	६०	गु.	२०	०४
७	बु.	९०	श.	००	४५
"	चं.	४५	रा.	०३	१८
"	चं.	६०	शु.	०६	१४
८	चं.	६०	रा.	०६	००
"	चं.	१२०	मं.	१२	२३
"	सू.	१२०	चं.	१३	३७
"	बु.	३०	गु.	१५	०६
"	चं.	१५०	श.	२१	३९
९	चं.	९०	गु.	०१	५६
"	चं.	१२०	बु.	०३	०६
"	चं.	९०	शु.	१५	०८
९	चं.	१३५	मं.	१५	१५
"	चं.	१३५	सू.	१७	००
"	शु.	४५	मं.	१८	२६
"	चं.	१३५	श.	२२	५३
१०	चं.	१३५	बु.	०७	०३
"	चं.	९०	रा.	०८	२१
"	चं.	१५०	मं.	१७	०६
"	बु.	४५	रा.	१९	२३
"	चं.	१५०	सू.	१९	२०
"	चं.	१२०	श.	२३	१९
११	चं.	१२०	गु.	०३	५४
"	चं.	१५०	बु.	१०	००
"	चं.	१२०	शु.	१९	४२
१२	चं.	१३५	गु.	०३	५९
"	चं.	१२०	रा.	०८	००
"	चं.	१८०	मं.	१९	००
"	चं.	१३५	शु.	२१	१०
"	चं.	१८०	सू.	२२	०८
"	चं.	९०	श.	२२	४६
१३	चं.	१५०	गु.	०३	४९
"	चं.	१३५	रा.	०७	२५
"	सू.	९०	श.	०७	५१
"	चं.	१८०	बु.	१४	३१
"	शु.	१३५	श.	१८	५४
"	चं.	१५०	शु.	२२	३७
१४	चं.	१५०	रा.	०६	५७
१४	चं.	१५०	मं.	२०	४२
"	चं.	६०	श.	२२	११
१५	चं.	१५०	सू.	००	५४
"	चं.	१८०	गु.	०३	५८
"	चं.	१५०	बु.	२०	०१
"	चं.	१३५	मं.	२२	१६
"	चं.	४५	श.	२२	३४
१६	चं.	१८०	शु.	०२	५२
"	चं.	१३५	सू.	०३	०७
"	मं.	९०	श.	०४	१८
"	चं.	१८०	रा.	०७	१८
"	चं.	३०	श.	२३	३९
१७	चं.	१३५	बु.	००	०४
"	चं.	१२०	मं.	००	४१
"	सू.	४५	शु.	०५	१९
"	चं.	१२०	सू.	०६	१७
"	चं.	१५०	गु.	०६	२८
"	सू.	३०	गु.	०९	२७
१८	चं.	१२०	बु.	०५	२१
"	शु.	०	रा.	०८	२३
"	चं.	१३५	गु.	०९	०३
"	चं.	१५०	रा.	१०	४२
"	चं.	१५०	शु.	१०	५१
१९	चं.	०	श.	०४	२९
"	चं.	९०	मं.	०८	३९
"	चं.	१२०	गु.	१२	३६
"	चं.	१३५	रा.	१३	४५
"	चं.	९०	सू.	१६	००
"	चं.	१३५	शु.	१६	३७
२०	बु.	३०	रा.	०१	५५
"	चं.	१२०	रा.	१७	४०
"	चं.	९०	बु.	१९	५३
"	चं.	१२०	शु.	२३	३३
२१	चं.	३०	श.	१२	५६
"	चं.	६०	मं.	२०	५२
"	चं.	९०	गु.	२२	२८
२२	चं.	६०	सू.	०६	१०
२२	चं.	४५	श.	१८	१५
"	मं.	४५	रा.	१९	२१
२३	चं.	९०	रा.	०३	४०
"	चं.	४५	मं.	०४	१४
"	मं.	३०	गु.	१०	१२
२३	चं.	४५	सू.	१४	३१
"	चं.	६०	बु.	१४	५०
"	चं.	९०	शु.	१६	१०
२४	चं.	६०	श.	००	०६
"	चं.	६०	गु.	११	०१
"	चं.	३०	मं.	१२	१०
"	चं.	३०	सू.	२३	२३
२५	चं.	४५	बु.	०१	१८
"	बु.	३०	शु.	०३	२८
"	चं.	६०	रा.	१५	३४
"	चं.	४५	गु.	१७	५१
२६	चं.	६०	शु.	१०	५३
"	चं.	३०	बु.	१२	०३
"	चं.	९०	श.	१२	४१
"	बु.	१२०	श.	१७	०९
"	चं.	४५	रा.	२१	५०
२७	चं.	३०	गु.	००	५१
"	चं.	०	मं.	०४	५६
"	शु.	१५०	श.	०६	०३
"	चं.	०	सू.	१७	५३
"	चं.	४५	शु.	२०	३१
२८	चं.	३०	रा.	०४	०८
२९	चं.	१२०	श.	०१	३५
"	चं.	३०	शु.	०६	०३
"	चं.	०	बु.	०९	२४
"	चं.	०	गु.	१४	५१
"	चं.	३०	मं.	२१	४८
३०	चं.	१३५	श.	०७	५०
"	चं.	३०	सू.	१२	१२
"	चं.	०	रा.	१६	२३
३१	चं.	४५	मं.	०५	५०
"	चं.	१५०	श.	१३	४५
३१	बु.	०	गु.	१७	११
"	चं.	४५	सू.	२०	४७

जनवरी-२००९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	०	शु.	००	०३
"	चं.	३०	गु.	०३	४८
"	चं.	३०	बु.	०४	५१
"	सू.	३०	रा.	११	२३
"	चं.	६०	मं.	१३	१८
२	चं.	३०	रा.	०३	१०
"	चं.	६०	सू.	०४	३९
"	चं.	४५	गु.	०९	२८
"	चं.	४५	बु.	१३	१०
"	चं.	१८०	श.	२३	५३
३	शु.	३०	गु.	०४	१३
"	चं.	४५	रा.	०७	३५
"	चं.	६०	गु.	१४	२०
"	चं.	३०	शु.	१५	०४
"	चं.	६०	बु.	२०	१२
४	चं.	९०	मं.	०२	४७
"	चं.	६०	रा.	११	०९
"	चं.	९०	सू.	१७	२६
"	चं.	४५	शु.	२१	५५
५	चं.	१५०	श.	०६	४८
"	चं.	९०	गु.	२१	१८
६	चं.	६०	शु.	०१	३५
"	चं.	९०	बु.	५	५८
"	चं.	१३५	श.	८	५२
"	चं.	१२०	मं.	१०	०४
"	चं.	९०	रा.	१५	३४
७	चं.	१२०	सू.	०१	३८
"	चं.	१२०	श.	१०	०६
"	चं.	१३५	मं.	१२	३९
८	चं.	१२०	गु.	०	३१
"	चं.	१३५	सू.	४	१३
"	चं.	९०	शु	७	४०
"	चं.	१२०	बु.	१०	३२

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
८	बु.	१३५	श.	१२	१५
"	चं.	१५०	मं.	१४	२६
"	चं.	१२०	श.	१६	४९
"	मं.	३०	के.	२३	५५
९	चं.	१३५	गु.	०१	०६
"	चं.	१५०	सू.	०६	०६
"	चं.	९०	श.	१०	३५
"	चं.	१३५	बु.	११	२४
"	चं.	१३५	रा.	१६	३९
१०	चं.	१५०	गु.	०१	१६
"	मं.	३०	रा.	१०	२०
"	चं.	१२०	शु.	११	०२
"	चं.	१५०	बु.	११	४१
"	चं.	१५०	रा.	१६	१५
"	चं.	१८०	मं.	१६	३५
११	चं.	१८०	सू.	८	५७
"	चं.	६०	श.	९	५७
"	चं.	१३५	शु.	१२	२९
"	चं.	१२०	श.	२३	३२
१२	चं.	१८०	गु.	१	३०
"	चं.	४५	श.	९	५०
"	चं.	१८०	बु.	११	३४
"	शु.	३०	के.	१२	०७
"	चं.	१५०	शु.	१४	१४
"	चं.	१८०	रा.	१५	४८
"	चं.	१५०	मं.	१८	५४
१३	चं.	३०	श.	९	१०
"	शु.	३०	रा.	११	५६
"	चं.	१५०	सू.	१२	४९
"	चं.	१३५	मं.	२०	५२
१४	चं.	१५०	गु.	०३	१७
"	चं.	१५०	बु.	१२	०२
"	चं.	१३५	सू.	१५	५५
"	चं.	१५०	रा.	१७	२३
१४	चं.	१८०	शु.	१९	५०
"	चं.	१२०	मं.	२३	४४
१५	चं.	१३५	गु.	०५	२१

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१५	बु.	१३५	श.	९	४२
"	चं.	१३५	बु.	१२	५२
"	चं.	०	श.	१३	०२
"	चं.	१३५	रा.	१९	२५
"	चं.	१२०	सू.	२०	०७
१६	चं.	१२०	गु.	०८	२५
"	चं.	१२०	बु.	१४	१३
"	चं.	१२०	रा.	२२	२५
१७	चं.	१५०	शु.	५	४८
"	चं.	९०	मं.	८	५१
"	चं.	३०	श.	१९	३८
१८	चं.	९०	सू.	८	१६
"	चं.	१३५	शु.	१२	३७
"	चं.	९०	गु.	१७	३९
"	चं.	९०	बु.	१८	२३
१९	चं.	४५	श.	०	२२
"	बु.	०	गु.	०	३९
"	चं.	९०	रा.	७	१६
"	चं.	१२०	शु.	२०	२९
"	चं.	६०	मं.	२२	२८
२०	चं.	६०	श.	५	५१
"	सू.	०	बु.	२१	३१
२१	चं.	६०	बु.	०	११
"	चं.	६०	सू.	०	४५
"	चं.	६०	गु.	६	१६
"	चं.	४५	मं.	६	३२
"	चं.	६०	रा.	१८	५५
"	बु.	४५	गु.	२३	११
२२	चं.	४५	बु.	३	३२
"	चं.	४५	सू.	९	५७
"	चं.	४५	गु.	१३	१६
२२	चं.	९०	शु.	१४	१३
"	चं.	३०	मं.	१५	०१
"	चं.	९०	श.	१८	११
२३	चं.	४५	रा.	१	१४
"	चं.	३०	बु.	७	०५
"	चं.	३०	सू.	१९	१८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२३	चं.	३०	गु.	२०	२३
२४	चं.	३०	रा.	७	३५
"	सू.	०	गु.	११	१४
"	मं.	१२०	श.	१३	३४
"	शु.	१८०	श.	१३	४५
"	शु.	६०	मं.	१४	३५
२५	चं.	१२०	श.	०६	५०
"	चं.	०	मं.	०८	०५
"	चं.	६०	शु.	०८	२१
"	चं.	०	बु.	१४	३८
२६	सू.	१३५	श.	०६	१८
"	चं.	०	गु.	१०	०६
"	चं.	१३५	श.	१२	४८
"	चं.	०	सू.	१३	२५
"	चं.	४५	शु.	१६	५५
"	चं.	०	रा.	१९	३६
२७	बु.	६०	शु.	५	०१
"	बु.	०	मं.	११	४१
"	चं.	१५०	श.	१८	२२
"	शु.	४५	के.	१९	३४
"	चं.	३०	बु.	२२	२६
"	चं.	३०	मं.	२३	४८
२८	चं.	३०	शु.	०	५६
"	शु.	४५	रा.	२	३५
"	चं.	३०	गु.	२२	१३
"	चं.	४५	बु.	२	१९
२९	चं.	३०	सू.	५	३१
"	चं.	३०	रा.	६	०१
२९	चं.	४५	मं.	६	५०
"	चं.	०	रा.	११	३२
३०	चं.	४५	गु.	३	२७
"	चं.	१८०	श.	४	०१
"	चं.	६०	बु.	६	०४
"	चं.	४५	रा.	१०	२६
"	चं.	४५	सू.	१२	३२
"	चं.	६०	मं.	१३	११
"	चं.	०	शु.	१४	५३

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
३१	गु.	१३५	श.	४	३३
"	चं.	६०	गु.	८	०३
"	चं.	६०	रा.	१४	१५
"	चं.	६०	सू.	१८	४५

फरवरी-२००९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	१५०	श.	११	१८
"	चं.	९०	बु.	१२	५१
"	चं.	९०	मं.	२३	३८
२	चं.	३०	शु.	१	४१
"	चं.	१३५	श.	१३	५८
"	चं.	९०	गु.	१५	१३
"	चं.	९०	रा.	१९	५७
३	चं.	९०	सू.	४	४३
"	चं.	४५	शु.	५	४८
"	चं.	१२०	श.	१५	५९
"	चं.	१२०	बु.	१८	११
४	चं.	१२०	मं.	६	५७
"	चं.	६०	शु.	९	०८
"	चं.	१२०	गु.	१९	३८
"	चं.	१३५	बु.	२०	१३
"	चं.	१२०	रा.	२३	०६
५	चं.	१३५	मं.	९	३३
"	चं.	१२०	सू.	११	३०
"	चं.	९०	श.	१८	१५
"	चं.	१३५	गु.	२०	५८
५	चं.	१५०	बु.	२१	५३
"	चं.	१३५	रा.	२३	५३
६	चं.	४५	शु.	३	४०
"	चं.	१५०	मं.	११	३७
"	चं.	९०	शु.	१३	४८
"	चं.	१३५	सू.	१३	५९
"	चं.	१५०	गु.	२१	५४
७	चं.	१५०	रा.	०	१७
"	चं.	१५०	सू.	१६	०७
"	चं.	६०	श	१८	५६
८	चं.	१८०	बु.	०	३८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
८	चं.	१८०	मं.	१४	५४
"	चं.	१२०	शु.	१७	०२
"	चं.	४५	श.	१९	०५
"	चं.	१८०	गु.	२३	१३
९	चं.	१८०	रा.	०	३९
"	सू.	१५०	श.	७	०८
"	चं.	१३५	शु.	१८	४२
"	चं.	३०	श.	१९	२२
"	चं.	१८०	सू.	२०	२०
१०	चं.	१५०	बु.	३	५४
"	चं.	१५०	मं.	१८	४३
"	चं.	१५०	शु.	२०	४५
११	चं.	१५०	गु.	१	१९
"	चं.	१५०	रा.	१	४८
"	चं.	१५०	बु.	६	२३
"	मं.	१३५	श.	१७	०१
"	चं.	०	श.	२१	१३
"	चं.	१३५	मं.	२१	३०
१२	गु.	०	रा.	१	१७
"	चं.	१५०	सू.	२	२२
"	चं.	१३५	रा.	३	११
"	चं.	१३५	गु.	३	१४
"	चं.	१२०	बु.	९	४८
१३	चं.	१२०	मं.	१	१०
"	चं.	१८०	शु.	२	५८
"	चं.	१२०	रा.	५	२२
"	चं.	१२०	गु.	५	५९
"	चं.	१३५	सू.	६	४६
"	गु.	०	के.	२३	०५
१४	चं.	३०	श.	२	०२
"	चं.	१२०	सू.	१२	२०
"	चं.	९०	बु.	२०	१६
१५	शु.	६०	रा.	१	४७
"	चं.	४५	श.	५	५१
"	चं.	९०	मं.	११	५४
"	चं.	९०	श.	१२	३३
"	चं.	१५०	शु.	१३	०९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१५	चं.	९०	गु.	१४	२९
''	मं.	०	रा.	२१	४५
''	शु.	६०	के.	२३	१३
१६	चं.	६०	श.	१०	३५
''	मं.	०	के.	१५	४६
''	चं.	१३५	शु.	१९	४७
१७	चं.	९०	सू.	०३	०७
''	शु.	६०	गु.	१०	१७
''	चं.	६०	बु.	१२	०६
''	मं.	०	गु.	२१	५७
''	चं.	६०	रा.	२३	१४
१८	चं.	६०	गु.	२	३२
''	चं.	६०	मं.	२	५६
''	चं.	१२०	शु.	३	११
''	शु.	६०	मं.	१५	०१
''	चं.	४५	बु.	२१	३४
''	चं.	९०	श.	२२	०९
१९	बु.	१३५	श.	३	०४
''	चं.	४५	रा.	५	२६
''	चं.	४५	गु.	९	४०
१९	चं.	४५	मं.	११	२६
''	चं.	६०	सू.	२१	१३
२०	चं.	३०	बु.	७	३३
''	चं.	३०	रा.	११	४८
''	चं.	३०	गु.	१६	४५
''	चं.	९०	शु.	१८	५०
''	चं.	३०	मं.	२०	०५
२१	चं.	४५	सू.	६	३१
''	चं.	१२०	श.	१०	४१
''	बु.	०	रा.	२२	११
२२	चं.	३०	सू.	१५	२४
''	चं.	१३५	श.	१६	३५
''	बु.	०	के.	१७	०७
''	चं.	०	रा	२३	५२
२३	चं.	०	बु.	३	०३
''	चं.	०	गु.	६	०७
''	चं.	६०	शु.	९	१८
२३	चं.	०	मं.	१२	१८
''	चं.	१५०	श.	२१	५९
२४	बु.	०	गु.	१२	२३
''	चं.	४५	शु.	१५	२९
२५	चं.	०	सू.	७	०५
''	चं.	३०	रा	९	५१
''	चं.	३०	गु.	१७	०८
''	चं.	३०	बु.	२०	००
''	चं.	३०	श.	२०	५३
२६	चं.	३०	मं.	१	४६
''	बु.	६०	शु.	६	२९
''	चं.	१८०	श.	६	५६
''	चं.	४५	रा.	१३	५५
''	सू.	३०	रा.	१६	१६
''	चं.	४५	गु.	२१	३९
२७	चं.	४५	बु.	३	१७
२७	चं.	४५	मं.	७	२२
''	चं.	६०	रा.	१७	२३
''	चं.	३०	सू.	१९	३४
२८	चं.	६०	गु.	१	३३
''	चं.	०	शु.	५	२७
''	चं.	६०	बु.	९	५०
''	चं.	६०	मं.	१२	१८
''	चं.	१५०	श.	१३	३१

मार्च-२००९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	४५	सू.	०	४६
''	मं.	१५०	श.	७	१७
''	चं.	१३५	श.	१६	०५
''	बु.	१५०	श.	१८	२६
''	चं.	९०	रा.	२२	५०
२	चं.	६०	सू.	५	२४
''	चं.	९०	गु.	७	४९
''	बु.	०	मं.	८	३५
''	चं.	३०	शु.	११	३३
''	चं.	१२०	श.	१८	१३
''	चं.	९०	मं.	२०	३२
''	चं.	९०	बु.	२१	१२
३	चं.	४५	शु.	१३	५३
''	सू.	३०	गु.	२३	१३
४	चं.	१२०	रा.	२	४१
''	चं.	१२०	गु.	१२	२८
''	चं.	९०	सू.	१३	१६
''	चं.	६०	श.	१५	४७
''	चं.	९०	श.	२१	३०
५	चं.	१२०	मं.	३	०४
''	चं.	१३५	रा.	४	.०९
''	चं.	१२०	बु.	६	४७
''	चं.	१३५	गु.	१४	२०
६	सू.	३०	शु.	२	५५
६	चं.	१५०	रा.	५	२२
''	चं.	१३५	मं.	५	५१
''	चं.	१३५	बु.	११	०७
''	चं.	१५०	गु.	१५	५७
''	चं.	९०	शु.	१८	३६
''	चं.	१२०	सू.	१९	४५
''	चं.	६०	श.	२३	४६
७	चं.	१५०	मं.	८	२६
''	चं.	१५०	बु.	१५	१६
''	चं.	१३५	सू.	२२	४२
८	चं.	४५	श.	०	४१
''	चं.	१८०	रा.	७	२२
''	चं.	१८०	गु.	१८	५०
''	चं.	१२०	शु.	२०	३५
९	सू.	१८०	श.	१	२३
''	चं.	३०	श.	१	३५
''	चं.	१५०	सू.	१	३६
''	चं.	१८०	मं.	१३	२६
''	चं.	१३५	शु.	२१	३२
''	चं.	१८०	बु.	२३	४१
१०	चं.	१५०	रा.	९	२८
''	चं.	१५०	गु.	२२	०७
''	चं.	१५०	शु.	२२	४०
११	चं.	०	श.	३	५६
''	चं.	१८०	सू.	८	०८
११	चं.	१३५	रा.	१०	५७
''	शु.	६०	गु.	१८	०५
''	चं.	१५०	मं.	१९	२६
१२	चं.	१३५	गु.	०	२०
''	चं.	१५०	बु.	९	५४
''	चं.	१२०	रा.	१२	५६
''	सू.	४५	रा.	२१	४१
''	चं.	१३५	मं.	२३	२१
१३	चं.	१८०	शु.	२	०६
''	चं.	१२०	गु.	३	१०
''	चं.	३०	श.	८	०८
''	बु.	३०	रा.	१०	०६
''	चं.	१३५	बु.	१६	२५
''	चं.	१५०	सू.	१७	०८
१४	सू.	४५	के	०	५४
''	बु.	३०	के.	२	२९
''	चं.	१२०	मं.	४	०९
''	शु.	४५	मं.	१०	१९
''	चं.	४५	श.	११	५३
''	चं.	९०	रा.	१९	०५
''	चं.	१३५	सू.	२३	०७
१५	चं.	१२०	बु.	०	१५
''	चं.	१५०	शु.	८	०१
''	चं.	९०	गु.	११	२३
''	चं.	६०	श.	१५	२२
१६	चं.	१२०	सू.	६	१३
''	चं.	१३५	शु.	१२	०३
''	चं.	९०	मं.	१६	५४
१७	चं.	६०	रा.	४	३७
''	चं.	१२०	शु.	१६	४२
''	चं.	९०	बु.	२०	०८
''	चं.	६०	गु.	२३	०७
१८	चं.	९०	श.	१	५४
''	चं.	४५	रा.	१०	२८
''	बु.	३०	गु.	१८	३३
''	चं.	९०	सू.	२३	१७
१९	चं.	४५	गु.	५	५७
१९	चं.	६०	मं.	९	११
''	बु.	१८०	श.	९	३०
''	चं.	१५०	रा	१६	४४
२०	चं	९०	शु.	३	०१
२०	चं.	३०	गु.	१२	५७
''	चं.	१२०	श.	१४	१७
''	चं.	४५	मं.	१७	४८
''	चं.	६०	बु.	१९	४२
२१	बु.	४५	रा	१६	४४
''	चं.	६०	सू.	१७	३८
''	चं.	१३५	श.	२०	२२
२२	चं.	३०	मं.	२	०९
''	च.	०	रा.	५	०४
''	चं.	४५	बु.	७	२३
''	बु.	४५	के.	९	२३
''	चं.	६०	शु.	१२	४८
''	गु.	१५०	श.	२२	१६
२३	सू.	४५	गु.	१	१७
''	चं.	१५०	श.	१	५७
''	चं.	०	गु.	२	०२
''	चं.	४५	सू.	२	०५
''	चं.	४५	शु.	१६	५२
''	चं.	३०	बु.	१८	०९
''	मं.	३०	रा.	२०	२०
२४	चं.	३०	सू.	९	३७
''	चं.	३०	रा.	१५	१२
''	चं.	०	मं.	१६	३२
''	चं.	३०	शु.	२०	१३
२५	मं.	३०	के.	१०	०९
''	चं.	१८०	श.	१०	५४
''	चं.	३०	गु.	१२	१३
''	चं.	४५	रा.	१९	०६
२६	शु.	३०	मं.	३	३५
''	चं.	०	बु.	१२	०७
''	चं.	४५	गु.	१६	०२
''	चं.	०	सू.	२१	३६
''	चं.	६०	रा.	२२	१३

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अप्रैल २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	श्रवण	०२	३८	०८	५५	१५	१०	२१	२१
२	धनि	०३	३०	०९	३५	१५	३८	२१	३७
३	शत	०३	३४	०९	२८	१५	१८	२१	०६
४	पू.भा	०२	५२	०८	३४	१४	१५	१९	५३
५	उ.भा	०१	२८	०७	०२	१२	३३	१८	०३
५।६	रेवती	२३	३१	०४	४७	१०	२२	१५	४६
६।७	अश्विनी	२१	०९	०२	३१	०७	५२	१३	१३
७।८	भरणी	१८	३३	२३	५३	०५	१३	१०	३३
८।९	कृतिका	१५	५४	२१	१५	०२	३७	०७	५९
९।१०	रोहिणी	१३	२३	१८	४७	००	१३	०५	४०
१०।११	मृग	११	०८	१६	३८	२२	१०	०३	४३
११।१२	आर्द्रा	०९	१८	१४	५५	२०	३४	०२	१५
१२।१३	पुन	०७	५९	१३	४४	१९	३२	०१	२१
१३।१४	पुष्य	०७	१३	१३	०७	१९	०४	०१	०२
१४।१५	आश्ले	०७	०३	१३	०५	१९	१०	०१	१७
१५।१६	मघा	०७	२६	१३	३६	१९	४९	०२	०३
१६।१७	पू.फा	०८	१९	१४	३७	२०	५६	०३	१७
१७।१८	उ.फा	०९	३९	१६	०३	२२	२८	०४	५५
१८।१९	हस्त	११	२३	१७	५२	००	२२	०६	५४
१९।२०	चित्रा	१३	२६	२०	००	०२	३५	०९	१०
२०।२१	स्वाति	१५	४७	२२	२५	०५	०३	११	४३
२१।२२	विशाखा	१८	२३	०१	०४	०७	४६	१४	२९
२२।२३	अनु.	२१	१२	०३	५५	१०	३९	१७	२४
२४	ज्येष्ठा	००	०८	०६	५३	१३	३८	२०	२३
२५	मूल	०३	०७	०९	५१	१६	३५	२३	१८
२६।२७	पू.षा	०५	५९	१२	४०	१९	२०	०१	५८
२७।२८	उ.षा	०८	३४	१५	०९	२१	४२	०४	१३
२८।२९	श्रवण	१०	४१	१७	०७	२३	३१	०५	५१
२९।३०	धनि	१२	०९	१८	२४	००	३७	०६	४६
३०।१	शत	१२	५२	१८	५४	००	५४	०६	५१

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
मई २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	पू.भा	१२	४४	१८	३५	००	२२	०६	०६
२।३	उ.भा	११	४८	१७	२६	२३	०२	०४	३६
३।४	रेवती	१०	०७	१५	३६	२१	०२	०२	२७
४	अश्विनी	०७	४९	१३	१०	१८	३०	२३	४८
५	भरणी	०५	०५	१०	२१	१५	३७	२०	५१
६	कृतिका	०२	०६	०७	२०	१२	३४	१७	४८
६।७	रोहिणी	२३	०३	०४	१८	०९	३४	१४	५१
७।८	मृगशिरा	२०	०९	०१	२८	०६	४९	१२	११
८।९	आर्द्रा	१७	३५	२३	००	०४	२८	०९	५८
९।१०	पुनर्वसु	१५	३०	२१	०४	०२	४१	०८	२१
१०।११	पुष्य	१४	०२	१९	४७	०१	३४	०७	२४
११।१२	आश्ले	१३	१७	१९	१२	०१	१०	०७	११
१२।१३	मघा	१३	१५	१९	२१	०१	३०	०७	४१
१३।१४	पूफा	१३	५५	२०	११	०२	२९	०८	५०
१४।१५	उफा	१५	१३	२१	३७	०४	०४	१०	३२
१५।१६	हस्त	१७	०२	२३	३३	०६	०६	१२	४०
१६।१७	चित्रा	१९	१५	०१	५१	०८	२९	१५	०७
१७।१८	स्वाती	२१	४७	०४	२७	११	०७	१७	४९
१९	विशाखा	००	३१	०७	१३	१३	५६	२०	३९
२०	अनु	०३	२३	१०	०७	१६	५१	२३	३५
२१।२२	ज्येष्ठा	०६	२०	१३	०४	१९	४८	०३	३३
२२।२३	मूल	०९	१७	१६	००	२२	४४	०५	२६
२३।२४	पू.षा	१२	०९	१८	५०	०१	३१	०८	११
२४।२५	उ.षा	१४	५०	२१	२७	०४	०३	१०	३८
२५।२६	श्रवण	१७	११	२३	४२	०६	१२	१२	३९
२६।२७	धनि	१९	०४	०१	२७	०७	४८	१४	०६
२७।२८	शत	२०	२१	०२	३४	०८	४३	१४	५०
२८।२९	पूभा	२०	५४	०२	५५	०८	५४	१४	४९
२९।३०	उभा	२०	४१	०२	३०	०८	१६	१४	००
३०।३१	रेवती	१९	४१	०१	१९	०६	५४	१२	२७
३१।१	अश्वि	१७	५७	२३	२६	०४	५२	१०	१६

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
जून २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	भरणी	१५	३८	२०	५९	०२	१८	०७	३६
२।३	कृतिका	१२	५२	१८	०८	२३	२३	०४	३७
३।४	रोहिणी	०९	५१	१५	०४	२०	१८	०१	३१
४	मृगशिरा	६	४५	१२	००	१७	१५	२२	३१
५	आर्द्रा	०३	४८	०९	०६	१४	२५	१९	४७
६	पुनर्वसु	०१	१०	०६	३४	१२	०१	१७	३०
६।७	पुष्य	२३	०१	०४	३५	१०	११	१५	५०
७।८	आश्लेषा	२१	३२	०३	१६	०९	०३	१४	५३
८।९	मघा	२०	४६	०२	४२	०८	४१	१४	४३
९।१०	पूफा	२०	४८	०२	५६	०९	०६	१५	२०
१०।११	उफा	२१	३६	०३	५५	१०	१६	१६	४०
११।१२	हस्त	२३	०६	०५	३४	१२	०४	१८	३६
१३	चित्रा	१०	१०	०७	४६	१४	२३	२१	०१
१४	स्वाती	०३	४१	१०	२१	१७	०३	२३	४५
१५।१६	विशाखा	०६	२८	१३	११	१९	५५	०२	३९
१६।१७	अनु	०९	२४	१६	०८	२२	५३	०५	३७
१७।१८	ज्येष्ठा	१२	२१	१९	०५	०१	४९	०८	३२
१८।१९	मूल	१५	१५	२१	५८	०४	४०	११	२१
१९।२०	पूषा	१८	०१	००	४१	०७	२०	१३	५८
२०।२१	उ.षा.	२०	३५	०३	११	०९	४६	१६	२०
२१।२२	श्रवण	२२	५२	०५	२४	११	५३	१८	२१
२३	धनिष्ठा	००	४८	०७	१३	१३	३६	१९	४७
२४	शत	०२	१६	०८	३३	१४	४८	२१	०१
२५	पू.भा	०३	११	०९	२०	१५	२६	२१	२९
२६	उ.भा	०३	३०	०९	२९	१५	२५	२१	१८
२७	रेवती	०९	०९	०८	५८	१४	४४	२०	२८
२८	अश्विनी	०२	१०	०७	४९	१३	२६	१९	०१
२९	भरणी	००	३३	०६	०४	११	३३	१७	०१
२९।३०	कृतिका	२२	२७	०३	५१	०९	१४	१४	३६
३०।१	रोहिणी	१९	५६	०१	१६	०६	३६	११	५४

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
जुलाई २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	मृगशिर	१७	१३	२२	३१	०३	४८	०९	०७
२।३	आर्द्रा	१४	२५	१९	४४	०१	०३	०६	२३
३।४	पुनर्वसु	११	४४	१७	०६	२२	३०		
४।५	पुष्य	०९	२१	१४	५९	२०	२०	०३	५५
५।६	आश्लेषा	०७	२६	१३	०२	१८	४१	०१	५२
६	मघा	०६	०६	११	५३	१७	४२	००	२२
७	पूफा	०५	२९	११	२७	१७	२७	२३	३४
८।९	उफा	०५	३८	११	४७	१७	५९	२३	३१
९।१०	हस्त	०६	३२	१२	५३	१९	१६	००	१४
१०।११	चित्रा	०८	१०	१४	४०	२१	१२	०१	४२
११।१२	स्वाती	१०	२२	१७	००	२३	३९	०३	४६
१२।१३	विशाखा	१३	०१	१९	४३	०२	२६	०६	१९
१३।१४	अनुराधा	१५	५४	२२	४९	०५	२३	०९	१०
१४।१५	ज्येष्ठा	१८	५२	०१	३६	०८	२०	१२	०८
१५।१६	मूल	२१	४५	०४	२७	११	०८	१५	०३
१७	पूषा	००	२७	०७	०५	१३	४१	१७	४८
१८	उषा	०२	५१	०९	२४	१५	५६	२०	१७
१९।२०	श्रवण	०४	५५	११	२२	१७	४८	२२	२६
२०।२१	धनिष्ठा	०६	३५	१२	५७	१९	१६	००	१२
२१।२२	शतभिषा	०७	५१	१४	०६	२०	१९	०१	३४
२२।२३	पूभा	०८	४०	१४	४८	२०	५४	०२	३०
२३।२४	उभा	०९	०२	१५	०३	२१	०२	०२	५९
२४।२५	रेवती	०८	५५	१४	४८	२०	४१	०२	३१
२५।२६	अश्वि	०८	१९	१४	०६	१९	५१	०१	३५
२६।२७	भरणी	०७	१७	१२	५७	१८	३६	००	१३
२७	कृतिका	०५	४९	१३	२४	१६	५८	२२	३०
२८	रोहिणी	०४	०१	०९	३१	१५	०१	२०	३०
२९	मृग	०१	५८	०७	२५	१२	५२	१८	१९
२९।३०	आर्द्रा	२३	४५	०५	१२	१०	३८	१६	०५
३०।३१	पुन	२१	३२	०२	५९	०८	२७	१३	५६
३१।१	पुष्य	१९	२६	००	५६	०६	२८	२२	०१

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अगस्त २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	आश्लेषा	१७	३५	२३	११	०४	४८	१०	२७
२।३	मघा	१६	०८	२१	५१	०३	३७	०९	२४
३।४	पूफा	१५	१३	२१	०५	०३	००	०८	५६
४।५	उफा	१४	५६	२०	५८	०३	०२	०९	१०
५।६	हस्त	१५	२०	२१	३२	०३	३८	१०	०६
६।७	चित्रा	१६	२६	२२	४९	०५	१५	११	४२
७।८	स्वाती	१८	१३	००	४५	०७	१९	१३	५५
८।९	विशाखा	२०	३२	०३	११	०९	५२	१६	३३
९।१०	अनुराधा	२३	१६	०५	५९	१२	४३	१९	२७
११	ज्येष्ठा	०२	११	०८	५६	१५	४०	२२	२३
१२।१३	मूल	०५	०६	११	४९	१८	३०	०१	११
१३।१४	पूषा	०७	५०	१४	२८	२१	०४	०३	३९
१४।१५	उषा	१०	१२	१६	४४	२३	१४	०५	४२
१५।१६	श्रवण	१२	०८	१८	३२	००	५४	०७	१५
१६।१७	धनिष्ठा	१३	३३	१९	५०	०२	०५	०८	१८
१७।१८	शतभिषा	१४	२९	२०	३८	०२	४५	०८	५०
१८।१९	पूभा	१४	५४	२०	५६	०२	५७	०८	५६
१९।२०	उभा	१४	५३	२०	४९	०२	४४	०८	३७
२०।२१	रेवती	१४	२९	२०	१९	०२	०९	०७	५७
२१।२२	अश्वि	१३	४४	१९	३०	०१	१५	०६	५९
२२।२३	भरणी	१२	४२	१८	२५	००	०६	०५	४७
२३।२४	कृतिका	११	२७	१७	०७	२२	४६	०४	२४
२४।२५	रोहिणी	१०	०२	१५	४०	२१	१७	०२	५३
२५।२६	मृगशिर	०८	३०	१४	०६	१९	४२	०१	१८
२६	आर्द्रा	०६	५४	१२	३०	१८	०६	२३	४२
२७	पुनर्वसु	०५	१९	१०	५६	१६	३३	२२	१०
२८	पुष्य	०३	४८	०९	२७	१५	०६	२०	४६
२९	श्ले	०२	२७	०८	०९	१३	५२	१९	३६
३०	मघा	०१	२२	०७	०८	१२	५६	१८	४६
३१	पूफा	००	३७	०६	३०	१२	२४	१८	२१

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
सितम्बर २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	उफा	००	१९	०६	१९	१२	२१	१८	२६
२	हस्त	००	३२	०६	४१	१२	५२	१९	०६
३	चित्रा	०१	२१	०७	३९	१४	००	२०	२२
४	स्वाती	०२	४७	०९	१४	१५	४३	२२	१५
५।६	विशाखा	०४	४८	११	२३	१८	००	००	३८
६।७	अनुराधा	०७	१८	१३	५९	२०	४१	०३	२४
७।८	ज्येष्ठा	१०	०८	१६	५२	२३	३७	०६	२२
८।९	मूल	१३	०६	१९	५०	०२	३३	०९	१६
९।१०	पूषा	१५	५८	२२	३८	०५	१७	११	५५
१०।११	उषा	१८	३०	०१	०४	०७	३६	१४	०६
११।१२	श्रवण	२०	३३	०२	५८	०९	२१	१५	४१
१२।१३	धनिष्ठा	२१	५९	०४	१५	१०	२८	१६	३८
१३।१४	शतभिषा	२२	४६	०४	५२	१०	५५	१६	५६
१४।१५	पूभा	२२	५५	०४	५१	१०	४६	१६	३८
१५।१६	उभा	२२	२८	०४	१७	१०	०४	१५	५०
१६।१७	रेवती	२१	३३	०३	१६	०८	५७	१४	३८
१७।१८	अश्वि	२०	१७	०१	५५	०७	३३	१३	०९
१८।१९	भरणी	१८	४६	००	२१	०५	५७	११	३२
१९।२०	कृतिका	१७	०७	२२	४२	०४	१७	०९	५२
२०।२१	रोहिणी	१५	२८	२१	०३	०२	३९	०८	१६
२१।२२	मृगशिर	१३	५२	१९	३०	०१	०७	०६	४६
२२।२३	आर्द्रा	१२	२५	१८	०५	२३	४५	०५	२७
२३।२४	पुनर्वसु	११	०९	१६	५२	२२	३५	०४	२०
२४।२५	पुष्य	१०	०५	१५	५१	२१	३९	०३	२७
२५।२६	आश्लेषा	०९	१६	१५	०६	२०	५७	०२	४९
२६।२७	मघा	०८	४२	१४	३६	२०	३२	०२	२८
२७।२८	पूफा	०८	२६	१४	२५	२०	२५	०२	२७
२८।२९	उफा	०८	३०	१४	३४	२०	४०	०२	४७
२९।३०	हस्त	०८	५६	१५	०७	२१	२०	०३	३४
३०।०१	चित्रा	०९	४९	१६	०७	२२	२७	०४	४८

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण अक्टू. २००८	नक्षत्र	१ घं.	१ मि.	२ घं.	२ मि.	३ घं.	३ मि.	४ घं.	४ मि.
१।२	स्वाती	११	११	१७	३६	००	०३	०६	३२
२।३	विशाखा	१३	०३	१९	३६	०२	१०	०८	४६
३।४	अनुराधा	१५	२३	२२	०२	०४	४३	११	२५
४।५	ज्येष्ठा	१८	०७	००	५१	०७	३६	१४	२१
५।६	मूल	२१	०६	०३	५२	१०	३८	१७	२३
७	पूषा	००	०८	०६	५२	१३	३६	२०	१८
८	उषा	०२	५८	०९	३८	१६	१५	२२	५०
९।१०	श्रवण	०५	२३	११	५४	१८	२२	००	४८
१०।११	धनिष्ठा	०७	११	१३	३१	१९	३८	०२	०२
११।१२	शतभिषा	०८	१४	१४	१२	२०	२७	०२	३०
१२।१३	पूभा	०८	२९	१४	२५	२०	१९	०२	१०
१३।१४	उभा	०७	५९	१३	४५	१९	२८	०१	०९
१४	रेवती	०६	४८	१२	२५	१८	००	२३	३४
१५	अश्वि	०५	०६	१०	३६	१६	०५	२१	३४
१६	भरणी	०३	०१	०८	२७	१३	५३	१९	१९
१७	कृतिका	००	४४	०६	०९	११	३४	१६	५९
१७।१८	रोहिणी	२२	२५	०३	५१	०९	१७	१४	४९
१८।१९	मृगशिर	२०	१३	०१	४२	०७	१२	१२	४३
१९।२०	आर्द्रा	१८	१५	२३	४९	०५	२४	११	०१
२०।२१	पुनर्वसु	१६	३९	२२	१९	०४	००	०९	४२
२१।२२	पुष्य	१५	२७	२१	१३	०३	०१	०८	५०
२२।२३	आश्लेषा	१४	४१	२०	३४	०२	२८	०८	२४
२३।२४	मघा	१४	२१	२०	२०	०२	२१	०८	२३
२४।२५	पूफा	१४	२६	२०	२१	०२	३८	०८	४६
२५।२६	उफा	१४	५५	२१	०५	०३	१७	०९	३१
२६।२७	हस्त	१५	४६	२२	०२	०४	१९	१०	३८
२७।२८	चित्रा	१६	५८	२३	२०	०५	४३	१२	०७
२८।२९	स्वाती	१८	३३	०१	००	०७	२९	१३	५९
२९।३०	विशाखा	२०	३१	०३	०४	०९	३८	१६	१४
३०।३१	अनु	२२	५१	०५	२१	१२	०९	१८	५०

नक्षत्र चरण नवम्बर २००८	नक्षत्र	१ घं.	१ मि.	२ घं.	२ मि.	३ घं.	३ मि.	४ घं.	४ मि.
१	ज्येष्ठा	०१	३२	०८	१५	१४	५९	२१	४४
२।३	मूल	०४	३०	११	१६	१८	०३	००	५०
३।४	पूषा	०७	३७	१४	२४	२१	१०	०३	५६
४।५	उषा	१०	४१	१७	२५	०	०९	०६	५०
५।६	श्रवण	१३	३०	२०	०८	०२	४४	०९	१८
६।७	धनिष्ठा	१५	४९	२२	१८	०४	४४	११	०७
७।८	शतभिषा	१७	२८	२३	४५	०५	५९	१२	०९
८।९	पूभा	१८	१७	००	२१	०६	२२	१२	१९
९।१०	उभा	१८	१४	००	०५	०५	५३	११	३८
१०।११	रेवती	१७	२०	२३	००	०४	३६	१०	११
११।१२	अश्वि	१५	४२	२१	१२	०२	४०	०८	०५
१२।१३	भरणी	१३	२९	१८	५१	००	१३	०५	३२
१३।१४	कृतिका	१०	५१	१६	०९	२१	२७	०२	४३
१४	रोहिणी	०८	००	१३	१७	१८	३३	२३	५०
१५	मृगशिर	०५	०८	१०	२६	१५	४५	२१	४०
१६	आर्द्रा	०२	२५	०७	४७	१३	११	१८	३६
१७	पुनर्वसु	००	०२	०५	३१	११	०१	१६	३३
१७।१८	पुष्य	२२	०७	०३	४४	०९	२२	१५	०३
१८।१९	आश्लेषा	२०	४६	०२	३१	०८	१९	१४	०९
१९।२०	मघा	२०	०१	०१	५६	०७	५३	१३	५२
२०।२१	पूफा	१९	५४	०१	५७	०८	०३	१४	११
२१।२२	उफा	२०	२२	०२	३४	०८	४८	१५	०४
२२।२३	हस्त	२१	२१	०३	४१	१०	०२	१६	२५
२३।२४	चित्रा	२२	४९	०५	१५	११	४२	१८	११
२५	स्वाती	००	४१	०७	१२	१३	४४	२०	१८
२६	विशाखा	०२	५३	०९	२९	१६	०६	२२	४३
२७।२८	अनुराधा	०५	२२	१२	०२	१८	४३	०१	२५
२८।२९	ज्ये	०८	०८	१४	५१	२१	३५	०४	२०
२९।३०	मूल	११	०५	१७	५१	००	३८	०७	२४
३०।१	पूषा	१४	११	२०	५८	०३	४५	१०	३२

नक्षत्र चरण दिसम्बर २००८	नक्षत्र	१ घं.	१ मि.	२ घं.	२ मि.	३ घं.	३ मि.	४ घं.	४ मि.
१।२	उषा	१७	१८	००	०४	०६	४९	१३	३४
२।३	श्रवण	२०	१८	०३	००	०९	४१	१६	२१
३।४	धनिष्ठा	२२	५९	०५	३५	१२	०८	१८	४०
५	शतभिषा	०१	०९	०७	३६	१४	००	२०	२१
६	पूभा	०२	४०	०८	५५	१५	०७	२१	१६
७	उभा	०३	२२	०९	२५	१५	२४	२१	२१
८	रेवती	०३	१४	०९	०४	१४	५०	२०	३४
९	अश्वि	०२	१५	०७	५३	१३	२८	१९	०१
१०	भरणी	००	३१	०५	५९	११	२४	१६	४८
१०।११	कृतिका	२२	१०	०३	३०	०८	४८	१४	०६
११।१२	रोहिणी	१९	२२	००	३७	०५	५१	११	०५
१२।१३	मृगशिर	१६	१८	२१	३२	०२	४५	०७	५८
१३।१४	आर्द्रा	१३	११	१८	२५	२३	४०	०४	५६
१४।१५	पुनर्वसु	१०	१२	१५	३०	२०	४९	०२	१०
१५	पुष्य	०७	३२	१२	५६	१८	२३	२३	५१
१६	आश्लेषा	०५	२१	१०	५३	१६	२८	२२	०६
१७	मघा	०३	४६	०९	२९	१५	१४	२१	०२
१८	पूफा	०२	५३	०८	४६	१४	४३	२०	४२
१९	उफा	०२	४४	०८	४८	१४	५६	२१	०६
२०	हस्त	०३	१८	०९	३४	१५	५१	२२	११
२१	चित्रा	०४	३४	१०	५८	१७	२५	२३	५३
२२।२३	स्वाती	०६	२३	१२	५६	१९	२९	०२	०५
२३।२४	विशाखा	०८	४१	१५	१९	२१	५८	०४	३९
२४।२५	अनुराधा	११	२०	१८	०२	००	४५	०७	२९
२५।२६	ज्येष्ठा	१४	१३	२०	५७	०३	४३	१०	२८
२६।२७	मूल	१७	१४	००	००	०६	४६	१३	३२
२७।२८	पूषा	२०	१८	०३	०४	०९	५०	१६	३५
२८।२९	उषा	२३	२०	०६	०५	१२	४८	१९	३२
३०	श्रवण	०२	१४	०८	५६	१५	३७	२२	१६
३१।१	धनि	०४	५५	११	३२	१८	०८	००	४२

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
जनवरी २००९	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१ । २	शतभिषा	०७	१४	१३	४५	२०	१४	०२	४०
२ । ३	पूभा	०९	०५	१५	२७	२१	४८	०४	०५
३ । ४	उभा	१०	२०	१६	३३	२२	४३	०४	५०
४ । ५	रेवती	१०	५५	१६	५६	२२	५६	०४	५२
५ । ६	अश्वि	१०	४५	१६	३६	२२	२४	०४	१०
६ । ७	भरणी	०९	५२	१५	३३	२१	१०	०२	४६
७ । ८	कृतिका	०८	१९	१३	५०	१९	१९	००	४६
८	रोहिणी	०६	११	११	३५	१६	५७	२२	१८
९	मृगशिरा	०३	३७	०८	५६	१४	१३	१९	३०
१०	आर्द्रा	००	४६	०६	०२	११	१७	१६	३३
१० । ११	पुनर्वसु	२१	४९	०३	०४	०८	२१	१३	३८
११ । १२	पुष्य	१८	५५	००	१४	०५	३४	१०	५४
१२ । १३	आश्लेषा	१६	१७	२१	४१	०३	०६	०८	५४
१३ । १४	मघा	१४	०३	१९	३५	०१	०९	०६	४५
१४ । १५	पूफा	१२	२४	१८	०५	२३	४९	०५	३६
१५ । १६	उफा	११	२५	१७	१७	२३	१३	०५	११
१६ । १७	हस्त	११	१२	१७	१६	२३	२३	०५	३३
१७ । १८	चित्रा	११	४६	१८	०२	००	२१	०६	४२
१८ । १९	स्वाती	१३	०६	१९	३३	०२	०२	०८	३३
१९ । २०	विशाखा	१५	०६	२१	४१	०४	१८	१०	५७
२० । २१	अनुराधा	१७	३८	००	१९	०७	०२	१३	४६
२१ । २२	ज्येष्ठा	२०	३१	०३	१६	१०	०२	१६	४९
२२ । २३	मूल	२३	३५	०६	२२	१३	०८	१९	५५
२४	पूषा	०२	४१	०९	२६	१६	१२	२२	५६
२५ । २६	उषा	०५	४०	१२	२३	१९	०४	०१	४५
२६ । २७	श्रवण	०८	२५	१५	०४	२१	४२	०४	१८
२७ । २८	धनिष्ठा	१०	५३	१७	२७	२३	५९	०६	३०
२८ । २९	शत	१२	५९	१९	२७	०१	५३	०८	१७
२९ । ३०	पूभा	१४	४०	२०	०१	०३	२१	०९	३९
३० । ३१	उभा	१५	५४	२२	०८	०४	२१	१०	२१
३१ । १	रेवती	१६	३९	२२	४६	०४	५०	१०	५३

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
फरवरी २००९	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१ । २	अश्विनी	१६	५४	२२	५२	०४	४९	१०	४३
२ । ३	भरणी	१६	३६	२२	२७	०४	१६	१०	०२
३ । ४	कृतिका	१५	४७	२१	३१	०३	१२	०८	५१
४ । ५	रोहिणी	१४	२९	२०	०६	०१	४०	०७	१३
५ । ६	मृगशिरा	१२	४५	१८	१६	२३	४५	०५	१३
६ । ७	आर्द्रा	१०	४०	१६	०६	२१	३२	०२	५६
७ । ८	पुनर्वसु	०८	२१	१३	४४	१९	०८	००	३१
८	पुष्य	०५	५४	११	१७	१६	४१	२२	०४
९	आश्लेषा	०३	२९	०८	५४	१४	२०	१९	४६
१०	मघा	०१	१४	०६	४३	१२	१४	१७	४६
१० । ११	पूफा	२३	१९	०४	५५	१०	३२	१६	११
११ । १२	उफा	२१	५३	०३	३७	०९	२३	१५	१२
१२ । १३	हस्त	२१	०३	०२	५७	०८	५४	१४	५३
१३ । १४	चित्रा	२०	५६	०३	०१	०९	०९	१५	२०
१४ । १५	स्वाती	२१	३५	०३	५१	१०	११	१६	३४
१५ । १६	विशाखा	२२	५९	०५	२७	११	५७	१८	३०
१७	अनुराधा	०१	०५	०७	४२	१४	२१	२१	०१
१८	ज्येष्ठा	०३	४३	१०	२६	१७	११	२३	५६
१९ । २०	मूल	०६	४२	१३	२९	२०	१६	०३	०२
२० । २१	पूषा	०९	४९	१६	३५	२३	२१	०६	०६
२१ । २२	उषा	१२	५०	१९	३३	०२	१५	०८	५५
२२ । २३	श्रवण	१५	३४	२२	१२	०४	४८	११	२२
२३ । २४	धनिष्ठा	१७	५४	००	२५	०६	५४	१३	२१
२४ । २५	शतभिषा	१९	४६	०२	००	०८	३०	१४	४९
२५ । २६	पूभा	२१	०६	०३	२२	०९	३६	१५	४८
२६ । २७	उभा	२१	५८	०४	०६	१०	१३	१६	१९
२७ । २८	रेवती	२२	२२	०४	२४	१०	२५	१६	२४
२८ । १	अश्विनी	२२	२२	०४	१८	१०	१३	१६	०७

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
मार्च २००९	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१ । २	भरणी	२२	००	०३	५१	०९	४२	१५	३१
२ । ३	कृतिका	२१	१९	०३	०६	०८	५२	१४	३७
३ । ४	रोहिणी	२०	२१	०२	०३	०७	४७	१३	२८
४ । ५	मृगशिरा	१९	०९	००	४९	०६	२८	१२	०६
५ । ६	आर्द्रा	१७	४४	२३	२१	०४	५७	१०	३३
६ । ७	पुनर्वसु	१६	०९	२१	४४	०३	१८	०८	५२
७ । ८	पुष्य	१४	२६	२०	००	०१	३४	०७	०८
८ । ९	आश्लेषा	१२	४२	१८	१५	२३	५०	०५	२४
९ । १०	मघा	१०	५९	१६	३५	२२	११	०३	४८
१०. ११	पूफा	०९	२५	१५	०४	२०	४४	०२	२५
११ । १२	उफा	०८	०८	१३	०२	१९	३७	०१	२५
१२ । १३	हस्त	०७	१४	१३	०५	१८	५८	००	५३
१३ । १४	चित्रा	०६	५१	१२	५१	१८	५३	००	५८
१४ । १५	स्वाती	०७	०५	१३	१५	१९	२८	०१	४३
१५ । १६	विशाखा	०८	०१	१४	२१	२०	४५	०३	१०
१६ । १७	अनुराधा	०९	३८	१६	०९	२२	४२	०५	१७
१७ । १८	ज्येष्ठा	११	५४	१८	३३	०१	१३	०७	५६
१८ । १९	मूल	१४	३९	२१	२४	०४	०९	१०	५५
१९ । २०	पूषा	१७	४१	००	२८	०७	१४	१४	००
२० । २१	उषा	२०	४५	०३	३०	१०	१४	१६	५६
२१ । २२	श्रवण	२३	३७	०६	१६	१२	५४	१९	२९
२३	धनिष्ठा	०२	०३	०८	३४	१५	०३	२१	३०
२४	शतभिषा	०३	५४	१०	१६	१६	३५	२२	५२
२५	पूभा	०५	०७	११	१९	१७	२९	२३	३६
२६	उभा	०५	४१	११	४४	१७	४५	२३	४४

सन् २००८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६५ वि.

अप्रैल	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१								
२								
३								
४								
५								
६								
७	०६ ०४	२० ०५	०७ ००	२० ३९	०६ ०१	१९ २७	०६ ४१	१९. ४८
८	०६ ४९	२१ १७	०७ ४९	२१ ४८	०६ ५२	२० ३५	०७ ३४	२० ५४
९	०७ ४२	२२ २७	०८ ४५	२२ ५७	०७ ४८	२१ ४३	०८ ३३	२२ ००
१०	०८ ४२	२३ ३१	०९ ४६	- -	०८ ५०	२२ ४७	०९ ३६	२३ ०४
११	०९ ४७	- -	१० ५०	०० ०१	०९ ५४	२३ ४५	१० ३९	- -
१२	१० ५४	०० २७	११ ५५	०० ५८	१० ५८	- -	११ ४२	०० ०३
१३	१२ ००	०१ १४	१२ ५८	०१ ४७	१२ ००	०० ३६	१२ ४०	०० ५६
१४	१३ ०२	०१ ५४	१३ ५७	०२ २९	१२ ५७	०१ २०	१३ ३५	०१ ४३
१५	१४ ०१	०२ २८	१४ ५३	०३ ०७	१३ ५१	०२ ००	१४ २७	०२ २४
१६	१४ ५८	०२ ५९	१५ ४६	०३ ४१	१४ ४३	०२ ३५	१५ १५	०३ ०३
१७	१५ ५३	०३ २७	१६ ३८	०४ १३	१५ ३३	०३ ०९	१६ ०३	०३ ३९
१८	१६ ४८	०३ ५५	१७ २९	०४ ४४	१६ २३	०३ ४२	१६ ५०	०४ १५
१९	१७ ४३	०४ २४	१८ २१	०५ १६	१७ १३	०४ १५	१७ ३७	०४ ५१
२०	१८ ३८	०४ ५५	१९ १४	०५ ४९	१८ ०४	०४ ५०	१८ २६	०५ २९
२१	१९ ३५	०५ २८	२० ०७	०६ २५	१८ ५६	०५ २८	१९ १६	०६ ०८
२२	२० ३१	०६ ०५	२१ ०२	०७ ०५	१९ ४९	०६ ०९	२० ०७	०६ ५१
२३	२१ २६	०६ ४७	२१ ५५	०७ ४९	२० ४२	०६ ५३	२० ५९	०७ ३८
२४	२२ १८	०७ ३४	२२ ४७	०८ ३७	२१ ३४	०७ ४२	२१ ५१	०८ २७
२५	२३ ०७	०८ २६	२३ ३७	०९ २९	२२ २४	०८ ३४	२२ ४१	०९ १८
२६	२३ ५१	०९ २१	- -	१० २३	२३ १०	०९ २७	२३ २९	१० ११
२७	- -	१० १९	०० २२	११ १९	२३ ५३	१० २२	- -	११ ०४
२८	०० ३०	११ १८	०१ ०३	१२ १५	- -	११ १७	०० १४	११ ५७
२९	०१ ०५	१२ १८	०१ ४२	१३ १२	०० ३३	१२ ११	०० ५६	१२ ४९
३०	०१ ३९	१३ १८	०२ १८	१४ ०८	०१ ११	१३ ०६	०१ ३७	१३ ४१

मई	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०२ १०	१४ १९	०२ ५३	१५ ०६	०१ ४९	१४ ०२	०२ १७	१४ ३३
२	०२ ४३	१५ २२	०३ २९	१६ ०६	०२ २६	१४ ५९	०२ ५८	१५ २८
३	०३ १६	१६ २९	०४ ०७	१७ ०८	०३ ०६	१६ ००	०३ ४०	१६ २५
४	०३ ५४	१७ ३९	०४ ४८	१८ १५	०३ ४९	१७ ०५	०४ २७	१७ २७
५	०४ ३७	१८ ५३	०५ ३५	१९ २५	०४ ३७	१८ १३	०५ १९	१८ ३३
६	०५ २८	२० ०७	०६ २९	२० ३७	०५ ३३	१९ २३	०६ १६	१९ ४१
७	०६ २७	२१ १६	०७ ३०	२१ ४६	०६ ३४	२० ३२	०७ १९	२० ४९
८	०७ ३३	२२ १८	०८ ३६	२२ ४८	०७ ४०	२१ ३५	०८ २५	२१ ५२
९	०८ ४२	२३ ०९	०९ ४४	२३ ४२	०८ ४७	२२ ३०	०९ ३१	२२ ४९
१०	०९ ५०	२३ ५३	१० ४९	- -	०९ ५१	२३ १८	१० ३३	२३ ३९
११	१० ५५	- -	११ ५१	०० २७	१० ५१	२३ ५९	११ ३०	
१२	११ ५६	०० २९	१२ ४८	०१ ०७	११ ४७		१२ २३	०० २४
१३	१२ ५४	०१ ०१	१३ ४३	०१ ४२	१२ ४०	०० ३७	१३ १३	०१ ०३
१४	१३ ४९	०१ ३१	१४ ३५	०२ १५	१३ ३०	०१ ११	१४ ०१	०१ ४०
१५	१४ ४३	०१ ५९	१५ २६	०२ ४६	१४ २०	०१ ४४	१४ ४८	०२ १६
१६	१५ ३८	०२ २७	१६ १७	०३ १८	१५ ०९	०२ १७	१५ ३४	०२ ५२
१७	१६ ३३	०२ ५७	१७ ०९	०३ ५०	१६ ००	०२ ५१	१६ २२	०३ २९
१८	१७ २८	०३ २९	१८ ०२	०४ २६	१६ ५१	०३ २८	१७ १२	०४ ०८
१९	१८ २५	०४ ०५	१८ ५६	०५ ०४	१७ ४४	०४ ०७	१८ ०३	०४ ४९
२०	१९ २०	०४ ४५	१९ ५०	०५ ४७	१८ ३७	०४ ५१	१८ ५५	०५ ३४
२१	२० १४	०५ ३१	२० ४३	०६ ३४	१९ ३०	०५ ३८	१९ ४७	०६ २३
२२	२१ ०३	०६ २१	२१ ३३	०७ २४	२० २०	०६ २९	२० ३७	०७ १४
२३	२१ ४८	०७ १६	२२ १९	०८ १८	२१ ०७	०७ २२	२१ २६	०८ ०६
२४	२२ २८	०८ १३	२३ ०१	०९ १३	२१ ५१	०८ १६	२२ ११	०८ ५९
२५	२३ ०५	०९ ११	२३ ४०	१० ०९	२२ ३१	०९ १०	२२ ५३	०९ ५१
२६	२३ ३८	१० ०९	- -	११ ०४	२३ ०९	१० ०४	२३ ३४	१० ४२
२७	- -	११ ०७	०० १६	११ ५९	२३ ४५	१० ५७		११ ३३
२८	०० ०९	१२ ०५	०० ५१	१२ ५४	- -	११ ५१	०० १३	१२ २३
२९	०० ४०	१३ ०६	०१ २५	१३ ५०	०० २१	१२ ४५	०० ५१	१३ १५
३०	०१ १२	१४ ०८	०२ ००	१४ ५०	०० ५८	१३ ४२	०१ ३२	१४ ०९
३१	०१ ४६	१५ १५	०२ ३९	१५ ५३	०१ ३९	१४ ४३	०२ १५	१५ ०७

सन् २००८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६५ वि.

जून	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई		जुलाई	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०२ २६	१६ २६	०३ २२	१७ ००	०२ २३	१५ ४९	०३ ०३	१६ १०	१	०२ ४९	१७ ३८	०३ ५२	१८ ०७	०२ ५६	१६ ५४	०३ ४१	१७ ११
२	०३ १२	१७ ४०	०४ १२	१८ ११	०३ १४	१६ ५८	०३ ५७	१७ १७	२	०३ ५६	१८ ४१	०४ ५९	१९ ११	०४ ०३	१७ ५८	०४ ४८	१८ १६
३	०४ ०७	१८ ५३	०५ ०९	१९ २२	०४ १३	१८ ०८	०४ ५८	१८ २६	३	०५ ०७	१९ ३४	०६ ०९	२० ०७	०५ १२	१८ ५५	०५ ५६	१९ १५
४	०५ ११	२० ००	०६ १४	२० २९	०५ १८	१९ १६	०६ ०३	१९ ३३	४	०६ १९	२० १९	०७ १८	२० ५४	०६ १९	१९ ४५	०७ ०१	२० ०७
५	०६ २०	२० ५८	०७ २३	२१ २९	०६ २७	२० १७	०७ ११	२० ३५	५	०७ २७	२० ५७	०८ २२	२१ ३६	०७ २३	२० २८	०८ ०१	२० ५३
६	०७ ३२	२१ ४६	०८ ३२	२२ २०	०७ ३५	२१ ०९	०८ १७	२१ ३०	६	०८ ३१	२१ ३१	०९ २३	२२ १३	०८ २१	२१ ०७	०८ ५७	२१ ३५
७	०८ ४१	२२ २६	०९ ३८	२३ ०३	०८ ३९	२१ ५५	०९ १९	२२ १८	७	०९ ३२	२२ ०१	१० २०	२२ ४६	०९ १६	२१ ४३	०९ ४९	२२ १३
८	०९ ४५	२३ ०१	१० ३९	२३ ४१	०९ ३८	२२ ३५	१० १६	२३ ०१	८	१० २९	२२ ३०	११ १४	२३ १९	१० ०९	२२ १७	१० ३८	२२ ५०
९	१० ४६	२३ ३२	११ ३६	- -	१० ३४	२३ ११	११ ०८	२३ ४०	९	११ २५	२३ ००	१२ ०६	२३ ५२	११ ००	२२ ५१	११ २६	२३ २७
१०	११ ४३	- -	१२ ३०	०० १५	११ २६	२३ ४५	११ ५७	- -	१०	१२ २१	२३ ३१	१२ ५९	- -	११ ५०	२३ २७	१२ १४	- -
११	१२ ३८	०० ०१	१३ २२	०० ४८	१२ १६	- -	१२ ४५	०० १६	११	१३ १६	- -	१३ ५१	०० २६	१२ ४१	- -	१३ ०३	०० ०५
१२	१३ ३३	०० ३०	१४ १३	०१ १९	१३ ०६	०० १८	१३ ३२	०० ५२	१२	१४ १२	०० ०४	१४ ४५	०१ ०२	१३ ३४	०० ०५	१३ ५३	०० ४५
१३	१४ २८	०० ५९	१५ ०५	०१ ५२	१३ ५६	०० ५२	१४ १९	०१ २९	१३	१५ ०८	०० ४२	१५ ३९	०१ ४२	१४ २७	०० ४६	१४ ४५	०१ २८
१४	१५ २३	०१ ३०	१५ ५७	०२ २६	१४ ४७	०१ २८	१५ ०८	०२ ०७	१४	१६ ०३	०१ २४	१६ ३३	०२ २६	१५ २०	०१ ३१	१५ ३७	०२ १५
१५	१६ १९	०२ ०५	१६ ५१	०३ ०३	१५ ३९	०२ ०६	१५ ५९	०२ ४८	१५	१६ ५६	०२ १२	१७ २५	०३ १५	१६ १२	०२ २०	१६ २९	०३ ०४
१६	१७ १५	०२ ४४	१७ ४५	०३ ४५	१६ ३२	०२ ४९	१६ ५०	०३ ३२	१६	१७ ४४	०३ ०४	१८ १४	०४ ०७	१७ ०१	०३ १२	१७ १९	०३ ५६
१७	१८ ०९	०३ २८	१८ ३८	०४ ३०	१७ २५	०३ ३५	१७ ४२	०४ १९	१७	१८ २८	०४ ०१	१८ ५९	०५ ०२	१७ ४८	०४ ०६	१८ ०७	०४ ५०
१८	१९ ००	०४ १७	१९ २९	०५ २०	१८ १७	०४ २५	१८ ३४	०५ १०	१८	१९ ०६	०४ ५९	१९ ४०	०५ ५८	१८ ३०	०५ ०१	१८ ५१	०५ ४३
१९	१९ ४७	०५ ११	२० १७	०६ १३	१९ ०५	०५ १८	१९ २३	०६ ०२	१९	१९ ४१	०५ ५७	२० १८	०६ ५४	१९ १०	०५ ५५	१९ ३३	०६ ३५
२०	२० २८	०६ ०७	२१ ०१	०७ ०८	१९ ५०	०६ १२	२० ०९	०६ ५५	२०	२० १४	०६ ५६	२० ५३	०७ ४९	१९ ४७	०६ ४९	२० १३	०७ २६
२१	२१ ०६	०७ ०५	२१ ४०	०८ ०४	२० ३१	०७ ०६	२० ५३	०७ ४८	२१	२० ४४	०७ ५४	२१ २७	०८ ४४	२० २२	०७ ४२	२० ५१	०८ १६
२२	२१ ३९	०८ ०३	२२ १७	०८ ५९	२१ ०९	०८ ००	२१ ३३	०८ ३९	२२	२१ १४	०८ ५२	२२ ०१	०९ ३९	२० ५८	०८ ३५	२१ २९	०९ ०६
२३	२२ ११	०९ ०१	२२ ५१	०९ ५४	२१ ४५	०८ ५३	२२ १२	०९ २९	२३	२१ ४५	०९ ५१	२२ ३५	१० ३४	२१ ३४	०९ २८	२२ ०८	०९ ५७
२४	२२ ४१	०९ ५९	२३ २५	१० ४८	२२ २१	०९ ४५	२२ ५०	१० १९	२४	२२ १९	१० ५१	२३ १२	११ ३१	२२ १३	१० २४	२२ ५०	१० ४९
२५	२३ ११	१० ५७	२३ ५९	११ ४३	२२ ५६	१० ३८	२३ २९	११ ०९	२५	२२ ५७	११ ५५	२३ ५४	१२ ३२	२२ ५६	११ २२	२३ ३६	११ ४५
२६	२३ ४४	११ ५७	- -	१२ ३९	२३ ३४	११ ३३	- -	१२ ००	२६	२३ ४२	१३ ०२	- -	१३ ३६	२३ ४५	१२. २४	- -	१२ ४५
२७	- -	१२ ५९	०० ३५	१३ ३८	- -	१२ ३०	०० ०९	१२ ५५	२७	- -	१४ १२	०० ४२	१४ ४३	- -	१३ ३०	०० २८	१३ ४८
२८	०० १९	१४ ०६	०१ १४	१४ ४२	०० १५	१३ ३१	०० ५३	१३ ५३	२८	०० ३५	१५ २०	०१ ३७	१५ ५०	०० ४१	१४ ३६	०१ २६	१४ ५३
२९	०१ ०१	१५ १७	०१ ५९	१५ ४९	०१ ०२	१४ ३७	०१ ४३	१४ ५६	२९	०१ ३६	१६ २४	०२ ४०	१६ ५४	०१ ४४	१५ ४१	०२ २९	१५ ५८
३०	०१ ५०	१६ २९	०२ ५२	१६ ५९	०१ ५५	१५ ४५	०२ ३९	१६ ०३	३०	०२ ४४	१७ २१	०३ ४७	१७ ५२	०२ ५१	१६ ४०	०३ ३५	१६ ५९
									३१	०३ ५५	१८ १०	०४ ५६	१८ ४३	०३ ५८	१७ ३३	०४ ४२	१७ ५४

सन् २००८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६५ वि.

अगस्त	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०५ ०५	१८ ५१	०६ ०३	१९ २८	०५ ०३	१८ १९	०५ ४४	१८ ४३
२	०६ १२	१९ २६	०७ ०६	२० ०७	०६ ०५	१९ ०१	०६ ४२	१९ २७
३	०७ १५	१९ ५९	०८ ०५	२० ४३	०७ ०२	१९ ३८	०७ ३६	२० ०७
४	०८ १५	२० २९	०९ ०१	२१ १६	०७ ५७	२० १४	०८ २८	२० ४६
५	०९ १३	२० ५९	०९ ५६	२१ ४९	०८ ५०	२० ४९	०९ १८	२१ २३
६	१० १०	२१ ३०	१० ४९	२२ २३	०९ ४१	२१ २४	१० ०७	२२ ०२
७	११ ०६	२२ ०३	११ ४३	२२ ५९	१० ३३	२२ ०२	१० ५६	२२ ४१
८	१२ ०३	२२ ३९	१२ ३७	२३ ३८	११ २६	२२ ४२	११ ४६	२३ २४
९	१३ ००	२३ २०	१३ ३१	- -	१२ १९	२३ २५	१२ ३७	- -
१०	१३ ५५	- -	१४ २५	०० २१	१३ १२	- -	१३ २९	०० ०९
११	१४ ४९	०० ०५	१५ १८	०१ ०८	१४ ०५	०० १३	१४ २१	०० ५७
१२	१५ ३९	०० ५६	१६ ०८	०१ ५९	१४ ५५	०१ ०४	१५ १२	०१ ४९
१३	१६ २४	०१ ५१	१६ ५५	०२ ५३	१५ ४३	०१ ५७	१६ ०१	०२ ४२
१४	१७ ०५	०२ ४९	१७ ३८	०३ ४९	१६ २७	०२ ५२	१६ ४७	०३ ३५
१५	१७ ४२	०३ ४८	१८ १७	०४ ४६	१७ ०८	०३ ४७	१७ ३०	०४ २८
१६	१८ १५	०४ ४७	१८ ५४	०५ ४२	१७ ४६	०४ ४२	१८ ११	०५ २०
१७	१८ ४६	०५ ४६	१९ २८	०६ ३७	१८ २३	०५ ३६	१८ ५०	०६ ११
१८	१९ १७	०६ ४५	२० ०२	०७ ३३	१८ ५९	०६ ३०	१९ २९	०७ ०२
१९	१९ ४८	०७ ४४	२० ३७	०८ २९	१९ ३५	०७ २४	२० ०९	०७ ५३
२०	२० २१	०८ ४५	२१ १४	०९ २६	२० १३	०८ १९	२० ५०	०८ ४६
२१	२० ५८	०९ ४९	२१ ५४	१० २६	२० ५५	०९ १७	२१ ३५	०९ ४१
२२	२१ ४०	१० ५४	२२ ३९	११ २९	२१ ४२	१० १८	२२ २४	१० ३९
२३	२२ २९	१२ ०२	२३ ३१	१२ ३४	२२ ३५	११ २१	२३ १९	११ ४०
२४	२३ २६	१३ १०	- -	१३ ४०	२३ ३४	१२ २६	- -	१२ ४४
२५	- -	१४ १४	०० ३०	१४ ४४	- -	१३ ३०	०० १९	१३ ४७
२६	०० ३०	१५ १२	०१ ३४	१५ ४२	०० ३८	१४ ३०	०१ २३	१४ ४८
२७	०१ ३९	१६ ०२	०२ ४०	१६ ३५	०१ ४३	१५ २४	०२ २७	१५ ४३
२८	०२ ४७	१६ ४५	०३ ४६	१७ २१	०२ ४८	१६ १२	०३ २९	१६ ३४
२९	०३ ५४	१७ २३	०४ ५०	१८ ०१	०३ ५०	१६ ५४	०४ २८	१७ १९
३०	०४ ५८	१७ ५६	०५ ५०	१८ ३८	०४ ४८	१७ ३३	०५ २४	१८ ०१
३१	०५ ५९	१८ २७	०६ ४७	१९ १३	०५ ४४	१८ ०९	०६ १६	१८ ४०

सितम्बर	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०६ ५९	१८ ५७	०७ ४३	१९ ४६	०६ ३७	१८ ४५	०७ ०७	१९ १८
२	०७ ५६	१९ २८	०८ ३७	२० २०	०७ ३०	१९ २०	०७ ५७	१९ ५७
३	०८ ५४	२० ०१	०९ ३१	२० ५६	०८ २३	१९ ५७	०८ ४७	२० ३६
४	०९ ५१	२० ३६	१० २६	२१ ३४	०९ १६	२० ३७	०९ ३७	२१ १८
५	१० ४९	२१ १५	११ २१	२२ १५	१० ०९	२१ १९	१० २८	२२ ०२
६	११ ४५	२१ ५९	१२ १५	२३ ०१	११ ०३	२२ ०५	११ २०	२२ ५०
७	१२ ३९	२२ ४७	१३ ०९	२३ ५०	११ ५६	२२ ५५	१२ १३	२३ ४०
८	१३ ३१	२३ ४०	१४ ००	- -	१२ ४७	२३ ४७	१३ ०४	- -
९	१४ १८	- -	१४ ४८	०० ४३	१३ ३५	- -	१३ ५३	०० ३२
१०	१५ ००	०० ३७	१५ ३२	०१ ३८	१४ २१	०० ४१	१४ ४०	०१ २५
११	१५ ३८	०१ ३५	१६ १३	०२ ३४	१५ ०३	०१ ३६	१५ २४	०२ १८
१२	१६ १३	०२ ३४	१६ ५०	०३ ३०	१५ ४२	०२ ३१	१६ ०६	०३ १०
१३	१६ ४५	०३ ३३	१७ २६	०४ २६	१६ २०	०३ २५	१६ ४६	०४ ०२
१४	१७ १७	०४ ३३	१८ ०१	०५ २२	१६ ५६	०४ २०	१७ २६	०४ ५३
१५	१७ ४८	०५ ३३	१८ ३६	०६ १९	१७ ३३	०५ १४	१८ ०६	०५ ४५
१६	१८ २२	०६ ३५	१९ १३	०७ १७	१८ १२	०६ १०	१८ ४७	०६ ३८
१७	१८ ५८	०७ ३९	१९ ५३	०८ १७	१८ ५३	०७ ०९	१९ ३२	०७ ३४
१८	१९ ३९	०८ ४५	२० ३७	०९ २१	१९ ४०	०८ १०	२० २१	०८ ३२
१९	२० २७	०९ ५४	२१ २८	१० २६	२० ३१	०९ १४	२१ १५	०९ ३४
२०	२१ २२	११ ०२	२२ २५	११ ३३	२१ २९	१० १९	२२ १४	१० ३७
२१	२२ २३	१२ ०८	२३ २७	१२ ३७	२२ ३१	११ २४	२३ १६	११ ४१
२२	२३ ३०	१३ ०७	- -	१३ ३७	२३ ३५	१२ २४	- -	१२ ४२
२३	- -	१३ ५९	०० ३२	१४ ३१	- -	१३ १९	०० १९	१३ ३८
२४	०० ३७	१४ ४३	०१ ३७	१५ १८	०० ३९	१४ ०८	०१ २१	१४ २९
२५	०१ ४३	१५ २१	०२ ३९	१५ ५९	०१ ४०	१४ ५१	०२ १९	१५ १५
२६	०२ ४६	१५ ५५	०३ ३९	१६ ३६	०२ ३८	१५ ३०	०३ १५	१५ ५७
२७	०३ ४७	१६ २७	०४ ३७	१७ ११	०३ ३४	१६ ०७	०४ ०७	१६ ३६
२८	०४ ४६	१६ ५७	०५ ३२	१७ ४४	०४ २७	१६ ४२	०४ ५८	१७ १४
२९	०५ ४४	१७ २७	०६ २६	१८ १८	०५ २०	१७ १७	०५ ४८	१७ ५३
३०	०६ ४१	१७ ५९	०७ २०	१८ ५३	०६ १२	१७ ५४	०६ ३७	१८ ३२

सन् २००८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६५ वि.

अक्टूबर	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०७ ३९	१८ ३३	०८ १५	१९ ३०	०७ ०५	१८ ३२	०७ २८	१९ १३
२	०८ ३७	१९ ११	०९ १०	२० १०	०७ ५९	१९ १४	०८ १९	१९ ५६
३	०९ ३४	१९ ५३	१० ०५	२० ५५	०८ ५३	१९ ५९	०९ ११	२० ४३
४	१० २९	२० ४०	१० ५९	२१ ४२	०९ ४६	२० ४७	१० ०४	२१ ३२
५	११ २२	२१ ३१	११ ५१	२२ ३४	१० ३८	२१ ३८	१० ५५	२२ २३
६	१२ १०	२२ २५	१२ ४०	२३ २७	११ २७	२२ ३१	११ ४५	२३ १५
७	१२ ५४	२३ २२	१३ २५	- -	१२ १४	२३ २५	१२ ३२	- -
८	१३ ३३	- -	१४ ०७	०० २२	१२ ५७	- -	१३ १७	०० ०७
९	१४ ०९	०० २०	१४ ४५	०१ १७	१३ ३६	०० १९	१३ ५९	०० ५९
१०	१४ ४२	०१ १८	१५ २१	०२ १२	१४ १४	०१ १२	१४ ३९	०१ ५०
११	१५ १४	०२ १७	१५ ५६	०३ ०८	१४ ५१	०२ ०६	१५ १९	०२ ४१
१२	१५ ४५	०३ १६	१६ ३१	०४ ०४	१५ २८	०३ ००	१५ ५९	०३ ३३
१३	१६ १८	०४ १७	१७ ०७	०५ ०२	१६ ०६	०३ ५६	१६ ४०	०४ २५
१४	१६ ५४	०५ २१	१७ ४७	०६ ०२	१६ ४७	०४ ५४	१७ २४	०५ २०
१५	१७ ३४	०६ २८	१८ ३०	०७ ०५	१७ ३२	०५ ५५	१८ १२	०६ १९
१६	१८ २०	०७ ३८	१९ २०	०८ १२	१८ २३	०७ ००	१९ ०६	०७ २१
१७	१९ १४	०८ ४९	२० १७	०९ २१	१९ २१	०८ ०७	२० ०५	०८ २६
१८	२० १६	०९ ५८	२१ १९	१० २८	२० २३	०९ १४	२१ ०८	०९ ३२
१९	२१ २२	११ ०१	२२ २५	११ ३१	२१ २८	१० १८	२२ १३	१० ३५
२०	२२ ३०	११ ५६	२३ ३०	१२ २७	२२ ३३	११ १५	२३ १५	११ ३४
२१	२३ ३६	१२ ४३	- -	१३ १६	२३ ३५	१२ ०६	- -	१२ २७
२२	- -	१३ २२	०० ३४	१३ ५९	- -	१२ ५०	०० १५	१३ १४
२३	०० ४०	१३ ५७	०१ ३४	१४ ३७	०० ३३	१३ ३०	०१ ११	१३ ५६
२४	०१ ४०	१४ २९	०२ ३१	१५ १२	०१ २९	१४ ०७	०२ ०३	१४ ३६
२५	०२ ३९	१४ ५९	०३ २६	१५ ४५	०२ २२	१४ ४२	०२ ५३	१५ १३
२६	०३ ३६	१५ २८	०४ १९	१६ १८	०३ १४	१५ १७	०३ ४२	१५ ५१
२७	०४ ३२	१५ ५९	०५ १३	१६ ५२	०४ ०५	१५ ५२	०४ ३१	१६ २९
२८	०५ २९	१६ ३२	०६ ०६	१७ २८	०४ ५७	१६ ३०	०५ २१	१७ ०९
२९	०६ २७	१७ ०९	०७ ०१	१८ ०७	०५ ५०	१७ १०	०६ १२	१७ ५२
३०	०७ २४	१७ ४९	०७ ५६	१८ ५०	०६ ४४	१७ ५४	०७ ०३	१८ ३७
३१	०८ २०	१८ ३४	०८ ५१	१९ ३७	०७ ३८	१८ ४१	०७ ५६	१९ २५

नवम्बर	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०९ १४	१९ २४	०९ ४३	२० २७	०८ ३०	१९ ३१	०८ ४८	२० १६
२	१० ०४	२० १७	१० ३३	२१ १९	०९ २१	२० २३	०९ ३८	२१ ०७
३	१० ४९	२१ १२	११ २०	२२ १३	१० ०८	२१ १६	१० २६	२१ ५९
४	११ २९	२२ ०९	१२ ०२	२३ ०७	१० ५१	२२ ०९	११ ११	२२ ५०
५	१२ ०६	२३ ०५	१२ ४१	- -	११ ३१	२३ ०२	११ ५३	२३ ४०
६	१२ ३९	- -	१३ १७	०० ०१	१२ ०९	२३ ५४	१२ ३३	- -
७	१३ १०	०० ०२	१३ ५१	०० ५५	१२ ४५	- -	१३ १२	०० ३०
८	१३ ४१	०१ ००	१४ २५	०१ ४९	१३ २१	०० ४६	१३ ५०	०१ २०
९	१४ १२	०१ ५९	१५ ००	०२ ४४	१३ ५८	०१ ४०	१४ ३०	०२ १०
१०	१४ ४६	०३ ००	१५ ३७	०३ ४२	१४ ३७	०२ ३६	१५ १२	०३ ०३
११	१५ २४	०४ ०५	१६ १९	०४ ४४	१५ २०	०३ ३५	१५ ५८	०४ ००
१२	१६ ०८	०५ १४	१७ ०६	०५ ४९	१६ ०९	०४ ३९	१६ ५०	०५ ०१
१३	१७ ००	०६ २६	१८ ०१	०६ ५९	१७ ०५	०५ ४६	१७ ४८	०६ ०६
१४	१८ ००	०७ ३९	१९ ०३	०८ ०९	१८ ०७	०६ ५६	१८ ५२	०७ १३
१५	१९ ०८	०८ ४७	२० १०	०९ १७	१९ १४	०८ ०३	१९ ५९	०८ २१
१६	२० १८	०९ ४७	२१ १९	१० १८	२० २२	०९ ०६	२१ ०५	०९ २४
१७	२१ २७	१० ३८	२२ २५	११ ११	२१ २७	१० ००	२२ ०८	१० २१
१८	२२ ३३	११ २१	२३ २८	११ ५७	२२ २८	१० ४८	२३ ०६	११ ११
१९	२३ ३५	११ ५८	- -	१२ ३७	२३ २५	११ ३०	- -	११ ५५
२०	- -	१२ ३१	०० २६	१३ १३	- -	१२ ०८	०० ००	१२ ३६
२१	०० ३४	१३ ०१	०१ २२	१३ ४७	०० १८	१२ ४४	०० ५१	१३ १४
२२	०१ ३१	१३ ३१	०२ १६	१४ २०	०१ १०	१३ १८	०१ ४०	१३ ५२
२३	०२ २७	१४ ०१	०३ ०८	१४ ५३	०२ ०२	१३ ५३	०२ २८	१४ २९
२४	०३ २३	१४ ३३	०४ ०१	१५ २८	०२ ५३	१४ ३०	०३ १७	१५ ०८
२५	०४ २०	१५ ०८	०४ ५५	१६ ०६	०३ ४५	१५ ०९	०४ ०७	१५ ४९
२६	०५ १७	१५ ४७	०५ ५०	१६ ४७	०४ ३८	१५ ५१	०४ ५८	१६ ३४
२७	०६ १३	१६ ३१	०६ ४४	१७ ३३	०५ ३२	१६ ३७	०५ ५०	१७ २२
२८	०७ ०८	१७ १९	०७ ३८	१८ २२	०६ २५	१७ २६	०६ ४२	१८ ११
२९	०७ ५९	१८ ११	०८ २९	१९ १३	०७ १६	१८ १८	०७ ३३	१९ ०२
३०	०८ ४६	१९ ०६	०९ १६	२० ०७	०८ ०४	१९ १०	०८ २२	१९ ५४

२२३
सन २००८-२००९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६५ वि.

सन् २००८-२००९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६५ वि.

दिसम्बर	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई		जनवरी	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	सन् ई.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
२००८	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	२००९	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१	०९ २७	२० ०२	०९ ५९	२१ ०१	०८ ४८	२० ०३	०९ ०८	२० ४५	१	०९ ४१	२१ ३८	१० २३	२२ २६	०९ १८	२१ २३	०९ ४५	२१ ५६
२	१० ०५	२० ५८	१० ३९	२१ ५४	०९ २९	२० ५५	०९ ५०	२१ ३५	२	१० १०	२२ ३४	१० ५५	२३ १९	०९ ५२	२२ १४	१० २२	२२ ४४
३	१० ३८	२१ ५३	११ १५	२२ ४७	१० ०७	२१ ४६	१० ३०	२२ २३	३	१० ४०	२३ ३२	११ २८	- -	१० २६	२३ ०७	१० ५९	२३ ३४
४	११ ०९	२२ ४९	११ ४९	२३ ३९	१० ४३	२२ ३७	११ ०९	२३ १२	४	११ १२	- -	१२ ०४	०० १४	११ ०३	- -	११ ३९	- -
५	११ ३९	२३ ४५	१२ २२	- -	११ १७	२३ २८	११ ४६	- -	५	११ ४८	०० ३३	१२ ४३	०१ ११	११ ४४	०० ०२	१२ २३	०० २७
६	१२ ०९	- -	१२ ५५	०० ३२	११ ५२	- -	१२ २३	०० ००	६	१२ २९	०१ ३८	१३ २८	०२ १३	१२ ३०	०१ ०२	१३ १२	०१ २४
७	१२ ४१	०० ४३	१३ ३०	०१ २७	१२ २९	०० २१	१३ ०३	०० ५०	७	१३ १९	०२ ४६	१४ २०	०३ १९	१३ २४	०२ ०६	१४ ०७	०२ २६
८	१३ १५	०१ ४४	१४ ०८	०२ २५	१३ ०८	०१ १७	१३ ४६	०१ ४३	८	१४ १८	०३ ५६	१५ २१	०४ २७	१४ २५	०३ १३	१५ १०	०३ ३१
९	१३ ५५	०२ ४९	१४ ५२	०३ २६	१३ ५३	०२ १६	१४ ३३	०२ ४०	९	१५ २६	०५ ०५	१६ २९	०५ ३४	१५ ३२	०४ २१	१६ १७	०४ ३८
१०	१४ ४२	०३ ५९	१५ ४२	०४ ३२	१४ ४५	०३ २१	१५ २७	०३ ४२	१०	१६ ३८	०६ ०७	१७ ४०	०६ ३८	१६ ४२	०५ २५	१७ २६	०५ ४३
११	१५ ३८	०५ ११	१६ ४०	०५ ४२	१५ ४४	०४ २९	१६ २८	०४ ४८	११	१७ ५२	०७ ००	१८ ५०	०७ ३४	१७ ५१	०६ २२	१८ ३२	०६ ४३
१२	१६ ४३	०६ २२	१७ ४६	०६ ५२	१६ ५०	०५ ३९	१७ ३५	०५ ५६	१२	१९ ०२	०७ ४६	१९ ५७	०८ २२	१८ ५६	०७ १३	१९ ३४	०७ ३६
१३	१७ ५४	०७ २९	१८ ५७	०७ ५९	१८ ००	०६ ४६	१८ ४४	०७ ०३	१३	२० ०९	०८ २५	२० ५९	०९ ०५	१९ ५७	०७ ५८	२० ३२	०८ २३
१४	१९ ०७	०८ २६	२० ०७	०८ ५८	१९ ०९	०७ ४६	१९ ५१	०८ ०५	१४	२१ ११	०९ ००	२१ ५८	०९ ४३	२० ५४	०८ ३८	२१ २६	०९ ०७
१५	२० १८	०९ १४	२१ १४	०९ ४९	२० १४	०८ ३९	२० ५४	०९ ०१	१५	२२ ११	०९ ३२	२२ ५५	१० १९	२१ ४९	०९ १६	२२ १८	०९ ४७
१६	२१ २४	०९ ५५	२२ १६	१० ३३	२१ १५	०९ २५	२१ ५१	०९ ४९	१६	२३ १०	१० ०३	२३ ५०	१० ५३	२२ ४२	०९ ५२	२३ ०८	१० २६
१७	२२ २६	१० ३१	२३ १५	११ १२	२२ १२	१० ०६	२२ ४५	१० ३३	१७	- -	१० ३५	- -	११ २८	२३ ३५	१० २९	२३ ५८	११ ०६
१८	२३ २५	११ ०३	- -	११ ४७	२३ ०६	१० ४३	२३ ३६	११ १३	१८	०० ०७	११ ०९	०० ४४	१२ ०५	- -	११ ०७	- -	११ ४६
१९	- -	११ ३३	०० १०	१२ २१	२३ ५८	११ १९	- -	११ ५१	१९	०१ ०५	११ ४५	०१ ३९	१२ ४४	०० २८	११ ४७	०० ४९	१२ २९
२०	०० २२	१२ ०३	०१ ०४	१२ ५४	- -	११ ५४	०० २५	१२ २९	२०	०२ ०२	१२ २६	०२ ३३	१३ २७	०१ २२	१२ ३१	०१ ४१	१३ १४
२१	०१ १९	१२ ३५	०१ ५७	१३ २९	०० ४९	१२ ३०	०१ १४	१३ ०८	२१	०२ ५७	१३ ११	०३ २७	१४ १३	०२ १५	१३ १८	०२ ३३	१४ ०२
२२	०२ १५	१३ ०९	०२ ५१	१४ ०६	०१ ४१	१३ ०८	०२ ०४	१३ ४८	२२	०३ ५०	१४ ०१	०४ २०	१५ ०३	०३ ०७	१४ ०८	०३ २४	१४ ५२
२३	०३ १२	१३ ४६	०३ ४५	१४ ४६	०२ ३४	१३ ४९	०२ ५४	१४ ३१	२३	०४ ४०	१४ ५४	०५ १०	१५ ५६	०३ ५७	१५ ००	०४ १५	१५ ४४
२४	०४ ०८	१४ २८	०४ ३९	१५ ३०	०३ २७	१४ ३४	०३ ४६	१५ १८	२४	०५ २५	१५ ५०	०५ ५६	१६ ५०	०४ ४४	१५ ५३	०५ ०२	१६ ३६
२५	०५ ०३	१५ १५	०५ ३३	१६ १७	०४ २०	१५ २२	०४ ३८	१६ ०६	२५	०६ ०५	१६ ४६	०६ ३८	१७ ४४	०५ २७	१६ ४६	०५ ४७	१७ २७
२६	०५ ५५	१६ ०६	०६ २५	१७ ०९	०५ १२	१६ १३	०५ २९	१६ ५७	२६	०६ ४१	१७ ४३	०७ १७	१८ ३८	०६ ०७	१७ ३९	०६ २९	१८ १७
२७	०६ ४३	१७ ००	०७ १३	१८ ०२	०६ ०१	१७ ०६	०६ १९	१७ ४९	२७	०७ १४	१८ ३९	०७ ५२	१९ ३१	०६ ४५	१८ ३०	०७ ०९	१९ ०६
२८	०७ २७	१७ ५६	०७ ५८	१८ ५६	०६ ४७	१७ ५९	०७ ०५	१८ ४१	२८	०७ ४५	१९ ३४	०८ २५	२० २३	०७ २०	१९ २०	०७ ४७	१९ ५४
२९	०८ ०५	१८ ५२	०८ ३९	१९ ५०	०७ २९	१८ ५१	०७ ४९	१९ ३१	२९	०८ १४	२० ३०	०८ ५८	२१ १६	०७ ५४	२० ११	०८ २३	२० ४२
३०	०८ ४०	१९ ४८	०९ १६	२० ४२	०८ ०७	१९ ४३	०८ ३०	२० २०	३०	०८ ४३	२१ २७	०९ ३१	२२ ०९	०८ २८	२१ ०३	०९ ००	२१ ३१
३१	०९ ११	२० ४३	०९ ५०	२१ ३५	०८ ४३	२० ३३	०९ ०८	२१ ०८	३१	०९ १४	२२ २५	१० ०५	२३ ०५	०९ ०४	२१ ५७	०९ ३९	२२ २२

सन् २००९ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६५ वि.

फरवरी	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००९	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०९ ४८	२३ २७	१० ४१	- -	०९ ४२	२२ ५३	१० २०	२३ १६
२	१० २६	- -	११ २३	०० ०३	१० २५	२३ ५४	११ ०६	- -
३	११ १०	०० ३२	१२ ११	०१ ०६	११ १४	- -	११ ५७	०० १४
४	१२ ०३	०१ ३९	१३ ०६	०२ १०	१२ ०९	०० ५७	१२ ५४	०१ १६
५	१३ ०५	०२ ४६	१४ ०८	०३ १६	१३ १२	०२ ०२	१३ ५७	०२ २०
६	१४ १३	०३ ४९	१५ १५	०४ १९	१४ १९	०३ ०६	१५ ०३	०३ २४
७	१५ २५	०४ ४५	१६ २५	०५ १७	१५ २७	०४ ०५	१६ ०९	०४ २४
८	१६ ३६	०५ ३४	१७ ३३	०६ ०९	१६ ३३	०४ ५८	१७ १३	०५ २०
९	१७ ४५	०६ १६	१८ ३८	०६ ५४	१७ ३७	०५ ४६	१८ १३	०६ १०
१०	१८ ५१	०६ ५३	१९ ४०	०७ ३५	१८ ३६	०६ २९	१९ १०	०६ ५६
११	१९ ५४	०७ २७	२० ३९	०८ १२	१९ ३४	०७ ०८	२० ०४	०७ ३८
१२	२० ५४	०८ ००	२१ ३६	०८ ४८	२० २९	०७ ४६	२० ५६	०८ १९
१३	२१ ५४	०८ ३२	२२ ३२	०९ २४	२१ २४	०८ २४	२१ ४८	०९ ००
१४	२२ ५३	०९ ०६	२३ २८	१० ०१	२२ १८	०९ ०२	२२ ४०	०९ ४१
१५	२३ ५२	०९ ४२	- -	१० ४०	२३ १३	०९ ४३	२३ ३३	१० २३
१६	- -	१० २२	०० २४	११ २२	- -	१० २६	- -	११ ०८
१७	०० ४९	११ ०६	०१ १९	१२ ०८	०० ०७	११ १२	०० २५	११ ५६
१८	०१ ४३	११ ५४	०२ १३	१२ ५७	०१ ००	१२ ०१	०१ १७	१२ ४६
१९	०२ ३४	१२ ४६	०३ ०४	१३ ४९	०१ ५१	१२ ५३	०२ ०८	१३ ३७
२०	०३ २१	१३ ४१	०३ ५१	१४ ४२	०२ ३९	१३ ४६	०२ ५७	१४ २९
२१	०४ ०३	१४ ३७	०४ ३५	१५ ३६	०३ २४	१४ ३९	०३ ४३	१५ २१
२२	०४ ४१	१५ ३४	०५ १५	१६ ३१	०४ ०५	१५ ३२	०४ २६	१६ ११
२३	०५ १५	१६ ३१	०५ ५२	१७ २४	०४ ४४	१६ २४	०५ ०७	१७ ०१
२४	०५ ४६	१७ २७	०६ २६	१८ १७	०५ २०	१७ १५	०५ ४६	१७ ४९
२५	०६ १६	१८ २३	०६ ५९	१९ १०	०५ ५५	१८ ०६	०६ २३	१८ ३८
२६	०६ ४६	१९ २१	०७ ३२	२० ०४	०६ २९	१८ ५९	०७ ०१	१९ २७
२७	०७ १७	२० २०	०८ ०६	२१ ००	०७ ०५	१९ ५२	०७ ३९	२० १९
२८	०७ ५०	२१ २१	०८ ४३	२१ ५८	०७ ४३	२० ४९	०८ २०	२१ १२

मार्च	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००९	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०८ २७	२२ २५	०९ २३	२२ ५९	०८ २५	२१ ४८	०९ ०४	२२ ०९
२	०९ ०९	२३ ३१	१० ०८	- -	०९ ११	२२ ५०	०९ ५३	२३ ०९
३	०९ ५८	- -	११ ००	०० ०३	१० ०४	२३ ५३	१० ४८	- -
४	१० ५५	०० ३७	११ ५८	०१ ०७	११ ०२	- -	११ ४७	०० ११
५	११ ५९	०१ ३९	१३ ०२	०२ ०९	१२ ०६	०० ५६	१२ ५०	०१ १३
६	१३ ०७	०२ ३६	१४ ०८	०३ ०७	१३ ११	०१ ५५	१३ ५४	०२ १३
७	१४ १७	०३ २६	१५ १५	०३ ५९	१४ १६	०२ ४८	१४ ५७	०३ ०९
८	१५ २५	०४ ०९	१६ १९	०४ ४६	१५ १९	०३ ३७	१५ ५७	०३ ५९
९	१६ ३१	०४ ४८	१७ २१	०५ २७	१६ १९	०४ २०	१६ ५४	०४ ४६
१०	१७ ३४	०५ २३	१८ २१	०६ ०६	१७ १७	०५ ०१	१७ ४९	०५ २९
११	१८ ३६	०५ ५६	१९ १९	०६ ४२	१८ १३	०५ ३९	१८ ४२	०६ ११
१२	१९ ३७	०६ २८	२० १७	०७ १८	१९ ०९	०६ १७	१९ ३५	०६ ५२
१३	२० ३७	०७ ०२	२१ १४	०७ ५५	२० ०५	०६ ५६	२० २८	०७ ३३
१४	२१ ३७	०७ ३८	२२ ११	०८ ३४	२१ ००	०७ ३६	२१ २१	०८ १६
१५	२२ ३६	०८ १७	२३ ०८	०९ १६	२१ ५६	०८ १९	२२ १५	०९ ०१
१६	२३ ३३	०९ ००	- -	१० ०१	२२ ५०	०९ ०५	२३ ०८	०९ ४८
१७	- -	०९ ४७	०० ०३	१० ४९	२३ ४३	०९ ५३	- -	१० ३८
१८	०० २६	१० ३८	०० ५६	११ ४०	- -	१० ४४	०० ००	११ २९
१९	०१ १५	११ ३१	०१ ४५	१२ ३३	०० ३२	११ ३७	०० ५०	१२ २१
२०	०१ ५८	१२ २७	०२ ३०	१३ २७	०१ १८	१२ ३०	०१ ३७	१३ १२
२१	०२ ३८	१३ २३	०३ ११	१४ २१	०२ ०१	१३ २२	०२ २१	१४ ०३
२२	०३ १३	१४ २०	०३ ४९	१५ १४	०२ ४०	१४ १४	०३ ०३	१४ ५२
२३	०३ ४५	१५ १६	०४ २४	१६ ०७	०३ १७	१५ ०६	०३ ४२	१५ ४१
२४	०४ १६	१६ १२	०४ ५८	१७ ०१	०३ ५२	१५ ५८	०४ २०	१६ ३०
२५	०४ ४६	१७ १०	०५ ३१	१७ ५५	०४ २८	१६ ५०	०४ ५८	१७ २०
२६	०५ १७	१८ ०९	०६ ०५	१८ ५१	०५ ०३	१७ ४४	०५ ३६	१८ ११

दशम. = दशमलव   उ. = उत्तर   द = दक्षिण

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टे.टा.) संवत् २०६५ वि.

ता.	अप्रैल २००८ ई.			मई २००८ ई.			जून २००८ ई.			जुलाई २००८ ई.			ता.
	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. क.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	
१				द१५.१२७०	द. ६.६१९९	उ. १.३४०१	उ.२२.०७६८	उ.१६.२६१६	उ. ४.७२६८	उ.२३.०९७२	उ.२६.७१६३	उ. ४.८२५९	१
२				१५.४२६९	०.२७४०	२.४५७०	२२.२०८४	२१.४२२१	५.०१५६	२३.०२५५	२७.५२८६	४.१८४४	२
३				१५.७२२५	उ. ६.२९५५	३.४६०८	२२.३३३५	२५.२५३५	४.९५८७	२२.९४७०	२६.३०००	३.२४३७	३
४				१६.०१३८	१२.७२९०	४.२६८७	२२.४५२०	२७.२८१७	४.५४८५	२२.८६१९	२३.२१६०	२.११११	४
५				१६.३००७	१८.५७४२	४.८०२५	२२.५६४१	२७.२४६४	३.८१८०	२२.७७०२	१८.६९६५	०.८५१४	५
६				१६.५८३०	२३.३१२३	५.००४८	२२.६६९५	२५.२१४८	२.८३५१	२२.६७१९	१३.२३७८	द. ०.४२९१	६
७	उ. ६.८९०५	उ१५.४१६२	उ. ४.५३४२	१६.८६०७	२६.४४२२	४.८५२३	२२.७६८३	२१.५४०७	१.६८८६	२२.५६७०	७.२११३	१.६४६८	७
८	७.२६५४	२०.८३८९	४.९८२९	१७.१३३८	२७.६१९८	४.३६२२	२२.८६०४	१६.७०६६	०.४७०७	२२.४५५६	१.२२५७	२.७३७४	८
९	७.६३८२	२४.९२४२	५.०११३	१७.४०२०	२६.७८२६	३.५८६९	२२.९४५१	११.१७५१	द. ०.७३६३	२२.३३७७	द. ४.७१९७	३.६५५९	९
१०	८.००८८	२७.२८११	४.८५८८	१७.६६५४	२४.१५९६	२.६०११	२३.०२४५	५.३२०७	१.८६६०	२२.२१३५	१०.३०८७	४.३७४२	१०
११	८.३७७२	२७.७४६९	४.३१६८	१७.९२३८	२०.१५६४	१.४८६७	२३.०९६४	द. ०.५७८५	२.८६९०	२२.०८२८	१५.३८०३	४.८७५८	११
१२	८.७४३१	२६.३५३७	३.५२०२	१८.१७७२	१५.२१०२	०.३११२	२३.१६१६	६.२९५८	३.७०९३	२१.९४५९	१९.७७५५	५.१५३०	१२
१३	९.१०६६	२३.३७५३	२.५३५८	१८.४२५५	९.७०२०	द. ०.८२८२	२३.२१९९	११.६६६५	४.३६१९	२१.८०२७	२३.३३४७	५.२०४१	१३
१४	९.४६७६	१९.१७८९	१.४३३३	१८.६६८५	३.९३३५	१.९०६२	२३.२७१४	१६.५२२६	४.८१०१	२१.६५३४	२५.८९६३	५.०३२०	१४
१५	९.८२५१	१४.१३६८	०.२७९७	१८.९०६३	द. १.८५८६	२.८६८२	२३.३१६०	२०.६९७३	५.०४३४	२१.४९७८	२७.३१२५	४.६४४१	१५
१६	१०.१८१४	८.५७६४	द ०.८६३६	१९.१३८७	७.४७७९	३.६७८६	२३.३५३९	२४.०१६०	५.०५७२	२१.३३६३	२७.४७४९	४.०५३२	१६
१७	१०.५३४१	२.७७१६	१.९४२३	१९.३६५८	१२.७८५५	४.३१००	२३.३८४८	२६.३०५६	४.८५२८	२१.१६८७	२६.३४३३	३.२७८६	१७
१८	१०.८८३९	द ३.०६५२	२.९०११	१९.५८७३	१७.४८३६	४.७४२३	२३.४०८९	२७.४१८२	४.४३७७	२०.९९५१	२३.९६०४	२.३४७५	१८
१९	११.२३०७	८.६६७३	३.७२४०	१९.८०३३	२१.५०८१	४.९६२३	२३.४२६२	२७.२६२०	३.८२६५	२०.८१५७	२०.४४६०	१.२९५२	१९
२०	११.५७४४	१३.८११०	४.३५८८	२०.०१३७	२४.६३२५	४.९६४६	२३.४३६५	२५.८२५३	३.०४१२	२०.६३०४	१५.९७५३	०.१६५३	२०
२१	११.९१४१	१८.५४७५	४.७८८६	२०.२१८४	२६.६८३६	४.७५०९	२३.४४००	२३.१८०५	२.११११	२०.४३९३	१०.७५३७	उ. ०.९९१३	२१
२२	१२.२५२२	२२.४११२	५.००२८	२०.४१७४	२७.५२७७	४.३३०४	२३.४३६६	१९.४६५९	१.०७२०	२०.२४२५	५.०००४	२.११८२	२२
२३	१२.५८६२	२५.३३६२	४.९९६९	२०.६१०६	२७.०९६९	३.७१९३	२३.४२६३	१४.८५८७	उ ०.०३४०	२०.०४०१	उ. १.०५७१	३.१५५८	२३
२४	१२.९१६७	२७.१३२३	४.७७४६	२०.७९७८	२५.४०३२	२.९३९७	२३.४०९१	९.५५१२	१.१५९५	१९.८३२१	७.१७६०	४.०४३६	२४
२५	१३.२४३७	२७.६९४४	४.३८५८	२०.९७९२	२२.५३१७	२.०१९३	२३.३८५१	३.७४२२	२.२५१७	१९.६१८५	१३.०८३९	४.७२३५	२५
२६	१३.५६७१	२६.९१२०	३.७२५७	२१.१५४५	१८.६१८५	०.९९१३	२३.३५४२	उ २.३५८९	३.२५२९	१९.३९९५	१८.४६०८	५.१४३३	२६
२७	१३.८८६९	२४.१८५०	२.९३४२	२१.३२३७	१३.८२६४	उ. ०.१०५३	२३.३१६५	८.५१३८	४.१०१८	१९.१७५१	२२.९२९९	५.२६११	२७
२८	१४.२०२८	२१.८२५९	१.९९६३	२१.४८६९	८.३३११	१.२२८५	२३.२७१९	१४.४३०४	४.७३५३	१८.९४५४	२६.०७८६	५.०५५०	२८
२९	१४.५१४९	१७.५१०७	द ०.९४३२	२१.६४३८	२.३२२७	२.३१२८	२३.२२०४	१९.७३९६	५.०१४४	१८.७१०४	२७.५३०४	४.५२२०	२९
३०	उ१४.८२३०	द१२.४६४९	उ ०.१२५८	२१.७९४५	उ. ३.९७८०	३.३०६२	उ.२३.१६२२	उ.२३.९९३५	उ. ५.१३२४	१८.४७०३	२७.०६२६	३.६९०२	३०
३१				उ२१.९३८८	उ१०.२९३७	उ. ४.१३५३				उ.१८.२२५२	उ.२४.७०४६	उ. २.६१६०	३१

दशम. = दशमलव
उ. = उत्तर
द = दक्षिण

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टे.टा.) संवत् २०६५ वि.

	अगस्त २००८ ई.			सितम्बर २००८ ई.			अक्टूबर २००८ ई.			नवम्बर २००८ ई.			
ता.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. क.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	ता.
१	उ.१७.९७५१	उ.२०.७३६६	उ. १.३७९५	उ. ८.२२११	द. ०.१९९९	द. ३.०१४०	द. ३.२४७५	द.१५.१२७८	द. ४.८०२१	द.१४.४७७७	द.२६.६७८३	द. ४.४०५५	१
२	१७.७२०१	१५.५८९८	०.०७३४	७.८५६९	६.२३९७	३.९०९४	३.६३५०	१९.६४४९	५.०५६२	१४.७९५५	२७.१४३४	३.८२२१	२
३	१७.४६०३	९.७२४९	द. १.२०९९	७.४९०७	११.८७४७	४.५८४३	४.०२१९	२३.२५३४	५.०७२९	१५.१०९३	२६.३६३१	३.०७५७	३
४	१७.१९५७	३.५५२९	२.३९०५	७.१२२४	१६.८९५१	५.०२१५	४.४०८०	२५.७९५३	४.८६३०	१५.४१९०	२४.३९२५	२.१९५१	४
५	१६.९२६६	द. २.५९३३	३.४०८०	६.७५२३	२१.११८५	५.२१७१	४.७९३१	२७.१५२७	४.४४३४	१५.७२४४	२१.३३७४	१.२११५	५
६	१६.६५२९	८.४५३७	४.२२२३	६.३८०३	२४.३८२७	५.१७६८	५.१७७३	२७.२६१४	३.८३५०	१६.०२५५	१७.३३२०	०.१५९१	६
७	१६.३७४८	१३.८२१७	४.८१०९	६.००६७	२६.५४८०	४.९१२३	५.५६०३	२६.११७८	३.०६१२	१६.३२२१	१२.५२३४	उ. ०.९२३४	७
८	१६.०९२२	१८.५२२३	५.१६४३	५.६३१३	२७.५०६५	४.४३८९	५.९४२१	२३.७७६६	२.१४८०	१६.६१४१	७.०६८३०	१.९९०५	८
९	१५.८०५५	२२.३९५४	५.२८२२	५.२५४५	२७.१९७६	३.७७४८	.६.३२२६	२०.३३८६	१.१२५२	१६.९०१४	१.१४३५०	२.९८८३	९
१०	१५.५१४५	२५.२८८८	५.१७०३	४.८७६२	२५.६१९५	२.९४१५	६.७०१७	१५.९३७२	०.०२८६	१७.१८३९	उ.५.०३३७०	३.८५३७	१०
११	१५.२१९४	२७.०६२३	४.८३७९	४.४९६६	२२.८३२४	१.९६५१	७.०७९२	१०.७३०७	उ. १.०९७५	१७.४६१६	११.१७८१	४.५१८४	११
१२	१४.९२०३	२७.६०५८	४.२९८१	४.११५७	१८.९५१६	०.८७९५	७.४५५१	४.९०५३	२.१९८३	१७.७३४२	१६.९१५२	४.९१५६	१२
१३	१४.६१७२	२६.८६१४	३.५६८१	३.७३३६	१४.१३६२	उ. ०.२७२७	७.८२९३	उ. १.३१३४	३.२०९०	१८.००१७	२१.७८११	४.९९३०	१३
१४	१४.३१०३	२४.८४१६	२.६७११	३.३५०४	८.५८१४	१.४३७९	८.२०१७	७.६४४२	४.०५७६	१८.२६३९	२५.२७३०	४.७२६०	१४
१५	१३.९९९७	२१.६३२७	१.६३८०	२.९६६२	२.५१६६	२.५५२७	८.५७२२	१३.७३७२	४.६७३३	१८.५२०९	२६.९६४६	४.२२६९	१५
१६	१३.६८५३	१७.३८३३	०.५०८८	२.५८११	उ. ३.७९०९	३.५४६६	८.९४०७	१९.१७४९	४.९९७१	१८.७७२५	२६.६५९५	३.२४५३	१६
१७	१३.३६७४	१२.२८६६	उ. ०.६६६८	२.१९५१	१०.०३१६	४.३४९४	९.३०७१	२३.४०१८	४.९९३८	१९.०१८६	२४.४५९१	२.१५८२	१७
१८	१३.०४५९	६.५६५८	१.८३०१	१.८०८४	१५.८५२५	४.८९११	९.६७१३	२६.२९५१	४.६५९५	१९.२५९०	२०.७१२३	०.९५५३	१८
१९	.१२.७२०९	०.४६५६	२.९१६७	१.४२०९	२०.८६५७	५.१५१२	१०.०३३२	२७.२६९२	४.०२२३	१९.४९३७	१५.८६५४	द. ०.२७५७	१९
२०	१२.३९२६	उ. ५.७४८६	३.८६०५	१.०३२९	२४.६७५५	५.०८४२	१०.३९२७	२६.३६५५	३.१३५८	१९.७२२५	१०.३४२६	१.४५८३	२०
२१	१२.०६११	११.७८५७	४.५९९४	०.६४४४	२६.९३५४	४.७०१९	१०.७४९७	२३.७६११	२.०७००	१९.९४५४	४.४९४९	२.५३१२	२१
२२	११.७२६२	१७.३२२३	५.०८१०	०.२५५४	२७.४२६४	४.०३२१	११.१०४०	१९.७९००	०.९००४	२०.१६२२	द. १.३९९९	३.४४७३	२२
२३	११.३८८३	२२.००११	५.२६७३	द. ०.१३३९	२६.१२१९	३.१२२१	११.४५५६	१४.८३५६	द. ०.२९८४	२०.३७२९	७.११४७	४.१७२४	२३
२४	११.०४७३	२५.४४७७	५.१३८४	०.५२३४	२३.११३०	२.०३३८	११.८०४४	९.२५९२	१.४५८१	२०.५७७३	१२.४४९९	४.६८३२	२४
२५	१०.७०३४	२७.३२२१	४.६९५५	०.९१३०	१८.९४७७	०.८३७८	१२.१५०२	३.३७३७	२.५१८९	२०.७७५४	१७.२१५१	४.९६६५	२५
२६	१०.३५६६	२७.४०१९	३.९६२०	१.३०२६	१३.७४९४	द. ०.३९१४	१२.४९२९	द. २.५५२६	३.४३०६	२०.९६७०	२१.२२१८	५.०१८३	२६
२७	१०.००७०	२५.६६०७	२.९८३३	१.६९२२	७.९५७३	१.५८१३	१२.८३२४	८.२८२०	४.१५४०	२१.१५२०	२४.२८८२	४.८४३७	२७
२८	९.६५४८	२२.२८४५	१.८२४०	२.०८१५	१.८९८६	२.६६५४	१३.१६८५	१३.५९३८	४.६६१८	२१.३३०४	२६.२५५९	४.४५५९	२८
२९	९.३०००	१७.६१३४	०.५६२६	२.४७०६	द. ४.१३६०	३.५८८५	१३.५०१३	१८.२७७५	४.९३९१	२१.५०२१	२७.०१६०	३.८७५१	२९
३०	८.९४२७	१२.०५१८	द. ०.७२६५	द. २.८४९३	द. ९.८८८५	द. ४.३०९३	१३.८३०४	२२.२३२९	४.९८२७	द.२१.६६७०	द.२६.४३१३	द. ३.१२७७	३०
३१	उ. ८.५८३०	उ. ५.९९६५	द. १.१३२०				द.१४.१४६०	द.२४.९८०४	द. ४.७९९६				३१

दशम. = दशमलव
उ. = उत्तर

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रात: ५ घं. ३० मि. भा.स्टे.टा.) संवत् २०६५ वि.

द = दक्षिण

ता.	दिसम्बर २००८ ई.			जनवरी २००९ ई.			फरवरी २००९ ई.			मार्च २००९ ई.			ता.
	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. क.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां. अं. दशम.	चं. क्रां. अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	
१	द.२१.८२५०	द.२४.८४३५	द. २.२४४७	द.२३.००८५	द. ९.८४४३	उ. १.८२४०	द.१७.१२१८	उ.११.४८८२	उ. ४.९२४१	द. ७.६१६२	उ.१५.५२८५	उ. ५.११०४	१
२	२१.९७६०	२२.०५९७	१.२६०७	२२.९२२९	४.३९१८	२.८३५०	१६.८३५२	१६.७४१७	५.२३९१	७.२३५३	२०.२४९१	५.१९७०	२
३	२२.१२००	१८.३२६१	०.२१२५	२२.८२९६	उ. १.३३७०	३.७३१६	१६.५४३६	२१.२७८५	५.२६९३	६.८५२८	२३.९४५८	४.९८७६	३
४	२२.२५६८	१३.८०३६	उ. ०.८६०३	२२.७२८८	७.१४८७	४.४६३५	१६.२४७३	२४.७३२७	४.९९३६	६.४६८७	२६.२७९९	४.४८३७	४
५	२२.३८६४	८.६५३२	१.९१५४	२२.६२०५	१२.८१२३	४.९७९९	१५.९४६३	२६.७२४५	४.४०७९	६.०८३१	२६.९७७४	३.७०५७	५
६	२२.५०८८	३.०३७२	२.९०५७	२२.५०४७	१८.०३३४	५.२३२१	१५.६४०८	२६.९४६९	३.५३१५	५.६९६२	२५.९०८१	२.६९३८	६
७	२२.६२३८	उ. २.८६७१	३.७७८९	२२.३८१५	२२.४३४८	५.१७८६	१५.३३०९	२५.२७७७	२.४११६	५.३०८०	२३.१३५२	१.५०७८	७
८	२२.७३१५	८.८४३४	४.४७७०	२२.२५११	२५.५७११	४.७९४३	१५.०१६६	२१.८४४२	१.१२२४	४.९१८७	१८.९०२५	०.२२३५	८
९	२२.८३१७	१४.६०५८	४.९३९३	२२.११३३	२७.००६८	४.०८०२	१४.६९८२	१६.९९०४	द. ०.२४०३	४.५२८४	१३.५७०३	द. १.०७२३	९
१०	२२.९२४४	१९.७७३२	५.१०९१	२१.९६८४	२६.४६०३	३.०७२४	१४.३७५७	११.१७३९	१.४७३३	४.१३७१	७.४८३६	२.२९०७	१०
११	२३.००९६	२३.८७१२	४.९४४९	२१.८१६३	२३.९३७५	१.८४३१	१४.०४९१	४.८६३६	२.७८०९	३.७४५०	१.२१९४	३.३५१६	११
१२	२३.०८७२	२६.३९८३	४.४३३८	२१.६५७२	१९.७४३६	०.४९१४	१३.७१८७	द. १.५२४३	३.७८८०	३.३५२१	द. ५.०४०५	४.१९२७	१२
१३	२३.१५७२	२६.९७०६	३.६०१२	२१.४९११	१४.३६३६	द. ०.८७२६	१३.३८४५	७.६४८७	४.४४७०	२.९५८५	१०.९२०५	४.७७५३	१३
१४	२३.२१९६	२५.४८५६	२.५११७	२१.३१८१	८.३१०८	२.१४७५	१३.०४६७	१३.२३९९	५.०३६१	२.५६४४	१६.१५२८	५.०८४४	१४
१५	२३.२७४३	२२.१७३७	१.२५८९	२१.१३८२	२.०३०८	३.२५३६	१२.७०५२	१८.०८४४	५.२५४६	२.१६९८	२०.५१५४	५.१२५०	१५
१६	२३.३२१२	१७.४८८७	द. ०.०५२५	२०.९५१६	द. ४.१२८५	४.१३८९	१२.३६०३	२२.००९८	५.२१५४	१.७७४८	२३.८३१५	४.९१६१	१६
१७	२३.३६०४	११.९३७९	१.३२५२	२०.७५८३	९.९०४९	४.७७६०	१२.०१२१	२४.८७६०	४.९३९६	१.३७९६	२५.९७३५	४.४८४९	१७
१८	२३.३९१८	५.९६६३	२.४८०६	२०.५५८३	१५.०९५४	५.१५६४	११.६६०७	२६.५७६८	४.४५१९	०.९८४२	२६.८७०३	३.८६२०	१८
१९	२३.४१५३	द. ०.०७९७	३.४६३०	२०.३५१९	१९.५३०८	५.२८४३	११.३०६१	२७.०४९०	३.७७८७	०.५८८७	२६.५१२२	३.०७९२	१९
२०	२३.४३११	५.९३८८	४.२३६९	२०.१३९०	२३.०५९३	५.१७१३	१०.९४८६	२६.२८३४	२.९४८२	०.१९३३	२४.९४९१	२.१६८६	२०
२१	२३.४३८९	११.४०५८	४.७८२५	१९.९१९८	२५.४८३७	४.८३४२	१०.५८८२	२४.३२९५	१.९९०६	उ. ०.२०२०	२२.२७९२	१.१६३२	२१
२२	२३.४३९०	१६.३०३५	५.०९१४	१९.६९४४	२६.८७१२	४.२९२८	१०.२२५१	२१.२९०३	०.९४०४	०.५९७०	१८.६३३५	उ. ०.०९८६	२२
२३	२३.४३११	२०.४६४१	५.१६३५	१९.४६२९	२६.९७३०	३.५७०८	९.८५९३	१७.३०९४	उ. ०.१६२९	०.९९१७	१४.१६३१	०.९८५२	२३
२४	२३.४१५४	२३.७२३२	५.००५६	१९.२२५४	२५.८४३१	२.६९५७	९.४९१०	१२.५५७६	१.२७३९	१.३८५९	९.०३३८	२.०४२२	२४
२५	२३.३९१९	२५.९२७६	४.६३०५	१८.९८१९	२३.५४४८	१.७००४	९.१२०४	७.२२३९	२.३४१८	१.७७९६	द. ३.४२८९	३.०२१०	२५
२६	२३.३६०५	२६.९५६८	४.०५७०	१८.७३२७	२०.२०२७	०.६२३२	८.७४७४	१.५१३०	३.३१२४	उ. २.१७२६	उ. २.४४२३	उ. ३.८६५६	२६
२७	२३.३२१२	२६.७४८९	३.३०९३	१८.४७७८	१५.९८२४	उ. ०.४९२७	८.३७२४	उ. ४.३५२२	४.१३०४				२७
२८	२३.२७४२	२५.३१८८	२.४१७८	१८.२१७३	११.०७१२	१.५९९६	द. ७.९९५२	उ.१०.१२५२	उ. ४.७४४३				२८
२९	२३.२१९४	२२.७५६०	१.४१७६	१७.९५१३	५.६६४२	२.६४७०							२९
३०	२३.१५६८	१९.२०५८	द. ०.३४८३	१७.६८००	उ. ०.०३९६	३.५८३४							३०
३१	द.२३.०८६५	द.१४.८४१७	उ. ०.७४७२	द.१७.४०३५	उ. ५.८३२९	उ. ४.३५८२							३१

दशम. = दशमलव
उ. = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रातः घं. ५ मि. ३० भा.स्टैं. टा.) संवत् २०६५ वि.

द = दक्षिण

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		तारीख
सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	सन् ई.
२००८	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	२००८
अप्रैल ७	उ. २४.९४६५	उ. २.१९७२	उ. १.४५४३	द. १.८४०६	द. २१.८१८०	उ. ०.०२०३	द. ०.९९८३	द. १.४९८३	उ. १२.३८३६	उ. १.८३९४	अप्रैल ७
१०	२४.७५०८	२.१५२१	४.०२४४	१.५२८८	२१.७८११	०.०१४७	उ. ०.४६७४	१.५०३६	१२.६२५०	१.८३५४	१०
१३	२४.५३८५	२.१०७९	६.६९०८	१.१४३७	२१.७४७६	०.००९०	१.९३४३	१.४९९०	१२.४६०८	१.८३११	१३
१६	२४.३०९३	२.०६४४	९.४२०४	०.६९२०	२१.७१७८	०.००३३	३.३९७२	१.४८४४	१२.४९११	१.८२६४	१६
१९	२४.०६२८	२.०२१७	१२.१२२२	०.१८७३	२१.६९१८	द. ०.००२६	४.८५०८	१.४६०१	१२.५१५७	१.८२१४	१९
२२	२३.७९८७	१.९७९७	१४.७४६०	उ. ०.३४८९	२१.६६९७	०.००८६	६.२९०१	१.४२६२	१२.५३४६	१.८१६२	२२
२५	२३.५१६९	१.९३८५	१७.११०४	०.८८६७	२१.६५१८	०.०१४८	७.७०९८	१.३८३१	१२.५४७७	१.८१०८	२५
२८	२३.२१७१	१.८९७९	१९.३६७४	१.३९१७	२१.६३८२	०.०२१०	९.१०६५	१.३३११	१२.५५५०	१.८०५२	२८
मई १	२२.८९९२	१.८५८०	२१.२२०५	१.८२९९	२१.६२९२	०.०२७३	१०.४६९०	१.२७०७	१२.५५६५	१.७९९४	मई १
४	२२.५६२९	१.८१८६	२२.६८४७	२.१७३३	२१.६२४८	०.०३३७	११.७९७६	१.२०२२	१२.५५२२	१.७९३६	४
७	२२.२०८२	१.७७९८	२३.७८५८	२.४०११	२१.६२५१	०.०४०३	१३.०८४९	१.१२६२	१२.५४२०	१.७८७६	७
१०	२१.८३५१	१.७४१५	२४.५३०९	२.४९९३	२१.६३०१	०.०४७०	१४.३२५३	१.०४३२	१२.५२६०	१.७८१५	१०
१३	२१.४४३९	१.७०३७	२४.९४८९	२.४५८८	२१.६३९९	०.०५३८	१५.५१३२	०.९५३७	१२.५०४३	१.७७५४	१३
१६	२१.०३४७	१.६६६४	२५.०७२५	२.२७२५	२१.६५४५	०.०६०८	१६.६४३२	०.८५८२	१२.४७७१	१.७६९३	१६
१९	२०.६०७६	१.६२९६	२४.९३४७	१.९३८८	२१.६७३५	०.०६७८	१७.७१००	०.७५७४	१२.४४४२	१.७६३१	१९
२२	२०.१६२९	१.५९३२	२४.५६६२	१.४५६८	२१.६९७२	०.०७४९	१८.७०८३	०.६५१९	१२.४०५९	१.७५७१	२२
२५	१९.७००८	१.५५७४	२३.९९६९	०.८३५३	२१.७२५२	०.०८२१	१९.६३३०	०.५४२३	१२.३६२२	१.७५११	२५
२८	१९.२२१४	१.५२२९	२३.२५८०	०.०९२४	२१.७५७५	०.०८९४	२०.४७८९	०.४२९४	१२.३१३३	१.७४५१	२८
३१	१८.७२५०	१.४८८७	२२.३८०७	द. ०.७३८८	२१.७९३९	०.०९६७	२१.२४९२	०.३१३९	१२.२५९२	१.७३९३	३१
जून १	१८.५५५७	१.४७५१	२२.०७६६	१.०२०२	२१.८०६८	०.०९९२	२१.४७५९	०.२७४९	१२.२४००	१.७३७४	जून १
४	१८.०३६८	१.४४०४	२१.११२५	१.८९५२	२१.८४८२	०.१०६६	२२.११९५	०.१५७०	१२.१७९१	१.७३१६	४
७	१७.५०१५	१.४०५१	२०.१६००	२.७१३०	२१.८९३०	०.११४२	२२.६६९६	०.०३८२	१२.११३३	१.७२६१	७
१०	१६.९५०३	१.३७१८	१९.३०१३	३.४२५८	२१.९४१०	०.१२१७	२३.१२२८	उ. ०.०८०७	१२.०४२८	१.७२०६	१०
१३	१६.३८३७	१.३३८०	१८.६२५८	३.९८८४	२१.९९१७	०.१२९३	२३.४७४७	०.१९९२	११.९६७६	१.७१५४	१३
१६	१५.८०२०	१.३०८५	१८.१६४४	४.२८२२	२२.०४४६	०.१३६९	२३.७२४३	०.३१६४	११.८८७९	१.७१०३	१६
१९	१५.२०५७	१.२७९२	१७.९०९६	४.४१२८	२२.०९९५	०.१४४५	२३.८६९३	०.४३१७	११.८०३९	१.७०५५	१९
२२	१४.५९५२	१.२३८३	१८.०६३४	४.३५३२	२२.१५५९	०.१५२०	२३.९०८६	०.५४४२	११.७१५७	१.७००८	२२
२५	१३.९७२०	१.२०५५	१८.३९२८	४.१२९२	२२.२१३५	०.१५९५	२३.८४२५	०.६५३३	११.६२३५	१.६९६४	२५
२८	उ. १३.३३३४	उ. १.१७३०	उ. १८.९२६८	द. ३.७८८५	द. २२.२७१९	द. ०.१६७०	उ. २३.६६८२	उ. ०.७५८३	उ. ११.५२७४	उ. १.६९२२	२८

दशम. = दशमलव
उ. = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रातः घं. ५ मि. ३० भा.स्टैं. टा.) संवत् २०६५ वि.

द = दक्षिण

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		तारीख
सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	सन् ई.
२००८	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	२००८
जुलाई १	उ. १२.६८२६	उ. १.१४०६	उ. १९.६१३१	द. ३.२९९०	द. २२.३३०५	द. ०.१७४४	उ. २३.३८९६	उ. ०.८५८४	उ. ११.४२७३	उ. १.६८८२	जुलाई १
४	१२.०१९३	१.१०८३	२०.३१११	२.७४६७	२२.३८९१	०.१८१७	२३.००७२	०.९५३०	११.३२३६	१.६८४५	४
७	११.३४४०	१.०७६२	२१.११२७	२.१३६१	२२.४४७३	०.१८८९	२२.५२३३	१.०४१६	११.२१६५	१.६८१०	७
१०	१०.६५७३	१.०४४३	२१.९४२१	१.४११६	२२.५०४५	०.१९६१	२१.९४०८	१.१२३४	११.१०६१	१.६७७८	१०
१३	९.९५११	१.०१२६	२२.५५५५	०.८३९०	२२.५६०४	०.२०३०	२१.२६३१	१.१९८१	१०.९९२५	१.६७४८	१३
१६	९.२५२२	०.९८१०	२२.९४४७	०.२०६७	२२.६१४८	०.२०९९	२०.४९४०	१.२६५१	१०.८७५९	१.६७२२	१६
१९	८.५३४८	०.९४९६	२३.०२५५	उ. ०.३७५२	२२.६६७४	०.२१६५	१९.६३७७	१.३२३९	१०.७५६५	१.६६९८	१९
२२	७.८०८२	०.९१८२	२२.७३३९	०.८७७३	२२.७१७९	०.२२३०	१८.६९८८	१.३७४०	१०.६३४५	१.६६७७	२२
२५	७.०७२९	०.८८७०	२२.०४११	१.२७६१	२२.७६६२	०.२२९४	१७.६८११	१.४१५१	१०.५१००	१.६६५९	२५
२८	६.३२९४	०.८५५८	२०.९६०६	१.५५८४	२२.८११९	०.२३५५	१६.५९२१	१.४४६७	१०.३८३०	१.६६४४	२८
३१	५.५७८०	०.८२४७	१९.५४०३	१.७११८	२२.८५५०	०.२४१५	१५.४३४६	१.४६८६	१०.२५३८	१.६६३२	३१
अगस्त १	५.३२६०	०.८१४४	१९.००२४	१.७५०९	२२.८६८८	०.२४३५	१५.०३४६	१.४७३७	१०.२१०२	१.६६२९	अगस्त १
४	४.५६५४	०.७८३३	१७.२३१८	१.७६७४	२२.९०८३	०.२४९२	१३.७९५३	१.४८२३	१०.०७८४	१.६६२१	४
७	३.७९८७	०.७५२४	१५.२७६६	१.६८८१	२२.९४४९	०.२५४८	१२.५०१०	१.४८०८	९.९४४७	१.६६१७	७
१०	३.०२६५	०.७२१६	१३.१९४६	१.५२६८	२२.९७८४	०.२६०१	११.१५७३	१.४६९१	९.८०९४	१.६६१५	१०
१३	२.२४९४	०.६९०८	११.०३३७	१.२९६८	२३.००८९	०.२६५२	९.७६९७	१.४४७१	९.६७२७	१.६६१८	१३
१६	१.४६८३	०.६६०१	८.८३१८	१.०१००	२३.०३६५	०.२७०२	८.३४३८	१.४१४८	९.५३४७	१.६६२३	१६
१९	०.६८३६	०.६२९५	६.६१९५	०.६७६८	२३.०६१२	०.२७४९	६.८८४७	१.३७२४	९.३९५७	१.६६३१	१९
२२	द. ०.१०३९	०.५९८९	४.४२१६	०.३०६५	२३.०८२८	०.२७९४	५.३९७९	१.३१९८	९.२५५८	१.६६४३	२२
२५	०.८९४०	०.५६८२	२.२५९०	द. ०.०९२६	२३.१०१४	०.२८३८	३.८८८५	१.२५७२	९.११५०	१.६६५९	२५
२८	१.६८५८	०.५३७६	०.१५०५	०.५१३०	२३.११७२	०.२८८१	२.३६९८	१.१८४९	८.९७३६	१.६६७७	२८
३१	२.४७८५	०.५०७०	द. १.८८५६	०.९४७८	२३.१३०१	०.२९२१	०.८२३२	१.१०३३	८.८३१८	१.६६९९	३१
सितम्बर १	२.७४२८	०.४९६८	२.५४५१	१.०९४६	२३.१३३८	०.२९३४	०.३०८७	१.०७४०	८.७८४५	१.६७०७	सितम्बर १
४	३.५३५५	०.४६६३	४.४५५८	१.५३७४	२३.१४२७	०.२९७३	द. १.२३५०	०.९८०५	८.६४२६	१.६७३४	४
७	४.३२७३	०.४३५८	६.२४७७	१.९७७४	२३.१४८८	०.३००९	२.७८२०	०.८७८६	८.५००७	१.६७६४	७
१०	५.११७३	०.४०५३	७.८९५०	२.४०५८	२३.१५२०	०.३०४५	४.३२०८	०.७६८८	८.३५९०	१.६७९८	१०
१३	५.९०४७	०.३७४९	९.३६५५	२.८११६	२३.१५२४	०.३०७८	५.८४७९	०.६५१६	८.२१७९	१.६८३६	१३
१६	६.६८८६	०.३४४५	१०.६२०४	३.१८०४	२३.१५००	०.३१११	७.३५७९	०.५२७६	८.०७७४	१.६८७७	१६
१९	७.४६८४	०.३१४०	११.५९४२	३.४९२२	२३.१४४६	०.३१४२	८.८४५६	०.३९७४	७.९३७८	१.६९२२	१९
२२	८.२४३४	०.२८३६	१२.२२५७	३.७१८५	२३.१३६५	०.३१७३	१०.३०५६	०.२६१७	७.७९९१	१.६९६९	२२
२५	९.०१२५	०.२५३१	१२.४१४९	३.८२००	२३.१२५४	०.३२०२	११.७३२४	उ. ०.१२११	७.६६१६	१.७०२१	२५
२८	द. ९.७७४९	उ. ०.२२२७	द. १२.०५५४	द. ३.७४४७	द. २३.१११५	द. ०.३२३१	द. १३.१२०३	द. ०.०२३४	उ. ७.५२५६	उ. १.७०७६	२८

दशम. = दशमलव
उ. = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रात: घं. ५ मि. ३० भा.स्टैं. टा.) संवत् २०६५ वि.

द = दक्षिण

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		तारीख
सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	सन् ई.
२००८	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	२००८
अक्टूबर १	द. १०.५२९५	उ. ०.१९२२	द. ११.०५५९	द. ३.४३४९	द. २३.०९४५	द. ०.३२५९	द. १४.४६३४	द. ०.१७१२	उ. ७.३९१३	उ. १.७१३५	अक्टूबर १
४	११.२७५४	०.१६१९	९.४११८	२.८४९३	२३.०७४४	०.३२८६	१५.७५६१	०.३२१२	७.२५८८	१.७१९८	४
७	१२.०११५	०.१३१५	७.२९८६	२.००३८	२३.०५१२	०.३३१३	१६.९९२५	०.४७२७	७.१२८४	१.७२६४	७
१०	१२.७३६७	०.१०१२	५.१०२३	१.०००२	२३.०२४९	०.३३३८	१८.१६६७	०.६२४८	७.०००३	१.७३३४	१०
१३	१३.४५००	०.०७०९	३.२९२८	उ. ०.००१८	२२.९९५४	०.३३६४	१९.२७३२	०.७७६६	६.८७४८	१.७४०८	१३
१६	१४.१५०३	०.०४०७	२.२१५५	०.८५७५	२२.९६२५	०.३३८९	२०.३०६३	०.९२७२	६.७५१९	१.७४८५	१६
१९	१४.८३६८	०.०१०४	१.९८३१	१.४८९५	२२.९२६२	०.३४१४	२१.२६०६	१.०७५६	६.६३१९	१.७५६५	१९
२२	१५.५०८३	द. ०.०१९९	२.५१६१	१.८८६२	२२.८८६५	०.३४३८	२२.१३१२	१.२२१०	६.५१५०	१.७६५०	२२
२५	१६.१६३६	०.०५०१	३.६४०५	२.०७५३	२२.८४३३	०.३४६३	२२.९१२८	१.३६२२	६.४०१५	१.७७३७	२५
२८	१६.८०१६	०.०८०३	५.१६८८	२.०९८४	२२.७९६४	०.३४८७	२३.६००७	१.४९८३	६.२९१५	१.७८२९	२८
३१	१७.४२१०	०.११०३	६.९४०४	१.९९७१	२२.७४५७	०.३५१२	२४.१९०८	१.६२८४	६.१८५३	१.७९२४	३१
नवम्बर १	१७.६२३१	०.१२०३	७.५६३०	१.९४१९	२२.७२८०	०.३५२	२४.३६५०	१.६७०२	६.१५०७	१.७९५६	नवम्बर १
४	१८.२१५८	०.१५०३	९.४७६९	१.७२७५	२२.६७२२	०.३५४४	२४.८१८७	१.७९०६	६.०४९९	१.८०५६	४
७	१८.७८७२	०.१८०२	११.४०४७	१.४५८३	२२.६१२५	०.३५६८	२५.१६६७	१.९०२६	५.९५३४	१.८१५९	७
१०	१९.३३५८	०.२१००	१३.२९४२	१.१५३२	२२.५४८९	०.३५९३	२५.४०६७	२.००५४	५.८६१४	१.८२६५	१०
१३	१९.८६०५	०.२३९७	१५.१०९७	०.८२६०	२२.४८१२	०.३६१७	२५.५३७२	२.०९८१	५.७७४०	१.८३७५	१३
१६	२०.३६०३	०.२६९४	१६.८२६०	०.४८७५	२२.४०९५	०.३६४३	२५.५५७४	२.१७९७	५.६९१३	१.८४८७	१६
१९	२०.८३४०	०.२९८९	१८.४२४१	०.१४५९	२२.३३३६	०.३६६८	२५.४६७५	२.२४९३	५.६१३७	१.८६०२	१९
२२	२१.२८०३	०.३२८३	१९.८८९१	द. ०.१९२०	२२.२५३५	०.३६९४	२५.२६८१	२.३०६१	५.५४१४	१.८७२१	२२
२५	२१.६९७९	०.३५७६	२१.२०८५	०.५२०७	२२.१६९२	०.३७२२	२४.९६०७	२.३४९०	५.४७४५	१.८८४२	२५
२८	२२.०८५८	०.३८६७	२२.३७०९	०.८३५१	२२.०८०४	०.३७४७	२४.५४७५	२.३७७४	५.४१३२	१.८९६६	२८
दिसम्बर १	२२.४४२८	०.४१५६	२३.३६५७	१.१३०८	२१.९८७४	०.३७७५	२४.०३१६	२.३९०६	५.३५७६	१.९०९२	दिसम्बर १
४	२२.७६७८	०.४४४३	२४.१८२५	१.४०३०	२१.८९०१	०.३८०२	२३.४१६६	२.३८७६	५.३०८०	१.९२२०	४
७	२३.०५९७	०.४७२८	२४.८११२	१.६४७०	२१.७८८४	०.३८३१	२२.७०७०	२.३६८१	५.२६४४	१.९३५१	७
१०	२३.३१७५	०.५०११	२५.२४१८	१.८५७६	२१.६८२५	०.३८६०	२१.९०७४	२.३३१३	५.२२७०	१.९४८४	१०
१३	२३.५४०४	०.५२९९	२५.४६४०	२.०२८५	२१.५७२२	०.३८९०	२१.०२३१	२.२७६६	५.१९५७	१.९६१८	१३
१६	२३.७२७६	०.५५७	२५.४०२१	२.१५२८	२१.४५७७	०.३९२१	२०.०४९६	२.२०३४	५.१७०८	१९७५३	१६
१९	२३.८७८२	०.५८४६	२५.२५६४	२.२२१७	२१.३३९०	०.३९५२	१९.०२२४	२.१११३	५.१४२३	१.९८८९	१९
२२	२३.९९१५	०.६११८	२४.८१३९	२.२२४८	२१.२१६०	०.३९८४	१७.९१७१	१.९९९६	५.१४०३	२.००२७	२२
२५	२४.०६६९	०.६३८७	२४.१४६४	२.१४९३	२१.०८८८	०.४०१७	१६.७४९७	१.८६८०	५.१३४९	२.०१६४	२५
२८	२४.१०३८	०.६६५२	२३.२६५४	१.९७९७	२०.९५७४	०.४०५१	१५.५२६३	१.७१६२	५.१३६०	२.०३०३	२८
३१	द. २४.१०१८	द. ०.६९१४	द. २२.१९३२	द. १.६९७६	द. २०.८२२२	द. ०.४०८६	द. १४.२५३२	द. १.५४३७	उ. ५.१४३७	उ. [illegible]	३१

दशम. = दशमलव   उ. = उत्तर   द = दक्षिण

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रातः घं. ५ मि. ३० भा.स्टैं. टा.) संवत् २०६५ वि.

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		तारीख
सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	सन् ई.
२००९	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	अं. दशम	२००९
जनवरी १	द. २४.०९२५	द. ०.७०००	द. २१.८०१४	द. १.५७५१	द. २०.७७६२	द. ०.४०९८	द. १३.८१९०	द. १.४८१७	उ. ५.१४७८	उ. २.०४८७	जनवरी १
४	२४.०३८२	०.७२५६	२०.५५७०	१.११९६	२०.६३५७	०.४१३४	१२.४८९७	१.२८१६	५.१६४२	२.०६२५	४
७	२३.९४४६	०.७५०८	१९.२८६५	०.४९२१	२०.४९१५	०.४१७१	११.१२५८	१.०६०५	५.१८७१	२.०७६१	७
१०	२३.८११४	०.७७५६	१८.१२३२	उ. ०.२८५०	२०.३४३५	०.४२१०	९.७३३७	०.८१८४	५.२१६२	२.०८९६	१०
१३	२३.६३९०	०.८०००	१७.२२६३	१.१८५४	२०.१९२२	०.४२५०	८.३१९७	०.५५५०	५.२५१५	२.१०२९	१३
१६	२३.४२७२	०.८२३८	१६.७३३५	२.११३७	२०.०३७४	०.४२९१	६.८८९९	०.२७०४	५.२९२९	२.११६०	१६
१९	२३.१७६२	०.८४७१	१६.६९०९	२.९१०१	१९.८७९३	०.४३३३	५.४५००	उ. ०.०३५७	५.३४०३	२.१२८९	१९
२२	२२.८८६५	०.८६९८	१७.०१८५	३.४०९६	१९.७१८०	०.४३७६	४.००६४	०.३६३१	५.३९३३	२.१४१४	२२
२५	२२.५५८६	०.८९१८	१७.५६२२	३.५३८१	१९.५५३९	०.४४२०	२.५६५२	०.७११७	५.४५१९	२.१५३७	२५
२८	२२.१९३१	०.९१३३	१८.१७८३	३.३४३०	१९.३८६८	०.४४६५	१.१३३१	१.०८१३	५.५१५७	२.१६५५	२८
३१	२१.७९०७	०.९३४१	१८.७७०२	२.९३२०	१९.२१७३	०.४५१२	उ. ०.२८२७	१.४७१५	५.५८४६	२.१७६९	३१
फरवरी १	२१.६४८५	०.९४०९	१८.९५११	२.७६५५	१९.१६०२	०.४५२८	०.७४९९	१.६०६०	५.६०८५	२.१८०६	फरवरी १
४	२१.१९८२	०.९६०८	१९.४२२१	२.२१९५	१८.९८७५	०.४५७७	२.१३३०	२.०२२९	५.६८३४	२.१९१४	४
७	२०.७१३०	०.९८०१	१९.७६१७	१.६४६३	१८.८१२८	०.४६२८	३.४८२३	२.४५११	५.७६२३	२.२०१७	७
१०	२०.१९३९	०.९९८६	१९.९४७३	१.०८०८	१८.६३६२	०.४६८०	४.७८९४	२.९११७	५.८४४९	२.२११३	१०
१३	१९.६४११	१.०१६३	१९.९६३३	०.५४२१	१८.४५८०	०.४७३४	६.०४५७	३.३८५५	५.९३१०	२.२२०४	१३
१६	१९.०५७९	१.०३३२	१९.७९९५	०.०४०५	१८.२७८२	०.४७८९	७.२४११	३.८७२८	६.०२००	२.२२८९	१६
१९	१८.४४३२	१.०४९२	१९.४४९५	द. ०.४१८२	१८.०९७२	०.४८४५	८.३६७४	४.३७३१	६.१११६	२.२३६८	१९
२२	१७.७९९०	१.०६४३	१८.९०९६	०.८३०६	१७.९१५३	०.४९०३	९.४१०२	४.८८३१	६.२०५२	२.२४३९	२२
२५	१७.१२६७	१.०७८६	१८.१७८०	१.१९४३	१७.७३२७	०.४९६३	१०.३५६०	५.३९८१	६.३००६	२.२५०४	२५
२८	१६.४२७८	१.०९१९	१७.२५४३	१.५०७३	१७.५४९६	०.५०२५	११.१८८६	५.९११८	६.३९७१	२.२५६१	२८
मार्च १	१६.१८९१	१.१०११	१६.९०३७	१.६००४	१७.४८८६	०.५००४	११.४३७८	६.०८३५	६.४२९४	२.२५०३	मार्च १
४	१५.४५६६	१.११६७	१५.७२४४	१.८५००	१७.३०५४	०.५१६७	१२.०९०१	६.५८३५	६.५२६५	२.२५२४	४
७	१४.७००८	१.१२०५	१४.३५४८	२.०३३२	१७.१२२६	०.५२२३	१२.५८२६	७.०५०१	६.६२३६	२.२५४५	७
१०	१३.९२३१	१.१३३३	१२.७९६३	२.१५०३	१६.९४०३	०.५२७९	१२.८९३३	७.४८३३	६.७२०३	२.२५६१	१०
१३	१३.१२४७	१.२१६१	११.०५१०	२.२१६७	१६.७५८८	०.५३३४	१३.००१९	७.८५००	६.८१६०	२.२५८७	१३
१६	१२.३०७१	१.१४०३	९.१२२६	२.१८३३	१६.५७८४	०.५४११	१२.८९२४	८.१५०१	६.९१०२	२.२६०८	१६
१९	११.४७१७	१.१५८४	७.०१२०	२.१५०१	१६.३९९३	०.५५०४	१२.५५६९	८.३५०२	७.००२७	२.२६२९	१९
२२	१०.६२००	१.१६६७	४.७२८५	२.०१६७	१६.२२१९	०.५५८६	११.९९९३	८.४१६६	७.०९२८	२.२६५०	२२
२५	द. ९.७५३६	द. १.१६७३	द. २.२८११	द. १.८००४	द. १६.०४६६	द. ०.५६६८	उ. ११.२३८३	उ. ८.३५००	उ. ७.१८०३	उ. २.२६६७	२५

शेष पृष्ठ २४५ पर

पृष्ठ ४४ का शेष

इंडोनेशिया- मिथुन लग्न में रिपुभाव का स्वामी स्थित है तथा लग्नेश नीच राशि का होकर दशमस्थ है अत: यह वर्ष राजनीतिक दृष्टि से शुभ फलप्रद नहीं है। चतुर्थ भाव का अधिपति नीच राशि का होकर दशमभाव में स्थित होने से प्राकृतिक प्रकोपों, रोगों आदि से लोगों को पीड़ा होगी। पंचम भाव का अधिपति उच्च का होकर केन्द्र में स्थित है अत: बच्चों की शिक्षा में सुधार होगा एवं विकास योजनाओं के क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। यद्यपि सप्तमाधिपति स्वगृही है किन्तु महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में लग्नस्थ भौम की दृष्टि के कारण वृद्धि होगी। नवमाधिपति शत्रु की राशि में स्थित होकर नवम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है तथा राहु भी नवम भाव में ही स्थित होने से सांप्रदायिक समभाव का वातावरण बिगड़ेगा तथा कानून व्यवस्था की स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी। शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा।

इजराईल- जेरुसलेम (इजराइल) के प्रवेश लग्न मेष का अधिपति तृतीय भाव में शत्रु के घर स्थित है इसके प्रभाव से इस राष्ट्र के शासकों का रवैया हठधर्मितापूर्ण व कठोर रहेगा। कुटुम्ब भाव का अधिपति उच्च का होकर द्वादश भाव में स्थित है अत: लोगों की क्रय शक्ति बढ़ेगी एवं जीवन स्तर में सुधार होगा। चतुर्थ भाव का अधिपति द्वादशभाव में अस्त होकर स्थित है इसके प्रभाव से कुछ कृषि क्षेत्र तथा आवासीय क्षेत्र प्राकृतिक कारणों या मनुष्यकृत कारणों से प्रभावित होंगे। पंचम भाव में शनि एवं केतु स्थित है तथा पंचमेश द्वादश भाव में स्थित है इसके फलस्वरूप बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी। रिपुभाव का अधिपति द्वादश भाव में नीच राशि का होकर स्थित होने से शत्रु को हानि होगी एवं यह देश शत्रु पर हावी होगा। सप्तम भाव का अधिपति उच्च का होकर स्थित होने से विदेश व्यापार में वृद्धि होगी, महिलाओं के लिए अनुकूल समय रहेगा। नवमेश नवम भाव में स्थित है इसके प्रभाव से कानून व्यवस्था की स्थिति संतोषजनक रहेगी। राज्येश त्रिकोण में स्थित है इसके प्रभाव से शासक की सत्ता पर यद्यपि पकड़ बनी रहेगी किन्तु केतु के साथ स्थित होने से शासक को विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा। गुरु की दशमेश पर दृष्टि शासक को स्थायित्व प्रदान करने हेतु अनुकूल कार्य करने को बाध्य करेगी।

कनाडा- वृश्चिक लग्न के प्रवेश के समय की कुण्डली में राज्येश अष्टम स्थान में स्थित है तथा चतुर्थ भाव में राहु स्थित है अत: यह वर्ष शासक को बाह्य एवं आन्तरिक दोनों प्रकार की समस्याओं में उलझने को बाध्य करेगा। शासक असहज स्थिति अनुभव करेगा। लोगों को कष्ट होगा तथा लोगों में असन्तोष भी होगा। आर्थिक दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु प्राकृतिक प्रकोपों या मनुष्यकृत कारणों से लोगों को कष्ट देगा। पंचम भाव में चतुर्ग्रही योग है तथा पंचमेश स्वराशिस्थ भी है अत: शिक्षा, बाल विकास, सामाजिक उत्थान की योजनाएं प्रभावी ढंग से लागू होंगी। महिलाओं के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। नवम भाव का अधिपति अस्त होने से किसी भाग विशेष में कानून-व्यवस्था की समस्या उत्पन्न करेगा। दशम भाव का शनि, शासक के विरोधियों को मुखर करेगा। सत्ता पर पकड़ बनाये रखने के लिए शासक को विशेष प्रयास करने पड़ेंगे।

जर्मनी- कुम्भ लग्न के समय नववर्ष प्रवेश हो रहा है। राहु लग्न में स्थित है तथा लग्नेश केतु के साथ सप्तम भाव में स्थित है। इसके प्रभाव से विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होंगी। दशमाधिपति भी शत्रु की राशि में स्थित है अत: शासक को सत्ता संचालन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं, विरोधों का सामना करना पड़ेगा तथा सत्ता पर बने रहने के लिए शासक को विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। आर्थिक स्थिति कुल मिलाकर अनुकूल रहेगी। बीच में अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे। चतुर्थ भाव का अधिपति उच्च राशि का होकर स्थित होने से कृषि, कृषिक्षेत्र तथा आवासीय क्षेत्र का विकास व विस्तार होगा। कृषि उत्पादन पर्याप्त होगा। शनि की दशम दृष्टि चतुर्थ भाव पर होने से प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि की कुछ हानि भी होगी। भौम के पंचमस्थ होने से बालमृत्युदर में वृद्धि होगी। औद्योगिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। महिलाओं के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। कानून-व्यवस्था की स्थिति संतोषजनक रहेगी।

रूस- मेष लग्न का स्वामी पराक्रम भाव में शत्रु के घर स्थित है अत: यह राष्ट्र दृढ़ता का परिचय देगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने एवं नवमेश के नवम भाव में स्वगृही होकर स्थित होने से यह राष्ट्र प्रगति पथ पर अग्रसर होगा। धन-कुटुम्ब भाव का अधिपति उच्च का होकर द्वादश भाव में स्थित है अत: आर्थिक दृष्टि से यह राष्ट्र समृद्धि की ओर बढ़ेगा। चतुर्थ भाव का अधिपति द्वादश भाव में स्थित है कृषि उत्पादन पर्याप्त होगा। आवासीय एवं कृषि क्षेत्रों का विकास होगा। दशमेश त्रिकोण में स्थित होने से शासक की सत्ता पर यद्यपि पकड़ बनी रहेगी तथापि दशमेश शत्रु की राशि में केतु के साथ स्थित है इसके फलस्वरूप शासक को कुछ विरोधों का भी सामना करना पड़ेगा। सप्तम स्थान का अधिपति द्वादश भाव में उच्च का होकर स्थित होने से महिलाओं के लिए समय अनुकूल रहेगा तथा महिलाओं की स्थिति में सुधार होगा। विदेश व्यापार बढ़ेगा। कानून-व्यवस्था की स्थिति संतोषजनक रहेगी।

चीन- कर्क लग्न का स्वामी नवम भाव में स्थित है अत: यह अवधि राज्य की उन्नति के लिए अनुकूल रहेगी। दशम स्थान का अधिपति शत्रु के घर में द्वादश भाव में स्थित है अत: शासक को इस वर्ष सत्ता संचालन में असुविधा होगी तथा कुटुम्ब भाव में शनि व केतु दोनों के स्थित होने से आन्तरिक स्थिति संतोषजनक नहीं होगी तथा लोगों की क्रय शक्ति घटेगी। रोगों, दुर्घटनाओं, प्राकृतिक प्रकोपों से अकाल मृत्युदर की संख्या में भारी वृद्धि होने का ग्रह स्थिति संकेत दे रही है। पराक्रम भाव का अधिपति नीच राशि का होकर स्थित होने से कुछ राष्ट्रों से इस देश के सम्बन्धों में गम्भीर मतभेद उत्पन्न होंगे। चतुर्थ भाव का स्वामी उच्च का होकर त्रिकोण में स्थित है एवं चतुर्थ भाव

पर द्वितीयस्थ शनि की तृतीयस्थ दृष्टि भी पड़ रही है इसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन पर्याप्त होगा किन्तु कुछ भागों में कृषि की भारी हानि भी होगी एवं प्राकृतिक प्रकोपों से कुछ आवासीय भाग प्रभावित होंगे। बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी। महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी।

मैक्सिको- वृश्चिक लग्न का स्वामी शत्रु ग्रह की राशि में अष्टमस्थ होने से यह वर्ष इस देश के लिए सामान्य नहीं कहा जा सकता। शासक को सत्ता संचालन में इस वर्ष विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा। चतुर्थ भाव में राहु के स्थित होने तथा चतुर्थेश के केतु के साथ शत्रु के घर स्थित होने से कृषि की हानि होगी तथा प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि क्षेत्र एवं आवासीय क्षेत्र दोनों की हानि होगी। महिलाओं के लिए यह वर्ष उन्नतिकारक रहेगा। व्यापार में वृद्धि होगी एवं दशमेश के चतुर्ग्रही योग युक्त होने से शासक के लिए यह वर्ष अकस्मात् समस्या युक्त बनेगा।

कोरिया प्रायद्वीप- लग्न का स्वामी चन्द्र नवम भाव में चतुर्ग्रही योग बना रहा है। अतः प्रगति की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल है। कुटुम्ब भाव में शनि एवं केतु दोनों स्थित हैं तथा राज्येश द्वादश भाव में शत्रु के घर स्थित है अतः शासक को कुछ आन्तरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार के अवरोधों को झेलना पड़ेगा। कृषि उत्पादन पर्याप्त होगा। औद्योगिक विकास द्रुत गति से होगा। विदेश व्यापार में वृद्धि होगी। किन्तु किसी देश विशेष से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होने से व्यापार में कुछ अवधि के लिए प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। शनि की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से किसी भाग विशेष में प्राकृतिक कारणों से हानि सम्भव है।

ईरान- लग्न का स्वामी मंगल पराक्रम भाव में शत्रु के घर स्थित है अतः यह राष्ट्र अपनी हठधर्मिता से कुछ विवाद उत्पन्न करेगा इसके फलस्वरूप किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। शस्त्र उत्पादन में इस राष्ट्र की रुचि रहेगी। कुटुम्ब भाव का अधिपति उच्च का होकर स्थित होने से आर्थिक दृष्टि से समृद्ध रहेगा तथा लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। चतुर्थ भाव का अधिपति द्वादश भाव में स्थित है अतः किसी भाग विशेष में अशान्ति का वातावरण बनेगा। पंचम भाव में शनि-केतु के स्थित होने से पंचमेश के द्वादश भावस्थ होने से नीति निर्धारण दोष पूर्ण होगा। शिक्षा का स्तर घटेगा। बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी। मनोरंजन के साधनों का दुरुपयोग होगा। रिपुभाव का अधिपति नीच राशि का होकर द्वादश भाव में है अतः शत्रु हानि पहुंचाने की स्थिति में नहीं होगा। सप्तमाधिपति द्वादश भाव में उच्च का होकर स्थित होने से विदेश व्यापार में वृद्धि होगी। कभी-कभी विदेश व्यापार में व्यवधान की स्थिति भी बनेगी। महिलाओं के लिए अनुकूल अवधि है। नवमाधिपति स्वगृही होकर स्थित होने से कानून व्यवस्था की स्थिति सामान्य रहेगी। दशमेश शत्रु के घर केतु के साथ स्थित है अतः शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। शासक की शासन पर पकड़ कमजोर होगी। अतः सत्ता पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए शासक को विशेष प्रयास करने पड़ेंगे।

अफगानिस्तान- लग्न का स्वामी उच्च राशि का होकर लाभ स्थान में स्थित है इसके फलस्वरूप विकास कार्यों में तेजी होगी तथा कुछ राष्ट्रों से सहयोग में वृद्धि होगी। द्वितीय भाव में शत्रु राशि का स्वामी भौम स्थित है तथा द्वितीयेश नीच राशि का होकर स्थित है अतः आन्तरिक शान्ति बनाये रखने के लिए शासक को विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। कुछ ऐसी घटनाएं घटेंगी जिनसे भय का वातावरण बनेगा। चतुर्थ भाव में शनि एवं केतु के स्थित होने से कुछ भागों में कृषि उत्पादन पर प्राकृतिक कारणों से प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यद्यपि कृषि क्षेत्र एवं आवासीय क्षेत्र के उत्थान के लिए प्रबल प्रयास किये जायेंगे किन्तु उसके परिणाम उत्साहवर्धक इस वर्ष नहीं होंगे। उसमें कुछ विरोधी व्यवधान उत्पन्न करेंगे। पंचम भाव का अधिपति नीच राशि का होकर लाभ स्थान में स्थित है तथा पंचमेश की पंचमभाव पर दृष्टि है अतः शिक्षा में सुधार के प्रयास किये जायेंगे तथा विकास योजनाओं का क्रियान्वयन द्रुत गति से किया जायेगा किन्तु अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। सप्तम भाव का अधिपति शत्रु के घर में स्थित होने से महिलाओं के लिए प्रतिकूल अवधि है। नवमेश एवं दशमेश शत्रु के घर चतुर्थ भाव में केतु के साथ स्थित है अतः कानून व्यवस्था की स्थिति सन्तोषजनक नहीं होगी तथा शासक को सत्ता पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए प्रयास करने पड़ेंगे।

जापान- लग्न का अधिपति नवम भाव में उच्च के चतुर्थेश के साथ स्थित है अतः विकास की गति तेज होगी। द्वितीय भाव में शनि एवं केतु के स्थित होने से अल्पावधि के लिए आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। चतुर्थेश के प्रभाववश कृषि उत्पादन, आवासीय व कृषि भूमि का विकास तीव्र गति से होगा। पंचमेश शत्रु राशि में स्थित है। पंचमेश औद्योगिक विकास की गति तेज करेगा। तथापि योजनाओं का क्रियान्वयन द्रुत गति से नहीं हो पायेगा। बाल-मृत्युदर में वृद्धि होगी। सप्तमेश-अष्टमेश शत्रु के घर स्थित है अतः विदेश व्यापार में प्रतिस्पर्धा में पिछड़ने से विदेश व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। नवमाधिपति स्वगृही होने से आन्तरिक कानून-व्यवस्था की स्थिति अनुकूल रहेगी। दशमेश शत्रु की राशि में स्थित होने से विरोधी मुखर होंगे एवं शासक को सत्ता संचालन में विपरीत स्थितियों का सामना करना पड़ेगा तथा कुछ अवसरों पर शासक दृढ़ता का परिचय देगा। किन्तु सत्ता पर पकड़ बनाये रखने के लिए शासक को गम्भीर प्रयास करने पड़ेंगे।

प्रान्तीय राज्य संघ

इस पंचांग में प्रतिवर्ष ग्रह-गणना के आधार पर केन्द्र एवं प्रान्तों का संक्षिप्त भविष्य विवेचन यथामति विगत ६४ वर्षों से करा जा रहा है। अब यहाँ इस वर्ष सं. २०६५ वि. के वर्ष लग्न कुण्डली और केन्द्र एवं प्रान्तों की ग्रह स्थिति कूर्मचक्र विचारादि से संक्षेप में भारत के प्रमुख प्रान्तों का भविष्य विवेचन किया जाता है। प्रान्त एवं नगरों की प्रभाव राशियों पर

प्रामाणिक निर्णय अभी तक सर्वसम्मत नहीं हो पाया है। कोई भारत की मकर राशि मानते हैं तो कुछ विद्वान कन्या राशि मानते हैं यही स्थिति प्रान्तों की भी है। यद्यपि अब राजतंत्र तो है नहीं, प्रजातंत्र में हर पांचवें वर्ष में मंत्रीमंडल एवं प्रधान शासक बदलते रहते हैं-उनकी प्रामाणिक जन्म कुंडलियां उपलब्ध न होने से केवल नाम राशि एवं सत्तारूढ़ लग्न से यथामति विचार लिखा जाता है, जिसके लिए यह नहीं कहा जा सकता कि यह विचार शत-प्रतिशत सही ही उतरेगा। तथापि गोचर स्थिति से मध्यम मानेन जो प्रान्तों का भविष्य लिखा जाता है वह ७५ प्रतिशत सही होता है ऐसा पंचांग पाठकों का मत है।

उत्तर प्रदेश- धनु राशि से प्रभावित इस राज्य का अधिपति अपनी ही राशि में स्थित होने से यह राज्य प्रगति पथ पर आगे बढ़ेगा। धन-कुटुम्ब भाव का अधिपति शत्रु के घर में स्थित होने से कहीं-कहीं विरोध व प्रदर्शन भी होंगे तथा कुछ भागों में अशान्ति का वातावरण बनेगा। धन की कमी से राज्य के विकास कार्यक्रम कुछ अवधि के लिए प्रभावित होंगे। पराक्रम भाव में राहु के स्थित होने से तथा पराक्रमेश की पराक्रम भाव पर दृष्टि होने से यातायात व्यवस्था में सुधार होगा। चतुर्थ भाव में उच्च के शुक्र की स्थिति नवमेश-दशमेश के साथ होने से कृषि भूमि का विकास किया जायेगा तथा कृषि के उत्पादन में वृद्धि की जायेगी। आवासीय क्षेत्र का भी विस्तार होगा। चतुर्थ भाव का अधिपति स्वराशि में स्थित होकर लग्नस्थ है। अत: क्षेत्रीय विकास की गति तेज होगी। पंचम भाव का अधिपति सप्तमस्थ होकर शत्रु के घर में स्थित है अत: औद्योगिक विकास की दर में वृद्धि होगी। शिक्षा के स्तर में सुधार के गम्भीर प्रयास किये जायेंगे। किन्तु अपेक्षित परिणाम कम मिलेंगे। अष्टमेश के पंचम में स्थित होने से भ्रूण हत्या एवं बालमृत्युदर में वृद्धि होगी। सप्तम भाव का अधिपति नीच राशि का होकर स्थित होने से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। सप्तम भाव में मंगल भी स्थित है तथा गुरु की पूर्ण दृष्टि भी सप्तम भाव पर पड़ रही है। इसके प्रभाव से महिलाओं के कल्याण की योजनाएं बनेंगी एवं महिला शिक्षा व महिला रोजगार पर ध्यान दिया जायेगा। किन्तु तलाक के मामलों में भारी वृद्धि होगी। अष्टमेश के त्रिकोण में स्थित होने से तथा अष्टमेश के गुरु द्वारा दृष्ट होने से राज्य के कोष की स्थिति लगभग अनुकूल रहेगी। नवम स्थान का अधिपति केन्द्र में मित्र के घर स्थित है तथा शनि एवं केतु नवमस्थ हैं इसके प्रभाव से राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति में सुधार होगा। नवमेश दो शुभ ग्रहों के साथ स्थित है तथा नवम भाव पर गुरु की दृष्टि भी पड़ रही है इसके फलस्वरूप धार्मिक वातावरण सौहार्द्रपूर्ण रहेगा। इस वर्ष सांप्रदायिकता व कट्टरवादिता का प्रभाव सामाजिक समरसता पर कम पड़ेगा। दशमाधिपति नीच राशि का होकर चतुर्थस्थ है अत: अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। यद्यपि शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा किन्तु शासक की सत्ता पर पकड़ मजबूत होगी। भौम की लग्न पर दृष्टि होने से शासक, शासन चलाने में कठोर रुख अपनायेगा। लाभेश उच्च का होकर चतुर्थस्थ होने से राज्य का विकास, राज्य की आय उत्साहवर्धक रहेगी। माननीय सुश्री मायावती का किसी आकस्मिक संकट से सामना होना तथा कष्ट में पड़ना अप्रत्याशित न होगा।

पंजाब- मीन राशि से प्रभावित इस राज्य का राश्याधिप राज्य स्थान में स्वराशिस्थ है तथा राशि लग्न में चतुर्ग्रही योग भी बना हुआ है जो अकस्मात् राजनीतिक गतिरोध या शासक का परिवर्तन करा सकता है। जहाँ तक राज्य के विकास का प्रश्न है तो राश्याधिप की अनुकूल स्थिति होने से राज्य शिक्षा उद्योग व कृषि के क्षेत्र में विकास करेगा। धनेश शत्रु की राशि में स्थित होने से कुछ भागों में अशान्ति का वातावरण बनेगा। आर्थिक दृष्टि से स्थिति सामान्य रहेगी। तृतीय भाव का अधिपति उच्च का होकर स्थित है अत: संचार, यातायात की स्थिति में विशेष सुधार होगा। चतुर्थ भाव का अधिपति नीच राशि में स्थित है जिससे कुछ भू-भाग में अशान्ति का वातावरण बनेगा एवं कुछ आवासीय एवं कृषि क्षेत्र भी प्रभावित होंगे। पंचमेश के लग्नस्थ होने से शिक्षा में सुधार के प्रयास किये जायेंगे। भ्रूण हत्या रोकने के प्रयास होंगे। बाल विकास कार्यक्रमों पर ध्यान दिया जायेगा। कई विकासोन्मुखी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जायेगा। महिलाओं के लिए महिला कल्याण कार्यक्रम बनाये जायेंगे। कानून व्यवस्था की स्थिति कुछ स्थानों को छोड़कर सामान्य रहेगी। राज्येश की स्थिति के कारण शासक की सत्ता पर पकड़ बनी रहेगी। किन्तु लग्न का चतुर्ग्रही योग सत्ता पर अकस्मात् संकट लायेगा। यदि शासक उक्त अवधि को पार कर गया तो शेष अवधि शासक के लिए अनुकूल रहेगी।

हरियाणा- मिथुन राशि से प्रभावित इस राज्य की राशि में षष्ठेश भौम स्थित है इससे राज्य में कुछ अवधि के लिए अशान्ति का वातावरण रहेगा। शासक को विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। धन भाव के स्वामी की स्थिति अनुकूल होने से आर्थिक दृष्टि से राज्य विकास करेगा। औद्योगिक विकास की दर बढ़ेगी। कृषिक्षेत्र, कृषि उत्पादन, कृषि भूमि तथा आवासीय क्षेत्र का विकास होगा। पंचमेश उच्च का होकर केन्द्रस्थ है। अत: शिक्षा में सुधार होगा। बाल विकास कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। राज्य विकास की बड़ी योजनाओं का आधार बनेगा तथा कई नई योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारू रूप से करने का प्रयास होगा। महिला वर्ग की स्थिति में सुधार के गम्भीर प्रयास होंगे। सप्तमेश गुरु के सप्तम में ही होने से यह वर्ष इस राज्य की महिलाओं के लिए अनुकूल है। नवम भाव में राहु के स्थित होने से कुछ भाग में साम्प्रदायिक स्थिति शान्ति भंग कर सकती है तथा कानून-व्यवस्था की स्थिति विपरीत हो सकती है। दशमेश के केन्द्र में स्थित होने से शासक की शासन पर पकड़ बनी रहेगी। यद्यपि चतुर्ग्रही योग के प्रभाव से कुछ विरोधों का भी शासक को सामना करना पड़ेगा। कुछ अपने ही लोग अस्थिर करने का प्रयास करेंगे। कुछ कालावधि अनिश्चय की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। राज्य की आय की दृष्टि से वर्ष कुछ अवधि को छोड़कर सामान्य कहा जा सकता है।

काश्मीर- तुला राशि से प्रभावित इस राज्य का राश्याधिप राशि से रिपु भाव में उच्च का होकर स्थित है। इसके प्रभाव से यह राज्य उन्नति तो करेगा किन्तु शान्ति स्थापित नहीं होगी। द्वितीयेश भी शत्रु की राशि में स्थित है इसके प्रभाव से लोगों में अशान्ति का वातावरण रहेगा। कुछ आतंकवाद की बड़ी दुर्घटनाएं घटेंगी। तृतीयाधिप तृतीय भाव में ही स्थित है इसके फलस्वरूप विकास की गति तेज होगी। चतुर्थ भाव का अधिपति शत्रु राशि में लाभ स्थान में स्थित होने से कृषि उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। प्राकृतिक प्रकोपादि तथा मनुष्यकृत कारणों से लोगों को कुछ स्थानों से पलायन करना पड़ सकता है। पंचम भाव में राहु स्थित है अतः विकास योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारू रूप से नहीं हो पायेगा। शिक्षा में सुधार बाधित होगा। अपसंस्कृति का विस्तार होगा। सप्तमेश शत्रु राशि में स्थित होने से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। राज्य के व्यापार पर इस वर्ष विपरीत प्रभाव पड़ने की सम्भावना है। नवमेश नीच राशि का होकर स्थित होने से कानून व्यवस्था की समस्या इस वर्ष राज्य के लिए चुनौती बनेगी। कानून व्यवस्था बनाये रखना एक समस्या के रूप में उभरेगा। धार्मिक कट्टरवाद से कुछ अप्रिय घटनायें घटेंगी। दशमेश के रिपु भाव में स्थित होने से इस वर्ष शासक को सत्ता पर बने रहने के लिए बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। विघटनकारी तत्व अपनी देशद्रोही गतिविधियों एवं कार्रवाइयों से समाज को विघटित करने का प्रयास करेंगे इसके परिणाम स्वरूप शासन को कठोर कार्रवाई करने पर बाध्य होना पड़ेगा। सीमापार से आतंकवाद को पोषित करने की कुत्सित नीति का अनुसरण होता रहेगा।

हिमाचल प्रदेश- राश्याधिप स्वराशिस्थ होकर केन्द्र में स्थित है। अतः इस पर्वतीय राज्य का द्रुत गति से विकास होगा। आर्थिक दृष्टि से यह राज्य समृद्ध होगा। कुटुम्बाधिपति शत्रु राशि में स्थित होने से प्राकृतिक प्रकोपों आदि से कृषि की हानि होगी। कुछ स्थानों में आवासीय एवं कृषि भूमि की भी हानि होगी। चतुर्थ भाव का अधिपति नीच राशि में स्थित है अतः किसी भाग विशेष से लोगों को सुरक्षा की दृष्टि से विस्थापित होना पड़ेगा। पंचम भाव का अधिपति धन भाव में स्थित है तथा उस पर गुरु की भी दृष्टि होने से बाल विकास कार्यक्रम, शिक्षा में सुधार, बालमृत्युदर रोकने व बाल शिक्षा आदि महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। रिपुभाव में शनि-केतु की स्थिति चिकित्सा सेवाओं के विस्तार पर विशेष ध्यान आकर्षित करायेगी। सप्तमाधिपति नीच राशि का होकर यद्यपि लग्न में स्थित है किन्तु सप्तम भाव को भी देख रहा है अतः महिलाओं के लिए कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जायेगा। भौम की सप्तम भाव पर दृष्टि होने से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी तथा पारिवारिक विभाजन या तलाक की घटनाओं में वृद्धि भी इस वर्ष की ग्रह स्थिति संकेत दे रही है। नवम भाव का अधिपति शत्रु के घर किन्तु केन्द्र में स्थित है अतः कानून व्यवस्था की स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। दशमाधिप स्वगृही होकर दशम भाव में ही स्थित होने से शासक की शासन पर पकड़ मजबूत रहेगी तथा सरकार की विकास कार्यों की प्रशंसा होगी। विपक्ष की प्रतिष्ठा घटेगी।

मध्य प्रदेश- इस प्रदेश की प्रभाव राशि वृष है राशि लग्न का स्वामी उच्च का होकर एकादश भाव में स्थित है अतः राज्य में विकास योजनाओं के क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। धन स्थान में भौम के स्थित होने से लोगों का प्राकृतिक प्रकोपों, रोगों, मंहगाई आदि से कष्ट उठाने पड़ेंगे। लोगों की क्रय शक्ति में कमी होगी। कुटुम्बेश नीच का भी है अतः लोगों में अशान्ति का वातावरण रहेगा। चतुर्थ भाव में शनि एवं केतु की स्थिति होने से विपक्षी दल की स्थिति कमजोर होगी। प्राकृतिक प्रकोपों अतिवर्षण, भूकम्प, अल्पवर्षण, ओलावृष्टि व कीटादि से कृषि की हानि होगी एवं कुछ स्थानों में कृषि भूमि व आवासीय भूमि की भी हानि होगी। किसी स्थान-भाग विशेष से लोगों को सुरक्षा की दृष्टि से विस्थापित होना पड़ेगा। पंचमेश लाभ स्थान में नीच राशि का होकर स्थित होने से शिक्षा के स्तर में वांछित सुधार नहीं हो पायेगा तथा औद्योगिक एवं तकनीकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। सप्तमाधिपति शत्रु की राशि में स्थित है इसके प्रभाव से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी एवं तलाक के मामलों में भारी वृद्धि होगी। नवमाधिपति सुख भाव में शत्रु राशि के घर स्थित है अतः सांप्रदायिक सौहार्द्र को बिगाड़ने का प्रयास होगा किन्तु असामाजिक, देशद्रोही तत्वों को उनकी कुत्सित चालों में सफलता नहीं मिलेगी तथा कुछ एक घटनाओं को छोड़कर कानून व्यवस्था की स्थिति संतोषजनक रहेगी। राज्येश राज्यस्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है इसके प्रभाव से शासक की सत्ता पर पकड़ बनी रहेगी। कुछ अपने लोग भीतरघात का प्रयास करेंगे किन्तु उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिलेगी।

गुजरात- इस राज्य की प्रभाव राशि सिंह है सिंह में शनि एवं केतु स्थित हैं तथा राशि से अष्टम स्थान में लग्नाधिप भी स्थित है ग्रह स्थिति राज्य में किसी विशेष घटनाक्रम को जन्म देने वाली है। ऐसा प्रतीत होता है कि शीर्ष शासक को पद से हटना पड़े ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न की जायेंगी। अतः यह वर्ष शासक के लिए अग्निपरीक्षा का होगा। इस वर्ष राज्य में अशान्ति का वातावरण बनेगा तथा राज्य का विकास नये घटनाक्रम से बाधित होगा। कुटुम्बेश भी नीच राशि का होकर अष्टमस्थ है अतः लोगों की क्रय शक्ति घटेगी एवं जनता में भय एवं अशान्ति का वातावरण बनने की सम्भावना है। चतुर्थभाव का अधिपति लाभ स्थान में शत्रु के घर स्थित है इसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन घटेगा एवं आवासीय भूमि एवं कृषि भूमि के विकास की योजना का क्रियान्वयन द्रुत गति से नहीं हो पायेगा। पंचमाधिप स्वगृही होकर पंचमभाव में ही स्थित है इसके फलस्वरूप बाल विकास, शिक्षा में सुधार, शिक्षा प्रचार प्रसार एवं कुपोषण को दूर करने की योजनाओं पर दृढ़ता पूर्वक अमल किया जायेगा। सप्तम स्थान में राहु स्थित है तथा शनि जो कि सप्तमेश है शत्रु के घर स्थित है अतः महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं

में वृद्धि होगी। कानून व्यवस्था की स्थिति बनाये रखने के लिए कड़े उपाय करने की आवश्यकता होगी।

दिल्ली- वृष राशि से प्रभावित इस राज्य का राश्याधिप उच्च राशि का होकर लाभ स्थान में स्थित है अत: राज्य के चहुंमुखी विकास की ओर ध्यान दिया जायेगा। धन-कुटुम्ब भाव में भौम की स्थिति दुर्घटनाओं में वृद्धि की द्योतक है। सुखभाव के सन्दर्भ में द्वितीय भाव का भी विचार करने पर स्पष्ट है कि इस वर्ष दुर्घटनाओं में भारी वृद्धि होगी तथा लोगों को रोगों द्वारा भारी कष्ट उठाने पड़ेंगे। रोगों, प्राकृतिक प्रकोपों का स्वरूप महामारी का होगा। रोगों, प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि क्षेत्र भी प्रभावित होगा एवं कृषि उत्पादन घटेगा। पंचमेश नीच राशि का होकर लाभस्थान में स्थित होने से मनोरंजन के साधन अपसंस्कृति का विस्तार करेंगे। बालमृत्युदर में भारी वृद्धि होगी एवं भ्रूण हत्या के मामले बढ़ेंगे तथा शिक्षा का स्तर घटेगा। सप्तम भाव का स्वामी शत्रु राशि में स्थित है इसके प्रभाव से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में भारी वृद्धि होगी। महिलाओं से सम्बन्धित कल्याण योजनाओं का लाभ जरूरतमन्द महिलाओं को नहीं मिलेगा। नवमाधिपति केन्द्र में शत्रु के घर स्थित होने से कानून व्यवस्था की स्थिति पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा। अपराधों में भारी वृद्धि होगी। राज्य स्थान में राहु स्थित है तथा राज्य स्थान का अधिपति शत्रु की राशि में स्थित है अत: शासक को अपने ही लोगों से चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। अत: सत्ता पर पकड़ बनाये रखने के लिए शासक को विशेष प्रयास करने पड़ेंगे।

राजस्थान- लग्न राशि का स्वामी शुक्र उच्च का होकर रिपुभाव में स्थित है अत: शासक को विरोधों व प्रदर्शनों का सामना करना पड़ेगा। विकास की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतया अनुकूल है। कुटुम्ब भाव का स्वामी शत्रु राशि में स्थित है अत: लोगों को प्राकृतिक प्रकोपों अतिवर्षण, अल्प वर्षण, रोग भूकम्पादि से पीड़ा होगी। पराक्रम भाव का स्वामी स्वगृही होकर पराक्रम भाव में स्थित है अत: लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए विकास योजनाओं का क्रियान्वयन प्रभावी ढंग से किया जायेगा। कृषि, भूमि विकास, आवासीय भूमि विकास योजनाएं भी प्रभावी ढंग से लागू होंगी। शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित सुधार नहीं होगा। भ्रूण हत्या एवं बालमृत्युदर के मामलों में भारी वृद्धि होगी। मनोरंजन के साधनों द्वारा अपसंस्कृति का प्रसार होगा। महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। महिला कल्याण कार्यक्रमों का आवश्यकता वाली महिलाओं को पूर्ण लाभ नहीं मिलेगा। कानून-व्यवस्था की स्थिति कुछ भागों में सन्तोषजनक नहीं होगी। भारी विरोधों के होते हुए भी शासक की सत्ता पर पकड़ बनी रहेगी।

महाराष्ट्र- इस प्रांत की प्रभाव राशि सिंह का स्वामी सूर्य, राशि से अष्टम स्थान में स्थित है तथा षष्ठेश लग्न में केतु के साथ स्थित है इसके प्रभाव से इस वर्ष इस राज्य में अपराधों की संख्या में भारी वृद्धि होगी। धनेश-कुटुम्बेश नीच का होकर अष्टम स्थान में स्थित है। इसके प्रभाव से लोगों को कष्ट होगा तथा लोगों की क्रय शक्ति में कमी होगी। सुखभाव का अधिपति लाभ स्थान में शत्रु के घर स्थित है इसके फलस्वरूप कुछ स्थानों में कृषि की हानि होगी। पंचमेश पंचम भाव में स्थित होने से शिक्षा में सुधार एवं बाल विकास कार्यक्रम, जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। सप्तम भाव में राहु स्थित है तथा सप्तमेश शत्रु के घर स्थित है इसके प्रभाव से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी एवं तलाक के मामलों की संख्या में भारी वृद्धि होगी। नवमभाव का अधिपति लाभ स्थान में शत्रु के घर स्थित है अत: राज्य में कुछ भागों में कानून-व्यवस्था की स्थिति चिन्ताजनक होगी वैसे अन्य भागों में सामान्य रहेगी। कुछ लोग सांप्रदायिक वातावरण दूषित करने का प्रयास करेंगे। राज्येश उच्च का होकर अष्टम भाव में स्थित है तथा दशम भाव पर शनि की भी दृष्टि है अत: कुछ लोग शासक के लिए समस्या उत्पन्न करेंगे अत: शासक को सत्ता पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ेंगे।

बिहार- वृष राशि से प्रभावित इस राज्य की राशि का अधिपति उच्च का होकर लाभ स्थान में स्थित है इसके प्रभाव से राज्य विकास के मार्ग पर आगे बढ़ेगा। द्वितीय भाव में भौम के स्थित होने से कुछ भागों में आर्थिक प्रगति अपेक्षित गति से नहीं होगी तथा लोगों में असन्तोष रहेगा। चतुर्थ भाव का अधिपति लाभ स्थान में स्थित है तथा शनि एवं केतु चतुर्थ भाव में स्थित होने से कृषि उत्पादन में वृद्धि, कृषि भूमि का विकास होगा। आवासीय एवं औद्योगिक क्षेत्रों का भी द्रुत गति से विकास किया जायेगा। कुछ भाग प्राकृतिक प्रकोपों एवं रोगादि से प्रभावित होंगे। पंचम भाव का अधिपति नीच राशि का होकर लाभ स्थान में स्थित है अत: पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है इसके प्रभाव से शिक्षा में सुधार किया जायेगा। बाल विकास कार्यक्रम एवं बालमृत्युदर घटाने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान दिया जायेगा। किन्तु मनोरंजन के साधन अपसंस्कृति का विस्तार करने का कार्य करेंगे। सप्तम स्थान का अधिपति शत्रु राशि में स्थित है इसके फलस्वरूप महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में कमी नहीं होगी तथा तलाक के मामलों में वृद्धि होगी। नवमाधिपति शत्रु राशि में स्थित होने से कुछ भागों में कानून व्यवस्था की समस्या उत्पन्न होगी एवं सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने का समाजविरोधी तत्व प्रयास करेंगे। दशमाधिपति दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अत: शासक की सत्ता पर पकड़ बनी रहेगी। दशम भाव में राहु के भी स्थित होने से कुछ विरोधी समस्या उत्पन्न करेंगे। अत: कुछ समय शासक को उग्र विरोधों एवं समस्याओं को झेलना पड़ेगा।

दक्षिणी राज्य- आन्ध्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु- आन्ध्र प्रदेश का राश्याधिप तृतीयभाव में स्थित है अत: विकास कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। धनभाव का अधिपति उच्च का है अत: लोगों के जीवनस्तर में सुधार होगा। चतुर्थाधिपति की स्थिति व्ययस्थ है अत: कुछ भाग प्राकृतिक प्रकोपों से प्रभावित होंगे तथापि कृषि एवं आवासीय क्षेत्रों का विकास होगा। पंचमेश व्ययस्थ है तथा पंचम भाव में शनि-केतु स्थित है अत: बालमृत्युदर में वृद्धि होगी। शिक्षा में सुधार के प्रयास होंगे किन्तु मनोरंजन

के साधन अपसंस्कृति का विस्तार करेंगे। महिला कल्याण योजनाएं प्रभावी होंगी। कानून व्यवस्था एवं साम्प्रदायिक सौहार्द्र की स्थिति संतोषजनक रहेगी। राज्येश त्रिकोण में शत्रु के घर स्थित है अतः शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा किन्तु सत्ता पर शासक की पकड़ मजबूत रहेगी। कर्नाटक व केरल का राश्याधिप यद्यपि नीच राशि का है किन्तु केन्द्र में स्थित होने से ये दोनों राज्य प्रगति पथ पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा में सुधार होगा। लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। कृषि का उत्पादन बढ़ेगा तथा आवासीय क्षेत्र का भी विकास होगा। कुछ भाग प्राकृतिक प्रकोपों, रोगादि से भी प्रभावित होंगे। औद्योगिक विकास की गति तीव्र होगी। महिलाओं के कल्याण के लिए प्रभावी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जायेगा। कुछ भागों में कानून व्यवस्था की स्थिति एवं सांप्रदायिक सौहार्द्र चिन्ता का विषय बनेंगे किन्तु कुल मिलाकर स्थिति संतोषजनक रहेगी। शासक को कुछ सामान्य विरोधों का सामना करना पड़ेगा किन्तु शासक की सत्ता पर पकड़ मजबूत रहेगी। तमिलनाडु का राश्याधिप उच्च का होकर रिपु भाव में स्थित है तथा शनि की तृतीय दृष्टि भी लग्न पर है अतः यद्यपि यह राज्य प्रगति पथ पर आगे बढ़ेगा किन्तु राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर एवं अशान्त रहेगा। चतुर्थ भाव का अधिपति लाभ स्थान में स्थित है इसके प्रभाव से कृषि एवं आवासीय क्षेत्रों का विस्तार होगा। पंचम भाव में राहु के स्थित होने से शिक्षा के स्तर में सुधार नहीं होगा एवं बालमृत्युदर में वृद्धि होगी। महिलाओं एवं बच्चों पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। तलाक के मामलों में वृद्धि होगी। कानून व्यवस्था व सांप्रदायिक सौहार्द्र की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल नहीं कहा जा सकता है। शासक की शासन पर पकड़ कमजोर होगी।

बंगाल, आसाम, उड़ीसा, अरुणाचल प्रदेश- अरुणाचल एवं आसाम का राश्याधिप तृतीय भाव में स्थित है तथा धन भाव का अधिपति उच्च की राशि में है अतः ये राज्य आर्थिक दृष्टि से प्रगति करेंगे। उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। लोगों में सदभावना उत्पन्न करने के प्रयास किये जायेंगे। आवासीय एवं कृषि व औद्यागिक क्षेत्रों का विकास होगा। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के प्रयास होंगे किन्तु इसके वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। बालमृत्युदर में कमी नहीं होगी। अपसंस्कृति का विस्तार होगा। महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं होंगी। कानून-व्यवस्था व सांप्रदायिक सौहार्द्र की स्थिति संतोषजनक रहेगी। राज्येश त्रिकोण में शत्रु के घर स्थित है अतः शासक को विरोधों एवं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। सत्ता पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए शासक को विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। बंगाल एवं उड़ीसा का राश्याधिप उच्च का होकर स्थित है अतः ये दोनों राज्य प्रगति पथ पर अग्रसर होंगे। औद्योगिक विकास की दर बढ़ेगी। किन्तु कुछ भागों में विकास का लाभ सभी को नहीं मिलेगा। केतु एवं शनि के चतुर्थ भाव में स्थित होने से प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि क्षेत्र एवं आवासीय क्षेत्र की हानि होने की सम्भावना है तथा कुछ स्थानों से लोगों को सुरक्षा की दृष्टि से जाना पड़ेगा। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सुधार नहीं होगा। बालमृत्युदर में वृद्धि होगी। महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में कमी नहीं होगी। कानून-व्यवस्था की स्थिति कुछ स्थानों में संतोषजनक नहीं होगी। कुछ भागों में सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने का आसामाजिक तत्व प्रयास करेंगे। राज्यस्थान में राहु के स्थित होने से शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा किन्तु शासक की सत्ता पर पकड़ बनी रहेगी।

खाद्यान्न समस्या

अन्नं प्राणोबलं चान्नमन्नं सर्वार्थ साधकम्।
देवासुरमनुष्याश्च सर्वे धान्योपजीविनः।

गेहूँ आदि खाद्य पदार्थों की महंगाई निरन्तर बढ़ते जाने की भविष्यवाणी गत ४० वर्षों से इस पंचांग में करते आ रहे हैं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शनैः-शनैः महंगाई बढ़ती गई और विगत अनेक वर्षों से तो सुरसा के मुख की भांति विकराल रूप से बढ़ती जा रही है। १०-११ वर्ष पूर्व गेहूँ चावल, चना, चीनी, चांदी, सोना आदि का जो भाव था वह दुगने तिगुने से भी अधिक हो गया है। मंहगाई रोकने और गरीबी दूर करने की राजनेताओं की चुनावी घोषणाएं निरर्थक सिद्ध हुई। भारत के प्राचीन महर्षियों ने अन्न की महिमा में कहा है कि राजा या राष्ट्रनायक को अपने राजकीय अन्न भंडार में तीन वर्ष तक राष्ट्र के पोषण योग्य संग्रह रखना चाहिए। सोना, चांदी, माणिक्य आदि रत्नों की ओर न भाग कर जैसे और जिस विधि से भी हो अधिक अन्न उपजाकर अपना तथा राष्ट्र का हित करना चाहिए।

वायु परीक्षा

यहाँ वर्षा दुर्भिक्ष उत्पातादि का विचार ग्रहयोगानुसार लिखा गया है। आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा और अन्य दिव्य अन्तरिक्ष- लक्षण जहाँ शुभ शकुन का संकेत देंगे, वहाँ अवर्षण उत्पात दुर्भिक्ष न होकर सामयिक सुवृष्टि एवं सुभिक्ष होगा। जहाँ आषाढ़ी पूर्णिमा को सूर्यास्त समय दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कोण की वायु चलेगी वहाँ दुर्भिक्ष, उत्पात, रोग, भय, अधिक होंगे। विद्वान, दैवज्ञों को वर्ष भर के गर्भ लक्षण शकुन विचार नोट करने चाहिए। वर्ष भर के न हो सकें तो कम से कम इस वर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा १३ जुलाई रविवार को सायं तक खुले स्थान में जाकर ध्वजा पूजन पूर्वक विधिवत वायु-परीक्षा करके अपने राष्ट्र के शुभाशुभ फल का निर्णय करें।

वाणिज्य व्यवसाय

इस वर्ष वाणिज्य व्यवसाय का प्रतिनिधि ग्रह बुध धान्येश भी है तथा वर्ष कुण्डली में बुध नीच राशि का होकर लाभस्थान में स्थित है। अतः व्यापारी वर्ग को धान्यों के व्यापार से आर्थिक लाभ उत्तम प्राप्त होगा। बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश भी है। अतः नीति निर्धारण में व्यापारी वर्ग के हितों का भी ध्यान रखा जायेगा। बुध यद्यपि लाभस्थान में स्थित है

किन्तु नीच राशि में है इसके प्रभाव से व्यापारी वर्ग को विभिन्न समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा। असामाजिक तत्व व्यापारी वर्ग के लिए विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न करेंगे। व्यापारी वर्ग में असुरक्षा की भावना बलवती होगी। धातु एवं लौह पदार्थों एवं तेल, खनिज आदि के भावों में भारी वृद्धि होगी।

वायुमण्डल वर्षारोगोत्पादि

इस वर्ष की ग्रह स्थिति के आधार पर प्राचीन ग्रन्थों से सार्वत्रिक वर्षादि का सामूहिक विचार यहाँ लिख रहा हूँ। भौमान्तरिक्ष दिव्य निमित्तानुसार वर्षा वायु भिन्न प्रान्तों में विभिन्न रूपों में होती है। भारतीय वायुशास्त्र में प्रत्येक नगर या मंडल में प्रतिदिन की वायु मेघगर्जना बादल विद्युतादि की परीक्षा द्वारा व वृष्टि-गर्भ लक्षण का उल्लेख है। जैसे- आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा द्वारा तत्रद्देशीय दुर्भिक्ष-सुमिक्ष का ज्ञान होता है, वैसे ही प्रत्येक मास की प्रमुख तिथियों की वायु वर्षा मेघ-गर्जन आदि अन्तरिक्ष निमित्त से भावी वर्षा का ज्ञान होता है। इस कार्य के लिए प्रत्येक प्रान्त व मंडल में एक वायु-वृष्टि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हो जिसमें प्रतिदिन की वायु-वर्षा का रिकार्ड रखा जाये, उस अन्तरिक्ष दिव्य निमित्त और ग्रह योगों का मिलान करके वर्षादि की जो भविष्यवाणी की जायेगी वह उस स्थान के लिए सत्य सिद्ध होगी। भौमान्तरिक्ष दिव्य निमित्तों के बिना केवल ग्रहयोगों से की गई भविष्यवाणी सर्वत्र शतप्रतिशत सही हो यह निश्चित नहीं। यह बात विगत कई वर्षों से इस पंचांग में निरन्तर लिखी जा रही है परन्तु केन्द्रीय शासन ने राष्ट्र के लिए परमोपयोगी इस विषय पर ध्यान नहीं दिया। प्रतिवर्ष बाढ़ और सूखा से यत्र-तत्र भयंकर विनाश हो रहा है।

वर्षा योग

सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से दस नक्षत्र वर्षाकारक माने गये हैं। भारत में २१ जून से मेघागमन (मानसून का प्रारम्भ) माना जाता है। समुद्र तटवर्ती दक्षिणवर्ती भारत में मृगशीर्ष नक्षत्र में सूर्य प्रवेश होने पर १० जून के लगभग मानसून सक्रिय हो जाता है। वर्षा एवं कृषि उत्पादन के लिए सूर्य आर्द्रा प्रवेश का विशेष महत्व है।

आर्द्रा प्रवेशे यदि भास्करस्य चन्द्रस्त्रिकोणे यदि केन्द्रगोवा।
जलाश्रये सौम्यनिरीक्षिते च सम्पूर्ण सस्या वसुधा तदा स्यात्॥

भारत में वर्षा के दिन

२१ जून २००८ को रात्रि ९ बजकर ४३ मिनट पर शनिवार इष्टकाल ४०।३७ पर मकर लग्न के समय सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। वर्षा काल की अवधि २२ जून २००८ से २२ अगस्त के मध्य की होती है। इस वर्षाकाल की अवधि में सूर्य के साथ आरम्भ में शुक्र, सूर्य के आगे मंगल, शनि तथा कुछ अवधि में मंगल सूर्य के आगे रहेगा। कुछ अल्प अवधि में चतुर्ग्रही योग भी बनेंगे। अतः वर्षा अनिश्चितता वाली, कहीं अत्यधिक वर्षा होने से हानि होगी तथा कुछ भागों में वर्षा की कमी भी होगी तथा कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होगी। ४ से १८ जुलाई के मध्य खण्डवृष्टि होगी। १९ जुलाई से १ अगस्त के मध्य कहीं भारी वर्षा से हानि होगी। २ अगस्त से १६ अगस्त के मध्य कुछ भाग में हानिप्रद भारी वर्षा व कुछ भागों में सामान्य वर्षा होगी।

१७ अगस्त से ३० अगस्त के मध्य अधिकांश भागों में तेज वर्षा होगी। कुछ भागों में वर्षा का अवरोध होगा। ३१ अगस्त से १५ सितम्बर के मध्य व्यापक तेज वर्षा होगी तथा वायु का भी तेज प्रवाह होगा। कहीं-कहीं खण्डवृष्टि भी होगी। १६ सितम्बर से २९ सितम्बर के मध्य तेज वायु के साथ सामान्य वर्षा होगी। ३० सितम्बर से १४ अक्टूबर के मध्य सूर्य के आगे मंगल शुक्र के होने से कहीं वर्षा व कहीं खण्ड वृष्टि होगी तथा कहीं वर्षा का अवरोध होगा। १५ अक्टूबर से २८ अक्टूबर के मध्य छिटपुट बूंदा-बांदी होगी। २९ अक्टूबर से २७ नवम्बर के मध्य छिटपुट बूंदा-बांदी होगी व तेज हवा चलेगी। २८ नवम्बर से १२ दिसम्बर के मध्य कहीं-कहीं तेज वायु के साथ वर्षा होगी व शीत में वृद्धि होगी। १३ से २७ दिसम्बर के मध्य हल्की बूंदा-बांदी के साथ शीत में वृद्ध होगी। २८ दिसम्बर से ११ जनवरी के मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में शीत के साथ हिमपात की सम्भावना है। मैदानी भागों में शीतलहर चलेगी तथा ओलावृद्धि व हल्की वर्षा की सम्भावना है। १२ से २६ जनवरी के मध्य कहीं-कहीं वायु के साथ वर्षा होगी तथा पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात की सम्भावना है। २७ जनवरी से ९ फरवरी के मध्य वायु के तेज प्रवाह के साथ हिमपात की सम्भावना है, कहीं भारी वर्षा, ओलावृष्टि से हानि संभव है। तेज शीत लहर का प्रभाव होगा। १० फरवरी से २५ फरवरी के मध्य शीत के प्रकोप के साथ साधारण वर्षा भी होगी। मैदानी भागों में ऋतु परिवर्तन के लक्षण प्रकट होंगे। २६ फरवरी से ११ मार्च के मध्य छिटपुट बूंदाबांदी सम्भव है। ऋतु परिवर्तन के लक्षण दिखाई देंगे। मैदानी भागों में दिन में गर्मी व रात्रि में शीत होगी। १२ से २६ मार्च के मध्य की अवधि में पर्वतीय क्षेत्रों में वायु प्रवाह के साथ-साथ बूंदाबांदी होगी तथा मैदानी भागों में गर्मी बढ़ने लगेगी।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येनमार्गेण महीं महीपाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकास्समस्ताः सुखिनो भवन्तु।

मंगलाकांक्षी

गोपाष्टमी, कार्तिक शुक्ल ८
रविवार, संवत् २०६४ विक्रमी
दिनांक: १८-११-२००७ ई.

पं० सुधाकर शर्मा त्रिवेदी
ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन (हि.प्र.)
फोन/ फैक्स- ०१७९२-२२०५९६
E-mail : rohitashw@gmail.com
web site : www.shrivishwavijay.com

क्या कहती है आपकी उंगलियां

हाथ की रेखाओं का वैज्ञानिक और पौराणिक दोनों ही प्रकार से बड़ा महत्व है। जो लोग निरक्षर हैं उन्हें हाथ के अंगूठे के निशान से बैंक लाखों रुपये का भुगतान कर देता है। पुलिस फोरेन्सिक तथा गुप्तचर विभाग में आज भी उंगलियों के निशान से अपराधियों को आसानी से पकड़ा जा सकता है। राजकीय सेवा में आने पर सेवा पुस्तिका तथा सेवा निवृत्त होने पर वर्णात्मक नामावली में हाथ की उंगलियों के निशान चिह्नित करना आज भी आवश्यक है।

हमारे शात्र कर्म करने पर जोर देते हैं, यह सही है लेकिन कई बार अत्यधिक कर्म करने पर भी उसका उतना फल नहीं मिल पाता जितना व्यक्ति ने कर्म किया है। एक ही विद्यालय में एक ही गुरू द्वारा एक जैसी शिक्षा लेने पर दो व्यक्ति भी ऐसे नहीं निकलते जिनकी प्रकृति, आचरण या भविष्य एक जैसा हों। एक ही मां के गर्भ से जन्म लेने वाले प्रत्येक सहोदर का अपना-अपना भविष्य होता है।

हस्तरेखा का पौराणिक महत्व :- जहाँ हस्तरेखाओं का वैज्ञानिक महत्व हैं वहीं हमारे पौराणिक ग्रंथों में भी इसका बहुत महत्व मिलता है। ''वाल्मीकीय रामायण'' में लिखा है कि जब मेघनाथ, राम और लक्ष्मण को नागपाश से घायल कर देता है तब रावण, सीता को यह बताने के लिए कि राम और लक्ष्मण मर चुके हैं। पुष्पक विमान से जहां राम और लक्ष्मण पड़े हुए थे, दिखाने ले जाता है। सीता देखती है कि राम और लक्ष्मण अचेत अवस्था में पड़े हैं तथा सारे वानर उन्हें घेरे हुए हैं तब सीता राक्षसियों से कहती हैं कि ''सामुद्रिकों'' (हस्तरेखा विशेषज्ञों) ने मुझे बताया था कि मैं विधवा नहीं होऊंगी और पुत्र की माता बनूंगी। जिन स्त्रियों के तलवों में कमल चिन्ह होते हैं वे राजाओं की पत्नियाँ बनती हैं। जिन लक्षणों से स्त्रियाँ विधवा होती हैं वे लक्षण मेरे में नहीं है। कन्या के लक्षण जानने वाले कुशल ज्योतिषियों ने मुझे कहा था कि मेरा राज्य अभिषेक होगा।''

इतना ही नहीं गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी माता कौशल्या द्वारा श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का बालकपन में भविष्य जानने के लिए एक आगमी (ज्योतिषी) के अयोध्या आने का वर्णन ''गीतावली'' के पद संख्या १७ में निम्न प्रकार से किया है :-

''आज अवधपुरी में एक आगम जानने वाला ज्योतिषी आया है। वह हथेली देखकर ही सारे गुण बता देता है। उसके कथन का कई लोग परिचय पा चुके हैं। वह बूढ़ा ब्राह्मण बड़ा ही प्रणाणिक है। उसका अति सुन्दर शंकर नाम हैं। यह सुनकर माता कौशल्या ने उसे महल के भीतर बुलवाया। उसके चरण धो-पूजकर, आसन दिया तथा भोजन कराया, वस्त्र पहनाये। उसके चरणों में चारों बालकों को डालकर उनके सिर पर हाथ फिरवाया। ब्राह्मण बालकों को गोद में ले लेकर कर-कमल देखने लगे। उन्होंने उनके जन्म के समय की बातों का वर्णन किया और भविष्य में विश्वामित्रजी की यज्ञ रक्षा करने से लेकर सीताजी के साथ स्वयंवर होने तक की बात कही।

तर्जनी में छिपा भविष्य :- अंगुष्ठ के पास वाली उंगली को तर्जनी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे 'इन्डेक्स फिंगर'' के नाम के जाना जाता है। प्रत्येक उंगली में तीन पर्व होते हैं इन्हें ऊपर से क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पर्व कहा जाता है। तर्जनी के प्रथम पर्व में ''मेष'' राशि द्वितीय में ''वृष'' तथा तृतीय में ''मिथुन'' राशि का निवास स्थान होता है। हाथ की चारों उंगलियों के १२ पर्व १२ राशियों को इंगित करते हैं। कोई भी हस्तरेखा विशेषज्ञ उंगलियों की इन राशियों के माध्यम से जातक की जन्मपत्री आसानी से बना सकता है। इस उंगली के नीचे गुरु पर्वत का निवास होने के कारण इसे ''जुपिटर फिंगर'' (गुरु की उंगली) भी कहते हैं। साधरणतया यह उंगली मध्यमा तथा अनामिका से छोटी होती है लेकिन इस उंगली का मध्यमा के बराबर होना बहुत ही उत्तम माना जाता है। ऐसा व्यक्ति धनाढ्य, गौरवशाली तथा उच्च पद पर आसीन होता है। नेपोलियन बोनापार्ट की तर्जनी और मध्यमा बराबर लम्बी थी। इसलिये कुछ लोग इस उंगल को नेपोलियन फिंगर भी कहते हैं। किसी-किसी हाथ में यह मध्यमा से छोटी तो होती है लेकिन अनामिका के बराबर देखी जाती है ऐसा व्यक्ति भली-भाँति विचार करके निर्णय लेता है। वह स्वाभिमानी तथा नीतिज्ञ होता है। उसके प्रत्येक कार्य आसानी से बनते जाते हैं। यदि यह मध्यमा से लम्बी हो तो ऐसे व्यक्ति तानाशाही मिजाज के होते हैं उनमें दूसरों पर हुकूमत करने की प्रबल इच्छा पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति न्याय के क्षेत्र में सफल हो सकते हैं। यदि अन्य ग्रह बलवान हो तो ऐसे व्यक्ति सफल एडवोकेट, जज या उच्च स्तर के प्रशासक हो सकते हैं। यदि अन्य उंगली मध्यमा तथा अनामिका दोनों में छोटी हो तो बाधाओं की सूचक हैं। बिना बाधा आये ऐसे व्यक्ति का कोई काम नहीं बनता।

मध्यमा में छिपा भविष्य :- तर्जनी के पास वाली बड़ी उंगली को ''मध्यमा'' कहते हैं। इसके नीचे शनि का पर्वत होने से इसे अंग्रेजी में ''फिंगर ऑफ सेटर्न'' भी कहा जाता है। इसके प्रथम पर्व में ''मकर'' द्वितीय में ''कुंभ'' तथा तृतीय में ''मीन'' राशि का निवास होता है। पूर्व में बताया गया कि तर्जनी और मध्यमा का बराबर होना शुभ है वहीं अनामिका और मध्यमा का बराबर होना अशुभ है। ऐसे व्यक्ति अपने धन का अपव्यय व्यर्थ की चीजों जैसे लाटरी, सट्टे, जुआ आदि में करते रहते हैं। इस उंगली का अधिक लम्बा होना भी शुभ नहीं है। ऐसे व्यक्ति पूर्णतया भाग्यवादी हो जाते हैं। वे हमेशा चिन्तातुर तथा उदास बने रहते हैं। यदि यह अनामिका की तरफ झुक रही हो तो वैचारिक अस्थिरता का प्रतीक है। मध्यमा के तर्जनी की तरफ झुकने से आत्मविश्वास की बढ़ोत्तरी होती है तथा ऐसे व्यक्ति आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं।

अनामिका में छिपा भविष्य:- मध्यमा तथा कनिष्ठ (सबसे छोटी) के मध्य अनामिका का स्थान है। इसे अंग्रेजी में ''फिंगर आफ अपोलो'' कहते हैं। इसके ठीक नीचे सूर्य पर्वत का स्थान होने से इसे सूर्यांगुली से भी संबोधित करते हैं। इसके प्रथम पर्व में ''कर्क'' राशि द्वितीय में ''सिंह'' तथा तृतीय में ''कन्या'' का निवास माना गया है। यदि इससे तर्जनी बड़ी हो तो उन्नतशील के साथ-साथ वह कुशल व्यापारी भी बनता है। अनामिका और तर्जनी के बराबर होने से जातक अनेक कलाओं का जानकार होगा उसमें

नाम कमाने की अभिलाषा होगी। वह सच्चा देशभक्त होगा। इसका मध्यमा के बराबर होना अशुभ है। ऐसे व्यक्ति अपव्ययी तथा स्वार्थी होते हैं। अपने धन को स्वयं की गलतियों से बर्बाद करते रहते हैं। अनामिका का मध्यमा की तरफ झुकना अपराधिक प्रवृत्ति का प्रतीक है वे बदनाम होते हैं। यदि अन्य ग्रह खराब हो तो जेल की यात्रा भी हो सकती है। इसका कनिष्ठिका की तरफ झुकना बहुत शुभ है। ऐसे व्यक्ति का बड़ा चढ़ा व्यापार होता है। वे धनी होते हैं।

कनिष्ठिका में छिपा भविष्य :- हाथ की सबसे छोटी उंगली का नाम कनिष्ठिका है। इसे अंग्रेजी में लिटिल फिंगर कहते हैं। इसके नीचे बुध पर्वत का निवास होने से इसे ''फिंगर आप मरकरी'' भी कहते हैं। इसके प्रथम पर्व में ''तुला'' द्वितीय में ''वृश्चिक'' तथा तृतीया में ''धनु'' राशि का निवास होता है। इसका बड़ा होना बहुत ही शुभ है। यदि यह अनामिका के प्रथम पर्व के आधे भाग को पार कर जाये तो ऐसे व्यक्ति उच्च कोटि के प्रशासक होते हैं। ''नारद सँहिता'' के अनुसार ऐसे जातक सौ वर्ष तक जीते हैं। कनिष्ठिका का छोटा होना कार्यों में असफलता का प्रतीक है तथा इसका टेढ़ा होना वैचारिक अस्थिरता का द्योतक है।

अंगुष्ठ में छिपा भविष्य:- हाथ का सबसे महत्वपूर्ण अंग अंगुष्ठ है। अंगुष्ठ और मस्तिष्क का घनिष्ठ संबंध है। मुख्यत: ये दो प्रकार के होते हैं। एक सीदा और सुदृढ़ तथा दूसरा झुका और कोमल।

जिसके हाथ का अंगूठा सुदृढ़ हो तो वे जिद्दी स्वभाव के होते हैं दूसरे की बात को ज्यों की त्यों स्वीकार नहीं करते। अच्छे तार्किक होते हैं। अपने दृढ़ विचारों के कारण वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं। पैसे का सदुपयोग करना वे भली भाँति जानते हैं। यदि अंगुष्ठ अधिक दृढ़ हो तो ऐसे व्यक्ति बड़े कंजूस होते हैं। पैसे के मामले में वे बहुत रूखे होते हैं।

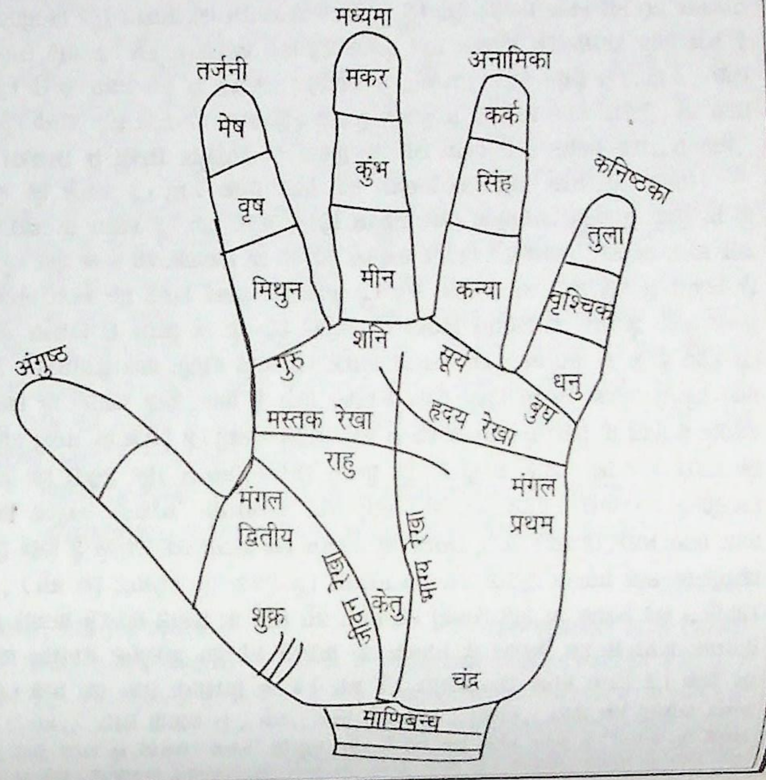
कोमल और झुके अंगूठे से व्यक्ति के जीवन में अस्थिरता आ जाती है। यदि मस्तिष्क रेखा सीधी न होकर झुकी हुई हो तो वे सही समय पर सही निर्णय नहीं ले पाते। प्रवृत्ति खर्चीली होते है। वे समय व पैसे का सदुपयोग नहीं कर सकते। लेकिन ऐसे जातक उदार, दयालु, परोपकारी भावुक और कल्पनाशील होते हैं। दूसरों के हित सम्पादन में वे स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं, जल्दबाज होते हैं। विचारों में बार-बार परिवर्तन करने के कारण उन्हें सफलता नहीं मिल पाती। लेकिन ऐसे व्यक्ति हर परिस्थिति में अपने आपको ढाल लेने की अद्भुत शक्ति रखते हैं।

अंगूठे के तीन भाग होते हैं- ऊर्ध्व (नख के पास वाला) भाग, मध्यम भाग तथा अधोभाग ये क्रमश: इच्छा शक्ति, विचार शक्ति तथा प्रेम शक्ति के प्रतीक हैं।

अंगूठा लम्बा होना बहुत शुभ है यदि तर्जनी के तृतीय पर्व तक पहुंच जाए तो ऐसे जातक अपनी हर अभिलाषा पूरी करते हैं, वे धनाढ्य और खुशहाल होते हैं।

यदि यह छोटा हो, गुरु पर्वतक तक ही जाए तो ऐसे व्यक्ति हमेशा असंतुष्ट और काम वासना के वशीभूत होकर कदाचारी होते हैं। अंगूठा सीधा, चीकना, ऊँचा तथा गोल होना चाहिए इसके विपरीत बेढंगे और कुरूप अंगूठे वाले पाश्विक प्रवृत्ति के तथा मूर्ख होते हैं। ये कब क्रोधित हो जाए और कब प्रसन्न, कुछ नहीं कहा जा सकता। ऐसे व्यक्ति अपने अभीष्ट कार्य सिद्धि के लिए जोर जबरदस्ती भी करते देखे गए हैं। अंगूठा यदि ऊपर से अत्यधिक मोटा हो तो ऐसे व्यक्ति अपराधिक कार्यों में रुचि रखते हैं। छोटी छोटी बातों पर गुस्सा कर लड़ाई करना उनकी आदत होती है। कोर्ट कचहरी के चक्कर लगते रहते हैं। यदि अन्य ग्रह निर्बल हो तो ऐसे व्यक्ति किसी की हत्या भी कर सकते हैं। सुन्दर सीधे और सुदृढ़ अंगूठे वाले कुशल व्यापारी, नीतिज्ञ, डॉक्टर तथा गणितज्ञ होते हैं।

- **पं. श्रीकृष्ण शर्मा, भगवत् कृपा ज्योतिष शोध संस्थान,** ३८, जे.पी. कालोनी, टोंक फाटक, जयपुर (राजस्थान) फोन- ०१४१-२५९११६३, मो. ९४६०११०११०



यदि यह छोटा हो, गुरु पर्वतक तक ही जाए तो ऐसे व्यक्ति हमेशा अनातप और

सामूहिक व्यापार भविष्य सम्वत् २०६५ वि०

गणित कर्ता- विश्व बन्धु शर्मा एवं जयवर्द्धन शर्मा

श्री ओंकाराश्रम ज्योतिष भवन, २१/२२ ब्रह्मनान, पो० हापुड़ (उ० प्र०)

अथ सम्वत् २०६५ विचार - सम्वत् २०६५ का वर्ष प्लव नाम का सम्वत् है। इस वर्ष का राजा चंद्र और मंत्री सूर्य हैं। सस्येश-बुध, धान्येश-चन्द्र, मेघेश-शनि, रसेश-गुरु नीरसेश व धनेश-भौम, फलेश- शनि और दुर्गेश भी शनि ही हैं। इस प्रकार आकाशीय कौंसिल के दस पदाधिकारी बनते है।

बुध के सस्येश पद पर आरुढ़ होने से फसल ठीक-ठाक होते हुऐ भी कीमतों कें अनुक्रम में वृद्धिदायक रूख रहेगा। जब-जब बुध का क्रूर ग्रहों से दृष्टी सम्बध बनेगा तब-तब तेजी का रुख देखने को मिलेगा। धान्येश चन्द्र धान्यों की फसल को बढ़ायेंगे। धान्यों में नरमी का कारक बनेंगे। मेघेश-शनि अत्यधिक वर्षा तो कहीं अत्यल्प वर्षा का कारण बनेगा। रसेश गुरु-रस पदार्थो के भावों में रस पदार्थो की अनुमान से अधिक पैदावार के कारण नरमी कारक होंगे। नीरसेश व धनेश भौम हैं जो वर्षा की प्रचुरता करेंगे और प्रजा में सुख की अनुभूति करायेंगे। फलेश व दुर्गेश शनि हैं जिस कारण देश पर आतंकवादी घटनाओं की काली छाया गहराती हुई दिखाई देगी। अतः सरकार व प्रजा को इन घटनाओं से बार-बार दो चार होना पड़ेगा। हमारा उद्देश्य व्यापारिक भविष्य कथन करना है अतः लेख को विस्तार न देते हुए दसाधिकारी गणों का विवेचन यहीं पर समाप्त किया जाता है साथ में समय निवास वैश्य घर होने से तेजी की अधिकता अधिक होगी अर्थात् घोर तेजी के योग अवश्य बनेंगे। पाप ग्रहों से अधिक अधिकार प्राप्त करने से उपद्रव, चौर भय तथा रोगों द्वारा प्रजा का पीड़ित रहना पाया जाऐगा। पशुओं पर अत्यधिक क्रूरता के कारण दूध, दही, घी की कमी स्पष्ट दिखाई देगी। अब आगे सम्वत् २०६५ का व्यापार भविष्य प्रारम्भ करते हैं।

शुक्ल पक्ष चैत्र सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस पक्ष में प्रतिपदा तिथि का क्षय रविवारी होना व्यापारिक वस्तुओं के भावों में तेजीकारक सिद्ध होगा। साथ ही पक्ष की समाप्ति भी रविवार हो होने से तेजी के लिये सोने पे सुहागा सिद्ध होगा। यद्यपि चन्द्रदर्शन सोमवारी है जो नरमी कारक है। चैत्र शुक्ल पक्ष दि. ७ अप्रैल से प्रारम्भ होकर दि. २० अप्रैल तक रहेगा। बदी दोज दि. ७ अप्रैल को पुनर्वसु में मंगल का प्रवेश रूई, कपास, गुड़, खांड, नमक, तिल, तेल, सरसों व चांदी के भावों पर तेजी कारक रहेगा। अगले ही दिन रेवती में बुध का प्रवेश १५ घटि २९ पल पर होने से गुड़, खांड, घी, तेल, तिल, सरसों व चांदी में आगामी तीन दिन में जोरदार मन्दी कारक होगा। उपरोक्त वायदा वस्तुओं में अगर दि. ९ अप्रैल को दि. ८ के बनें ऊचें भाव से भाव बढ़े तब तेजी की धारणा बनाकर तीन दिन में व्यापार करके लाभ उठायें। किन्तु ऐसा न होने पर मन्दी ही चलेगी। गेहूँ, मजीठ, केसर, गेरु लाल चन्दन, लालमिर्च के भाव तेजी पर बारह दिन चलेंगे। चैत्र शुदि अष्टमी, दि. १३ अप्रैल की शाम को मेष संक्रान्ती के प्रभाव से रूई, सूत, कपास, सुपारी, बादाम, फल, गुड़, खांड, शक्कर, तिल, तेल सरसों , सोना, चांदी के भावों में तेजी एक सप्ताह की चलेगी। जो मटर, अरहर, उरद, मूंग के भावों में मन्दी का रुख बनेगा। तब भी यह ध्यान रखें कि जिस उपरोकत वस्तु के भाव दि. ७ अप्रैल से १२ अप्रैल के बीच में बनें ऊचें भावों से बढ़ जाऐ तब उसी में तेजी पक्की। दि. २० अप्रैल तक होगी। दि. २४ अप्रैल, [illegible] में मेषे बुध के प्रभाव से मेंथा, क्रूड आयल, कॉपर, लेड के भावों में मन्दी दि. १५ से च[illegible]।

वैशाख सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

वैशाख का महीना दि. २१ अप्रैल से प्रारम्भ होकर दि.२० मई तक रहेगा। इस माह में पांच मंगलवार व पांच ही सोमवार हैं जो कि मन्दी व तेजी दोनों का ही प्रभाव डालते हैं। वैशाख कृष्ण पक्ष में कुल मिलाकर व्यापारिक वस्तु व वायदा वस्तुओं का रुख तेजी से मंदी की ओर रहेगा और शुक्ल पक्ष में मन्दी से तेजी की ओर भावों का रुख देखने को मिलेगा। वैशाख बदी पंचमी शुक्रवार की रात को मेष राशि में शुक्र का प्रवेश होना सोना चांदी में तेजी कारक है। गेहूं, जौ, चना, घी, गुड़, खांड, शक्कर, पाट बारदाना में विशेष तेजी का रुख बनेगा। सरसों, तिल, अलसी, अरन्डी व तेलों के भावों में मन्दी होगी। यह मन्दी दि.५ मई तक चलेगी। नोट- चना, गुड़, सोना, चांदी, सरसों,अरन्डी के भावों में से जिस वायदा वस्तु में दि. २६ अप्रैल को दि. २५ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे उसे बेचकर एक ही सप्ताह में मोटा लाभ उठायें। वैशाख बदी अमावस्या सोमवार को रात्रि में शुक्र का अस्त होने से धान्यादि के भावों में तेजी आती है। किन्तु बाद में रुख मन्दी में परिवर्तित हो जाता है। यहां पर स्वर्ण द्वार में शुक्रास्त हो रहा है जो सुतिक्षकारी, वर्षा कारक व मन्दी कारक होगा। वैशाख शुदि पक्ष में तीज गुरुवार को गुरु देव का शाम के समय वक्री होना सप्त धान्यादि के भावों में अचानक जोरदार मंदी होगी साथ ही तिल, तेल, घी के भाव भी मन्दे होंगे। इसी मन्दी में उपरोक्त वस्तुएं नीचा स्तर, भावों का मिलने पर स्टाक करना भी लाभदायक सिद्ध होगा। मास के अन्त में ही स्टाक करें। वायदा वस्तुओं में बदी दोज को बदी एकम् के यानि दि. ७ मई को दि. ६ मई में बनें ऊंचे भाव से ग्वार, चना, खल, बिनौला, क्रूड ऑयल, मेंथा, जिंक, लेड, निकिल के भावों में भाव बढ़े और ऊंचा ही बन्द हो तब यहां से आठ दिनों में ही विशेष तेजी की चाल निकलेगी।

वैशाख बदी दशमी बुधवार की रात्रि में सूर्य के वृष राशि में प्रवेश के प्रभाव से रुई, कपास, सूत, सोना व अनाजों में तेजी का प्रभाव बनेगा।

ज्येष्ठ सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

यह माह दि. २१ मई से प्रारम्भ होकर १८ जून तक रहेगा। इस माह में पांच बुधवार होने से नरमी की प्रधानता होगी। दि. २४ मई की रात्रि में बुध वक्री होगा यहां पर चांदी में घटबढ़ होकर तेजी चलेगी अतः घटे भाव में स्टाक करें। रुई, कपास, गेहूँ, गुड़, शक्कर के भावों में घटे स्तर पर स्टॉक करना श्रेष्ठ लाभप्रद सिद्ध होगा। आगे दि.२९ मई ज्येष्ठ बदी नवमी गुरुवार को प्रातः काल बुध का अस्त होना विशेष तेजी कारक गेहूँ, चना, मटर, रुई, कपास, सोना-चांदी जिंक, कॉपर, क्रूड, मेंथा, लैड, निकिल, गुड़, शक्कर, जूट, पाट, बारदाना, ग्वार, खल बि[illegible], कालीमिर्च, जीरा में होगा। यह तेजी १६ जून तक लम्बी लाईन के रूप में चलने की [illegible]रणा है।

नोट- अगर दि. २९ मई को २८ के बने नीचे भाव से उपर लिखी किसी [illegible] के भाव टूटें तब उसी में दि. ३ जून तक मन्दी चलेगी। बाद दि. ४ जून को ३ के बनें नीचे भाव से जिस

उपरोक्त वस्तुओं में से भाव टूटेंगे तब उसी वस्तु में मन्दी एक सप्ताह चलेगी। ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में चन्द्रदर्शन गुरुवारी, पीले व हरे रंग की वस्तुओं में नरमी कारक होगा। इसी पक्ष में दि. १३ जून की शाम को मिथुन राशि में शुक्र का पदार्पण होगा जो अरहर, ग्वार, रुई, कपास, जूट, पाट, बारदाना, तिल, तेल, सरसों में मन्दी कारक होगा। गेहूँ जौ चना में अच्छी तेजी चलेगी।

आगे दि. १४ जून की रात्रि में शनिवारी मिथुन संक्रान्ती के प्रभाव से बहुधा वस्तुऐं स्थिर रहेंगी। फिर भी सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खांड़, शक्कर, घी, उरद, मूंग, मोंठ, चावल, गेहूँ, चना, अरहर मटर तेज होगें। सोना व चांदी का रुख तेजी का कम से कम एक पक्ष रहेगा। दि. २९ मई, दि. ३ जून व १४ जून की शाम को दुर्तफा गली लगानी लाभप्रद होंगी।

आषाढ़ सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

आषाढ़ के माह का प्रारम्भ दि. १९ जून से होकर दि. १८ जुलाई तक रहेगा। इस महिने में ५ गुरुवार व ५ ही शुक्रवार हैं जो कि मन्दी कारक होने से मन्दी का प्रभाव अधिक दिखेगा। सूर्य व गुरु का सम सप्तम बहुधा मार्केटों में मन्दी का प्रभाव बनाएगा। आषाढ़ बदी तीज की शाम को सिंह राशि में मंगल के प्रवेश के प्रभाव से गुड़, खांड, शक्कर, रुई, लालमिर्च, अलसी व लोहे के बने पदार्थों के भावों में तेजी का योग बनेगा। तब भी जिन वस्तुओं में दि. २३ जून को दि. २१ जून के बनें नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूटेंगे तब उसी में मन्दी की चाल ही बारह दिन की बनेगी। शनि मघा के चर्तुथ चरण में प्रविष्ट होंगे जो मूंग, मोंठ, लौह, मैंथा, कालीमिर्च के भावों में भारी उथल पुथल करेंगे। आषाढ़ शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा का क्षय और बाद में द्वादशी तिथि की वृद्धि होने से बहुधा बाजारों में तेजी की रौनक लौट आयेगी। वायदा वस्तुओं में ग्वार, चना, कालीमिर्च, जीरा, कपास, खल बिनौला, आलू, सोया तेल, सरसों, हल्दी, चीनी, लालमिर्च, सोना, चांदी, निकिल, कपास, जिंक व लेड के मार्केटों में दि. ५ जूलाई को दि. ४ के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूटें उसी में मन्दी और जिस वस्तु में दि. ५ को ४ जुलाई के बनें ऊंचे भाव से मार्केट बढ़े उसी में तेजी की लम्बी लाईन एक सप्ताह की बनेगी। आषाढ़ शुदि त्रयोदशी दि. १६ जुलाई को प्रातः कर्क राशि में सूर्य के संचरण के प्रभाव से चांदी के भावों तेजी जोरदार होगी। नारियल, तिल, तेल के भावों में नरमी का रुख बनेगा।

विशेष :- आषाढ़ शुदि पूर्णिमा को बुधास्त लगभग २२ घटी पर होने से किसी बड़े राजनेता को विशेष कष्ट होगा। सोना चांदी में नरमी का रुख बनेगा। रुई, पाट, हैसियन, गुड़ व गेहूँ, चना कपास के वायदा मार्केटों में लम्बी मन्दी का योग बनेगा।

नोट- अगर दि. १९ जुलाई को १८ के बनें ऊंचे भाव से मार्केट बढ़े और ऊंचा ही बन्द हो तब उसी वस्तु में तेजी की लाईन बन जाऐगी। यह एटम बम चांस साबित होगा। गेहूँ, चना, अरहर, मूंग, मोंठ, उरद का स्टाक लाभ देगा।

श्रावण सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

श्रावण माह का प्रारम्भ १९ जुलाई को होकर १६ अगस्त को समाप्त होगा। इस माह में पांच शनिवारों का होना साधारण तेजी का रुख बनाएगा। श्रावण बदी पक्ष में दि. २७ जुलाई रविवार को दशमी का क्षय होना मन्दी कारक है। अतः इस तारीख के बाद उछाले में बेचकर, मन्दी आने पर लाभ उठाना ठीक रहेगा। गुरु पहले से ही बक्री अवस्था में चल रहा है ये भी मन्दी को प्रोत्साहन देने वाले सिद्ध होंगे। वायदा मार्केटों में कालीमिर्च, जीरा, सोयाबीन, चना, ग्वार, हल्दी , सोना, चांदी में दि. २१ जुलाई को दि. १९ के बनें नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव टूटें तब उसी वस्तु में मन्दी दो दिन में ही धमाकेदार होगी। दि. २३ जुलाई की रात्रि में कर्क बुध के प्रभाव से पीपरमेंट, तेल, अरहर, काजू, किशमिश, कालीमिर्च व हरे रंग के पदार्थो व वनस्पतियों के भावों में तेजी बनेगी। यद्यपि तेजी तो दो दिन पहले ही बन जाऐगी और आगे दो दिन यानि दि. २५ जुलाई तक विशेष लाभ कारी चांस सम्पन्न होगा। नोट- अगर यहाँ पर दि. २४ जुलाई को २३ के बने ऊंचे भाव कटें तब तेजी ही इस चांस में चलेगी। यहाँ पर दि. २१ जुलाई से २५ जुलाई तक बुध वर्गोत्तम में रहेंगे। आगे दि. १ अगस्त को दोपहर में सिंह शुक्र के संचरण के प्रभाव से चांदी, रुई, कपास, कपूर, जिंक, ग्वार, सफेद मटर के भावों में जोरदार चाल चलेगी। धारणा दि. ११ अगस्त तक हाजिर व वायदा में मन्दी की है। नोट- अगर दि. २ अगस्त को १ के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ जाएं तब तेजी का समय रहेगा। श्रावण शुदि दोज रविवार को चन्द्रदर्शन होने से दि. ४ अगस्त को २ के बनें ऊंचे भाव जिस वस्तु में कट जाऐ उसी में खरीद कर दो ही दिन में लाभ उठा लेवें। श्रावण बदी दशमी सोमवार को बुधोदय शाम को हो रहा है। यह बुधोदय सोना, चांदी, मैंथा, रुई, कपास के स्टॉक करने वालों को लाभ देगा। श्रावण शुदि पूर्णिमा को रात्रि में चन्द्रग्रहण व शाम को संक्रान्ती सिंह की लगने से सरसों, तिल, तेल, रत्न, गेहूँ, चना, मटर, बाजरा, मक्का, गुड़, खांड व लाल मिर्च व लाल वस्तुओं में मन्दी की चाल चलने की धारणा है। लेकिन चन्द्र ग्रहण शनिवारी तेजी कारक भी है। दुतर्फा चालदायक ग्रह होने से यह ध्यान रखें कि जिस वस्तु में दि. १८ अगस्त को १६ के बने ऊंचे भाव कटें तब खरीदकर दि. २७ अगस्त तक लाभ उठाऐं।

भाद्रपद सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

भाद्रपद माह का प्रारम्भ दि. १७ अगस्त से होकर दि. १५ सितम्बर तक रहेगा। पांच रविवार व पांच ही सोमवार तेजी व मन्दी दोनों के ही घोतक है। तब भी तेजी का प्रभाव कायम रहने की धारणा है। माह के प्रारिम्भक दिन शनि के अस्त होने के प्रभाव से सोना, चांदी, शेयर्स के बाजारों पर तेजी का प्रभाव भाद्रपद बदी दोज से बनेगा। तिल, तेल, गेहूँ, चना, गुड़, खांड, बाजरा, लोहा, मशीनरी, शेयर्स, जिंक, कॉपर, लेड, हल्दी, ग्वार के वायदा मार्केटों में दि. १८ अगस्त को दि. १६ के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ेगा तब तेजी का चांस उसी वस्तु में दि. २२ अगस्त तक सम्पन्न होगा। विपरीत यानि नीचे भाव के टूटने पर नरमी ही चलेगी। भाद्रपद बदी अष्टमी रविवार की रात्रि में कन्या राशि में बुध के प्रभाव से नवमी से सोना, चांदी आदि धातु, गुड़ चीनी, हल्दी, जौ, गेहूँ, चना के भावों में तेजी का रुख बनेगा। रुई, कपास में नरमी होगी। यह चाल एक पक्ष तक चलने की धारणा है। भाद्रपद बदी नवमी की शाम को कन्या राशि में शुक्र के संचरण के प्रभाव से गुड़, खांड व ऊनी वस्त्रों के भावों में तेजी का प्रभाव बने अतः ऊन का स्टाक करना आगे तीन माह में ही लाभ प्रद सिद्ध होगा। भाद्रपद शुक्ल पक्ष में शुदि दोज को चन्द्र दर्शन मन्दी कारक है। विशेष चांस है कि भादो शुदि अष्टमी सोमवार की रात्रि में गुरु मार्गी होंगे अतः शुदि नवमी से गुरु के अधिकार की जिन वस्तुओं में मन्दी चली आ रही होगी उनमें तेजी का बिगुल बज जाऐगा। अतः तिल, तेल, घी, गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मटर, मक्का के भावों

में जिन जिन वस्तुओं में अच्छी मन्दी आ चुकी हो उन-उन का स्टॉक करके मोटा लाभ आगे दो माह में ही प्राप्त किया जा सकता है। वायदा मार्केटों में एक दिन बाद यानि दि. १० सितम्बर को ९ के बनें नीचे भाव से (गेहूँ, चना, ग्वार, कालीमिर्च, जीरा, हल्दी, गुड़, सरसों, सोया तेल, जिंक, निकिल, कॉपर, सोना, चांदी) भाव टूटें तब उसी वस्तु को बेचकर तीन दिन में ही मोटा लाभ कमाया जा सकता है।

आश्विन माह सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह का प्रारम्भ दि. १६ सितम्बर से होकर दि. १४ अक्टूबर को समाप्त होगी। इस माह में पांच मंगलवार घोर तेजी कारक हैं। तथापि प्रथम पक्ष में बदी चौथ का क्षय होना मन्दी को बल देने वाला है। लगते आश्विन बदी प्रतिपदा को कन्या राशि में सूर्य का प्रवेश होना रुई, सूत, कपास, खल, बिनौला, नारियल, सुपारी, काजू, बादाम, अरण्डी, लालमिर्च, तिल, सरसों, सोयाबीन, तेल, सोना, चांदी, लोहा, पीतल, तांबा, जिंक, लेड के भावों में मन्दी होने की सम्भावना है। उपरोक्त वस्तुओं में जिन वस्तुओं के भाव दि. १७ सितम्बर को दि. १६ के बनें ऊंचे भाव से बढ़ जाए, उसी वस्तु की खरीद करें और दि.१६ सितम्बर को भाव ऊंचा ही बन्द हो तब खरीद कर आगे के लिये छोड़ देवे। वायदा वस्तुओं में एक सप्ताह में ही लाभ मिलने की सम्भावना है। आश्विन बदी पंचमी शुक्रवार की प्रातः तुला में शुक्र का संचरण होगा। सोना, गुड़, खांड चीनी में तेजी की चाल बनेगी। रुई, कपास में पहले तेजी बाद में मन्दी का रुख बनने की धारणा है। बदी सप्तमी को शनि का उदय होगा। बदी अष्टमी से शनि के अधिकार की वस्तुएं जो अभी तक तेजी पर होंगी उनमें मन्दी का संचार हो जायेगा। खास तौर पर लौह, लौंग, कालीमिर्च, जावित्री, जायफल, जीरा, शेयर बाजारों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। बदी नवमी को प्रातः से पूर्व वक्री बुध का होना मन्दी कारक है। यहां पर यह ध्यान रखें कि जिस वायदा वस्तु में दि.२३ सितम्बर को बने नीचे भाव से मार्केट टूटे तब उसी में मन्दी आगे बढ़ जाएगी। किन्तु ऊंचे बने भाव से बढ़ने पर तेजी का व्यापार आठ दिनों में लाभ देगा। आश्विन शुदि में एक एटम बम चांस है कि शुदि प्रतिपदा की शाम को बुधास्त का होना भंयकर तेजी की चाल गेहूँ, चना, कपास, क्रूड आयल, कालीमिर्च, सोना, चांदी, जिंक, रुई, कपास, जूट पाट, बारदाना, गुड़, चीनी, ज्वार, जीरा में सम्पन्न होगा। जो कि दस दिनों में सम्पन्न होगा। इस चांस में सावधानी हेतु यह ध्यान रखें कि उपरोक्त जिस वस्तु में दि. १ अक्टूबर को दि. ३० सितम्बर के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे और नीचा ही बन्द हो जाए तब मन्दी का चांस ही आगे उसी वस्तु में सम्पन्न हो जाएगा।

कार्तिक सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

कार्तिक माह का प्रारम्भ १५ अक्टूबर को होकर १३ नवम्बर को समाप्त होगा। इस माह में पांच बुधवार समता कारक और पांच गुरुवार मन्दी कारक हैं। अतः बढ़े भाव बेचान बीलकर घटे भाव ही खरीद करनी लाभप्रद होगी। कार्तिक बदी दोज की रात्रि में तुला संक्रान्ति का प्रभाव रुई, कपास, चांदी के भावों में विशेष मन्दी कारक सिद्ध होगा। नारियल, सुपारी, चन्दन मजीठ में तेजी होगी। सोना, गेहूँ, जौ, चना के भावों में तेजी का प्रभाव बनेगा। यह प्रभाव एक माह तक रहने की धारणा है। कार्तिक बदी सप्तमी का क्षय मन्दी के प्रभाव को बढ़ाने वाला सिद्ध होगा। बदी दशमी की शाम स्वाति में सूर्य का प्रभाव सरसों, अलसी, अरण्डी, तिल, तेल, सुपारी, लाल मिर्च, सोना, चांदी, कापर, निकिल, जिंक, रुई, गुड़, चीनी, बिनौला में तेजी कारक है तब भी तेजी तभी पक्की होगी जबकि दि. २४ अक्टूबर को दि. २३ के बनें ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ जाऐगा तब ही आगामी पन्द्रह दिनों में तेजी जानना। भाव न कटे तब तेजी नहीं होगी। इस माह में दीपावली मंगलवारी विशेष अनिष्टकारक है अतः व्यापारी भाईयों के हितों पर सरकारी तन्त्र व पूंजीपतियों द्वारा कुठाराघात किया जाऐगा। व्यापारी बंधु सरकारी आतंकवाद का विरोध करेंगे तब ही कुछ बात सम्भल पायेगी। शुदि पक्ष में गुरुवारी चन्द्रदर्शन का होना विशेष मन्दी का प्रभाव बनाएगा। कार्तिक शुदि तीज दि.३१ अक्टूबर को रात्रि में तुला राशि में बुध का संचरण गुड़, खांड़, रुई, कपास, खल, बिनौला, सोना में तेजी और चांदी सरसों , अलसी, अरण्डी, बिनौला, मूंगफली में मन्दी दायक पक्ष के अन्त तक सिद्ध होगा। यहाँ पर यह विशेष ध्यान रखें कि उपरोक्त वस्तुओं में विशेष रूप से दि. १ नवम्बर को दि. ३१ अक्टूबर के बने ऊचे भाव व नीचे भाव महत्वपूर्ण होगें। अतः भावों की क्रासिंग पर व रुख को ध्यान रखते हुऐ व्यापार करें। शुदि छट को दोपहर बाद बुधास्त का होना लम्बी मन्दी की चाल देने वाला सिद्ध होगा। अतः हर बढ़े भाव बेचान करना लाभ देगा। शुदि नवमी को शाम व रात्रि में क्रमशः धनु राशि व वृश्चिक राशि में मंगल का पदार्पण होगा। जौ, रुई, सूत, कपास, वस्त्र, गेहूँ, सोना, चांदी, तांबा, जिंक में तेजी होगी। तब भी अन्य स्थितियां मन्दी कारक होने से यह ध्यान रखें कि उक्त वस्तुओं में कार्तिक शुदि दशमी को नवमी बनें नीचे भाव से मार्केट टूट जाऐ तब मन्दी ही उसी वस्तु में बनेगी। दि. २० अक्टूबर, दि. ४ नवम्बर की शाम को दुतर्फा गली लगायें।

मार्गशीर्ष सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष माह का प्रारम्भ दि. १४ नवम्बर को होकर दि. १२ दिसम्बर को समाप्त होगा। इस माह में पांच शुक्रवारों का प्रभाव प्रायः व्यापारिक वस्तु व धातु वस्तुओं में नरमी का रहेगा साथ ही लगते दोज का क्षय मन्दी के प्रभाव को बढ़ायेगा। जिन वस्तुओं में पहले से मन्दी चली आ रही होगी उनमें लम्बी लाईन मन्दी की चल पड़ेगी। यद्यपि वृश्चिक संक्रान्ति शनिवारी है जो तेजी कारक है। बदी तीज की रात्रि में यह संक्रान्ति लगेगी। सोना, चांदी, तांबा, रुई, कपास, लेड, जिंक, ऊन, सरसों, अलसी, अरन्डी, मूंगफली के भाव तेजी पर जाऐंगे। लाल रंग की समस्त प्रकार की वस्तुऐं लालमिर्च, लाल चन्दन, नमक, नारियल, सुपारी, गुड़, चीनी, गेहूँ, जौ, चना, जूट, पाट, बारदाना, ग्वार, चना, के भावों में मन्दी होगी। फिर भी रुख का ध्यान अवश्य रखें। बदी सप्तमी दि. १९ नवम्बर को शाम बुध के वृश्चिक में प्रवेश के प्रभाव से अनाज, घी, तेल, सरसों, सोना, चांदी, रुई में मन्दी का रुख बनेगा। तब भी दि. १९ नवम्बर को बने ऊंचे भाव कटें तब तेजी होगी। निफ्टी शेयर सूचंकाक में तेजी का ध्यान है। लम्बी तेजी बन सकती है। शुदि पक्ष में चन्द्र दर्शन २८ नवम्बर को घट बढ़ कारक है। मार्गशीर्ष बदी चतुर्थी मंगलवार को मकर राशि में शुक्र का प्रभाव सफेद रंग की वस्तुओं पर मन्दी का पड़ेगा। तब भी अगर दि.३ दिसम्बर को दि. २ दिसम्बर के बनें ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ जाऐ तब तेजी का चांस ही आगे चलेगा। इस माह के अन्तिम सप्ताह में बदी एकादशी को शाम मकर राशि पर गुरु संचरण करेगा। यह प्रवेश गेहूँ, जौं, चना आदि में अचानक तेजी की उछाल देने वाला सिद्ध होगा। सोना, चांदी, रुई, कपास, सरसों, सोयाबीन तेल के भावों में तीन माह में ही श्रेष्ठ तेजी का दौर चलेगा। बहुधा वस्तुओं के

भावों में भारी घटाबढ़ी भी होगी। अत: नीचे लेविल पर प्रभाव मिलने पर स्टॉक करें।

इस माह में दि.१४ नवम्बर को ३ बजे १५ नवम्बर की शाम, दि. ९ दिसम्बर को ४ बजे लगभग दुतर्फा गली लगानी लाभप्रद होगी।

पौष सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में पांच शनिवार व पांच ही रविवार भयंकर तेजी कारक है। माह का प्रारम्भ दि. १३ दिसम्बर को होकर दि. ११ जनवरी तक महीना रहेगा। पौष के बदी पक्ष में तिथि का क्षय होकर बाद एकादशी तिथि की वृद्धि होना प्रारम्भ में जो वस्तुऐं नीचे स्तर पर होंगी उनमें विशेष तेजी के चांस चलने की धारणा है। अत: वायदा बाजारों में विशेष रूप से जो वस्तुऐं दि.१५ या १६ दिसम्बर तक मन्दी रही हो उनमें खरीद करके मोटा लाभ उठाया जा सकता है।

दि. १५ दिसम्बर की शाम को धनु राशि में सूर्य के संचरण के प्रभाव से अनाजों के भावों में मन्दी का रुख बनेगा। सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, कपास, खल बिनौला के भावों में तेजी का रुख बनेगा। यह तेजी दि. ६ जनवरी तक लम्बी लाईन के रूप में रहेगी। नोट- जिस वस्तु में दि. १५ व १६ के मध्य बनें लोएस्ट भाव से भाव टूटेगें उसमें मन्दी ही आगे ३ दिन चलेगी।

पौष बदी अष्टमी शुक्रवार की प्रात: धनु राशि में मंगल का संचरण होना, धान्य, घी, मूल पदार्थ, कपास, रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, बिनौला, सरसों व अनाजों के भावों के साथ लैड, कॉपर, जिंक, निकिल, क्रूड आयल में भी तेजी की चाल बनेगी। जो कि २० दिन की होगी। आगे पौष शुदि में रविवार दि. २८ दिसम्बर की शाम को पू०षा० में सूर्य के प्रभाव से तिल, तेल, चांदी, गुड़, खांड, सरसों, ऊनी वस्त्र, हल्दी, कपूर के भावों में तेजी होगी। आज ही रात्रि में कुम्भ राशि में शुक्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, उरद, मूंग, ज्वार, बाजारा, सफेद रंग की वस्तुओं में मन्दी की धारणा १४ दिन के लिए बनेगी। नोट- अगर दि. २९ दिसम्बर को दि. २७ के बनें नीचे भाव से मार्केट टूटे तब मन्दी निश्चित चलने की धारणा है। लेकिन ऊंचे भाव कटें तब तेजी ही बदस्तुर जारी रहेगी। शनि शुक्र का सम सप्तम योग विशेष चाल अवश्य देगा। अत: रुख का ध्यान रखतें हुऐ व्यापार करें। इस माह में १६ दिसम्बर की दोपहर में, दि. २३ की शाम को व २ जनवरी की दोपहर २ बजे वायदा वस्तुओं में दुतर्फा गली लगानी श्रेष्ठ लाभप्रद होगी। माह के अंत में वक्री बुध दि. ११ जनवरी की रात्रि में है जिसका प्रभाव अगले माह में दिखेगा।

माघ सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

माघ माह का प्रारम्भ दि.१२ जनवरी से होकर दि. ९ फरवरी २००९ तक रहेगा। इस माह में पांच सोमवारों का योग नरमी कारक है। इस माह के प्रारम्भ में वक्री बुध प्रतिपदा में हुआ है। यद्यपि प्रतिपदा तिथि का क्षय है। तथापि यह योग बहुआ वस्तुओं में तूफानी तेजी बनाया करता है। अत: सोना, चांदी, कॉपर, जिंक, क्रूड आयल, गुड़, रुई, कपास, जूट, पाट, ग्वार, चना, सोया तेल में तेजी २ दिन की बनेगी। तब भी दि. १२ जनवरी को १० के बनें नीचे भाव से जो वस्तु टूटेगी उसमें दो दिन में मन्दी भी जानना। माघ बदी पंचमी गुरूवार को प्रात: बुधास्त का होना भारी उथल पुथल कारक है अत: रिंग वायदा वस्तुओं के सौदों में विशेष रूप से सरसों- हापुड़, तेल- इन्दौर, हल्दी- निजामाबाद, गुड़- मुजफ्फरनगर, कपास- सुरेन्द्र नगर, चांदी- दिल्ली में दुतर्फा गली डालना लाभ प्रद होगा। ग्रह चालीय धारणा से रुई, कपास, चांदी, सोना, गेहूँ, चना, जिंक, गुड़, चीनी, कॉपर, क्रूड आयल में तेजी बारह दिन की बनेगी। कपास आदि का स्टाक करना लाभ प्रद होगा। बदी अमावस्या को बुधोदय दोपहर बाद होगा अत: उपरोक्त वस्तुओं में लाभ उठा लेना चाहिए। दि. १४ जनवरी की प्रात: गुरु का अस्त होना मन्दी कारक है। विशेष रूप से सोना, हल्दी, मूंग, चना दाल के भावों में मन्दी होगी। किन्तु अगर यहां से दो दिन भाव तेज रहें तब तेजी ही माघ शुदि एकादशी तक होगी। माघ शुदि प्रतिपदा की रात्रि में मकर में मंगल के प्रवेश के प्रभाव से लाल रंग की वस्तुओं में दि. २३ जनवरी से ही तेजी जोरदार चालू हो जाएगी। यह तेजी दि.३१ तक चलेगी। जो जोरदार व विशेष चाल देने वाली होगी। यद्यपि बाद ५ फरवरी तक भी यह चाल साधारण चलेगी।

विशेष :- कॉपर, सोना, क्रूड आयल, जिंक, चना, हल्दी, ग्वार, सोया तेल, जीरा, नेचुरल गेस, सरसों के वायदा बाजारों में अगर दि. २८ जनवरी को दि. २७ के बनें ऊंचे भाव से मार्केट बढ़े तब तेजी का व्यापार करके ५ फरवरी तक लाभ उठाना चाहिए। बाद दि.६ फरवरी से चाल के पलटने की धारणा है। इस माह में दि. १२ जनवरी की प्रात: दुतर्फा गली, दि. १५ जनवरी की प्रात: तेजी लगाये। दि. २७ जनवरी की शाम को तेजी लगाना। दि. ५ फरवरी को पलट अगले दिन की लगाना।

फाल्गुन सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

फाल्गुन सम्वत् २०६५ का महिना दि. १० फरवरी को प्रारम्भ होकर दि.११ मार्च तक रहेगा। इस माह में पांच मंगलवार व पांच ही बुधवार है जो तेजी को प्रोत्साहन देगें। इस माह के प्रथम पक्ष में बदी अमावस्या की वृद्धि भी तेजी कारक ही है। शुदि में चतुर्थी का क्षय विशेष तेजी कारक सिद्ध होगा। फाल्गुन बदी प्रतिपदा को - गुरु का उदय होना दोज से पीले रंग की वस्तुओं में विशेष तेजी कारक होगा। साथ में कॉपर, सोना, सरसों, धातु , हल्दी, सोया तेल में तेजी का रुख रहेगा। फाल्गुन बदी तीज की शाम को कुम्भ संक्रान्ति के प्रभाव से तेल, सरसों, मूंगफली, अलसी, अरण्डी, सोयाबीन व सोया तेल में तेजी की लम्बी चाल चलेगी। गुड़, खांड, शक्कर, अनाज, रुई, पाट के भावों में मन्दी का रुख रहेगा। तथापि उक्त वस्तुओं में दि. ९ फरवरी से १२ फरवरी के मध्य बनें हाईएस्ट भाव से मार्केट बढ़े तब और तेजी होगी, किन्तु लोएस्ट बने भाव से टूटने पर मन्दी की चाल चलेगी। यह चाल तमाम फाल्गून माह में रहेगी। दि.१३ फरवरी से सूर्य शनि की सप्तम दृष्टि एक दूसरे पर पड़ने से भंयकर तेजी तिलहन, लौह, सोना, क्रूड ऑयल, जिंक, कापर, सोया तेल पर रहेगी। फाल्गुन शुक्ल पक्ष में शुदि प्रतिपदा को रात्रि में धनिष्ठा में मंगल के प्रभाव से गुड़, शक्कर, गेहूँ, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, जस्ता, कापर, जिंक के भावों में तेजी होगी। जो तीन दिन चलेगी। शुदि नवमी को कुम्भ राशि में बुध के प्रभाव से सोना चांदी आदि धातु व धान्यों में तेजी आकर मन्दी का प्रभाव बनेगा। रुई, गुड़, खांड, घी, तेल, सोयाबीन, सरसों में आगे मन्दी की चाल पन्द्रह दिवसीय बनेगी। साथ में अगले दिन कुम्भ में मंगल का प्रवेश दि.९ मार्च से अनाज, सोना, चांदी, गुड़, खांड, में तेजी कारक होगा। धान्यों में मन्दी चलेगी। लेकिन स्टील, लोहा, इंगट, कोयला, कालीमिर्च, जीरा व काले रंग के पदार्थ लेड के भावों में विशेष तेजी की चाल सम्वत् के अन्त तक चलेगी।

चैत्र बदी सम्वत् २०६५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस पक्ष का प्रारम्भ १२ मार्च से होकर दि. २६ मार्च तक समाप्त होगा। इस पक्ष पर गुरुवारों का प्रभाव दृष्टिगत है अत: बहुधा वस्तुऐं मन्दी कारक रहने की धारणा के बाबजूद प्रतिपदा तिथि का क्षय होकर छठ की वृद्धि होना तेजी कारक भी है तथापि रुख अनुकूल व्यापार उत्तम रहेगा। बदी तीज को मीन संक्रान्ति लगेगी जो अन्नादि के भावों में पहले तेजी बाद में नरमी का रुख बनेगा। सोना, चांदी, रुई, कपास, गुड़, खांड, शक्कर, अलसी, तिल, सरसों, सोया तेल के भावों में तेजी का रुख बनेगा, जो तमाम पक्ष रहेगा।बदी छठ सोमवार दि. १६ मार्च को रात्रि में बुधास्त का होना गुड़, खांड़, गेहूँ, जौ, चना, मटर, रुई, पाट के भावों मे मन्दी का चांस एक माह का सम्पन्न होगा। अत: इन वस्तुओं के वायदा मार्केटों में उछालें में बेचते हुए मन्दी में खरीद कर लाभ उठाना चाहिए। बदी एकादशी रविवार की शाम मीन राशि में बुध के प्रभाव से रुई के भावों में तेजी होगी। सोना चांदी में पहले तेजी होकर इस पक्ष बाद नरमी होने की धारणा है। गेहूँ, गुड़, खांड में मन्दी चलेगी। नोट- जिस वायदा वस्तु में दि. २३ मार्च को २१ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेगा उसी में मन्दी की चाल बनेगी।

अनमोल चांस प्राप्त कीजिए

अनमोल क्यों ? क्योंकि हम चांस ग्रह चालीय आधार के साथ-साथ ग्राफिकल चाल के आधार पर भी बनाते हैं ऊंचे, नीचे अनुपातिक भाव देना ही चांस की विशेषता है हाजिर व वायदा की धातुओं के चांस- निपटी, चांदी, सोना, कापर मैंथा, आँयल, सोया तेल, सभी प्रकार के अनाजों, धातुओं आदि के चांस हम देते हैं। हाजिर वस्तु एक वर्ष ११००/-, छ माह ६०१/- तीन माह ३५१/- है। वायदा वस्तु एक माह की फीस ४०१/- है। एक वर्ष की फीस ४००१/- है। वायदा की एक वस्तु का प्रतिदिन ग्रहचाल व भावों के आधार पर प्रीडिक्शन की मासिक फीस १२००/- है।

e-mail : vishwaastro-999@yahoo.co.in
फोन: ०१२२-२३१२२३८, ०९८३७२७९८२३

पृष्ठ २३१ का शेष

यूरेनस, नेपच्यून के क्रांति शर

(प्रात: ५ घं. ३० मि. भा.स्टे.टा.) संवत् २०६५ वि.

दशम. = दशमलव
उ. = उत्तर
द. = दक्षिण

तारीख	यूरेनस		नेपच्यून		तारीख	यूरेनस		नेपच्यून	
सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
२००८	अं. दशम.	अं. दशम.	अं. दशम.	अं. दशम.	२००८	अं. दशम.	अं. दशम.	अं. दशम.	अं. दशम.
अप्रैल ९	द. ४.४९	द. ०.७३	द. १३.९२	द. ०.३०	अक्टूबर ९	४.८२	०.८०	१४.६३	०.३५
" १७	४.३३	०.७३	१३.८७	०.३१	" १७	४.९२	०.७९	१४.६५	०.३५
" २५	४.१९	०.७४	१३.८२	०.३१	" २५	५.००	०.७९	१४.६७	०.३५
मई १	४.०९	०.७४	१३.७९	०.३१	नवम्बर १	५.०६	०.७९	१४.६८	०.३५
" ९	३.९७	०.७४	१३.७६	०.३१	" ९	५.१२	०.७८	१४.६७	०.३५
" १७	३.८६	०.७५	१३.७४	०.३२	" १७	५.१५	०.७८	१४.६६	०.३५
" २५	३.७८	०.७५	१३.७४	०.३२	" २५	५.१६	०.७७	१४.६३	०.३५
जून १	३.७२	०.७६	१३.७४	०.३२	दिसम्बर १	५.१६	०.७७	१४.६०	०.३५
" ९	३.६७	०.७६	१३.७६	०.३२	" ९	५.१३	०.७६	१४.५५	०.३५
" १७	३.६३	०.७७	१३.७९	०.३३	" १७	५.०९	०.७६	१४.५०	०.३५
" २५	३.६२	०.७७	१३.८२	०.३३	" २५	५.०२	०.७५	१४.४३	०.३५
जुलाई १	३.६३	०.७८	१३.८६	०.३३	२००९ ई.				
" ९	३.६५	०.७८	१३.९१	०.३३	जनवरी १	४.९५	०.७५	१४.३६	०.३५
" १७	३.७०	०.७८	१३.९७	०.३४	" ९	४.८४	०.७४	१४.२८	०.३५
" २५	३.७६	०.७९	१४.०३	०.३४	" १७	४.७२	०.७४	१०.२०	०.३५
अगस्त १	३.८३	०.७९	१४.०९	०.३४	" २५	४.५९	०.७३	१४.१०	०.३५
" ९	३.९२	०.८०	१४.१७	०.३४	फरवरी १	४.४६	०.७३	१४.०२	०.३५
" १७	४.०२	०.८०	१४.२४	०.३४	" ९	४.३०	०.७३	१३.९२	०.३६
" २५	४.१४	०.८०	१४.३१	०.३५	" १७	४.१३	०.७३	१३.८२	०.३६
सितम्बर १	४.२४	०.८०	१४.३७	०.३५	" २५	३.९६	०.७२	१३.७२	०.३६
" ९	४.३७	०.८०	१४.४४	०.३५	मार्च १	३.८७	०.७२	१३.६७	०.३६
" १७	४.४९	०.८०	१४.५०	०.३५	" ९	३.६९	०.७२	१३.५८	०.३६
" २५	४.६२	०.८०	१४.५५	०.३५	" १७	३.५१	०.७२	१३.४९	०.३६
अक्टूबर १	४.७२	०.८०	१४.५९	०.३५	" २५	द. ३.३३	द. ०.७२	द. १३.४०	द. ०.३६

संवत् २०६५ विक्रमी का द्वादश राशिफल

लेखक- महेश चंद राजेश चंद ज्योतिषी
पुंगलवाड़ा, जोधपुर, फोन्- ०२९१-२६२४८६४, मोबाइल- ९४१४४७५११३

मेष राशि :- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

इस वर्ष में ३० मई तक शुभ कार्य की भूमिका बनने से चिन्ता का निवारण होगा। आत्मविश्वास के साथ में कार्य करते रहे, योजना क्रियान्वित होगी। पुराने विवादों का समाधान निकल आयेगा। ३१ मई से १४ जुलाई तक आप अपनी ही क्षमता से बढ़कर कार्य न करें। विवाद से दूर रहना हितकर रहेगा। भाईयों से मन-मुटाव सा रहेगा। नई समस्या उत्पन्न होने से आप चिन्ता ग्रस्त रहेंगे। १५ जुलाई से ११ सितम्बर तक अधिकारी वर्ग के सहयोग से इच्छानुकूल स्थानान्तरण हो जायेगा। साहस से आगे बढ़ते रहें भाग्य आपके साथ है। विरोधी पक्ष गुप्त रूप से आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे। परिवारिक समस्या का समाधान निकल आयेगा। १२ सितम्बर से २९ अक्टूबर तक सोच-समझ कर आगे कदम बढ़ाना हितकर रहेगा। विरोधी पक्ष आपकी प्रगति में रुकावटें लायेगा। आपका विश्वासपात्र व्यक्ति ही आपके साथ में विश्वासघात कर सकता है। व्यर्थ की पंचायती करना उचित नहीं रहेगा। ३० अक्टूबर से १२ दिसम्बर तक काम काज में प्रगति होगी, रुकी रकम प्राप्त होने से कर्जदारी में कमी आयेगी। गणमान्य व्यक्ति आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे। सोचा हुआ कार्य वक्त पर बन जाने से मन प्रफुल्लित रहेगा। अपने ही बुद्धिबल से अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। १३ दिसम्बर से ७ फरवरी तक व्यर्थ का लेनदेन करना उचित नहीं है। विरोध व संघर्ष का सामना करना पड़ेगा। आपकी आशा निराशा में परिवर्तित होगी। नया कार्य आरम्भ करने से पहले ही कोई व्यवधान उत्पन्न हो सकता है। ८ फरवरी से वर्षोपरान्त तक महिलाओं के लिए यह समय सफलता का रहेगा। लम्बी यात्रा लाभप्रद रहेगी। इस समय शुभ अवसर आयेंगे, लाभ उठाने में भूल न करें। पारिवारिक समस्या का समाधान निकल आयेगा। शुभ कार्य में खर्च की भूमिका बनेगी।

वृष :- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

इस वर्ष में २३ मई तक अधिकारी वर्ग आपके ही कार्यों से प्रभावित रहेंगे। राजनैतिक वर्ग का जनता में मान-सम्मान बढ़ेगा। खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त कर पायेंगे। पारिवारिक समस्या का समाधान निकल आयेगा। २४ मई से ११ जुलाई तक मित्रों से मन मुटाव सा रहेगा। लेनदेन के मामलों में सावधानी रखें। व्यय की अधिकता से कर्ज भी लेना पड़ सकता है। पारिवारिक क्लेश से मन में अशान्ति का वातावरण रहेगा। जरूरी कार्य बनते-बनते रुक जायेंगे। अधिकारी वर्ग से विचारों में भिन्नता रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति कमजोरी सी रहेगी। १२ जुलाई से १ सितम्बर तक सोचा हुआ कार्य सफल होगा। शुभ कार्यों में खर्च होने से मन में प्रसन्नता रहेगी। मित्र मिलन से मन में हर्ष रहेगा। विशेष कार्य निपटाने में सफलता मिलेगी। जमीन सम्बन्धित विवादों का समाधान निकल आयेगा। २ सितम्बर से २२ अक्टूबहर तक पुराने विवाद फिर से आरम्भ होने से परेशानी रहेगी। नए परिचय पर विश्वास करना उचित नहीं है। अपनी क्षमता से बढ़कर कार्य करना हितकर नहीं रहेगा। बिना विशेषता के साथ में समय व्यतीत होगा। २३ अक्टूबर से ११ दिसम्बर तक सत्पुरुषों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा। उच्चाधिकारी की कृपा से राज्य में आपका कार्य बन जायेगा। काम-काज में दिलचस्पी बढ़ेगी, अशुभ फलों में कमी आयेगी। १२ दिसम्बर से २ फरवरी तक आपके मित्र ही आपके शत्रु बन जायेंगे। व्यर्थ की पंचायती करना उचित नहीं है। विरोधियों से संघर्ष ज्यादा होने से उत्साह में कमी आयेगी। आय से खर्च ज्यादा रहेगा। ३ फरवरी से वर्षोपरान्त तक आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। विद्यार्थी व किसान वर्ग अपने ही कार्यों की सफलता से प्रसन्न व उत्साहित रहेगा। शुभ कार्य की भूमिका बनने से मन में हर्ष रहेगा। व्यापारिक वर्ग के कारोबार में निरन्तर प्रगति होगी। आप अपनी कुशलता से औरों को प्रभावित करेंगे।

मिथुन राशि :- (क, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा)

इस वर्ष में २१ मई तक आपका जरूरी कार्य बनता-बनता रुक सकता है। मित्रों से मन-मुटाव सा रहेगा। आपको संयम रखना जरूरी है। अन्यथा कटु आलोचना होगी। कारोबार में उतार-चढ़ाव सा रहेगा। २२ मई से ११ जुलाई तक प्रतिद्वन्दियों के लिए आप सिर दर्द बने रहेंगे। खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त कर पायेंगे। कारोबार में वृद्धि, योजना क्रियान्वित होगी। भविष्य उज्जवल है। सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा। १२ जुलाई से ३ सितम्बर तक क्षमता से बढ़कर निर्णय लेना उचित नहीं रहेगा। किसान वर्ग चिन्ताग्रस्त रहेगा। शुभ कार्यों में रुकावटें आने से परेशानी रहेगी। विरोधी पक्ष हानि पहुंचाने का प्रयास करेगा, सावधान रहें। कोई वस्तु खोई जा सकती है, ध्यान रखें। ४ सितम्बर से २३ अक्टूबर तक नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से हर्ष रहेगा। सत्कर्म में अभिरुचि बढ़ेगी। आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। समय अनुकूल होने से लाभ उठाने में भूल न करें। व्यापारिक वर्ग अपने ही कार्यों से सन्तुष्ट रहेगा। समझौते द्वारा आपसी कटुता समाप्त होगी। शुभ सन्देश मिलने से चिन्ता का निवारण होगा। २४ अक्टूबर से ९ दिसम्बर तक विरोधी पक्ष से टकराव सा रहेगा, जोखिम उठाकर कोई भी कार्य न करें। सन्तान की ओर से चिन्ता रहेगी। अधिकारी वर्ग से मन-मुटाव सा रहेगा। १० दिसम्बर से ३ फरवरी तक सरकारी कर्मचारी अपने ही कार्यों की सफलता से प्रसन्न रहेंगे। सोचे हुए कार्य की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धित विवाद निपट जायेंगे। ४ फरवरी से वर्षोपरान्त तक आपको अपनी ही क्षमता से बढ़कर कार्य करना हितकर नहीं रहेगा। भाईयों से विवाद उग्ररूप धारण कर सकता है। व्यर्थ की पंचायती करना उचित नहीं है। अप्रिय समाचारों से चिन्ताग्रस्त रहेंगे।

कर्क राशि (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

इस वर्ष में २९ मई तक इच्छित पद प्राप्ति हेतु व्यवधान समाप्त हो जायेगा। विद्यार्थी

वर्ग अपने ही कार्यों से सन्तुष्ट रहेगा। धार्मिक कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी। काम-काज में प्रगति होगी। पारिवारिक सुखशान्ति होगी। सम्बन्धी वर्ग आपके ही सहयोग का आभार मानेंगे। ३० मई से १३ जुलाई तक विशेष कार्य निपटाने में परेशानी रहेगी। आय से खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक कमी महसूस होगी। मन में भय का वातावरण रहेगा। धर्मपत्नी का स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। आप योजना बनाते रहें सफलता में देरी है। राजनैतिक वर्ग अपनी ही कटु आलोचना से परेशान रहेंगे। २४ जुलाई से ११ सितम्बर तक नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से मन में हर्ष रहेगा। यात्रा लाभप्रद सिद्ध होगी। आत्मविश्वास जाग्रत होगा। अपने ही कार्यों की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। अपने ही बुद्धिबल से किसी समस्या का समाधान कर पायेंगे। १२ सितम्बर से २ नवम्बर तक कारोबार में ज्यादा धन लगाना उचित नहीं है। आपका जरूरी कार्य अपूर्ण रहेगा। कोई अप्रिय समाचार मिलने से चिन्ताग्रस्त रहेंगे। अपनी ही क्षमता से बढ़कर निर्णय लेना हितकर नहीं रहेगा। ३ नवम्बर से २२ दिसम्बर तक जमीन सम्बन्धित विवाद निपट जायेगा। आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। आपकी निराशा आशा में परिवर्तित होगी। पुराने विवाद निपट जाने से मानसिक उत्साह में वृद्धि होगी। शुभ सन्देश मिलने से चिन्ता का निवारण होगा। २३ दिसम्बर से ७ फरवरी तक व्यापारिक वर्ग सरकारी अधिकारियों से परेशान रहेगा। रुकी रकम प्राप्त न होने से मानसिक चिन्ता रहेगी। अधिकारी वर्ग से मन मुटाव-सा रहेगा। ८ फरवरी से वर्षोपरान्त तक राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। यात्रा लाभप्रद रहेगी। भाईयों के सहयोग से योजना सफल होगी।

सिंह राशि (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

इस वर्ष में २२ मई तक आपकी उदासीनता मित्रों को अखरेगी, आपके मित्र ही आपके शत्रु बन जायेंगे। व्यर्थ के विवाद से दूर रहना हितकर रहेगा। सोच समझकर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। २३ मई से १७ जुलाई तक आप अपने ही कार्यों की सफलता से उत्साहित रहेंगे। नये कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी। आपकी निराशा आशा में परिवर्तित होगी। किसान वर्ग इच्छानुसार लाभ मिलने से प्रसन्न व उत्साहित रहेंगे। १८ जुलाई से ४ सितम्बर तक विरोधी पक्ष आपके लिए नई समस्या उत्पन्न कर सकते हैं। आत्मविश्वास में कमी आयेगी। लम्बी यात्रा करना हितकर नहीं है। पारिवारिक समस्या से आपकी प्रगति में कमी आयेगी। खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक कमी महसूस होगी। ५ सितम्बर से २६ अक्टूबर तक आपके भाग्य का सितारा चमकता रहेगा। गणमान्य व्यक्ति आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे। अपने ही बुद्धिबल से अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। व्यापारिक वर्ग अपने ही कार्यों से सन्तुष्ट रहेगा। नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से हर्ष रहेगा। समझौते द्वारा आपसी कटुता समाप्त होगी। २७ अक्टूबर से ९ दिसम्बर तक शुभ कार्य की भूमिका बनने से हर्ष रहेगा। मित्र वर्ग आपके सहयोग का आभार मानेंगे। किसान वर्ग अपनी ही सफलता से प्रसन्न व उत्साहित रहेगा। पारिवारिक समस्या का समाधान निकल आयेगा। १० दिसम्बर से २९ जनवरी तक व्यर्थ के विवाद में उलझना उचित नहीं है। कार्यों में रुकावटे आने से परेशानी रहेगी। घरेलू खर्च ज्यादा रहने से कर्ज लेना पड़ सकता है। आपका विश्वासपात्र व्यक्ति ही आपके साथ विश्वासघात कर सकता है। ३० जनवरी से ५ मार्च तक आपके भाग्य का सितारा फिर से चमकने लगेगा। आय के नये स्रोत्र सामने आयेंगे। विरोधी पक्ष पराजित रहेगा। अधिकारी वर्ग आपने कार्यों से प्रभावित रहेगा। ६ मार्च से वर्षोपरान्त तक दौड़धूप ज्यादा, मुकदमाबाजी से दूर रहना हितकर रहेगा। आय में कमी महसूस रहेगी।

कन्या राशि (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

इस वर्ष में ११ मई तक व्यर्थ की दौड़-धूप रहेगी। आय से खर्च ज्यादा रहेगा। कोई वस्तु खोई जा सकती है, ध्यान रखें। विशेष कार्य निपटाने में रुकावटे आने से मानसिक अस्थिरता रहेगी। १२ मई से १३ जुलाई तक आपकी यात्रा सफल होगी। इस वर्ष में ११ मई तक व्यर्थ की दौड़-धूप रहेगी। आय से खर्च ज्यादा रहेगा। कोई वस्तु खोई जा सकती है, ध्यान रखें, रुकी रकम प्राप्त होने से मन में हर्ष रहेगा। मुकदमाबाजी से छुटकारा मिल जायेगा। व्यापारिक वर्ग लाभान्वित रहेगा। नये कार्य की योजना बनेगी जो सफल होगी। साहस से आगे बढ़ते रहें, भाग्य आपके साथ है। आप अपनी ही कार्य कुशलता से औरों को प्रभावित करेंगे। १४ जुलाई से ३० अगस्त तक सोच समझ कर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। इच्छानुकूल स्थानान्तरण में रुकावटें आयेंगी। आरोप प्रत्यारोप का सामना करना पड़ेगा। ३१ अगस्त से १३ अक्टूबर तक नया परिचय लाभप्रद रहेगा। सन्तान सम्बन्धित कार्य सफल होंगे। शुभ कार्य आरम्भ करने की भूमिका बनेगी। देव गुरु, ब्राह्मणों के प्रति भक्तिभावना जाग्रत होगी। राजनेता अपने ही क्षेत्र में यश प्राप्त करेंगे। १४ अक्टूबर से ४ दिसम्बर तक भाईयों से विवाद उग्र रूप धारण कर सकता है। कार्यों में रुकावटें आने से परेशानी रहेगी। शत्रु पक्ष की कुचेष्टा आपको संघर्षमय रखेगी। ५ दिसम्बर से २७ जनवरी तक प्रतिद्वन्दियों के लिए आप सिर दर्द बने रहेंगे। सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा। आय के नये स्रोत सामने आयेंगे। २८ जनवरी से १ मार्च तक आय में उतार-चढ़ाव ज्यादा रहने से परेशानी रहेगी। दाम्पत्य जीवन में नई समस्या उत्पन्न हो सकती है। आवेश में आकर अपनी ही हकदारी या लाभ छोड़ना उचित नहीं रहेगा। २ मार्च से वर्षोपरान्त तक समाज, परिवार, व्यवसाय में आपके गुणों की प्रशंसा होगी। मुकदमाबाजी से छुटकारा मिलेगा।

तुला राशि (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

इस वर्ष में १९ मई तक शुभ कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी। आप द्वारा किया गया निर्णय लाभप्रद सिद्ध होगा। वैवाहिक अड़चनें समाप्त होंगी। जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। खोई वस्तु मिल जाने से हर्ष रहेगा। २० मई से ११ जुलाई तक दाम्पत्य जीवन में परेशानी रहेगी। आत्मविश्वास में कमी आयेगी। सोच समझकर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक कमी महसूस होगी। १२ जुलाई से २९ अगस्त तक सन्तान की सफलता से आप प्रफुल्लित रहेंगे। आपका भाग्य हर कार्य में आपका साथ देगा।

विरोधी पक्ष गुप्त रूप से आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे। सुख सुविधा के साधनों में खर्च रहने से मन में हर्ष रहेगा। ३० अगस्त से २० अक्टूबर तक आपका जरूरी कार्य अपूर्ण रहेगा। घरेलू खर्च ज्यादा रहेगा। सन्तान से वाद-विवाद सा रहेगा। विरोधी पक्ष आपके लिये नई समस्या उत्पन्न करेगा। आपका सहयोगी वर्ग ही आपके साथ में विश्वासघात कर सकता है। २१ अक्टूबर से ३ दिसम्बर तक सोचे हुए कार्य की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धित विवाद निपट जायेंगे। सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा। आत्म विश्वास जाग्रत होगा। धार्मिक कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी। ४ दिसम्बर से २६ जनवरी तक आपको संयम रखना जरूरी है अन्यथा कटु आलोचना होगी। क्षमता से बढ़कर व्यापार करना उचित नहीं है। दौड़धूप व विवाद के साथ में समय व्यतीत होगा। २७ जनवरी से १ मार्च तक आपके प्रयास सफल होंगे। इच्छित पद प्राप्ति हेतु व्यवधान समाप्त हो जायेगा। विदेश जाने की योजना भी बन सकती है। मजदूर वर्ग रुके कार्य बन जाने से उत्साहित रहेगा। २ मार्च से वर्षोपरान्त तक योजना बनाते रहें सफलता में देरी है। हर कार्य में सतर्कता रखना हितकर रहेगा। रोजगार में अस्थिरता, पारिवारिक विचार ज्यादा रहेंगे।

वृश्चिक राशि (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

इस वर्ष में ३० अप्रैल तक जमीन सम्बन्धित विवाद उग्ररूप धारण कर सकता है। खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक कमी महसूस होगी। आरोप प्रत्यारोप का सामना करना पड़ेगा। १ मई से २७ जून तक जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। योजना क्रियान्वित होगी। भविष्य उज्जवल है। पुराने विवाद निपट जाने से हर्ष रहेगा। आप द्वारा लिया गया निर्णय लाभप्रद रहेगा। वैवाहिक अड़चनें समाप्त होगी। व्यापारिक वर्ग अपनी ही सफलता से सन्तुष्ट रहेगा। २८ जून से १३ अगस्त तक मित्रों की गतिविधियों से मानसिक तनाव बढ़ेगा। दाम्पत्य जीवन में रुकावटें आयेंगी। किसी विवाद में उलझना हितकर नहीं है। कोई नया व्यक्ति आपको प्रलोभन देकर विश्वासघात कर सकता है। १४ अगस्त से २९ सितम्बर तक अपने ही कार्यों की सफलता से प्रफुल्लित रहेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। सोचा हुआ कार्य वक्त पर बन जाने से मन में हर्ष रहेगा। परिवार में सुख समृद्धि। ३० सितम्बर से ११ नवम्बर तक कोई वस्तु खोई जा सकती है, ध्यान रखें। इच्छानुकूल स्थानान्तरण होता-होता रुक जायेगा। लेन-देन के मामलों में विवाद उग्र रूप धारण कर सकता है। १२ नवम्बर से २ जनवरी तक विशेष कार्य निपटाने में सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि होने से आर्थिक समस्या का समाधान निकल आयेगा। परिवारिक सुखशांति होगी। शुभ कार्य तय हो जाने से मन में हर्ष रहेगा। ३ जनवरी से २६ फरवरी तक विरोध व संघर्ष के साथ में समय व्यतीत होगा। व्यर्थ की पंचायती करना हितकर नहीं है। धर्मपत्नी का विवाद आपकी परेशानी में वृद्धि करेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अनुकूल नहीं है। २७ फरवरी से वर्षोपरान्त तक अपने ही कार्यो की सफलता से आप फूले न समायेंगे। विरोधी पक्ष भी आपसे समझौता करने की इच्छा प्रकट करेगा। कामकाज में वृद्धि होगी।

धनु राशि (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे)

इस वर्ष में २२ मई तक शुभ कार्य के आयोजन करने की भूमिका बनेगी। धार्मिक कार्यों के प्रति भावना जाग्रत होगी। कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा। सम्बन्धियों के सहयोग से आपकी योजना सफल होगी। नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से हर्ष रहेगा। २३ मई से ७ जुलाई तक हर कार्य में सतर्कता रखे अन्यथा परेशानी रहेगी। सोच समझकर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। दाम्पत्य जीवन में रुकावटें आयेंगी। यात्रा रद्द हो जाने से चिन्ता रहेगी। ८ जुलाई से २९ अगस्त तक सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा। विद्यार्थी वर्ग अपनी ही सफलता से उत्साहित रहेगा। इच्छित पद प्राप्त करने का योग बनता है। आय के नये स्रोत सामने आयेंगे। ३० अगस्त से १५ अक्टूबर तक घरेलू कार्यों में व्यस्त रहेंगे। दूसरों का सहयोग करने पर भी यश नहीं मिलेगा। किसान वर्ग को हानि होने का भय सा महसूस होता रहेगा। राजनैतिक वर्ग का परस्पर विरोध उग्ररूप धारण कर सकता है। १६ अक्टूबर से ७ दिसम्बर तक आत्म विश्वास के साथ में कार्य करते रहें। योजना क्रियान्वित हो सकेगी। भविष्य उज्जवल है। पुराने विवादों का समाधान निकल आयेगा। अपने ही पराक्रम व पौरुष से धन, यश प्राप्त करेंगे। ८ दिसम्बर से ३० जनवरी तक सोच समझ कर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। अपनी ही वाणी पर नियंत्रण रखना हितकर रहेगा, अन्यथा परेशानी रहेगी। रोजगार में अस्थिरता सी रहेगी। विरोधी पक्ष हानि पहुंचाने का प्रयास करेगा, सावधान रहें। ३१ जनवरी से वर्षोपरान्त तक सोचे हुए कार्य की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धित विवादों का समाधान निकल आयेगा। जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। मित्र वर्ग आपके सहयोग का आभार मानेंगे। अधिकारी वर्ग आपके कार्यों से प्रभावित रहेगा।

मकर राशि (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

इस वर्ष में १३ मई तक बनता बनता कार्य बिगड़ जाने से चिन्ता रहेगी। घरेलू खर्च ज्यादा रहने से कर्ज भी लेना पड़ सकता है। नया कार्य आरम्भ करने से पहले ही कोई व्यवधान उत्पन्न हो सकता है। १४ मई से ५ जून तक शुभ सन्देश मिलने से चिन्ता का निवारण होगा। प्रतिद्वन्दियों के लिए आप सिर दर्द बने रहेंगे। ६ जून से २९ जुलाई तक आपका विश्वासपात्र व्यक्ति ही आपके साथ विश्वासघात कर सकता है। लाटरी या सट्टे से दूर रहना हितकर रहेगा। व्यापारिक वर्ग सरकारी अधिकारियों से परेशान रहेगा। महिलाओं व किसानों के लिए यह समय चिन्ता का रहेगा। ३० जुलाई से १९ सितम्बर तक आय के नये स्रोत सामने आयेंगे। सन्तान की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। परिवारिक समस्या का समाधान निकल आयेगा। मित्र वर्ग आपके ही सहयोग से लाभान्वित होंगे। २० सितम्बर से ४ नवम्बर तक आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। अपने ही कार्यों की सफलता से आप प्रसन्न व उत्साहित रहेंगे। व्यापारिक वर्ग की निराशा आशा में परिवर्तित होगी। साहस से आगे बढ़ते रहें, भाग्य आपके साथ है। ५ नवम्बर से २९ दिसम्बर तक योग्य

व्यक्ति की सलाह पर कार्य करना हितकर रहेगा। स्वयं का निर्णय उचित नहीं है। कई शुभ अवसर हाथ से निकल जायेंगे। विरोधी पक्ष आपकी प्रगति में रुकावटें डालेगा। ३० दिसम्बर से १७ फरवरी तक मित्र वर्ग आपके ही सहयोग से लाभान्वित होंगे। मुकदमाबाजी से छुटकारा मिलेगा। नये कार्य की योजना बनेगी जो सफल होगी। देव गुरु, ब्राह्मणों के प्रति भावना जाग्रत होगी। खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त होगा। १८ फरवरी से वर्षोपरान्त तक अप्रिय समाचार मिलने से परेशानी रहेगी। कारोबार में ज्यादा धन लगाना हितकर नहीं रहेगा। मेहनत के अनुसार लाभ न होने से मानसिक अस्थिरता रहेगी।

कुम्भ राशि (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

वर्ष में २१ मई तक आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। नया कार्य आरम्भ करने की योजना बनेगी जो सफल होगी। नव परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से हर्ष रहेगा। २२ मई से ११ जुलाई तक जोखिम उठाकर कोई भी कार्य न करें। सन्तान की ओर से चिन्ता रहेगी। मित्रों से मन मुटाव सा रहेगा। सट्टा या शेयरों में धन लगाना उचित नहीं रहेगा। राजनैतिक वर्ग अपनी ही कटु आलोचना से परेशान रहेगा। १२ जुलाई से २९ अगस्त तक मुकदमाबाजी से छुटकारा मिलना सम्भव है। शुभ कार्य के आयोजन करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। देव, गुरु, ब्राह्मणों के प्रति भक्ति भावना जाग्रत होगी। राजनेता अपने ही क्षेत्र में यश प्राप्त करेंगे। पारिवारिक सुखशांति रहेगी। ३० अगस्त से १७ अक्टूबर तक का समय विवाद या दौड़धूप के साथ में व्यतीत होगा। विरोधी पक्ष आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेगा, सावधान रहें। झूठे आरोपों से आप परेशान रहेंगे। कोई वस्तु खोई जा सकती है, ध्यान रखें। धर्मपत्नी का स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। १८ अक्टूबर से १३ दिसम्बर तक समाज में गुणों की प्रशंसा होगी। जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। शुभ सन्देश मिलने से चिन्ता का निवारण होगा। आय के नये स्रोत सामने आयेंगे। पारिवारिक समस्या का समाधान हो जायेगा। १४ दिसम्बर से १ फरवरी तक आप प्रतिद्वन्दियों के लिए सिर दर्द बने रहेंगे। खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त होगा। कारोबार में अपनी ही आशा से अधिक प्रगति होगी। सत्पुरुषों से मिलने पर मन में प्रसन्नता रहेगी। अपने ही कार्यों की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। २ फरवरी से वर्षोपरान्त तक कोई अप्रिय समाचार मिलने से मानसिक चिन्ता रहेगी। आत्मविश्वास में कमी आयेगी। पारिवारिक समस्या से आपकी प्रगति में कमी आयेगी। आय से खर्च ज्यादा रहेगा।

मीन राशि (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

इस वर्ष १७ मई तक शत्रु पक्ष की कुचेष्टा आपको संघर्षमय रखेगी। आपकी उदासीनता मित्रों को अखरेगी। व्यर्थ के विवाद से दूर रहना हितकर रहेगा। लेन-देन के मामलों में सावधानी रखें। १८ मई से ७ जुलाई तक आपकी योजना क्रियान्वित हो सकेगी। भविष्य उज्जवल है। खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त होगा। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धित विवाद निपट जायेंगे। सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा। आपकी निराशा आशा में परिवर्तित होगी। ८ जुलाई से ३१ अगस्त तक आपका जरूरी कार्य अपूर्ण रहेगा। लम्बी यात्रा करना उचित नहीं रहेगा। दाम्पत्य जीवन में परेशानी महसूस होगी। बिना विशेषता के साथ में समय व्यतीत होगा। १ सितम्बर से २१ अक्टूबर तक आपकी सन्तान को राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। विद्यार्थी व किसान वर्ग अपने ही कार्यों की सफलता से प्रसन्न व उत्साहित रहेगा। आर्थिक लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा। मुकदमाबाजी से छुटकारा मिलेगा। समझौते द्वारा आपकी कटुता समाप्त होगी। २२ अक्टूबर से ११ दिसम्बर तक आपके क्रोध से बनता-बनता कार्य रुक जाने से परेशानी रहेगी। आरोप प्रत्यारोप का सामना करना पड़ेगा। अपनी ही क्षमता से बढ़कर कार्य करना हितकर नहीं है। पारिवारिक समस्या उग्ररूप धारण कर सकती है। १२ दिसम्बर से ३ फरवरी तक आप द्वारा लिया गया निर्णय लाभप्रद रहेगा। वैवाहिक अड़चनें समाप्त होंगी। व्यापारी वर्ग अपनी सफलता से सन्तुष्ट रहेगा। जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। आपकी योजना क्रियान्वित होगी। भविष्य उज्जवल रहेगा। समाज, परिवार में आपके गुणों की प्रशंसा होगी। ४ फरवरी से वर्षोपरान्त तक लेन देन के मामलों में सावधानी रखें। विरोध व संघर्ष के साथ समय व्यतीत होगा। इच्छानुकूल स्थानान्तरण होता होता रुक जायेगा। कोई वस्तु खोई जा सकती है। क्षमता से बढ़कर दूसरों का सहयोग न करें। मित्रों से मन मुटाव सा रहेगा।

संदिग्ध व्रत पर्व निर्णय

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवरात्रारम्भ- इस वर्ष ७ अप्रैल २००८ सोमवार को प्रतिपदा मात्र २ पल तक है। शास्त्र में स्पष्ट निर्देश है कि यदि प्रतिपदा मुहूर्त्त (२ घटी) से न्यून होतो नवरात्रारम्भ अमायुक्त प्रतिपदा में ही करना चाहिये।

"मुहूर्त्तन्यूनव्याप्तौ सूर्योदयास्पर्शे वादर्शयुतापि ग्राह्या।।"

अतः संवत् २०६५ में नवरात्रारम्भ घटस्थापन ६ अप्रैल २००८ को प्रातः ९ बजकर २५ मिनट के उपरान्त होगा।

श्री रामनवमी- रविवार १३ अप्रैल २००८ को घटी १३ पल २९ के उपरान्त होने से मध्यान्ह काल में नवमी है अतः स्मार्तों (सभी गृहस्थियों) की रामनवमी रविवार को है। वैष्णव सम्प्रदाय को अष्टमीयुक्त नवमी का निषेध होने से वैष्णवों की रामनवमी १४ अप्रैल सोमवार को है।

"नवमी चाष्टमी विद्धा त्याज्या विष्णुपरायणैः। उपोषणं नवम्यां च दशम्यां चैव पारणम्"।।

श्राद्ध- प्रतिपदा का श्राद्ध दिनांक १५ सितम्बर सोमवार को होगा क्योंकि पार्वण श्राद्ध अपरान्ह काल में होता है तथा इस दिन घटी २१ पल २३ के उपरान्त प्रतिपदा है तथा घटी १८ पल १९ से घटी २४ पल २५ तक अपरान्ह काल है। इस प्रकार १५ सितम्बर को प्रतिपदा अपरान्ह में व्याप्त है। इसी क्रम में द्वितीया का श्राद्ध १६ सितम्बर को व तृतीया का श्राद्ध १७ सितम्बर बुधवार को होगा।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापारिक

लेखक- *श्री मनीष कुमार जैन, पोरसा वाले*

अप्रैल २००८

२७ मार्च से ५ अप्रैल तक सरसों फली तेल १२५ तेज, ५ अप्रैल से ७ अप्रैल तक तेलों में मंदी, ७ अप्रैल से १२ अप्रैल तक सरसों ५५ तेज, फली तेल ९९ की जोरदार तेजी बन सकती है। १२ से १६ अप्रैल तक तेलों में मंदी, १९ से २५ अप्रैल तक फली तेल २७५ तेज, सरसों ९९ तेज, २५ से ३० अप्रैल तक तैल, गुवार में जोरदार मंदी आ सकती है। १ से १५ अप्रैल तक काली मिर्च में ७७७ की जोरदार भारी तेजी तो ३ मई तक जोरदार मंदी चल सकती है। १६ अप्रैल को सूर्य बुध की सुपीरियर युति होने से ३-४ अप्रैल से ११ अप्रैल तक सोयाबीन तैल २७ की भारी तेजी, सिंगदाना, फली तेल २७५ की भारी तेजी, सरसों १२७ तैजी, चना १५५ तेजी तो बाद में २१ अप्रैल तक अरण्ड, अलसी, सोयाबीन में तेजी चल सकती है। ७ से २३ अप्रैल जोरा ७०७ की मंदी, चना, मसूर, मटर में भारी मंदी चल सकती है।

मई २००८

१ से ९ मई तक सोयाबीन तेल २९९ की तेजी, ९ से २३ मई तक फली तेल १२५ की मंदी तो २३ से ३१ मई तक सरसों ५५, फलीतेल १६५ की तेजी आ सकती है। ७ से ३० मई के बीच कालीमिर्च में अच्छी तेजी, गुवार में जोरदार मंदी चल सकती है। २९ मई के ७ या १५ दिन पहले से सरसों, अरण्डी, फली तेल मंदी चल सकती है। तेलों के नीचे भाव में आगे महीने में घटबढ़ से कुछ तेजी बन सकती है।

जून २००८

१ जून से १५ जून के बीच फली तेल २९९ की जोरदार मंदी, सोयाबीन २८ की जोरदार मंदी तो १६ से २१ जून तक तेलों में अस्थाई तेजी तो गुवार में ३ से २५ जून तक घटबढ़ से तेजी आ सकती है। २१ जून से ५ अगस्त तक चना, मसूर, मटर, केवड़ा में अच्छी तेजी आ सकती है। १ जुलाई से काली मिर्च में तेजी आ सकती है। ८ जून सूर्य बुध युति होने से १५-२० दिन पूर्व से चना में चल रही तेजी समाप्त होकर चना, अरहर में मंदी, पिपरमेन्ट में भारी तेजी, काबली चना में ४०५ की तेजी, रुई, मक्का ४५ मंदी, अरहर ४०५८ की मंदी, इमली ९९ की, चांदी, सोना, शेयर्स में तेजी, मैथी, लौंग, जीरा में तेजी चल सकती है। गेहू, बाजरा में तेजी चल सकती है। चीनी, गुड़ में अच्छी तेजी आ सकती है।

जुलाई २००८

२७ जून से १२ जुलाई तक तेलों में अच्छी तेजी तो १२ जुलाई से २ अगस्त तक सरसों, अलसी, अरण्ड में भारी तेजी। फली, तेल, सोयाबीन मंदी तो ३० जुलाई तेलों में तेजी का उछाल आ सकता है। ३० जुलाई को सूर्यबुध की युति होने से १५-२० दिन पूर्व से चना में चल रही तेजी समाप्त होकर चना, अरहर में मंदी। पिपरमेन्ट में भारी तेजी, काबली चना में ४०५ की तेजी। रुई, मक्का ४५ मंदी। अरहर ४०५८ की मंदी, इमली ९९ को चांदी, सोना शेयर्स में तेजी, मैथी, लौंग, जीरा में तेजी चल सकती है। गेहूं, बाजरा में तेजी चल सकती है। चीनी गुड़ में अच्छी तेजी आ सकती है। १-८-२००८ से १-९-२००८ के बीच चना, मसूर, मटर में तेजी तो ७-७-२००८ से ७-८-२००८ के बीच सरसों १७५ तेजी, अरहर तेज, अरण्ड तेज, सोयाबीन तेल इन्द्र जौ २७ तेज तो ७-८-२००८ से ११-८-२००८ के बीच इन्द जौ सोयाबीन तेल ४५-७७ की जोरदार मंदी बनने की संभावना है। गुवार ५५ की भारी तेजी, जीरा २७९९ की, छोटी इलायची में तेजी आ सकती है तो गुवार, जीरा, लाल मिर्च, हल्दी में मंदी का वातावरण बन सकता है। ५-१०-२००८ से ७-१२-२००८ तक गुवार गम ११०१ से १५७७ की जोरदार मंदी चल सकती है।

अगस्त २००८

२९ जुलाई से ११ अगस्त तक मूंगफली तेल २९९ की जोरदार मंदी सोयाबीन, इन्द्रजौ १० किलो ५५ की जोरदार मंदी, सरसों, बिनौला जोरदार मंदी, गुवार, जीरा, हल्दी में तेजी आ सकती है। ११ से २१ अगस्त तक तेलों में अच्छी तेजी का उछाल तो ३० अगस्त से तेलों के भाव गिर सकते हैं। २१ अगस्त से ५ सितम्बर तक जीरा हल्दी गुवार में अच्छी तेजी चल सकती है। ११ अगस्त से १६ सितम्बर तक चना अरहर में तेजी आ सकती है।

सितम्बर २००८

२७ अगस्त से ३ सितम्बर तक अरण्ड, अलसी में मंदी। गुवार, इलायची, जीरा में मंदी आयेगी। तेलों में घटबढ़ से सितम्बर, अक्टूबर २००८ तक जोरदार मंदी चल सकती है। २-५ दिन मंदी आ जाने पर सौदा बराबर कर दें। १ मार्च २००८ से २३ मार्च २००८ तक फली तेल २८१ की (१०० किलो तेल पर मंदी) तो ११ मार्च २००८ से २३ मार्च के बीच सोयाबीन तेल, इंद्रजौ २७ की तेजी, फली तेल २४५ की तेजी तो ३० मार्च तक तेलों में जोरदार गिरावट तो गुवार जीरा में अच्छी तेजी आ सकती है। १ अप्रैल से १६ अप्रैल तक फली तेल ५५५ की भड़कती तेजी, गुवार ३७७ तेज, सरसों १७९ तेज, १८ से २५ अप्रैल तक, सोयाबीन तेल इन्द्रजौ तेल १५ तेज, तो गुवार, जीरा हल्दी में जोरदार मंदी चल सकती है। १ मार्च से १५ मार्च तक तेलों में जोरदार मंदी तो २३ जून तक तेजी आ सकती है। १५-९-२००८ से २५-९-२००८ के मध्य अरहर, हल्दी ५५५, मटर तेज, लौंग, ज्वार ५५ की तेजी, लाल मिर्च ७०७, चावल बासमती में तेजी, मसूर, मूंग राजमा २५९ तेज, मगर जीरा ५०५ की मंदी आ सकती है। २५-८-२००८ से ७-१०-२००८ के बीच अफीमदाना २७७७९ की भड़कती तेजी, काजू २५२५ मगर मगज में मंदी

चल सकती है। १८-९-२००८ से ७-१०-२००८ के बीच राजमा, बाजरा, उड़द, मूंग, खोपरा गोला, पिस्ता, जीरा १९७७ की प्रचंड मंदी का दौर चल सकता है। २५-९-२००८ से २०-१०-२००८ तक बादाम, इलायची, सुपारी में तेजी, अरण्ड राजमा, मक्का, बाजरा, जौ आदि में अच्छी मंदी, मूंगफली तेल ९९९ की जोरदार मंदी, धनिया, लाल मिर्च, गुवार ७७७ की जोरदार मंदी चल सकती है। १-१०-२००८ से १८-१०-२००८ के बीच बादाम २०३ तेज, काजू ५५ तेज, छोटी इलायची ७५ तेज, इमली २०३ हल्दी ५७५, तेज खोपरा गोला ५०५, अरहर, मटर, गेहूं में तेजी आ सकती है। मगर उड़द, मूंग, सोयाबीन, सरसों, फली, तेल में जोरदार मंदी आ सकती है।

अक्टूबर २००८

१ से १८ अक्टूबर तक सोयाबीन तेल, मूंगफली, करडी, तिल सरसों में जोरदार मंदी, गुवार, लाल, मिर्च, जीरा, हल्दी आदि में मंदी आ सकती है। १८ से २८ अक्टूबर तेलों में मंदी आ सकती है। ८-१०-२००८ सूर्यबुध की इन्फीरियर युति होने से २५-८-२००८ से ६-१०-२००८ तक बड़ी इलायची १५७४५ तेज, किसमिस १५७७ तेज, सोंठ ५०५ तेज, जीरा ३७७७ तेज, बाजरा ५५ तेजी, रुई बारदाना में तेजी, धनिया ७०७ तेज तो शेयर्स बाजार में २५ दिन पहले से बी.एस.ई. इन्डेक्स में २७९९ की जोरदार गिरावाट आ सकती है। ज्वार, बाजरा, चना, अलसी में तेजी आ सकती है। गुवार में जोरदार मंदी चल सकती है। १५ नवम्बर से १५ जनवरी २००९ के बीच उड़द ४०५ से ५५५ की तेजी आ सकती है। १५-११-२००८ से २७-१२-२००८ के बीच सोयाबीन, मूंगफली, अरण्ड में भारी तेजी आ सकती है। २०-१-२००९ को सूर्य बुध की युति होने से डेढ़ महीने से पूर्व से ११ दिन बाद तक ९९९ प्वाइंट की भारी तेजी, उड़द २०१ की मंदी, मटर २९९ की मंदी, मूंग २०८ मंदी, सुपारी ४०५ तेजी, कलौंजी ७०९, छोटी इलायची में तेजी चना १५-२० दिन ७५ तेजी, गुवार ३७७ की जोरदार मंदी, लाल मिर्च १९९९ की जोरदार मंदी तेल तिलहन ११-१५ दिन जोरदार मंदी आ सकती है।

नवम्बर २००८

१ से ३० नवम्बर तक तिलहन में जोरदार मंदी का दौर चल सकता है। १ नवम्बर से ५ दिसम्बर तक चना, अरहर में जोरदार मंदी चल सकती है। २७-११-२००८ को सूर्य बुध की सुपीरियर युति होने से १०-१५ दिन में चना १५०-२५५ की तेजी आ सकती है १९-११-२००८ से ७-१२-२००८ के बीच फली तेल, सोयाबीन तेल ४५ की जोरदार मंदी तो ११ दिसम्बर तक तेजी। ११-१२-२००८ से ३-१-२००९ तक मूंगफली तेल १५७५ की भारी मंदी, सोयाबीन ३७ से ८५ की मंदी तो ५-१-२००९ से २१-१-२००९ तक तेजी, २१ जनवरी से २ फरवरी तक मंदी तो ३ से १७ फरवरी २००९ तक तेलों में भारी तेजी आ सकती है। १७-२-२००९ से ७-३-२००९ के बीच फली तेल ९९९ की जोरदार मंदी, सरसों १७७ की मंदी चल सकती है।

दिसम्बर २००८

१ से ११ दिसम्बर तक फली तेल २०८, बिनौला, सोयाबीन, अरण्ड, अस्थाई तेजी का तो १२ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक अरण्ड अलसी सरसों में जोरदार मंदी आ सकती है।

जनवरी २००९

१ से ३१ जनवरी तक तेल, तिलहन, बिनौला में जोरदार मंदी आ सकती है। २९ जनवरी के आसपास तेल तिलहन में भयंकर मंदी होकर नीचे भाव बन सकते हैं। ९ जनवरी से ६ फरवरी के बीच जायफल २५, तेज जावित्री, मगज, तरबूज ७७७ तेज, काली मिर्च ७०९ तेज, सोयाबीन डीओसी ५१५ तेज, चीनी, जीरा, चावल में तेजी चल सकती है। १९ जनवरी से ५ फरवरी के बीच अरण्ड तेल ५७७ की भारी मंदी, फली तेल ९९९ की मंदी, सरसों १५५ मंदी, चना १५५ मंदी, चावल ९९ की मंदी आ सकती है। १५ जनवरी से ७ फरवरी तक मसूर ७५, मटर अरहर १७७ की मंदी, इमली में २५५ की मंदी चल सकती है। २१ जनवरी से ११ फरवरी तक धनिया, लहसुन ७००, जीरा, किसमिस ७०७ की मंदी, सौंफ ५०५ की जोरदार मंदी चल सकती है।

फरवरी २००९

२ से ११ फरवरी तक तेलों में तेजी, लाल, मिर्च, धनिया, जीरा, गुवार में जोरदार मंदी आ सकती है। ११ से १८ फरवरी तक तेजी २८ फरवरी तक गुवार, धनिया में जोरदार मंदी आ सकती है। ११ से २१ फरवरी तक ज्वार ५५ तेज, मक्का १५ तेज, चीनी ७५ तेज, सौंठ ५०५ तेज तो गुड़, मसूर, चना, सोयाबीन में मंदी आ सकती है। २१ जनवरी से १ मार्च तक गुवार में ५०५ की मंदी आ सकती है। २१ फरवरी से २७ मार्च तक अरहर ३०९ की भड़कती तेजी आ सकती है। २७ फरवरी से ११ मार्च तक गुवार में तेजी आ सकती है। ११ से १५ मार्च तक मंदी गुवार में चल सकती है। १९ फरवरी से ५ मार्च तक काली मिर्च ९९९ की भड़कती तेजी, लौंग २५, गुड़ २५५ तेज, जीरा ९९, चीनी ११५ तेज, गेहूं २५, सोयाबीन डीओसी ५७५ तेजी, खोपरा गोला में भड़कती तेजी तो अरण्ड, सौंठ ५०, चावल २५, इमली में २५५ की जोरदार मंदी चल सकती है।

मार्च २००९

१ से ११ मार्च तक सरसों, अलसी, अरण्ड, मूंगफली में तेजी तो १८ मार्च तक मंदी। तेल गुवार में तेजी। १८ मार्च से सरसों, हल्दी, गुवार में अच्छी तेजी आ सकती है। ७ से २१ मार्च तक सोंठ ७७७ तेज, मूंग में ५५५ की भारी तेजी, उड़द ३०९ तेज, चीनी, गुड़ ७५ तेजी, किशमिस में तेजी आ सकती है। लाल मिर्च, लहसुन में मंदी आ सकती है। गुवार, अरहर में १५ मार्च से २१ अप्रैल तक तेजी चल सकती है। १५ मार्च से ९ अप्रैल तक लाल मिर्च, हल्दी, गेहूं आदि में मंदी का झटका लग सकता है। २३ मार्च से १२ अप्रैल के बीच कभी भी जावित्री, मक्का, मसूर, किशमिस में तेजी तो हल्दी,

शेष पृष्ठ १४९ पर

ज्ञान सागर

लेखक-रविन्द्र लाखोटिया

आज के आधुनिक एवं प्रतियोगी जीवन में मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपनी दैनिक दिनचर्या से कुछ समय निकालना कठिन सा प्रतीत होता है यदि व्यक्ति 15 मिनट प्रतिदिन स्वाध्याय के लिए खाली समय में (जिसका प्रयोग वह अपने कार्य की सोच में बिताता है) या यात्रा के दौरान या सोने से पहले निकाल ले। यह पुस्तक तब न केवल उसके ज्ञान की वृद्धि भी करेगी बल्कि एक सच्ची मार्गदर्शक भी साबित होगी। इस पुस्तक में ''*पिता के पत्र पुत्री के नाम*'' एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण लिए हुए तनाव युक्त बच्चों में आत्मविश्वास तथा विवेक आदि बढ़ाने वाले प्रेरणात्मक पत्रों का संकलन है। मूल्य : रुपये **45.00** (*डाक व्यय अलग*)

मंत्र एवं रुद्राक्षा हीलिंग

लेखक-रविन्द्र लाखोटिया

भगवान भाव का भूखा है न कि आपकी पूजा पद्धति का। प्राचीन काल में घोर तपस्या करके ईश्वर प्राप्ति होती थी, परन्तु वर्तमान में मात्र शब्दों के उच्चारण अर्थात् जाप से प्रभु प्राप्ति हो जाती है। यदि हम पूजा में नियमादि की बात करें। तब ये पूजा हो ही नहीं सकती। इस आधुनिकता कि दौड़ में, व्यस्त जीवन में विधि-विधान से पूजा करना किसी भी व्यक्ति के लिए भारी पड़ता है। शास्त्रों में भी साफ-साफ कहा गया है कि कलियुग में तो केवल नाम लेना ही अर्थात् चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते प्रभु का नाम लेना ही काफी है। अतः आज के समय में आप सुबह नहाये या नहीं, नाश्ता किया या नहीं, बैठकर या खड़े होकर, किसी भी दिशा में बस केवल प्रतिदिन नियमपूर्वक दो मिनट शान्त चित्त भाव से प्रभु का नाम लेकर उस सर्वशक्तिमान को धन्यवाद देवे। उससे बच्चे की भाँति कुछ माँगना चाहते हो तो माँग ले। परन्तु प्रतिदिन उसे याद सुबह-शाम अवश्य करें।

इस पुस्तक में वैज्ञानिक व पौराणिक मान्यताओं का समिश्रण कर, रुद्राक्ष के द्वारा हम शारीरिक व मानसिक लाभ कैसे ले सकते है, इसके अनुभूत प्रयोगों को पुस्तक में देने का प्रयास किया है। रुद्राक्ष का स्वयं पर या हमारे केन्द्र द्वारा दूसरों पर किये गये अनुभूत प्रयोगों का वर्णन इस पुस्तक में दे रहा हूँ।

मूल्य : रुपये **60.00** (*डाक व्यय अलग*)

"ज्योतिष रत्न"

(ज्योतिष पर आधारभूत पुस्तक)

इस पुस्तक में ज्योतिष और दर्शन शास्त्र का समन्वय कर इसे सत्य व रोचक बना दिया है। चूंकि दर्शनशास्त्र व ज्योतिष दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, अतः एक अच्छा ज्योतिर्विद् वही हो सकता है जिसे ज्योतिष के साथ-साथ दर्शनशास्त्र का भी ज्ञान हो, क्योंकि समस्त पराविद्याओं का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से है। यही कारण था कि हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालदर्शी होने के साथ-साथ उच्चकोटि के दार्शनिक भी थे।

इसके अलावा इस पुस्तक में खगोल गणित व फलित ज्योतिष का संक्षिप्त परिचय देते हुए षोड्षवर्ग सिद्धान्त की सरल व्याख्या की गई है तथा साथ में सभी ग्रहों का पौराणिक, वैज्ञानिक और सामान्य परिचय देते हुए भौतिक और अभौतिक स्तर पर उनके सम्पूर्ण कारकत्व की तार्किक विवेचना की गई है।

इस पुस्तक में फलादेश की ''सम्यक'' विधि की व्याख्या ठोस फलित सूत्रों के साथ की गई है तथा साथ ही इसमें एक संक्षिप्त ज्योतिष शब्द कोश व प्रश्नोत्तर माला भी दी गई है।

मूल्य : 125/- रुपये

धर्म ज्योतिष और आप

लेखक-रविन्द्र लाखोटिया

प्रतिक्षण विज्ञान के बढ़ते चरण में मनुष्य को जहां चिन्ताविहीन होना था वहां आज वह पहले से अधिक चिन्ताग्रस्त हो गया है। उसका सम्पूर्ण क्रियाकलाप एक ऐसी अन्तहीन स्पर्धा में जा फंसा है, जहां न तो दुःखों का अन्त हुआ और सुख एक मृगतृष्णा मात्र रह गई।

इस पुस्तक में कहीं भी उपदेश नहीं है बल्कि दैनिक जीवन में तनाव को दूर करने वाली, व्यक्ति को परखने वाली, आपस के सम्बन्धों को मजबूत बनाने वाली तथा व्यवहारिक ज्ञान की बातें शामिल हैं। मूल्य : रुपये **80.00** (*डाक व्यय अलग*)

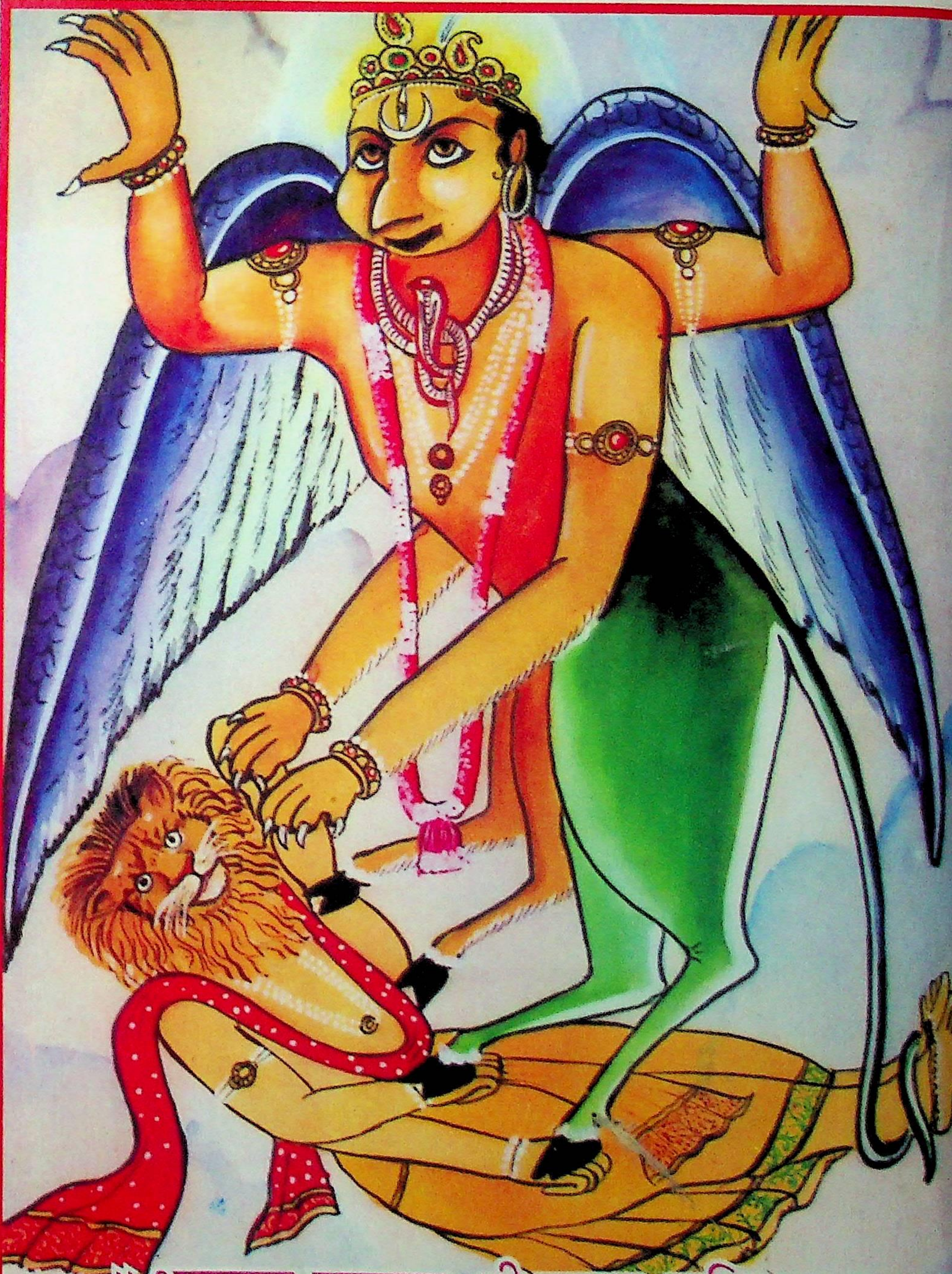
वास्तविक जीवन का रहस्य

जीवन में घटित सत्य घटना एवं अनुभवों पर आधारित कर्म के रहस्य को उजागर कर मानव समाज को अविस्मरणीय प्रेरणा एवं स्फूर्ति देने वाली तथा निराश जन के मन-मस्तिष्क को सबलता प्रदान करने वाली चमत्कारिक मार्मिक पुस्तक

मूल्य 85/- रुपये (डाक खर्च सहित)

सभी पुस्तकों के लिए मनीऑर्डर निम्न पते पर भेजें- **अग्रवाल बुक डिपो**

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 फोन : (011) 23943254



॥ भगवान् महारुद्र श्री शरभ-पक्षिराज ॥